112587

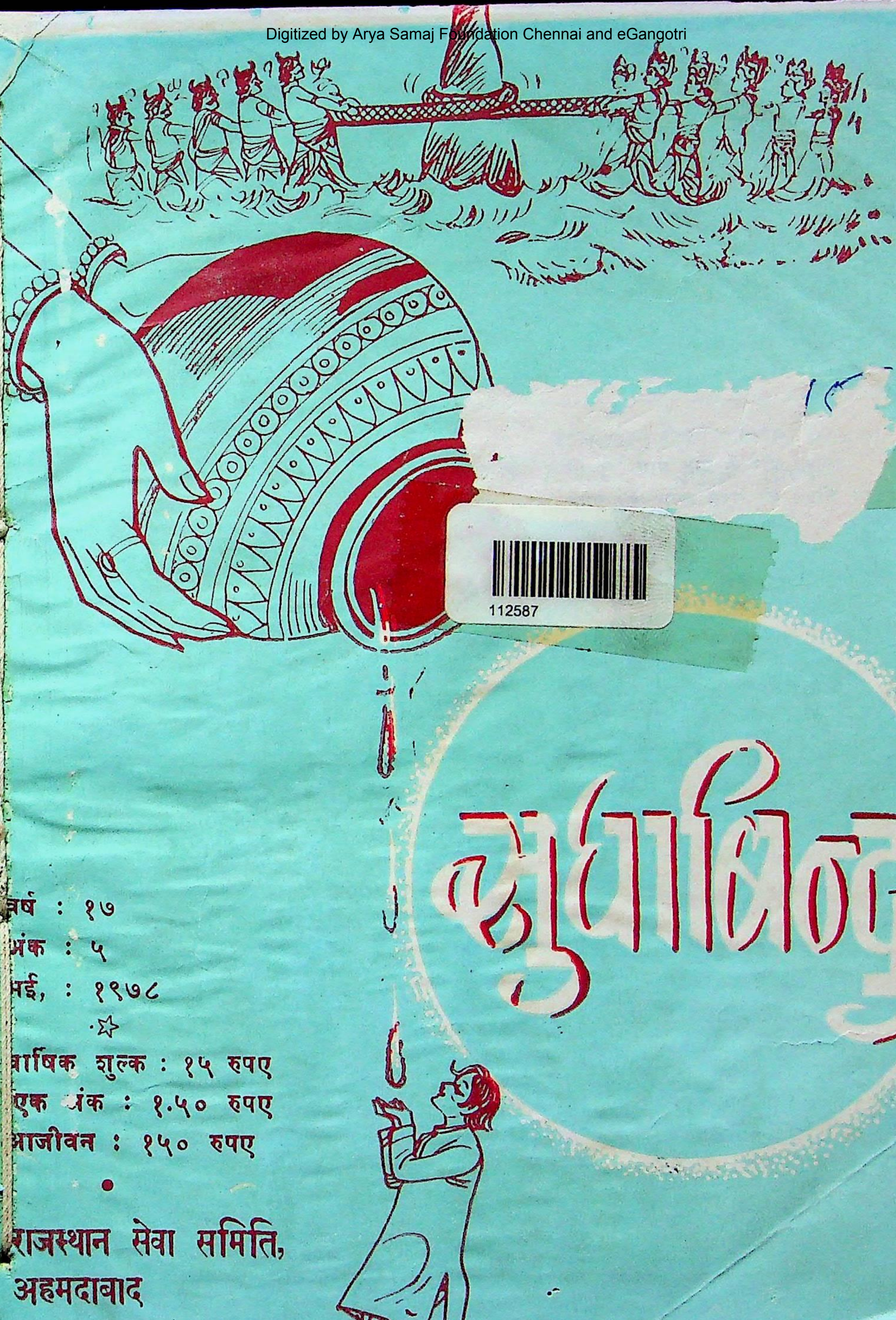

सुधाबिन्दु

112587

वर्ष : १७
अंक : ५
मई, : १९७८
☆
वार्षिक शुल्क : १५ रुपए
एक अंक : १.५० रुपए
आजीवन : १५० रुपए
•
राजस्थान सेवा समिति,
अहमदाबाद

• पाठकों के पत्र •

आप द्वारा प्रेषित 'सुधाबिन्दु' का 'मानवधर्म विशेषाक' मिला। विशेषांक की विशेषता संपादक-मंडल होता है, जिसकी मैं प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता। इस बार के सभी लेख मानवता के विभिन्न पहलुओं को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने के साथ उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक भी हैं। डा० पाण्डेयजी का 'मानवधर्म का मूलाधार' बहुत गहराई की बात की ओर संकेत करता है तो दूसरे लेख भी बहुत उच्च स्तर के हैं। कुल मिलाकर पत्रिका का एक संग्रहणीय अंक बन पड़ा है, जिसमें अगर दूसरे धर्मों से सम्बन्धित विवेचन को स्थान मिलता तो विशेषांक अवश्य अद्वितीय बन जाता।

वली मोहम्मद कुरैशी, बाड़मेर (राज०)

'सुधाबिन्दु' के कुछ अंक देख पाया हूँ। यह पत्रिका जीवन के शाश्वत मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध प्रतीत हुई।

कैलाश जैन, एडवोकेट, भवानीमण्डी, (राज०)

आपकी ओर से प्रति मास 'सुधाबिन्दु' का प्रकाशन होता है। इसके प्रत्येक लेख द्वारा संप्रेषित विचार जीवन को सरस बनाने का सबल प्रयास करता है।

रमण प्रजापति, उमरेठ, (खेड़ा)

'सुधाबिन्दु' का अंक अचानक पढ़ने को मिला। पढ़कर पत्रिका पसन्द आई। सही में 'सुधाबिन्दु' ने मुझे आकर्षित किया है।

विमलकुमार जैन, एडवोकेट, आगरा, (उ० प्र०)

'सुधाबिन्दु' का सितम्बर अंक काफी दिलचस्प रहा। खासकर श्री दुर्गाशंकर त्रिवेदी की कहानी 'तलछट' और शोध श्रीशेखरप्रसाद का 'लोकगीतों में समान भावधारा' प्रभावित कर गए। प्रारंभ से ही 'सुधाबिन्दु' का ताजा अंक पुस्तकालय में मेरे आकर्षण का केन्द्र रहा है। इस मानसिक आकर्षण का कारण 'सुधाबिन्दु' का व्यापक साहित्यिक कैनवास रहा है।

कुमारी कमलेश गोयल, अलीगढ़

भावना, उत्कण्ठा एवं शिवम् का आधार लेकर साहित्यिक मणियों की गुंथी गई मणि-मालिका ने अपनी दिव्य ज्योति को 'सुधाबिन्दु' की संज्ञा प्रदान करते मेरे अन्तःकरण को मुग्ध कर दिया। भारत में अहिन्दी भाषी क्षेत्र की कल्पना अब गुजरात के हेतु मिथ्या-सी लगने लगी। गुजरात प्रांत की सानिध्यता ने, राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास का पूर्ण चन्द्र बन कर, मधुर ज्योति से अनेक भाई-बहनों की प्रेरणाओं में विलीन हो कर, एकीकरण कर लिया तथा करोड़ों हृदय-पट पर अंकित राजस्थान सेवा समिति संस्थान की प्रतिमा को स्थाई रूप भी प्रदान कर दिया।

हमें आशा है कि यह 'सुधाबिन्दु' हर जन के हृदय को मधुर रसों से सिंचित करता सर्वोत्तम चोटियों का प्रतीक बनेगा, एक बनेगा। एक हाइकू की रचना में स्रवित मेरी निम्न हृदय उत्कण्ठा बह चली है—भावना-प्रेम,

साक्षात् प्रतीक है—'सुधाबिन्दु' में

डा० दिवाकर उपाध्याय
सम्पादक 'तरुण' इटाएँ बाजार, जौनपुर (उ० प्र०)

112587

सुधाबिन्दु

सम्पादक

डा० राजनाथ पाण्डेय
एम. ए. (संस्कृत, हिन्दी, पालि), पी-एच. डी.
व्याकरणाचार्य, 'लब्धस्वर्णपदक'

रामअवधेश त्रिपाठी
साहित्यरत्न

संयोजक

गिरधारीलाल सराफ
एम. कॉम., एल-एल. बी., रा. रत्न

लेखकों से निवेदन

(१) "सुधाबिन्दु" में आप किस प्रकार की रचनाएँ नहीं भेजेंगे —

- जो रचनाएँ जीवन में अनास्था जगाएँ और देश के विभिन्न समुदायों में स्नेह-सूत्र तोड़ें।
- जो व्यक्तिगत आक्षेप करें तथा सहज स्वस्थ सुरुचि को ठेस पहुँचाएँ।
- जो अन्यत्र किसी पत्र-पत्रिका में प्रकाशित हों अथवा विवादास्पद हों।

(२) रचनाओं को स्वीकृत करने की सूचना उनके प्राप्त होने के पन्द्रह दिन के अन्दर दी जाती है।

(३) अस्वीकृत रचनाएँ लौटाई नहीं जाती हैं। लेखकों को रचनाओं की प्रतिलिपि अपने पास रख लेनी चाहिए।

(४) हिन्दीतर भाषी नवोदित लेखकों-कवियों की हिन्दी रचनाएँ प्रकाशित कर प्रोत्साहन दिया जाता है।

(५) रचना केसाथ परिचय तथा योग्यता-विवरण भी भेजें।

(६) प्रकाशन-तिथि-प्रति मास की दसवीं तारीख है।

पत्राचार : **रामअवधेश त्रिपाठी**
५५/३ म्युनिसिपल क्वार्टर्स,
शाहपुर, **अहमदाबाद-१**

राजस्थान सेवा समिति, अहमदाबाद का
मासिक मुखपत्र

वर्ष : १७ **मई,**
अंक : ५ **१९७८**

वार्षिक शुल्क : **१५ रुपए**
आजीवन ग्राहक : **१५० रुपए**
एक अंक का मूल्य : १-५० रु०

●

'सुधाबिन्दु' में विज्ञापन की दरें निम्नांकित हैं :

स्थान	विशेषांक	वार्षिक	मासिक
कवर पृष्ठ नं.–४	१०००	१८००	२००
,, ,, नं.–२ और ३	५००	१५००	१५०
रंगीन पूरा पृष्ठ	५००	—	—
साधा० ,, ,, ,,	२५०	१०००	१००
,, आधा पृष्ठ	१५०	६००	६०

व्यवस्थापक **'सुधाबिन्दु'**
राजस्थान सेवा समिति, शाहीबाग मार्ग, **अहमदाबाद-४**

[राजस्थान सरकार के माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों तथा पुस्तकालयोंके लिए 'सुधाबिन्दु' मान्य है तथा गुजरात युनिवर्सिटी एकेडेमिक कौंसिल पत्र नं. ४६०९९/१९७५ ता. २४-१२-'७५ द्वारा शोध-पत्रिका के रूप में मान्य है।]

राजस्थान सेवा समिति, शाहीबाग मार्ग, अहमदाबाद-४ के लिए श्री रामावतार शर्मा ने प्रकाशित किया एवं श्री शांतिलाल हरजीवन शाह ने नवजीवन मुद्रणालय अहमदाबाद-१४ से मुद्रित किया।

अनुक्रमणिका

मई, १९७८

१. मंचन और कंचन —सम्पादकीय ५
२. दो कविताएँ —श्री सत्यनारायण श्रीवास्तव 'कमतर' ६
३. नींव का एक पत्थर —स्व० स्वामी गोपालदास —श्री सुबोधकुमार अग्रवाल ७
४. वचन की रक्षा (बोधकथा) —श्रीमती गिरिजा 'सुधा' १२
५. परमहंस को पहचानिए —श्री जगवीरसिंह वर्मा १५
६. जीने की कला —डा० शेखरप्रसाद १८
७. विवाह कानून और समाज-सुधार —श्री बद्रीप्रसाद अग्रवाल २०
८. मानवता —श्री सलीम शेख २२
९. लोग क्या कहेंगे? —श्री विमलकुमार जैन २३
१०. दो पोस्टर —श्री पी. पी. सिंह २५
११. अजन्ता-एलौरा प्रवास (यात्रा-परक) —श्री सन्तोषकुमार २६
१२. माता का दूध (स्वास्थ्य परक) —श्रीमती गीतादेवी २९
१३. पुस्तक–परिचय ---- ३१
१४. समिति के आजीवन सदस्य ३३
१५. आजीवन ग्राहक ३४
१६. अमरता नो शाप (गुजराती लेख) फाधर वालेस ३५
१७. विज्ञापन ---- ३६ से ४०

याद रखिए—

राजकमल टेक्सटाइल्स

२९" प्रिन्ट बुश शर्टिंग, छींट एवं स्क्रीन बोर्डर

★

दुकान :
५२४, न्यू क्लोथ मार्केट,
अहमदाबाद ३८०००२
टेलीफोन : ३६०७२९
टेलीग्राम : कामधेनु

कार्यालय :
मणिलाल मेन्शन, क्रोसलेन
अहमदाबाद ३८०००२
टेलीफोन : ३६०४१६
टेलीग्राम : धार्मिक

• प्राणः •

वाचस्पते पृथिवी नः स्योना स्योना योनिस्तल्पा नः सुशेवा ।
इहैव प्राणः सख्ये नो अस्तु तं त्वा परमेष्ठिन पर्यग्निरायुषा
वर्चसा दधातु ।। अथर्व० १३-१-१७

भावार्थ —हे वाणी के स्वामी! हमारे लिये पृथ्वी, घर, बिछौना आदि सब पदार्थ सुखदायक हों । हममें प्राण दीर्घकाल तक रहे और हमें वह दीर्घ आयु और तेज के साथ प्राप्त हो ।

• समिति के दो प्रकाशन-पुष्प •

१. आधुनिक राजस्थानी साहित्य : लेखक — **प्रा. भूपतिराम साकरिया**

डेमी साइज, पक्की जिल्द, कलात्मक आवरण-पृष्ठ, सुन्दर छपाई वाली इस पुस्तक की प्रशंसा बड़े-बड़े विद्वानों ने की है। पुस्तकालयों तथा पुस्तक-प्रेमियोंके लिए विशेष उपयोगी है। **मूल्य —केवल ६ रुपए**

२. बातां बखत बखत की : लेखक — **श्री महावीरप्रसाद हलवाई**

डेमी साइज, पक्की जिल्द, उत्कृष्ट छपाई तथा मोहक आवरण-पृष्ठ। यह पुस्तक राजस्थानी भाषा में लिखी गई मौलिक और जीवनोपयोगी कविताओं का एक सुन्दर संग्रह है, जिसके प्रत्येक दूहे अँगूठी के नगीने हैं। **मूल्य — केवल ६ रुपए**

इस पुस्तक पर सम्मति देते हुए आचार्य **बदरीप्रसाद साकरिया** ने लिखा है — "सुन्दर और सुबोध नीति के दोहे। अपने ढंग की यह एक कृति है। कवि का प्रयास वास्तव में सराहनीय है। राजस्थानी भाषा के माध्यम से कवि और कृति साहित्य-गगन में प्रकाशमान हों, ऐसी अपेक्षा,-अभिलाषा है।"

प्राप्तिस्थान
राजस्थान सेवा समिति, शाहीबाग मार्ग, **अहमदाबाद-४**

• आवश्यकता है •

"सुधाबिन्दु" का प्रचार-प्रसार करने और ग्राहक बनाने तथा विज्ञापन लानेके लिए उचित कमीशन पर उत्साही कार्यकरों की आवश्यकता है । पत्र-व्यवहार करें —

व्यवस्थापक **'सुधाबिन्दु'**
राजस्थान सेवा समिति शाहीबाग मार्ग, अहमदाबाद-४

दो ऋतुएँ

• शीत •

शीत को प्रबल 'सेनापति' कोपि चढ्यो दल,
निबल अनल दूरि गयो सियराइ के ।
हिम के समीर तेई वरखैं विषम तीर,
रही है गरम भौन-भौननि में जाइकै ।
धूम नैन बहैं, लोग होत हैं अचेत तऊ,
हिय सों लगाइ रहे नेक सुलगाइ कै ।
मानो भीत जानि महा-सीत सों पसारि पानि,
छतियाँ की छाँह राख्यो पावक छिपाइ कै ।

सेनापति

सेनापति कवि कहते हैं कि शीत के बलवान सेनापति ने क्रोधित होकर अपना दल लेकर आक्रमण कर दिया है । उसे देखते ही निर्बल अनल शीतल होकर डर कर दूर भाग गई । हिम-वात के प्रचंड बाणों की वर्षा होने लगी । गर्मी अब घरों के कोनों में जा छिपी है । धूम के कारण आँखों से आँसू बहते हैं, लोग व्याकुल भी हो जाते हैं, तो भी आग सुलगाकर उसे छाती से सटाये हुए हैं । मानो अग्नि को महाशीत से भयभीत जान कर हाथ फैलाकर पावक को अपनी छाती से छिपाये हुए हैं ।

•

• ग्रीष्म •

निदाघ[1] का काल महा दुरन्त था, भयावनी थी रवि–रश्मि हो गई ।
तवा समा थी तपती वसुन्धरा **स्फुलिंग**[2] वर्षारत तप्त व्योम था ।
प्रदीप्त थी अग्नि हुई **दिगन्त में**, ज्वलन्त था आतप-जाल में लसा ।
पतंग[3] की देख महा प्रचण्डता, प्रकम्पिता पादप–पुंज पंक्ति थी ।

— हरिऔध

---

[1]–ग्रीष्म, [2]–चिनगारी, [3]–सूर्य

सुधाबिन्दु

वर्ष : १७ · मई, १९७८ · अंक : ५

सम्पादकीय

• मंचन और कंचन •

कृषक अपने खेत में अनेक बीज बोता है। उनमें से वे ही बीज श्रेष्ठ हैं, जिनसे पौधा खड़ा हो, वृक्ष बने। पौदों और वृक्षों में वे ही श्रेष्ठ हैं, जो पुष्पवान और फलवान बनें। पुष्प और फल वे ही श्रेष्ठ हैं, जो अपने रूप-रंग, रस-गन्ध एवं उपयोगिता से दूसरों के गले का हार बनें। इस प्रकार बीज से फल तक की क्रिया तक पहुँचते-पहुँचते जो श्रेष्ठता और प्रियता स्थापित हुई, उससे उसका महत्त्व बढ़ा, क्षेत्र-विस्तार हुआ। यह महत्ता अनुकरणीय है।

ठीक इसी प्रकार मनुष्य अपने गुणों, संस्कारों, व्यवहारों और उत्तम विचारों से अपने को माँज कर ऊर्ध्वगामी बनता है और एक ऐसी स्थिति आ जाती है कि वह संसार की निगाहों में श्रेष्ठ, पूज्य अनुकरणीय और समादरणीय बन जाता है। उसके विचार और कार्य उसकी महत्ता बढ़ा देते हैं, वह सब की दृष्टि का आधार बन जाता है, मंच पर आसीन हो जाता है, उच्चासनस्थ हो जाता है। वह मंचासीन व्यक्ति व्यष्टि से समष्टि बन जाता है, जन से महाजन बन जाता है और मानवता उसे पाकर निहाल हो उठती है। साथ ही वह इस संसार की नाटचशाला का सूत्रधार बन जाता है, हीरो कहलाता है, धन्य हो उठता है।

कंचन अपने रूप, गुण, उपयोगिता और रंग से सभी धातुओं में अधिक मूल्यवान बन जाता है। कंचन की कान्ति से हम आकर्षित हो उठते हैं, उसे पानेके लिए लालायित बन जाते हैं। कंचन के आभूषण पहन कर हम फूले नहीं समाते। कंचन के कारण कोई व्यक्ति, समाज, जाति और राष्ट्र गौरववान बन जाता है। कंचन अपने श्रेष्ठत्व के कारण अमीर-गरीब के मन में समान रूप से आदर पाता है। कंचन के गुणों और विशेषत्व को हम अपने जीवन में लाकर अपनी प्रियता बढ़ा सकते हैं, मूल्यवान बन सकते हैं।

आज के भौतिकता-ग्रस्त विश्व को मंचन और कंचन के श्रेष्ठादर्शों से जीवन-वाटिका को सुरभित बनाना है। मंचन से हमारी महनीयता में चार चाँद लगेंगे और कंचन से हमारे जीवन का मूल्य बढ़ेगा।

मंचन और कंचन की क्रिया से पंकिल विचारों में उत्क्रान्ति पैदा होगी, हम श्रेष्ठाचारी बनेंगे। इन दोनों का जीवन में आवाहन कीजिए और अपने को वरेण्य बनाइए, अच्छे विचारों का सोमरस पीकर देवतुल्य बनिए। सदैव ध्यान में रखिए — मंचन और कंचन। •

कविता

दो कविताएँ

●

—श्री सत्यनारायण श्रीवास्तव 'कमतर'

लेखक

१

उड़ के जल के कण गगन पर छा गए,
मेघ बन भू पर सुधा बरसा गए।

जब व्यथा-घन मन-गगन पर छा गए,
नयन बरसे, वेदना छलका गए।
गोद में काँटों की जो पलते रहे,
देव के ऊपर चढ़े मुरझा गए।

सूर्य-चन्दा क्या हैं क्या धरती-गगन,
नयन के नन्हें से तिल में आ गए।
पवन में भरते रहे खुशबू सुमन,
जब झरे माटी को भी महका गए।

रोशनी की ओर हम जब-जब बढ़े,
पवन के झोंके प्रदीप बुझा गए।
परम आदरणीय वे पंछी मनुज,
उड़ क्षितिज पर आसमान बना गए।

२

राह दिखलाने को मानव के नयन काफी हैं,
और पहुँचाने को मंजिल पै चरन काफी हैं।
चढ़ के अम्बर पै, सितारों को तोड़ने वालो!
भू के महकाने को, धरती पै सुमन काफी हैं।

ज्योति से कह दो सजगता से तिमिर को धोए,
घर अंधेरे के, उजाले भी रेहन काफी हैं।
मन के पंछी को बुलन्दी पै पहुँचनेके लिए,
प्रोत्साहन के मिले दो ही बचन काफी हैं।

नारियों के ही नहीं स्वार्थ के साधन केलिए
आजकल हो रहे नर के भी हरन काफी हैं।
और ईजाद किए जाओ दवाएँ बेहतर,
मर्ज संसार में करने को शमन काफी हैं।

●

ग्राम-पोस्ट – बेलागुसीसी
जिला – रायबरेली
(उत्तर प्रदेश)

जीवनी-परक

नींव का एक पत्थर

—स्व० स्वामी गोपालदासजी

●

श्री सुबोधकुमार अग्रवाल
पत्रकार

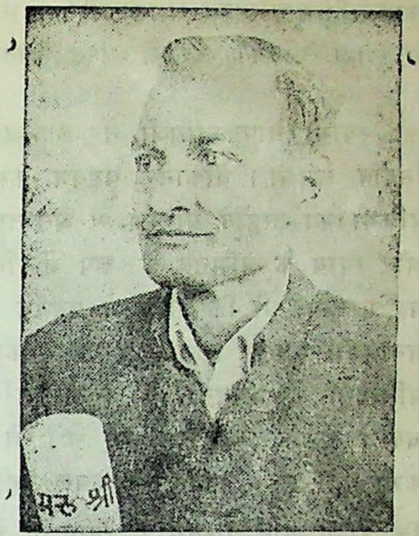

लेखक

[श्री सुबोधकुमारजी 'मरु-श्री' के प्रबन्ध सम्पादक और कुशल लेखक हैं। आप एक अध्ययनशील और कर्मठ साहित्यकार हैं।

स्वामी गोपालदास एक धर्मप्राण समाज-सेवक और जनप्रेमी सुधारक थे। आपकी सेवाओं ने तत्कालीन समाज में नई चेतना भर दी थी। आज भी प्रकाशन्तर से ऐसे प्रश्न स्वतंत्र भारत की जनता के सामने पड़े हैं। उन्हें हल करने में इस जीवनचरित्र से प्रेरणा मिलेगी। इसलिए यह लेख प्रकाशित किया जा रहा है। —सम्पादक]

सोमवार मार्च सन् १८१८ ई० को चूरू की स्वतंत्रता अपहरण करनेके लिए महाराजा सूरत सिंह ने बीकानेर राज्य की स्वतंत्रता अंग्रेजों के यहाँ जब गिरवी रख दी, तब यहाँ की प्रजा भी दोहरी दासता के जाल में जकड़ गई; परन्तु इस धरती की माटी में आजादी के कण शायद कुछ विशेष रूप से मिले हुए हैं। इसी कारण चूरू अपनी आजादी और अधिकारोंके लिए सतत संघर्षरत रहा है।

विगत युग में चूरू की जनता ने ठा० स्योजी सिंह आदि के नेतृत्व में संघर्ष किया था और वर्तमान युग में स्व० स्वामी गोपालदासजी ने आजादी की इस निःशस्त्र लड़ाई का नेतृत्व किया। न केवल चूरू बल्कि समूचे राजस्थान में जनजागृति तथा नवचेतना लाने का श्रेय इन्हीं को है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि स्वामीजी ने जन-जागृति लाने और जनता को अपने अधिकार तथा कर्तव्य दोनों का बोध कराकर उनके लिए संघर्ष करने हेतु जन-सेवा और ठोस रचनात्मक मार्ग का अनुगमन किया।

सार्वजनिक सेवा :

लोक संस्कृति शोध संस्थान, नगर–श्री चूरू द्वारा प्रकाशित पत्रों के प्रकाश में–स्वामी गोपालदासजी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व, ग्रन्थ की भूमिका में राजस्थान अभिलेखागार के निदेशक स्व० नाथूराम खड़गावल ने कहा है कि इस प्रकार के वातावरण में स्वामीजी ने सार्वजनिक संस्थाओं की स्थापना करके भयंकर दमन का सामना करते हुए सार्वजनिक सेवा के सहारे जनमत का निर्माण किया, छोटी-बड़ी अनेक संस्थाएँ खोलीं और लोगों में सार्वजनिक हित से संबंधित मंगल-कामना के बीज बोए। उनके ये प्रयास बड़ी कठिनाई से अंकुर प्राप्त कर सके तथा उन्हें जिस प्रकार के दमन द्वारा प्रताड़ित होना पड़ा, उसका अनुमान हम केवल इस बात से लगा सकते हैं कि उन्हें प्रारम्भ से लेकर अंत तक जनजीवन की सुरक्षाके लिए लगातार संघर्ष करना पड़ा। ग्रन्थ में स्वामीजी द्वारा किए गए जिस पत्र-व्यवहार का सम्पादन किया गया है; वह उनके अदम्य उत्साह,

कष्ट-सहिष्णुता अपूर्व क्षमता और निर्भय निरंकुशता से लोहा लेने की अद्भुत शक्ति व्यक्त करता है।

स्वामी गोपालदासजी ने अपनेआप को सदा निर्दोष समझा। बीकानेर षड़यंत्र केस की समूची प्रक्रिया को उन्होंने प्रारम्भ से अंत तक एक प्रहसन और न्याय के अभिनय के रूप में लिया। उनकी यह मान्यता थी कि राज्य ने षड़यंत्र केस चलाकर मनमानी से काम लिया है। बड़े सरकारी कर्मचारी प्रतिहिंसा की भावना से अनुप्राणित होकर उनसे बदला लेनेके लिए तुले हुए थे। वे मुकदमे से कभी नहीं डरे। उनकी तो केवल यही मान्यता थी कि राज्य यदि वास्तव में न्याय से प्रेम करता है और शुद्ध न्याय प्रदान करने को उत्सुक है, तो उसे चाहिए कि वह संबंधित व्यक्तियों को सभी प्रकार की कानूनी सुविधाएँ प्रदान करे। इन सुविधाओं के अभाव में उन्होंने सदा न्यायालय से असहयोग किया।

सारे देश में इसका कड़ा विरोध हुआ। सभी पत्रों ने इसे मोटे अक्षरों में छापा। एक उदाहरण के बतौर पहली अक्टूबर को बीकानेर केस के विरोध में बंबई में चौपाटी पर बाम्बे क्रॉनिकल के सम्पादक श्री बी० जी० हार्डिमैन के सभापतित्व में विराट सार्वजनिक सभा हुई। २७ अक्टूबर को महाराजा के पास अनेक प्रमुख व्यक्तियों के हस्ताक्षरों से युक्त तार भेजा गया, जिसमें मुकदमे पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करने का अनुरोध किया गया। हस्ताक्षर करनेवालों में बा० रामानन्द चटर्जी, जमनालाल बजाज, श्री नृसिंह चिन्तामणि केलकर, श्री अमृतलाल ठक्कर, प्रो० अभ्यंकर, पी० एल० चूडगर, अब्दुल रहमान मीठा, जमनादास द्वारकादास, डॉ० सुमंत मेहता, राजरत्न हरिलाल, गोविंदजी, गिजुभाई भावनगर, छोटेलाल सुतारिया, प्राणलाल मुशीद, प्रो० इन्द्र आदि थे। ” महात्मा गाँधी, पं० जवाहरलाल नेहरू और महामना मालवीयजी आदि भी अनेक बार बोले। स्वामीजी ने जब न्याय का ही मखौल होते देखा, तब न्यायालय से उनकी आस्था उठ गई।

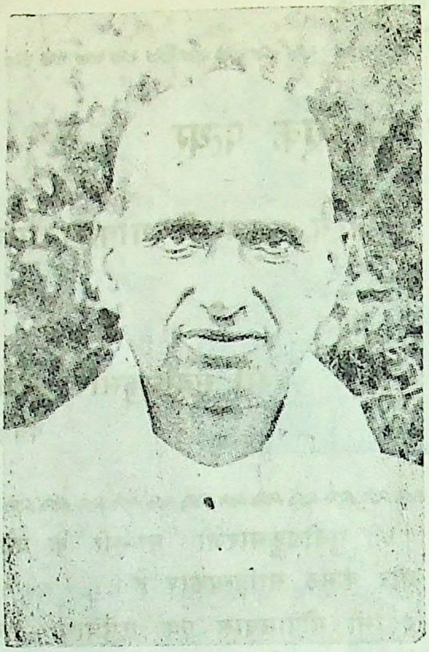

स्वामीजी

कार्य-बोध :

स्वामीजी के जीवन का प्रारम्भिक युग ऐसी संस्थाओं के उद्भव और विकास के प्रयत्न में बीता, जो अकालग्रस्त क्षेत्रों में पानी के अभाव को दूर करने के प्रयासों से संबंधित थीं। जिसके लिए उनके इशारे मात्र पर लोगों ने उस वक्त लाखों रुपए लगाए। स्थान-स्थान पर प्याऊ खुलवाने, जोहड़, कुक कूप और तालाब निर्मित करवाने तथा पशुओं के लिए चरागांहों की व्यवस्था कराने में वे संलग्न रहे। राज्य सरकार को उनके द्वारा किए गए निर्दोष प्रयास भी आपत्तिजनक प्रतीत हुए। किसी न किसी बहाने से सरकार ने उन्हें दमन-चक्र की लपेट में लेना प्रारम्भ कर दिया। उनके इन जनकल्याणकारी प्रयासों को भी सरकार ने जब कुचलने का प्रयास किया, तब स्वामीजी को सामूहिक जनमत तैयार करनेके लिए विवश होना पड़ा। वे राजनीति से कोसों दूर थे, पर सरकार ने उनके सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यों को जब राजनैतिकता का जामा पहनाना शुरू किया, तब उनके श्रद्धालु भक्त अत्यन्त दुखी हो गए।

यह युग राजनैतिक दृष्टि से अत्यन्त निराशा का युग था। शिक्षा नाम मात्र की थी, सामूहिक जन-जीवन निर्मित ही नहीं हो पाया था। बीकानेर के इस प्रेस-पत्र विहीन प्रदेश में निरंकुश प्रशासन का दमन नग्न नृत्य कर रहा था। स्वामीजी आध्यात्मिक प्रवृत्तियों वाले पुरुष थे। वे प्रचार और संगठन नहीं चाहते थे। उनका उद्देश्य तो सेवा के सहारे आक्रान्त मानव की व्यथा को कम करना मात्र था। दमन-चक्र चला, लोग बंदी बना लिये गए। वर्षों जेलखाने में बन्द मानवता सिसकती रही और अंत में असह्य पीड़ा सहकर स्वामीजी जेल-जीवन से मुक्त हुए। अपार कष्ट सहकर भी स्वामीजी में किसी से प्रतिशोध की भावना नहीं पनपी। उनका अध्यात्म शारीरिक पीड़ा सहकर भी चलित नहीं हुआ। वे अपने पवित्र कार्य में उसी शांति और तत्परता से लगे रहे।

समाज में फैली अशिक्षा और कुरीतियों के प्रति उनके मन में बहुत क्षोभ था और वे समाज से इन बुराइयों का उन्मूलन करना चाहते थे। स्वामीजी बड़े आस्तिक और ईश्वर में सच्ची निष्ठा रखनेवाले व्यक्ति थे, लेकिन धर्म के नाम पर संकीर्णताओं के लिए उनके मन में जरा भी स्थान नहीं था। धर्म के नाम पर समाज में प्रचलित ढोंगों के वे सर्वथा विरुद्ध थे।

समाज के पिछड़ेपन का पता तो इसीसे लग जाता है कि जब स्वामीजी ने नारी-शिक्षा के लिए सर्व प्रथम चूरू में सर्वहितकारिणी पुत्री पाठशाला की स्थापना की, तब बहुत से लोगों ने इसे एक धर्म-विरुद्ध कार्य बताया और विरोध स्वरूप शाला में पत्थर बरसाए। फिर भी स्वामीजी समाज एवं राष्ट्र की जागृतिके लिए नारी-शिक्षा को बहुत आवश्यक समझते थे। उन्होंने इस विरोध की भी परवाह नहीं की। बालिकाओं को सीना, पिरोना आदि की शिक्षा दी जाती थी और उनमें राष्ट्रीय भावनाएँ भी भरी जाती थीं। विधवा स्त्रियों को मासिक वृत्ति देकर शिक्षा दी जाती थी। शाला का विशाल भवन, शिल्प भवन, छात्रालय तथा बालिकाओं के लिए खेलकूद, मनोरंजन के साधन भी जुटाए गए। नारी-शिक्षाके लिए न केवल चूरू में बल्कि बहुत से नगरों में भी उन्होंने पुत्री–पाठशालाएँ खुलवाईं।

हरिजन सेवा :

अछूतों को शिक्षा देकर उन्हें स्वावलम्बी बनाने के अभिप्राय से उनके लिए 'कबीर पाठशाला' की स्थापना की। अछूतों (हरिजन शब्द तब इस रूप में प्रचलित नहीं हुआ था) के लिए राजस्थान में पाठशाला खोलना उन दिनों एक आश्चर्यजनक बात ही समझी गई। क्योंकि अछूतोद्धार आंदोलन के प्रवर्तक महात्मा गांधीजी का अवतरण भी तब राजनीति में नहीं हुआ था। लेकिन स्वामीजी ने इस बात की आवश्यकता को बहुत पहले ही अनुभव कर लिया था और केवल चूरू में ही नहीं बल्कि अन्य अनेक स्थानों में भी उन्होंने प्रयत्नपूर्वक हरिजन पाठशालाएँ खुलवाईं। बीकानेर राज्य में अनिवार्य शिक्षा की भी सर्व प्रथम माँग इन्होंने ही की, जिसके फलस्वरूप राज्य भर में अनेक प्राथमिक शालाएँ खोली गईं।

यह सब काम वि. सं. १९६४ में अपने उत्साही साथियों के साथ स्थापित सर्वहितकारिणी सभा के माध्यम से ही करते थे। इस प्रकार सभा के अन्तर्गत पुस्तकालय, वाचनालय, पुत्रीपाठशाला, कबीर पाठशाला, उद्योगवर्द्धिनी सभा, आतुरालय, महिलाश्रम तथा महावीरदल आदि स्थापित किए गए और सभा की शाखाएँ बीकानेर तथा जयपुर राज्य के अनेक गाँवों और कस्बों में स्थापित की गईं; जिनके द्वारा जनसेवा और जनजागृति का बहुत कुछ कार्य हुआ।

जनसेवा :

स्वामीजी का जीवन तो मानो जनसेवा के लिए ही हुआ था। सन् १९१७-१८ की महामारियों – शीत ज्वर के समय लगातार प्लेग और इनफलुएन्जा के समय अपने प्राणों को हथेली पर रखकर निष्काम भाव से

उन्होंने जो सेवा की, उसकी मिसाल भी मिलना दुर्लभ’ है। तत्कालीन बीमारियों में उस वक्त लगभग चूरू में २००० से अधिक व्यक्ति मर गए, गाँव खाली हो गया, लोग जैसा था वैसा ही छोड़ घर की चाबी स्वामीजी को सौंप गए। स्वामीजी ने नगर के प्रत्येक परिवार एवं उनके जानमाल की रक्षा अपनी जान जोखिम में डालकर की। किसी की एक सुई भी गुम न हुई। घर में पड़े मुर्दों को जलवाना, सिसकते लोगों का उपचार, प्रत्येक घरवाले को समाचार पहुँचाना आदि उस वक्त का दृश्य कल्पनातीत है। इसी प्रकार अकाल तथा प्रकृतिजन्य प्रकोपों के समय वे तन-मन से जनता-जनार्दन की सेवा करते रहे। नेत्र-चिकित्सा शिबिरों का प्रबन्ध कर हजारों नेत्र-विहीनों को फिर से दुनियां की रोशनी देख सकने योग्य बनाया। सेवा-कार्य हेतु सभी की ओर से नाशिक, कुंभ, थानेश्वर और प्रयाग तक स्वयंसेवक जाते थे। जनता के विशेष हित-साधन और नगर की ओर बढ़ते आ रहे रेगिस्तान की रोकथामके लिए उन्होने वर्षों तक अपना खून पसीना सींच कर हजारों बीघा गोचर भूमि तैयार की, जिससे प्रेरणा पाकर आसपास के अनेक नगरों में भी गोचर भूमियाँ तैयार करवाई गईं। बीकानेर राज्य में वनसंरक्षक कानून बना।

आयुर्वेद के प्रति स्वामीजी की बड़ी आस्था थी। वे स्वयं बहुत अच्छे चिकित्सक थे। उनका निदान सही होता था। आयुर्वेद को अधिक लोकप्रिय बनानेके लिए उन्होंने आयुर्वेद विद्यापीठ आदि के परीक्षा-केन्द्र चालू करवाए। स्वामीजी का कार्यक्षेत्र विस्तृत था और सभी वर्ग के लोगों के साथ उनके बड़े अच्छे संबंध थे। सारे राजस्थान के कार्यकर्ताओं, प्रचारकों, उपदेशकों और नेताओं की स्वामीजी के बारे में बहुत ऊँची राय थी। तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं से भी स्वामीजी सम्बंधित थे। अनेक पत्रों में उनके लेख बराबर निकलते रहते थे। योगी, संन्यासी और महात्माओं से उनका बहुत सम्पर्क था। बड़े-बड़े करोड़पतियों से भी स्वामीजी का घनिष्ठ सम्पर्क था और वे उनका पूर्ण विश्वास और सम्मान करते थे। अपने मित्रों के प्रति वे बहुत वफादार थे। कलाकारों, साहित्यकारों, विद्वानों तथा विशिष्ट महापुरुषों के प्रति उनके मन में बड़ा सम्मान था।

जनता में चेतना और जागृति लानेके लिए वे बड़े नेताओं और व्याख्यानदाताओं को बुलवाकर उनके भाषण करवाते थे। स्वामीजी स्वयं तो खद्दर पहनते ही थे लेकिन खद्दर, चर्खे और स्वदेशी वस्तुओं के प्रचारके लिए निरंतर प्रयत्नशील भी रहे। यद्यपि तत्कालीन बीकानेर राज्य की स्थिति इतनी दमघोंटू थी कि सभा में तिलक महाराज आदि नेताओं के चित्र लगा देने मात्र से ही एक तूफान खड़ा हो गया।

कांग्रेस में :

प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के वे सदस्य थे और प्रान्त की ओर से नेशनल कांग्रेसके लिए अनेक बार डेलीगेट निर्वाचित हुए थे। दिनांक २-१२-२४ को प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के प्रधान मंत्री स्व. श्री अर्जुनलाल सेठी ने स्वामीजी को लिखा था : “आप डेलीगेट होकर बेलगांव पधारेंगे तो प्रांत का गौरव बढ़ेगा।” लेकिन स्वामीजी को तो काम करने की ही धुन लगी रहती थी – पदलिप्सा और प्रदर्शन की भावना से वे कोई काम न करते थे।

ता० २५-२७ मार्च सन् २५ ई० को फतहपुर (शेखावाटी) में अखिल भारतीय मारवाड़ी अग्रवाल महासभा का सातवां अधिवेशन हो रहा था। उसी अवसर पर हिन्दी-सम्मेलन पर भी विचार होना था। स्वामीजी को दोनों ने ही सादर निमंत्रित किया था। उन्होंने नागरी लिपिके लिए खूब कार्य किया था। स्वामीजी को हिन्दी से प्यार था। इसलिए उन्होंने श्री क्षेमानन्दजी राहत को चूरू बुलाया था। उनके आने का उद्देश्य विशुद्ध साहित्यिक था; लेकिन होम मिनिस्टर से महाराजा को पेश करनेके लिए इसकी भी रिपोर्ट माँगी गई।

स्वामीजी का आदर बीकानेर में ही नहीं, अपितु बीकानेर प्रदेश के बाहर भी बहुत था। उनके अनु-

यायो सर्वत्र थे; पर उन्होंने राजनैतिक प्रचार और संगठन का सहारा लेकर अपने आध्यात्म को हलका नहीं किया। यह एक गौरव की बात है कि उनके द्वारा किया गया यह आत्मबलिदान व्यर्थ नहीं गया। जाने या अनजाने में उनपर किए गए नृशंस अत्याचारों की कहानी समूचे भारत में फैल गई। नृशंस अत्याचारों का वह धटनाचक्र निरंकुश शासन की नींव हिलाने में सफल सिद्ध हुआ। बीकानेर प्रदेश का जनजीवन धीरे-धीरे संगठित होने लगा। राठौड़ी निरंकुशता की नींव हिलने लगी और बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में ही उत्तरदायी शासन की स्थापना हुई।

स्वामीजी राजनैतिक कोलाहल से दूर रह कर सेवा के सहारे पनपनेवाले मानवीय कल्याण की सृष्टि के समर्थक थे। उनका भारत के बड़े-बड़े राजनीतिज्ञों, विचारकों और समाज-सुधारकों से सम्पर्क अवश्य था, पर उन्होंने राग-द्वेष पूर्ण आरोप-प्रत्यारोप से गठित राजनैतिक ताने-बाने का आश्रय कभी नहीं लिया। जनतंत्र और प्रजातंत्र की जिस परिपाटी का श्रीगणेश पाश्चात्य देशों में हुआ था तथा जिसको आधार मान कर भारतीय जनजीवन संगठित होने के स्वप्न देख रहा था, स्वामीजी उस परिपाटी में नहीं पले थे। उन्हें यह स्पष्ट आभास हो गया था कि इस प्रकार की प्रतिशोधात्मक राजनीति का अंत हाहाकार में ही होगा। यही सोच कर उन्होंने सेवा का मार्ग अपनाया था। यदि सरकार उन्हें सहयोग देती तो इस प्रदेश का जनजीवन प्रबुद्ध चेतना और मंगलकामना के सहारे सेवाभाव की सहायता से भली भाँति संगठित हो जाता; किन्तु सरकार द्वारा अपनाई गई दमन-नीति ने जिस प्रतिशोध की भावना को जन्म दिया उसने एक ऐसे तूफान को पनपाया जो राजाशाही को ले डूबा। स्वामीजी की इस तूफान के बारे में क्या धारणा थी हम नहीं जानते; पर वे इस प्रकार के प्रतिशोधात्मक तूफान के समर्थक नहीं थे।

जेलयात्रा :

स्वामीजी लगभग साढ़े तीन वर्ष तक कारावास में रहे; लेकिन वहाँ रहते हुए भी उन्होंने एक आदर्श बंदी का जीवन बिताया। स्वामीजी का कद लम्बा, रंग गेहुँआ और ललाट प्रशस्त था। उनका जन्म चूरू के एक ग्राम में ही हुआ था। सफेद खद्दर की धोती, कुर्ता और साफा, यही उनकी पोशाक थी। उनकी वाणी में अपूर्व गंभीरता थी। स्वामीजी का व्यक्तित्व बड़ा आकर्षक था और उनके त्याग और बलिदान ने उनके व्यक्तित्व को और भी अधिक निखार दिया था। अत्यन्त अभावग्रस्त घर में जन्म लेकर भी वे इतने प्रभावशाली हुए कि बड़े-बड़े कोट्यधिपति उनके चरणों में झुकते थे, यह सब उनकी निस्पृहता का फल था। यदि वे चाहते तो एक बहुत बड़ी धन-राशि इकट्ठी कर सकते थे, लेकिन ऐसी बात तो कभी उनके मन में भी नहीं आई। उनकी ईमानदारी असंदिग्ध थी। यही कारण था कि मृत्यु के बाद उनके बटुए में सिर्फ डेढ़ आने की पूँजी निकली थी। जनसेवा की यह लौ उनके महा प्रयाण तक वैसी ही बनी रही, जो उनके अंतिम पत्र (पोष सुदि ५ – १८९५ वि०) से झलक रही है।

वे थे देश की इस आजादी की नींव के पत्थर जो आज विस्मृत होते जा रहे हैं: जब कि उनका चारित्रिक इतिवृत्त भावी भारत को स्वतंत्र राष्ट्र के निर्माण हेतु गीता के समान है।

विगत माघ कृष्णा ३ इस महायोगी की निर्वाण तिथि है उन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का यह अत्यल्पसार श्रद्धांजलि रूप में पाठकों को सादर समर्पित।

●

'मरु-श्री' कार्यालय
नीर-श्री, चरु (राज०)

बोध-कथा

वचन की रक्षा

—श्रीमती गिरिजा 'सुधा'

[इस बोध–कथा में जापान के सामन्तराज की कन्या ने अपने पिता के वचन की रक्षा करने में वैभव-विलास छोड़ कर जंगल की खाक छानी और अन्त में अनजाने गोली का शिकार बन कर अपने को अमर बना दिया। यह त्याग और यह निष्ठा सर्वकाल में स्पृहणीय बनी रहेगी। —सम्पादक]

एक अजीब-सी दुविधा में फँस गए थे जापान के सामन्त राज सातोमी। क्योंकि जो भी कुछ स्थिति बन गई थी वह बड़ी ही भयावहता का स्वरूप ग्रहण करने वाली थी। शत्रु-सेना ने उनके अजेय दुर्ग को लगभग सौ से भी अधिक दिनों से घेर रखा था। बीहड़ बन और पर्वत पर बनी गहरी खाईं से आवेष्ठित दुर्ग अभी भी शत्रु-सेना को चुनौती दे रहा था, किन्तु सातोमी की व्यथा रह-रह कर धधकती जा रही थी। क्योंकि दुर्ग में रसद दो-चार दिन की ही रह गई थी। सैनिकों के भूख से तड़प-तड़प कर मरने की स्थिति मुँह फाड़े खड़ी हो तो क्या किया जाए?

तभी सातोमी ने सैनिकों की युद्ध-चातुर्य क्षमता से कुछ फायदा उठाने की सोची और घोषणा कर दी: "शत्रुपक्ष के सेनापति को जीता-जागता या उसे मार कर जो भी उसका सिर ले आएगा, मैं उसे अपनी जायदाद सहित एक मात्र कन्या से विवाह करके पुरस्कृत करूँगा।"

सभी सैनिक इस पुरस्कारके लिए अपना-अपना दिमाग लड़ाने में संलग्न हो गए।

अभी शाम भी नहीं हो पाई थी कि हिमपात शुरू हो चुका था। सामन्तराज सातोमी आज बड़े ही उद्विग्न थे। होते भी क्यों नहीं, उनका प्राणों से भी प्यारा कुत्ता 'जात सुपूसा' गायब था। जासूसी में प्रख्यात यह शिकारी कुत्ता स्वामिभक्ति की एक अजीब मिसाल था। इसलिए सातोमी को चिन्ता होना स्वाभाविक ही था। रातभर बरफ गिरती रही और सातोमी पर चिन्ता का पाला रह-रह कर गिरता रहा।

दूसरे दिन सातोमी ने अपने सहनायकों की एक सभा आमन्त्रित की। उनमें मंत्रणा शुरू हुई कि दुर्ग की रक्षाके लिए अब क्या नीति आयोजित की जाए। तभी जात सुपूसा रक्त से लथपथ बालों-वाला सिर लिए वहाँ पर आ पहुँचा। वह सिर शत्रु-सेना के सेनापति का था। लोगों ने गौर से देखा और वे आश्वस्त हो गए कि सिर शत्रु-पक्ष के सेनापति का ही है। दुर्ग में हर्ष की लहर दौड़ गई! सैनिक लोग दुर्ग का द्वार खोलकर शत्रु-सेना पर टूट पड़े। नायक विहीन शत्रु-सेना देखते ही देखते छिन्न-भिन्न हो उठी! कुछ बचे, कुछ मरे, कुछ भाग खड़े हुए।

सातोमी प्यार से कुत्ते को थपथपा रहा था। विपत्ति कट चुकी थी, किन्तु उसके चेहरे पर हर्ष की एक रेखा भी नहीं खिंच पाई! उसे अपनी घोषणा याद हो आई और प्रतिष्ठा-रक्षक वह कुत्ता देखते ही देखते उसकी आँख की एक किरकिरी बन उठा। दृढ़प्रतिज्ञ सातोमी एक अजीब सी व्यथा से व्यथित हो उठे। वे मन ही मन बुदबुदाये: "छिः—

छिः कितनी अभागी है मेरी बेटी! अरे, यह कुत्ता सेनापति का सिर लाकर मेरी जायदाद और पुत्री का स्वामी बनने का पात्र हो उठा ? कितना वीभत्स और दुर्भाग्य का क्षण था वह, जब मैंने यह प्रतिज्ञा की थी।"

अब प्राणों से भी प्यारा वह कुत्ता सातोमी को शत्रु से भी अधिक भयावह लगने लगा। घृणा और द्वेष के भाव प्रवल होने लगे। वह मूक पशु अपने स्वामी के पास जाता, तो प्यार के बजाय तिरस्कार पाने लगता। वह जब भी सामने आता, उसे वे घृणापूर्वक मार कर भगा देते। इस बदले हुए भाव को देखकर अन्य सैनिक भी उसका तिरस्कार करने लगे। तभी एक दिन सातोमी ने आदेश दिया : "कल से इस कुत्ते को भरपेट भोजन नहीं दिया जाए। कोई इसे थपथपाए नहीं, इसका तिरस्कार करे ताकि यह हमारा पिण्ड छोड़कर कहीं भाग जाए।"

सैनिकों ने अपने प्रधान का आदेश "ब्रह्मवाक्य" मानकर उसी के अनुरूप आचरण शुरू कर दिया! परन्तु राजकुमारी को पिता का यह आदेश बड़ा ही अजीब लगा। एक तो वह शत्रु के सेनापति को मारकर हम सवका मुक्तिदाता, संकटमोचक है और उसकी यह उपेक्षा। और तभी राजकुमारी को पिता की घोषणा का स्मरण हो आया। वह सोचने लगी : "मेरे पिताजी और पूरे राज्य की आन-बान, शान को अक्षुण्ण बनाए रखने वाले इस उपकारी पशु की रक्षा करनी चाहिए। पिताजी मोह के वशीभूत होकर अपनी प्रतिज्ञा से मुँह मोड़ रहे हैं; किन्तु मुझे तो अपने पिता के वचन की रक्षा करनी ही चाहिए; किन्तु यहाँ यह सम्भव कैसे हो पाएगा। मैं यह विचार उनके सम्मुख रखूँ तो वे पुत्री-मोह और क्रोध के वशीभूत होकर कुत्ते को ही गोली नहीं मार दें।"

इसी तरह के विचारों के ऊहापोह में वह कुछ क्षण सोचती-विचारती रही। उसने सोचा कि यहाँ मेरी भावना कोई भी समझेगा नहीं। इसलिए कुत्ते को साथ लेकर कहीं अन्यत्र चला जाना ठीक रहेगा। उसने तुरन्त ही एक जोड़ी कपड़े और कुछ धर्मग्रंथ लेकर कुत्ते के साथ ही साथ पिता का शिविर सदा के लिए छोड़ दिया। जाते-जाते वह पिताके लिए एक चिट छोड़ गई, जिसपर उसने लिखा था : "आपके वचन की रक्षाके लिए।"

सातोमी पर यह दूसरा वज्रप्रहार था। सारे दुर्ग में कुहराम मच गया। क्योंकि कुत्ता और राजकुमारी दोनों ही गायब थे। चारों दिशाओं में सैनिकों को दौड़ाया गया, पर उनके हाथ कुछ भी तथ्य नहीं लग सका। वे रो-पीट कर रह गए।

राजकन्या और जात सुषूसा गहन वन में एक गुफा में जाकर टिक गए। राज-सुख में पली राजकुमारी अब तपस्विनी बनने की हूक लिए धर्मग्रन्थों के स्वाध्याय, चिन्तन-मनन में लग गई। वे दोनों वनोपज से जो कुछ मिल जाता, खा लेते और इस प्रकार से मस्ती से अपना समय काटते रहते। कुत्ता भी छाया की तरह उस कन्या की रक्षा में सन्नद्ध रहता।

धीरे धीरे राजकन्या तथागत के चरणों में प्रार्थना करती : "देव, इस स्वामिभक्त प्राणी को अपने पुनीत चरणों में शरण दो। प्रभो, इसे जन्म-मृत्यु के मोहपाश से मुक्त करो।" इसी तरह की प्रार्थनाएं वह करती रहती।

इस तरह एक लम्बा अन्तराल बीत गया। समय पंख लगाकर उड़ता रहा, सातोमी की आत्मा भी जरा शान्त हो चली थी। तभी एक दिन उसकी सेना का एक सैनिक शिकारके लिए उस वन में पहुँच गया। उसने काफी दूर से जान सूपूसा को देखा। अपने सेनापति के जासूस कुत्ते को देखते ही सैनिक को सारा घटना-चक्र समझ में आ गया। उसने तुरन्त अपनी शिकारी बन्दूक सीधी की और सोचने लगा कि इस दुष्ट कुत्ते के कारण ही राजकन्या कहीं चली गई है और हमारे सेनापति जो पुत्री-शोक में ही व्यथित रहते हैं।

और आगले ही क्षण सैनिक की बन्दूक से एक गोली मचल उठी। कुत्ता भूमि पर लुढ़का और

चीत्कार वन में गूँज उठी। दौड़कर सैनिक वहाँ पहुँचा तो देखा कि उसकी गोली से कुत्ता और कन्या दोनों ही परलोक जा चुके हैं। उसने देखा कि कुत्ते की ओर में बैठी राजकन्या तपस्विनी के वेश में बौद्ध-ग्रन्थों के स्वाध्याय में तन्मय थी।

सैनिक पिता के वचन की रक्षा करनेवाली उस पवित्र कन्या के इस तरह अपने हाथों से मर जाने से बड़ा ही व्यथित हो उठा। प्रायश्चित करने के लिए उसने मन ही मन निश्चय किया और बौद्ध भिक्षुकों की तरह रह कर जन-मन में धर्म-क्रांति के जागरण अभियान में लग गया।

सातोमी ने सारी घटना सुनी तो वह दो बूंद आँसू टपकाता रो पड़ा! स्वामिभक्त जासूस कुत्ते की कर्त्तव्यपरायणता पर, वचननिष्ठा की मर्यादिक कन्या के त्याग पर और सैनिक की पश्चाताप भावना तीनों ही उसके लिए वरेण्य थी। ●

प्रेरणा प्रकाशन गृह
१७/२३६, ब्रजराजपुरा, कोटा–३२४००६ (राज)

निवास

क्या प्रभात रात के हृदय को अपनी छाती से लगाये रहता है?

क्या कभी समुद्र डूबे हुए मृत शरीरों की परवाह करेगा?

प्रभात के समान मेरी आत्मा भी मेरे अंतरंग से उठती है--

--नंगी और स्वतंत्र

और आलोड़ित समुद्र के समान मेरा हृदय भी इंसान और संसार के नाशवान अवशेषों को बाहर फेंक देता है।

मैं अब उससे चिपटा नहीं रहूँगा, जो मुझसे चिपटा रहेगा;

बल्कि उसके हृदय में निवास करूँगा, जो मेरी पहुँच से बाहर है।

--खलील जिब्रान

● सूक्तिसुधा ●

राग दर्पे च माने च द्रोहे पापे च कर्मणि,
अप्रिये चैब कर्तव्ये, चिरकारी प्रशस्यते।

[राग, अभिमान, परद्रोह, पाप और अप्रिय काम करने में जो विलंब करता है, वह प्रशंसनीय है।]

●

आत्मायते गुणाधाने नैर्गुण्यं बचनीयता,
दैवायत्तेषु वित्तेषु पुंस : का नाम नाच्यता।

[गुणी बनना अपने वश की बात है। इसलिए यदि कोई गुणहीन बने, तो वह उसकी भूल कही जाएगी। धन का मिलना या न मिलना दैवाधीन है। उसमें निर्धन का कोई दोष नहीं है।]

●

श्रूयतां धर्म सर्वस्वं श्रुत्वा चैव अवधार्यताम्।
आत्मन : प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।

[धर्म का यह सार सुनो और इसे सुनकर ध्यान में लो कि जो आचरण (व्यवहार) अपने को पसन्द न हो, उसे दूसरे के साथ न करो।]

विचार-परक

परमहंस को पहचानिए

•

—श्री जगवीर सिंह वर्मा
विशारद

[श्री वर्माजी एक अच्छे उपन्यास–लेखक और कहानी–लेखक हैं। आपकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

प्रस्तुत लेख में अन्तर्व्याप्त एकात्म ब्रह्म को पहचान कर प्रेम और एकता की भावना विकसित करने की सलाह दी गई जो पठनीय है। —— सम्पादक]

मैं नहीं जानता हूँ कि अब तक की जिन्दगी में आपको किसी परमहंस आदमी से भेंट करने का सुयोग मिला है या नहीं! अलबत्ता एक बात जरूर जानता हूँ कि इस नाम में चुम्बकीय शक्ति होती है। परमहंस आदमी का नाम सुनते ही आप श्रद्धा से भर जाते हैं, चौंक जाते हैं, उसके दर्शनों के लिए लालायित हो उठते हैं, उससे कुछ पाने की इच्छा हो उठती है, उसके पैर छूनेके लिए उत्सुक हो उठते हैं और कहीं बहुत भीतर चाहे उसका पता चल सके या न चल सके वैसा होने की आकांक्षा से भी भर उठते हैं। सत्य यह है कि वह परमहंस आपके भीतर भी हूबहू उसी शक्ल में और उसी अर्थ में छिपा बैठा है। बस, आपके पहचानने भर की देर है।

हमारा प्रयास :

कितनी अजीब बात है कि आप अपने भीतर के परमहंस को पहचानने की दिशा में कुछ नहीं करना चाहते। बस रेडीमेड परमहंस के दर्शन मात्र करके अपनी अपेक्षाओं को पूरा कर डालना चाहते हैं। जबकि सत्य यह है कि वह कभी संभव नहीं हो पाता और आपके प्राण सदैव फिर-फिर कर उसी इच्छा-आकांक्षा-अपेक्षा से काँपते रहते हैं और कोई परमहंस उसकी तृप्ति नहीं कर पाता —— जब तक आप अपने भीतर के परमहंस को पहचानने की दिशा में कोई प्रयास नहीं करेंगे और दूसरे कदम नहीं उठाएँगे, दूसरे परमहंस से आपकी कोई भी अपेक्षा पूरी होना सम्भव नहीं है —— कोई परमहंस आपके लिए उपयोगी नहीं हो सकता है और शायद यही वह एकमात्र वजह है जिससे आदमी तमाम जीवन एक तरह के अधूरेपन से छटपटाता है। दूसरे किसी परमहंस का यदि कोई उपयोग हो सकता है तो केवल यह कि वह आपको भी अपनी उपस्थिति से वैसा होने का बोध दे दे, अभीप्सा जगा दे। उस संभावना के प्रति सजग कर दे और आप अपनी यात्रा पर चल पड़ें। लेकिन हम तो सत्य को भी उधार चाहते हैं, रेडीमेड चाहते हैं और चेतना–जगत् में यह एकदम असम्भव बात है। तो इस दिशा में पहला सूत्र कि आप पूरे यकीन के साथ यह स्वीकारें कि आप भी उतने ही परमहंस हैं जितना कि कोई है, कभी हुआ है या कभी हो सकता है। उससे सेन्टीमीटर भर भी कम नहीं हैं।

भीतर की ज्योति :

अब बातचीत आगे बढ़ाने से पहले हमें यह समझ लेना चाहिए कि आखिर इस परमहंस होने का अर्थ क्या है? दरअसल यह एक पारिभाषिक

शब्द है। हंस के साथ एक पुराणकथा चलती है कि वह दूध और पानी को अलग-अलग करने में समर्थ है। है या नहीं, यह मेरा कोई प्रत्यक्षतः अनुभव नहीं है और उसका कोई प्रयोजन नहीं है। यह शाब्दिक है। यह 'हंस' शब्द उपयोगी अर्थ रखता है जो दूध और पानी को अलग करने में समर्थ है। यानी परमहंस हम उसे कहते रहे हैं, जो सार और असार को अलग करने में समर्थ है, जो सत्य और असत्य को अलग करने में समर्थ है। सार-असार को अलग करें, न करें, सत्य-असत्य को अलग करें, न करें यह सर्वथा आपकी मर्जी पर निर्भर करता है, लेकिन आप इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि आप जब असत्य बोलते हैं तब आपके भीतर कोई जानता है कि यह असत्य बोला जा रहा है। और जब आप सत्य बोलते हैं, तब भी आपके भीतर सतत कोई यह जानता रहता है कि यह सत्य बोला जा रहा है। लेकिन क्या आपने कभी यह खयाल किया है कि भीतर किसी बिन्दु पर आप अपने और अन्य चीजों के फासले को सदा जानते हैं? यह बात दूसरी है कि आप अपने को समझा लेते हैं, धोखा दे लेते हैं और आदत बना लेते हैं भ्रान्ति की। फिर भी कितनी ही गहरी आदत हो, भीतर सदैव एक दीया जलता रहता है जो बताता है कि यहाँ प्रकाश है और यहाँ अंधेरा। यह बात सर्वथा अलग है कि अंधेरे में हम डर जाते हैं या मूर्च्छित हो जाते हैं और प्रकाश में फैल जाते हैं, जाग जाते हैं। लेकिन उस दीये का, उस ज्योति का नाम परमहंस है और वह सबके भीतर है। चोर के भी और मैजिस्ट्रेट के भी, वकील के भी। उसके अनुपात में कोई भेद नहीं है। वह पापी के भीतर भी उतना ही है जितना पुण्यात्मा के भीतर। जो भी फर्क है वह केवल उस परमहंस को नकार देने का है, झुठला देने का है। जो फर्क है वह उस ज्योति का, परमहंस का नहीं है। हम अपने को प्रवंचना में डाले हुए हैं। यह बिलकुल हमारी मर्जी के ऊपर निर्भर है कि कब तक हम वैसा किये रहते हैं, बाकी जब चाहें जिस क्षण इस प्रवंचना को तोड़ सकते हैं। इसलिए सही अर्थों में कोई आदमी कभी पूरी तरह पापी नहीं हो पाता, बुरा नहीं हो पाता। बुरे से बुरे व्यक्ति के भीतर भी भलाई के, अच्छाई के अंश विद्यमान रहते हैं और पापी के भीतर भी पुण्यात्मा का अंश रहता है।

मैं एक डाका डालने वाले आदमी से परिचित था, जो बन्दरों को गुरधानी और चीटियों को शक्कर खिलाता था। वह देवी का भक्त था। एक बार पुलिस वारण्ट लेकर उसे पकड़ने आई, वह पूजा कर रहा था—चेहरे पर कोई शिकन नहीं, बड़े धीरज से बोला— "तो देवीमैया की आज्ञा जेल जाने की हो गई है ठीक, लेकिन दरोगा साहब पूजा पूरी करके चलेंगे!" और इस तरह पुलिस को पन्द्रह-बीस मिनट उसके घर पर पहरा देना पड़ा था, जब तक कि वह पूजा के काम से निवृत न हुआ। इसलिए शायद आप लोगों ने भी ऐसी घटना घटते देखी होगी कि भले और अच्छे समझे जाने वाले आदमी ने हत्या कर दी, बलात्कार कर दिया और बुरा समझा जाने वाला आदमी क्षणमात्र में साधु हो गया। यह इस बात का सूचक है कि जीवन में पूरी तरह से कभी कुछ संभव नहीं है, परिवर्तन सदा संभव है और उसके लिए कोई समय-सीमा नहीं है।

सार-असार :

तो वह जो परमहंस है, वह सबके भीतर है, वह नष्ट नहीं होता है, उसे किसी भी क्षण पाया जा सकता है; लेकिन हम अपने परमहंस का कभी उपयोग ही नहीं करते। सार-असार को कभी अलग ही नहीं करते। जान-बूझ कर अपने परमहंस के विरोध में विपरीत किए चले जाते हैं। हमें उस अपने भीतर के परमहंस को जगाना चाहिए, वह सोया हुआ है। हम जिस चीज़ का उपयोग करते हैं वही प्रगाढ़ हो जाती है, प्रखर हो जाती है,

तेजस्वी हो जाती है और जिन चीजों का उपयोग नहीं करते वे मन्द पड़ जाती हैं, उसके चारों तरफ अनुपयोग का एक आवरण, एक व्यवस्था निर्मित हो जाती है। हम अपने जीवन में इस परमहंस का जरा भी उपयोग नहीं करते। हम कभी सार और असार में फर्क नहीं करते और धीरे-धीरे भूल ही जाते हैं कि हमारे भीतर वह बैठा है जो जहर और अमृत को अलग कर सकता है। दरअसल, हम जहर को चुन ही इसलिए पाते हैं क्योंकि वह भी अलग करने वाला है, वह करीव-करीब निष्क्रिय पड़ा है। नहीं तो भला जहर कोई क्यों कर चुनेगा? यदि आपको दिखाई पड़ जाए कि सार क्या है और असार क्या है तो क्या असार को चुनेंगे? सार को छोड़ देंगे? .....

सुकरात कहता था कि ज्ञान ही आचरण है और ज्ञान ही क्रान्ति है। अगर समझ में आ गया कि यह नकली सिक्का है, असली नहीं तो उसे तिजोरी में सम्हाल कर कौन रखेगा?

दीपक जलाइए :

जिन्दगी की सारी भूल यही है कि हमारे भीतर का परमहंस सोया हुआ है और हम किसी जागे परमहंस के पैर पकड़ने को तो उतावले हैं; लेकिन उसे जगानेके लिए जरा भी प्रयासरत नहीं हैं। एक बार वह जाग जाए तो फिर गलत को छोड़ना नहीं पड़ता, वह छूट ही जाता है, सही को पकड़ना नहीं पड़ता, पकड़ना हो ही जाता है। जैसे रोशनी के होते ही अंधकार अपने आप मिट जाता है, उसे मिटानेके लिए और कोई कोशिश नहीं करनी पड़ती। केवल दीया जलाना पड़ता है —बुझा दीया हाथ में हो और आप जलाएँ नहीं, बस वही स्थिति आपकी है। तो आइए, अपने भीतर छिपे परमहंस को पहचानें।

●

ग्राम पो० – **बिसारा**
जिला – अलीगढ़ (उ० प्र०)

• नानक वाणी •

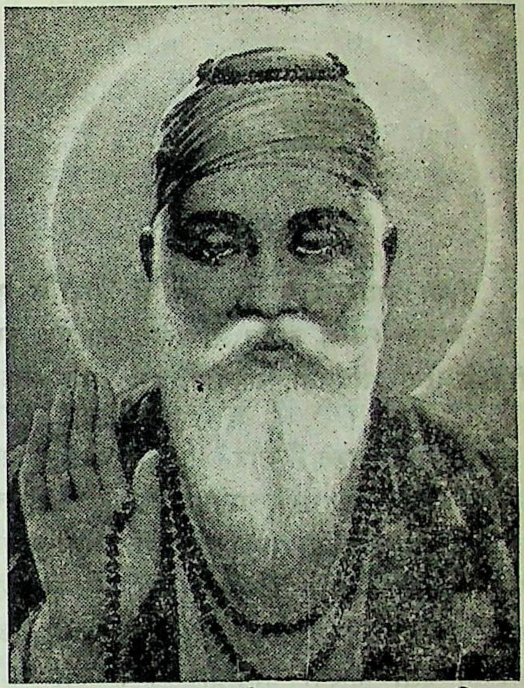

पूंजी साचउ नामु तू,
अखुटउ दरबु अपारु ।
नानक बखरउ निरमउ,
धंनु साहु बापारु ।।

[तुम प्रभु के नाम की पूंजी को सम्हालौ यह द्रव्य कभी घटने वाला नहीं है । नानकजी कहते हैं कि नाम की पूंजी बिखरे को समेट देती है । इस धन का व्यापार धन्य है ।]

धनवंता इवही कहै,
अवरी धन कउ जाउ ।
नानकु निरधनु तितु दिनि,
जितु दिनि बिसरै नाउ ।।

[धनवान यही कहते हैं कि और अधिक धन हो जाए । उसी दिन तुम धनहीन बन जाओगे, जिस दिन प्रभु का नाम भूल जाओगे।]

जीवन-परक

जीने की कला

—डा० शेखरप्रसाद
एम० ए०, पी-एच०डी०

[श्री प्रसादजी महाविद्यालय में हिन्दी के एक प्राध्यापक हैं और कुशल लेखक भी हैं। प्रस्तुत लेख में जीवन और कला का एक दूसरे का पूरक माना गया है। अतः हमें उत्तम जीवन जीने के लिए पवित्रता, सहयोग, प्रेम आदि श्रेष्ठ गुणों का आवाहन करना चाहिए। —सम्पादक]

जीना सभी चाहते हैं और यह बात स्वाभाविक भी है। भला कौन नहीं चाहेगा कि वह जीवित रहे। पर क्या; किसी प्रकार से भी जीना-जीना है? निषेधात्मक प्रक्रिया जीवन नहीं, जीवन की हीनता है। कला का क्षेत्र जीवन से अलग है, कुछ लोगों की ऐसी धारणा सामन्ती युग में बनी थी। जीवन के प्रमुख उद्देश्यों से कला का कोई विकसित सम्बन्ध नहीं था। उस समय ही कला — कला के लिए बनी थीं। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में पाश्चात्य साहित्यिक जीवधारी केवल कला को कला के लिए मानते थे। इस तरह के आलोचक विचारक वाल्टेयर पेट्ट थे। चिन्तक के दृष्टिकोण को व्यापक बनाने पर यह बात समूलरूप से अनुत्तरदायित्व-सी लगती है कि क्या कला जीवन से अलग है? अलग कला कलाके लिए है, तो जीवन का नितान्त अभाव ही उसमें रहता है।

कला क्या है?

कला विचारों के प्रवहन की विद्या है। वह कटी हुई कोई प्रणाली नहीं है। आज के साहित्यकार ने इसपर पूर्णरूप से बोध कर लिया है कि साहित्य और कला का अक्षुण्ण सम्बन्ध जीवनके लिए बना है, चाहे वह जीवन वर्तमान का बोध करता हो, भविष्य का प्रतिबोधक हो अथवा आगामी पीढ़ी के लिए दस्तावेज हो। अब प्रश्न उपस्थित होता है कि किस जीवन को कलात्मक कहा जाए? क्या घोर भोगवाद में लगे हुए जीवन को जीवन की कला माना जाए या कुछ भी प्राप्त न होने पर आदिम नग्नता धारण करने वाले जीवन को जीवन की कला माना जाए। या कुछ भी प्राप्त न होने पर आदिम मग्नता धारण करने वाले जीवन-को कलात्मक जीवनमाना जाए दोनों ही जीवन के निषेध हैं — इन दोनों से जीवन का वास्तविक और सात्विक प्रतिबोधन नहीं मिल सकता। अमेरिका का जीवन जो भोगवाद के चरमोत्कर्ष पर पहुँचा हुआ है; न तो वह पूंजीवादी लोगों को ही कलात्मक जीवन का सहारा दे सकता है और न ही हिप्पियों द्वारा प्रचलित जीवन ही सच्चा जीवन कहा जा सकता है। एक ओर पर्वत पर चढ़कर हरी-भरी घासों पर पैर रखने का अवसर नहीं मिलता है और दूसरी ओर हरी-भरी घासों पर चल कर उन घासों को रौंदना है — कलात्मक जीवन का आनन्द नहीं उठाना है।

गाँधीजी की कला-पूजा :

भौतिकवादी या यों कहें कि मार्क्सवादी विचारक और अनुसरणकर्ता यह दलील पेश करें कि भौतिकवादी धुरी पर ही जीवन अड़ा है और वही

सर्वसामान्य रूप से लौकिक जीवन को कलात्मक बना सकती है। अप्रासंगिक नहीं तो यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि यह जीवन का अधूरा दृष्टिकोण है। केवल भौतिकता में ही जीवन की कलात्मकता नहीं रहती। जीवन की कलात्मकता तो भौतिकवाद और अध्यात्मवाद के सम्मिश्रण में होती है। यहीं पर आकर हम गाँधीवादी विचारधारा को जीवन की कला स्वीकार करने को बाध्य हो जाते हैं। जैसा कि मार्क्स ने कहा है कि जीवन को सुखी बनानेके लिए सबसे बड़ा उपयोगी शस्त्र वर्ग-संघर्ष है; लेकिन इस वर्ग-संघर्ष का अन्तिम लक्ष्य क्या है? इसका अन्तिम लक्ष्य है वर्ग-विहीन जीवन की स्थापना...। पर क्या इस सत्यता से अस्वीकृति मिल सकती है कि एक दूसरे का रक्त बहा कर वर्ग-विहीनता आ सकती है। वर्ग-विहीनता इस कारण से नहीं आती। वर्ग-विहीनता आती है मानवीय दृष्टिकोण के विस्तार से। गाँधीजी वर्ग-विहीन मानवीय धारा को ही उत्तम मानते हैं क्योंकि इसमें कलात्मक जीवन की मान्यताएँ है; लेकिन मार्ग जिसके द्वारा इस कलात्मक जीवन की प्राप्ति हो सकती है, मार्क्स के विपरीत है। अर्थात् उद्देश्य तो एक हैं, प्राप्ति के साधन भिन्न हैं।

आचार्य रजनीश जी गांधीजी पर उँगली उठाते हैं, अस्वीकृति में उठे हाथ द्वारा गाँधी के सिद्धान्तों का तार्किक विवेचन अस्वीकृतिके लिए इस प्रकार से रख सकते हैं जो जीवन को कलात्मक बना सके। नहीं...नहीं...! अन्त में उन्हें इसी गाँधीवादी कलात्मक जीवन की परिकल्पना का व्यावहारिक आकलन करना होगा। यह सम्भव है कि कुछ लोग गाँधीवादी विचारधारा को केवल ढकोसला मानें। क्योंकि उन्हें जीवन की कला का कोई ज्ञान नहीं हो, तो उसके लिए क्षमा मानवीय कलात्मक जीवन ही दे सकता है। वस्तुतः गाँधीवादी न तो मार्क्सवाद के अन्त पर है न तो भगवान् रजनीश के मतों से भिन्न है और न ही ये विचारक उनसे भिन्न हैं। भिन्नता अगर है तो केवल अपने-अपने दृष्टिकोणों के शाब्दिक हेर-फेर में...। अगर हमें भारतीय और विश्व नागरिक के रूप में जीना है, तो गाँधीवादी जीवनधारा को स्वीकार करना पड़ेगा। सादगी और उच्चता केवल प्राप्त नहीं हुआ करती, वह तो आन्तरिक भी हुआ करती है। गाँधी ने जीवन की यही कला सिखाई है। केवल लंगोटी लगाने की कला नहीं सिखाई है।

अन्त में, जीने की कला सबमें आनी चाहिए। सबसे उत्तम बात जीवन में पवित्रता की है। पवित्र उद्देश्य से ही जीवन पवित्र हो सकता है; लेकिन अगर उद्देश्य दिखाने में ही पवित्र हो, आन्तरिक कलुष इतना चढ़ गया हो कि उसको साफ करना कठिन हो तो यह जीवन की गन्दगी है—कलात्मक जीवन सबके साथ सहयोग, प्रेम, अपने, कार्य के प्रति निष्ठा, मूल्यवान मानवीय मूल्यों की रक्षा, सभी लोगों के प्रति सहिष्णुता, यही जीवन के मूल्य हैं और इनकी रक्षा और इनके अनुसार चलना ही जीने की कला है। ●

आर० एस० टैंक
पोस्ट – **लहरियासराय-२४६००१**
भागलपुर–३ (बिहार)

● **संगीत** ●

[संगीत-कला का प्रतिनिधि सचित्र मासिक]

साधारण अंक का मूल्य २ रु.
वार्षिक मूल्य २२ रु.

नमूने का अंक २ रु. का डाक टिकट भेजकर प्राप्त करें।

प्राप्ति-स्थान :
संगीत कार्यालय, हाथरस (उ. प्र.)

विवाह कानून और समाज सुधार

•

—श्री बद्रीप्रसाद अग्रवाल

[श्री अग्रवालजी अग्रवाल महासम्मेलन के उपाध्यक्ष हैं और अच्छे विचारक हैं।

स्वतंत्र भारत के अनेक अनिष्टों में विवाह और दहेज भी समाज रूपी देह के कोढ़ हो गए हैं। इस रोग से मुक्त होने के लिए जो दवाएँ बताई गई हैं, वे बड़ी उपयोगी और सामयिक हैं। इसे ध्यान से पढ़िए और आचरण कीजिए। —सम्पादक]

सम्पूर्ण क्रान्ति के अन्तर्गत परम्परा से चली आई सामाजिक व्यवस्थाओं का आधुनिकीकरण भी एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। इसे संक्षिप्त में यों वर्णित किया जा सकता है:

(१) सादगीपूर्ण विवाह,

(२) समाज तथा राष्ट्रघाती परम्परा, प्रदर्शन एवं दहेज आदि पर प्रतिबंध,

(३) परिवार नियोजन।

समाज का महत्त्व:

समाज राष्ट्र का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अंग होता है। किसी देश की उन्नति अच्छे समाज तथा अच्छे नागरिक पर ही निर्भर होती है। देश का नागरिक चाहे जितना प्रबुद्ध और समझदार हो, रूढ़िवादी सामाजिक मान्यताएँ उसके मार्ग का रोड़ा बन उसे कायर एवं राष्ट्रघाती बनने पर मजबूर चर देती हैं। यहाँ यह कहा जा सकता है कि प्रबुद्ध वर्ग ही यदि हिम्मत से काम ले, तो समाज बदल सकता है और सुधर सकने की संभावना हो सकती है। सामाजिक जीवन का अनुभव यह बताता है कि व्यक्ति के बदलने से समाज नहीं बदला करता, अपितु समाज की चेतना से ही उसमें क्रान्ति लाई जा सकती है। इस विषय में एक उदाहरण विचारणीय है।

एक सज्जन:

एक सज्जन तीस वर्षों तक समाज से लोहा लेते रहे कि बारात में जाना व्यर्थ है, बड़ी-बड़ी दावतें व्यर्थ हैं, दहेज-दिखावा बुराई की जड़ है। वे कभी बारात में जाते तो साथ में अपना भोजन ले जाते, कभी लड़की या लड़के वाले के यहाँ कुछ भी न लेते पर उससे वे दूसरों को नहीं बदल पाए, बल्कि लोगों ने उनकी मखौल उड़ाना प्रारंभ कर दिया और लोगों ने उनका साथ छोड़ दिया। मजबूर होकर उन्हें अपने फैसले पर पुनः विचार करना पड़ा और "जैसी चले बयार पीठ तब तैसी कीजे" वाला रास्ता अपनाना पड़ा। यह अनुभव केवल एक व्यक्ति का नहीं है, सैंकड़ों ऐसे पीड़ित और समाज के सताए पुरुष आपको हर जगह मिलेंगे, जिन्हें समाज-सुधार की दिशा में आगे बढ़ने पर निरुत्साहित किया जाता है, अपमानित किया जाता है।

आज आवश्यकता है ऐसे संगठन की जो इन समाज-विरोधी ताकतों को धराशायी कर आगे बढ़ने का संकल्प लें और समाज या राष्ट्र के हित में बने कार्यक्रमों को क्रियान्वित करें; परंतु यह समाज-सुधार चंद व्यक्ति नहीं कर सकेंगे। सरकार चाहे जितना कानून बना ले आज भी गाँवों में अशिक्षा,

बाल-विवाह का बोलबाला पूरी तरह फैला हुआ है। गाँवों में उनकी अज्ञानता जहाँ सामाजिक उन्नति में अवरोधक बनी हुई है, शहरों में वहीं काले धन की बढ़ोत्तरी के हाथों समाज तथा राष्ट्र-विरोधी शक्ति बनी हुई है। इन्हें नष्ट करना है, तो सम्मिलित प्रयास ही सफल हो सकेंगे, व्यक्तिगत प्रयास नहीं।

हमारा कदम :

अत: सरकार ऐसे व्यक्तियों का सार्वजनिक सम्मान करे, जो समाज-हित में आगे बढ़कर रूढ़िवादी दीवारों को तोड़कर एक नया मार्ग प्रशस्त करते हैं।

दूसरा सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य यह होना चाहिए कि जो विवाहित कानून का विरोध करते हैं, उनके लिए तात्कालिक दण्ड-विधान की व्यवस्था होनी चाहिए और यह देखना चाहिए कि अधिकारी वर्ग कड़ाई से इन नियमों का पालन करे।

विद्युत-व्यवस्था, सजावट आदि पर प्रतिबंध लगानेके लिए निश्चित बिजली का कोटा निर्धारित होना चाहिए। बाजे-गाजे, आतिशबाजी पर प्रतिबंध होना चाहिए। भौंड़े नृत्य बंद होने चाहिए। किसी को भी किसी प्रकार की रियायत न देने के आदेश का सख्ती से पालन किया जाना चाहिए।

दावतें, दहेज, दिखावा इन्हें समूल नष्ट करने की दिशा में एक ही उपाय कारगर हो सकता है, वह है प्रत्येक घर, जहाँ विवाह होने को हो, वहाँ सरकारी अफसरों की नियुक्ति एवं जासूस विभाग की सक्रियता। सामाजिक संगठनों के उड़नदस्ते भी इस कार्य को करने में शासन और पुलिस की सहायता कर सकते हैं।

दहेज आज सर्वाधिक समाजघाती और राष्ट्रघाती परम्परा बन चुका है। इसको बढ़ावा देना काले धन को बढ़ावा देना है। तमाम सामाजिक कुरीतियों की जड़ दहेज, लेन-देन, दिखावा है। इन्हें नष्ट करना है, तो समाज को संगठित होना पड़ेगा। संगठित समाज एक नए वैवाहिक नियमों की परम्परा डाले, जो सम्पूर्ण देश में अनिवार्य रूप से लागू की जा सके। जब तक समस्त हिंदू-समाज की एक समान वैवाहिक परम्परा नहीं होगी, समाज-सुधार की कल्पना को साकार रूप देना असंभव नहीं तो दुष्कर अवश्य है। इस दिशा में यदि कोई समुचित कार्य कर सकता है, तो वह है राज्य सरकार।

अनुभव यही कहता है कि ७५ प्रतिशत जनता सामाजिक रुढ़ियों से आक्रान्त सुधारके लिए तड़प रही है, केवल कुछ धनीमानी अथवा अन्धविश्वासी रूढ़िवादी प्रदर्शनकारी व्यक्तियों ने समूचे समाज तथा राष्ट्र को अपनी समाजघाती नीतियों में जकड़ रखा है। सुधार की दिशा में उठे प्रत्येक कदम का विरोध करने में ही इनकी शक्ति व्यय होती है। सरकार यदि इन कुछ व्यक्तियों का उपाय कर समाज को त्राण दिला सके, तो समाज-सुधारक निःसंदेह इस दिशा में अपना क्षेत्र विस्तृत कर सकेंगे।

हर्ष का विषय है कि शासन का ध्यान दहेज-उन्मूलन की ओर गया है और इस ओर कुछ नियम भी बनाये गए हैं और कड़े कदम उठाए जा रहे हैं। आवश्यकता है कि वैवाहिक नियमों की ओर भी ध्यान दिया जाकर उन्हें भी सरलीकृत करने की दिशा में प्रयत्न किया जाए और वैवाहिक रस्में संक्षिप्त और सादगीपूर्ण हों, जिसमें एकदूसरे के प्रति प्रतिस्पर्धा उत्पन्न न होकर, प्रेमभाव और मैत्रीपूर्ण वातावरण बनाया जा सके।

सीमित परिवार :

परिवार नियोजन देशोन्नति की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कड़ी है। इस दिशा में भी सामाजिक तथा व्यक्तिगत चेतना की आशा निर्मूल है। जब तक अनिवार्य परिवार नियोजन देश का कानून नहीं बनेगा, इस देश की जनसंख्या-नियंत्रण का ढोल पीटना राष्ट्र का मखौल उड़ाना ही रहेगा। जिस प्रकार शासन ने अपने विभिन्न विभागों में सीमित परिवार के कर्मचारियों को बढ़ोत्तरी देकर प्रोत्साहन दिया है और बड़े परिवार के लोगों को निरुत्साह किया है, हमें भी सामाजिक स्तर पर बड़े परिवार के लोगों के प्रति अनादर और सीमित परिवार के लोगों का आदर करने का वातावरण निर्मित करना होगा। ●

अखिल भारतीय अग्रवल सम्मेलन
साउथ एक्स्टेंशन भाग-१
नई दिल्ली ११०००१

112587

मानवता

— श्री सलीम शेख
बी. ए.

[श्री शेखरजी एक अच्छे विचारक और लेखक हैं। पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से खूब पहचाने जाते हैं।

प्रस्तुत सत्य-कथा में रेलवे के गेटमैन की प्रखर तत्परता की प्रेरक सत्य-कथा सचमुच मानवता का मस्तक ऊचा कर देती है। ——सम्पादक]

बात उन दिनों की है जब मैं रतलाम में था। मेरे मित्र पन्नालाल पाठक के साथ घटित यह घटना है। रेलवे का एक साधारण कर्मचारी गेटमैन पन्नालाल पाठक था। उसका काम रेलगाड़ी आने के समय मुख्य सड़क का द्वार बन्द करना था। इस छोटे से काम में भला कौन सा परोपकार का काम हो सकता है? आप कहेंगे, 'इसमें कुछ भी परोपकार का काम नहीं हो सकता।'

पर आपका अनुमान बिल्कुल गलत है। रात के आठ बजे थे। बड़ौदा-मथुरा पैसेंजर ट्रेन रतलाम स्टेशन पर आ रही थी। सिगनल हो गया था। पन्नालाल डयूटी के अनुसार सड़क का फाटक बन्द करके एक ओर हो गया था।

संयोग की बात :

संयोग से तीन मजदूर स्त्रियाँ दिन भर काम करके वापस घर लौट रही थीं, थकी-मांदी और अपने बच्चों को देखनेके लिए उत्सुक! गाड़ी अभी कुछ फासले पर थी। उन्होंने सोचा, जल्दी से फाटक के पास से निकल कर लाइन पार कर लेंगी। वे धीरे से तार के पास से निकलीं। संयोग से कँटीले तार में उनका कपड़ा उलझ गया और वे बुरी स्थिति में फँसी रह गईं।

किसी प्रकार सुलझ कर वे पटरी पर आई ही थीं कि रेलगाड़ी की धड़धड़ाहट सुनकर बुरी तरह घबरा गईं। उनका सारा साहस जाता रहा। रेलगाड़ी का इंजन उन्हें पीसकर चकनाचूर कर देने के लिए उनके सामने था।

प्रबल साहस :

पन्नालाल ने जब यह देखा, तो प्रबल साहस के साथ कूदकर लाइन पर आ गया। उसने एक ही साँस में उनमें से दो महिलाओं को अपनी भुजा में दबाया और फौरन लाइन से बाहर खींच लाया।

अब गाड़ी एकदम सामने थी, मृत्यु का दृश्य था। फिर भी उसने साहस किया और तीसरी मजदूरिन को बचाने के लिए कूदा, पर हाय!

क्रुद्ध इंजन ने उसे एक भयंकर टक्कर देकर दूर फेंक दिया और तीसरी महिला का शरीर पीसता-काटता हुआ वह निर्मम इंजन धड़धड़ाता हुआ आगे बढ़ गया। पन्नालाल इस भयंकरता से मूर्छित हो गया और उसे लगा कि अब वह इस दुनियाँ में नहीं रहेगा।

पर अस्पताल में उसकी विशेष रूप से देखभाल की गई। डाक्टरों ने मानवता के सिरमौर को मौत

[शेष पृष्ठ २४ पर]

व्यवहार-परक

लोग क्या कहेंगे ?

—श्री विमलकुमार जैन
बी०ए० एल-एल०बी०
पत्रकार

[समाज अपनी छाया में रहने वाले व्यक्तियों को आगे बढ़ाने, नियंत्रित करने और सुमार्ग पर चलाने की प्रेरणा किस प्रकार देता है, वह अनुभव कीजिए। --सम्पादक]

लोगों की सब से बड़ी एवं मुख्य परेशानी यही है कि लोग क्या कहेंगे ? ' यह परेशानी किसी एक के साथ की या आज की नहीं है। यह हर छोटे-बड़े के साथ अतीत काल से चली आ रही है। मनुष्य हर प्रकार का कष्ट सह सकता है, हर विघ्न-बाधा में अपने सब्र का परिचय दे सकता है; लेकिन 'लोग क्या कहेंगे' की स्वर-लहरी से उत्पन्न खटास का सामना वह कतई करना नहीं चाहता। चाहे इससे उसके जीवन या समाज में कितनी ही विसंगतियाँ क्यों न पैदा हो जाएँ।

दो पक्ष :

'लोग क्या कहेंगे' से सम्बद्ध दो पक्ष ह—पहला पहलू यह है कि इसके भय से उचित और वांछित कार्य भी करने का साहस मनुष्य में नहीं जागता, जिससे व्यक्तिगत हानि तो होती ही है साथ ही सामाजिक बिखराव भी इस हद तक हो जाता है कि समाज का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाता है। इसका दूसरा पहलू आस्था और निष्ठा से संबंधित है। "लोग क्या कहेंगे" की दहशत से गलत कार्य करने से मनुष्य घबराता है। वर्तमान समाज में व्याप्त दहेज प्रथा को ही ले लीजिए, दहेज के भार से लड़की वाले इतने आक्रांत हैं कि उनकी आर्थिक परिस्थिति डांवाँडोल हो जाती है। लड़के वाले दहेज की रकम केवल इसलिए नहीं चाहते हैं कि उनको रुपए की ख्वाहिश पूरी हो जाएगी, बल्कि इसलिए चाहते हैं कि उनकी प्रतिष्ठा समाज में बनी रहे कि उनको भी अच्छा दहेज मिला लेकिन इस झूठी प्रतिष्ठा के कारण बेचारा लड़कीवाला तबाह हो जाता है।

परेशानी :

'लोग क्या कहेंगे' के भय ने सामान्य लोगों को ही नहीं बड़े-बड़े लोगों को भी परेशान कर डाला है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम भी इसके प्रभाव से बच नहीं सके। एक धोबी ने मामूली बात कही। इसलिए उन्होंने सीता को वन भेज दिया। यह सब के सामने स्पष्ट है।

'लोक क्या कहेंगे' के भय गसे गौतम बुद्ध भी नहीं बच सके। किसी नारी-हाथ से उन्हें सुमधुर खीर खाते देख उनके पाँचों सहयोगी उनका साथ छोड़ कर सारनाथ चले गए थे। और बोध 'ज्ञान' प्राप्ति के पश्चात् गौतम बुद्ध सबसे पहले उन्हीं पाँचों को दीक्षा देनेके लिए सारनाथ गए। उन्हें भय था ये पाँचों उनके बारे में क्या विचारधारा रखते होंगे।

"औ . . . र . . फि . . . र लोग क्या कहेंगे' का दूसरा पहलू भी लीजिए। कुछ ऐसे भी अवसर होते हैं, जहाँ लोगों का खयाल रखना आवश्यक का होता है। वस्तुतः लोक क्या कहेंगे के भय से व्यक्ति

महत्त्व तो बढ़ता ही है साथ ही उनका नैतिक उत्थान भी होता है।

महत प्रभाव :

"लोग क्या कहेंगे" की चोट ने न जाने कितने साधारण व्यक्तियों को असाधारण बना दिया है, रत्नावली की एक ही झड़प ने तुलसीदास को विश्व में अमर बना दिया है। कालिदास के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ था। अन्त में यही कहना है कि जिन कार्यों से समाज उन्नति करता हों उन्हें 'लोग क्या कहेंगे' की परवाह के बिना अपना कार्य करते रहना चाहिए एवं जिन कार्यों को करने से समाज का अहित हो, व्यक्ति के व्यक्तितव पर बुरा असर हो एवं राष्ट्र की उन्नति में बाधा पहुँचे वे कार्य नहीं करना चाहिए। यदि हम शांत चित्त से किसी भी परिस्थिति पर विचार करके निर्णय लें, तो हमारा विवेक सदा ही हमारा मार्गदर्शन करने में समर्थ होगा। हमें साहसपूर्वक विवेक का निर्णय मान ही लेना चाहिए। भले ही वहाँ लोकमत के प्रतिकूल ही क्यों न पड़ें। ●

भवानीमण्डी (राज०)

[पृष्ठ २२ का शेषांश]

के मुँह से खींच लेने की बड़ी कोशिश की और उनकी कोशिशें सफल हुईं। ईश्वर भले कामों में सदा सहायक होता है। भाग्य से पन्नालाल स्वस्थ हो गया।

जब वह होश में आया, तब उसके मुँह से जो शब्द निकले वे ये थे —

"उस तीसरी बहन का क्या हुआ ?"

आसपास खड़े सभी व्यक्ति अचंभे से पन्नालाल को देख रहे थे।

मनुष्यता की झाँकी :

वाह रे मनुष्य! कैसी तेरी मनुष्यता! मृत्यु के इन क्षणों में भी वह अपनी नहीं उस गरीब स्त्री की ही चिन्ता में मगन था उसका मानस। ●

५६।५, सोमाजी की चाली
असारवा, चमनपुरा
अहमदाबाद–१६ (गुजरात)

● दो मकान ●

हम इस धरती पर जीते हैं और जीने के लिए हमें अनेक सीमाओं में सिमट सिमट कर रहना पड़ता है। जिस समाज में हम पलते हैं उसमें हमारी हर इच्छा पूरी नहीं हो पाती। कुछ काम हमें अपनी इच्छा के विरुद्ध सिर्फ समाज के भय से करना पड़ता है। साथ ही हमारी इच्छाएँ भी अनन्त हैं, जिनकी पूर्ति के साधन दुष्प्राप्य-से लगते हैं। बाहर की सीमित दुनिया में आदमी अपने मन की हर बात पूरी करने में एक बन्धन का अनुभव करता है और साथ ही सबों की पूर्ति सम्भव नहीं। इसलिए इस जीवन से मनुष्य असन्तुष्ट हो उठता है और उसकी मानसिक शान्ति जाती रहती है। जब मनुष्य सिर्फ मिट्टी या ईंट के बने घर में रहकर शान्ति नहीं पाता, तब अपने मस्तिष्क में वह एक छोटा-सा घोंसला बनाता है और जब देखता है कि उसके बाहरी मकान में आग लग गई है, तब वह झुलस जाने के डर से भाग कर अपने इस नन्हें नीड़ में बसेरा पाता है। इसलिए हर आदमी के दो मकान होते हैं — एक धरती पर और एक उसके भीतर।

●

— गोवर्धनदास बागला

दो पोस्टर

श्री पी. पी. सिंह

अभी-अभी आधी छुट्टी की घंटी बजी है। स्कूल के गेट से निकल कर लड़कों का हजूम सड़क पर जमा हो गया है। कुछ लड़के चाट हाउस की तरफ जा रहे हैं, कुछ यों ही चहल कदमी कर रहे हैं। इसी तरह गेट के बाईं तरफ लड़कों की भीड़ जमा हो गई है। कोई पचास ग्राम मूँगफली खरीद रहा है, कोई सौ। मूँगफली बेचने एक नई उम्र की लड़की आती है -- कोई सत्रह-अठारह साल की और एक बूढ़ा-सा आदमी। पर बूढ़ा बेचारा यों ही खड़ा-खड़ा हाँक लगाता रहता है। उसके पास कोई इक्का-दुक्का ग्राहक ही फटकता है – पाँचवी-छठीं क्लास का कोई विद्यार्थी। लेकिन लड़की के इर्द-गिर्द अच्छी खासी भीड़ जमा हो जाती है।

मैं इस स्कूल का एक अध्यापक, हमेशा की तरह बरामदे में आ खड़ा होता हूँ।

लड़की मूँगफली बेंच रही है। पचास ग्राम, सौ ग्राम। पच्चीस पैसे की, पचास पैसे की। सैकण्डरी -- हायर सेकण्डरी के लड़के मूँगफली नहीं; बल्कि जैसे मूँगफलीवाली को खरीदने उसके इर्द-गिर्द मँडराते हैं। जब वह मूँगफली का लिफाफा पकड़ाती है, तब अधिकांश ग्राहकों की उंगलियाँ उसकी उँगलियों को छू लेती हैं। कुछ उगलियाँ उसकी कलाई तक भी पहुँच जाती हैं और कभी कोई कुहनी उसके सीने को भी स्पर्श कर जाती है। बेचारी मूँगफली वाली अपने में सिमट कर रह जाती है। कभी किसी को वह झिड़क भी देती है। पर बहुधा ग्राहकों से भयभीत रहती है। अपनी बेबसी पर मन ही मन आँसू बहाते हुए खामोशी अख्तियार किए मूँगफली तोलती रहती है।

सहसा मैं देखता हूँ -- मूँगफली वाली एक लड़के के पीछे दौड़ रही है। शायद लड़के की शरारतें जरूरत से ज्यादा बढ़ गई होंगी। वह लड़के को पकड़ कर थप्पड़ मारने जा रही है कि लड़के ने उसकी कलाई पकड़ ली है। लड़कों का हजूम तरह-तरह की आवाजें कसते हुए खिलखिला रहा है। छोटी कक्षाओं के बच्चों की बन गई है। वे मूँगफली के ठेले पर पिल पड़े हैं। अपनी जेब भर रहे हैं। खूब छीना-झपटी होने लगी है। इधर लड़की के कपड़े तार-तार हो गए हैं।

मैं तेजी से बढ़ता हूँ, ताकि लड़की को और अधिक हैरान होने से बचा सकूँ।

"यह क्या हो रहा है।" पास पहुँच कर मैं लड़कों को डाँटता हूँ।

पर दूसरे ही पल लड़कों का हजूम मुझपर पिल पड़ता है। मुझपर थप्पड़-मुक्कों के प्रहार होने लगते हैं। मेरे मुँह से खून बह निकलता है। मेरी दृष्टि सामने के स्कूल के गेट पर चिपके दो पोस्टरों पर स्थिर होकर रह गई है।

पहला पोस्टर -- अध्यापक राष्ट्रनिर्माता हैं, उनका सम्मान करो।

दूसरा पोस्टर -- बच्चे देश का भविष्य हैं। ●

पुरालेख विभाग
बीकानेर ३३४००१ (राज०)

यात्रा-परक

अजन्ता-एलौरा प्रवास

•

——श्री सन्तोषकुमार

[चि० सन्तोषकुमार एक मेधावी छात्र हैं। उनकी लेखनी से लिखा गया यह शैक्षणिक यात्रा-वर्णन प्रकाशित किया जा रहा है; जो बाल-लेखकोंके लिए प्रेरणादायी है। ——सम्पादक]

अजन्ता-एलोरा का प्रवास राजस्थान हिन्दी हाई स्कूल का नौ दिवसीय सर्वप्रथम सबसे लम्बा प्रवास रहा है। यह पर्यटन बहुत ही आनन्ददायक रहा। सभी जगह अच्छी सुविधाएँ प्राप्त हुईं। हमारे साथ दो बसें थीं। इस पर्यटन की विशेषता यह भी थी कि पर्यटन में पहली बार आचार्य श्री पाण्डेयजी हमारे साथ आए। १४ नवम्बर 'बालदिन' को सुबह सात बजे अहमदाबाद से नौ दिवसीय यात्रा पर रवाना हुए। इस पर्यटन में कुल ९ शिक्षक, २६ बहनें तथा ६५ लड़के थे। इस पर्यटन का दैनिक संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

१४ नवम्बर, १९७७ अहमदाबाद

सापूतारा प्रवास का प्रथम दिवस। सभी बहुत उत्साहित अजन्ता-एलोरा जानेके लिए। हम सुबह सात बजे राजस्थान सेवा समिति के प्रांगण से रवाना हुए। गुजरात के समतल मैदान तथा ऊँचे घने पेड़ों के बीच में से चढ़ाई करती हुई बस अहमदाबाद से करीब ४५० कि०मी० दूर गुजरात सीमावर्ती क्षेत्र में स्थित हवा खाने का स्थल सापुतारा पहुँची। यहाँ रात को घूमे, रात आठ बजे अन्नपूर्णा होटल में रात्रि-भोज किया। आज का अधिकांश समय बस में ही बीता।

१५ नवम्बर, १९७७ सापूतारा-नासिक

सापुतारा में चार बजे उठ गए। कोहरा होने के कारण आज सूर्योदय नहीं देख सके। सापुतारा से १० बजे रवाना होकर नासिक होते हुए सीधे सापुतारा से ११० कि०मी० दूर एक बजे त्रंबक पहुँचे। यहाँ त्रंबकेश्वर के दर्शन किए। ६७६ सीढ़ियाँ चढ़कर गोरखनाथ के दर्शन किए। पाँच बजे नासिक आए। हम मुक्तिधाम की धर्मशाला में ठहरे। मुक्तिधाम रात्रि को दीपमालाओं से जगमगा रहा था। यह मंदिर संगमरमर के पत्थर द्वारा आधुनिक ढंग से नासिक से ८ कि०मी० दूर नासिक रोड पर बहुत ही सुन्दर बना हुआ है। यहाँ भोजन की बहुत सुन्दर व्यवस्था हुई।

१६ नवम्बर, १९७७ नासिक-शिरडी

सुबह स्नान करके मुक्तिधाम के दर्शन किए। बताया जाता है कि यहाँ लक्ष्मण ने शूर्पणखा की नाक काटी। अतः इस जगह का नाम नासिक पड़ा। पंचवटी गए। यहाँ पाँच वट है। लक्ष्मण की अग्निरेखा अब जल-रेखा में मौजूद हैं। जल-रेखा के पास साढ़े ग्यारह फुट ऊँची काटचामारुति-हनुमान की मूर्ति है। बारह बजे नासिक से रवाना होकर सायंकाल साढ़े चार बजे शिरड़ी पहुँचे। रात को आठ बजे शिरड़ी के सांईबाबा के दर्शन किए। यहाँ दर्शनार्थियों की काफी भीड़ थी। इस क्षेत्र में गन्ने के बहुत से खेत हैं।

१७ नवम्बर, १९७७ शिरडी-औरंगाबाद

सुबह चार बजे उठकर ६ बजकर ५ मिनट पर शिरड़ी से १३७ कि० मी० दूर औरंगाबादके लिए प्रस्थान किया। पौने नौ बजे एलौरा पहुँचकर भारतीय

पर्यटन विकास निगम के रेस्तरां में चाय-पान किया। आज मेरा जन्मदिन होने से गुरुजनों तथा साथियों की शुभेच्छा प्राप्त की। एलौरा की १०, १६ और ३२ नंबर की गुफा विशेष देखने लायक है। १० नंबर की गुफा जैन की, १६ नंबर की गुफा हिन्दू की तथा ३२ नंबर की गुफा बौद्ध की है। यहाँ सम्पूर्ण काम पत्थर को काटकर-तराशकर किया गया है। १६ नंबर की गुफा में कैलाश मंदिर है। दौलताबाद में दौलताबाद के किले में चाँद मीनार, हाथीहौज, भारतमाता का मंदिर, मेडा गन आदि देखा। दौलताबाद से २५ कि०मी० दूर औरंगाबाद साढ़े तीन बजे पहुँचकर बीबी का मकबरा तथा पवनचक्की देखा। यहाँ गीतांजली हॉटेल में ठहरे।

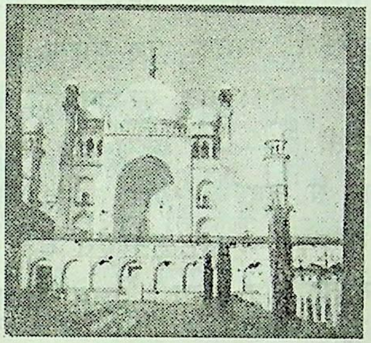

बीबीका मकबरा

१८ नवम्बर, १९७७ औरंगाबाद-अजंता-पुणे

प्रवास का पाँचवाँ दिन। औरंगाबाद में सवा तीन बजे उठकर सवा पाँच बजे ११० कि०मी० दूर अजन्ताके लिए रवाना हुए। साढ़े सात बजे अजंता पहुँचकर आग जलाकर नाश्ता किया। फिर नौ बजे अजंता की गुफाएँ देखनी प्रारंभ कीं। यहाँ बौद्ध मूर्तियाँ हैं। यहाँ बहुत ही सुन्दर पैंटिग की हुई है। एक तथा दो नंबर की गुफा देखने लायक है। शताब्दियों पहले की हुई पैंटिग आज भी चमकती है। बुद्ध भगवान् की गंभीर तथा प्रसन्नमुख मुद्रामय प्रतिमा है। यहाँ ६ नंबर की गुफा में अलग-अलग स्तंभों को बजाने से अलग-अलग वाद्य यंत्रों की सी आवाज निकलती है। अजंता से ३३६ कि०मी० दूर पुणे हम रात को सात बजे पहुँचे। रास्ते में दोनों और बहुत जगह गन्ने के खेत थे। पुणे में एक गुजराती स्कूल में ठहरे।

१९ नवम्बर, १९७७ पुणे-महाबलेश्वर

सुबह सवा सात बजे उठकर ६ बजे महाबलेश्वर के लिए रवाना हुए। महाबलेश्वर पुणे से लगभग १७५ कि०मी० दूर, राष्ट्रीय मार्ग नं० ४ के निकट तथा समुद्रतल से १४३८ मीटर ऊँचा है। रास्ते में महाबलेश्वर से २० कि०मी० पहले पंचगनी है। जहाँ हमने सिग्मी पॉइन्ट तथा टेबल लेण्ड देखा। यहाँ बसें अंग्रेजी के 'यू' आकार के रास्तों पर धीरे-धीरे ऊपर चढ़ती हैं। साढ़े ग्यारह बजे महाबलेश्वर पहुँचकर राजेश होटल में भोजन किया। सरोवर में दोपहर को नौका-विहार किया। शाम को पुराने महाबलेश्वर में शिवमंदिर के दर्शन किए। सूर्यास्त बिंदु 'सनसेट पॉइन्ट' देखा। सात बजे महाबलेश्वर से रवाना होकर १० बजे रात को पुणे पहुँचे।

२० नवम्बर, १९७७ पुणे-बम्बई

पुणे में सुबह आठ बजे प्रसिद्ध पुणे विद्यापीठ गए। आज छुट्टी थी। सुबह सवा नौ बजे सारस बाग गए। यहाँ सुन्दर गणेश का मंदिर है। फिर साढ़े दस बजे गाँधी राष्ट्रीय स्मारक देखा। यह पहले आगा खां महल था। प्रसिद्ध यरवदा समझौता यहाँ हुआ। सन् १९४२-४३ में गाँधीजी को यहाँ बंदी बनाकर रखा गया। यहाँ कस्तूरबा तथा गांधीजी के निजी सचिव महादेवभाई की समाधि है।

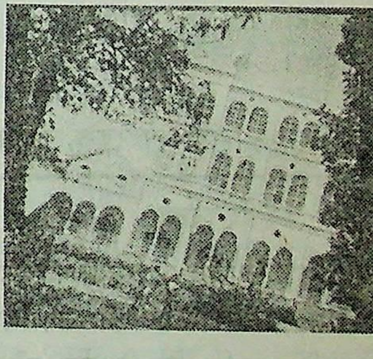

गाँधी राष्ट्रीय स्मारक

२१ नवम्बर, १९७७ बम्बई

सुबह आठ बजे पंचायत वाड़ी से रवाना होकर सवा आठ बजे भारत का प्रवेशद्वार 'गेट वे ऑफ इण्डिया' पहुँचे। इसके सामने ताजमहल होटल है। यहाँ समुद्र में आधे घंटे नौकाविहार किया। बंदरगाह के पास भारत के प्रसिद्ध युद्धपोत विक्रांत को देखा। साढ़े दस बजे महालक्ष्मी के दर्शन किए। यहाँ से राष्ट्रीय उद्यान–नेशनल पार्क बोरीवली आए। आरे मिल्क डेरी गए। जो आज बंद थी। विहार सरोवर में मौज किया। यहाँ से बम्बई विमान पत्तन–बोम्बे एयर पोर्ट' आए। दर्शक-दीर्घा से विमान देखने के दो रुपए टिकट लगता है। यहाँ से उड़ते विमान देखे। अब सभी सूचनाएँ अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी में भी दी जाने लगी हैं। शाम को जुहू घूमने गए और रातको दस बजे खा-पीकर मारवाड़ी पंचायत वाड़ी आए।

२२-२३ नवम्बर, १९७७ बम्बई-अहमदाबाद

आज कहीं घूमने नहीं गए। दोपहर को दो-तीन जगह जाने का इरादा था; परन्तु हमारा परमिठ पूरा होने जा रहा था। इसलिए नहीं देख सके। आज सुबह दो-तीन घंटों में सभी ने मिलकर कम से कम पांच हजार रुपए का सामान खरीदा। ठक्कर क्लब में दोपहर का भोजन किया। दोपहर को सवा दो बजे बंबई महानगरी से रवाना होकर सुबह अहमदाबाद पहुँचे। ●

कक्षा–१२ अ
राजस्थान हिन्दी हाईस्कूल, **अहमदाबाद**

ईश्वरत्व

यह देह की उपाधि, इन्द्रियों की उपाधि, मन की उपाधि, अन्तःकरण की उपाधि और परिच्छिन्नता की उपाधि से ही हम जीव बन गए हैं। यह उपाधि है, इसीलिए शोक है। उपाधि छोड़ दी जाए, तो हो गए ईश्वर, और ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप है। वहाँ शोक है ही नहीं।

—माण्डूक्योपनिषद्

• सारपूर्ण रिक्तता •

बाँसुरी से पूछा — "अरी बाँसुरी, क्या बात है कि वह कृष्ण, वह प्यारा मुरली मनोहर, जिसकी भौंह के इशारे से शहंशाह काँपते हैं; भीष्म, अर्जुन, दुर्योधन जैसे जिसके चरणों के छूने के भूखे हैं; जिसकी पदरज को अभी तक राजा-महाराजा मस्तक पर धारण करते हैं; चन्द्रमुखियाँ जिसकी मृदु मुस्कान को देखने के लिए तरसती हैं — वह कृष्ण तुझे बड़ी चाह और प्यार से खुद बारम्बार चूमता है! एक जरा-सी बाँस की लकड़ी, तूने ऐसे बड़े भगवान् कृष्ण पर क्या जादू डाला? तुझमें यह करामात कहाँ से आई?"

बाँसुरी ने जवाब दिया — "मैं सिर से पाँव तक बीच से खाली हो गई। नतीजा यह है कि, कृष्ण खुद आकर मुझे बोसे देता है — जिसके चरणों को चूमने को लोग तरसते हैं, वह शौक से मुझे चूमता है। मुझसे दिलकश नगमे क्यों न निकलें! मुझमें राम का दम है, मेरी सुरीली आवाज उसीके स्वर हैं।"

तेही जेखेशचो नय शो जे पाय तासरे खुद।
वगरनः बोसे लबे लाले यार आसाँ नेस्त॥

— बाँसुरी की तरह सिर से पाँव तक खुदी से खाली हो जा, अन्यथा प्रेममूर्ति के लाल होठों का चूमना सहज नहीं है।

— स्वामी रामतीर्थ

बाल-लेख (स्वास्थ्य-परक)

माता का दूध

श्रीमती गीतादेवी शर्मा
– विद्याविनोदिनी

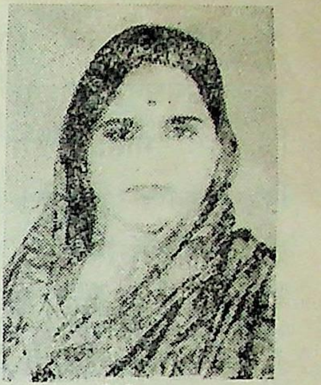

लेखिका

औरतों के गर्भावस्थाके बाद प्रसव हो चुकने पर शिशु को पिलानेके लिए स्तन्य का स्राव माता के स्तनों से दूध निकलता है । यही दूध बच्चो का सच्चा और स्वाभाविक आहार होता है । वास्तव में शिशु की धातुओ के पोषणके लिए तथा शरीर वृद्धि के लिए माँ का दूध अत्यन्त उपयोगी होता है । इस दूध में सभी पौष्टिक तत्त्व घनी मात्रा में अत्यन्त स्वाभाविक रूप से पाए जाते हैं । इसलिए माता का यह दूध शिशुके लिए पौष्टिक, लघु (हलका), जल्दी पचने वाला होता है । इस दूध में विटामिन, लवण, जल अधिकमात्रा में रहता है । प्रायः जननी (माता) का स्तन्य ऐसी विशेषता वाला होता है कि इससे थक्के मृदु बनते हैं । इसलिए यह दूध आदर्श आहार माना जाता है । उसमें स्निग्ध पदार्थ आवश्यकता से अधिक नहीं होता । बच्चे के पोषण के लिए आवश्यक प्रमाण में लवण भी मिलता है । शरीर–वृद्धिके लिए विशेषतः अस्थि–निर्माण के लिए केलसियम आदि के अतिरिक्त विटामिन भी माता के दूध में काफी मात्रा में रहते हैं । माँ स्तन्य में से दूध ताजा निकलने के कारण स्तन्य का तापमान शरीर के तापमान के बराबर होता है, जो कि बच्चे को दूध पचने में आसान होता है । इन सब बातों से माता का दूध शिशु के लिए आदर्श तथा उत्तम आहार है ।

आज के युग में, शहरी सभ्यतावाले युग में जब जननी के स्तन्य में दूध नहीं आता है और न बच्चों को दूध पिलाती है । गाय का दूध या पावडर का दूध गर्म–ठंडा करके कांच की शीशी में या रबड़ की बोतल में डालकर रबड़ की पूप-सी लगाकर बच्चों को देती है । इससे बच्चों का हाजमा खराब हो जाता है । दस्त पीले लगते हैं तथा पेट फूल जाता है और बच्चा कमजोर हो जाता है । उसको कैलसियम नहीं मिलता है तो वह सूखने लग जाता है । मिल्क पावडर से तो बकरी का दूध ही बच्चों को अधिक फायदा करता है । इसलिए कि बकरी के दूध में विटामिन 'सी' की कमी फिर भी रह जाती है, जिसे दूर करने के लिए ऐसे ऊपर के दूध के अलावा सन्तरे आदि फलों का रस इस प्रकार के बच्चों को दिया जाता है ।

सभी माताएँ अपने बच्चों का हित चाहती हैं । इसलिए उन्हें स्तन्य (दूध) पिलाने का महत्त्व समझना चाहिए, परन्तु दुख की बात है कि सभी माताएँ इस बात को नहीं जानतीं कि नवजात शिशुके लिए अपनी माता का ही दूध सर्वोत्तम है । मानव जाति की सृष्टि के शुरू से ही माता के स्तन्य का दूध एक इस तरह का मिश्रण है कि बच्चा उसे सरलता पूर्वक पचा सकता है तथा उससे उसकी पुष्टि होती है । विशेषतया बच्चों के प्रारम्भिक जीवन-काल के चार मास तक तो माता का दूध बहुत ही आवश्यक है। माता के स्तन्य का दूध सेवन करने वाले बच्चों के जीवन में सुख की आशा अधिक रहती है तथा उन बच्चों यौवनका-काल शक्तिपूर्ण होता है। इस प्रकार मेरा यह अनुभव है कि माता का दूध शिशु का सर्वोत्तम पोषक आहार है ।

मातृ स्तन्य का पान करने वाले बच्चे पुष्ट होते हैं और संक्रामक रोगों से रक्षित रहने की क्षमता प्राप्त करते हैं । अतः शिशु के स्तन्य का दूध ही पिलाना चाहिए । माता का दूध बच्चोंके लिए अमृत तुल्य है ।

इस जीवन में दो ही धन्य ।
आम और अम्बा-स्तन्य ॥

कृष्ण नगर सोसायटी
ब्लोक नं. २० A/, २३६
सैजपुरबोघा,
अहमदाबाद ३८२३४५

●

अग्र-प्रगति

राष्ट्रीय, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विचारों का प्रतिनिधि-मासिक । वार्षिक शुल्क १२ रु० । धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा आज ही भिजवाकर समाज में वैचारिक क्रान्ति उत्पन्न करने में भागीदार बनिए ।
आजीवन सदस्यता १२१ रु०

राजनाथ सिंघल — व्यवस्थापक
महेशदत्त गर्ग — संपादक

३६ कालाजी गोराजी
मार्ग, उदयपुर (राज०)

●

● रंगायन ●

लोकसंस्कृति तथा लोककला का हिन्दी मासिक पत्र। वार्षिक मूल्य ७ रु.
सम्पादक : डा० महेन्द्र भानावत,
लोककला मण्डल, उदयपुर। ●

*

● अहिंसा-सन्देश ●

सम्पादक - **रतनेशकुमार जैन**
हिन्दी मासिक पत्र
वार्षिक मूल्य : ५ रुपए
" अहिंसा-सन्देश " कार्यालय
पो. ब. - ८५, अपर बाज़ार, **राँची** (बिहार)

पुस्तक परिचय

नजर से बचके

श्री रामकिशोर अग्रवाल, 'मनोज'

प्रकाशक : पृ० सं० १७० मूल्य (सजित्य) ६ रु०
श्री सुभाष प्रिन्टिंग प्रेस, **जबलपुर**

कविवर श्री रामकिशोर अग्रवाल 'मनोज' कृत उर्दू हिन्दी की संयुक्त कविताओं का प्रस्तुत संग्रह पढ़ने के बाद सबसे पहले तो मुझे इस बात की खुशी हुई कि संग्रह को देवनागरी लिपि में प्रकाशित किया गया है। इससे पुस्तक की लोकप्रियता दूनी हो गई है। क्योंकि उर्दू लिपि से अनभिज्ञ किन्तु उर्दूभाषा-प्रेमी लोग भी प्रस्तुत कृति के द्वारा उर्दूशायरी के नए तेवरों से वाकिफ हो सकेंगे। आपको मध्यप्रदेश शासन साहित्य द्वारा 'सिय विजन वास' पुस्तक पर पुरस्कृत किया गया है।

'नजर से बच के' काव्य-संग्रह के द्वारा मनोज जी ने उर्दू-हिन्दी भाषाओं और उनकी विविध शैलियों का सफल समन्वय किया है। संग्रह में अनेक अशआर, कते, कई रुबाइयाँ और कुछ बेहतरीन ग़ज़लें भी संग्रहीत हैं। मनोज जी उर्दू छंद-रचना के मर्मज्ञ हैं। यही वजह है कि आपकी समूची शायरी में एक दिलकश तरन्नुम और रवानगी भी दिखाई देती है।

कवि ने विषय-वैविध्य का भी ध्यान रखा है। प्रेम-सौन्दर्य, शराब-मयखाना, सन्देश-उपदेश, वर्तमान राजनीति, धार्मिक एकता आदि विषयों पर सफलता पूर्वक कलम चलाकर कृति को और भी ज्यादा दिलचस्प बना दिया है। प्रायः सर्वत्र कवि ने व्यंग्य को बड़े ही हल्के-फुल्के शब्दों में व्यक्त किया है। क्योंकि वह शायरी या कविता दिल दुखाने का नहीं, वरन् मनोविनोद का साधन मानता है।

कहीं-कहीं कवि की निहायत सादगी के कारण कविता एकदम सपाटबयानी बनकर रह गई है, किन्तु अधिकांश स्थलों पर कवि का चुटीला और पैना व्यंग्य उर्दू के मशहूर मज़ाकिया शायर अकबर इलाहाबादी की याद ताजा करा देता है। मसलन प्यार की सौदा-वाजी और दिलकी लगी को दिल्लगी समझनेवालों पर कवि का यह करारा व्यंग्य किया है।

आज की सियासी गुटबन्दी या फिरकापरस्ती निहायत झूठ, मक्रोफरेब और खुदगर्जी पर मुनहसिर है। इस बात को मनोज जी ने बेलौस अन्दाज में पेश किया है।

हालाँकि एक ही शेर या शेर के एक ही मिसरे में एक साथ संस्कृत और फारसी के शब्दों की जुगलबन्दी हमें बहुत मुनासिब तो नहीं लगती, फिर भी इसे नई उर्दू शायरी का एक नया प्रयोग समझ कर कबूल करना चाहिए। इसके मुतल्लिक खुद मनोजजी का नज़रिया सुन्दर है।

पूंजीवादी तहजीब में पले सरमायेदारों और जम्हूरियत के दुश्मनों का 'गरीबी हटाने' का नारा कितना खोखला और बेबुनियाद साबित हो रहा है, इस बात को मनोज साहब ने अपने पुरअसर शब्दों में यों प्रस्तुत किया है।

संग्रह की उर्दू भाषा को भी कवि ने आमफहम बना दिया है। क्योंकि कवि ने अनेक मुहावरों, कहावतों या लोकोक्तियों के बड़े ही सफल प्रयोग किए हैं। जैसे- सीने पर साँप लोटना, गिरगिट-सा रंग बदलना, दूर के ढोल सुहावने, जिसकी लाठी उसकी भैंस आदि।

प्रस्तुत संग्रह के प्रारंभ में स्वयं कविवर मनोजजी ने 'पंथ परिचय' शीर्षक के अन्तर्गत नागरी लिपि में और अन्त में 'औजान समझने का आसान तरीका' शीर्षक के अन्तर्गत श्री निहाल तावाँ ने उर्दू काव्य-रचना की विधियाँ समझाकर संग्रह की उपादेयता

में चार चाँद लगा दिए हैं। सुन्दर छपाई, आकर्षक आवरण-पृष्ठ और प्रौढ़ कवि की खूबसूरत और सदाबहार शायरी – गरज कि हर नजर से प्रस्तुत कृति 'नजर से बच के' दर्शनीय और पठनीय है। अन्त में इस सरस-सुन्दर काव्य-कृतिके लिए उर्दू हिन्दी के समन्वयवादी कवि बनाम शायर श्री मनोजजी को हिन्दी में अनेक बधाइयाँ और उर्दू में बहुत-बहुत मुबारकबादियाँ।

प्रा० भगवानदास जैन

सब की माटी : ले० – डा० रमाकान्त शर्मा, प्रकाशक, आस्था प्रकाशन, अहमदाबाद, पृष्ठ संख्या २००, डेमी साइज, मूल्य १० रु०

प्रस्तुत पुस्तक में कवि के जीवन-संघर्ष की १९० वास्तविक कविताएँ छपी हैं। जीवन, जगत् और मानव आज एक विचित्र कोण पर खड़े हैं। उनमें अन्तर और बाह्य का विचित्र संघर्ष छिड़ा है। आज का कवि उसी संघर्ष का एक्सरे करने में व्यस्त और रत है। वह वर्ग-संघर्ष, वर्ण-संघर्ष, व्यक्ति-संघर्ष में बाँट कर इसका निरीक्षण-परीक्षण कर रहा है, इसका निदान-उपचार करने में संलग्न है। इसी की प्रतीति "सबकी माटी" करा जाती है।

लेखक की अब तक सात पुस्तकें छप चुकी हैं। यह पुस्तक उस माला का आठवाँ पुष्प है। इसकी प्रत्येक कविताओं में अनुभूति और अभिव्यक्ति की सुन्दर संगति द्रष्टव्य है। इस संग्रह में सन् १९७१ से १९७६ तक की काव्योर्मियों का संकलन है, जो भिन्न-भिन्न परिस्थितियों का चित्र हैं।

पुस्तक की छपाई, सफाई और साज-सज्जा नयनाभिराम है। नूतन काव्यविधा प्रेमियों को इस पुस्तक में अधिकाधिक आकर्षण मिलेगा।

– राम

युगों की प्यास कैसे बुझे ? लेखक–आचार्य (डॉ) देव, प्रकाशक मानसी साधना केन्द्र, कानपुर पृष्ठ सं० १७५, मूल्य दस रुपए।

तथा

यह रावणलीला किस लिए? लेखक तथा प्रकाशक उपर्युक्त। पृष्ठ संख्या २०, डेमी साइज, मूल्य एक रुपया। (व्याख्यान-संग्रह)

डा० 'देव' रामचरित रूपी मानसरोवर के मुक्ताप्रेमी विमल राजहंस हैं। आपने रामचरित और मानस के पात्रों को आधुनिकता के चश्मे से देखकर अधिक ग्राह्य और गतिमय बनाया है। डाक्टर 'देव' ने रामचरित को सभी भवरोगों की एकमात्र दवा के रूप में प्रस्तुत किया है। आपकी कल्पना, आपके तर्क और आख्यान-व्याख्यान बड़े हृदयग्राही और शामक होते हैं। आपकी चार पुस्तकें इसी रामचरित को लेकर प्रकाशित हुई हैं और चार पुस्तकें इसी धुन को लेकर प्रकाशनाधीन हैं। उपर्युक्त दोनों पुस्तकें इसी विचारधारा को लेकर लिखी गई हैं।

प्रस्तुत दोनों पुस्तकों में नैतिकता, सदाचार और सुविचार के सुमनों को एकत्र कर जो गुलदस्ता सजाया गया है, वह जीव-जगत्-जगदीश के बीच सेतु-निर्माण का काम करता है।

दोनों पुस्तकों की छपाई, टाइप और साज-सज्जा नयनाभिराम हैं। हम आपके इस सुन्दर प्रकाशन का स्वागत करते हैं और इसके लिए अभिनन्दन देते हैं।

राम और राम-कथा प्रेमियों को एवं चरित्र तथा शील के डंका बजाने वालों को जैसे भी बने, वैसे ये पुस्तकें पढ़नी चाहिए।

– राम

सान्ध्यमित्रा –– वार्षिक अंक। हिन्दी की सभर विधीओं से सुसज्जित छपाई, गेटअप और सामग्री अपने ढंग की दिलचस्प। पाठकों को पठनीय सामग्री और विचारपूर्ण ज्ञान-राशि। हार्दिक स्वागत।

सम्पर्क –– सान्ध्य मित्रा, कृष्णकुंज, दादाभाई क्रॉस रोड–३, विलेपारले (पश्चिम) बम्बई ४०००५६

प्रथम पराग –– (काव्य संग्रह) रचयिता –– स्वामी खुशालनाथ "धीर"। प्रकाशक-बाड़मेर साहित्य-संस्थान, बाड़मेर। पृष्ठ सं. १६ मूल्य १–००।

होनहार लेखक का यह काव्य-पुष्प केवल १५ पंखुडियों वाला है। छोटी, भावभीनी सुगन्धि से भरपूर काव्य कलिका है। स्वागत।

समिति के नए सदस्य :

['सुधाबिन्दु' के अंक में राजस्थान सेवा समिति, अह० के क्रमांक ३१३ से ३३३ तक के सदस्यों की नामावली प्रकाशित की जा चुकी है। उसके बाद की नामावली सधन्यवाद प्रकाशित की जा रही है–

—सम्पादक]

३३४ श्री गिरधारीलाल सुधीरकुमार
४१, न्यू क्लोथ मार्केट,
अहमदाबाद-२.

३३५ श्री हेमराज दर्शनलाल
१९, न्यू क्लोथ मार्केट,
अहमदाबाद-२.

३३६ श्री मे. हरमानचन्द एन्ड कं.
४८५, रेवड़ी बाजार,
अहमदाबाद-२

३३७ श्री शा. मांगीलाल घीसूलाल
साकर बाजार कालूपुर,
अहमदाबाद

३३८ श्री विजयकुमार अशोककुमार
१९४, न्यू क्लोथ मार्केट,
अहमदाबाद-२.

३३९ श्री घनश्यामदास राजेशकुमार
१९४, न्यु क्लोथ मार्केट,
अहमदाबाद-२,

३४० श्री दयाराम बालकिशन
९५, न्यू क्लोथ मार्केट,
अहमदाबाद-२.

३४१ श्री ताराचन्द यमुनादत्त
१५३, न्यू क्लोथ मार्केट,
अहमदाबाद-२.

३४२ श्री राधेश्याम राजकुमार
१८८, न्यू क्लोथ मार्केट,
अहमदाबाद-२.

३४३ श्री ओमकार टेक्सटाइल्स
५६३, न्यू क्लोथ मार्केट,
अहमदाबाद-२

३४४ श्री गीगराज एण्ड सन्स
कृष्ण मेन्शन, घी बजार,
कालूपुर, अहमदाबाद-२.

३४५ श्री महादेवप्रसाद पवनकुमार
४२, न्यू क्लोथ मार्केट,
अहमदाबाद-२.

३४६ श्री परमेश्वरीदास ओमप्रकाश जैन
११३. न्यू क्लोथ मार्केट,
अहमदाबाद – २

३४७ श्री मे. धनराज निर्मलकुमार
१९५, न्यू क्लोथ मार्केट,
अहमदाबाद – २

३४८ श्री इन्द्रचन्द कस्तूरचन्द
६६४।४४, मस्कती मार्केट
अहमदाबाद – २

३४९ श्री दौलतराम मांगेराम
७८, हीराभाई मार्केट
अहमदाबाद – २२

३५० श्री विनोदकुमार अग्रवाल
एच० ए० मार्केट, कपासिया बाजार,
अहमदाबाद – २

३५१ श्री अमीन सुराणा एन्ड कं०
२३७. न्यू क्लोथ मार्केट,
अहमदाबाद – २

३५२ श्री मदनमोहन घनश्यामदास
१२५. न्यू क्लोथ मार्केट
अहमदाबाद – २

३५३ श्री सुगनराम सत्यनारायण
१८४ न्यू क्लोथ मार्केट
अहमदाबाद – २

[क्रमांश :

‘सुधाबिन्दु’ के आजीवन ग्राहक :

[‘सुधाबिन्दु’ का आजीवन ग्राहक-शुल्क केवल १५० रु० हैं। ऐसे आजीवन ग्राहकों की क्रमांक ७३ से ९२ तक की नामावली गत अंक में दी जा चुकी है। उसके बाद की नामावली सधन्यवाद प्रकाशित की जा रही है। -- सम्पादक]

९३ श्री सन्तलाल रविप्रकाश
कटरा मोती, नई सड़क,
चाँदनी चौक, दिल्ली–६

९४ श्री गौरीशंकर विश्वनाथ
वी।३, सुजाता फ्लेट्स
शाहीबाग, अहमदाबाद–३८०००४

९५ श्री चंद्रप्रकाश मोदी
श्री शक्ति टैक्सटाइल्स,
२०७, न्यू क्लोथ मारकेट,
अहमदाबाद–२

९६ श्री ओमप्रकाश तुलस्यान
राजस्थान राइस एण्ड ओइल मिलस
हनुमानगढ़ जंक्शन (राजस्थान)

९७ श्री हरिप्रसाद रामकिशन एण्ड कंपनी
कपड़े के व्यापारी
उर्दू बाजार, गोरखपुर (उ० प्र०)

९८ श्री सागरमल मूकेशकुमार
५०२, न्यू क्लाथ मार्केट
अहमदाबाद–३८०००२

९९ श्री रामावतारजी शर्मा
न्यू गुजरात काटन मिलस कम्पनी
नरोडा रोड, अहमदाबाद–२

१०० श्री जयेन्द्र नटवरलाल पटेल एन्ड कं०
२०२, न्यू क्लोथ मार्केट,
अहमदाबाद – २

१०१ श्री अशोककुमार जवरीलाल
५०७, न्यू क्लोथ मार्केट,
अहमदाबाद – २

१०२ श्री माणकलाल हरगोवनदास
२०१, न्यू क्लोथ मार्केट,
अहमदाबाद – २

१०३ श्री सज्जनकुमार किशोरचन्द
५१९, न्यू क्लोथ मार्केट,
अहमदाबाद – २

१०४ श्री अशोककुमार अमरतलाल
५१०, न्यू क्लोथ मार्केट,
अहमदाबाद – २

१०५ श्री अश्विनकुमार सतीशचन्द्र
२१३, न्यू क्लोथ मार्केट,
अहमदाबाद – २

१०६ श्री महेश शर्मा
द्वारा श्री नाथूरामजी शर्मा वैद्य
४२, अमरपुरा की चाली, ईदगाह,
अहमदाबाद – १६

१०७ श्री मूकेशकुमारजी जैन
द्वारा श्री मनूलाल कैलाशचन्द
कपड़े के व्यापारी
क्लाथ मार्केट,
मुजफ्फरनगर (उ० प्र०)

१०८ श्री नारायणभाई लालभाई पारी
शेर बाजार
माणेक चौक, अहमदाबाद – १

●

અમરતાનો શાપ

✻ ફાધર વાલેસ ✻

દેવતાઓએ અમૃતનો ગોળો સંતાડયો હતો. રખે ને એ માનવીના હાથમાં આવે અને તે અમર થાય! ઊંચા પર્વતમાં, બિહામણી ગુફામાં, ભારે શિલાની નીચે સતાડયો હતો, ત્યાં માનવીની નજર ન પડે. માનવીનો હાથ ન પહોંચે. એટલે એને અમૃત જડશે નહિ, એ પીશે નહિ, અને પીને અમર બનશે. નહિ. દેવતાઓને નિરાંત હતી. અમૃતનો ગોળો સલામત હતો.

– પણ માનવી તો જબરો નીકળ્યો. ધારે તે કરે. ઇચ્છે ત્યાં જાય. ને એમાં અમૃત જેવી લાલચ, પછી એ શું ન કરે? અમૃત મળે એટલે અમર થવાય. અમરત્વ. અનંતતા. જયાં સુધી એ ન મળે ત્યાં સુધી બીજાં બધાં દાન તુચ્છ લાગે. બધાં દાન તુચ્છ લાગે. બધાંની પાછળ મોતનું ભૂત છે, પછી એમાં મન કેમ ચોંટે? પૈસા ને કીર્તિ ને સુખ ને સત્તા–ને પ્રેમ ને મિત્રતા ને વિદ્યા : બધાં કિંમતી ને પ્રિય, પણ બધાં એક દિવસ જવાબાં છે (અથવા આપણે એ છોડીને જવાના છીએ) પછી એની કિંમત શી ને એનો મોહ શો? બધાં નાશવંત, હલકાં, તુચ્છ. પણ એક વાર જો અમરત્વ આવી જાય, જો શાશ્વતપણાનું વરદાન મળે તો એ બધા કાયમના રહેવાના, એ પ્રેમ ને એ કીર્તિ ને એ વિદ્યા ને સફળતા પણ અમર બનવાના, અને ત્યારે જ આ જીવન જીવન કહેવાશે. અને જીવવા જેવું હશે. માટે અમરત્વનું વરદાન જોઈએ, અમૃતનો ગોળો જોઈએ.

અને જોઈતો હતો એટલે મળી ગયો. માનવી એ પર્વત ઉપર ચડયો બિહામણી ગુફામણી ગુફાની અંદર ગયો, ભારે લાંલી શિલા ઊંઠાવી–અને અમૃતનો ગોળો હાથમાં આવ્યો. વાહરે! હવે અમર થવાશે. પીએ એટલી જ વાર. ગટગટાવીએ એટલો જ શ્રમ.

પણ અમૃતનો ગોળો માનવીના હાથમાં હતો, તે એ પીવાની તૈયારીમાં હતો ત્યારે એકદમ એને વિચાર આવ્યો : 'તું અમર બનીને શું કરીશ? તારાં દુઃખ ને તારી ચિંતાઓ ને તારી ખામીઓ તું આટલાં જલદી ભૂલી ગયો છે? માંડ માંડ ફરિયાદ કરી કરીને થોડાં વર્ષ કાઢી શકો છો એમાં આમાં આ અમરત્વનો બીજો માથા ઉપર નાખવા તૈયાર થયો? હાથમાં અમૃત તો આવી ગયું, પણ એ પીતાં પહેલાં એક વાર તો વિચાર કરી લે કે ખરેખર અમર થવું છે કે કેમ.

માનવી વિચારમાં પડયો. અમૃત શોધવાની ધૂનમાં એ વિચાર કરવા રોકાયો ન હતો કે ખરેખર અમૃત જોઈએ છે કે કેમ. થોડા વર્ષની જિંદગી ઘણી અસહ્ય લાગે, પછી એ પાર વિનાની બનશે તો કેવી લાગશે! હાલ તો દુઃખમાં દિલાસો છે કે એ જતું રહેશે, નિરાશામાં સાંત્વન છે કે લાંબી ન ચાલશે, કારણ કે જિંદગી જ લાંબી નથી. પણ એ લાંબી બને તો? પાર વિનાની, અંત વિનાની બને તો? ના, ના, એવો શાપ આપણને ન જોઈએ. આ આ અવતારમાં શાશ્વતપણું ન પાલવે. મોક્ષમાં મળશે. મુક્તિમાં મળશે. પણ આ શરીરે તો નહિ જોઈએ તે નહિ જ જોઈએ.

ને મોનવીએ અમૃતનો ગોળો કરી શિલાની નીચે મૂકયો. ગુફામાંથી નીકળ્યો. પર્વત ઉપરથી ઊતર્યો. ને ચુપચાપ પોતાને ઘેર પાછો ગયો.

દેવતાઓ હજી માને છે કે અમૃતનો ગોળો માનવીને જડયો નથી. તપાસ કરવા જાય ત્યારે એક ટીપુંય ઓછું ન નીકળે.

હા. અમૃત સલામત છે, કારણ કે થાનવીને એ પીવું નથી. ●

New Gujarat Cotton Mills Ltd.

AHMEDABAD - 2

INSIST ON
" NEW GUJARAT FABRICS "
FOR HOME & EXPORT

For 100% Polyester, Printed Shirting, 80/20 Filament Shirting, Fancy wash and Wear Poplins of latest fashions

Regd. Office :
18 A, Brabourne
Road,
Calcutta

Mill No. 1
Naroda Road,
Ahmedabad-380 002
Phone : 372266
372317
374527
Telegram : NEW
GUJRAT

Mill No. 2
Out side Dariapur Gate,
Ahmedabad-380 016
Phone : 24293
24294
Teiex : AM-311

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Todi Industries Pvt. Ltd.

Manufacturers of :

Rubber Division	:	Bicycle Tyres & Tubes, Rubber Solutions Moulded Auto parts for Automobiles & General Industries.
Garment Division	:	'Ladies & Gents' Readymade garments for Indian and Export Market.
Engineering Division	:	Steel Windows & doors, M S. Tanks, Pressure vessels, Steel Racks, Cranes Light & Heavy Fabrication and Centrifugal pumps, Operation tables, Tapelooms & Braiding Machines.
Todi Builders (Construction Division)	:	Small and Medium size Industrial Sheds for SSI Units on ownership basis with Power, Water, Lift and N. O. C. at Delisle Road, BOMBAY - 11. Also Office/Shops/ Godown premises at D'Mello Road.

TODI ESTATES
LOWER PAREL
BOMBAY - 400 013

CABLES : **OFFER**
TEL. : **371336**
TELEX : **TODI-O11-3796**

फोन नं. २६३८०

सेवा, समृद्धि तथा सुरक्षा का त्रिवेणी संगम

धी माधवपुरा मर्कॅन्टाइल को-ऑपरेटिव बैंक, लिमिटेड

हेड आफिस :

शाहीबाग, माधवपुरा मार्केट,
शाहीबाग रोड, **अहमदाबाद ३८०००४**

रुपए की वृद्धि तथा सुरक्षा

अपना बचाया हुआ रुपया इस बैंक की छह विविधलक्षी योजनाओं में लगाइए ।

शाखाएँ

नया माधवपुरा, अहमदाबाद १, टेलीफोन नं. २३९९३
खाड़िया चाररास्ता, अहमदाबाद १, टेलीफोन नं. ३४७६०
दरियापुर कड़ियानाका, अहमदाबाद १, टेलीफोन नं. २३६९८
रतनपोल, अहमदाबाद १, टेलीफोन नं. २६७८६

बाबूभाई एच. गाँधी
चेयरमेन

डी. बी. पंड्या
मैनेजर

रमेशचन्द्र एन. परीख
मैनेजिंग डाइरेक्टर

आपकी बैंक : आपकी सेवा में

पट्टा, पोपलीन, बुश शर्टिंग, पोलिस्टर आदि एवं हर प्रकार के
कपड़े की थोक खरीदीके लिए मिलिए या लिखिए :—

गिरधारीलाल मोहनलाल

१९९, न्यू क्लॉथ मार्केट,
अहमदाबाद–३८० ००२

टेलिफोन :– दुकान : ३६२८६७
निवास : ८५७६५५

पोलिस्टर, फिलामेन्ट तथा सब तरह के सूती कपड़ेकी
अर्धथोक (सेमि–होलसेल) खरीदी के लिए

राजीव एण्ड कम्पनी

४B, मस्कती मार्केट,
अहमदाबाद–३८० ००२

टेलीफोन { दुकान : ३६२०११
निवास : ८५७६९१

देशिका

देशिका -- वह गुरुरूपिणी है।

जो दिशा दिखाता है वह देशिका है। संवित अखण्ड को दिखाती है।

वेदागम शास्त्रों में मोक्ष प्रदाता गुरु को साक्षात् परमेश्वर रूप ही माना है और गुरु के प्रति प्रीति से ही पराभक्ति का विधान किया गया है – जैसी ईश्वर के प्रति। वेदान्त में गुरु का लक्षण "श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठं" से किया गया है। योगसूत्र के "स पूर्वेषामपि गुरुः" वचन के अनुसार वही ईश्वर प्रत्येक ब्रह्मविद्या गुरु के अन्दर कार्य करते हुए परम्परा को जागृत रखता है। क्योंकि वह काल से अविच्छिन्न नहीं है। आगमों के अनुसार दीक्षा के समय आचार्यमूर्ति से ईश्वर ही आविष्ट होकर उपदेश कार्य सिद्ध करते हैं -- "स दीक्षयाचार्य मूर्तिस्थः"।

गुरु के महत्त्वपूर्ण कार्य को प्रकट करते हुए आगमों ने कहा है – "जनदेंद मः समावेशं शांभवं सहिदेशिकः।" अधिकारी शिष्य में गुरु निजानन्द का समावेश कराते हैं, जिसकी रुचि या संस्कार को लेकर साधक शीघ्र ही साधनापथ में आगे बढ़ जाता है। गुरु तीन प्रकार से समावेश करते हैं :-

(१) कछुए की तरह --जैसे कछुआ केवल चिंतन द्वारा अपने अंडों को पकाता है वैसे ही गुरु भी संकल्प से शिष्य को परिपक्व कर देते हैं।

(२) मगरमच्छ के अनुरूप – केवल दृष्टि द्वारा समावेश कराते हैं।

(३) पक्षीवत् – स्पर्श से व साक्षात् सम्पर्क से समावेश कराते हैं।

* * *

शुभ कामनाओं के साथ

रामगोपाल गिरधारीलाल सराफ

कपड़े के व्यापारी एवं आढ़ती
५०६, न्यू क्लॉथ मार्केट
अहमदाबाद–२
टेलीफोन : दुकान : ३६०२६८ एवं ३६११००; निवास : ४५६७१

WITH BEST COMPLIMENTS

From

MANJUSHRI TEXTILES

Manufacturers of Fisshion Fabrics, Exclusive creation of the latest styles incorporating the colours & prints, Synthetic Shirting, Cotton Shirtings, Sarees, Dress Materials.

MANJUSHRI TEXTILES,

(Prop : New Swadeshi Mills of Ahmedabad Ltd)
Shahibag, **Ahmedabad–380 004**
Teli : **66081**

NESA FABRICS

Nesa Suitings, Shirtings, Sarees, Prints,
Super Fine Cambrics, Poplins, Bed Sheets,
Lungis, Dress materials etc.

न्यू स्वदेशी

The New Swadeshi Mills Of
Ahmedabad Ltd.

Naroda Road,
AHMEDABAD-380 002

Telephone : 372121
372066
372021

Telegram : NEWSWADESHI
Telex : AM 222

सुधाबिन्दु

वर्ष : १७

अंक : ११

नवम्बर, १९७८

वार्षिक शुल्क : १५ रुपए

आजीवन : १५० रुपए

एक अंक : १.५० रुपए

21/12

राजस्थान सेवा समिति · अहमदाबाद

• पाठकों के पत्र •

आपके सुप्रसिद्ध मासिक 'सुधाबिन्दु' का मैं एक चाहक, शुभेच्छक एवं पाठक हूँ। मुझे 'सुधाबिन्दु 'की साहित्य-प्रसादी तथा ले-आउट्स बहुत पसंद हैं।

जगदीश बिनीवाले, अहमदाबाद

* * *

'सुधाबिन्दु' इस अहिन्दी प्रदेश में भी अपने चिरन्तन अस्तित्व को बनाए रखकर अपने जिस साहस का परिचय दे रही है उसकी प्रशंसा किए बिना कोई भी ईमानदार व्यक्ति नहीं रह सकता। आप कृपया उसके बारे में अतिरिक्त जानकारी देने की अनुकम्पा करें।

फूलचन्द गुप्ता, बी कोम
अहमदाबाद

* * *

'भारत की वाणी' विचारणीय लगी, 'उषा का गीत' गुनगुनाया, 'विद्याप्रेमी राजा भोज' से कुछ ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त की। 'महापुरुषों की महानता' के अन्तर्गत शर्माजी के संस्मरण प्रेरणादायी लगे। लेखिका को बधाई!

'श्री मयंकजी' का 'क्रोध' भी सुन्दर रहा। अन्त में 'काका की खाली जेब' में मेरी ओर से प्रशंसा-फूल सादर अर्पण (श्रेष्ठ रचना अर्थ)! पत्रिका की उन्नति के लिए मेरी शुभ कामनाएँ! धन्यवाद!

सलीम शेख
सोमाजी की चाली
चमनपुरा, अहमदाबाद (गुजरात)

* * *

सुधाबिन्दु

सम्पादक

डा० राजनाथ पाण्डेय
एम. ए. (संस्कृत, हिन्दी, पालि), पी-एच. डी.
व्याकरणाचार्य, 'लब्धस्वर्णपदक'

रामअवधेश त्रिपाठी
साहित्यरत्न

संयोजक

गिरधारीलाल सराफ
एम. कॉम., एल-एल. बी., रा. रत्न

लेखकों से निवेदन

(१) "सुधाबिन्दु" में आप किस प्रकार की रचनाएँ नहीं भेजेंगे —

- जो रचनाएँ जीवन में अनास्था जगाएं और देश के विभिन्न समुदायों में स्नेह-सूत्र तोड़ें।
- जो व्यक्तिगत आक्षेप करें तथा सहज स्वस्थ सुरुचि को ठेस पहुँचाएँ।
- जो अन्यत्र किसी पत्र-पत्रिका में प्रकाशित हों अथवा विवादास्पद हों।

(२) रचनाओं को स्वीकृत करने की सूचना उनके प्राप्त होने के पन्द्रह दिन के अन्दर दी जाती है।

(३) अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाती हैं। लेखकों को रचनाओं की प्रतिलिपि अपने पास रख लेनी चाहिए।

(४) हिन्दीतर भाषी नवोदित लेखकों-कवियों की हिन्दी रचनाएँ प्रकाशित कर प्रोत्साहन दिया जाता है।

(५) रचना के साथ परिचय तथा योग्यता-विवरण भी भेजें।

(६) प्रकाशन-तिथि-प्रति मास की दसवीं तारीख है।

पत्राचार : **रामअवधेश त्रिपाठी**
५५/३ म्युनिसिपल क्वार्टर्स,
शाहपुर, १ अहमदाबाद–

राजस्थान सेवा समिति, अहमदाबाद का मासिक मुखपत्र

वर्ष : १७ **नवम्बर,**
अंक : ११ **१९७८**

वार्षिक शुल्क : **१५ रुपए**
आजीवन ग्राहक : **१५० रुपए**
एक अंक का मूल्य : १-५० रु०

●

'सुधाबिन्दु' में विज्ञापन की दरें निम्नांकित हैं :

स्थान	विशेषांक	वार्षिक	मासिक
कवर पृष्ठ नं.–४	१०००	१८००	२००
,, ,, नं.–२ और ३	५००	१५००	१५०
रंगीन पूरा पृष्ठ	५००	—	—
साधा० ,, ,, ,,	२५०	१०००	१००
,, आधा पृष्ठ	१५०	६००	६०

व्यवस्थापक **'सुधाबिन्दु'**
राजस्थान सेवा समिति, शाहीबाग मार्ग, **अहमदाबाद–१४**

[राजस्थान सरकार के माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों तथा पुस्तकालयोंके लिए 'सुधाबिन्दु' मान्य है तथा गुजरात युनिवर्सिटी एकेडेमिक कौंसिल (पत्र नं. ४६०९९/१९७५ ता. २४–१२–'७५) द्वारा शोध-पत्रिका के रूप में मान्य है।]

राजस्थान सेवा समिति, शाहीबाग मार्ग, अहमदाबाद ४ के लिए श्री रामावतार शर्मा ने प्रकाशित किया एवं श्री शान्तिलाल हरजीवन शाह ने नवजीवन् मुद्रणालय, अहमदाबाद १४ से मुद्रित किया।

अनुक्रमणिका

(गुजरात यूनिर्वासिटी द्वारा शोधपत्रिका के रूप में मान्य)

नवम्बर, १९७८

१. हम कौन हैं ?	--	सम्पादकीय	५
२. दो कविताएँ	(कविता)	डा० किशोर कावरा	६
३. मीरा की मधुर भक्ति	(समीक्षा-परक)	श्री रमणलाल प्रजापति	७
४. अन्तर्दाह	(कहानी)	सुश्री संगीता 'विभू'	१०
५. महापुरुषों की महानता ६ श्री जैनेन्द्रजी की जीवन-झाँकी	(संस्मरण परक)	डा० इन्दिरा जोशी	१३
६. समय का सदुपयोग	(विचार परक)	श्री श्रीकृष्णगोपाल माथुर	१८
७. नारी-शक्ति	(नारी परक)	डा० रामश्लोक सिंह	२०
८. पितृ-ऋण	(भाव-परक)	प्रा० जगदीश शुक्ल	२३
९. कहकहे	(हास्य-विनोद)	श्री स० शेख	२४
१०. व्यवहार	(मननात्मक)	श्रीं श्यामसुन्दरलाल पोशाकवाला	२५
११. मुँह देखाई	(सत्य कथा)	श्री सलीम शेख	२७
१२. श्वेत कुष्ठ	(स्वास्थ्य परक)	श्री प्रेमचन्द बासोतिया	२९
१३. तृतीय श्रेणी	(व्यंग्य परक)	श्री गोपाल वर्मा	३२
१४. जीवनमां एकाग्रता	(गुजराती लेख)	श्री जगदीश बिनीवाले	३४
१५. समिति-समाचार	—		३५
१६. विज्ञापन	--		३७

याद रखिए—

राजकमल टेक्सटाइल्स

२९" प्रिन्ट बुश शर्टिंग, छींट एवं स्कीन बोर्डर

★

दुकान :
५२४, न्यू क्लोथ मार्केट,
अहमदाबाद ३८०००२
टेलीफोन : ३६०७२९
टेलीग्राम : कामधेनु

कार्यालय :
मणिलाल मेन्शन, क्रोसलेन
अहमदाबाद ३८०००२
टेलीफोन : ३८२४१६
टेलीग्राम : धार्मिक

—: जीवनयज्ञ :—

श्रद्धा पत्नी सत्यं यजमानः श्रद्धासत्यंतदित्युत्तमं मिथूनम् ।
श्रद्धया सत्येन मिथुनेन स्वर्गाल्लोकान् जयतीति ।।

ऐतरेय ब्राह्मण–७-१०

जीवन-यज्ञ में श्रद्धा मानो पत्नी है और सत्य यजमान है । श्राद्ध (भावनामूलक)और सत्य (बुद्धिमूलक) की उत्तम जोड़ी है । श्रद्धा और सत्य की जोड़ी से मनुष्य दिव्य लोकों को (वास्तविक कल्याण को) प्राप्त करता है ।

• आवश्यकता है •

" सुधाबिन्दु " का प्रचार-प्रसार करने और ग्राहक बनाने तथा विज्ञापन लानेके लिए उचित कमीशन पर उत्साही कार्यकरों की आवश्यकता है । पत्र-व्यवहार करें —

व्यवस्थापक **'सुधाबिन्दु'**
राजस्थान सेवा समिति शाहीबाग मार्ग, अहमदाबाद–४

Suren & Co. – Priyam Co.

CLOTH MERCHANT & COMMISSION AGENTS

Sole Agents for NUTAT MILLS'

Second & Fents

296, NEW CLOTH MARKET,
AHMEDABAD–313 002.

Teliphone : **369191**

"सुधाबिन्दु"

का

आगामी विशेषांक "राष्ट्रोत्थान में राजस्थान"

'सुधाबिन्दु' का प्रति वर्ष एक विशेषांक प्रकाशित होता है, जो शोधपूर्ण सामग्री और संग्रहणीय विशेषताओं से समन्वित होता है। अब तक इस पत्रिका के 'राजस्थान-गुजरात भावात्मक एकता विशेषांक', 'चेतना विशेषांक' 'जीवन-विशेषांक', 'युग विशेषांक', 'जागृति विशेषांक', तथा 'मानव धर्म विशेषांक' प्रकाशित और प्रशंसित हो चुके हैं।

आगामी जनवरी-फरवरी '७९ में **"राष्ट्रोत्थान में राजस्थान"** विशेषांक प्रकाशित होगा। इसके अनुरूप रचनाएँ–शोधलेख, कविता, कहानी, संवाद, एकांकी आदि अधिकतम पांच फुलस्केप में ता० १५-१२-'७८ तक सादर आमंत्रित हैं।

सुधी लेखकों से निम्नानुसार अथवा इससे मिलती-जुलती अनुरूप रचनाएँ भेजने की हार्दिक प्रार्थना है।

—— सम्पादक

१. राजस्थान का आविर्भाव और विकास
२. राजस्थान तथा हरियाणा की भौगोलिक परिस्थितियाँ
३. भारतीय स्वातंत्र्य में राजस्थान की पृष्ठभूमिका
४. राजस्थान का एक-एक रजकण इतिहास का स्वर्णिम पृष्ठ
५. संस्कृत के विकास में राजस्थान का योगदान
६. 'भारतीय संस्कृति' के विकास में राजस्थान का योगदान
७. भारतीय औद्योगिक क्रान्ति और राजस्थान
८. हिन्दी साहित्य को राजस्थान की देन
९. भक्ति के क्षेत्र में राजस्थान का प्रदान
१०. कला के क्षेत्र में राजस्थान का विनियोग
११. वाणिज्यमूलक क्रान्ति और राजस्थान
१२. भारतीय अस्मिता की प्रतिमूर्ति राजस्थान
१३. लोककथाओं में राजस्थान
१४. धार्मिक विकास में राजस्थान का योगदान
१५. साहित्य के विकास में राजस्थान का प्रदान
१६. भारतीय खनिज सम्पत्ति और राजस्थान
१७. राजस्थान की लोकसंस्कृति
१८. भारत के आर्थिक विकास में राजस्थान का योगदान
१९. हमारी राष्ट्रीय भावना और राजस्थान
२०. राजस्थान की पद्मिनियाँ
२१. भारत का कीर्तिस्तम्भ– चित्तौड़गढ़
२२. राजस्थान के महापुरुष —— ऐतिहासिक, धार्मिक सांस्कृतिक-साहित्यिक, भाषाकीय औद्योगिक
२३. राजस्थान के ऐतिहासिक स्थल
२४. राजस्थान के धार्मिक स्थल
२५. राजस्थान की कला-कारीगरी
२६. खेतड़ी और विवेकानंद
२७. इतिहास-लेखक की परम्परा में राजस्थान
२८. दादू-मीरा आदि सन्त
२९. विद्या, कला, शिल्प के क्षेत्र में प्रदान
३०. राजपूतों की संस्कृति
३१. अरावली की गोद में
३२. श्रीमाल, भीममाल, लोहारगल की प्रदेयता
३३. खानाबदोश जीवन का सन्देश
३४. चारणी साहित्य की गरिमा
३५. राजस्थान का शौर्य-औदार्य
३६. धर्म और दान के क्षेत्र में
३७. भारतीयता और राजस्थान
३८. अग्रोहा, अग्रसेन और अग्रवाल
३९. राजस्थान के प्रहरी
४०. शिलालेख और ताम्रपत्र
४१. पत्रकारिता के क्षेत्र में
४२. पुरातत्त्व के क्षेत्र में
४३. राजस्थान की स्थापत्य कला
४४. राजस्थान के सिक्के और संग्रहालय
४५. जयपुर, अजमेर, उदयपुर की देन
४६. राजस्थान की कठपुतली
४७. ज्योतिष के क्षेत्र में राजस्थान

कृपया इस मास में
१५ रु. वार्षिक शुल्क भेजि

सुधाबिन्दु

वर्ष : १७ नवम्बर, १९७८ अंक : ११

• हम कौन हैं ? •

पक्षी-विज्ञान विशारदों का कथन है कि मयूर घन-घटा और प्रकृति की हरियाली को देखकर आनन्द प्रमत्त हो जाता है। उस समय अपने चमकीले पंखों को पसार कर नाचने लगता है और अपने "टेंहुक-टेंहुक" के आल्हादक स्वर से वन-प्रान्तर को गुंजा देता है; किन्तु जब वह अपने मटमैले, भद्दे, कुरूप पैर को देखता है, तब उदास हो जाता है, उत्साहहीन हो उठता है। बाह्य सौन्दर्य की प्रतिष्ठा अन्तर सौन्दर्य की अल्पता से प्रभावित हो जाती है। यही दशा आजकल हमारे देश की है, स्वतंत्र भारत की है।

स्वतंत्रता-प्राप्ति के विगत बत्तीस वर्षों में भारत ने ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में, आर्थिक-सांस्कृतिक क्षेत्र में, औद्योगिक-व्यापारिक क्षेत्र में, समृद्धि और विकास आदि के क्षेत्र में जो सिद्धियाँ प्राप्त की हैं, वे निश्चित ही प्रशंस्य हैं, विदेशियों द्वारा उनकी सराहना की गई है और सचमुच वे हमारे गौरव में चार चाँद लगाती हैं, मूल्यवान हैं। इसके बावजूद हमारा अन्तर पक्ष उसी अनुपात में दुर्बल दिखाई देता है। हम महात्मा गाँधी, तिलक, गोखले और नेहरू के देश के हैं यह आभास ही नहीं होता। न तो हम नेतृत्व का गौरव बढ़ाना जानते हैं और न नेतृत्व करना। फिर भी नेतृत्व के मद में चूर-चूर बनकर, अपना दल-बल बनाकर काक-रव करने में अहोभाग्य समझते हैं। कवि के शब्दों में—

लीडरों की धूम है और फालोअर कोई नहीं,
सब तो जनरल हैं यहाँ आखिर सिपाही कौन है।

राष्ट्र-राष्ट्र का जाप करने वाले हम भारतीय राष्ट्र-प्रेम और राष्ट्र-हित की बात कभी स्वप्न में ही सोच पाते हैं, व्यवहार और जागृतावस्था में हम अपने समक्ष राष्ट्र को तुच्छ समझते हैं, गौण मानते हैं। इसके कारण आज भाषावाद, प्रान्तवाद और संकुचितता के बन्धन में बँध गए हैं। इससे राष्ट्र-रथ न तो ठीक तरह गतिशील हो पाता है और न उचित दिशा में प्रयाण कर पाता है।

हम 'कृण्वन्तो विश्वसार्यम्' के घोषक हैं। फिर भी हमारी आर्यता हमारे घर में रोगग्रस्त और राहु-ग्रस्त बन गई है। हम अपने नैतिक और सामाजिक गुणों की अभिरक्षा करते हुए शुद्ध संकल्प शुद्ध वाणी, शुद्ध विचार और शुद्ध व्यवहार द्वारा अपने को आर्य बनाकर दूसरों को आर्य बनाने के अधिकारी बन सकते हैं।

अतः, समय के इस प्रश्न का उत्तर देनेके लिए हमें आन्तरिक शक्तियों का विकास करना होगा और बार-बार अपनेंसे प्रश्न करना होगा कि हम कौन हैं? अब उपदेश का युग अन्तिम साँसें ले रहा है, आचरण के युग की शहनाई बज रही है। जागिए और बताइए कि आप कौन हैं? •

कविता

दो कविताएँ

•

—डा० किशोर काबरा
एम० ए०, पी-एच० डी०

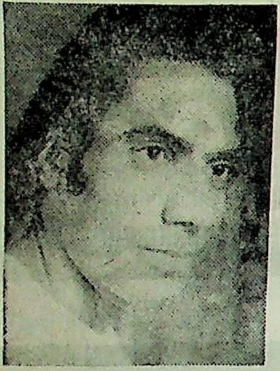
लेखक

• विश्वास •

मिट्टी भी हँसती है, ऐसा सुनकर मैं हँसता था पहले,
फूलों का परिवार देखकर अब विश्वास हुआ है मुझको।
कितनी कलियों की आँखों में
गूंज रही खुशबू की गीता!
कितने फूलों के ओठों पर
लिखी गई रंगों की कविता।
पँखुरी-पँखुरी फैल गई है
अलबेली शरमीली शबनम,
मानो रंगों की छाया में
तैर रही आँसू की सरिता।
नारी के भी दिल होता है, सुनकर मैं हँसता था पहले,
कलियों की मनुहार देखकर, अब विश्वास हुआ है मुझको।
खुशबू के हस्ताक्षर करती
डोल रही तितली-बालाएँ।
सोनजुही के कानों में कुछ,
कहतीं भवरों की मालाएँ।
वासन्ती घूँघट के भीतर
छिपे हुए हैं मधु के प्याले,
मानो रेशम की बस्ती में
खुली पड़ी हों मधुशालाएँ।
तितली नगरवधू बनती है, सुनकर मैं हँसता था पहले,
यह बाजारू प्यार देखकर, अब विश्वास हुआ है मुझको।
खुशियों की इस महफिल में भी
एक कली की आँखें पुरनम।
हाय कहीं परदेश गया है
उस भोली का निष्ठुर प्रियतम।
पत्रों के सिरहाने बैठी
थरथर काँप रही बेचारी।
मानो वीणा के तारों पर
सिसक रही हो कोई सरगम।
प्रियतम सब छलिया होते हैं, सुनकर मैं हँसता था पहले,
भँवरों का व्यवहार देखकर अब विश्वास हुआ है मुझको।

• रतनारे दिन •

बीत गए
प्यारे रतनारे दिन बीत गए।
रीत गए
आँखों के खारे छिन रीत गए।
लहरों के इंगित पर
रुक गए किनारों के रेतीले पाँव।
चुक गए सिवाने पर
मेरी अभिलाषा के सपनीले गाँव।
हारे पल
आँख के इशारे बन जीत गए।
बरसों के प्यासे मन
पियराई सरसों की लूट रहे गंध।
रोमांचित अलसी की
अनव्याही कलियों के टूट रहे बंध।
पारे-से
बिखर-बिखर क्वांरे मनमीत गए।
अरुणाए अधरों के
मखमल-से चुम्बन ने मोड़ दिया पाल।
काजल की डोरी से
बँधी हुई मछली ने छोड़ दिया ताल।
द्वारे पर
बहरे हरकारे बिन गीत गए।

१२०८, डहेलावाली खिड़की
शाहपुर, अहमदाबाद ३८०००१

गीता में कर्म के फल की आसक्ति को समाप्त कर 'सर्वकर्म' स्वरूप भगवान् के अनन्त दीप्त, शक्ति, सौन्दर्य, माधुर्य से युक्त रूप की ओर मानव को आकर्षित किया गया। इसी आकर्षित होने को 'भक्ति' कहते हैं। भक्ति शब्द का शाब्दिक अर्थ है 'भगवान् की सेवा करना'।

श्रीमद्भागवत में भक्ति का लक्षण बताते हुए कहा गया है—

"स वै पुंसा परो धर्मो यतो भक्तिरधोक्षजे।
अहैतुक्य प्रतिहता यथाऽऽत्मा संप्रसीदति।"

मनुष्योंके लिए सर्वश्रेष्ठ धर्म वही है, जिसके द्वारा भगवान् कृष्ण में भक्ति हो, भक्ति ऐसी हो जिसमें किसी प्रकार की कामना न हो और जो नित्य निरंतर बनी रहे। ऐसी भक्ति से आनंद स्वरूप भगवान् की उपलब्धि करके भक्त कृतकृत्य हो जाता है।

समीक्षा-परक

मीरा की भक्ति

—श्री रमण प्रजापति
एम. ए.

[श्री प्रजापतिजी एक कुशल शोधछात्र और हिन्दी के अध्यापक हैं।

प्रस्तुत लेख में मीरा की मधुर भक्ति का संक्षिप्त दिग्दर्शन कराया गया है, जो ज्ञात होते हुए भी पठनीय है। —सम्पादक]

शुक्लजी के मतानुसार—

भक्तिमार्ग अपने विशुद्ध रूप में धर्म-भावना का भावात्मक या रसात्मक विकास है। यह विकास उपास्य ईश्वर के स्वरूप की प्रतिष्ठा के उपरान्त ही होता है। स्वरूप की यह प्रतिष्ठा तत्त्वचिन्तन या ज्ञान की प्रकृति द्वारा ही हो सकती है और सर्वत्र हुई है।

भक्ति-भेद :

आचार्यों ने भक्ति के दो प्रधान रूप माने हैं— गौणीभक्ति तथा पराभक्ति। इनमें से गौणी भक्ति भक्ति का साधन पक्ष और पराभक्ति उसका साध्य पक्ष है। भक्ति के साधन-पक्ष को ध्यान में रखकर भागवत में पुनः भक्ति के नौ भेद माने गए हैं, जो 'नवधा भक्ति' कहलाते हैं। इस भक्ति में ऐसे माधुर्यपूर्ण उपास्यों को अपनाया जाने लगा, जो अत्यन्त घनिष्ठ प्रेम का आलंबन हो सके। इसके संदर्भ में डा० के० रामनाथन् का कहना है—

"यों तो भक्ति का जन्म ही प्रेम और श्रद्धा के सुअंक में होता है, पर भक्ति जब माधुर्य को साथ में लेकर उत्पन्न होती है, तब तो उसमें प्रेम ही प्रेम होता है। प्रेम भी कैसा? अभिन्न, एक रस। यही वह प्रेम है जो अदृश्य, अव्यक्त परमात्मा को भी प्रकट होनेके लिए बाध्य कर देता है। प्रमाण हैं हमारे रसवर्षी सन्तों की पुण्य कथाएँ।"[१]

श्रीमद्भागवत में भगवान् के इसी रूप की प्रतिष्ठा हुई है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के शब्दों में "भागवत ने कृष्ण की वह मधुर मूर्ति सामने रखी जो प्यार करने योग्य हुई—उस ढंग का प्यार, जिस ढंग के प्यार की प्रेरणा से माता-पिता अपने बच्चे को दुलराते-पुचकारते हैं, उस ढंग का प्यार, जिस ढंग के प्यार की उमंग में प्रेमिका अपने प्रियतम का ललककर कर आलिंगन करती है। भागवत ने भगवान् को प्यार करनेके लिए भक्तों के बीच खड़ा कर दिया।"

भावधारा :

मीरा की जीवनधारा ही उनकी भक्ति-भावना का क्रमिक विकास है। डा० रामकुमार गुप्तजी का कथन है, "उनके हृदय में कृष्ण की जो मूर्ति है उसपर किसी सम्प्रदाय की छाप न होकर स्वानुभव का प्रकाश है। कबीर की भाँति मीरा ने भी प्रेम-लक्षणा भक्ति अथवा दशधा भक्ति का अनुसरण किया है।"

मीरा ने अपने को श्रीकृष्ण की दासी, सखी, प्रेमिका एवं अर्धांगिनी के रूप में अपने भजन-गीतों में

---

१. "तुलनात्मक अनुसंधान और आलोचना" —डा० के. रामनाथन्। पृष्ठ संख्या – १३५

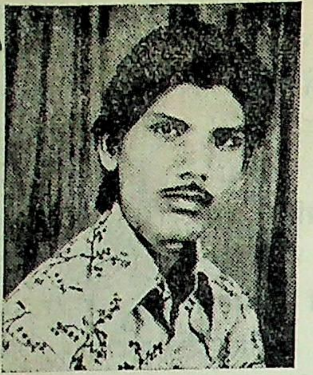

लेखक

व्यक्त किया है। इसी संदर्भ में दास्यभक्ति का एक पद द्रष्टव्य है --

"म्हाँने चाकर राखोजी।
चाकर रहसूँ बाग लगासूँ नित उठ दरसन पासूँ।
बिन्दाबन की कुंजगलिन में गोविंद लीला गासूँ।"

अर्धांगिनी के रूप में --

मेरे तो गिरिधर गोपाल, दूसरो न कोई
दूसरो न कोई साधो, सकल लोक जोई।।

सच तो यह है कि दर्शन, पंथ एवं मतमतान्तरों से परे मीरा की साधना विशुद्ध प्रेममूलक थी। वे सभी मार्ग जिससे प्रियतम का मिलन हो सके, मीरा ने निर्विरोध भाव से उनपर चलने की तत्परता दिखाई है। जैसे --

"चालो वाही देस प्रीतम चालो वाही देस,
कहो कुसुम्बी सारी रंगावो कहो तो भगवा वेस।"

मीरा ने अधिकांशतः अपने आपको श्रीकृष्ण की प्रणयिनी के रूप में ही चित्रित किया है। इसी कारण इनकी भक्ति-पद्धति को मधुर भावाश्रित कहा गया है।

इसी ढंग की उपासना का प्रचार सूफी भी कर रहे थे। इसलिए मीरा पर भी यह प्रभाव स्पष्ट रूपेण दिखाई देता है। राजवैभवों को क्षणिक समझ कर मीरा ने उनका त्याग किया। भयानक आपत्तियाँ उन्हें भक्तिपथ से विचलित नहीं कर सकीं। उन्होंने विविध भावों से श्रीकृष्ण को अपना सर्वस्व समर्पण कर दिया। 'जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई' -- मीरा ने निर्भीक चित्त से इस बात की घोषणा की। मीरा ने समाज की परवाह कभी नहीं की। इसके संदर्भ में स्वामी शिवानंद का कहना है --

She hael Raqanuqa or Raqatmika Bhakti. she never cared for public criticisms, and injunctions of snhastras. she danced in the street. she did no ritualistic worship. she had spontaneors love for Lord Krishna . . . krishna was her husband, fathar, mother, friend, relative and guru. krishna was her Prananath. she had finished the Preliminary modes of worship in her Previous birth.[1]

[उन्होंने रागानुराग और रागात्मिका भक्ति की। उन्होंने लोगों की नुक्ताचीनी तथा शास्त्र-विहित आदेशों की कभी परवाह नहीं की। उन्होंने गलियों में नाच किए। उन्होंने धार्मिक धुरन्धरों की तरह भक्ति नहीं की। उन्हें तो कृष्ण से स्वाभाविक प्रेम था। कृष्ण ही उनके पति, पिता, माता, मित्र, सम्बन्धी एवं गुरु थे। कृष्ण ही उनके प्राणनाथ थे। उन्होंने अपने पूर्वजन्म में ही भक्ति के नियमों का पालन कर लिया था।]

दृष्टि-सृष्टि :

मीरा की दृष्टि में सृष्टि में समस्त जीवात्माएँ स्त्रियाँ हैं और पुरुष केवल कृष्ण। श्रीकृष्ण के सुख को ही अपना सुख समझना यह मीरा की 'मधुर भक्ति' का मुख्य अंग है। मीरा की कविता में प्रेम की गंभीर अभिव्यंजना हुई है। भाव की ऐसी तल्लीनता अन्यत्र दुर्लभ है। उसमें विरह की वेदना भी है और मिलन का उल्लास भी।

"दरस बिनु दूखण लागे नैन।
जब से तुम बिछुरे प्रभु मोरे! कबहुं न पायो चैन।
बिरह कथा कासों कहूँ सजनी बह गयी करवत ऐन।

× × ×

मीरा के प्रभु ! कब रे मिलोगे दुःख मेटण सुख-देन!"

---

१ – लिव्स आफ सैन्ट्स – शिवानन्द स्वामी

जैसे —

घायल की गत घायल जाणै की जिण लायी होई।
सूली ऊपर सेज हमारी, सोवण किस विध होई ?
दरद की मारी बन-बन डोलूँ, बैद मिल्या नहिं कोई
मीरा की प्रभु पीर मिटैगी,वैद साँवरिया होई।"

आराध्य के प्रति :

मीरा का विरह–निवेदन अत्यन्त करुणापूर्ण और मर्मस्पर्शी है। वे कहती हैं कि श्रीकृष्ण के साथ उसका जन्म-जन्मान्तर का सम्बन्ध है। इसीलिए वे कृष्ण के विरह में जलती रहती हैं। वे अन्त तक अपने आराध्य की प्रतीक्षा करती रहीं। मीरा की आँखें सावन की तरह हमेशा बरसा करती थीं–कृष्णमिलनके लिए! वे अपने व्याकुल हृदय को हमेशा तसल्ली देते हुए कहा करती थीं —

"मीरां के प्रभु गहिर गंभीरा,
हृदै रहो जी धीरा।
आधी रात प्रभु दरसन दीनो
जमनाजी के तीरा।।"

आखिर कृष्ण का हृदय पिघल गया। मीरा को दर्शन देकर अदृश्य हो गए। इस क्षणिक मिलन से मीरा की निराशा का कोई ठिकाना न रहा! कृष्ण से वे कहती रहीं. —

"जोगी मत जा, मत जा, पाँव परूँ मैं चेरी तेरी।
प्रेम भगति को पैडो ही न्यारो, हमकूँ गैल बता जा।।
अगर चंदन की चिता रचाऊँ, अपने हाथ जला जा
जल-जल भई भस्म की ढेरी, अपने अंग लगा जा।।
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर ज्योतमें ज्योत मिला जा।"

भावावेश, संगीतात्मकता और प्रसाद-माधुर्य गुण सम्पन्न भाषा — गीतिकाव्य के ये प्रमुख तत्त्व मीरा के काव्य में प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं।

स्व० सुमित्रानंदन पन्त ने ठीक ही कहा है "मीरां राजस्थान के मरुभूमि की मंदाकिनी और गुजरात के भक्ति-उपवन की कोकिला हैं।" ●

बाजी भट्ट का झाँपा,
उमरेठ (जिला खेड़ा)

• सूक्तिसुधा •

"प्रबोधाय विवेकाय हिताय प्रशमाय च।
सम्यक्तत्त्वोपदेशाय सतां सूक्ति प्रवर्तते।।"

[सत्पुरुषों की उत्तम वाणी दूसरों को जगानेके लिए, सत्य-असत्य के विवेकके लिए, लोककल्याणके लिए, जगत् में शान्तिके लिए और जीवन में वास्तविक तत्त्व के उपदेशके लिए प्रवृत हुआ करती है।]

•

"षड्दोषाः पुरुषेणेह
हातव्या भूतिमिच्छता।
निद्रा तन्द्रा भयं क्रोध
आलस्यं दीर्घसूत्रिता।।

[जो अपना ऐश्वर्य (कल्याण) बढ़ाना चाहता है उसे निद्रा, तन्द्रा (निद्रा से पहले की अवस्था), भय, क्रोध, आलस्य और देर से काम करने का स्वभाव इन छः दुर्गुणों को छोड़ देना चाहिए।]

•

निरुत्साहस्य दीनस्य शोकपर्याकुलात्मनः।
सर्वार्था व्यवसीदन्ति व्यसनं चाधिगच्छति।।

[उत्साहहीन, दीन और शोक से व्याकुल व्यक्ति के सब काम बिगड़ जाते हैं और वह स्वयं कष्ट पाता है।]

कहानी

अन्तर्दाह

—सुश्री संगीता 'विभू'

[इस कहानी की लेखिका पत्र-पत्रिकाओं में आदर पाती हैं और आकाशवाणी पर दी गई वायु-वार्ता द्वारा भी परिचित हैं।

लाओत्से चीनी युवक है। भारतीय कन्या दीप उससे प्रेम करती है। प्रेमान्ध दीप ने प्रियतम प्राप्ति के लिए हिमालय के दुर्गम क्षेत्र में "टाइम बम" रखने की शर्त भी स्वीकार कर ली। जिस समय वह 'टाइम बम' रखने जा रही थी उस समय दीप को उसका इकलौता एक मात्र भाई सैनिक प्रहरी के वेष में मिल जाता है। उससे वह सारी बातें बता देती है। लाओत्से पकड़ लिया जाता है। इस मार्मिकता का मूल्यांकन कीजिए। —सम्पादक]

'दीप!" पीछे से आवाज आई।

दीप ने मुड़कर देखा। लाओत्से खड़ा मुस्करा रहा था। वह भी मुस्करा दी। लाओत्से दीप के निकट आ गया। दोनों साथ-साथ चलने लगे।

दीप ने पूछा : "कब आए?"

लाओत्से ने स्नेह भरे शब्दों में कहा—"जब हमारे दीप की आँखों ने देखा।" लाओत्से ने दीप का हाथ अपने हाथ में ले लिया, दोनों साथ-साथ चलने लगे।

दीप एक भारतीय बाला है। उसका प्रेमी चीनी है। यह उस समय की घटना है जब भारत पर चीन ने आक्रमण किया था। लाओत्से चीनी जासूस के रूप में भारत में रह रहा था। दीप उसके जासूसी कारनामों से अनभिज्ञ थी। वह तो उसके रूप पर मोहित थी। लम्बा कद, गौर वर्ण, प्रभावशाली व्यक्तित्त्व तथा मधुर वाणी उसको अपनी ओर आकर्षित करनेके लिए पर्याप्त थी।

दीप ने एक विदेशी को अपना पति बनाने के सपने संजोये थे। दीप का इस संसार में, उसके एक मात्र भाई सुरेश के अतिरिक्त कोई नहीं था। सुरेश भी एक सेनानी था, जो मातृभूमि के रक्षार्थ सीमा पर तैनात था। दीप घर में अकेली थी। माँ का साया भी कुछ समय पूर्व उठ चुका था। पिता को तो उसकी आँखों ने देखा ही नहीं था।

शाम का समय था। दीप का मन घर में उचट रहा था। अतः, वह घूमनेके लिए घर से निकल पड़ी। वह घर से थोड़ी ही दूर चली थी कि उसकी मुलाकात अपने बिछुड़े प्रेमी से हो गई। चलते-चलते दोनों एक पहाड़ी के समीप पहुँचे। दीप का मन बड़ा प्रसन्न था। वह सोच रही थी कि घर लौट कर भाई सुरेश को अपने और लाओत्से के प्रणय-प्रसंगों का विवरण साफ और स्पष्ट शब्दों में लिख भेजेगी। तभी लाओत्से ने कहा—"दीप, तुम मुझे प्रेम करती हो न!"

"हाँ, तुम्हें शक लगता है क्या?" दीप बोली।

"नहीं-नहीं . . . अच्छा, तुम यहाँ पहाड़ी पर बैठो, तुमसे जरूरी बातें करनी हैं। कई दिनों से सोच रहा था, वक्त ही नहीं मिला।" वह बोला।

"तो कह डालो न! अब तो समय मिल गया होगा।" दीप ने कहा

"तुम मुझे अपना जीवन देना चाहती हो न! तुम मेरी हो, मेरी ही रहोगी न! दीप! तुम मेरे लिए . . .।" कहते-कहते लाओत्से रुक गया।

"कहो न! क्या पहेली बुझा रहे हो। कैसे विश्वास दिलाऊँ, मैं तुम्हारी कौन हूँ। तुम्हारे सिवा है ही कौन मेरा। पर तुम कहने में घबरा क्यों रहे हो?" दीप अधिक नजदीक सरक कर बोली।

लाओत्से घबरा गया। उसके चेहरे पर बेचैनी की रेखाएँ उभर आईं। घबराहट भरे शब्दों में बोला—"दीप! मेरी दीप!! तुम्हारी हार्दिक इच्छा है न कि तुम मेरे साथ चीन चलोगी।"

"हाँ-हाँ, साफ-साफ कहो, तुम घबरा क्यों रहे हो?" दीप ने कहा।

"तुम नहीं जानती दीप! मैं घबरा क्यों रहा हूँ। अच्छा सुनो, हिम्मत करके सुनो। तुम मेरा एक काम कर दो।" लाओत्से ने कहा।

"तुम जान भी माँगो तो हाजिर है। तुम कहो तो सही।" दीप भावुक हो उठी।

"तुम्हारे सिवा यह काम कोई नहीं कर सकता। तुम सीमा पर जाना, चली जाओगी न मेरी खातिर।" लाओत्से अपनी बात की भूमिका बाँधने लगा।

"तुम डर-डर के क्यों बोल रहे हो? मैं तुम्हारी हर बात मानने को सदैव तैयार रहूँगी।" दीप ने लाओत्से की ओर करुणापूर्ण नेत्रों से देखा।

"तब सुनो मेरी दीप! मैं तुम्हें एक 'टाइम बम' दूँगा। तुम उसे सीमा के पास खड्डे में दबा देना। तुम्हें वहाँ जाने से कोई नहीं रोकेगा। मैं तुम्हें सोने से पीली कर दूँगा। वहाँ तुम अपने भाई के दर्शन भी कर आना। फिर हम दोनों शीघ्र ही चीन चलेंगे।" लाओत्से ने एक ही साँस में अपनी बात कह डाली।

"लाओत्से, तुमने मुझे इतना नीच कैसे समझ लिया। मैं तुमसे प्यार करती हूँ, इसका यह मतलब तो नहीं कि तुम मुझसे नाजायज कार्य करवाओ। तुम्हारा ढेर-सा धन क्या मेरे उन भाइयों से अधिक है? नहीं, मैं ऐसा कदापि नहीं कर सकती।" दीप चीख कर बोली।

"तो समझ लो, तुम्हारा मेरा कोई नाता नहीं। तुम उन्हें भाई कहती हो, जिन्होंने तुम्हें दाने-दाने को मोहताज कर दिया। तुम्हारी माँ, जरा और ठण्ड में तड़प-तड़प कर मर गई; किन्तु तुम्हारे भाई उन्हें एक कम्बल भी न दे सके। माँ की लाश पर सगे बेटे को दो आँसू बहाने का भी समय न मिला। शीघ्र सेना का नेतृत्व करने हेतु सीमा पर ले गए। बोलो, अब चुप क्यों हो।" लाओत्से चिल्लाया।

"तुम कुछ भी कहो लाओत्से! मैं तुम्हारा यह काम किसी हालत में नहीं कर सकती। तुम मुझे अपने देश ले जाने का लालच देना चाहते हो; किन्तु मैं तुम्हें एवं चीन को ठुकरा सकती हूँ, अपने इस मुल्क को नहीं। तुम मेरी जान ले लो, लेकिन ऐसा देशद्रोही कार्य मत करवाओ। तुम्हें मेरी कसम।" दीप की भाषा में याचना और दृढ़ता का मिश्रण था।

"कसम! कैसी कसम! मैं कसमों पर विश्वास नहीं करता। जीवन में प्रथम व अंतिम बार तुम्हें एक काम सौंपा। वह तुम्हारी हिम्मत से बाहर निकला। खैर. तुम मेरी इस बात का ध्यान जरूर रखना कि यह देशभक्ति तुम्हारा खून चूसेगी और वही तुम्हारे लाड़ले भाई तुम्हें मर जाने को मजबूर कर देंगे। जब तुम मरने को तैयार ही हो तो अपने इस प्रेमी की बात जरूर ध्यान में रखना।" लाओत्से व्यंग्यात्मक भाषा में बोला।

"तुम इन बेतुकी बातों से मेरे दिल को दहलाने की कोशिश मत करो—चले जाओ यहाँ से। आइन्दा अपनी यह बेहूदी तस्वीर मत दिखाना।" दीप की आँखों में क्रोध की चिनगारी फूट रही थी।

"जाओगी तो तुम और तुम्हारे भाई...। मैं तो जो संकल्प लेकर आया हूँ, पूरा करके ही जाऊँगा।" लाओत्से ने ठहाका लगाया।

दीप क्रोधाग्नि फेंकती हुई वहाँ से चल दी। घर में कदम रखते ही वह ठिठकी। उसके सामने ठण्ड में थरथराती रुग्ण माँ का शरीर साकार हो उठा। माँ को ऐसी विषम स्थिति में छोड़कर सीमा पर जाने की कतई भाई सुरेश की इच्छा नहीं थी, परन्तु कर्तव्य उसे ललकार रहा था। अतः, वह मातृभूमि के रक्षार्थ सीमा पर पहुँच गया।

घर में अकेली दीप ही रह गई थी। दीप ने माँ की तन-मन से भरपूर सेवा की, पर विधि का विधान विचित्र। माँ भी छोड़ चली। आज दीप सोच रही थी कि वह एकाकी जीवन व्यतीत नहीं कर सकेगी। उसका हृदय सिहर उठा। वह लाओत्से के बिना नहीं रह सकती। देश ने उसे दिया ही क्या है। प्यार के नाम पर फटकार, त्याग के नाम पर धिक्कार एवं जीवन के नाम पर मरण। नहीं-नहीं, मैं अपनी खुशियों का बलिदान क्यों करूँ। मैं कल

ही लाओत्से के साथ चली जाऊँगी। वह मुझे प्यार देगा, धन-दौलत देगा। फिर मैं अपने जीवन को कंटीली राहों में क्यों भटकनेके लिए छोड़ दूँ। मैं अभी जाकर उससे क्षमा माँग लूँगी। नहीं-नहीं, गलती उसकी थी। मैंने तो उससे याचना की थी। नहीं, मैं ही गलती पर थी। मैंने ही उसे अपशब्द कहे थे। मैं अभी जाकर क्षमा माँगती हूँ। वह उसी समय घर में ताला लगाकर उसके घर की ओर चल दी।

जब वह उसके घर के द्वार पर पहुँची, तब वह सब सामान निकाल चुका था। शायद कहीं जाने की तैयारी में था। दीप को देखते ही बोला —— "क्यों, क्या तुम्हारे भाइयों ने तुम्हें शरण नहीं दी ?"

"लाओत्से! जले पर नमक मत छिड़को। मैं तुम्हारे बिना एक पल भी नहीं रह सकती। मुझे क्षमा कर दो। मैं तुम्हारा काम करने को तैयार हूँ।" दीप ने दीन-हीन शब्दों में कहा।

लाओत्से हँस पड़ा और बोला —— 'अब तो बात समझ में आई। पहले ही मान जाती पर तुम्हारी माया ही विचित्र है। आओ, अन्दर आओ। मैं तुम्हें समझा दूँ कि कैसे क्या करना है।"

दीप ने स्वीकारात्मक गर्दन हिला दी।

लाओत्से ने उसे सब कार्य भलीं भाँति समझा दिया। दोनों एक चौराहे के पास खड़े हो गए। लाओत्से ने कहा —— "देखो, मैं यहाँ खड़ा हूँ तुम जाओ और अपना कार्य करके शीघ्र लौट आओ। देखो, कोई गड़बड़ी की तो अच्छा न होगा।"

दीप ने कहा —— "नहीं, मैं गड़बड़ी नहीं करूँगी।" दीप सीमा के निकट पहुँच गई। एक सैनिक के द्वारा अपने भाई को बुलवा भेजा। भाई के आने से पूर्व वह अपने कार्यके लिए तत्पर हुई ही थी कि उसकी साँस घुटने लगी। उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे भारत-माता उसके आँचल से लिपटी सिसक रही है और देशभक्ति हृदय की घुटन में दबी आहें भर रही है। उनके सामने अनेक माँ, बहनों तथा पत्नियों का चित्र उभर आया जो हँसते-हँसते अपने बेटों, भाइयों और पतियों को रोली तथा कुंकुम का टीका लगा मातृभूमि के रक्षार्थ विदा करती हैं। विजय करके लौट आने पर 'आरती' का 'थाल' लिये द्वार पर स्वागतके लिए तैयार रहती हैं। उसकी रगों में भाई का खून दौड़ने लगा। उसका भावुक मन रो उठा। एक भारतीय नारी और इतनी बड़ी गद्दारी। नहीं . . . वह देश-द्रोही नहीं हो सकती। वह अपनी माँ के खून से अपनी माँग नहीं भर सकती। क्या भारत माँ ने उसे आजके लिए पैदा किया था? क्या माँ के जन्म प्रदान करने का यह प्रतिफल देगी? नहीं . . . ।

● दहेज ●

जनता की सरकार अब, ऐसा करे प्रबंध-
लोभीलाल दहेज के, हों मीसा में बंद,
हों मीसा में बंद, घरों में जिनके कड़की,
पढ़ी-लिखी सुन्दर क्वांरी बैठी हैं लड़की।
खाना-पीना भूल, दुखी चिंता के मारे,
बहा रहे आँसू, लाखों माँ-बाप बिचारे।
धन्य-धन्य वे धन्य कि जो अब भी हैं जागे,
इस कुप्रथा को तोड़ रहे है बढ़कर आगे।

काका हाथरसी
संगीत कार्यालय, हाथरस

तभी भाई ने आकर पुकारा —— 'दीप! तुम यहाँ!' वह 'भैया' कहकर भाई से लिपट गई। भाई के सम्मुख उसने प्रेमी द्वारा दिया गया 'टाइम बम' रख दिया और सारी स्थिति से अवगत करा दिया।

दूसरे ही क्षण लाओत्से बन्दी बना लिया गया। दीप के सम्मुख खड़ा लाओत्से मुस्करा रहा था, किन्तु दीप की आँखों में अथाह समुद्र उमड़ रहा था।

●

द्वारा-भारतीय विद्यामन्दिर शोध प्रतिष्ठान
रतनविहारी पार्क, बीकानेर ३३४००१

संस्मरण-परक

महापुरुषों की महानता : (६)
श्री जैनेन्द्रजी की जीवन-झाँकी

— डा० इन्दिरा जोशी
एम० ए०, पी-एच० डी०, डी-लिट्

लेखिका

[इस संस्मरण की लेखिका आजकल जोधपुर विश्वविद्यालय में हिन्दी के वरिष्ठ रीडर-पद पर कार्यरत हैं।

इस संस्मरण लेख में हिन्दी के सुपरिचित कथा-शिल्पी, साहित्यकार और चिन्तक श्री जैनेन्द्रजी के कतिपय जीवन-प्रसंगों की झाँकी कराई गई है, जो पठनीय और मननीय है— —सम्पादक]

मई, सन् १९७५ की १७, १८ तथा १९ तारीख को, भारत की राजधानी दिल्ली में एक अभूतपूर्व साहित्यिक समारोह हुआ। यह हिन्दी साहित्य-जगत् के सभी शीर्षस्थ साहित्य-मनीषियों एवं साहित्य-सर्जकों का एक अपूर्व मेला था, जिसका भव्य आयोजन राजधानी स्थित नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा हिन्दी गद्य के निर्माताओं में अग्रगण्य बाबू श्यामसुन्दरदासजी की जन्मशती के उपलक्ष में आयोजित किया गया था। तीन दिनों के इस अभूतपूर्व साहित्य-सम्मेलन का एक विशेष कार्यक्रम यह भी था कि कुछ ऐसे साहित्य-साधकों को सम्मानित किया जाए जिन्होंने अपना जीवन हिन्दी-सेवा में समर्पित कर दिया था। उनमें 'चाँद' के यशस्वी सम्पादक मुंशी नवजादिकलाल; कविवर श्री वियोगी हरि'; स्व० श्री यशपाल; श्री जैनेन्द्र कुमार; श्री उपेन्द्रनाथ 'अश्क'; श्री 'अज्ञेय'; श्री० भगवतीचरण वर्मा आदि अनेक ख्यातनाम रससिद्ध साहित्य-सर्जक भी थे। 'सुधाबिन्दु' के साहित्यरसिक पाठकों की सेवा में उनमें से यहाँ केवल कुछ ही उपयुक्त व्यक्तियों की अन्तरंग झाँकियाँ प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है।

प्रथम-दर्शन :

सर्व प्रथम हिन्दी के मूर्धन्य कलाकार श्री जैनेन्द्र जी का स्मरण किया जाए, जिन्हें श्री 'प्रेमचन्द' के पश्चात् हिन्दी का महानतम उपन्यासकार एवं कला-सर्जक माना जाता है। लोगों को उनमें कभी-कभी श्री शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय की झाँकी भी दिखाई दे जाती है; किन्तु शैली में और निजी जीवन में भी वे शरत से सर्वथा भिन्न हैं। कहीं-कहीं संवादों में शरद के समान गूढ़ व्यंजना का प्रयोग करते हैं। 'प्रेमचन्द' के समान ही उनकी भाषा-सम्बन्धी पटुता उनकी सिद्धि का मुख्य सम्बल है; किन्तु उनकी भाषा प्रेमचन्द के समान टकसाली न होकर वार्तालाप की सहज सरल प्रवाहमयी वाक्धारा है, जो कहीं-कहीं प्रसंगानुसार अटपटी भी हो जाती है। श्री जैनेन्द्रकुमार के साहित्यिक मर्म को वे नहीं समझ सकते, जिन्होंने कभी देर तक निजी वार्तालाप के सुनने के रसामृत सुख का अनुभव नहीं किया। इन पंक्तियों की विनम्र लेखिका के अपूर्व सौभाग्यों में से एक यह भी रहा है, कि उसे ऐसे स्वर्ण अवसर अनेक बार मिल पाए हैं।

सादगी :

भौतिक शरीर से अपेक्षाकृत क्षीणकाय, रहन-सहन और चाल-ढाल में बेहद सरल, सीधे-सादे यदि वे कभी भीड़ में मिल जाएँ तो शायद ही आप उन्हें पहचान पाएँ कि वे इतने विलक्षण एवं अनुपमेय कथाकार हैं। यह सादगी और अकृत्रिमता उनकी

घर में और बाहर सदैव एक-सी रहती है। बहुत अर्थों में वे सरल सात्विक जीवन शान्ति-सन्तोष की आध्यात्मिकता के प्रतीक माने जाते हैं। उनका प्रारंभिक सांस्कृतिक संस्कार जैन समाज-संस्कृति से प्रभावित हुआ; किन्तु जन-साधारण के सुखदुःख का अंतरंग परिचय पाने और उसे वाणी देनेके लिए उन्होंने उससे भी कठोर और दुष्कर साहित्य-सेवा का मार्ग अपनाया। वे असहयोग की आँधी में किशोर हुए एवं युवा भी; किन्तु 'नीति' में बद्धमूल होने के कारण वे 'राजनीति' की जटिल-कुटिल राहों को नहीं अपना पाए। कहना न होगा, यदि वे इन दोनों मार्गों में से कोई भी अपना लेते तो अपनी प्रभावशाली वाग्मिता एवं मन की निश्छलता से वे दोनों में ही नाम पाते; किन्तु उस अवस्था में हिन्दी के करोड़ों कथा-रसिक उनके रसामृत से वंचित ही रह जाते।

ओ-हो !

हाँ, तो उस चिरस्मरणीय साहित्यिक समारोह के एक सत्र के समापन पर वे दर्शकों एवं विशिष्ट अतिथियों से भरे मावलंकर हाल की आगे की कुर्सियों की पंक्ति में, कुछ पीछे से रह गए, जब कि अधिकांश हाल तब तक खाली हो चुका था। मेरे साथ उनके तरुणाई के एक कनिष्ठ साहित्यकर्मी एवं निकट के सखा भी थे। उन्होंने उन्हें देखते ही मुझसे कहा – 'ओ-हो! जैनेन्द्रजी हैं! चलें, मिलते चलें!' उन्होंने उनकी सहधर्मिक धर्मपत्नी, श्रीमती भगवती देवीजी को संबोधित करते हुए पूछा कि क्या बात है भाभीजी, भाई साहब बहुत कमजोर नजर आ रहे हैं। खैरियत तो है! उस समय श्रीमती भगवतीदेवी के नयनों में मृगी जैसी मस्त पीड़ा एवं आर्द्रता थी। क्षणभर वे कुछ कह न पाईं। फिर अपने सदा के साथी धैर्य को समेटते हुए उन्होंने बताया कि कोई महीना भर पहले ही बड़ा लड़का उन्हें छोड़ कर चला गया। वही मुख्यतः उनके प्रकाशन आदि की व्यवस्था की देखभाल करता था। वार्धक्य में पुत्र-शोक पर्याप्त दारुण घाव था, वे तपस्वी-दम्पति उसे भी अपने सहज धीरज से सहते हुए साहस से जी रहे थे। इस आघात का श्री जैनेन्द्रजी की नेत्रज्योति पर भी बुरा प्रभाव पड़ा। जहाँ तक मुझे स्मरण है, मैंने उन्हें कभी भी इससे पहले हारा-थका नहीं देखा था। यह दृश्य वस्तुतः स्तंभित एवं जड़ित कर देनेवाला था। जिस आन के पक्के साहित्य-साधक ने जीवनभर हारना और थकना नहीं जाना – निष्करुण, कठोरतम जीवन-युद्ध लड़ते हुए भी – उसे उदास और थका देखकर अत्यंत दुःख और खिन्नता की अनुभूति हुई !

किन्तु कुछ ही क्षण में वे अपने पुराने साथी के स्वर को सुनते ही प्रकृतिस्थ हो गए और उनका नाम लेकर बोले – 'अरे! तुम यहाँ कहाँ? घर नहीं आए?' आदि। उन्होंने मुझे भी पहचान लिया और कंधे पर मौन आशीर्वादात्मक हाथ रखते हुए, मेरा हालचाल पूछा। पिछले दो दशकों से मैं श्री जैनेन्द्रजी को जानती-देखती आई हूँ। जहाँ तक मुझे स्मरण है, सर्वप्रथम मैंने उनके दर्शन, उनके सीधे-सादे दरियागंज स्थित छोटे-से फ्लेट पर ही किए थे—जब मैं विद्यार्थी-जीवन में थी। कभी वाराणसी, कभी आगरा, कभी नागपुर आते-जाते, रास्ते में मिलती, रुक कर प्रायः मुझे उनके अनुपमेय प्रवचन वार्तालापों के सुनने का अनिर्वचनीय सुख मिला है। वे छोटों को भी समान-सा आदर देते हैं और सभी की बातों को महत्त्व देते हैं। इन्ही दो दशकों में मेरा प्रिय समग्र स्वाध्याय एवं शोधकार्य कथा-साहित्य ही रहा है। अतएव उनके कृतित्व का मैंने आद्योपान्त प्रायः सम्पूर्ण रूप में अवगाहन किया है। उपन्यासकार को साक्षात् देखने-सुनने की जिज्ञासा पाठक में सहज होती है। फिर जैनेन्द्रजी स्वभावतः बड़े आतिथ्यप्रेमी हैं – मानों वे हर अतिथि की प्रतीक्षा ही कर रहे हों। इसीलिए उन्होंने मेरे बिना पूर्व-सूचना के पहुँच जाने पर भी सदा आदर-स्नेह के साथ स्वागत किया।

वैशिष्ट्य :

स्वभाव से श्री जैनेन्द्रजी संकोची एवं 'क्लब-जीवन' से सुदूर रहने वाले व्यक्ति हैं। संभवतया इसके मूल में उनके वीतरागी श्रमण-संस्कार हों। फिर भी वे गहन रूप में एक सामाजिक प्राणी हैं और समाज के सभी प्रकार के प्राणियों के मानसिक मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन की रुचि ही वस्तुतः उनके आतिथ्य-प्रेम की मूल प्रेरणा है। अतः, घर के कोने में अधिकांश समय रहने पर भी वे वार्तालाप में बड़े ही सरल एवं अकृत्रिम हैं। प्रायः वे सभा-समारोह में नहीं जाते। जाते हैं, तो प्रायः वहाँ भाषण देने से बचते हैं; किन्तु व्यक्तिगत वार्तालाप में वे हिन्दी के सभी साहित्यकारों में श्रेष्ठ हैं। उनके बोल अपने संपूर्ण अर्थों में सरस, सजीव एवं बेजोड़ हैं। कभी-कभी उनकी गहरी दार्शनिक व्यंजनाएँ श्रोता को अभिभूत कर देती हैं। शायद इसीलिए श्री जैनेन्द्र के कथा-साहित्य का सबसे प्रभावशाली अंश उनके कथोपकथन हैं जो उनके हर पात्र-पात्रा को सजीवता प्रदान करते हैं।

जुलाई, १९७८ के अङ्क में, संभवतया, 'सुधा-बिन्दु' के पाठकों को स्मरण होगा, मैंने सन् १९६१-१९६२ के अपने दिल्ली-प्रवास को एक सुयोगमय संयोग कहा है। उसी के कारण उन वर्षों में मुझे विशेषतया श्री जैनेन्द्रजी के यहाँ यदा-कदा पहुँच कर उनके अनुपमेय रसयुक्त आख्यानों को सुनने का सुअवसर अनेक बार प्राप्त हुआ। तबतक भी वे छठे दशक में चल रहे थे, किन्तु लगता था वर्षों का वार्धक्य मानो उनपर कोई प्रभाव नहीं छोड़ पाया। दिल्ली विश्वविद्यालय के एक महिला कालेज में उन दिनों मैंने प्राध्यापन-जीवन का समारम्भ किया था। अतः, बातों-बातों में विश्वविद्यालय में हिन्दी भाषा और साहित्य की असंतोषजनक प्रगति की ओर सहसा वार्तालाप मुड़ गया।

नेक सलाह :

मेरा कहना था कि जब श्री जैनेन्द्रजी जैसे महान् साहित्य-स्रष्टा एवं साहित्य-मनीषी दिल्ली में ही रहते हैं, तब उनका लाभ लेने से दिल्ली विश्वविद्यालय का हिन्दी-विभाग क्यों वंचित रहता है? महामना मालवीयजी ने औपचारिक विश्वविद्यालयीन अर्हताओं की पर्वाह न करते हुए सर्व श्री केशवप्रसाद पाठक, लाला भगवानदीन तथा रामचन्द्र शुक्ल जैसे प्रख्यात साहित्यचार्यों को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में उच्चतम सम्मान्य प्राध्यांपक पद पर प्रतिष्ठित किया था। यह भला कैसी विडम्बना है कि जिन रससिद्ध साहित्यसर्जकों के ग्रन्थ-रत्नों को ऊँची से ऊँची उपाधि-परीक्षाओं में पाठ्य-पुस्तक के रूप में पढ़ाया जाता है, उन्हें तक भी विश्वविद्यालय विभागों से परे रखा जाता है। और फिर श्री जैनेन्द्रजी तो एक जन्मजात प्रतिभाशाली अभिभाषक ही ठहरे। क्या ही अच्छा होता कि हमारे विश्वविद्यालय पुरानी नौकरशाही औपचारिकता को त्याग कर हमारे शीर्षस्थ साहित्यकारों को सम्मान्य प्रोफेसर पद पर नियुक्त करने की स्वस्थ परम्परा अपनाते, आदि-आदि।

और श्री जैनेन्द्रकुमार मेरी इन सभी आदर्शवादी जोशीली दलीलों को धैर्यपूर्वक सुनते रहे। अंत में उन्होंने कहा, "अभी हाल के बरसों में मेरे पास ऐसे सुझाव आए हैं कि विश्वविद्यालय मुझे मानद उपाधि प्रदान करे। पर उससे क्या होगा? मैं अब उन उपाधियों को क्या करूँगा? यदि विश्वविद्यालयवालों के निमंत्रण पर मैं वहाँ पढ़ाने भी जाऊँ तो क्या उसका भी भारी रोषपूर्ण विरोध न होगा? हमारे विश्वविद्यालय एक निर्जीव प्रशासन-तंत्र में कैद हैं। और फिर मैं रियायती प्रोफेसर बनने की अपेक्षा एक अर्थकष्ट त्रस्त विनम्र साहित्यसेवी रहने में अधिक आत्मसम्मान का अनुभव करता हूँ। मैं अपने हाल में ठीक हूँ। हूँ न? उन्होंने विनोदी स्वर में मुझसे सहसा पूछा और उससे उस गरमागरम बहस से उपजी उष्ण जड़िमा क्षणभर में विनष्ट हो गई और मुझे और सभी को जो हँसी आई, उसमें वातावरण की खिन्नता बरबस ही धुल-घुल गई। और फिर श्री

जैनेन्द्रजी जब आत्मकथात्मक हुए तब मैं आत्म-विस्मृत होकर उनके जीवन-संघर्ष की रामकहानी सुनती रही।

उन्होंने कहना प्रारम्भ किया, "मैं भी कभी-कभी यह सोचता हूँ कि आजकल के विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों की तरह सुविधा के साथ गुजर-बसर हो जाती। पर क्या इन प्रोफेसरों ने ऊँची उपाधियाँ पानेके लिए एक चक्करदार गली के भूल-भुलैये में से रास्ता तय नहीं किया। मेरे जैसे व्यक्ति के लिए रास्ते-गलियाँ सभी बन्द थे। तुम्हें पता है, मैं रईसघर में नहीं जनमा। जनमा भी तो मध्य से कुछ कम स्तर के परिवार में। पिताजी की तो याद भी शेष नहीं। लगभग दो बरस की अवस्था से माँ ने पाला पोसा, बड़ा किया। मामाजी (श्री भगवानदीनजी) राष्ट्रीय शिक्षा के उत्साही प्रवर्तकों में से थे। उन्होंने अपनी लगन से हस्तिनापुर (जि० मेरठ) में गुरुकुल खोला। वहीं प्रारंभिक शिक्षा मिली और 'जैनेन्द्र' नाम पाया जिससे तुम सभी मुझे जानते-मानते हो।" इसपर श्रीमती भगवती देवीजी ने चुटकी ली – "मैं बता दूँ – असली नाम था आनंदीलाल। इसीलिए घर-गृहस्थी की तनिक पर्वाह न करनेवाले मस्तमौला जो हैं।"

मन की बात :

किन्तु जैनेन्द्रजी ने सहज भाव से इस टिप्पणी को स्वीकार करते हुए कथा को आगे बढ़ाया। मेरे मैट्रिक पास करते-करते गाँधीजी की आँधी जो चल गई। आगे पढ़ने को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय गया तो असहयोग आंदोलन और "कालेज छोड़ो" की हवा चल पड़ी। फिर लाहौर के लाला लाजपतराय के संस्थापित प्रख्यात 'तिलक स्कूल ऑफ पॉलिटिक्स' में पढ़ने का प्रयास किया जो एक प्रकार से क्रान्तिकारियों के राजनैतिक प्रशिक्षण का केन्द्र था; किन्तु वहाँ भी मन नहीं टिक पाया। घर का गरीब बेटा जब वयस्कता की ओर बढ़ता है, तब उसे आजीविकाके लिए जुगत करनी होती है। कई प्रयोग किए, पर सफल नहीं हुए। फिर नागपुर गया और राष्ट्रीय पत्रों को संवाद भेजने का काम शुरू किया, पर पुलिस ने मुझे राजद्रोही मान कर पकड़ा। तीन महीने जेल में रहने के बाद छूटा तो कलकत्ते की खाक छानी। अंत में सभी प्रयत्नों के फेल हो जाने पर कलम-मजदूरी का धन्धा शुरू किया, जिसे आजतक निभाए चल रहा हूँ – समझीं ! श्री जैनेन्द्रकुमार ने साहित्य-सेवाके लिए नहीं, पेट भरनेके लिए, लेखन-कार्य विवशता में ग्रहण किया। सच तो यही है फिर चाहे कोई मेहरबानी करके कुछ भी लिख-कह दे।

प्रेरणात्मक घटना :

मैंने पूछा, "क्या कोई ऐसी घटना आपको याद है जिसने आपके लेखन-कार्य को गति और प्रोत्साहन दिया ? 'हाँ, उन्होंने कुछ सोच कर कहा। 'वह कहानी बड़ी दिलचस्प है। कुछ मित्रों ने सुझाया कि अनेक नामी हिन्दी लेखक बंबई के फिल्म-व्यवसाय में जा चुके हैं या जाने की सोच रहे हैं – कहानी, पट-कथा, गीत आदि लिखनेके लिए। क्यों न आप भी एक बार बंबई हो आएँ ? मैं और फिल्म ! यह योग तो बेर-केर का ही कहाएगा; किन्तु बम्बई-यात्रा एक अन्य बहाने हो गई। हिन्दी ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय के संस्थापक श्री नाथूरामजी 'प्रेमी' नए लेखकों के लिए कल्पवृक्ष थे; किन्तु उनका मानदण्ड बड़ा कठोर था। वे चाहते थे कि बंगला, मराठी आदि भाषाओं के कथाकारों की टक्कर के लेखक हिन्दी में भी हों। उन्होंने मेरी 'परख' को आद्योपान्त पढ़ा-परखा और प्रकाशित कर दिया। आज सोचता हूँ, यदि 'प्रेमी' जी की नजरों में 'परख' न आता तो मेरी न जाने क्या गति होती ? 'परख' ने मुझे सचमुच उपन्यासकारों की पंक्ति में खड़ा कर दिया। अब भला तुम्हीं बताओ, मुझ जैसे गोर्की की तरह 'गली-कूचों के विश्वविद्यालय' में पढ़े-सीखे व्यक्तियोंके लिए युनिवर्सिटियों में स्थान कैसे मिल सकता था। और जाने भी दो पाठकजी, लाला भगवानदीनजी और शुक्लजी की बात। वे तो साहित्यिक दिग्गज और निष्णात पण्डित थे। मैं तो उनकी तुलना में अनपढ़ लिखने-बोलनेवाला

अदना-सा इनसान हूँ। मैं अपने हाल में संतुष्ट हूँ। मुझे अपनी फाकेमस्ती से कोई शिकायत कभी रही हो तो तुम अपनी भाभी से पूछ लो।" उन्होंने श्रीमतीजी की ओर परिहास करते हुए कहा।

समय बहुत हो चला था। बात का समापन करते हुए बोले, "तुम लोगों के आ जाने से मन बहुत हरा-भरा हो गया! लिखने-पढ़नेके लिए पाठकों की और सराहकों की बड़ी अपेक्षा होती है। मेरे पाठकों ने मुझे अपार स्नेह और सम्मान दिया है। वह तीन लोकों की सम्पदा से अधिक मूल्यवान है। और फिर तुम जैसी शोध-साधिकाओं ने (उन्होंने मेरी ओर परिहास के स्वर में कहा) मुझे न जाने कहाँ से कहाँ ला बिठाया है। इस आभार से सदा ही दबा रहूँगा।" जब चलने लगी, तो मुझे ऐसा जान पड़ा, मानों किसी तपोवन से बिदा ले रही हूँ। मैंने श्री जैनन्द्रजी के सरल दुबले व्यक्तित्व को फिर मनसा नमस्कार किया और फिर मेरी दृष्टि उनकी तपस्विनी अर्धांगिनी के उस सस्मित मुखमण्डल पर टिक गई जिससे प्रेरणा और सहारा पाकर जैनेन्द्रजी ने अपनी दुष्कर यात्रा पूरी की है।

दाम्पत्य जीवन की झाँकी :

पाठक इस डेढ़ दशक पहले के चित्र-फलक से उस मावलंकर हाल वाले अवसाद, उदास दृश्य से तुलना करके अनुमान लगाएँ कि उस दिन 'श्यामसुन्दर दास जन्मशती समारोह' के अवसर पर सम्मानित किए जाने के पश्चात् उस तपस्वी दम्पति की यह बदली हुई भाव- भंगिमा देखकर इन पंक्तियों की लेखिका की क्या मानसिक दशा हुई होगी। अपने हारे-थके 'मूड' (मनस्थिति) से श्री जैनेन्द्रकुमार ने फिर अपने पुराने वीतरागी लहजे को यतनपूर्वक लौटाया और श्रीमती भगवतीदेवी की उसी वृति की निर्विकल्प, सेवाभावी, सौम्य स्थिति फिर भी उनके तेजस्वी-तपस्वी किन्तु अब अपेक्षाकृत पर्याप्त दुर्बल मुखमण्डल पर बनी हुई थी – केवल उनकी उस हल्की मुसकान में गहरे विषाद की तरंगें दबाए जाने पर भी झलक-झलक आती थीं। मैंने मन ही मन उन दोनों महान् तपोपूत आत्माओं को मुहुर्मुहुः नमस्कार किया। काश, आज हम साहित्य-सेवियों की इस प्रबुद्ध नई पीढ़ी में जैनेन्द्र युग, प्रेमचन्द युग 'या' शरत युग की ये सात्विक उदात्त वृत्तियाँ होतीं। श्री जैनेन्द्रकुमार हिन्दी कथा-साहित्य के सृजन के उस 'स्वर्ण-युग' की संभवतया अंतिम टिमटिमाती शेष स्मृति ज्योति-रेखा है। वह जमाना शायद अब निकट भविष्य के हिन्दी साहित्य के इतिहास में फिर अवतरित नहीं हो पाएगा। कथा-शिल्पी-मुकुट-मणि श्री जैनेन्द्र युग-युग जिएँ और आगे आनेवाले नए लेखकोंके लिए प्रेरणा-स्तंभ का काम करते रहें। ●

११७, अजीतसिंह का अहाता
पुलिस लाइन के पास, जोधपुर (राज०)

• संगीत •
[संगीत-कला का प्रतिनिधि सचित्र मासिक]
साधारण अंक का मूल्य २ रु.
वार्षिक मूल्य २२ रु.
नमूने का अंक २ रु. का डाक टिकट भेजकर प्राप्त करें।
प्राप्ति-स्थान :
संगीत कार्यालय (१२), हाथरस (उ. प्र.)

• अहिंसा–सन्देश •
सम्पादक – रतनेशकुमार जैन
हिन्दी मासिक पत्र
वार्षिक मूल्य : ५ रुपए
"अहिंसा–सन्देश" कार्यालय
पो. ब. – ८५, अपर बाजार, राँची (बिहार)

समय अनमोल धन है। जैसे हम धन को प्यार करते हैं, वैसे ही समय की कदर करना आवश्यक है। अच्छा काम अवसर की प्रतीक्षा में मत छोड़ो। कल किसने देखा है। जो सदैव काम में मग्न रहते हैं, वे ही सब कुछ कर दिखाते हैं। समय नष्ट होने से शुद्ध चरित्र की महत्ता, शक्ति, प्रेम, गृहस्थ-जीवन का सुख सभी नष्ट हो जाते हैं। समय के सदुपयोग में ही हमारा भविष्य निहित है।

थोड़ा-सा समय :

हम जो समय के छोटे-छोटे टुकड़े अनजान में व्यर्थ खो देते हैं, उन्हीं का संग्रह कर यदि उन्हें सत्कार्य के करने में लगाएँ, तो बहुत कुछ लाभ मिल सकता है।

विचार-परक

समय का सदुपयोग

श्री श्रीकृष्णगोपाल माथुर
पत्रकार

[श्री माथुरजी एक प्रबुद्ध लेखक हैं – चरित्र-परक लेखों द्वारा नवचेतन देने में खूब पटु हैं।

इस लघु लेख में समय के सदुपयोग की बात अनेक तर्कों और प्रमाणों द्वारा की गई है, जो पठनीय है। —सम्पादक]

ऐसा कोई भी मनुष्य नहीं है, जो दिन में एक घंटा समय भी न बचा सके। प्रत्येक मनुष्य के जीवन में एक बार अच्छा अवसर अवश्य आता है, चाहे वह एक दिन, एक रात, एक सुबह, एक-दो पहर, एकाध घंटा या एक क्षण का ही क्यों न हो। वही मनुष्य सुखी है, जो इनका सदुपयोग करना जानता है। नहीं तो वह सुअवसर एक चंचल लहर के समान है, जो आकर तुरंत विशाल सागर में विलीन हो जाती है। कोई भी मनुष्य उम्र में भले ही छोटा हो, परन्तु वह समय, पल के एक-एक क्षण को उत्तम कामों में लगाता रहेगा, तो उम्र के साथ ही महान् पुरुष हो जाएगा। समय चले जाने के बाद लौट कर नहीं आता। हमारी प्रतीक्षा में चौवीस घंटों के साथ ही पच्चीसवाँ घंटा नहीं होता। ग्रह-नक्षत्र, सूर्य-चन्द्र, मौसिम, रात-दिन सभी समय के अनुसार चलते हैं। इसलिए समय को काम में लगानेके लिए इनसे हमें शिक्षा लेनी ही चाहिए।

जितने इतिहास-प्रसिद्ध मनुष्य हो गए हैं, वे सब समय का आदर करने से ही महान् बने थे।

हमारे देश के प्रथम वैज्ञानिक जगदीशचन्द्र बोस ने तीस वर्ष तक एकान्त में समय के एक-एक क्षण को विचारों में लगाया, जिसका फल यह हुआ कि उन्होंने ऐसे यंत्रों का आविष्कार कर संसार को चकित कर दिया, जिनके द्वारा वनस्पति में जीव होना सिद्ध तो हुआ ही, किन्तु वे यंत्र पौधे की अंदरूनी तकलीफ को भी स्पष्ट बता सके। महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू, लोकमान्य तिलक, अरविन्द घोष आदि देश-नेताओं, धर्माचार्यों, देश पर कुरबान होनेवाले सभी बलिदानियों को हम भली भाति जानते हैं, जिन्होंने समय के क्षणों का सदुपयोग करके हमारे लिए कितनी थातियाँ छोड़ी हैं।

समय-पुजारी :

अन्य देशों की तरफ यदि हम दृष्टि डालें, तो मालूम होगा कि वहाँ के महापुरुष समय के मामले में बड़े कृपण थे। वहाँ के जूते बनाने वाले चार्ल्स फस्ट नाम के एक मोची ने प्रतिज्ञा की थी कि मैं एक घंटा नित्य बचा कर पढ़ने-लिखने में लगाऊँगा। इसीसे वह अमेरिका का विख्यात अंकशास्त्री बन गया। जान हन्टर नेपोलियन के समान केवल चार घंटे सोता था। बाकी समय में उसने शरीर तत्त्व के चौबीस हजार नमूने संग्रह किए। इन नमूनों का श्रेणी-विभाग करने में वहीं के भोन नाम के अध्यापक को दस वर्ष का समय लगा। प्रसिद्ध महा

पुरुष मिल्टन कहता था, "जैसे मनुष्य सवेरे ही उठ कर कामों में लग जाते हैं, वैसे मैं पुस्तक पढ़ने में लग जाता हूँ, जिससे दिन भर चित्त शांत और शरीर परिश्रम करने में सबल बन जाता है। प्रसिद्ध मीमांसक स्पेन्सर जब आयर्लेंड में डिपुटी मंत्री थे, तब उन्होंनें थोड़ा-थोड़ा समय बचा कर बड़ा यश कमाया। लार्ड बेकर जब इंग्लैंड में चांसलर थे, तब उन्होंने समय बचाकर कीर्ति वढ़ाई। कहते हैं कि एक राजा से वार्तालाप करते हुए गेटे को एक विचार आया तो वे उनसे क्षमा चाह कर एक भवन में चले गए और वहाँ उस विचार को लिपिबद्ध किया। यदि वे तत्काल ऐसा नहीं करते, तो उस मूल्यवान् विचार को सदाके लिए भूल जाते।

इतना ही नहीं लिंकन ने जमीन नापते समय कानून शास्त्र का अध्ययन किया था। बैंजामिन फैंकलिन का कथन है कि यदि जीवन को प्यार करते हो तो समय को नष्ट मत करो। इसी प्रकार बेकन, रस्किन आदि महापुरुषों ने समय की महिमा का बखान किया है। हेरिएटस्टों ने कई जरूरी कामों में लगे रहने पर भी अपूर्व पुस्तक लिखी, जिसका "टाम काका की कुटिया" के नाम से हिन्दी में अनुर्वाद हुआ।

प्राणों की रक्षा :

इसके सिवा, समय की सतर्कता से संकट के समय प्राणों की रक्षा भी की जाती है। यूरोप के वींसवर्ग नगर पर जब शत्रुओं ने हमला किया, तब वहाँ की सारी स्त्रियों ने मंत्रणा कर के फौरन् सेनापति से प्रार्थना की कि हमें अपनी प्यारी वस्तु के साथ बाहर निकल जाने दें। प्रार्थना मंजूर करते ही सेनापति ने देखा कि नगर की समस्त स्त्रियाँ अपने-अपने पतियों को कंधे पर बिठाकर जल्दी-जल्दी नगर से बाहर निकल गईं। खाली नगर को देख कर सेनापति बहुत पछताया।

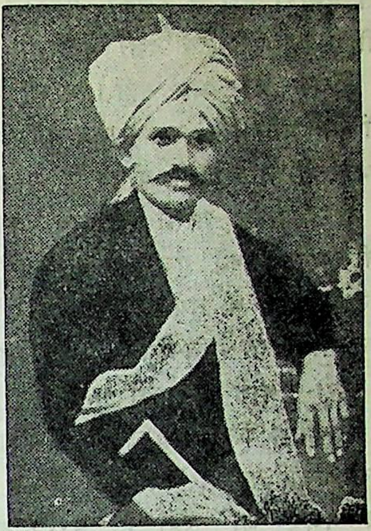

लेखक

एक बार कासगंज के बाजार में स्वामी दयानन्द सरस्वती को एक ऐसा बलिष्ठ निडर साँड़ आता दिखाई दिया, जो दौड़ कर मनुष्यों को मार गिराता था।; किन्तु स्वामीजी ने तत्काल उसके दोनों सींग पकड़ कर उसे आगे धकेल दिया। यह देख लोग चकित रह गए।

यही समय-सूचकता, चातुरी, साहस, आत्मसंयम, धैर्य, निर्भयता, दूरदर्शिता, स्वावलम्बन और तत्काल सम्हल जाने आदि के ऐसे गुण हैं, जो जीवन में समय के सदुपयोग से आते हैं, जिससे मनुष्य निम्न कोटि से ऊपर उठकर उच्च कोटि में जाता है।

●

१३७, दशहरा मैदान
उज्जैन (म० प्र०)

• मरु–श्री •
सम्पादक — गोविन्द अग्रवाल
वार्षिक शुल्क : १० रु., एक प्रति : ३.००
प्रकाशक–लोक संस्कृति शोध–संस्थान
नगर – श्री, चुरू (राजस्थान)

नारी-परक

नारी-शक्ति

—ब्र० कु० डा० रामश्लोक सिंह
डी० एच० एम० एस० (बी० यू०)

[श्री सिंहजी एक ब्रह्मचिन्तक, कुशल होमियोपैथिक और लेखक हैं। ज्ञानयोग और कर्मयोग की आराधना में निरत हैं।

प्रस्तुत लेख में नारी-जागरण और नारीचेतना को महत्त्वपूर्ण बताया गया है एवं उसे कई कोणों से देखा गया है, जो पठनीय है। ——सम्पादक]

भारत हमारा देश है इसकी संस्कृति-सभ्यता इतनी ऊँची है कि इसे सर्व देशों में महान् कहना जरा भी हिचक की बात नहीं। भारत देवभूमि और सन्तों की भूमि है, यह मातृप्रधान देश है। अतः, हम भारतवासी बड़े ही गौरव के साथ 'वन्दे मातरम्' या 'भारत माता की जय' का नारा लगाकर नील गगन को गुंजारित करते हैं और यह नारा सारे विश्व में सूर्य की किरणों की तरह फैलकर मातृ-भक्ति या मातृ-प्रेम पैदा कर देता है।

आज नारी-उत्थान की चर्चा सुनने को मिलती है, उनकी उन्नतिके लिए अनेकानेक संस्थाएँ बनी हैं, शिक्षा का स्तर बढ़ाया गया है। उससे कुछेक लाभ होता नजर आ रहा है, परन्तु समुचित विकास यदा-कदा दृष्टिगोचर होता है।

सहज युक्ति :

नारी का उत्थान हुआ पड़ा है, इनमें जागृति कूट-कूट कर भरी हुई है, सिर्फ थोड़ी विस्मृति हो गई है, उसकी स्मृति चाहिए। नारी की शक्ति महान् है। वह जो चाहे कर सकती है। सिर्फ एक दृढ़ संकल्प और उसे व्यावहारिक जीवन में उपयोग करने की आवश्यकता है। हमारी माताएँ, बहिनें अपनी गौरव-गरिमा या अनादि शक्ति को अपने सामने रखें, पवित्रता को अपनाएँ एवं विकारी विभाजित जीवन का परित्याग करें, तो यही नारीशक्ति शिवशक्ति या विश्वशक्ति का कार्य करेगी। हमेशा अपने मन में दैवी गुणों एवं देवियों का स्मरण करके खुद बलवान बनें, अपने को तुच्छ, संकोचित, घृणित या अबला नहीं परन्तु पूज्य, श्रेष्ठ, सबला एवं जगतमाता समझकर कार्य करें।

आज सारा विश्व अपनी बुद्धिमत्ता की चरमसीमा को पार कर, नए-नए आविष्कार कर चन्द्र और मंगल ग्रह तक पहुँच गया है, परन्तु बुद्धि की दैवी कौन? सरस्वती। सभी नर-नारी उन्हीं से बुद्धिमत्ता की याचना करते हैं। दूसरी ओर एक देश दूसरे देश से, एक समाज दूसरे समाज से और एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से अपने को अधिक शक्तिशाली बनाना चाहता है और इसके लिए दिन-रात प्रयत्नशील है, परन्तु शक्ति की देवी कौन? अम्बाजी, दुर्गा माँ। तीसरी ओर राजा से रंक तक, झौंपड़ी से महल तक, साधारण व्यक्ति से पूँजीपति तक ने धन-उपार्जन में अपनी नींद हराम कर रखा है, स्वप्नों में भी लाखपति या करोड़पति बनने का नजारा देखता रहता है—परन्तु धन की दैवी कौन? —श्री लक्ष्मी। ये भी नारी-पूज्य देवियाँ हैं।

आज दुर्गा, अम्बा, लक्ष्मी, सरस्वती, शीतला, सन्तोषी एवं काली माँ से कौन अनभिज्ञ होगा? एक-एक बच्चा इनके गुण-कर्तव्य से परिचित है, तो कहो-मेरी सर्वशक्तिमान माताएँ, कन्याएँ, बहिनें कितनी महान् हैं, कितनी बलवान हैं। आप अपनी शक्तियों को क्यों भूल गई? आप शिव की शक्ति हैं। परमात्मा पिता शिव आप माताओं-कन्याओं को अग्रसरित करने का कार्य कर रहे हैं। आपसे निवेदन कर रहे हैं कि आप अपनी कमियों-कमजोरियाँ, दैहिक दृष्टि या वासनात्मक दुखी अशान्त जीवन को मुझे देखकर सुख, शक्ति, समृद्धि

और शक्तिशाली सबला जीवन व्यतीत करें। भले आप घर-गृहस्थी में रहें, परन्तु कमल-पुष्प समान सम्पूर्ण पवित्र जीवन व्यतीत करें जहाँ वासना या विकार काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार का नाम नहीं, दैहिक दृष्टि नहीं, विकारी वृत्ति नहीं, अशुद्ध स्मृति नहीं, परन्तु आत्मिक दृष्टि, पवित्र और निर्विकारी वृत्ति हो और सदैव श्रेष्ठ स्मृति हो। आप दुर्गा, काली या अम्बा जैसी देवी बनकर अपनी आसुरी वृत्तियों का संहार करें एवं अपने इस निजी स्वरूप या व्यक्तित्व को न भूलें फिर प्रकृति आपकी दासी बनेगी। इसके लिए थोड़ा सहज राजयोग का अभ्यास अति आवश्यक है।

महान् शक्ति का अनोखा प्रयोग :

आप सवेरे-सवेरे ब्राह्म मुहुर्त (४-५ बजे प्रातः) एकान्त में बैठकर अपने को एक चैतन्य पवित्र शक्तिशाली आत्मा समझें। आप आत्मा हैं शरीर से भिन्न एक अलग चैतन्य शक्ति हैं। आपका एक चोला है जो स्त्री या नारी का है; परन्तु आपकी आत्मा तो पुरुष है और शरीर प्रकृति। इससे आप में पुरुषत्व जागृत होगा और अबला से सबला की अनुभूति होगी। आप उस समय यह भी स्मृति में लाएँ कि मैं आत्मा सर्वशक्तिमान परमपिता परमात्मा शिव की सन्तान हूँ, प्रेम के सागर, ज्ञान के सागर, पवित्रता के सागर पिता की सन्तान हूँ। तो आप में भी वही गुण अर्थात् प्रेम, ज्ञान और पवित्रता की धारणा स्वतः होती रहेगी। यह धारणा आपका ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है।

बालक-बालिकाएँ जो स्कूल-कॉलेजों में अध्ययन करते हैं वे भी इस प्रयोग को आसानी से कर सकते हैं। वे भी कहीं किसी भी व्यक्ति को काला-गोरा, गरीब-अमीर, सुन्दर-कुरूप, छोटा-बड़ा या दैहिक धर्मों को छोड़कर आत्मिक दृष्टि से देखें तथा सभी के प्रति शुभ भावना रखें – भले कोई आपका अपमान करे, व्यंग्य करे, अपकार करे, परन्तु आपको सभी के प्रति उपकार की दृष्टि से देखना है और अपने को जगतमाता समझ तरस या कल्याण की भावना रखने से एक न एक दिन अपकारी व्यक्ति स्वतः बदल जाएगा।

घर या दफ्तर में माताएँ या बहनें भी अपने नारीत्व की महानता या सद्‌गुणों का प्रयोग अपने शुद्ध या शक्तिशाली संकल्पों द्वारा करें। अगर आपसे कोई ईर्ष्या, द्वेष, दंभ या वैर-वैमनस्य रखता है तो उसे आप 'जैसे को तैसा' की कहावत जैसा व्यवहार न करके शान्ति पूर्वक एवं शुद्ध भावना से देखें और अपने मन में सोचें कि इस सृष्टि-रंगमंच पर इस आत्मा का ऐसा ही पार्ट है और मुझ आत्मा का खुशनशीब, सहनशीलता और प्रेम स्वरूप का पार्ट है। अतः, आप अपना पार्ट बजाएँ और दूसरा अपना पार्ट बजाएँ। आप उसके वातावरण या उसके अशुद्ध संकल्प में न जाकर अपने शुद्ध एवं सशक्त संकल्प में स्थित रहें। इसके लिए 'मन की एकाग्रता' की आवश्यकता है। अतः, अपनी बुद्धि की एकाग्रता परमात्मा पिता निराकार शिव से करें एवं अथाह शक्ति प्राप्त करें।

एक घटना :

एक दिन की बात है कि एक महिला मेरे दवाखाने में आई। अपने रोग की चर्चा करते हुए उन्होंने बताया, "डॉ० साहब तन के रोग के साथ मेरे अन्दर मन के कई रोग हैं, जिससे मैं धनी परिवार में रहते हुए भी सुख-शान्ति से जी नहीं पाती – कलह-क्लेश के कारण मेरा शरीर जीर्ण-शीर्ण हो गया है, बात-बात में सासु-ननद से मुकाबला हो जाता है। पति तो विचित्र मिजाज के हैं। उनकी बातें मुझे तीर की तरह लगती हैं, क्या इसका भी कोई इलाज है।" मैंने कहा ––"क्यों नहीं ? इलाज हर बीमारी का है, इसके लिए आपको थोड़ा पुरुषार्थ करना होगा। उपाय बड़ा सहज है। और मैंने " महान् शक्ति का प्रयोग' बताया- जिसमें उन्होंने ब्राह्ममुहूर्त में एकान्त में बैठकर परमात्मा पिता शिव से सहनशीलता की अद्भुत शक्ति प्राप्त की। फिर अपने आपको वातावरण के अनुसार परिवर्तन किया। जैसे कि सासु-ननद

या घर के कोई भी व्यक्ति उनके अवगुणों का वर्णन करते, टोन्ट करते या कटुवचन बोलते तो वह अपने को एक शुभ प्रेम आत्मा 'स्व' में स्थित होकर सुनती रही और प्रत्युत्तर न देकर उनके प्रति सदैव कल्याण एवं प्रेम की भावना से व्यावहारिक कार्यों में भाग लेती रही।

कुछ दिन बाद अनुभव के आधार पर उस बहन ने बताया, "डॉ० साहब, एक दिन मेरी सासु, मेरे पति से शिकायत कर रही थी कि तुम तो ऑफिस या धन्धे पर जाते हो और इधर यह लड़ती-झगड़ती रहती है, मेरी सेवा ठीक से नहीं करती है। उसी समय ननद ने कोई दूसरी चुगली कर दी; परन्तु उस दिन मेरे पति देव सभी की सुनते रहे और कहा कि इसमें कुछ परिवर्तन तो नजर आता है। पहले देर से उठती थी, सभी घर का कार्य देर से चालू होता था; लेकिन अभी कुछ दिनों से यह सवेरे-सवेरे भगवान् का ध्यान-मनन करती है — अच्छा पूछूंगा।

दूसरी ओर से मैं खिड़की से यह सब नाटक देख रही थीं — मेरे शुद्ध एवं कल्याणकारी संकल्प का असर मेरे पति तक पहुँच चुका था। मैंने सासु या ननद की बातों का अन्दर से विरोध नहीं किया, न उनके प्रति कोई अशुभ या ईर्ष्या का भाव रखा और मैं आत्मा अपने वास्तविकता पर स्थित रही — सोचा कि अभी भी मुझमें कुछ कमियाँ हैं, उनका सुधार करना चाहिए। सभी से प्रेम से व्यवहार करती रही — मेरे मन में विचार आया कि वे अपने चुगली या ईर्ष्या का पार्ट इतना सुन्दर बजा सकती हैं, तो मैं भी क्यों नहीं शान्ति खुश-नशीब वा हर परिस्थिति में हर्षितमुख का पार्ट उतना ही सुन्दर बजाऊँ। और ऐसा ही किया। डा० साहब, सचमुच इस प्रयोग ने अद्भुत परिवर्तन ला दिया। मेरे घर में सारा वैर-विरोध खत्म हो गया है। मेरे स्वास्थ्य में काफी फर्क पड़ा है। चिड़चिड़ापन तो बिलकुल खत्म हो गया है। अब मैं सिर्फ तन से ही नहीं, मन से भी तन्दुरुस्त हूँ — जब से मन की एकाग्रता परमात्मा पिता शिव से किया।

● अभयदान ●

एक बार बादशाह नौशेरवाँ भोजन कर रहा था कि बावरची से थोड़ा-सा शोरबा उसके कपड़ों पर छलक पड़ा। नौशेरवाँ की त्यौरियाँ चढ़ गईं। बावरची यह देखकर घबराया, लेकिन फिर कुछ सोचकर प्याले का बचा हुआ शोरबा भी उसने बादशाह के वस्त्रों पर उँडेल दिया। बादशाह के क्रोध की सीमा न रही। उसने तेज स्वर में पूछा, "नीच! तेरा यह दुस्साहस! बोल, तूने जान-बूझ कर यह शरारत क्यों की?"

बावरची ने सहज स्वर में कहा, "जहाँपनाह, आपका गुस्सा देखकर मैं समझ गया कि अब मेरी जान बचेगी नहीं; लेकिन बाद में लोग यह कहते कि आपने सिर्फ जरा-सा शोरबा कपड़ों पर गिर जाने से बेगुनाह की जान ले ली। इसलिए मैंने जान-बूझकर हुजूर के कपड़ों पर शोरबा गिरा दिया, ताकि दुनिया आपको बदनाम न करे और मुझे ही अपराधी समझे।"

नौशेरवाँ हँस पड़ा और उसने बावर्ची को अभयदान दे दिया।

महिला के इस व्यावहारिक प्रयोग ने मुझे भी अपने विचारों को आप तक पहुँचाने का सुअवसर दिया। मैं बड़े ही गौरव के साथ कह सकता हूँ कि आप भारत की सर्व माताओं-कन्याओं की अन्तरात्मा में सर्व शक्तियाँ कूट कर भरी हैं, परन्तु वे सुषुप्त हैं उन्हें जागृत करें एवं अपने दया, क्षमा, प्रेम सुख-शान्ति या सहनशीलता का दैनिक जीवन में उपयोग करें, तो शीघ्र ही आप पूज्य देवियों की तरह वरदानी या विश्वकल्याणी बन समस्त विश्व का कल्याण करेंगी। ●

पाण्डव-भवन, माउण्ट आबू (राज०)

भाव-परक

पितृ-ऋण

— प्रा० जगदीश शुक्ल
एम० ए०, साहित्यरत्न

लेखक

आज गो० तुलसीदासको एक क्षण भी पीड़ा से शांति नहीं मिल रही थी। ज्यों-ज्यों दिमाग़ में विचार आते जाते थे, त्यों-त्यों उनकी मनोदशा अत्यंत करुण एवं पीड़ाग्रस्त होती जाती थी। कभी उनकी पीड़ा बड़े-बड़े आँसुओं के रूप में उमड़ पड़ती थी तो कभी जोरसे उच्छ्वास के रूप में। आसपास बैठे हुए भक्त एवं शिष्य उनके मन के भावों को समझने में असमर्थ हैं। उन्हें आश्चर्य हो रहा था कि संसार से विरत, महान, तपस्वी, संत, ज्ञानी की आज यह अवस्था! तुलसीदास की वाणी भी उस समय बोलने की शक्ति खो चुकी थी। उनके आँसू चौर उनकी छटपटहट दोनों उनके आंतरिक भावों या दैहिक मायाजाल के सांकेतक थे।

यकायक उनके मस्तिष्क में एक और भयंकर विस्फोट हुआ। उन्होंने अपने सिर पर हाथ फेरा। हाथ शिखा तक पहुँचते ही वे दो इंच ऊपर उठ आए और होठ फड़फड़ाकर अस्पष्ट ध्वनि निकालने लगे। मन की आँखें बोल रही थीं पर दूसरों को कुछ पल्ले नहीं पड़ता था। भाव ही भाषा बन गए थे। कहने लगे, "हे राम! तुमने मेरे भाग्य में क्या-क्या नहीं लिखा? जन्मते ही माँ को छीन लिया। पिता ने अशुभ समझकर मुझे त्याग दिया। अभिभावकों को भी जीने नहीं दिया। बाल्यकाल बड़े कष्ट में बिताया। भीख माँग-माँगकर पेट भरा। गुरु मिले। जीवन ऊपर उठा कर संन्यासाश्रम ने अचानक ही गृहस्थाश्रम में ढकेल दिया। रत्नावली के चमड़े से ऐसी आसक्ति हो गई कि संसार के किसी पति को जैसी फटकार नहीं सुननी पड़ी होगी, वैसी करारी फटकार सुनी। मैं हाड़-मांस की पुतलीं से मुँह मोड़कर पुनः ज्ञान-वैराग्य की ओर बढ़ा। तुम्हारे ध्यान में मन पिरोया, तो पंडितों और धर्म-ध्वजियों की ईर्ष्या का शिकार बना। मुझपर जाति-पाँति के दोषारोपण हुए और शरीर ने मार-पीट भी सही; किन्तु कर्मफल पर अटूट विश्वास रखने के कारण कुछ नहीं बोला। राम! बाहु-पीड़ा, पेट-पीड़ा, पीठ-पीड़ा, मुँह-पीड़ा —— इस एक जीवन में कितनी-कितनी नारकीय यातनाएँ? (पाँव-पीर, पेट-पीर, बाहु-पीर, मुँह-पीर, जरजर सकल शरीर पीरमई है) जीवन बिताया नहीं; काटा है। बुढ़ापा भयंकर नरक है' —— समझकर भी चुप रहा पर इस अवस्था में सिर के सारे बाल क्यों ले लिए? पितरों को भेंट देनेके लिए मेरे पास बचा क्या है। मुझे ऋषिऋण, देवऋण की तो संन्यासी होने से कोई चिन्ता नहीं पर पितृऋण से भी उऋण होने योग्य नहीं? कितना बड़ा पापी हूँ! कितने अकर्म या कुकर्म हैं? सैकड़ों बार तुमने ही तो सहायता दी है पर अब ठूँठ वृक्ष से क्या हो?"

"हे देव! मैंने तुमसे शरीर कब माँगा था? भौतिक सुख की प्राप्तिके लिए भी कभी प्रार्थना नहीं की; पर आज जब निर्मम, निष्ठुर मृत्यु मेरे सिर पर बैठ हथौड़े से प्रहार कर रही है, तब भी क्या मैं न बोलूँ? देव! हिन्दू संन्यासी हूँ मैं! मृत्यु शाश्वत सत्य है। शरीर का यह भी धर्म है, जानता

हूँ पर यह बात कैसे भूलूँ कि पितृऋण चुकानेके लिए एक बाल भी मेरे सिर पर नहीं ? मुझे तुम्हारा गोलोक या वैकुंठ नहीं चाहिए, मुक्ति भी नहीं चाहिए। दूसरे जन्म में किसी सुख की कामना भी नहीं, पर पितरों को अर्घ्य देने की चिन्ता अवश्य है। राम! जगहँसाई हो रही है। मैं कामना के अरण्य में भटक रहा हूँ -- एक सांसारिक व्यक्ति के सदृश्य ही। तुम मेरे अंतर्मन को क्या नहीं जानते ? तुम करुणावतार हो, दीन-बंधु हो, पाप-पुंजहारी हो, तुलसी के तो तुम माता, पिता, स्वामि, सखा, बंधु सर्वस्व हो। किसी भी भाव से भजूँ, तुम ही हो बस तुम ही तुम हो। मुझे उबार लो। मेरी कामना पूरी करो। जबतक कामना पूर्ण नहीं, तब तक मृत्यु का वरण मैं नहीं कर सकता . . . नहीं कर सकता। देव! तुलसी अनाथ! भवसागर में भटक रहा है और अबला की भाँति (तुलसी स्त्रीलिंग होने से) शक्तिहीन है। तुम्हीं उसके नाथ हो, स्वामी हो। कुछ तो दया, करुणा भाव दिखाओ। अपने शरणागतवत्सल के बिरुद को याद करो। क्या जीवों के मायाजगत् को देख तुम भी शिव से जीव हो गए हो? राम! लोग जानते हैं कि तुलसी को एक ही पर भरोसा है, एक ही का बल है। एक ही पर विश्वास है। नाथ! तुलसीके लिए तुम्हारा चमत्कार भी बड़ा कार्य नहीं। उसे पितृऋण चुकानेके लिए सिर पर बाल दे दो। जब तक सिर पर बाल नहीं, तब तक मैं मृत्यु का स्वागत नहीं कर सकता! स्वामि! प्रतिवर्ती दूसरे जन्म में सभी तापों को झेलनेके लिए तैयार हूँ पर इस कामना को पूर्ण किये बिना नहीं रह सकता . . . नहीं रह सकता . . . नहीं रह सकता . . . तब तक मौत भी नहीं . . .मौत भी नहीं . . . मौत भी नहीं!"

●

गीमटी, खंभात
जिला-खेड़ा (गुजरात)

● कहकहे ●

(१)

एक अफीमची अंधेरे में खम्भे से टकरा गया। झुंझलाकर बोला -- "कम्बख्तों ने इस खम्भे को नरक में क्यों नहीं खड़ा किया ?"

पास से गुजरने वाला व्यक्ति यह सुनकर बोला -- 'ऐसा न कहिए, अगर इसे वहाँ खड़ा करवा दिया गया, तो आप फिर टकरा जाएँगे।'

(२)

नौकर : क्या आज्ञा है श्रीमान्‌जी।'

आगन्तुक : तुम्हारे साहब घर में हैं ? यह एक बिल. . . .

नौकर : साहब तो कल शाम ही बाहर चले गए थे।

आगन्तुक : मुझे उनका यह बिल अदा (देना) करना था।

नौकर : और साहब, आज ही सुबह वापस आ गए हैं। मैं उन्हें खबर देता हूँ। आप तशरीफ रखिए।

(३)

पिता -- (गुस्से से) देख राजू, यदि तूने ज्यादा गड़बड़ी की, तो पीटते-पीटते बारह बजा दूँगा।

राजू -- लेकिन पिताजी, आप को तो दस बजे दफ्तर जाना है।

(४)

यह अनुशासन से पूर्व की बात है। उदयपुर शहर की। वहाँ के 'बड़े' (नाम) बाज़ार में एक दूध की दूकान पर भाव का लिस्ट देख कर मैं आश्चर्यचकित रह गया। लिस्ट इस प्रकार था --

१. बिलकुल असली दूध तीन रुपए लीटर
२. असली दूध ढाई रुपए लीटर (किलो)
३. दूध दो रुपए लिटर (किलो)

(५)

एक सेठ : आपका लड़का मोटर कार में घूमता है और आप पैदल, क्या बात है ?

दूसरा सेठ : क्योंकि वह धनवान बाप का बेटा है।

श्री सलीम शेख, अहमदाबाद

व्यवहार

—श्री श्यामसुन्दर पोशाकवाला

व्यवहार शब्द वि+अव+हर के योग से बना है। वि का अर्थ विशेष, अव का रक्षा और हर का आचरण से है। इसका अर्थ है समाज में आचरण की विशेष रूप से रक्षा करना। इसके पर्यायवाची शब्द हैं:—आचरण और बर्ताव।

समाज में एक दूसरे के साथ वार्तालाप करना, उठना-बैठना, आना-जाना, खाना-पीना, लेना-देना एवं सुख-दुःख में सहयोग देने का जो ढंग अपनाया जाता है, उसको साधारणतः व्यवहार की संज्ञा दी गई है।

व्यवहार—भेद:

मन, वचन और काया तीन प्रकार से व्यवहार, किया जाता है। इनको क्रमशः मानसिक, वाचिक और कायिक व्यवहार कहते हैं।

मन से किसी के प्रति इष्टानिष्ट हेतु किया गया विचार मानसिक व्यवहार है, जिसका रूप परोक्ष है।

वाणी द्वारा किसी का हिताहित करना और काया के द्वारा किसी की सेवा करना अथवा कोई अपराध करना क्रमशः वाचिक और कायिक व्यवहार कहलाते हैं। जिनका रूप परोक्ष अर्थात् अप्रत्यक्ष होता है। प्रत्येक व्यवहार के दो भेद होते हैं—"सद्व्यवहार और दुर्व्यवहार"।

व्यवहार जैसा भला-बुरा किया जाता है, उसीके अनुसार परमाणु उत्पन्न होकर वायुमंडल में छा जाते हैं, जो प्रभावशाली होते हैं। मानसिक व्यवहार से उत्पन्न हुए परमाणु अधिक प्रभावशाली होते हैं। जिसके लिए जैसा विचार किया जाता है, उससे उत्पन्न हुए परमाणुओं द्वारा उसको स्वतः भान हो जाता है कि उसके साथ कैसा व्यवहार किया जा रहा है। यह प्राकृतिक सिद्धान्त है।

प्रत्येक के साथ व्यवहार सत्यं, शिवं एवं सुन्दरम् अर्थात् सच्चा, कल्याणकारी और सुन्दर होना चाहिए। जो मानव स्वभावतः सच्चा, मधुर-भाषी, संयमी, सभ्य, प्रेमी, विनीत, विद्वान्, दयालु, सुशील, सच्चरित्र, सेवाभावी, निस्वार्थी, निष्कपट, निष्पक्ष, निरहंकारी, अनिन्दक, अप्रमादी, न्यायी, साहसी, विवेकी, उत्तरदायी, अतिथि-परायण, क्षमाशील, सुपरामर्श, तीव्र स्मरण शक्तिवान् और ताड़ना देनेवाला हो अर्थात् जो मानवीय गुणों से युक्त हो, वही मानव उक्त वर्णित व्यवहारके लिए सक्षम है।

मानव को मानव के साथ ही नहीं अपितु पशु-पक्षी के प्रति नित्यप्रति उपयोग में आने वाले पदार्थ, वस्त्रादि के साथ भी व्यवहार सुन्दर रखना चाहिए।

मानव अपने साथ व्यवहार करने वाले दूसरे मानव की आँख, नाक, भौहें एवं मुख के हाव-भाव उसके रुख से ही समझ जाता है कि उसके साथ सद्व्यवहार हो रहा है या दुर्व्यवहार। मानव तो मानव ही है, पशु-पक्षी भी मानव को देखते ही पहचान जाते हैं कि वह उनका हित करने वाला है या अहित। जैसा कि स्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित 'रामचरित मानस' की निम्न लिखित चौपाई द्वारा स्पष्ट प्रकट है—

> "मुनि जन निकट विहग मृग जाहीं
> बाधक बधिक बिलोकि पराहीं।
> हित-अनहित पशु-पच्छिउ जाना
> मानुष तनु गुन ज्ञान निधाना॥"

[इस लेख के लेखक महोदय ने अध्यापक तथा प्रधानाध्यायक पदों पर कार्य करते हुए खूब लिखा है और अपने अनुभवों को दूसरों तक पहुँचाते रहे हैं।

प्रस्तुत लेख में व्यवहार का महत्त्व समझाते हुए उसकी उपादेयता को ग्रहण करने पर बल दिया गया है, जो आचरणीय है।

—सम्पादक]

मानव का मूल्य उसके व्यवहार पर ही आधारित है। व्यवहारों में वाचिक व्यवहार को प्राधान्य प्राप्त है। क्योंकि मनुष्य अपने बोलने के ढंग से ही मित्र-शत्रु बनाता है। एक लोकोक्ति प्रसिद्ध है:

"कुदरत को नापसंद है सख्ती जबांन में
इसलिए तो दी नहीं हड्डी जुबान में।"
"जो बात कहो साफ हो, सुथरी हो, भली हो
कड़वी न हो, खट्टी न हो, मिश्री की डली हो।"

"मानव का मोल तो उसके बोल में पहिचानिए।"

एक उर्दू के शायर ने भी कहा है,

"जुबां शीरीं तो मुल्क गीरी" अर्थात् जो मधुरभाषी है, उसका जगत् साथ देता है। इस विषय में और भी कहा है:

"न बन कडुआ कि जो चखे सो थूके
न बन हलुआ कि चट कर जाएँ भूखे।"
"सत्यं प्रियम-ब्रूयात्, न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्"

अर्थात् सत्य बोलो, प्रिय बोलो, अप्रिय सत्य न बोलो। यदि अप्रिय सत्य बोलना ही है तो उसे वाक्चातुर्य से कटु सत्य को प्रिय और मधुर बनाकर बोलो। यह बोलने की कला है। एक राजस्थानी कहावत है--"बोलवो न सीख्यो सारो सीख्यो गयो धूल में"।

छत्रपति शिवाजी के सद्गुरु समर्थ स्वामी श्री रामदासजी महाराज ने स्वरचित ग्रन्थ 'दासबोध" में लिखा है कि जिसका व्यवहार शुद्ध है, उसका परमार्थ शुद्ध है। अर्थात् शुद्ध व्यवहार वाले को सदैव परम शान्ति मिलती है।

"आहार शुद्ध तो रोग क्या करे,
व्यवहार शुद्ध तो लोग क्या करे।।
मन शुद्ध तो भोग क्या करे,
ज्ञान शुद्ध तो योग क्या करे।"

जो मानव व्यावहारिकता के औचित्य को भली भाँति समझता है कि किसके साथ, किस समय में कैसा व्यवहार करना चाहिए, वही मानव व्यवहार-कुशल कहलाता है। व्यवहार करने से पूर्व विचार करना आवश्यक है। सच्ची अनुभूति के अभाव में किया गया सच्चे व्यवहार का भी कोई मूल्य नहीं होता। अंग्रेजी में भी कहा है–

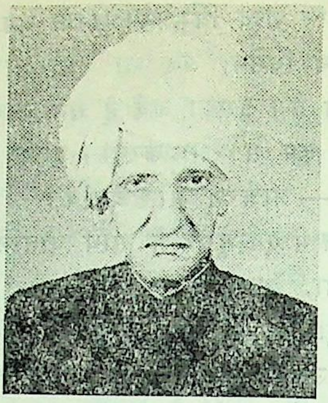
लेखक

"थिंक ट्वाइस बीफोर यू स्पीक"
(बोलने के पहले दो बार विचार कर लो।)

हम दूसरों से जैसा व्यवहार चाहें, वैसा ही हमें उनके साथ करना चाहिए। अंग्रेजी में कहा है:

"डू एज यू बिश टूबी डन बाइ अदर्स"

केवल सुन्दर बातें करने से कोई लाभ नहीं होता जब तक कि इन बातों को व्यवहार में परिणत न किया जाए। सच्चे अनुभव के अभाव में किए गए व्यवहार के कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं--

१. मोहन अपने परम मित्र सोहन के पिता की शव-यात्रा में सम्मिलित नहीं हुआ। सोहन ने उसे उलाहना दिया तो उसने पटाक से कह दिया कि अब भविष्य में तुम्हारे यहाँ किसी की मृत्यु होने पर वह शवयात्रा में अवश्य सम्मिलित होगा। यहाँ सोहन का विचित्र व्यवहार असभ्य और अशोभनीय था। उसको यहाँ क्षमा-याचना करना ही पर्याप्त था।

२. एक ज्योतिषी ने किसी की जन्मपत्री देखकर कहा कि तुम्हारे सब परिवारवालों की मृत्यु हो जाने के पश्चात् तुम्हारी मृत्यु होगी। उसको केवल यही कहना चाहिए था कि तुम्हारी आयु दीर्घ है।

[शेष पृष्ठ २८ पर]

सत्य-कथा

मुँह देखाई

श्री सलीम शेख
बी. ए.

[श्री शेखजी एक नवोदित लेखक हैं। आप पत्र-पत्रिकाओं में खूब छपते और फबते हैं। उनके द्वारा लिखित दहेज-प्रथा की यह सत्य-कथा पठनीय और मननीय है। अन्तरावलोकन करके इस रोग को जड़ से मिटाने-मिटवाने में साथ दीजिए। ——सम्पादक]

रामेश्वर बाबू सुशीला का सम्बन्ध निश्चित कर लौटे तो परिवार भर ने एक नई प्रसन्नता का अनुभव किया। दो वर्षों से रामेश्वर बाबू लगातार दौड़-धूप कर रहे थे। किसी अच्छे परिवार में सम्बन्ध न मिलने के कारण घर का वातावरण बोझिल होने लगा था। रामेश्वर बाबू ने अनुभव किया – अब घर में उदासी के बादल छटने लगे हैं।

सुशीला की माता पड़ोस में कहती फिरती, "लाखों में एक वर मिला है मेरी सुशीला को। आई० ए० एस० है, राजस्थान में तहसीलदार हैं। सुशीला के पिता कल उसका फोटो दिखा रहे थे, रूप-रंग और डील-डौल भी उसी तरह है जैसा एक बड़े आफिसर का होना चाहिए। सुशीला राज करेगी, घर में कई नौकर होंगे।"

सुशीला जब भी अपने होने वाले जीवन-साथी सुरेश की तारीफ सुनती तो उसका यौवन में बौराया तन मादकता से भर उठता। मन का हर छोर कल्पना के धागों से अनदेखे सपने बुनने लगता। घर में जब भी सुरेश के विषय में चर्चा छिड़ने लगती तो वह उठकर अपने कमरे में चली जाती और बिस्तर पर लेट सुरेश का फोटो देखने लगती।

विवाह को एक महीना ही तो रह गया था। घर में तैयारियाँ शुरू हो गई थीं। रामेश्वर बाबू ने अपनी हैसियत के अनुसार सामान खरीद कर घर में ढेर लगा दिया। विवाह के अवसर पर सुशीला को देनेके लिए आवश्यकता की सभी चीजें उन्होंने खरीद लीं। एक सुन्दर-सा टेबिल-फैन, दो कलाई घड़ियाँ, सौफा सैट, कुछ गहने, अनेक कीमती कपड़े और ढेर सारे बर्तन। रामेश्वर बाबू ने दहेज-प्रथा को अच्छा न समझते हुए भी यह सब किया। सुशीला उनकी इकलौती लड़की जो थी। उसे खाली हाथ कैसे घर से विदा करते? फिर समाज भी तो अंगुली उठाता। पता नहीं लोग क्या-क्या कहते। फिर भी एक महीना आँख झपकते ही बीत गया।

आज रामेश्वर बाबू का फ्लैट रंगीन रोशनी से जगमगा रहा था, बाहरी मैदान में कनातें खड़ी हुई हैं, महिलाएँ उच्चस्वर में गीत गा रही थीं और घर का वातावरण चहल-पहल, हो-हल्ले से भर गया। कुछ देर में बारात आई। सुशीला का मन नए-नए सपनों के बीच डूबने-उतराने लगा। अपने परिवार से दूर होने की बात से उसका हृदय बैठने लगता और सुरेश के साथ नए परिवार में जाने का मोह उसमें उत्साह भर देता। नई साड़ी में लिपटी सज-संवर कर बैठी सुशीला सभी कुछ सोचती रही।

तभी यकायक घर में उदासी छा गई। सुशीला कुछ न समझ सकी। उसके साथ बैठी सहेलियों के मुँह भी लटक गए। सुशीला के पूछने पर भी उन्होंने कुछ न बताया। वह उठ कर उस कमरे में चली गई, जहाँ परिवार के लोग एकत्र थे। उसने कमरे में देखा, तो अपनी आँखों पर विश्वास न हुआ। रामेश्वर बाबू पलंग पर बेहोश पड़े थे और सुशीला के चाचा डॉ० बनारसीदास उनका उपचार कर रहे थे। सभी के चेहरों पर स्याही पुत गई थी। आधे घंटे बाद रामेश्वर बाबू को होश आया। फिर भी परिवार के सभी लोग उदास बैठे थे। सुशीलाके

बहुत हठ करने पर उसकी एक सहेली सविता ने बताया कि वर और उसके पिता विवाह से पहले कार की माँग कर रहे हैं। उन्होंने साफ कह दिया है कि यदि दहेज में कार की व्यवस्था न की गई, तो वह विवाह असंभव है। पाँच सौ रूपए पाने वाले साधारण से व्याख्याता रामेश्वर बाबू अचानक कैसे इतनी बड़ी व्यवस्था कर सकते थे। वर-पक्ष की इस शर्त को सुनकर उनका हृदय काँप उठा। यदि विवाह नहीं हो सका, तो लोग क्या कहेंगे? पीढ़ियों से बनी-बनाई इज्जत धूल में मिल जाएगी। फिर सुशीलाके लिए कहाँ वर ढूँढ़ने जाएँगे? यह घाव रामेश्वर बाबू सहन न कर सकेंगे और मूर्छित होकर गिर पड़ेंगे।

सुशीला के हृदय पर पहाड़-सा टूट पड़ा। पूरी घटना जान कर वह क्रोध से फुफकार उठी। मन ही मन सोचने लगी, 'मुझे ऐसा विवाह नहीं करना है, जहाँ रस्मोरिवाज के नाम पर मजबूरियों का सौदा होता हो। ऐसे घिनौने जीवन से तो अविवाहित रहना ही ठीक है; किन्तु विवाह न हो तो परिवार की प्रतिष्ठा का क्या होगा? पिताजी कैसे अपने मित्रों को मुँह दिखाएँगे। उसका मन अनेक उलझनों में फँस गया।

घर में उदासी का सन्नाटा बढ़ने लगा। तभी सुशीला के दिमाग में एक खयाल आया, वह उठी और अपने चाचा डाक्टर बनारसीदास से बोली, "चाचाजी, आप तीन दिनके लिए अपनी कार दे दीजिए। मुझपर विश्वास कीजिए चाचाजी, प्लीज, तीन दिन में यह आपको मिल जाएगी।" डॉ० बनारसीदास सुशीला की बात मान गए।

रामेश्वर बाबू के मन का बोझ हल्का न हुआ, पर विवाह की धूम-धाम फिर आरंभ हो गई। सुशीला को उसकी सहेलियों ने सजाया और सुरेश-सुशीला का विवाह हो गया। दूसरे दिन सुशीला के साथ डा० बनारसीदास की नई नवेली कार ले बारात बिदा हो गई।

बारात अपने घर पहुँची। सुशीला ने देखा — फाटक पर अपने प्रतिष्ठित व्यक्ति खड़े हैं। जिनमें कुछ बड़े नेता और उच्च अधिकारी जान पड़ते हैं। कार का फाटक खोला गया, सुशीला की सास ने उसे प्यार किया, बलाएँ लीं और उसे कार से उतारना चाहा। पर सुशीला ने उतरने के बदले कहा, "जब तक मुझे 'मुँह दिखाई' पचास हजार रूपए नहीं मिलेंगे, मैं कार से नहीं उतरूँगी। कार के निकट खड़े लोग स्तब्ध रह गए। ससुर गिड़गिड़ाने लगे — "बेटी, रुपए कल ले लेना। इतने लोगों के सामने मेरा अपमान हो रहा है और फिर इतने रुपयों का प्रबन्ध मैं अभी कैसे करूँ?"

सुशीला ने सिर झुका कर कहा, "जिस प्रकार मेरे पिताजी ने कार का प्रबन्ध किया था।"

ससुर के मुख पर हवाइयाँ उड़ने लगी थीं। वे अब होश में आए थे। उन्होंने ड्राइवर को सौ का नोट दिया और कहा, "कार ले जाओ, हमें नहीं चाहिए।" इसके बाद ही सुशीला कार से उतरी। उसने कातर दृष्टि से देखा, ससुर का सिर लज्जा से झुक गया है। ●

५६/५ सोमाजी की चाली
चमनपुरा, **अहमदाबाद ३८००१६**

[पृष्ठ २६ का शेषांश]

३. किसी नेत्रहीन को अंधा न कहकर सूरदासजी के नाम से सम्बोधित किया जाए, तो उसे बुरा नहीं लगेगा। यहाँ कटु-सत्य को मधुर बनाकर प्रस्तुत किया गया है।

इस विषय पर निम्नलिखित श्लोक बहुत महत्त्वपूर्ण है।

अपि शास्त्रेषु कुशला लोकाचार विवर्जिता:।
सर्वे ते हास्यनाम् यान्ति यथा ते मूर्ख पण्डिता:

अर्थात् यदि कोई शास्त्रीय ज्ञान में कुशल है परन्तु लौकिक व्यवहार में अकुशल है तो वह मूर्ख पंडितों की भाँति हँसी का पात्र है।

अत:, प्रत्येक मानव को भरसक प्रयत्न कर व्यवहार-कुशलता की चेष्टा करनी चाहिए। ●

सागर टैक्स्टाइल सरसपुर, **अहमदाबाद**

स्वास्थ्य-परक

श्वेत कुष्ठ

— वैद्य प्रेमचन्द्र बासोतिया

आयुर्वेद रत्न

[श्री बासोतियाजी एक कुशल और अनुभवी वैद्य हैं। वैद्य-कर्म परम्परागत होनेसे इस क्षेत्र में आपने मूल्यवान सिद्धि प्राप्त की है।

श्वेतकुष्ठ आजकल बहु चर्चित रोग है। इससे अनेक व्यक्तियों का तन-मन-धन नष्ट हुआ है। उसी के कारण-निवारण पर विचारक अमीरी-गरीबी नुसखे इ लेख में दिये गए हैं। आशा है, इससे हमारे रोगसुक्तेच्छु पाठक लाभ उठाएँगे। —सम्पादक]

श्वेत कुष्ठ प्रसिद्ध व्याधि है और राष्ट्रीय समस्या बन गई है। उसके कई नाम हैं। सफेद कोढ़, सफेद दाग, किलास, श्वित्र, वारूण, फुष्ठ, आदि। यह रोग चिकित्सा की दृष्टि से कष्ट-साध्य माना गया है, लेकिन आयुर्वेद की शरण में आनेवाले को देर जरूर होगी; परन्तु निश्चय ही स्वास्थ्य-लाभ होगा;

प्रायः लोग श्वेत कुष्ठ को कोढ मानते हैं; लेकिन कुष्ठ शरीर के अंगों पर फट कर निकलता है। साथ में स्राव होता है, उसे कुष्ठ कहते हैं। कुष्ठ संक्रामक रोग होता है; लेकिन श्वेत कुष्ठ संक्रामक नहीं होता है। कुष्ठ में सदैव वेदना होती है; लेकिन श्वेतकुष्ठ में वेदना का अभाव होता है। कुष्ठ स्रावयुक्त होता है; लेकिन श्वेत कुष्ठ स्राव रहित होता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि कुष्ठ और श्वेत कुष्ठ दोनों भिन्न रोग हैं। श्वेत कुष्ठ त्रिदोषज होता है– रक्त, मांस, और मेद इन तीन धातुओं में यह रोग होता है।

कारण :

विरोधी द्रव्य, स्निग्ध एवं भारी अन्नपान-का सेवन करने से, आए हुए वमन के वेग को तथा अन्य वेगों को रोकने से– अति भोजन करके व्यायाम या तीव्र ताप का सेवन करने से, धूप, परिश्रम एवं भय से व्याकुल होने पर शीघ्र ही शीतल जल का सेवन करने से, कच्चा भोजन एवं भोजन के बाद तुरन्त भोजन करने से, पंचकर्मों में कुपथ्य करने वालों से दही, मछली, नमक एवं ज्यादा खटाई का सेवन करने से उड़द मूली, पिट्ठी के बने हुए पदार्थ गर्म वस्तु, गुड़ लहसुन, भोजन पचने के पूर्व मैथुन करने एवं दिन में सोने से, विप्रों (ब्राह्मण) एवं माता-पिता का अपमान तथा पापकर्म करने वालों से वातादि तीन दोष कुपित होकर त्वचा, रक्त, मांस और जलीय धातुओं को दूषित कर देते है। अधिक भोजन करनेके बाद व्यायाम करने से भी कुछ रोग उत्पन्न हो जाते हैं। वात, पित्त कफ तीन दोष तथा रक्त, मांस, मेद का चार दूष्य के समुदाय से कुष्ठ (कोढ़) की उत्पत्ति होती है।

कुष्ठ रोग के पूर्व त्वचा स्पर्श में अत्यन्त चिकनी या अत्यन्त खुरदरी मालूम होना, पसीना अधिक आना या पसीना बिल्कुल न आना, दाह, खुजलाहट, सुप्पतता, चुभन, कोठों की उत्पत्ति, नें भ, व्रणों में अधिक पीड़ा होना, पीड़ा का शीघ्र उत्पन्न होना, अधिक समय तक रहना, रोपण हो चुकने पर भी रुक्षता रहना और मामूली कारण उपस्थित होने पर भी व्रणों का अधिक जोर करना, रोमहर्ष और रक्त में कालापन होना ये कुष्ठ रोग के पूर्वरूप है।

लक्षण :

वात जन्य श्वेत कुष्ठ में त्वचा रूक्ष तथा लाल वर्ण की, पैत्रिक श्वेत कुष्ठ में त्वचा ताम्र वर्ण अथवा कमल के पत्र के रंग के समान लाल-कृष्ण मिश्रित होती है। श्लैष्मिक श्वेतकुष्ठ में त्वचा कण्डूयुक्त श्वेत वर्ण की घन तथा गुरु होती है। श्वेत कुष्ठ के श्वेत स्थान को चुटकी से पकड़कर ऊपर उठाकर माँस भाग को छोड़कर मात्र त्वचा में सुई चुभो दें। यदि उस स्थान पर रक्त निकलने लगे तो रोगी को साध्य (रोग मिट सकता है) और यदि उस स्थान से जलवत् द्रव्य निकले तो उसे असाध्य समझना चाहिए। जिस श्वेत कुष्ठ में रोम श्वेत नहीं हुए हों, जो थोड़ा हो एक दूसरे से चिह्न

दाग न मिले हों, अलग हो, आग से जलने से हुआ हो, लाल रंगवाले की अपेक्षा श्वेतवर्ण वाला श्वेत कुष्ठ कुछ साध्य होता है।

चिकित्सा :

वातज कुष्ठ में घृतपान, कफज कुष्ठ में वमन, पित्तज कुष्ठ में रक्तमोक्षण और शिराव्यध अल्प कुष्ठ में रोगी के बल की रक्षा करते हुए संशोधित करना चाहिए। कुष्ठ रोगी को अड़ूसा, नीम की पत्ती, मैनफल का चूर्ण मिला कर वमन कराना हितकर है। प्रातः काल शिवत्रारि रसायन १ गोली, खदिरारिष्ट सम भाग उष्णोदक (गर्मजल) के साथ सुबह-शाम पीना चाहिए। आरोग्यवर्द्धिनी रस (गोली) के नाम से प्रसिद्ध है, उसे सुबह-शाम पानी के साथ लेना चाहिए। शिवत्रारितश्च भल्लातक तैल में शुद्ध गंधक ३ ग्राम मूलत्वक १० ग्राम, पवार के बीज ४ ग्राम ४० दिन गौमूत्र में शोधित बावची चूर्ण४ ग्राम महाबटी ४ ग्राम और दुग्ध आधा लीटर लें। समस्त द्रव्यों को कूटकर गोदुग्ध में उबालकर रात्रि को जामन डाल कर जमा दें। प्रातःकाल विलोकर नवनीत (घी) निकाल लें। फिर सुबह-शाम वह घी १ तोले खाना चाहिए। यह मेरा अनुभूत नुसखा है। इसे सेवन करने से श्वेत कुष्ठ मे जरूर फायदा होता है। जिसका नाम सफूफबर्स है -- कूठ मीठा, दाल चींनी, जायफल, लौंग, नागकेशर, तेजपत्ता -- प्रत्येक ३ तोला, बावची, काली हरड़, छोटी २० तोला, शहद असली ५० तोला, चीनी देशी २।। किलो की चाशनी अवलेह-सी बनाकर उस कढ़ाई को नीचे उतारकर उपरोक्त सब दवाएँ कूट-छान कर बारीक करके उसमें मिला दें, फिर अवलेह जैसा तैयार हो जाएगा। फिर उसको सुबह-शाम चार माशे चाटकर ऊपर से महामजिष्ठादि क्वाथ या मुसफी, साफी कोई एक (१तो. दवा ४ तो. पानी) पी लें। बहुत अच्छा फायदा होता है। लगानेके लिए २०० ग्राम तिल का तैल गर्म करके उसके अन्दर १० ग्राम व्यासर की जड़, १०० ग्राम काला तिल ५० ग्राम कलौजी के दाने तथा ५० ग्राम बावची इन चार औषधियों को कूट कर छान लें। फिर उसे गर्म तैल में डालकर के हिला लें। फिर ठण्डा करके शीशी या बर्तन में भर लें। सुबह सेवन करने के बाद जनता तैल के नाम से वह उस श्वेत कुष्ठ के दागों पर मालिश करें। उनसे सफेद दाग लाल होने लगेगा। रोगी भोजन में विशेष करके चने की रोटी आदि का उपयोग घी के साथ करे। भोजन में बिना लवण के रह सके तब विशेष फायदा होता है।

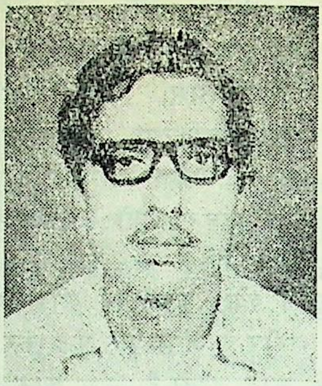

लेखक

अनुभव :

(१) रोगी का नाम तुलीराम पीतुमल सिंधी, आयु १५ वर्ष जो विजयनगर अजमेर निवासी है। और वहीं स्कूल में पढ़ता है। उसके पैर के घुटनों पर, हाथ पर पीठ के पीछे श्वेत कुष्ठ का दाग हो गया था। तीन साल का पुराना रोग, श्वेत कुष्ठ हो गया था। वह रोगी इधर अपने नाना के घर पर छुट्टियों में आया हुआ था। फिर किसी दूसरे आदमी के कहने पर मेरे यहाँ लाया गया। उससे मालूम पड़ा कि कफज श्वेत कुष्ठ है। पहले उसको विरेचन दिया गया। पेट साफ होने के बाद उसकी यह दवा चालू की उससे उसको सफूफबर्स (खून सफा) ५ ग्राम दिया गया। सफूफ को रात को थोड़े पानी में भिगो देना चाहिए। फिर सुबह बासी मुँह (खाने के पहले) उसका पानी छान कर पीना चाहिए। उसके ऊपर की लुगदी को पानी में पीसकर श्वेत दागों पर लगाना चाहिए। इस दवा का १५ दिन का कोर्स करवाया। फिर साथ में खाने के बाद रक्तशोधक अर्क पीने को दिया। चोपचीनी, उसवा काली, अनंतमूल, सनाय, सौफ हरड़ का छिलका, गोरख मुंडी, गुलाब के फूल, इन्द्रायन की जड़, मजीठ, लाल चंदन, चिरायता,

गिलोय, नी मकी अन्तर छाल, पित्त पापड़ा, १ तो० लौंग, दालचीनी, छोटी इलायची, केशर तीन-तीन मासा, ऊपर की दवाएँ कूटकर आठ गुने पानी में भिगोकर अर्क निकाल लें। चौथे हिस्से का पानी रहे। उसमें शहद २० तो० इलायची मिलाकर शीशी में भर लेना चाहिए। सुबह-शाम भोजन के बाद २ तोला अर्क का सेवन करना। उससे बहुत फायदा होगा।

(२) दूसरा रोगी आया श्वेत कुष्ठ जो अभी कुछ महीनों से शुरू हुआ था, जिसका नाम रामलाल आयु २० वर्ष जो रखियाल में गरीब-नगर में बसा हुआ है। उसके पास पैसा खर्चने को नहीं था। मैंने उसकी दवा लगातार १ महीने तक की। प्रभु की दया से उसका श्वेत कुष्ठ मिट गया। वह दवा इस प्रकार चालू की। रक्तावरोधक चूर्ण, नीम की निम्बोली के बीज, कहरूवा पिष्टी, रसौत, नागकेशर, सोनामुखी, फिटकरी फुलिया, अरडूसा, लाल चंदन, सफेद चंदन, खस, चोपचीनी, राल, मजीठ लोंद, शीतल चीनी, कत्था, गोखरू, अनार का फूल, बड़ की जटा, प्रत्येक दवा २ तोला लेकर कपड़छान चूर्ण कर लें, फिर मिश्री ३२ तोला उसके अन्दर पीसकर मिला लेना चाहिए। सुबह-शाम १ तोला चूर्ण ठंडे पानी के साथ सेवन करने से एक महीने में श्वेत कुष्ठ में फायदा होता है।

सस्ते प्रयोग :

श्वेत कुष्ठ के कुछ सस्ते उपयोगी प्रयोग दिए जाते हैं। अकरकराचूर्ण १ तोला के साथ चित्रका पीपल १ तोला, त्रिफला, एलुवा, बावची और मेंहदी के बीज प्रत्येक १ तोला तथा शुद्ध धतूरे के बीज ६ माशा, सब महीन चूर्ण कर अदरख के रस के साथ खरल कर मूंग के दाने जैसी गोलियाँ बनाकर छाया में सुखा कर रखे। प्रतिदिन भोजन के बाद एक-एक गोली जल के साथ सेवन करने से श्वेत कुष्ठ शीघ्र अच्छा होता है।

अनार के पते का रस एक सेर में समभाग सत्यानाशी, कटेरी का रस और गोमूत्र तथा अनार के पत्ते का कल्क आधा सेर और काले तिलों का तेल दो सेर मिलाकर गर्म करके सिद्ध कर ले। टंडा होने पर बोतल में भरकर रख लें। श्वेत कुष्ठ में यह तेल दिन में दो बार दागों पर लगाएँ।

दीवाली पर व्यापारी बीते साल के काम का लेखा-जोखा करते हैं, हानि-लाभ का हिसाब लगाते हैं और नई बही शुरू करते हैं, आने वाले साल के लिए योजना बनाते हैं। जैन समाज रोज प्रतिक्रमण करता है। पर्वराज पर्युषण में वे अंतर्मुख होते हैं, बीते वर्ष के अपने जीवन पर निगाह डालते हैं, मिच्छामि दुक्कडं (मिथ्यामि दुष्कृतम् — मेरे दुष्कर्मों का नाश हो) कहकर एक-दूसरे से क्षमा माँगते हैं और उन्नति के पथ पर अग्रसर होते हैं। पतेती का दिन पारसियों का नए साल का दिन है, परंतु पतेती का अर्थ प्रति – एति किया जाता है, जो 'प्रतिक्रमण' का भी अर्थ है, यानी पीछे फिरकर देखना। पतेती के दिन पिछले साल के अपने जीवन की ओर निगाह डालना – यह भावना 'पतेती' शब्द में है, जो आज शायद भुला दी गई है।

अमृतलाल नाणावटी

रोगी को प्रातः-सायं चोप चीनी का बारीक चूर्ण दे, ६ माशे ताजे पानी के साथ सेवन कराते रहें। अवश्य लाभ होगा। मेरा यह अनुभूत नुसखा है। अगर ज्यादा दिन का श्वेत कुष्ठ हो गया हो तो बावची का तेल, लौंग, चालमोगरा का तेल, तारपीन का तेल, दालचीनी का तेल, प्रत्येक तेल एक-एक तोला और श्वेत मिर्च का तैल दो तोला तथा नीम का तैल चार तोला मिलाकर सफेद दागों पर दिन में दो बार मालिश करें। कैसा ही श्वेत कुष्ठ हो और कितना ही पुराना क्यों न हो, एक सौ बीस दिन से लेकर सात माह के भीतर जड़-मूल से अवश्य नष्ट हो जाता है।

पथ्य :

श्वेत कुष्ठ रोगी को पथ्य से भी रहना चाहिए। ये वस्तु रोगी को छोड़ देनी चाहिए, दुक तैल खटाई, लालमिर्च, दही, दूध, शराब, तम्बाकू, चाय, उड़द की दाल, मैथुन, मांस, सफेद वस्तुओं का सेवन सभी गरिष्ठ भोजन त्याग देने से शत-प्रतिशत लाभ होता है। पथ्य, हलका खाना, चने की रोटी, बेसन की सब्जी हरी, खिचड़ी, मूंग की दाल, परवल, करेला, तुरीया, आदि सब्जी हितकर है। ●

जनता आयुर्वेदिक औषधीलय
चमनपुरा चार रास्ता, **अहमदाबाद ३८००१६**

पास होने की खबर सुनकर जो दूसरा प्रश्न पूछा जाता है वह है डिवीजन अथवा श्रेणी। यह दूसरा प्रश्न पहले वाले से भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। यदि आप प्रथम श्रेणी में पास हैं, तो दूसरे प्रश्न का उत्तर आपको आसमान में पहुँचा देगा। द्वितीय श्रेणी में पास हैं, तो आपके सम्मान में वृद्धि ही होगी पर यदि तृतीय श्रेणी में पास हुए तो दूसरा प्रश्न आपका मूड़ बिगाड़ कर रख देगा। जिस खुशी से पास होने की खबर सुनाई थी, वह खुशी आपसे कोसों दूर भाग जाएगी। गरज यह कि यह तृतीय श्रेणी बेचारे पास होने वालों की इज्जत बिगाड़ने वाला एक अणु बम है। यही नहीं, हीरोशिमा और नागासाकी पर गिरने वाले बम ने तो केवल एक बार मनुष्य जाति के प्राणियों को मारा था, लेकिन यह बम तो कई प्राणियों को हर वर्ष पूरी तरह मारता भी नहीं गंभीर रूप से घायल कर देता है। कहीं मुँह दिखाने लायक नहीं रखता है।

व्यंग्य-परक

तृतीय श्रेणी

—श्री गोपाल वर्मा

फिर इस बिरादरी वाले बेचारे क्या करें। इस सत्यानाशी शब्द 'तृतीय' या आम बोली में विस्फोटक शब्द 'थर्ड डिवीजन' के पर्यायवाची शब्दों का आविष्कार करते हैं। उसके नाम फिर बड़े गर्वोक्तिपूर्ण रखे जाते हैं। यथा रॉयल डिवीजन, फर्स्ट क्लास, विथ टू बॉडीगार्डस, गांधी डिवीजन, जनता डिवीजन और न जाने क्या-क्या। महज इसलिए कि डिवीजन बताकर झेंपना न पड़े या खीसे न निपोरनी पड़े।

लेकिन जनाब, इतना पढ़कर आप यह न समझ लें कि थर्ड डिवीजन कोई मामूली उपलब्धि है। असल में देखा जाए, तो सभी डिवीजनों में थर्ड डिवीजन ही सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण डिवीजन है। यह देखने के लिए आइए, सबसे पहले इसकी सीट्स की संख्या देखें। कोई भी रिजल्ट वाला अखबार उठा लें। जिस डिवीजन के आप सबसे अधिक कालम पाएँगे, वह जनप्रिय डिवीजन यही थर्ड डिवीजन है। कुल उत्तीर्ण होने वाली संख्या का आधे से अधिक भाग केवल इसी डिवीजन पर आश्रित रहता है। प्रथम और द्वितीय डिवीजन के बाद जिस डिवीजन को विद्यार्थी बड़ी हसरत और आशा भरी निगाहों से देखते हैं वह यही डिवीजन है। यही वह नाव है जिससे विद्यार्थी बड़ी हसरत और आशाभरी निगाहों से देखते हैं वह यही डिवीजन है। यही वह नाव है जिससे विद्यार्थी बड़ी आशाएँ रखते हैं कि यह नाव तो उन्हें पार लगा ही देगी। प्रथम श्रेणी वाली नाव तो जैसे कुलीन व संभ्रांत वर्ग की है, द्वितीय श्रेणी वाली नाव मध्यम वर्ग की है पर सर्वसाधारणके लिए सुलभ तो बस यही तृतीय श्रेणी वाली नाव है।

प्रजातंत्र में भी जनता के तीन वर्ग हैं और जिस वर्ग के उत्थानके लिए सरकार सबसे ज्यादा क्रियाशील रहती है वह भी गरीब, पीड़ित और शोषित जनता ही है। अर्थात् संभ्रांत नहीं, मध्यम भी नहीं बल्कि एकदम साधारण वर्ग। जब सरकार इस तीसरे वर्गके लिए इतनी सुविधाएँ जुटानेके लिए प्रयत्नशील है, तो क्यों इस डिवीजन के तीसरे वर्ग अर्थात् तृतीय श्रेणी में उत्तीर्ण आशार्थियों को किसी भी प्रतियोगिता, परीक्षा-चयन आदि में प्राथमिकता नहीं दी जाती, यह समझ के परे की बात है।

इसलिए मेरी सभी तृतीय श्रेणी उत्तीर्ण वालों से अपील है कि आओ मित्रो, हम भी एक महा संघ बनाएँ "अखिल भारत तृतीय श्रेणी उत्तीर्ण महासंघ"। मित्रो, आपको हताश होने की कतई आवश्यकता नहीं। कारण कि सभी उत्तीर्ण होने वाले व्यक्तियों में सर्वाधिक संख्या हमारी ही है।

अब समय आ गया है कि हम सब एक जुट हो अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करें। मित्रो, हमारी शक्ति असीम है, आवश्यकता है तो केवल एकता की। सम्पूर्ण कार्यालयी व्यवस्था हम तृतीय श्रेणी-वालों अर्थात् तृतीय श्रेणी कर्मचारी उर्फ बाबू लोगों के कँधों पर ही टिकी हुई है। कहना न होगा कि कार्यालयों में भी तृतीय श्रेणी कर्मचारियों की संख्या ही सर्वाधिक है। उसपर हालत यह कि बेचारे बाबू लोग तो जी-तोड़ परिश्रम कर काम करते हैं और ऑफिसर क्या करते हैं? काम में जरा-सी भी गड़बड़ हुई नहीं कि मिट्टी पलीद कर रख देंगे। टाइप में कुछ भी गलती हुई नहीं कि फौरन् बुलाकर झाड़-फटकार। अब बेचारा तृतीय श्रेणी में मेट्रिक पास बाबू इतनी दक्षता कहाँ से प्राप्त कर सकता है, जो आपने प्रथम श्रेणी प्राप्त कर प्राप्त की है। अतः, हमारे संघ का यह अनुरोध हो कि जब आप (साहब) ही इतने दक्ष हैं तो आप ही टाइप क्यों नहीं सीख लेते। गलतियाँ नहीं होंगी और लेटर ड्राफ्ट तैयार करने की भी आवश्यकता नहीं रहेगी; जिससे समय की बचत होगी। इस समय में अन्य उपयोगी कार्य होंगे। अपनी पी० ए० से छेड़छाड़ करने से तो उपयोगी यह कार्य ही होगा। भ्रष्टाचार में कमी होगी। इससे गरीब महिलाएँ भी नौकरी करेंगी तो गरीबी हटेगी। परिणामतः देश उन्नति की ओर अग्रसर होगा। अतः, हमारा अनुरोध है कि बाबू जैसे जिम्मेदार पदों पर द्वितीय और प्रथम श्रेणी के आशार्थी रखे जाएँ और अधिकारी जैसे गैर-जिम्मेदार स्थानों पर तृतीय श्रेणीवाले आशार्थियों को नियुक्त किया जाए।

अतः, तृतीय श्रेणी वाले मेरे भाइयो! अब घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है। अब हमारा समय आ गया है। उठो और अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो जाओ। वह समय अब दूर नहीं जब प्रथम श्रेणीवाले आँखें बिसूरते हुए बाबूगीरी सम्हालेंगे और तृतीय श्रेणी वाले शब्दकोष में वर्तनी की अशुद्धियाँ जांचकर केवल हस्ताक्षर का काम करेंगे। ●

द्वारा —श्री नारायण देवी वर्मा
२९, नावघाट मार्ग **उदयपुर** ३१३००१ (राज०)

● **विवेक-विकास** ●
[साहित्य-संस्कृति-कला का स्तरीय मासिक]
सम्पादक : **रामनिवास स्वामी**
एक प्रति : १.२५ रु.
वार्षिक मूल्य : १२ रुपये
प्राप्ति-स्थान :
केसरगढ, जवाहरलाल मार्ग, जयपुर–४ (राज.)

युवक-युवतियों का प्रिय मासिक
युवक
प्रकाशन का २८ वां वर्ष
कहानियां ० लेख ० कवितायें ० स्थायी स्तम्भ
एक प्रति १ रुपया, वार्षिक १२ रुपया
सम्पर्क—व्यवस्थापक 'युवक' जीयोनी मण्डी, **आगरा-४**

अग्र–प्रगति
राष्ट्रीय, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विचारों का प्रतिनिधि–मासिक। वार्षिक शुल्क १२ रु०। धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा आज ही भिजवाकर समाज में वैचारिक क्रान्ति उत्पन्न करने में भागीदार बनिए।
आजीवन सदस्यता १२१ रु०
राजनाथ सिंघल **महेशदत्त गर्ग**
व्यवस्थापक संपादक
३६, कालाजी गोराजी
मार्ग, उदयपुर (राज०)

● **रंगायन** ●
लोकसंस्कृति तथा लोककला का हिन्दी मासिक पत्र। वार्षिक मूल्य ७ रु.
सम्पादक : डा० महेन्द्र भानावत,
लोककला मण्डल, उदयपुर। ●

જીવનમાં એકાગ્રતા

●

—શ્રી જગદીશ બિનીવાલે

૦ મોટાભાગના લોકોની એક સામાન્ય ફરિયાદ હોય છે કે 'કામમાં ચિત્ત ચોંટતું નથી!' મોટા ભાગના વિદ્યાર્થીઓની પણ આ જ સામાન્ય ફરિયાદ હોય છે કે 'અભ્યાસમાં મન લાગતું નથી, ચિત્ત ચોંટતું નથી!'

આ બધું શું છે? એકાગ્રતાનો અભાવ!!

તમે પૂછશો...આ એકાગ્રતા વળી શું છે? એકાગ્રતા એટલે એક જ સમયે એક જ વસ્તુ પર પોતાના વિચાર અને ભાવનાને કેન્દ્રિત કરવી, તન્મય થવું અને જાણે પોતાની રીતને, જાતને જ ભૂલી જવું!

આત્મવિશ્વાસ, ઈચ્છાશકિત અને પરિશ્રામ–આ ત્રણ એકાગ્રતાના મૂળ તત્ત્વો છે. આજના પ્રગતિશીલ વિજ્ઞાન યુગની પ્રગતિ–એ માનવીના અખંડ પ્રયત્નોનો એકાગ્રતાનો ઈતિહાસ છે.

મોટા ભાગના વિદ્યાર્થીઓ વાંચવા-લખવા ઘરમાં કે ઘર બહાર શાંત જગ્યા પસંદ કરતા હોય છે. કેટલાક વાંચનાલયોમાં જઈ વાંચન-કાર્ય કરતા હોય છે. પરંતુ તેમનું વાંચનમાં, અભ્યાસમાં ધ્યાન હોય છે... ખરું? ના! તેમનું ધ્યાન વારંવાર આજુબાજુ ખેંચાતું રહે છે. ઘડીક... પુસ્તકનાં પાનાં ફેરવશે...તો વળી ઘડિયાળ તરફ જોશે!! તેમનું ચિત્ત એકાગ્ર બનતું નથી.

એકાગ્રતાથી કરેલો અભ્યાસ, એકાગ્ર ચિત્તે કરેલું કામ સફળતા બક્ષે છે. માત્ર વિદ્યાર્થી વર્ગ જ નહીં, સમાજના લેખકો, વૈજ્ઞાનિકો, કવિઓ, વિચારકો, તત્ત્વજ્ઞો, બુદ્ધિજીવીઓ એકાગ્રતાના પરમ ઉપાસકો છે. એકાગ્રતા એક એવી જાજવલ્યમાન શકિત છે, કે તેની ઉપાસના કરનાર સહુ કોઈનું કલ્યાણ જ થાય છે.

અજંતા-ઈલોરાની ગુફાઓ, કાર્લાની ગુફાઓ, ખજુરાહો તથા સૂર્યમંદિર મોઢેરાના શિલ્પો–પ્રાચીન શિલ્પકારોની એકાગ્રતાની અભૂતપૂર્વ પ્રતીતિ કરાવે છે.

લેખક

અને આ વૈજ્ઞાનિકોની એકાગ્રતા તો જુઓ!! બીજગણિતના કૂટપ્રશ્નો ઉકેલવામાં આર્કિમીડીઝ એટલો તો એકાગ્ર બની ગયો હતો કે રોમન સૈન્ય શહેરમાં ઘૂસ્યું, શહેર પર કબજો મેળવ્યો, ઘરમાં પ્રવેશ્યા, હસ્યાં, બૂમો પાડી છતાં આર્કિમીડીઝ ની એકાગ્રતા ન તૂટી તે...ન જ તૂટી.

અને આ સાહિત્યકારોની એકાગ્રતા તો જુઓ કૃષ્ણશાસ્ત્રી નામના વિદ્વાન વાંચવામાં એવા તો એકાગ્ર થઈ જતાં કે તેમનો હજામ આવી દાઢી-હજામત કરી જતો રહેતો છતાં તેમને ખબર ન પડતી

વીજળીના દીવાની શોધ કરનારા વૈજ્ઞાનિક થોમસ એડિસને ન થાકતાં ન કંટાળતાં પોતાની પ્રયોગશાળામાં દશ હજારથી વધુ પ્રયોગો કર્યા હતા અને તેની ભવ્ય એકાગ્રતાનું ફળ આજે સમગ્ર વિશ્વ ભોગવી રહ્યું છે ને.

આમ, માનવમાત્રની પ્રાથમિક જરૂરિયાત છે–એકાગ્રતા.

●

જી. પી. ઓ બોકસ ૧૪૫
અમદાવાદ ૩૮૦૦૦૧

समिति समाचार

शोक-समाचार :

राजस्थान सेवा समिति, अहमदाबाद संचालित राजस्थान हिन्दी हाईस्कूल के ८१ बालक-बालिकाओं और छः अध्यापकों का एक दल ता०. २४-१०-'७८ को तीन सप्ताहके लिए उत्तर-भारत और नेपाल के प्रवास पर विदा हुआ था। यह दल रेलमार्ग द्वारा अपने रिजर्व डिब्बे में प्रवास करता हुआ दिल्ली, हरिद्वार, ऋषिकेश, मथुरा, वृंदावन, आगरा, इलाहाबाद होता हुआ पटना से कुछ आगे चल कर क्यूल स्टेशन पर पहुँचा और प्रातः ३-४ बजे बदलीके लिए डिब्बा काट दिया गया। यह कटा आ डिब्बा रेलवे अधिकारियों की सूचना के अनुसार तीन घंटे में दूसरी गाड़ी में प्रातः ७.३० बजे लगनेवाला था; किन्तु स्थानीय रेलवे अधिकारी यह समय बढ़ाते गए।

ता० ३०-१०-७८ को अपराह्न तीन बजे बालकों का एक दल पास में स्थित छिछली नदी क्यूल में स्नान करनेके लिए अध्यापकों की निगरानी में गया। नदी में पानी बहुत कम था। स्थानीय बालक भी स्नान कर रहे थे। कुछ बालक थोड़ा आगे बढ़े और दुर्भाग्यवश उनमें से चार बालक एक गड्ढे में गिर कर डूब गए, जिस गड्ढे की दल को न कोई जानकारी थी, न चेतावनी थी। डूबने वाले बच्चों की खोजबीन मल्लाहों और फ़ायर-ब्रिगेड वालों द्वारा भी की गई, जिससें नीचे लिखे अनुसार तीन के शव मिले –

(१) अजय चन्द्रमोहनजी घुवालेवाला – ११अ
(२) प्रकाश मांगीलालजी जैन – ११अ
(३) प्रवीणकुमार घेवरचंदजी हुंडिया – ११ब

किन्तु चौथे बालक सुरेश रामस्वरूपजी असावा –१०ब के मृतदेह का पता कई दिन तक काफी प्रयत्न करने परभी नहीं मिल पाया। स्थानीय ट्रंक फोन लाइन खराब होने के कारण यह समाचार प्रधानाध्यापक श्री शर्माजी ने पटना आकर ट्रंक कॉल से स्कूल कमेटी के संयोजक श्री संपतराजजी शाह को दिया। समाचार मिलते ही संस्था के अधिकारीगण समिति-कार्यालय में एकत्र हुए और प्रथम उपलब्ध हवाई जहाज से प्रातः ७-३० बजे सह व्यवस्थापक श्री नेमीचंदजी बागरेचा एवं चारों दिवंगत बालकों के अभिभावकों को हवाई जहाज से पटना भेजने की व्यवस्था की। साथ ही फोन से आचार्य श्री शर्माजी को सूचना दी गई कि बालकों के अभिभावकों के पहुँचने के बाद ही और उनकी इच्छानुसार बालकों का दाह-संस्कार किया जाए। प्रवासी दल तुरंत अहमदाबाद को वापस भेज दिया जाए और सुरेश असावा की अप्राप्त देह की हर संभव खोज जारी रखी जाए। प्रवासी बालकों के सभी अभिभावकों को तत्काल इस गमगीन घटना की सूचना दी गई। समिति की ओर से दूसरे दिन होने वाला नव वर्ष-दीपावली स्नेह-सम्मेलन रद कर दिया गया।

अभिभावकों की इच्छानुसार उपलब्ध तीन शबों का दाह-संस्कार पटना में गंगातट पर उनके द्वारा वहीं किया गया और शेष बालक अध्यापकों के साथ अहमदाबाद आ गए हैं। यह समाचार दैनिक पत्रों में भी छपा और दीपावली के उल्लास के समय कोमल हृदयी नागरिकों के हृदय हचमचा गए। इस दुःखद समाचार को प्रकाशित करते हुए, हमारी आँखें भी डबडबा आती हैं। यह खबर देते हुए और भी अधिक रंज होता है कि सुरेश असावा की मृतदेह की खोज असफल रही है।

पटना निवासी श्री काशीनाथजी टेकरीवाल (फर्म गंगाधर नथमल). उनके भाई श्री भगवानप्रसादजी (आजाद ट्रान्सपोर्ट एजेंसी) तथा उनके कुटुम्बी श्री गोविन्दप्रसादजी, श्री राजकुमारजी, श्री सुरेशकुमारजी, श्री रमेशकुमारजी ने इस संकट–काल में जो आत्मीयतापूर्ण सहायता की वह सदैव स्मरण रहेगी और हम उनके खूब-खूब आभारी रहेंगी।

इसी प्रकार पटना के श्री मदनलालजी कानोरिया, श्री भगवतीप्रसादजी कानोरिया, श्री सुशीलकुमारजी, श्री रामअवतारजी व पटना मेडिकल कालेज के प्रिंसिपाल डा० मानिकसिंहजी ने भी जो सहयोग दिया उसके लिए भी ये सभी सज्जन हार्दिक कृतज्ञता के पात्र हैं।

इस समाचार से समिति-परिवार, हाईस्कूल-परिवार और ज्ञानोदय हिन्दी प्राथमिक शाला-परिवार पर उदासी छा गई है। सबने शोक-संवेदना, मूक प्रार्थना द्वारा अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की है।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि इन दिवंगत निरीह आत्माओं को चिर शांति प्रदान करे और कुटुम्बीजनों को यह कठोर आघात सहन करने का बल दे।

– सम्पादक

• शोक-समवेदना •

राजस्थान सेवा समिति, अहमदाबाद की कार्यकारिणी सभा की आज दिनांक ८-११-७८ की बैठक यह शोक-प्रस्ताव पारित करती है कि—

अपने राजस्थान हिन्दी हाईस्कूल के नेपाल-प्रवास हेतु तारीख २४-१०-७८ को गए प्रवासी-दल में से निम्नांकित चार बालकों का बिहार प्रदेश में लखीसराय के पास दिनांक ३०-१०-७८ को क्यूल नदी में जलमग्न हो जाने से जो आकस्मिक अवसान हो गया है, उससे हम गहरे दुःख एवं आघात का अनुभव करते हैं।

(१) अजय चन्द्रमोहनजी घुवालेवाला	**कक्षा – ११ अ**	**उम्र – १६ वर्ष**
(२) प्रकाश माँगीलालजी जैन	**कक्षा – ११ अ**	**उम्र – १६ वर्ष**
(३) प्रवीणकुमार घेवरचंदजी हुंडिया	**कक्षा – ११ ब**	**उम्र – १६ वर्ष**
(४) सुरेश रामस्वरूपजी असावा	**कक्षा – १० ब**	**उम्र – १५ वर्ष**

इन स्वर्गवासी बाल-आत्माओं के अभिभावकों के मर्मान्तिक आघात से भी हम सब अत्यन्त शोक संतप्त हुए हैं। हम उन्हें किन शब्दों में सांत्वना दें, यह नहीं सूझता है।

परमपिता परमात्मा से हमारी हार्दिक प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्माओं को शाश्वत शांति दे एवं उनके कुटुम्बीजनों को तथा हमें यह गम्भीर आघात सहन करने का बल दे।

New Gujarat Cotton Mills Ltd.

AHMEDABAD-2

INSIST ON
"NEW GUJARAT FABRICS"
FOR HOME & EXPORT

For 100% Polyester, Printed Shirting, 80/20 Filament Shirting, Fancy wash and Wear Poplins of latest fashions

Regd. Office :
18 A, Brabourne Road,
Calcutta

Mill No. 1
Naroda Road,
Ahmedabad-380 002
Phone : 372266
372317
374527
Telegram : NEW GUJRAT

Mill No. 2
Out side Dariapur Gate,
Ahmedabad-380 016
Phone : 24293
24294
Teiex : AM-311

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Todi Industries Pvt. Ltd.

Manufacturers of :

Rubber Division : Bicycle Tyres & Tubes, Rubber Solutions Moulded Auto parts for Automobiles & General Industries.

Garment Division : 'Ladies & Gents' Readymade garments for Indian and Export Market.

Engineering Division : Steel Windows & doors, M. S. Tanks, Pressure vessels, Steel Racks, Cranes Light & Heavy Fabrication and Centrifugal pumps, Operation tables, Tapelooms & Braiding Machines.

Todi Builders (Construction Division) : Small and Medium size Industrial Sheds for SSI Units on ownership basis with Power, Water, Lift and N. O. C. at Delisle Road, BOMBAY - 11. Also Office/Shops/Godown premises at D'Mello Road.

TODI ESTATES
LOWER PAREL
BOMBAY - 400 013

CABLES : **OFFER**
TEL. : **371336**
TELEX : **TODI-O11-3796**

पट्टा, पोपलीन, बुश शर्टिंग, पोलिस्टर आदि एवं हर प्रकार के कपड़े की थोक खरीदीके लिए मिलिए या लिखिए :—

गिरधारीलाल मोहनलाल

१९९, न्यू क्लॉथ मार्केट,
अहमदाबाद–३८० ००२

टेलिफोन :– दुकान : ३६२८६७
निवास : ८५७६५५

पोलिस्टर, फिलामेन्ट तथा सब तरह के सूती कपड़ेकी अर्धथोक (सेमि–होलसेल) खरीदी के लिए

राजीव एण्ड कम्पनी

४B, मस्कती मार्केट,
अहमदाबाद–३८० ००२

टेलीफोन { दुकान : ३६२०११
निवास : ८५७६९१

• निष्पाप जीवन •

एक सज्जन ने एकनाथ से पूछा — 'महाराज, आपका जीवन कितना सीधा-सादा, कितना निष्पाप है! हमारा जीवन ऐसा क्यों नहीं? आप कभी किसी पर गुस्सा नहीं होते, किसी से लड़ाई-झगड़ा नहीं, टंटा-बखेड़ा नहीं। कितने शांत, कितने प्रेमपूर्ण, कितने पवित्र हैं आप!'

एकनाथ ने कहा — 'अभी मेरी बात छोड़ो। तुम्हारे संबन्ध में मुझे एक बात मालूम हुई है। आज से सात दिन के भीतर तुम्हारी मौत आ जाएगी।'

अब एकनाथ की बात को कौन झूठ मानता! सात दिन में मृत्यु। सिर्फ १६८ घण्टे ही बाकी रहे। हे भगवान्, यह क्या अनर्थ! वह मनुष्य जल्दी-जल्दी घर दौड़ गया। कुछ सूझ नहीं पड़ता था। आखिरी समय की, सब कुछ समेट लेने की बातें कर रहा था। वह बीमार पड़ गया। बिस्तर पर पड़ गया। छह दिन बीत गए। सातवें दिन एकनाथ महाराज उससे मिलने आए। उसने नमस्कार किया। एकनाथ ने पूछा — 'क्या हाल है?' उसने कहा — 'बस, अब चला।' नाथजी ने पूछा — 'इन छह दिनों में कितना पाप किया? पाप के कितने विचार आए?' वह आसन्न मरण व्यक्ति बोला — 'नाथजी, पाप का विचार करने की तो फुरसत ही नहीं मिली। मौत एक-सी आँखों के सामने खड़ी थी।'

नाथजी ने कहा — 'हमारा जीवन इतना निष्पाप क्यों? — इसका उत्तर अब मिल गया न?'

•

शुभ कामनाओं के साथ

रामगोपाल गिरधारीलाल सराफ

कपड़े के व्यापारी एवं आढ़ती

५०६, न्यू क्लॉथ मार्केट, **अहमदाबाद-२**

टेलीफोन : दुकान : ३६०२६८ एवं ३६११००; निवास : ४५६७१

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Manjushri Textiles

* * *

Manufacturers of Fisshion Fabrics, Exclusive creation of the latest styles incorporating the colours & prints, Synthetic Shirting, Cotton Shirtings, Sarees, Dress Materials.

* * *

MANJUSHRI TEXTILES,
(Prop : New Swadeshi Mills of Ahmedabad Ltd.)
Shahibag, **Ahmedabad – 380 004**
Tel : **66081**

NESA FABRICS

Nesa Suitings, Shirtings, Sarees, Prints,
Super Fine Cambrics, Poplins, Bed Sheets,
Lungis, Dress materials etc.

न्यू स्वदेशी

**The New Swadeshi Mills Of
Ahmedabad Ltd.**

Naroda Road,
AHMEDABAD-380 002

Telephone : 372121
372066
372021

Telegram NEWSWADESHI
Telex : AM 222

सुधाबिन्दु

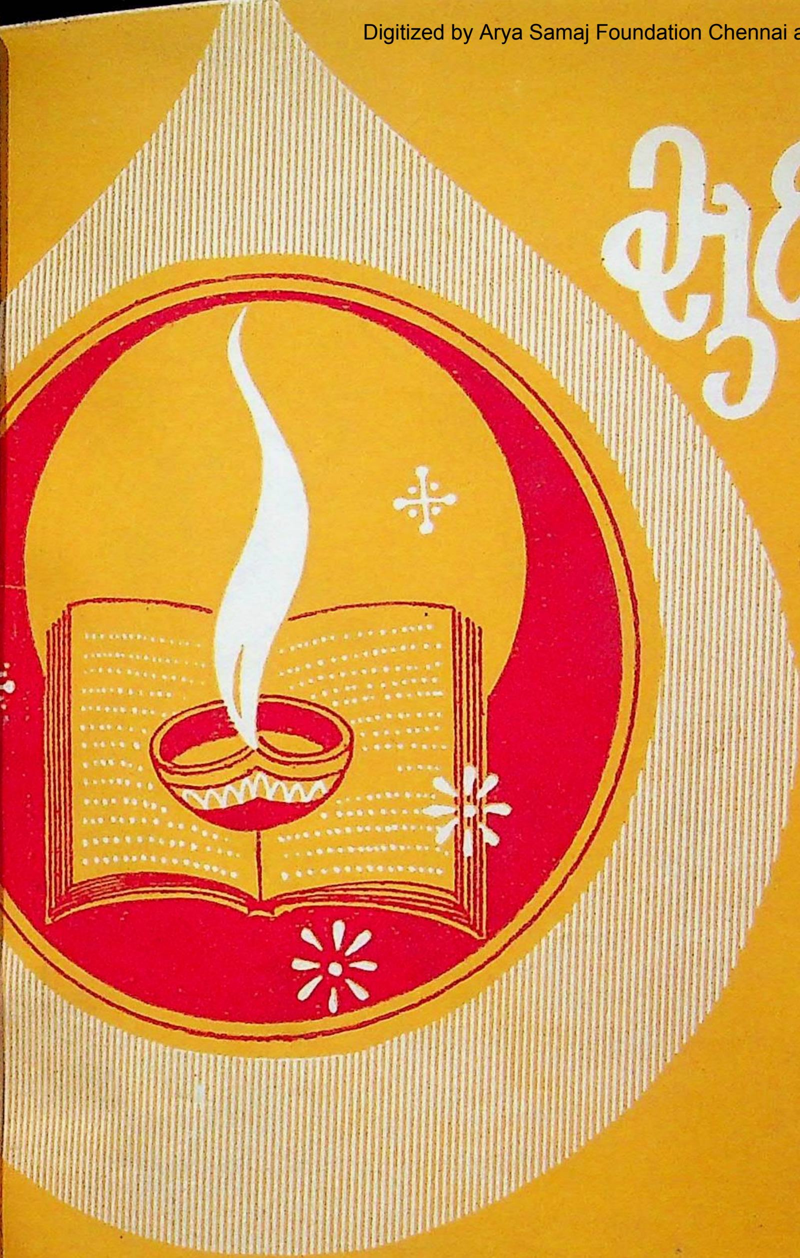

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी

वर्ष : १८ अंक : ११
नवम्बर, १९७९
वार्षिक शुल्क : १५ रुपए
आजीवन : १५० रुपए
एक अंक : १·५० रुपए

राजस्थान सेवा समिति · अहमदाबाद

Piramal Fabrics

Piramal Mills Maheshwari Mills

Manufacturers of Cotton & Polyester
Suitings, Shirtings & Dress Materials

कृपया इस मास से
१५ रु. वार्षिक शुल्क भेजिए।

सुधाबिन्दु

सम्पादक

डा० राजनाथ पाण्डेय
एम० ए० (संस्कृत, हिन्दी, पालि), पी-एच. डी.
व्याकरणाचार्य, "लब्धस्वर्णपदक"

रामअवधेश त्रिपाठी
साहित्यरत्न

संयोजक

गिरधारीलाल सराफ
एम.कॉम., एल-एल० बी०, रा. रत्न

लेखकों से निवेदन

(अ) हमें कैसे लेख-कविता-कहानी आदि चाहिए:–

(१) जो मानव में जीवन के प्रति आस्था जगाकर जीवन को सुन्दरतर बनाए और जो जीवन को जीने की कला सिखाए।

(२) जो मानव-मानव में अपनत्व बढ़ाए, जो करुणा जगाए और जो परसेवा सिखाए।

(३) जो मानव को आत्माभिमुख करके प्रकृतिपरायण बनाए।

(४) जो हमारे भारत राष्ट्र की विशेषतः राजस्थान की गरिमा को उजागर करे।

(५) जो हमारी विभिन्न प्रजाओं, जातियों एवं व्यवस्थाओं के उत्कृष्ट गुणों का विवेचन करे।

(६) जो प्राचीन-अर्वाचीन ज्ञान-विज्ञान का संतुलित विवेचन करे।

(७) जो मानव को श्रेष्ठ मानव बनने के लिए प्रेरित करे।

(आ) रचनाएँ कागज के एक ओर लिखकर भेजें।

- अप्रकाशित और अप्रसारित रचनाएँ ही भेजें।
- निर्विवादास्पद विषयों पर लिखी हुई रचनाएँ ही भेजें।
- रचना अस्वीकृत होने पर वापस मँगानेके लिए टिकट लगा लिफाफा भेजें।
- एक हजार शब्दों तक ही रचनाएँ भेजें, तो बड़ी अनुकूलता होगी।
- अपना परिचय तथा योग्यता-विवरण भी भेजें।

पत्राचार : रामअवधेश त्रिपाठी
२, उत्तर भारतीय कोलोनी, नागरबेल के पास
अमराईवाड़ी, अहमदाबाद – ३८००२३

राजस्थान सेवा समिति, अहमदाबाद का मासिक मुखपत्र

वर्ष : १८
अंक : ११ १९७९

वार्षिक शुल्क : १५ रुपए
आजीवन ग्राहक : १५० रुपए

एक अंक का मूल्य : १.५० रु०

'सुधाबिन्दु' में विज्ञापन की दरें निम्नांकित :

स्थान	विशेषांक	वार्षिक	मासिक
कवर पृष्ठ नं–४	१०००	१८००	२००
,, ,, नं.–२ और ३	५००	१५००	१५०
रंगीन पूरा पृष्ठ	५००	—	—
माधा० ,, ,,	२५०	१०००	१००
,, आधा पृष्ठ	१५०	६००	६०

व्यवस्थापक 'सुधाबिन्दु'
राजस्थान सेवा समिति, शाहीबाग मार्ग अहमदाबाद-१४

[राजस्थान सरकार के माध्यमिक, उच्चतरमाध्यमिक विद्यालयों तथा पुस्तकालयोंके लिए 'सुधाबिन्दु' मान्य है।]

राजस्थान सेवा समिति, शाहीबाग मार्ग अहमदाबाद-४ के लिए श्री रामावतार शर्मा ने प्रकाशित किया एवं आरती प्रिन्टर्स, गांधी आश्रम, अहमदाबाद-२७ से मुद्रित किया।

अनुक्रमणिका

(गुजरात युनिवर्सिटी द्वारा शोधपत्रिका के रूप में मान्य)

नवम्बर, १९७९

१. तीन बातें — सम्पादकीय ५
२. कर्मयोग (कविता) — सुश्री विद्या 'रश्मि' ६
३. गुजरात के जैन कवियों के हिन्दी रामकाव्य (शोध-परक) — डा० लक्ष्मीनारायण दुबे ७
४. कविवर कन्हैयालाल सेठिया (संस्मरण) — श्री राधाकृष्ण १०
५. कर्मठता (विचार-परक) — डा० रामचरण महेन्द्र १४
६. ढलाव (लघुकथा) — प्रीतपाल विरात १६
७. उसे प्यार सब करते हैं (बाल-काव्य) — अशोक १७
८. राजस्थान के मदमाते लोकगीत (विचार-परक) — श्री बद्रीप्रसाद पुरोहित १८
९. तीन मोर्चे (विचार-परक) — श्री रंगनाथ दिवाकर २१
१०. गधे में भी विवेक है (विवेक-परक) — डा० जान एच० मनस २४
११. शीर्षासनी चिन्तन (रंग और व्यंग्य) — श्री श्यामसुन्दर सुल्लेरे २६
१२. नीम (आरोग्य-परक) — श्रीमती सन्तोष देवी चौमाल २९
१३. पुस्तक परिचय ३१
१४. समिति समाचार ३२
१५. विज्ञापन ३५

आजीवन ग्राहक बनिए

'सुधाबिन्दु' एक साहित्यिक और सांस्कृतिक मासिक पत्रिका है। इसका ग्राहक बनना गौरव की बात समझी जाती है। ग्राहक-शुल्क वार्षिक १५ रु० है और वह भी मँहगाई के साथ बढ़ता रहता है। इस परेशानी को दूर करनेके लिए केवल १५० रु० भरकर आजीवन ग्राहक बनना अधिक सुविधाजनक है। अब तक इस योजना का लाभ अनेक ग्राहक ले चुके हैं।

कृपया आप भी १५० भेजकर शीघ्र इस योजना का लाभ उठाइए।

व्यवस्थापक 'सुधाबिन्दु'
राजस्थान सेवा समिति, शाहीबागमार्ग, अहमदाबाद-४

—: विश्वम्भरा :—

शुद्धा न आपस्तन्वे क्षरन्तु
यो नः सेदुरप्रिये तं नि दध्मः ।
पवित्रेण पृथिवि मोत्पुनामि ।।

— अथर्व० १२-३०

बरसे अनिश हमारे तन पर, नीर नवल, निर्मल नीरोग;
रिपुजन पर हम उसे डालते, हमें कष्ट देता जो रोग ।
लेकर कर में भूदेवी ! मैं दर्भविनिर्मित एक पवित्र;
उससे ही तव पावन जल ले, अपने को कर रहा पवित्र ।।

— राज०

◆

※ समिति के दो प्रकाशन-पुष्प ※

१· आधुनिक राजस्थानी साहित्य : लेखक—**प्रा० भूपतिराम साकरिया**

डेमी साइज, पक्की जिल्द, कलात्मक आवरणपृष्ठ, सुन्दर छपाई वाली इस पुस्तक की प्रशंसा बड़े-बड़े विद्वानों ने की है। पुस्तकालयों तथा पुस्तक-प्रेमियों के लिए विशेष उपयोगी है। **मूल्य—केवल ६ रुपए**

२· बातां बखत बखत की : लेखक—**श्री महावीरप्रसाद हलवाई**

डेमी साइज, पक्की जिल्द, उत्कृष्ट छपाई तथा मोहक आवरण-पृष्ठ । यह पुस्तक राजस्थानी भाषा में लिखी गई मौलिक और जीवनोपयोगी कविताओं का एक सुन्दर संग्रह है, जिसके प्रत्येक दूहे अंगूठी के नगीने हैं। **मूल्य—केवल ६ रुपए**

इस पुस्तक पर सम्मति देते हुए आचार्य **बदरीप्रसाद साकरिया** ने लिखा है—"सुन्दर और सुबोध नीति के दोहे। अपने ढंग की यह एक कृति है। कवि का प्रयास वास्तव में सराहनीय है। राजस्थानी भाषा के माध्यम से कवि और कृति साहित्य-गगन में प्रकाशमान हों, ऐसी अपेक्षा–अभिलाषा है।"

प्राप्तिस्थान
राजस्थान सेवा समिति, शाहीबाग मार्ग, **अहमदाबाद-४**

पाठकों के पत्र

यह अतीव प्रसन्नता का विषय है कि 'सुधाबिन्दु' पाठकों को नियमित रूप से सुधा-बिन्दु दे रहा है। इसके रसास्वादन से मनमानस की तुष्टि-पुष्टि होती है। पाठकों की ज्ञान-सुधा को 'सुधाबिन्दु' ज्ञान की गंगा से सींच रहा है। इसके लिए हम आभारी हैं। विशेषांक भी वन्दनीय, अनुकरणीय, पठनीय तथा संग्रहणीय हैं।

— अर्जुन सिंह शेखावत
फालनागाँव, जिला - पाली (राजस्थान)

*

'सुधाबिन्दु' का अगस्त '७९ का अंक मिला। विचार-परक लेख 'मृत्यु का भय' (श्री श्यामसुन्दरलाल पोशाकवाला), बाल कहानी 'फिर सुबह हुई' (श्री सन्तकुमार टंडन) दोनों ही रचनाएँ बड़ी आकर्षक लगीं। श्री सलीम शेख के 'कहकहे' में अन्तिम चुटकुला पढ़कर मैं हँसा। इनके अलावा सभी रचनाएँ स्तर की रहीं। पत्रिका का मुखपृष्ठ बड़ा आकर्षक लगा।

विष्णु भट्ट
४५६, भूपालपुरा, उदयपुर

*

मैं सन् १९७२ से 'सुधाबिन्दु' का नियमित ग्राहक हूँ। हमारे सभी परिवार में बच्चों से लेकर वृद्धों तक सभी लोग 'सुधाबिन्दु' को बड़े चाव से पढ़ते हैं। 'सुधाबिन्दु' का सम्पादकीय लेख बहुत ही उच्च कोटि का रहता है। ... ... मैं 'सुधाबिन्दु' की दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति चाहता हूँ।

डा० भानुप्रताप मिश्र
मेदीकुआँ, शाहपुर, अहमदाबाद

सुधाबिन्दु

वर्ष : १८ नवम्बर, १९७९ अंक : ११

सम्पादकीय

तीन बातें

भगवान् दत्तात्रेय अपनी साधना और साधुता के बल पर नर से नरदेव पद पर पहुंच गए हैं। एक बार वे किसी नगर में राजमार्ग से होकर गुजर रहे थे। उन्होंने एक लुहार को बड़ी तत्परता से लोहे का औजार बनाते देखा। उधर से ही एक हाथियों का जुलूस निकल गया; लेकिन लुहार का ध्यान उधर नहीं गया। दत्तात्रेय जी के यह पूछने पर कि अभी–अभी किसका जुलूस निकला ? उस लुहार ने उत्तर दिया कि मुझे पता नहीं, कब किसका जुलूस गया है। यह सुनकर दत्तात्रेय जी मुग्ध बन गए और उसे अपना चौबीसवाँ गुरु बना लिया।

प्रश्न यह है कि एक साधारण से साधारण लुहार को इस नर-रत्न ने अपना गुरु क्यों और किन गुणों के कारण बनाया ? वह गुण था लुहार की तन्मयता अथवा एकाग्रता। इससे नर-रत्न दत्तात्रेय की गुण-ग्राहकता का पता भी लग जाता है। इन दोनों गुणों के बीच कर्मठता का चमत्कार भी कुछ कम महत्त्व नहीं रखता। तात्पर्य यह है कि एकाग्रता, कर्मठता और गुण–ग्राहकता ये तीनों गुण जब किसी नर में आ जाते हैं, तो उसे नारायण बना देते हैं, जब किसी समाज या राष्ट्र में आ जाते हैं, तब उसे उन्नति के शिखर पर पहुंचा देते हैं। ये तीन गुण इस संसार-सिन्धु के तीन महार्थ रत्न हैं।

जब ये तीन गुण किसी भाग्यशाली व्यक्ति में एक साथ निवास करते हैं, तब उसकी संकुचितता, पिशुनता और शठता भूमिगत बन जाती है। उसमें दैवी गुणों और पोषक भावों का विकास होता है। तभी सृजनात्मक भावों का शंखनाद होता है। ये तीनों गुण अनेक शारीरिक, मानसिक और आचारिक रोगों की दवा हैं। जहाँ ये तीनों गुण होते हैं, वहाँ के जीवनाकाश में अरुणोदय की विभा फूटती है। इन पर वाद, प्रवाद, विवाद, प्रतिवाद की काली छाया का कोई प्रभाव नहीं दिखा पाती।

हम व्यक्ति, समाज, कुटुम्ब, जाति, धर्म, राष्ट्र की विविध सीमाओं से घिरे हुए सामान्य या विशेषजन हैं। हमारा आज के युग और आज की घड़ी में यह महान् धर्म है कि अपने मन-मस्तिष्क के बन्द द्वार खोल कर इन तीनों गुणों को आवाहन करें, अपने हृदय-मन्दिर में इन तीनों गुणों की त्रिमूर्ति स्थापित करके प्रशस्त पथ के पथिक बनें।

ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है, इच्छा क्यों पूरी हो मन की।
एक दूसरें से न मिल सके, यह विडम्बना है जीवन की ।। — प्रसाद

कविता

कर्मयोग

सुश्री विद्या 'रश्मि'

गिर जाना रेतीली धरती पर आँसू का बहुत सरल है ।
लेकिन अँजुरी से सागर का पी जाना आसान नहीं है ।।
सबके पाँव लक्ष तक पहुँचें ऐसा पथ का भाग्य नहीं है,
कुछ को छाँह और कुछ को जलती किरणों से भ्रम मिलता है,
अपनी डोली रखा कहारों के काधों पर जो चलते हैं,
ऐसे पथिकों को प्रकाश के धोखे में भी तम मिलता है,
फूलों की माला अंधे की ग्रीवा में साँपों का छल है,
बहुत कठिन होता है अन्तर वे संबंधों को निबाहना,
पंचभूत का सुख परछाईं जैसा बनता मिट जाता है,
कभी दूधिया नहीं हुआ करता अभिनय कपटी परिचय का,
दरके हुए कलश से अमृत बूँद-बूँद में तिर जाता है,
पीड़ा का उपहार नहीं सबकी निर्मलता का आँचल है ।
अनुरागीके लिए मीत से अधिक बड़ा भगवान् नहीं है ।।
चकाचौंक में जो वैभव की नख से शिख तक डूब गए हैं,
उनमें वैसे संस्कार साधक के देखे जा सकते हैं,
बोध नहीं है जिन्हें लक्ष का और न जो खुद को पहचाने,
जड़ता के पर्याय भला चेतन में कैसे बस सकते हैं,
व्यभिचारीके लिए अर्चना नाहक का इक कोलाहल है ।
देवतुल्य आचरण जगत् में सर्वसुलभ वरदान नहीं है ।।
अर्थ-शून्य शब्दों का नाटक भले व्याकरण से पोषित हो,
सतही छाया-चित्र मूर्तता के आगे नतमस्तक रहता,
शिल्पकार का शिल्प विभूषित होता है शिल्पी भावों से,
प्रज्ञा का हर कथ्य मौन के दरवाजे पर दस्तक देता,
हर गुलाब का कवच कँटीली शाखों का अर्पित संबल है ।
कर्मयोग से अधिक प्रबल कोई रेखा–विज्ञान नहीं है ।

मंजू तेली की गली, दीक्षितपुरा,
जबलपुर (म० प्र०)

शोध-परक

गुजरात के जैन कवियों के हिन्दी रामकाव्य

डा० लक्ष्मीनारायण दुबे
एम० ए०, पी०एच०डी०

[श्री दुबेजी सागर विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्रवक्ता और लेखक हैं। आपकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित–सम्पादित हो चुकी हैं और अनेक शोधार्थी छात्र आपसे लाभान्वित हो चुके हैं।

प्रस्तुत लेख में गुजरात के जैन कवियों द्वारा हिन्दी रामकाव्यों पर प्रकाश डाला गया है, जो पठनीय है।—सम्पादक]

महामति प्राणनाथ, महर्षि दयानंद सरस्वती तथा महात्मा गाँधी के प्रदेश गुजरात में एक लम्बी समयावधि से हिन्दी की अखण्ड ज्योति विकीर्ण हो रही है। गुजरात के अहिन्दी भाषा–भाषी जैन कवियों ने हिन्दी में रामकथा लिखकर एक ओर राष्ट्रभाषा के मार्ग को प्रशस्त किया है तो दूसरी ओर रामकाव्य परम्परा को समृद्ध।

सत्रहवीं तथा अठारहवीं शताब्दी के अनेक जैन कवियों ने रामकथा को अपने काव्य का उपजीव्य बनाया है। इन शताब्दियों में लगभग २७४ हिन्दी कृतियाँ लिखी गईं, जिनमें कतिपय का आधार रामकथा है। कुछ रामकाव्य अज्ञात और विस्मृत हैं। इन शताब्दियों में हिन्दी साहित्य में शृंगार रस का निर्बाध प्रवाह प्रवहमान था; परन्तु गुजराती जैन कवियों ने राम के नैतिक तथा आदर्श स्वरूप को प्रतिष्ठित किया था।

विनयसमुद्र की सात रचनाएँ गुजराती मिश्रित हिन्दी में मिलती हैं। उनके 'पद्म चरित' में राम तथा सीता के चरित्रों को प्राधान्य मिला है। उनके शील और चरित्र की गरिमा को सुन्दर रूप में अभिव्यक्त किया गया है। इसी प्रकार ब्रह्मराय मल्ल ने 'हनुवंत कथा' (सं० १६१३) में राम के परम भक्त, अंजना-पुत्र हनुमान तथा भक्तमती अंजना के चरित्र की पंखुड़ियों को बिखेरा है। इस कृति में जैन मान्यताओं को प्रमुख स्थान मिला है। हनुमान के पिता की यह अटूट आस्था है कि जिनेन्द्र की पूजा से आत्मा स्वच्छ तथा निष्कपट होती है और मोक्ष मिलता है। पूजा-प्रक्रिया का एक दृश्य दृष्टव्य है—

क़ूँ क़ूँ चंदन घसिवा घरणी,
माँझि कपूर मेलि अती घणी।
जिणवर चरण पूजा करी,
अवर जन्म की थाली भरी।

बालक हनुमान का प्रखर रूप देखने को मिलता है—

बालक जब रवि उदय कराया,
अंधकार सब जाय प्रलाया।
बालक सिंह होय अति सूरो,
दंतिघात करे चक-चेरो॥

सघन वृक्ष बन छाँत विस्तारौ,
रती अग्नि करे दह छारौ ।
जो बालक क्षत्रिय कौ होय,
सूर स्वभाय न छोड़े कोय ।।

समयसुन्दर महोपाध्याय ने साठ वर्ष तक साहित्य की साधना की थी और उनकी सर्वश्रेष्ठ कृति 'सीताराम चौपाई' मानी गई है जिसमें रामकथा को जैन परिपाटी के मुताबिक उपस्थित किया गया है। इस महान् तथा विशाल काव्य में सैंतीस सौ श्लोक हैं। इसमें राम के नायकत्व को सम्यक् रूपेण प्रतिष्ठित करते हुए रामगुण-गान किया गया है। इसकी प्रबंधात्मकता तथा कथा-निर्वाह शक्ति अपरिमेय है। इसमें नखशिख वर्णन के साथ शृंगार के विप्रलम्भ रूप को भी बड़ी सूक्ष्मता के साथ प्रस्तुत किया गया है। श्रीराम के करुण विलाप तथा सीता के स्तवन का निदर्शन ठीक रूप में मिलता है—

प्रिय भाषिणी, प्रीतम अनुरागिना,
सधउ धणु सुबिनीत ।
नाटक गीत विनोद सह मुझ,
तुम न विणा भावइ चीत ।।
सयने रम्भा विलासगृह कामकाज,
दासी माता अविहउ नेह ।
मंत्रिवी बुद्धि निधान धरित्री
क्षमानिधान सकल कला गुणनेह ।।

कवि का काव्य-कौशल इस ग्रन्थ के 'सीता पर लोकोपवाद' तथा 'राम लक्ष्मण सम्वाद' संदर्भ में अत्यन्त श्रेष्ठ रूप में दिखाई पड़ता है।

समर्थ कवि और निष्णात विद्वान् जिनराज सूरि की 'जैन रामायण' की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। उन्होंने अनेक सम्वाद अत्यन्त सरस रूप में लिखे हैं। भट्टारक महाचन्द्र ने छप्पय छंद के सत्तर पद्यों में 'लवांकुश छप्पय' नामक बड़ी रचना लिखी। यह एक खण्ड काव्य है। लव तथा कुश को आख्यान का आधार बनाया गया है। इसमें राम के लंका-विजय तथा अयोध्या प्रत्यावर्तन के बाद की कथा को अग्रसर किया गया है। डिंगल शैं प्रयोग मिलता है—

रण मिसाल बजाय सकल सैन्या तब मेलो
चढ्यो दिवाजे करि कटक करि दश दिस मेलो
हस्ति तुरंग मसूर मार करि शेषज शंको
खड्गादिक हथियार देखि रवि शशि पण कंट्यो
पृथ्वी आंदोलित थई छत्र चमर रवि छादयो
पृथु राजा ने चरे कहयौ, ल्यादु राम तदै आवयो

वीर रस का एक दृष्टांत अवलोकनीय है—

संध्या के असवार हणी गय वरनि घंटा
रथ की घाच कूचर हणी वली हयनी थरा
लव अंकुश युद्ध देख दशों दिशि नाढा जावे
पृथुराजा बहु बढे लोहि पण जुगति न पावै
बज्र जंघ नृप देखतों बल साथे भागो यदा
कुल सील हीन केतो जिते जिते पृथुरा पगे पड्यो तदा

ब्रह्म अजित का 'हनुमच्चरित' द्वादश सर्ग अत्यन्त सुन्दर काव्य है। महानंद गणि के 'अंग सुन्दरी रास' में हनुमान की माँ का चरित्र चि है। इस सुन्दर कथानक में अंजना की जिनेन्द्र प्रति अटूट भक्ति देखने को मिलती है। एक दृष्टव्य है—

मधुकर करइं गुजारव मार विकार वहंति
कोयल करइं पट हूकटा टूकड़ा मेलवा कंत ।
मलयाचल की चलकिउ पुलकिउ पवन प्रचण्ड ।
मदन महानृप पासइ विरहीन सिर दण्ड ।

कुशल की महत्त्वपूर्ण तथा उल्लेखनीय का कृति 'सीता आलोयणा' है जिसके ६३ पद्यों सीता के वनवास-काल की आत्मलोचना का सु विश्लेषण मिलता है। भाषा पर गुजराती का प्रभाव अंकित है—

सती न सीता सारखी, रति न राम समान,
जती न जम्बू सारखौ, गती न मुगत सुथांन ।
सीताजी कुं रामजी, जब दीनो वनवास,
तब पूरब कृत करमकुं, याद करे अरदास ।

डा० हरिप्रसाद गजानन शुक्ल 'हरीश' ने ठीक लिखा है कि आराध्य की महत्ता अनेक ढंग से निरूपित की जा सकती है । सूर और तुलसी ने अपने-अपने आराध्य कृष्ण और राम को अन्य देवों से बड़ा बताया है । जैन कवियों ने भी अपने जिनेन्द्र को बड़ा मानकर अपने आराध्य के प्रति अनन्य भाव ही प्रकट किया है । जैन गुर्जर कवियों ने अपने देवों को बड़ा तो बताया है. किन्तु अन्यों को बुरा नहीं कहा ।

महात्मा आनंदघन एक असाम्प्रदायिक उदार तथा विश्वजनीन धर्म की ओर उन्मुख हुए थे । उनके लिए राम, रहीम, महादेव की अभेद स्थिति ही श्रेयस् है—

राम कहो, रहेमान कहो कोउ, कान कहो महादेव री,
पारसनाथ कहो कोउ ब्रह्मा सकल ब्रह्म स्वयमेव री ।
भाजन भेद कहावत नाना, एक मृतिका रूप री ।
जैसे खण्ड कल्पना रोपित, आप अखण्ड स्वरूप री ।
निज पद रमे राम सो कहिए, रहिम करे रहेमान री ।
करशे कर्म कान सो कहिए, महादेव निर्वाण री ।।
परसे रूप पारस सौ कहिए, ब्रह्म चिन्हे सो ब्रह्म री ।
इस विध साधो आनंदघन, चेतन मय निःकर्म री ।

आनंदधन फिर कहते —

अवधू राम राम जग गावें, विरला अलख लगावे ।।
मतमाला तो मत में ताता, मठवाला मठराता ।
जटा जटाधर पटा पटाधर, छता छताधर जाना ।।

गुजराती जैन कवियों के हिन्दी रामकाव्य में शान्त रस की न केवल प्रधानता है, अपितु उसे रसराज रूप में स्वीकार भी किया गया है । जैन कवियों के इन आरम्भिक प्रयोगों का हिन्दी को राष्ट्रव्यापी स्वरूप प्रदान करने में ऐतिहासिक प्रदेय है ।

जिन हर्ष के 'रावण मन्दोदरी सम्वाद' में पारम्परिक स्वरूप का सफलतापूर्वक निर्वाह मिलता है । जैन कवियों में हिन्दी की लोकोक्तियों का सफल व्यवहार करके उसके प्रभाव पक्ष की श्रीवृद्धि की है । कवि समयसुन्दर की 'सीताराम चौपाई' के कतिपय प्रयोग द्रष्टव्य हैं—

(क) छट्ठी रात लिख्यउ ते न मिटई ।
(ख) करम तणी गति कहिय न जाय ।
(ग) लिख्या मिटइं नहिं लेख ।
(घ) थूकि गिलइ न कोइ ।

गुजराती जैन कवियों ने हिन्दी की रामकथा तथा रामकाव्य को वृहत्तर आयामों तथा सूत्रों से जोड़कर, उसे बहुमुखी और मर्मस्पर्शी बनाया है ।

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
सागर विश्वविद्यालय, सागर [म० प्र०]

राजनीति और भाषण

अध्यापक : राजनीति मर्मज्ञ कौन होता है ?

छात्र : जो स्थान-स्थान पर जा कर भाषण देता है ।

अध्यापक : यह ठीक है, लेकिन इसमें एक सुधार करना होगा । मैं भी कभी-कभी भाषण देता हूं । लेकिन मै राजनीति में मर्मज्ञ नहीं हूँ ।

छात्र : जी, मैं जानता हूँ, राजनीति मर्मज्ञ वह होता है, जो अच्छे भाषण देता है ।

चाय

पति : आज शाम की चाय बाहर पी जाए तो कैसा रहे ?

पत्नी : क्यों, क्या तुम्हें यह लगता है कि मैं चाय बनाते-बनाते तंग आ गई हूँ ।

पति : नहीं, मगर मैं कप-प्लेट धोते-धोते तंग आ गया हूँ ।

कविवर कन्हैयालाल सेठिया

श्री राधाकृष्ण

[श्री सेठिया जी राजस्थानी और हिन्दी के वरिष्ठ कवि और साहित्यकार हैं।

राजस्थान में राजिया का दोहा लोक कण्ठों का हार है। श्री सेठिया जी ने राजिया के दोहे अपने प्रच्छन्न नाम से लिखे थे, जो खूब लोकप्रिय हैं। उनका व्यक्तिगत और काव्यत्मक संक्षिप्त परिचय इस लेख में बड़ी खूबी से कराया गया है, जो प्रेरक है।—सम्पादक]

सुजानगढ़ में कन्हैयालाल नामक एक लड़का था। छोटा-सा भोलाभाला लड़का लगता था। जैसे समस्त संसार की जिज्ञासाएँ उसकी आँखों में प्रतिबिम्बित हैं। हर चीज को वह कुतूहल की दृष्टि से देखता, फिर अपनी ही कल्पनाओं के द्वारा अपने कुतूहल को शान्त करता। जिस दुनियाँ में वह रहता है वह सुन्दर कैसे बने? दुःख-कष्ट कैसे दूर हों? किसी संतप्त को देखता तो उसे रात-भर नींद नहीं आती। उनके संताप को वह अपनी कल्पना के द्वारा ही दूर करके उसे सुखी बनाने की चेष्टा करता। जैन-परिवार होने के कारण वह अर्हंत मुनि के बारे में जानता। संसार का दुःख-ताप दूर करनेके लिए भगवान् महाबीर, जो चौबीसवें तीर्थंकर थे, ने तपस्या की थी। आसपास का वातावरण सनातनधर्म मानने वालों से भरा हुआ था। राम थे, उन्होंने अवतार लिया था। कृष्ण थे वे सोलहों कला के अवतार थे। जब कभी संसार में धर्म की हानि होगी, भगवान् अवतार लेंगे। वह इन बातों को सुनता। वह तरह-तरह की बातें सुनता। वह किसी की बात को नहीं काटता और हर तरह की बातों पर विश्वास करता। उसके मन में धारणा हो गई थी कि मन की भावना सच्ची होनी चाहिए, नीति और सदाचार का परिपालन होना चाहिए। उसने अज्ञातरूप में मान लिया था कि मानवजाति का कल्याण नीति और धर्म के पालन में ही है। अपनी उम्र की अपेक्षा उसके विचार कहीं अधिक गम्भीर थे।

पठन—काल : कन्हैयालाल कभी कभी अपने विचारों को कविताबद्ध भी कर लेता। उसकी भावनाएँ अधिकतर दोहों और सोरठों के रूप में प्रकट होतीं। वह उसी प्रकार की बातें कह देता जिस प्रकार राजस्थान के पुराने कवि कह गए हैं। उन्हे वह स्कूल की अपनी बही में लिख लेता और भूल जाता। कभी वह अपना दोहा लिखता भी नहीं और वह उसके मन में घूमता रहता।

कभी मन में आया तो कुछ दोहे अपने मित्रों को सुना दिया किसी पुराने कवि ने ऐसा कहा है। उसके मित्र भी उसकी प्रशंसा करते। वाह यार कन्हैया, तुम्हें तो एक से एक दोहे याद हैं। कहाँ से लाते हो यह सब? कन्हैया कहता कि मेरे घर में एक पुरानी बही है। उसीमें लिखा है। मगर यह है किसका? पुराने वक्त के कवि जो कुछ लिखते थे उस दोहे में अपना नाम डाल देते थे, जैसे रहीम,

तुलसी, गिरधर कविराय। या अपनी राजस्थानी में लो, तो रमणीया के सोरठे। एक अच्छा-सा नाम चाहिए। उसके अभाव से यह छद्म नहीं चलेगा।

कन्हैयालाल का एक मित्र था राजिया। बहुत ही घनिष्ठ, बड़ा प्यारा। वह कन्हैयालाल के मुनीम का लड़का था। यह समस्या आई तो राजिया इस बात पर राजी हो गया कि तुम्हें अपना नाम देने में लाज आती है तो अपनी रचनाओं में तुम मेरा नाम ले लिया करो।

और कन्हैयालाल राजिया के नाम से लिखने लगा। राजिया के नाम से उसने बहुत-से नीति के दोहे कहे जो आज भी राजस्थानी ग्रामीणों की जीभ पर हैं। वे बात-बात पर राजिया के कथन का उद्धरण देते हैं, मगर यह नहीं जानते कि राजिया कौन था। होगा कोई साहब; कभी हुआ होगा। मैंने तो सिर्फ उसके दोहे सुने हैं। दुनियादारी के मामले में राजिया बड़े पते की बात कहता है। राजस्थानी भाषा में राजिया के दोहे उसी प्रकार चमकते हैं जिस प्रकार अंगूठी में नगीना। लोग उसे प्राचीन कवि मानते हैं। कोई कहता है कि राजिया उन्नीसवीं सदी में हुआ था। किसी का खयाल है कि वह अठारहवीं सदी में था। कोई-कोई तो उसे रहीम ख़ानख़ाना का समकालीन मानने लगे हैं। जिस समय राजस्थान जीवन-मरण और आत्म-मर्यादा की समस्या को लेकर जूझ रहा था, उस समय राजिया नीति और सदाचार की बातें कह रहा था। वह कोई साधु था और राजस्थान में हर जगह घूमता रहता था। उसकी रचनाएँ भी राजस्थान में घर-घर कही जाती हैं।

राजिया रा दूहा : राजिया के नाम से दोहे-सोरठे कहने वाला कन्हैयालाल आज इन बातों को सुनता है तो मुस्कुरा देता है। वह तो अभी साठ का भी नहीं हुआ है और उसने राजिया के नाम से तब लिखा था, जब बीसवीं सदी की दो दशाब्दियाँ व्यतीत हो चुकी थीं।

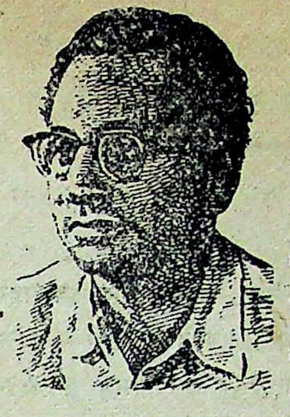

राजिया और कन्हैयालाल के प्रकरण में अनायास ही रवीन्द्रनाथ के जीवन की एक घटना याद आ जाती है। जिन दिनों रवीन्द्रनाथ ने कविता लिखने का आरम्भ किया था, उस समय समस्त बंगाल के प्रबुद्ध-जगत् में विद्यापति की मैथिली कविताओं की धूम थी। बंगाली अपने मन में यह भ्रम पाल रहे थे कि पुरातनकाल में बंगला का यही रूप था। हर बैठक में विद्यापति की चर्चा चलती और कहा जाता कि धन्य हो विद्यापति, तुमने तो कमाल कर दिया। रवीन्द्रनाथ उस समय बालक थे। उनके मन में भी कुतूहल होता। वे भानुसिंह के नाम से उसी प्रकार की कविताएँ लिखने लगे। जब वे कविताएँ छपीं तो लोगों ने आश्चर्य के साथ देखा कि विद्यापति के समान ही बंगाल में एक दूसरा कवि भी हो गया है जिसका नाम था भानुसिंह। लोग कल्पना करते कि भानुसिंह किस काल में हुआ होगा, कहाँ होगी उसकी जन्मभूमि? विद्यापति के समान भानुसिंह पर भी शोध होने लगे। एक सज्जन ने तो इंग्लैण्ड में जाकर भानुसिंह पर शोध कर डाक्टरेट की डिग्री ले-ली। भानुसिंह का रहस्य तो खुल गया, राजिया के रहस्य पर पर्दा पड़ा हुआ है।

स्वभाव वैशिष्ट्य : उस कन्हैयालाल का पूरा नाम है कन्हैयालाल सेठिया। जन्मभूमि जूनागढ़ व्यवसाय कलकत्ता, बम्बई और हैदराबाद में। पूरब बंगाल में अच्छी-खासी जमींदारी थी, जो पूर्व पाकिस्तान के निर्माण के साथ ही समाप्त हो गई। कलकत्ता विश्वविद्यालय से कामर्स में बैचलर की डिग्री प्राप्त की है। स्नेह से सराबोर व्यक्तित्व। कलकत्ता-बम्बई के वातावरण में दम घुटता है और राजस्थान का कण-कण इन्हें प्रिय है। सदा तो ये राजस्थान में ही रहे। जिस समय लोग व्यापार का विस्तार कर रहे थे और अंधाधुंध रुपए कमा

रहे थे, उस समय कन्हैयालाल सुजानगढ़-स्थित अपने रतन-निवास में बैठे हुए कविताएँ लिख रहे थे। वे कहते भी हैं कि धन कमाना किसे कहते हैं यह मैंने नहीं जाना। मेरे लिए तो भावनाएँ और शब्द··· सपने और कल्पनाएँ···

साहित्य-साधना : मैंने कन्हैयालाल को पहले-पहल उस समय देखा था, जब वे कलकत्ते में कालेज की शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। उस समय वे अपना पहला काव्य-संग्रह प्रकाशित करा रहे थे, जिसका नाम था 'वनफूल'। उस संग्रह का मुखपृष्ठ सुप्रसिद्ध राजस्थानी चित्रकार इंद्र दुगड़ ने अंकित किया था। तब से लेकर आज तक इनकी रचनाएँ पर्याप्त मात्रा में प्रकाशित हो चुकी हैं।

हिन्दी में : बनफूल, अग्निवीणा, दीपकिरण, मेरा युग, प्रतिबिम्ब, आज हिमालय बोला, खुली खिड़कियाँ, चौड़े रास्ते, प्रणाम, मर्म अनाम और अर्हंत।

राजस्थानी में : मींझर, गलगचिया, कूँ कूँ, रमणीयं रा सोरठा, लीलटाँस, धर कूँचा, धर मँजला आदि।

प्रतिबिम्ब का अंग्रेजी अनुवाद हो चुका है अनुवादक हैं श्री अरुणकुमार भट्ट और भूमिका लेखक हैं सुप्रसिद्ध श्री हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय। कन्हैयालाल के कई गीतों के ग्रामोफोन रेकर्ड बन चुके हैं और वे राजस्थानियों के बीच बहुत ही प्रचलित हैं।

श्री सेठियाजी सन् ७० या ७१ में हृदयरोग से आक्रान्त हो गए थे। बड़ी कठिनाई से जान बची। मगर रोग ने इन्हें जर्जर कर छोड़ा है। अब कलकत्ते में अधिक रहने लगे हैं और उसी प्रकार साहित्य-सेवा में तल्लीन हैं। कहीं आना-जाना नहीं। अध्ययन, मनन और चिन्तन। राजस्थानी की सेवा के लिए तो वे मानो समर्पित हैं। कलकत्ते के सार्वजनिक और साहित्यिक जीवन में भी कम लोकप्रिय नहीं। जहाँ साहित्य-सम्बन्धी चर्चा चली कि कन्हैयालाल सेठिया का नाम आ गया।

बड़े मिलनसार और भावुक। ऐसा लगता है जैसे भगवान ने इन्हें हाड़-मांस से नहीं बनाया, भावुकता से इनका सृजन हुआ है। मित्र इन्होंने कम बनाए, मगर जिसे बनाया सदाके लिए बना लिया और उसके समस्त दुख–सुख के साथी हो गए। खाँड़-सा मीठा स्नेह पाकर हृदय तृप्त हो जाता है। कभी-कभी तो लगता है जैसे इनकी पलकों के पीछे कोई सपना तैर रहा है।

इनकी कविताएँ निरन्तर सूक्ष्म से सूक्ष्म होती जा रही हैं। सूक्ष्मभाव और छोटी कविताएँ। इनकी कविताओं में दो विरोधी प्रवृत्तियों में सादृश्य ढूँढ़ने का सफल प्रयास है।

अन्तर है नीड़ और पिंजरे में
इतना ही कि
एक को बनाया है तुमने,
दूसरे को तुम्हारे लिए किसी और ने।
या—
याचना,
दान,
मात्र भंगिमाएँ हैं हथेली की !

कभी–कभी तो लगता है जैसे यह कविता नहीं, परिभाषा है, मगर जब अंतर में बात उतरती है तो उसकी कविता का रस छलक जाता है, ओतप्रोत कर देता है। उदाहरण के लिए –

खो जाता है
जहाँ पहुँचकर
पेड़
वह वन !

कन्हैयालाल का उग्र रूप से निस्पृह होकर सत्य की शोध करता है मगर सत्य का प्रखर तेज सहन भी नहीं हो पाता। उसे प्राणियों पर दया आती है। वह कहता है :

दर्पण में बिम्बित
छाया से लड़ते-लड़ते
हो गया है लहूलुहान
सत्य आँख मूँदे तो
आँख खुले !

प्रकृति का वर्णन :

बिछा हुआ है
सन्नाटे का कीमती कालीन
चुपचाप की की आँख से देख
इसकी वेहतरीन खूबसूरती ।

'मर्म' नामक कविता-संग्रह में तो और भी अधिक गहराइयाँ हैं, जैसे बिजली चमकी और भावों का उजाला तिर गया । उदाहरण के लिए :

आज के साथ गत कल
यमुना पर ताजमहल ।
खिड़की पर परदा
दुविधा ही सुविधा ।
मूल
फूल को पूछता रहा—
ऊपर कुछ पता चला ?
फ़ूल
मूल को पूछता रहा—
नीचे कुछ सुराग मिला ?
सूरज
चिरागों का सपन
सितारों का कफन ।

कविताएँ जितनी छोटी उतनी ही अधिक गहराइयाँ । मन में एक टीस उठती है कि इस कवि का जितना सम्मान होना चाहिए, उतना नहीं हो पाया। उनकी एक राजस्थानी कविता देकर इस लेख को समाप्त करता हूं, क्योंकि कन्हैयालाल के बारे में जितना भी लिखा जाए वह कम ही रहेगा ।

बगत बावै
अन्धेरे रै मैंसे स्यूं
चाँद री बीजै हल,
आभै रै खेत में
तारां रा बीज
जणां निपजै
दिन री सोनल फसल ?

२१, राधाकृष्ण लेन, रांची

सूक्ति-सुधा

बालार्को यज्ञधूमश्च
बाला स्त्री निर्झरोदकम् ।
आयुष्यवर्धकम् नित्यं
रात्रौ क्षीरान्न भोजनम् ॥

[प्रातःकालीन सूर्य, यज्ञ का धूम, तरुण स्त्री, झरने का जल एवं रात्रि के समय दूध से युक्त अन्न (क्षीरान्न) का भोजन, ये सभी निरन्तर आयुष्य-वर्धक माने गए हैं ।]

उद्योगः कलहः कण्डू—
र्द्यूतं मद्यं परस्त्रियः ।
आहारो मैथुनं निद्रा
सेवनात्तु विवर्धते ॥

[उद्योग, कलह (झगड़ा), खाज (खुजलाना), द्यूतक्रीड़ा (जुआ खेलना), मदिरापान, परस्त्री संभोग आहार, मैथुन एवं निद्रा ये सेवन करने से अधिक बढ़ते हैं ।]

आकारैरिङ्गितैर्गत्या
चेष्टया भाषितेन च ।
नेत्रवक्त्रविकारैश्च
गृह्यतेऽन्तर्गतं मनः ॥

[आकार, संकेत, गति, चेष्टा, कथन एवं नेत्र तथा मुख की विकृति से मनुष्य के आन्तरिक मन का ज्ञान हो जाता है ।]

कर्मठता

डा० रामचरण महेन्द्र
एम०ए०, पी-एच०डी०

[इस लेख के लेखक एक कुशल विचारक और सुप्रतिष्ठित साहित्यकार हैं। प्रस्तुत लेख में 'कर्मठता' को अनेक कोणों से देखकर उसकी महत्ता प्रतिपादित की गई है, जो बड़ी प्रेरक है — सम्पादक]

आधुनिक मनोविश्लेषण करने वाले विद्वान् इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि जीवन और समाज से अलग हटकर वैराग्य-धारण करना अभय का कारण नहीं हो सकता। वैराग्य धारण कर हतोत्साह या अकर्मण्य बन जाना, कर्त्तव्य पालन न करना या जीवन के शेष बहुमूल्य क्षण बेकार धूनी रमाकर आलस्य में बरबाद करना परेशानियों से भागना है। कायर और बुजदिल लोग भयभीत होकर कठोर कर्त्तव्य से पलायन करते हैं। अपने आपको वैरागी कहकर गर्व का अनुभव करनेवाले वे कायर लोग हैं, जो आधुनिक जीवन के कटु यथार्थ का सामना नहीं कर पाते और नाना प्रकार की काल्पनिक आशंकाओं से ग्रसित हो जाते हैं। भय से उत्पन्न हीनत्व की दुर्बल भावना उन्हें पारिवारिक जिम्मेदारियों और उन्नतिशील कार्यों से रोक देती है। जो व्यक्ति समाज तथा परिवार के कर्त्तव्यों, उत्तरदायित्वों और जीवन की कठिनाइयों से जितना भागता रहेगा, वह भय की कुत्सित भावना से उतना ही अधिक त्रस्त रहेगा।

जीवन-रण :

सामान्य अर्थों में लोग वैरागी, साधु, फकीर बनकर परिवार और जीवन की जिम्मेदारियों से दूर हटना चाहते हैं। भगवा वस्त्र पहने भभूत लगाये संन्यासियों का स्वाँग करनेवाले प्रायः वे ही कायर होते हैं, जो निरट गंवार, अशिक्षित, मूर्ख, अपढ़, बेकार या अपराधी वृत्ति के लोग हैं। जो जीवन में कुछ महत्त्वपूर्ण काम न कर सके या जिनकी महत्त्वाकांक्षाएँ पूर्ण करने का कोई उपयोगी मार्ग न मिला, जो हर तरह अपने आपको कायर और असमर्थ पाते हैं। कविवर 'दिनकर' के शब्दों में—

"जनाकीर्ण जग से व्याकुल हो,
निकल भागना वन में।
धर्मराज है घोर पराजय,
नर की जीवनरण में॥"

महाभारत के युद्धस्थल में जब अर्जुन भयभीत होकर क्षत्रिय के कठोर कर्त्तव्य से विमुख होने लगे, तब भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में कर्मयोग का स्मरण कराया था और अपने नैतिक दायित्वों को पूर्ण करते चलने के लिए प्रेरित कर समाज और संसार से संयुक्त रहने का उपदेश दिया था। उनकी दृष्टि में वैराग्य मानव-जीवन का वास्तविक लक्ष्य नहीं हो सकता, क्योंकि उससे समाज को कोई लाभ नहीं है। जो व्यक्ति स्वयं अपना ही भला सोचे वह घोर खुदगर्ज है, सामाजिक दायित्वों को पूरा न

करनेवाला समाज पर भार है। हम सब समाज से बहुत कुछ ग्रहण करते हैं, आज हम जो कुछ भी हैं, वह समाज के ही फलस्वरूप हैं, समाज में रहकर अनेक सुख–सुविधाओं का उपयोग करते रहते हैं, तो प्रतिपादन के रूप में हमें जितना बन पड़े किसी न किसी रूप में अंतिम समय तक समाज की सेवा भी करते रहनी चाहिए।

वैराग्य समाज के परम्परागत ढाँचे को बिगाड़कर सामाजिक उपयोगिता को नष्ट करनेवाला तत्त्व है। ईश्वर के अवतार के रूप में समाहृत महापुरुषों ने जीवन के उत्तरदायित्वों, सामाजिक कर्त्तव्यों तथा राष्ट्रनिर्माण के संकल्पोंके लिए अपने समग्र जीवन को लगा दिया था। मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम और लोकनायक श्रीकृष्ण का जीवन प्रवृत्तिमूलक धर्म और सामाजिक उत्तरदायित्वों को पालन कर कठोरतम कर्मों द्वारा सामाजिक आदर्श का जीवन है। महाकवि 'दिनकर' ये बहुमूल्य हमारे मार्गदर्शक हो सकते हैं —

जीवन उनका नहीं, युधिष्ठिर ! जो उससे डरते हैं।
वह उनका, जो चरण रोप, निर्भय होकर लड़ते हैं।

अधिकतर लोगोंके लिए तो वैराग्य धारण करना मानव की अकर्मण्यता एवं हीनता का ही प्रतीक है। बहुत कम व्यक्ति मन और इन्द्रियों को नियंत्रित कर पाते हैं। सच्चे वैराग्य का अर्थ तो मनके क्षुद्र विकारों और दूषित भावनाओं, विषय वासनाओं का परित्याग कर कर्त्तव्यों को पूर्ण करना है समाज की जिम्मेदारियों या परेशानियों से भागना नहीं। मन का संयम ही सच्चा वैराग्य है।

कर्मयोगी : मानवजीवन चिरन्तन उन्नति, समाज-सेवा, अनवरत कर्मों मनोविकारों से संघर्ष द्वारा अपने परिवार एवं समाज के उत्थानके लिए कर्म करने का कल्याण करने का मार्ग है। समाज और संसार की उन्नति ऐसे ही साहसी कर्ममार्गियों द्वारा हुई है। दुनिया ऐसे ही कर्मण्य- पुरुषार्थियों से आगे उन्नति कर सकी है। राष्ट्रकवि 'दिनकर' के महाकाव्य 'कुरुक्षेत्र' में भीष्मपितामह ने मानवधर्म का कितना अनुकरणीय उपदेश दिया है :—

मही नहीं जीवित है, मिट्टी से डरने वालों से।
जीवित है वह उसे फूंक सोना करने वालों से।
ज्वलित देख पंचाग्नि जगत् से निकल भागता योगी।
धुनी बनाकर उसे तापता अनासक्त रसभोगी॥

व्यक्ति का ही जीवन नहीं, सम्पूर्ण विश्व भी वैरागियों या हिप्पियों से नहीं, कर्मयोगियों से ही उन्नतिशील और प्रगतिशील है। सभ्यता को आगे बढ़ानेवाला एवं आधुनिक युग का प्रगतिशील विज्ञान, जिससे हमारा जीवन सुख–साधनों से सम्पन्न हुआ है, उन महान् वैज्ञानिकों के अनन्त कर्मफल की ही बदौलत है जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन मानव-सेवा को अर्पित कर दिया। वैरागियों तथा जंगल में जीनेवाले महात्माओं की आधुनिक समाज को कोई देन इस व्यावहारिक जीवन में नहीं है। आज के वैज्ञानिक युग में, जहाँ गतिशील जीवन की प्रतियोगिता पग-पग पर है, वैराग्य की कल्पना मात्र एक घातक विष की तरह व्यर्थ है :—

धर्मराज, संन्यास खोजना, कायरता है मन की।
है सच्चा मनुजत्व ग्रंथियाँ सुलझाना जीवन की॥

यह जीवन कर्मण्य–क्षेत्र की युद्धभूमि है। मनुष्य का हर क्षण, हर घण्टा, हर दिन, हर माह कर्मक्षेत्र से भागकर नहीं, उत्तरदायित्व पूर्ण करने से ही सार्थक होता है। "दिनकर" के शब्दों में :—

कर्मभूमि है निखिल महीतल,
जब तक नर की काया।
तब तक है जीवन के अणु–अणु,
में कर्त्तव्य समाया॥

धर्मराज, कर्मठ मनुष्य का,
पथ–संन्यास नहीं है।

नर जिसपर चलता वह –
मिट्टी है, आकाश नहीं है ।।

यह निवृत्ति है ग्लानि, पलायन
का यह कुत्सित क्रम है;
निःश्रेयस यह श्रमित, पराजित,
विजित बुद्धि का भ्रम है ।।

जीवन के अन्त तक समाजके लिए कुछ न कुछ उपयोगी सेवा–कार्य करना चाहिए । वृद्धावस्था में शरीर से जितना बन पड़े सत्कर्मों में योगदान देना धर्म है । हमारे समाज में हर प्रकार के कार्य करने वालों की आवश्यकता है । छोटे बड़ोंके लिए अवस्था, शक्ति मनोवृत्ति के अनुसार पृथक कार्यक्षेत्र सदा ही खुले हैं । सेवा के किसी भी क्षेत्र के साथ वृद्धजीवन को जोड़ा जा सकता है । मानव–जीवन कर्मक्षेत्र है। ("कर्मक्षेत्रं ही मानुष्यम्"––महाभारत)

◆

बिड़ला कॉलेज
भवानीमंडी (राजस्थान)

परेशानी

एक सेल्समैन ने बहुत सा-धन खो दिया । उसका मालिक बहुत नाराज हुआ । मालिक ने यह परेशानी अपने दोस्तों को बताई । एक दोस्त ने सलाह दी, "तुम उसे अपने पास ही रखो और उसके वेतन में से पैसा काटते रहो ।"

मालिक : मगर रकम इतनी बड़ी है कि उस के वेतन से पूरी नहीं हो सकती ।

"तो फिर तुम उसके वेतन में वृद्धि क्यों नहीं कर देते ?" दूसरे दोस्त ने कहा ।

लघु कथा

ढलाव

प्रीतपाल विरात

बरसों पुरानी बात है ।

धर्मपुर गाँव में सूखा पड़ गया । घास तक का कहीं पता नहीं था । दीनू उस गाँव का सबसे परिश्रमी किसान था । पानी नहीं बरसा । फिर भी वह अपने बैल-हल लेकर रोज खेतों पर जाता ।

बादल दीनू को रोजाना सूखे खेतों में हल चलाते देखते और आश्चर्य करते ।

एक दिन बादलों ने दीनू से पूछ ही लिया – "हम बरस तो रहे नहीं । फिर बेकार मेहनत क्यों करते हो ?"

दीनू ने जवाब दिया – "इसलिए कि कहीं मैं हल चलाना ही न भूल जाऊँ ।"

दीनू का जवाब सुनकर बादलों को लगा कि कहीं वे भी बरसना न भूल जाएँ ।

और वे बरसने लगे । खूब बारिश हुई ।

चार साल बाद गाँव में मुखिए का चुनाव हुआ । दीनू का परिश्रमी स्वभाव देखकर गाँव वालों ने उसे ही मुखिया चुन लिया ।

गाँव में फिर सूखा पड़ गया । क्योंकि परिश्रमी दीनू का मुँह कुरसी की ओर पीठ खेत की ओर हो गई ।

पुरालेख विभाग,
बीकानेर (राजस्थान)

उसे प्यार सब करते हैं !

'अशोक'
एम०ए०

१

जो मेहनत से जी न चुराता !
सदा काम में ध्यान लगाता ।।
जो मीठी बातें है करता ।
जो संकट से कभी न डरता ।।
उसे प्यार सब करते हैं !

२

जो न क्रोध करता है मन में !
साहस, शक्ति भरी है तन में ।।
जिसका हृदय दया का सागर ।
जो सबका दुःख लेता है हर ।।
उसे प्यार सब करते हैं !

३

जो झूठी बातों से डरता !
चाहे जो हो, सच ही कहता ।।
जो न गर्व की बातें करता !
जो हिंसा से मन में डरता ।।
उसे प्यार सब करते हैं !

४

जिसका जीवन बड़ा सरल है !
जिसमें नहीं कपट या छल है ।।
जो पढ़-लिखकर नाम कमाता !
जो कि देश का मान बढ़ाता ।।
उसे प्यार सब करते हैं !

५

जो संकट में भी मुस्काता !
जो बाधाओं से भिड़ जाता ।।
एक बार आगे बढ़ जाता !
कभी पैर पीछे न हटाता ।।
उसे प्यार सब करते हैं !

६

गिरे हुओं को सदा उठाता !
दीन-दुखी को गले लगाता ।।
'नहीं असम्भव कुछ भी जग में' !
यही समझता है जो मन में ।।
उसे प्यार सब करते हैं !!

— 'केदार-भवन',
मेडिकल कालेज चौकी,
पोस्ट – अजनी,
नागपुर-३ (महाराष्ट्र)

विचार–परक

राजस्थान के मदमाते लोकगीत

श्री बद्रीप्रसाद पुरोहित
विशारद

[श्री पुरोहितजी हिन्दी और राजस्थानी के अच्छे ज्ञाता और लेखक हैं। आप पत्र–पत्रिकाओं में लिखते रहते हैं।

राजस्थानी लोकगीतों में हृदय की जो झनकार सुनाई देती है, वह साहित्य की मूल्यवान निधि है और साहित्य–रसिकों की उत्प्रेरिका है। उसकी कुछ झाँकियाँ प्रस्तुत लेख में प्राप्त कीजिए। — सम्पादक]

राजस्थान के लोकगीतों का यहाँ के जन–जीवन में विशेष महत्त्व है। जीवन के अनेकानेक अवसरों पर नारी के कोमल कण्ठों ने अपने भावों और भावनाओं की अभिव्यक्ति गीतों में गाकर ही की है। लोकगीतों में नारी–हृदय की विशालता हम पग-पग पर पाएँगे। राजस्थानी नारी इन्हीं गीतों के सहारे विचरती है और जीवन के कार्य-क्षेत्र में सुख–दुःख गा उठती है। लोकगीत लोक–जीवन का चित्र है। पँरी के कथनानुसार लोकगीत आदि मानव का उल्लासमय संगीत है।

वर्षा ॠतु राजस्थान प्रदेश की मनोरम ॠतु है; परन्तु राजस्थानके लिए इसका जो महत्त्व है वह बहुरंगी है। वर्षा ॠतु यहाँ के लोगों की जीवन दायिनी है। गरमी और वर्षा ये दो ॠतुएँ ही राजस्थान की संस्कृति और त्योहारों में अपना विशेष महत्त्व रखती हैं।

भयंकर गरमी के तेज से तपे हुए रेत के टीबों की वर्षा होने पर ही प्यास बुझती है। सावन के सुहावने रंगीले दिन वर्षा की रिमझिम बूंदों से जगह-जगह हरियाली दिखाई पड़ती है। राजस्थान की धरती हरी साड़ी में सजी होती है। नदियों-नालों में मेढकों की टरटराहट की ध्वनि कानों में गूंजती है। मोर वर्षा को देखकर मदमस्त होकर मैं मेंऽऽऽ ओं! मैं ऽऽऽ ओं!! कर नाचने लगते हैं। कोयल अपने मीठे स्वर में कुहू-कुहू करने लगती है। प्यारा पपीहा पी–कहाँ! पी–कहाँ!! की रट करने लगता है। मरुधर की धरती हरियाली होने से ज्यादा सुहावनी लगती है।

अभिलाषा :

ऐसे रंगीले सावन-भादों में राजस्थान के नर-नारी हर्षित होते हैं, आनन्द मनाते हैं। वर्षा अपनी सौन्दर्य और हरियाली से सारी धरती को रंग-बिरंगे साज में सजा देती है। अभागे राजस्थान के निवासी व्यापार के लिए घर-बार छोड़कर बंगाल-आसाम में प्रवासी के रूप में कष्टों का सामना करते हुए वहाँ रहते हैं। वहाँ अपनी कार्य-कुशलता, वैश्य नीति से हजारों रुपए व्यापार में कमाते हैं। जब वर्षों वाद लौटकर अपने देश आते हैं। राजस्थानी

संस्कृति में विदेश-गमन चाकरी के लिए समझा जाता है। राजस्थानी नारी का जीवन–साथी प्राणनाथ अकेली छोड़कर व्यापार हेतु परदेश की तरफ चला जाता है। उसकी नव विवाहिता स्त्री यौवन के उस बसन्तकाल में दुःखी हो जाती है, पति के वियोग में दुःखित प्रेमानुभूति में प्रियतमा के बिछोह की करुण वेदना को गीतों में गाकर मन बहलाती है। विरह की लम्बी रातों के भय से पत्नी का हृदय काँप रहा है। वह कह रही है – नौकरी पास ही करो? जिससे हे मेरे स्वामी! शाम होते ही घर आ जाओ। हर नारी की यही अभिलाषा रहती है—

नेड़ी तो नेड़ी करजो पिया चाकरी जी ।
सांझ पड्या घर आय घोरीरा बलियाजी ।।

दूर चाकरी पर जाने वाले पति से पत्नी कहती है – यहाँ पास ही में चाकरी कर लो, साँझ होते ही घर आ जाया करो। नारी के कोमल हृदय की वेदना भरी दशा दरसती है—

बाय चढया था भवरजी गोरड़ी
हाँजी ढोला हो गइ घेर घुमैर
विलसण री सत चाल्या चाकरीजी!
म्हारी लाल नणदल रा बीर
मत ना सिधारो पूर्व री चाकरीजी ।

हे प्रियतम आप विवाह के पश्चात् जिस नई दुल्हन को छोड़ गए थे, उसका यौवन पूर्ण रूप से विकसित हो चुका हैं। यही तो वेला है बैठने की विलसने की। इस समय तुम चाकरी कर रहे हो। बादलों पर बिजलियों की चहल–पहल हो रही है। प्रिय के वियोग में उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता हैं —

उजड़यो फेर बसे,
निरधन के धन होय ।
गयोड़ो जोबन ना बावड़े,
जाणे जो चत्तर होय ।

हे प्रियतम! उजड़ा हुआ नगर आबाद हो सकता है लेकिन यौवन के एक बार व्यतीत हो जाने पर फिर से उसमें बहार आना सम्भव नहीं है। यह चतुर नर ही जानते हैं। हे हिवड़े के हार, सावन मास लग गया है। आप चाकरी छोड़कर घर आओ। यह ऋतु आने की हैं, मेरे घर की शोभा प्रियतम! अब घर आ जाओ।

बिजलियां हलचल हुई
आभा किया बणाव ?
घर मंडण घर आवियो,
घर मंडण घर आव ।

बिजलियों में खलबली मच रही है। नीले आकाश ने शोभा का श्रृंगार किया है। धरा का स्वामी इन्द्र तो उसके पास आ गया है। मेरे घर की शोभा साजन अब तुम घर आ जाओ।

बादल में चमके ढोला बिजलीजी
में'ता डरपै घर की नार
अब घर आय जावो
बिरखा लूब रही जी ।

बादलों में बिजली चमक रही है, महलों में आकी सेजों की श्रृंगार अकेली गौरी (प्रिय) डर रही है, बिजली आकाश में निर्लज्ज होकर गर्जना कर रही है, पर मेघ तुम तो जरा शर्म करो, मेरे पति यहाँ नहीं है, मैं सूनी सेज पर हूं जरा धीरे गर्जना करो —

बिजलिया निर्लज्ज हुयो
मेहां थूं तो लज्ज ।
सूनी सेज थेवना प्रिय
मधरो मधरो गज्ज ।

प्रियतम की प्रतीक्षा में दिन महीनों की तरह व्यतीत हो रहे हैं; उँगलियों की रेखाएँ वादे की गिनती में घिस गई हैं। पर हे साजन तुम अब तक नहीं आए। पत्नी को प्रियतम की याद में नींद

नहीं आ रही है-। रात-दिन बेचैनी रहती है । परदेशी प्रियतम की प्रतीक्षा करती है :—

सावण आवण कह गया
कर गया कोल अनेक ।
गिणता गिणता घिस गई
म्हारी आंगलियोरी रेख ।

सावन के महीने में आ जाने के अनेक वादे किए । दिन गिनते-गिनते मेरी उँगलियों की रेखाएँ घिस गई है । पर प्रियतम, तुम्हारे दर्शन नहीं हो रहे हैं ।

सावन की तीज राजस्थानी संस्कृति में नारियों का मुख्य त्योहार है । तीज के दिन सारे राजस्थान के शहरों और गांवों में मेला लगता है । जिनमें महिलाओं की उपस्थिति अधिक होती है । घरों में और पेड़ों की डालियों पर झूले माड़े जाते हैं। जिस स्त्री का पति घर पर होता है, वह बड़ी खुशी में झूमती है । परदेश गये प्रियतम को विरहिणी संदेश भेजती है । उसको पत्र-वाहक न मिला तो पक्षियों का संहारा लेती है । अपने पति को सम्बोधित करती हुई कहती है । हे प्राणनाथ, तीज का त्योहार मत चूकना, अन्यथा उसका अर्थ कुछ और ही होगा—

जे ढोला ना आवियो,
काजलियां री तीज ।
चमक मरेली मरवण,
देख खिवतां बीज ।

हे प्राणप्रिय ! तुम काजली तीज (भादों की पहली तीज) तक मेरे पास नहीं आए तो मैं बिजली की चमक से मर जाऊंगी । एक दिन उसके सौभाग्य का दिन चमक उठता है । संयम और धीरज की जीत होती है । दुःख के बाद सुख, पतझड़ के बाद वसन्त, वियोग के पश्चात् संयोग प्रकृति का विधान हैं । नारी की मुराद पूरी होती है । प्रियतम नणदल बाई का वीर घर आता है :—

प्रीतम आया आज घर,
जिवड़ो रह्यो लुभाय ।
सूरज थे जल्दी छिपो,
पल-पल बरस लखाय ।

काफी वर्षों के बाद प्रवासी प्रियतम घर आ गए । हृदय हास-उल्लास से गद्‌गद हो उठा । लेकिन विरहिणी ? प्रवृत्ति की हरियाली बिजलियों की खलबली आभे में मेघों की घनघोर घटाओं को देखकर विरहिणी जल उठती है । इसी तीज के अवसर पर सभी सखी-सहेलियाँ झूला झूलती हैं और आनन्द में विभोर होती हैं; लेकिन जिसका प्रियतम घर नहीं वह बड़ी दुःखी है । उसको रह-रहकर पिछली तीज का स्मरण हो आता है । जिस दिन उसके हिवड़े का हार घर पर था। इन लोक-गीतों में नारी ने कल्पना-लोक में विचर कर दाम्पत्य जीवन गाया है, वियोग के महीने गाए हैं, विरह—वेदना गाई हैं—

म्हांरा सांवलियां सिरदार,
थां री ओलयूं आवै जी ।
सावन सुरंगो आय ग्योजी,
आयी-नुवेली – तीज,
घर धोरी पीव मालवेजी,
किस विध धारूं धीज,
बादीला ओलयूं आवैजी ।

—साले की होली
बीकानेर (राजस्थान)

महत्त्वाकांक्षा

महत्त्वाकांक्षी बनो और उसको कोई सीमा न होने दो । अकर्मण्यता के जीवन से जीवन और यशस्वी मृत्यु अधिक अच्छी है ।

—सर सी० वी० रमन

तीन मोर्चे

श्री रंगनाथ दिवाकर

एम० ए०

[श्री दिवाकरजी एक उच्च कोटि के लेखक, वक्ता और विचारक हैं। प्रस्तुत लेख में आधुनिक भारत की मुख्यतः तीन समस्याओं-राष्ट्रीय एकता, भारतीय संस्कृति, लोकतांत्रिक दायित्व का निर्देश किया गया है। हम कहाँ हैं और हमारा गन्तव्य कहाँ है, इसपर भी लेख में विचार किया गया है, जो पठनीय है। — सम्पादक]

सावधान शब्द से कुछ धार्मिकता अथवा यों कहें कि आध्यात्मिकता ध्वनित होती है। सावधान का शाब्दिक अर्थ है अपने पर ही निगरानी रखना—पर एक पवित्र निष्ठा के साथ। यह एक तरह की चेतावनी है कि हम अपने पवित्र कर्त्तव्यों को करने में किसी प्रकार की कमी या खोट न रखें। हमारे इतिहास में ऐसी सावधानी का उदाहरण हम शिवाजी के जमाने में (सत्तरहवीं शताब्दी) में देख सकते हैं, जबकि उनके आध्यात्मिक गुरु रामदास ने अपने सभी निकटस्थ शिष्योंके लिए तीन पवित्र कर्त्तव्यों का निर्देश दिया : भगवान् का सतत् भजन करो, देश की राजनीति के प्रति सजग रहो तथा अन्य सभी सामाजिक-धार्मिक कर्त्तव्यों के प्रति सावधान रहो। स्वामी रामदास के पास लगभग पन्द्रह सौ प्रशिक्षित महन्त थे, जो सभी दूर फैलकर गुरु के निर्देशों का पूरी-पूरी तरह पालन करते थे। वे न केवल सावधान थे, बल्कि अन्य सक्रिय कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित कर उन्हें गुरु की शिक्षा के अनुरूप कार्य करनेके लिए प्रेरित भी करते रहे।

दुर्बलताएँ :

पिछले तीन हजार वर्षों के इतिहास को ही यदि हम देखें तो कई तरह की विपत्तियाँ इस देश पर आई हैं, इसके बावजूद भी भारत एक जीवन्त देश के रूप में विद्यमान है। यह अपने आप में इस बात का प्रमाण बन गया है कि हमारी संस्कृति बहुत अधिक लचीली रही है। इसके दो ताजे प्रमाण तो हमारे निकट के इतिहास में ही देखे जा सकते हैं – १९४७ में इस देश ने अहिंसा के एक अनोखे तरीके से ब्रिटिश साम्राज्य की गुलामी से अपने को मुक्त किया और १९७७ में लोकतान्त्रिक जीवन-पद्धति में अपनी निष्ठा पुनः व्यक्त करनेके लिए मतपत्रों द्वारा क्रांति की। हालांकि ये उदाहरण लचीलेपन और सावधानी के हैं, परन्तु ये सतत विकास और रचनात्मक क्षमता के उदाहरण नहीं माने जा सकते, जिनकी वजह से आज की दुनिया में सफलतापूर्वक अपनी सत्ता व्यक्त की जा सके। भारत ने संगठनात्मक मोर्चे पर तथा अपने द्वारा गठित संवैधानिक व्यवस्थाओं में कई बार अपनी कमजोरियों को प्रकट किया है। इसी बात की ओर स्वामी विवेकानन्द ने दुःखी होकर इंगित किया है कि व्यक्तिवाद और ईर्ष्या हमारी सामाजिक व्यवस्था के नाश के प्रमुख कारण रहे हैं।

अपनी ओर :

अब हम देखें कि वे कौन से मोर्चे हैं जिनपर कि हमें तत्काल सावधानी बरतनी चाहिए। राष्ट्रीय एकता बहुत ही महत्त्वपूर्ण मोर्चों में से एक मोर्चा है । हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के रूप में हमारे देश को विभाजित करने वाला "शाक ट्रीटमेण्ट" भी हमें अभी तक यह सीख नहीं दे पाया है कि भारतीय संघ का एक राष्ट्र के रूप में अपना महत्त्व है और पूरे भारत महाद्वीप के केन्द्रीय प्रशासन के रूप में अनुशासन होने से हमारी एक महान राजनैतिक हैसियत बनती है । हममें से जिनमें भी थोड़ी ऐतिहासिक और राजनैतिक समझ है वे आसानी से इस बात को हृदयंगम कर सकते हैं कि यदि हमारी राष्ट्रीय एकता टूटती है, तो हमारा देश भी यूरोप के छोटे-छोटे मुल्कों की भाँति टुकड़े-टुकड़े में बँट जाएगा और फिर जैसा कि यूरोप के पिछले सैकड़ों वर्ष के इतिहास से स्पष्ट है कि हम भी यूरोपीय देशों जैसे छोटे-छोटे राष्ट्रों की ईर्ष्यालु प्रवृत्तियों के साथ एक दूसरे से सदैव लड़ते-झगड़ते रहेंगे ।

आठवीं शताब्दी में भी हमारे यहाँ राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता महसूस हुई थी । शंकराचार्य ने भारतीय सांस्कृतिक एकता को अक्षुण्ण बनाये रखनेके लिए देश के चारों भागों में चार धार्मिक मठ स्थापित किए । इसके विपरीत उस समय के राजा और राजकुमार एक दूसरे का गला काटने की साजिश करते रहे थे और साथ ही अपने पड़ोसी राज्यों को लूटने में लगे हुए थे । भाग्य से आज हम ब्रिटिश हुकूमत की वजह से एक राष्ट्र के रूप में संगठित हैं । हालाँकि इसके लिए हमें बड़ी कीमत चुकानी पड़ी, पर आज हम एक सार्वभौम राष्ट्र हैं, जो राष्ट्रीयता हमने ब्रिटिश साम्राज्य से एकजुट होकर लड़ने के कारण प्राप्त की है उसे अब हमारी आकांक्षाओं के अनुरूप नए भारत की पुनर्रचना करते समय नहीं खोना चाहिए । यदि हमारी एकता टूटी तो सर्वनाश हो जाएगा । फिर भी हम देख रहे हैं कि कुछ लोग भाषा-विवाद को लेकर प्रदेश की सीमाओंके लिए झगड रहे हैं । दक्षिणी राज्य के एक मुख्यमन्त्री तो दक्षिण के राज्यों की एक अलग राजनैतिक व्यवस्था की ही बात कर रहे हैं। द्रविड़स्तान का अस्थिपंजर अभी भी मद्रास के तहखाने में पड़ा हुआ है !! हम दक्षिण के लोग अभी भी भयभीत हैं कि यदि हिन्दी को सम्पर्क भाषा बनाया गया, तो हिन्दीभाषियों का प्रभुत्व दक्षिण के लोगों को स्वीकार करना पड़ेगा । हम दक्षिण के लोग जो अंग्रेजों को अंग्रेजी जैसी भाषा सीखकर उनकी भाषा में ही पछाड़ चुके हैं । हम दक्षिण के लोग, जिन्होंने हिन्दीभाषियों को वेद और उपनिषदों की हमारे आचार्यों द्वारा तैयार की हुई टीकाओं को माननेके लिए प्रवृत्त कर चुके हैं, हम दक्षिण के लोग जिन्होंने उत्तर और पूर्व के लोगों को आध्यात्मिकता की ऊँचाइयों को छूने का सरलतम तरीका भक्तिमार्ग बताया, आज हिन्दी भाषा से डर रहे हैं !! मैं इस बात को और ज्यादा नहीं खींचना चाहता । एक सार्वभौम संगठित राष्ट्र के रूप में रहकर ही भारत उन विदेशी आक्रमणकारी शक्तियों से लड़ सकता है, जो कि आज दूसरे देशों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करके एक देश से दूसरे देश को लड़ाने की साजिश कर रही हैं। आफ्रिका, दक्षिणी अमेरिका और एशिया के कई मुल्कों में उनके खतरनाक खेल चल रहे हैं । उनसे मुकाबला लेनेके लिए संगठित भारत ही सक्षम हो सकता है ।

सावधान रहनेके लिए जो दूसरा मोर्चा है, वह है हमारी समग्र भारतीय संस्कृति — वह भारतीय संस्कृति, जिसका उत्स अतीत के रहस्यमय कुहरे में ढूंढ़ना होगा, जहाँ कि वेदों का धार्मिक-आध्यात्मिक समवेत साम-संगीत गूँजता था— ऋषियों की अन्तर्दृष्टि पगी उच्च स्वरों में वाणी गूँजती हुई मनुष्य के मन के शून्य को प्रकाश, प्रज्ञा और प्राण के समन्वित राग को प्रतिध्वनित करती थी । वह

संगीत विलम्बित रूप में ही सही, परन्तु अभी तक गूंजता रहा है। नए-नए तानों के साथ, निकट अतीत में ही राजा राममोहन राय के दिनों तक वह ऋषिवाणी हमारे देश के वातावरण को आलोड़ित करती रही है और क्या निरक्षर रामकृष्ण के मुख से निसृत वचनामृत, विवेकानन्द की ओजस्वी वाणी से निकली प्रेरणास्पद हुंकार, टैगोर के सुनहरे स्वरों का संगीत, इकबाल की शायरी, मनुष्य की चेतना के अज्ञात क्षेत्रों में गहर गम्भीर आध्यात्मिक छलाँगें जो अरविन्द के योग ने लगाई हैं और गाँधी ने जो आत्मबल के चमत्कार को सत्य और अहिंसा के प्रयोग के रूप में करके दिखाया है, उस पुरातन वैदिक काल की चिदम्बरा प्रज्ञा की ही नवीन प्रकाश की किरणें नहीं हैं ? क्या यह नव जागरण पुराने सांस्कृतिक धरोहर का प्रतिफल नहीं है ? इस पीढ़ी के हम भारतीय लोगों को अपने पूर्वजों की थाती को सम्हालने का दायित्व है तथा सारी दुनिया के मनुष्य मात्र को उसमें हिस्सेदार बनाना है – 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना के अनुकूल।

तीसरा मोर्चा जो हमारे सामने सावधान रहने के लिए खुला हुआ है, वह है – सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक दायित्व का। हमें भारत में लोकतान्त्रिक जीवन-पद्धति को पुनर्जीवित करना है ऐसी लोकतान्त्रिक पद्धति जहाँ प्रत्येक कार्य में सहयोग और सहकार ही मूलभूत सिद्धान्त हैं। हमें साहसपूर्वक शताब्दियों के मानव – मानव के बीच संदियों से खड़े किए गए जातीयता के आवरण को तोड़कर तथा सामन्ती मनोवृत्ति के पुराने दुर्ग को ढहाकर नये समाज की रचना करना है। वास्तव में अभी बहुत सारे बुनियादी कार्यक्रम उठाने हैं चुनाव-पद्धति के प्रतिक्रियात्मक रवैये के कारण तथा जातीयता के आधार पर शुरू की गई कुछ सरकारी तुष्टिकरण की योजनाओं के कारण नई-नई समस्याएँ उठ खड़ी हुई हैं। इनका निदान सामाजिक, आर्थिक कार्यक्रमों को दृढ़तापूर्वक लागू करने से ही संभव है।

इस छोटे से लेख में मैंने भारतीय समाज के सामने जो बहुत से खतरे हैं, उनमें से कुछ मुख्य खतरों की ओर इंगित किया है। इन खतरों से बचनेके लिए हमें तत्काल सावधान तो होना ही है, परन्तु उनके प्रति रक्षात्मक मुकाबला भी लेना है और ऐसी कोशिश भी करनी है कि भारतवर्ष ने जैसी अतीत में सांस्कृतिक अगुवाई की, वैसे ही आधुनिककाल में भी वह नए मानव-समाज के महत्तर उद्देश्यों को प्राप्त करने में कर सके। ◆

सर्वोदय विचार प्रचार सेवा
१२८, तिलक-पथ, इन्दौर-४५२ ००४

* विवेक विकास *
[साहित्य-संस्कृति का स्तरीय मासिक]
सम्पादक : रामनिवास स्वामी
वार्षिक शुल्क १२ रुपए
सम्पर्क : केशरगढ़, जवाहरलाल मार्ग, जयपुर-४
सहसम्पर्क :
सलीम शेख स्थानीय प्रतिनिधि "विवेक-विकास"
५६-५, सोमाजी की चाली, चमनपुरा, अहमदाबाद-४

संगीत
[संगीत-कला का प्रतिनिधि सचित्र मासिक]
साधारण अंक का मूल्य २ रु.
वार्षिक मूल्य २४ रु.
नमूने का अंक २ रु. का डाक टिकट भेजकर प्राप्त करें।
—: प्राप्ति स्थान :—
संगीत कार्यालय (१२), हाथरस (उ. प्र.)

रंगायन
लोकसंस्कृति तथा लोककला का हिन्दी मासिक पत्र। वार्षिक मूल्य ७ रु.
सम्पादक : डा० महेन्द्र भानावत,
लोककला मण्डल, उदयपुर। *

गधे में भी विवेक है

डा० जान एच० मनस

[आज के विद्या और शिक्षा–प्रचार के युग में विवेक की बड़ी दुर्दशा हो रही है। उसे ढूँढ़नेके लिए चश्मे की जरूरत महसूस होने लगी है। विवेक ही मनुष्य को मनुष्य बनाता है, महान् बनाता है। देखिये, गधे का जीवन। —सम्पादक]

हम–आप जब किसी को कोई ऐसा काम करते हैं, जो तर्कसंगत न हो, तो उसे 'गधा' कह कर सम्बोधित करते हैं। उद्देश्य यह होता है कि, जैसे गधा मूर्ख होता है, वैसे ही तुम मूर्ख हो।

पर गधा सर्वथा मूर्ख ही नहीं होता। उसमें भी एक विवेक है और वह अनेक ऐसे काम करता है, जिससे सबक लिया जा सकता है।

पालतू शहरी गधे की बात नहीं की जा सकती, जिसे शहर के नल के दवा–मिले पानी को पिला–पिला कर आदमी किसी तरह अभ्यस्त बना देता है; पर प्रकृत्या चाहे गधा कितना भी प्यासा क्यों न हो, कभी गंदा पानी नहीं पीता। यदि पानी साफ नहीं है या पानी में कोई दवा या गंदगी मिली हो, वह पानी सूंघ कर हट जाएगा।

यूनान के क्रीट द्वीप पर किसान गधा लेकर साथ चलते थे। रास्ते में प्यास लगने पर यदि कोई चरस या छोटी नदी दिखती तो किसान पहले गधे को पानी पीनेके लिए ले जाते। यदि गधा पानी पी लेता, तो किसान भी पानी पी लेता वरन् दोनों प्यासे ही आगे बढ़ते।

थका होने पर गधा कभी भोजन नहीं करता। शाम को काम से जब उसका मालिक लेकर लौटता और उसकी काठी आदि उतारी जाती, गधा भूखा होने पर भी घास–चारे पर नहीं टूट पड़ता। वह कड़ी जमीन की तलाश करता है और उसपर खूब लोटता है। वह हवा में अपने पाँवों को चलाता है और गहरी साँसें लेता है। उसके बाद उठकर थोड़ी देर विश्राम करता है और तब चारे में मुँह लगाता है।

आप बताइए हममें कितने लोग ऐसे हैं जो काम से उत्तेजित और थके–माँदे लौटने पर भोजन से पूर्व आराम करते हैं, शिथिलन करते हैं? इस छोटी-सी बात पर ध्यान न देने का प्रतिफल ही अजीर्ण है।

मैं कड़ी भूमि पर गधे के लोटने को मेरुदंड को स्वतः ठीक करने का प्रयास तथा शिथिलन लाने वाला व्यायाम मानता हूं। प्रति दिन प्रातः तथा जब भी मैं थका होता हूं, मैं भूमि पर पीठ के बल लेटता हूं और हाथ तथा पाँवों में पहले तनाव लाता हूं और फिर शिथिलन। ऐसा मैं कई बार करता हूं। इसी के साथ ही मैं गहरी साँसें लेता

हूं। मैं अपनी टाँगों को भूमि से ४० या ४५ अंश का कोण बनाते हुए उठाता हूं और दोनों टाँगों को दूर-दूर करता हूं और निकट लाता हूं। इस व्यायाम से जंघे तथा पेट की मांसपेशियाँ सुदृढ़ होती हैं। ऐसा करने से व्यक्ति आँत उतरने के रोग से बचा भी रह सकता है और यदि उसे आँत उतरती हो तो वह ठीक भी हो सकती है। फिर मैं अपनी टाँगों को भूमि से समकोण बनाते सीधा ऊपर उठाता हूं और उसे सर की ओर ले जाकर पंजों से भूमि-स्पर्श करता हूं। बैठकर मैं अपने तलवे को हाथों से पकड़कर सर आगे ले जाकर अपने सिर से अपने पंजे को स्पर्श करता हूं। यदि तोंद निकली हो तो उसे पचकानेके लिए यह एक अत्युत्तम व्यायाम है। यह व्यायाम कब्ज-निवारक भी है खड़ा होने पर मैं अपने दोनों पैर बारी-बारी से चलाता हूं। फिर वही काम मैं अपनी भुजाओं से भी करता हूं। इस व्यायाम से शरीर में शिथिलन आती है और व्यक्ति को नव-शक्ति मिलती है।

अब भोजन की कुछ चर्चा करूँ। अभी कुछ दिन पहले मैं अपने एक मित्र से मिलने गया, जो एक रेस्त्राँ चलाते हैं। मुझे देखकर वे बहुत ही प्रसन्न हुए और कहा कि जो इच्छा हो उसे मँगाने का आदेश बेटर को दीजिए। उनके प्रश्न पर मजबूरन मुझे कहना पड़ा कि, "आपके रेस्त्राँ में मेरे खाने लायक होगा क्या?" और, जब मैंने उनसे बताया कि मैं शाकाहारी हूं, मात्र फल, सब्जी, सलाद आदि खाता हूं, तो वे चकित रह गए। उन्होंने पूछा—"इतने भोजन से आपका काम कैसे चलता है?" मैंने कहा— "देख लीजिए, मैं आपसे १० वर्ष बड़ा हूं और ज्यादा फुर्तीला तथा शक्तिशाली हूं।

◆

'आरोग्य' से साभार

यह शरीर है

* इसमें तीन सौ हड्डियाँ हैं, जो कुथित (मलिन) मज्जा से लथपथ हैं। सम्पूर्ण शरीर में तीन सौ सन्धियाँ हैं।
* इसमें नौ सौ स्नायु हैं, सात सौ शिराएँ हैं तथा पाँच सौ मांसपेशियाँ हैं।
* इसमें चार सौ शिराजाल हैं, रक्त से पूर्ण सोलह महाशिराएँ हैं, छह शिरामूल हैं, दो मांस-रज्जु हैं एक पीठ और एक पेट के आश्रित।
* इसपर सात त्वचाएँ हैं, सात कालेयक-मांसखण्ड हैं, और अस्सी लाख करोड़ रोम हैं।
* इसमें स्थित पक्वाशय और आमाशय में सोलह आँतें हैं, मनुष्य के शरीर में सात मलस्थान हैं।
* इसमें तीन थूणाएँ हैं—वात, पित्त, कफ; एक सौ सात मर्मस्थान हैं, तथा नौ व्रणमुख-मलद्वार हैं, जिनसे सदैव मल बहता रहता है।
* एक अंजुलिप्रमाण मस्तिष्क है, एक अंजुलिप्रमाण मेद है और एक अंजुलिप्रमाण वीर्य है।
* इसमें तीन अंजुलिप्रमाण बसा अर्थात् चर्बी है, छह अंजुलिप्रमाण पित्त है, इतना ही कफ है; खून आधे आठक या बत्तीस पल-प्रमाण है।
* इसमें मूत्र आठक प्रमाण है, विष्ठा छह प्रस्थप्रमाण है, तथा स्वाभाविक रूप में बीस नख और बत्तीस दाँत हैं।
* जैसे किसी घाव में कीड़े भरे रहते हैं वैसे ही यह बहुत से कीड़ों से भरा है। समस्त शरीर को पाँच वायु घेरे हुए हैं।

—भगवती आराधना-११०२१-३०

शीर्षासिनी चिन्तन

श्री श्यामसुन्दर सुल्लेरे
एम॰ ए॰

[श्री सुल्लेरेजी एक अध्ययनशील लेखक हैं। विविध विषयों पर विविध शैलियों में लिखते ही रहते हैं।

प्रस्तुत लेख में अनेक महापुरुषों की चिन्तन-प्रधान झाँकी कराई गई है, जो रोचक और प्रेरणाप्रद है। — सम्पादक]

बचपन में एक पुस्तक पढ़ी थी, जिसमें जीवन में सफलता पाने के गुण लिखे थे। उसी में एक शख्स के बारे में बताया गया था कि वह भिखारी से लखपति कैसे बना?

बचत :

किस्सा इस प्रकार था कि एक लड़का माँगता-खाता गुजर करता था और कभी-कभी घूरों से या रेल की पटरी के किनारे कोयले बीनकर एक दूकानदार को बेच दिया करता था। दूकानदार भला-मानस था। उसे उस लड़के की हालत पर तरस आता था।

एक दिन उसने लड़के को प्यार से पास बैठाकर खिलाया-पिलाया और कहा कि क्या इसी तरह जिन्दगी भर कोयला बीनकर दिन गुजारोगे?' लड़के ने जवाब दिया—"दूसरा चारा भी क्या है?"

दूकानदार ने कहा—'मेरी राय मानो, तो यह हालत बदल सकती है। लड़के को सचमुच अपनी बात पर चलने का इरादा रखनेवाला समझकर उसे सुझाव दिया कि तुम दिनभर जितना कमाओ उसका कुछ हिस्सा मेरे पास जमा करो। बाद में मैं तुम्हें दूसरी तरकीब बताऊँगा।

सो, उस लड़के ने इस गुर पर अमल शुरू कर दिया। बाद में दुकानदार ने उसकी बचत से उसकी अलग दुकान खुलवा दी। पर, उसने आमदनी का कुछ भाग बचाकर अलग रखने का सिलसिला जारी रखा और धीरे-धीरे कोयले का सबसे बड़ा दुकानदार, थोक व्यापारी और आखिर में कोयले की खान का मालिक बन गया।

जब से हमने यह किस्सा पढ़ा है, न जाने कितनों को यह गुर बता चुके हैं। हमें यह तो नहीं मालूम कि हमारे इस सुझाव पर किसीने अमल किया या नहीं, पर यह जरूर मालूम है कि हम खुद इस गुर पर अमल नहीं कर पाए और कमाई से ज्यादा खर्च कर कर्जदार ही बने रहे हैं।

अब तो हमने यह मान लिया है कि सफलता के गुर एक तरफ हैं और किस्मत का खेल दूसरी तरफ। किस्मत वाले ही ये गुर सफलता से अजमा पाते हैं।

किस्मत वालों को भगवान् छप्पर फाड़कर देता है, जिससे वे आनन-फानन में रंक से रईस बन जाते हैं। यह बात मुजफ्फरपुर की उस भिखारिन को देखकर साफ हो जाती है जो रेल-इंजन से फेंके गए कोयले बेचकर ऐसा गुर पा गई, जिससे लोगों के देखते-देखते लखपति बन गई।

वह औरत सड़कों पर भीख माँगकर गुजारा करती थी। एक दिन इंजन से फेंके गए कोयले बीनकर एक चाय वाले के पास पहुंची। चायवाले ने कोयला लेकर चाय पिला दी। उसे रास्ता सूझ गया और वह ज्यादा कोयले बीनकर चाय वालों को बेचने लगी और पैसे कमाने लगी।

धीरे-धीरे रेलवे का और सामान चोरी से बेचने लगी। इसी तरह उसने लाखों रुपए की सम्पत्ति बना ली। तिमंजिला मकान बनवाया, चार ट्रकें लीं और व्यापार भी शुरू कर दिया। यह सब उसने रेलवे की सम्पत्ति चुराकर बेचने वाले कर्मचारियों का दलाल बनकर किया।

बात गुर पर अमल करने की है। करोड़पति बनने वाले लड़के ने इस बात पर अमल किया, इस भिखारिन ने दूसरे ढंग से भले ही कोई एक को भला, दूसरे को बुरा कहे, परन्तु सफलता दोनों ने ही पाई।

साफ है, गुर पर अमल करना जरूरी है, जानना काफी नहीं, वरना दूसरों को सीख देने वाले गुरु हमारी तरह गुड़ ही रह जाते हैं और उनपर अमल करने वाले चेले चीनी बन जाते हैं।

सिनेमा की विशिष्ट सप्रेम भेंट

मामला उलझा हुआ है

कहते हैं कि एक दिन ईश्वरचन्द्र विद्यासागर दरवाजे से सिर्फ इसलिए टरका दिए गए कि वे बहुत मामूली कपड़े पहने थे। वह भारी-भरकम पोशाक लादकर पुनः वहाँ पहुंचे और कहा—"अगर दावत मेरी नहीं, कपड़ों की थी, तो भोजन का इन्हीं को अधिकार है।"

अंग्रेजी में एक कहावत है कि आदमी का व्यक्तित्व दरजी बनाता है।

हमारे एक दोस्त का एक आठ साल का बेटा कौमिक पढ़-पढ़कर अजब बरताव करने लगा है। सब्जी काटने का चाकू निकर की पेटी में खोंसे, कुरसी के टूटे हत्थे की पिस्तौल बनाये, एक हाथ कमर में रखे वह चीखता है—हैण्ड्स अप, ठाँय-ठाँय

आपने परकटी गलगलिया देखी हो, तो पड़ोसी की लड़की की बातों की तस्वीर आपकी समझ में आ जाएगी। वह कहती है—यही फैशन है, साधना ने चलाया है। साधना कौन है, यह मत पूछिएगा। हमने पूछा तो बावदी साबित कर दिए गए — जिसने बाल बनाने की कला में क्रांति ला दी, उसे न जानने से कौन बड़ा पाप होगा ?

साहबजादे गला बैठाकर जुमले के टुकड़े-टुकड़े कर, भारी आवाज में बोलने लगे हैं। श्रीमतीजी ने बताया कि यह तर्ज गब्बरसिंह की है। 'कौन गब्बरसिंह' भी हम पूछ चुके हैं और अपनी हँसी करवा चुके हैं — अरे वही अमजद खान। कुछ-कुछ भूषण के स्टाइल में अमजद खान। और हमें तीन रुपए खर्च कर 'शोले' में अमजद खान से मुलाकात करनी पड़ी।

गरारा मुसलमान नहीं है, बिन्दिया हिन्दू नहीं है, तम्बाकू अंग्रेज नहीं है, पतलून अंग्रेज नहीं है, सब सबके हैं, सब सब हैं।

अस्पताली रपट

यार-दोस्तों के साथ चाय पीते समय या फिर आपके बीच 'शीर्षासनी चिन्तन' करते समय हमने चाहे जितने एवरेस्ट चढ़ने का दावा किया हो, पर

असलियत यह है कि अदालत या अस्पताल का नाम सुनकर कँप कँपी छूटने लगती है । छोटे-मोटे लड़ाई-झगड़े हों या बीमारी, हम कभी थाना-पुलिस या डाक्टर के पास भी नहीं गए । क्योंकि हमेशा डर बना रहता है कि वे कभी कचहरी या अस्पताल का रास्ता न दिखा दें ।

फिलहाल आपसे छिपाना क्या, हम इसे अपनी कमजोरी समझते रहे और इनकी बात चलते ही कोई न कोई बहाना बना गए । पर अब नहीं । अदालत के बारे में फिर कभी सही अस्पताल न जानेके लिए कम से कम हमारे पास पर्याप्त तर्क हैं ।

जहाँ एक कारण डरपोक मन है । वहीं वहाँ के सादे खाने । सीलन और गंदगी की याद भी उधर का रुख करने से रोकती है ।

हमारी बात पर आप सिर क्या हिला रहे हैं? क्या कभी आपने खुद पर महसूस नहीं किया ?

इटली के डाक्टर ने सलाह दी है कि आप बीमार पड़ें, तो कभी अस्पताल न जाएँ । उनका कहना है कि आप एक बीमारी लेकर जाएँगे, तो चार बीमारियाँ लेकर लौटेंगे । हमें उनकी बुद्धि पर तरस आ जाता है । अरे, अपने देश में तो अव्वल आप चक्कर पर चक्कर लगाते रहिए । अगर आपके पास 'सोर्स' नहीं है, तो भरती होना तो दूर, अस्पताल से अच्छी दवा भी नहीं मिल सकती ।

अगर किसी तरह रो-गाकर भर्ती हो गए, तो इस बात की कोई गारण्टी नहीं कि आपको ढंग से देखा भी जाएगा । अगर पैसे हों, तो बाजार से दवा मँगाइए वरना पड़े रहिए और मौत से दो-चार हाथ करने की बची-खुची ताकत भी खोते रहिए । अगर आप विशेष रोगी नहीं हैं और अस्पताल के खाने पर ही निर्भर हैं, तो यह काम आसान हो सकता है ।

हमारे यहाँ गरीबी, बेकारी और अभावों की दर सबसे अधिक, पर हम फख्र के साथ घोषित करते हैं कि मरीजों की देखरेख की उपेक्षा में हम सबसे आगे हैं । इटली के डाक्टर चाहें तो इसकी जाँच करवा सकते हैं । हम ही आगे रहेंगे ।

इस तरह हम अपने अस्पतालोंके लिए गर्व से झूम उठे हैं । किसी भी क्षेत्र में सही, हम कम से कम किसी मामले में आगे तो हैं । अस्पतालों के अधिकारियों को चाहिए कि यह 'प्रगति' बनाए रखनेके लिए पूरा प्रयास जारी रखें । कहीं इटली के अस्पताल आगे न निकल जाएँ ।

हम उनकी तारीफ में ऐसे ही लगातार लिखते रहने का दावा करते हैं । बस, शर्त यही है कि वे कभी हमसे अपना मुँह दिखाने का इसरार न करें । यही क्या कम किया, जो हमने मन का डर बता दिया । इतनी देर, अस्पताल की चर्चा चलने के कारण पसीना छूटने लगा है, सो मैदान छोड़ने की इजाजत दें । ▩

४८५, उपरेनगंज वार्ड,
मुहल्ला – नुनहाई,
जबलपुर–४८२००१
(मध्य प्रदेश)

※ आत्म–विश्लेषण ※
(श्रेष्ठ चिन्तन का संकलन पाक्षिक)
संपादक : अशोक कुमार,
सह संपादक : राजेन्द्र मानव
वार्षिक शुल्क १२ रु., : १ प्रति ६० पैसे
309/7 चौधरियान स्ट्रीट, जींद–126102

'सुधा बिन्दु' के तथा देश–विदेश की
पत्र–पत्रिकाओं के विश्वस्त एजेण्ट
श्री सौरभ
पुस्तक भण्डार
केलिको डोम के सामने,
रिलीफ रोड,
अहमदाबाद–३८०००१

आरोग्य-परक

नीम

श्रीमती सन्तोष देवी चौमाल

विद्या विनोदिनी

लेखिका

[श्रीमती चौमाल नवोदित लेखिका हैं और वैद्यक का ज्ञान परम्परागत रूप से प्राप्त किये हुए हैं। प्रस्तुत लेख में सर्वत्र सुलभ नीम के उपयोग-प्रयोग पर प्रकाश डाला गया है, जो पठनीय और आचरणीय है। — सम्पादक]

कहा जाता है कि नीम हकीम खतरये जान, परन्तु ऐसी बात मेरी समझ में नहीं आती है। कारण कि नीम के प्रयोग से कोई खतरनाक स्थिति पैदा नहीं होती है अंग्रेजी में भी एक कहावत है, 'ए लिटिल नालेज इज डेन्जर थिंग' अर्थात् अल्पज्ञान हानिकारक होता है। इससे स्पष्ट है कि यह कहावत नीम के ऊपर नहीं घटती है। क्योंकि नीम के अन्दर तो अमूल्य गुण भरे पड़े हैं। नीम का वृक्ष तो भारत में सब जगह पाया पाता है। यह पंजाब तथा बिहार के कुछ भागों में कम मिलता है।

नीम के कई नाम हैं। निम्ब हिन्दी में कहते हैं, गुजराती में लिम्बडो, संस्कृत में पिचुमंद, अरिष्ट, तिक्तक, अंग्रेजी में निम्ब ट्री कहते है।

गुण : नीम शीतल, हलका, ग्राही, पाक में चरपर, हृदय को अप्रिय, अग्निवात, तृषा, ज्वर, अरुचि, कृमि, व्रण, पित्त-कफ, वमन, कोढ़, प्रमेह को नष्ट करता है। नीम का वृक्ष ११ से १७ मीटर ऊँचा होता है। इसका फल खिरनी जैसा पीला होता है। जिसको निम्बोली कहते हैं।

नीम का प्रयोग : यह रक्त-शुद्धिके लिए रामबाण होता है। यह नेत्र-रोग, कृमि, चर्म-रोगों को जड़-मूल से नष्ट करता है। नीम की दातुन करने से दाँत स्वच्छ और मजबूत होते हैं। यह मुख की दुर्गन्ध को नष्ट करता है। नीम की पत्ती को उबालकर उसके पानी से घाव धोने से जीवाणु नष्ट होते हैं तथा घाव जल्दी ठीक होता है। नीम का तेल कान के दर्द तथा फोड़ा-फुन्सी को मिटाता है। ऊनी गर्म कपड़ों के अन्दर इसके पत्तों को सुखाकर रखने से कपड़े खराब नहीं होते हैं। नीम की छाल का घोल भूख बढ़ाता है। नीम के पत्तों को पीस कर गर्म करके बाँधने से चोट और वायु का सूजन दूर करता है। नीम की खली खाद के काम आती है।

नीम का पत्र, पुष्प, फल बीज और तेल महौषधि हैं। मात्रा—चूर्ण १–४ माशे, पत्र–चूर्ण–१ से ५ मासे, बीज १॥ माशे, पत्र स्वरस १ तोला, क्वाथ ५ से १० तोला, मिला लें। प्रातः सायं ठण्डे पानी के साथ १ से २ तोला एक महीने तक लें। गाँवों में, शहरों में मच्छरों के उपद्रवों से मलेरिया होता है। इसकी नीम ही अमूल्य दवा है। मेरी सासुजी की उम्र ५० वर्ष की है। मेरे ससुरजी बिहार में दूमका गाँव में हैं। उनको २० वर्ष से विषमज्वर हर वर्षा-ऋतु में होता है। बहुत से डाक्टरों की दवा की तथा वैद्यों की भी आयुर्वेद की दवा की, परन्तु उनको हर साल सावन-भादों में बुखार १० दिन आता ही रहता था। गत दो वर्षों से नीम का प्रयोग किया। उससे बुखार छोड़कर चला गया। नीम के पत्तों को छाया में सुखाकर उसका महीन चूर्ण कर लिया। फिर फिटकरी को गर्म तवे पर फुलाकर पीस कर अलग रखा। फिर दोनों का १/४ माशे तक की खुराक गर्म पानी से एक सप्ताह तक दी। उससे बुखार का आना बन्द हो गया है।

यदि सिर में जुयें पड़ी हों, तो नीम के तेल में कपूर डालकर बालों की जड़ों में दो दिन लगाएँ। उससे जुयें मर जाएँगी। अगर बच्चों के पेट में कीड़े पड़ गए हों तो निम्बोली सूखी १ तोला, बायबिडंग १ तोला, नागरमोथा १ तोला का चूर्ण मिलाकर १–४ माशे तक सुबह–शाम ताजे जल में देने पर तीन दिन में कृमि बाहर निकल जाएँगे.।

स्त्रियों के श्वेत प्रदर में नीम की छाल तथा बबूल की छाल को मोटा-मोटा कूटकर उसको पानी में उबाल लें। चौथाई पानी शेष रहे तो ठण्डा कर उसमें शहद मिलाकर दिन में दो बार सेवन करने पर १५ दिन में श्वेत प्रदर दूर हो जाता है।

जनसंख्या–वृद्धि आज हमारे देश में विकट स्थिति धारण किये हुए है। ऐसी हालत में बढ़ती जनसंख्या को काबू में लानेके लिए, संतति–निग्रह की महती आवश्यकता है। इस कामके लिए मेरे अनुभव से नीम भी अन्य औषधियों से पीछे नहीं है। कहा जाता है कि यदि स्त्री मासिक बन्द होने के ४ दिन बाद नीम के तेल को रूई में भिगोकर योनि में रखे तो भविष्य में गर्भ धारण की सम्भावना नहीं रहती है।

तेल बनाने की विधि : नीम के पत्तों का स्वरस ५ तोला, रतन ज्योत १ तोला, मूँगफली का तेल २० तोला लेकर सब मिश्रित कर आग पर गर्म करें। पकते-पकते जब केवल तेल शेष रहे, तब उतारकर छानकर, ठण्डा करके शीशी में भर लेना चाहिए।

यदि किसी आदमी को सर्प-दंश, बिच्छू-दंश या अन्य जहरीला प्राणी-दंश कर ले, तो उसको नीम के पत्ते चबाने को दें। फिर नीम का तेल उस जगह पर लगा दें। इससे जहर उतर जाएगा। आदमी रोता हुआ आयेगा, हँसता हुआ जायेगा।

नीम के विषय में आपको एक विशेष बात बताती हूं कि नीम जैसा एक अन्य किस्म का नीम होता है। उसको महा निम्ब या मीठा नीम कहते हैं। उसे पशु नहीं खाते। यही उसकी पहचान है। अतः भूलकर भी उसका प्रयोग नहीं करना चाहिए। ❖

द्वारा — श्री पं० हरिप्रसादजी चौमाल
मु०पो०–आसनबनी (एस.पी.) दूमका (बिहार)

लहसुन का प्रयोग

२ तोला आँवले के रस में ५ तुर्री (कली) लहसुन पीस लें। उसमें ३ तोला शहद, १ तोला हरडे तथा शतावरी, असगन्ध, गोखरू, शीतल मीर्च, चन्दन, शंखपुष्पी, मैदा, अगरू, जीवन्ती पीपल, पीपलामूल काकोली ये सब एक–एक तोला लेकर कूट छानकर गाय के घृत में सेंककर उसमें दस तोला चीनी मिलाकर चासनी में पाक तैयार कर लिया जाए।

यह पाक सुबह–शाम आधा–आधा तोला चाटकर एक सेर औटाया हुआ गर्म दूध पी लें। दो महीने तक सेवन करने से अद्भुत चेतना प्राप्त होती है।

प्रेमचन्द बासोतिया
जनता आयुर्वेदिक औषधालय,
चमनपुरा चार रास्ता
अहमदाबाद–१६

* * *

कायाकल्प

'सुधाबिन्दु' के मार्च–अप्रैल '७९ के अंक में प्रकाशित "लहसुन–प्रयोग" करने वाला मैं एक धन्यभागी युवक हूं। इस प्रयोग के कारण मेरी धर्मपत्नी ने ता० १८–९–७९ को पुत्र–रत्न पाया है और मेरी सूखी खेती हरी–भरी हो गई है। मैं जीवनभर वैद्य प्रेमचन्द बासोतिया का आभारी हूं, जिनके इस लेख ने मुझे नई जिन्दगी दी है।

चमनलाल हीरालाल बारोट,
११, सूरज पोल, उदयपुर

पुस्तक परिचय

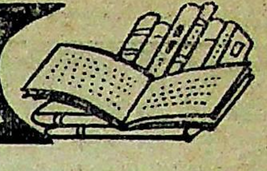

रैन भई चहुँ देस (नाटक)

लेखक वसन्तकुमार परिहार
प्रकाशक–शब्दकार प्रकाशन, २२०३,
गली डकौतान, तुर्कमान गेट–दिल्ली–६
प्रथम संस्करण सजिल्द **मूल्य** ७–०० रु० पृष्ठ ११२

श्री वसन्त कुमार परिहार द्वारा रचित नाटक 'रैन भई चहुँ देश' गुजरात के अन्तिम राजपूत शासक करण सिंह वाघेला की पुत्री देवल देवी की करुण कथा है। गुजरात में मुस्लिम शासन का दुःखद आगमन इसकी पृष्ठभूमि है।

देवगिरि के राजकुमार शंकरदेव की वाग्दत्ता देवल को उसकी माँ कँवला देवी के आग्रह पर अलाउद्दीन के सिपाही देवगिरि जाते समय मार्ग में पकड़कर देहली लाते हैं। इसके साथ ही देवल के दुर्भाग्य का आरम्भ होता हैं। निराश्रित देवल विवशतावश अलाउद्दीन के पुत्र ख़िज्र खाँ की बेगम बनती है। मलिक काफूर के षड़यन्त्र के कारण अपने अन्धे गुलाम पति की मृत्यु के बाद क्लीव मुबारक शाह के हरम में कैद देवल मुबारक के मित्र खुशरू खाँ से अपनी इज्ज़त बचानेके लिए आत्महत्या कर लेती है।

देवल के दिल्ली लाये जाने का कारण है – उसकी माँ कँवला देवी। वह पहले करण सिंह वाघेला के मन्त्री माधव की पत्नी थी, जिसे उसने अपने मन्त्री से बलपूर्वक छीन लिया था, किन्तु अलाउद्दीन के आक्रमण से उसकी रक्षा न कर सका, फलतः कँवला देवी विजेता अलाउद्दीन के हरम में आती है। करण सिंह से प्रतिशोध लेनेके लिए वह देवल को पकड़वाकर मँगवाती है।

यहाँ कँवला और देवल माँ-बेटी मात्र न रहकर दो नारियाँ बन जाती हैं। कँवला की मानसिक व्यग्रता और बदले की भावना से उठा कदम स्त्री-हृदय की एक नयी दिशा खोलता है, किन्तु लेखक इस दिशा में कोई विकसित स्थिति निर्मित नहीं कर सका है। फलतः कँवला देवी का पात्र एक प्रयोजन का साधनमात्र बन गया है, जो अत्यन्त मानवीय बन सकता था। इक्कीस पात्रों की सृष्टि में ख़िज्र खाँ, देवल, अमीर खुशरो, कँवला, मलिका–ए–जहाँ, मलिक काफूर तथा रूखी ध्यानाकर्षक हैं।

श्री परिहारजी का प्रथम नाटक होने पर भी यह नाटक भाषा, भाव और शिल्प तीनों दृष्टियों से खूब सफल हुआ है। इतिहास और कल्पना का सुमेल भी अपना अलग का वैशिष्ट्य है।

गुजरात जैसे अहिन्दी भाषी प्रदेश से एक सफल नाटक की रचना के लिए लेखक अभिनन्दन का पात्र पात्र हैं, जिसने एक बार प्रसादजी, जगदीशचन्द्र माथुर और हरिकृष्ण प्रेमी के नाटकों का स्मरण करा दिया। पुस्तक की छपाई, कागज और साज-सज्जा प्रशंस्य है। — **'बिन्दु'**

बालकृष्णायन (बाल काव्य)

डा० किशोर काबरा (एम०ए०,पी-एच०डी०)
प्रकाशक–श्रीकृष्ण-जन्मस्थान सेवा–संस्थान, **मथुरा**
पृष्ठ संख्या ६४ **मूल्य—दो रुपए**

श्री काबराजी प्रथम पंक्ति के कवि और सधे हुए लेखक हैं। आपकी कई काव्य-पुस्तकें छप चुकी हैं। इस प्रकाशनमाला का यह बालकृष्णायन एक सुन्दर सुगन्धित सुमन है। इसमें कृष्ण का बाल जीवन, बाल विनोद, युवा जीवन और प्रौढ़ जीवन अपने समस्त वैभवों से पाँच वर्गों में दीपित होकर बाल-भोग्य भाषा और सरल प्रवाहित विचारधारा में दृष्टिगोचर होता है। भोले-भाले बालकों के लिए इस पुस्तक में कृष्ण चरित्र का सागर एक छोटे-से गागर में भरा-सा लगेगा। इस बाल-वर्ष में इसका प्रकाशन और भी अभिनन्दनीय है।

पुस्तक डेमी साइज और सहज बड़े टाइप में छापी गई है। इसलिए इसकी उपयोगिता और बढ़ जाती है। हम इसके साफल्य पूर्ण बहु प्रचार की कामना करते हैं। — **'राम'**

समिति समाचार

व्याख्यानमाला :

राजस्थान सेवा समिति, अहमदाबाद संचालित राजस्थान हिन्दी हाईस्कूल में प्रथम सत्र में नीचे लिखे अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार के विद्वानों और सुयोग्य के व्याख्यानों का आयोजन किया गया।

श्री मनुभाई पंचोली (जनसत्ता के प्रेस-रिपोर्टर) ने "प्रधानमन्त्री श्री मोरारजीभाई देसाई के साथ साम्यवादी देशों का प्रवास" विषय पर प्रकाश डालते हुए ता० १९–७–७९ को रूस, पोलैण्ड, बेल्जियम देशों की सरकार, जनता और समाज के बारे में कहा कि वहाँ के प्रत्येक व्यक्ति राष्ट्रके लिए हैं। राष्ट्र का महत्त्व व्यक्ति से ऊपर है। लोग कर्त्तव्य-निष्ठ और परिश्रमी हैं। वे परस्पर सहकार की भावना से जीते हैं।

सरदार वल्लभभाई पटेल आर्ट्स कालेज, अहमदाबाद की प्रिन्सिपाल श्रीमती उर्मिला बहन पटेल ने ता० २०–७–७९ को "समाजशास्त्र का विषय, वस्तु और अध्ययन-क्षेत्र" विषय पर व्याख्यान देते हुए समाजशास्त्र का क्षेत्र मानव की तमाम सामाजिक प्रवृत्तियों को बताया और इसके अध्ययन से व्यक्ति और समाज दोनों की उन्नति में सहायक बताया।

नव गुजरात कालेज, अहमदाबाद के गुजराती के व्याख्याता और सुप्रसिद्ध लेखक श्री कुमारपाल देसाई ने 'खेलकूद की दुनिया' विषय पर व्याख्यान देते हुए ता० २७–७–७९ को तरह-तरह के खेलों का परिचय दिया और क्रिकेट को संसार का सर्वश्रेष्ठ खेल बताया। क्रिकेट द्वारा शरीर, बुद्धि और कौशल का विकास होने का समर्थन अनेक उदाहरणों से किया।

गुजरात राज्य के भूतपूर्व शिक्षामन्त्री श्री मगनभाई बारोट ने ता० ६–८–७९ को अपनी रूस यात्रा के संस्मरण सुनाते हुए रूस के लोगों की साहसिकता का परिचय दिया।

सन्त श्री आजाद स्वामी ने "विद्यार्थियों का कर्त्तव्य" विषय पर ता० २४–८–७९ को व्याख्यान देते हुए बताया कि विद्यार्थी को माता-पिता गुरुजनों, तथा राष्ट्र के प्रति सुनिश्चित कर्त्तव्यों का पालन-करना चाहिए।

सौरशक्ति के मनीषी विद्वान् श्री अरविन्दभाई पंड्या ने ता० ३१–८–७९ को "सूर्य ऊर्जा" पर व्याख्यान देते हुए कहा कि सूर्य में अपार शक्ति निहित है। उसे प्राप्त कर हम कल-कारखाने, कुकर आदि में काम ले सकते हैं।

सरस्वती हाईस्कूल अहमदाबाद के आचार्य श्री ओझाजी ने ता० ७–९–७९ को 'युवकों की सेवा प्रवृत्ति' पर व्याख्यान देते हुए कहा कि युवकों को अपने समय में से कुछ समय निकालकर व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की सेवा में लगाना चाहिए।

वक्तृत्व प्रतियोगिता :

राजस्थान हिन्दी हाईस्कूल के तत्त्वावधान में प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी स्व० जयन्तीलाल स्मृति हिन्दी व्याख्यान प्रतियोगिता का आयोजन शिक्षणाधिकारी श्री प्रभा बहन दवे की अध्यक्षता में ता० १४–९–७९ को "आधुनिक युग की नारी और नौकरी" विषय पर हुआ। इस प्रतियोगिता में नगर के ९ हाईस्कूलों के १८ प्रतियोगी बालकों ने भाग लिया और निम्नानुसार पुरस्कार दिया गया।

सर्वप्रथम मोहिनाबा कन्या विद्यालय ने शिल्ड प्राप्त किया। कुमारी रोहिणी देसाई (मोहिनाबा कन्या विद्यालय), कुमारी राजेश्वरी शाह (मोहिनाबा कन्या विद्यालय), कुमारी राजेश्वरी शाह (राजस्थान हिन्दी हाईस्कूल) को श्रेष्ठ वक्तृत्वके लिए पारितोषिक दिया गया। कुमारी मिथिलेश ओझा (राजस्थान हिन्दी हाईस्कूलको प्रोत्साहन पारितोषिक दिया गया।

यशस्वी विद्यार्थी

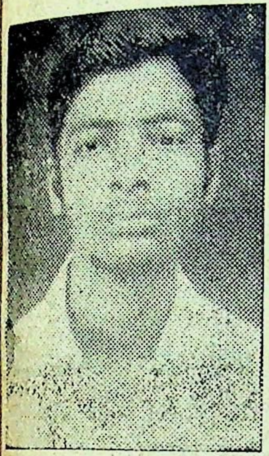

कृष्णकांत पु० कानोडिया
(११ सी)

प्रदीप गो० अग्रवाल
(११ बी)

अमीरुल अ० हक
(११ डी)

जवाहरलाल नेहरू के जीवन-कृतित्व के विविध षयों पर राष्ट्रीय कक्षा की स्पर्धा का आयोजन ४ नवम्बर १९७९ को दिल्ली में किया गया है।

सभी राज्यों में सभी राज्यों के विद्यार्थी उसमें ाग ले सकें, इस दृष्टि से जवाहरलाल–बाल–भवन की ोर से प्रथम जिला स्तर पर स्पर्धा का आयोजन आ था।

जवाहर बाल–भवन– गुजरात राज्य, अहमदाबाद ी ओर से गुजरात के सभी प्रान्तों में प्रथम जला-स्तर पर स्पर्धा का आयोजन हुआ था। जिसमें विध शालाओं के अँग्रेजी, हिन्दी और गुजराती के द्यार्थियों ने भाग लिया था। अहमदाबाद जिले को ी भागों में बाँटकर स्पर्धा की गई थी। स जिला-स्तर की स्पर्धा में राजस्थान हिन्दी हाईकूल के ीन छात्र— कृष्णकांत पुरुषोत्तमलाल कानोडिया, दीप गोकुलचन्द अग्रवाल और अमीरुल अब्दुल हसीन हक ने भाग लिया था। अपने विभागों में उन्हें प्रथम, द्वितीय और तृतीय विजेता के रूप में घोषित किये जाने के कारण वे राज्य–स्तर की स्पर्धा में भाग लेने के पात्र हुए थे।

राज्य-स्तर की स्पर्धा में गुजरात के विविध प्रान्तों के पसन्द किये गये लगभग ३० विद्यार्थियों ने भाग लिया था, उनमें उपरोक्त तीनों छात्रों ने अपने वक्तव्य से श्रोताओं को बहुत ही प्रभावित किया था। राज्य की स्पर्धा में तीनों छात्रों को पुरस्कार योग्य घोषित कर उन्हें नकद और पुस्तकों द्वारा पुरस्कृत किया गया।

तीनों छात्रों में से कृष्णकांत कानोडिया का १४ नवम्बर को दिल्ली में होने वाली राष्ट्रीय स्तर की स्पर्धाके लिए हिन्दी में गुजरात राज्य का प्रतिनिधित्व करने के लिए निर्वाचन हुआ।

"सुधाबिन्दु"

का

आगामी विशेषांक "संस्कृति अंक"

'सुधाबिन्दु' का प्रतिवर्ष एक विशेषांक प्रकाशित होता है, जो शोधपूर्ण सामग्री और संग्रहणी विशेषताओं से समन्वित होता है। अब तक इस पत्रिका के 'राजस्थान–गुजरात भावात्मक एक विशेषांक', 'चेतना विशेषांक', 'जीवन–विशेषांक'', 'युग विशेषांक', 'जागृति विशेषांक', 'मान धर्म विशेषांक' तथा 'राष्ट्रोत्थान में राजस्थान' विशेषांक प्रकाशित और प्रशंसित हो चुके हैं।

आगामी जनवरी–फरवरी '८० में **"संस्कृति अंक"** विशेषांक के रूप में प्रकाशित होगा। इसके अनुरूप रचनाएँ, शोधलेख, कविता, कहानी, संवाद, एकांकी आदि अधिकतम पांच फुलस्केप ता० १५–१२–'७९ तक सादर आमंत्रित हैं।

लेखक महानुभावों से निम्न सूची के अनुसार रचनाएँ भेजने की हार्दिक प्रार्थना है। — सम्पाद

१. संस्कृति का स्वरूप
२. संस्कृति के विविध सोपान
३. मानव संस्कृति की आधारशिला
४. मानव संस्कृति की मौलिक समस्याएँ
५. भारतीय संस्कृति का आदर्श
६. भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीयता
७. हमारी संस्कृति और भाषा वैविध्य
८. भारतीय संस्कृति और स्वाधीनता
९. संस्कृति और कला
१०. संस्कृति और उद्योग-धन्धे
११. संस्कृति के विकास में विज्ञान का योग
१२. संस्कृति और विधिशास्त्र (कानून)
१३. संस्कृति और राजनीति
१४. अनुशासन और संस्कृति
१५. आर्य–संस्कृति और वाणिज्य
१६. आचारशास्त्र और भारतीय संस्कृति
१७. भारतीय संस्कृति और नैतिकता
१८. संस्कृति और धर्म
१९. कला और संस्कृति
२०. भारतीय संस्कृति और स्थापत्य
२१. रीति–रिवाज और संस्कृति
२२. संस्कृति और सभ्यता
२३. संस्कृति के मूलतत्त्व
२४. रामायण-महाभारत में संस्कृति-दर्शन
२५. भारत के प्राचीन संस्कृति केन्द्र
२६. आर्य वाङ्मय और संस्कृति
२७. संस्कृति और सम्पत्ति
२८. संस्कृति और श्रद्धा
२९. भारतीय संस्कृति में ईश्वरवाद
३०. विश्वकल्याण द्रष्टा भारत
३१. भारतीय संस्कृति के अग्रदूत
३२. भारतीय संस्कृति और प्रेम
३३. आर्यशेसंस्कृति की गहनता
३४. संस्कृति और शिष्टाचार
३५. भारतीय संस्कृति और नारी
३६. आर्य संस्कृति का विश्व संस्कृति पर प्रभाव
३७. महात्मा गाँधी और हिन्दू संस्कृति
३८. आर्य संस्कृति और वर्णाश्रम धर्म
३९. आर्य संस्कृति में विवेक-व्यवहार
४०. शिक्षा और संस्कृति
४१. आर्य संस्कृति और ललित कलाएँ
४२. आर्य संस्कृति और भगवद्गीता
४३. भारतीय संस्कृति और युवक
४४. संस्कृति और बालक
४५. बालकों के संस्कार-व्यवहार
४६. बाल-समाज और विद्याभ्यास
४७. बाल गोपाल और बाल लाल
४८. बालकों का आचार विचार
४९. बाल संस्कृति और निर्माण
५०. बालकों का विनोद
५१. विश्व के महान् बालक
५२. बालब्रह्म और बालयोग
५३. बालकों की दुनिया
५४. हम बालक देश महान के

फोन : दुकान : ३६०९९१
३६९६८४
निवास : ४४५९३१

नन्दकिशोर केजरीवाल एण्ड संस

होलसेल कपड़े के विक्रेता

४०, न्यू क्लाथ मार्केट
अहमदाबाद–३८०००२

FABRICS
OF
CHOICE
SHIRTINGS
SUITINGS
PRINTS
POPLINS
BLENDED FABRICS
MERCERISED
SANFORISED

THE AHMEDABAD COTTON MFG. CO. LTD.

: REGD. OFFICE :
OUTSIDE SARANGPUR GATE,
AHMEDABAD-380002.

THE PATELL MILLS
COMPANY LIMITED
AHMEDABAD-21
INSIST ON

For Durable and latest in Dyed, Printed, Screen Prints, Poplins Suitings, Patto etc. etc.

REGD

Regd. Office : Gomtipur Road,
Ahmedabad-380021

Phone : 363822
363823

Telegram : PATELMILLS

C T M TEXTILE MILLS

RAMOL ROAD
AHMEDABAD

Phone :-Mills 360188-361398
Office 360487-363511

Telegram RADHASWAMI

are you dealing in
CLOTH at any level?

selection of our fabrics for further distribution will entitle you to benefits as:

- Higher Return on your turnover
- Higher Turnover Ratio
- Lesser Risks of:
  - Leftovers
  - Rejections
  - Defective Goods
  - Undue Competitions
- Prompt Delivery
- Reasonable & Stable Prices
- Higher Consumer Acceptability

prasad mills ltd.

Regd. Office:
P. B. No: 22
Raikhad
Ahmedabad-380 001
Phone: 368585/86
Gram: 'PRASADMILL'

सेन्चुरी की नई देन

कोजीकॉट

कॉटन शर्टिंग

सुन्दर सुहावने चेक्स में उपलब्ध है।

पहनने में ऊनी कपड़े-सा आनन्द मिलता है।

: निर्माता :

दि सेन्चुरी स्पिनिंग एण्ड मैन्युफैक्चरिंग कंपनी लिमिटेड

'सेन्चुरी भवन', डॉ. एनी बेजण्ट रोड, वरली,
बम्बई-४०००२५

अनुदान करें

आन्ध्र प्रदेश में अरुणा नदी तट पर दक्षिणा मूर्ति क्षेत्र में “नवजीवन अन्धजन शिशु सहायता केन्द्र स्थापित किया गया है। सहृदय पाठकों से नम्र निवेदन है कि अन्धत्व प्राप्त इन बालिकाओं की सेवार्थ यथाशक्ति अनुदान भेजें।

एक अन्ध बालिका को एक महीने में खाना, आवास, कपड़े, शिक्षा एवं नेत्र-चिकित्सा के लिये करीब ७५/—रु० के खर्च का अनुमान है। दयालु पाठकवृन्द एवं दम्पतियों से अनुरोध है कि आप अपने प्रिय बच्चों के जन्म दिवस या शुभ विवाह के अवसर पर एक अन्ध बालिका को भेंट के रूप में ७५/—रु० भेजकर दरिद्रनारायण की सेवा करें।

रुपया भेजने का पता :—

नवजीवन ब्लाइन्ड चिल्ड्रन रिलीफ सेन्टर
पो०ऑ० राजनगरम–वाया–नागलापुरम-५१७५८९ (आन्ध्र प्रदेश)

* * *

स्थान दाता :

रामगोपाल गिरधारीलाल सराफ, ५०६, न्यू क्लॉथ मार्केट, अहमदाबाद–२

WE MANUFACTURE
A.A.C. AND A.C.S.R. CONDUCTORS
AND
ALUMINIUM WIRES

FOR YOUR REQUIREMENTS IN ANY SIZE AND QUANTITY
PLEASE CONTACT

**Prem Conductors
Private Limited**

Registered Office
211, New Cloth Market
Ahmedabad–380 002
Phone : 360551/367730

Administrative Office & Works
Station Road,
Vatva (Ahmedabad) 382 440
Phone : 877283/877281

अंबालाल रणछोड़दास एण्ड कं.

थोक कपड़े के व्यापारी एवं कमीशन एजेन्ट

१३७, न्यू क्लॉथ मार्केट, अहमदाबाद ३८०००२

☎ ३६४१८२
३६३६३०

तार : ARCOY

याद रखिए—

राजकमल टेक्सटाइल्स

२९'' प्रिन्ट बुश शर्टिंग, छींट एवं स्क्रीन बोर्डर

दुकान :
५२४, न्यू क्लॉथ मार्केट,
अहमदाबाद ३८०००२
टेलीफोन : ३६०७२९
टेलीग्राम : कामधेनु

कार्यालय :
मणिलाल मेन्शन, क्रोसलेन
अहमदाबाद ३८०००२
टेलीफोन : ३८२४१६
टेलीग्राम : धार्मिक

शाह गणेशमल बक्तावरमल
खुशालचन्द एण्ड कम्पनी
गणेश ट्रेडिंग कम्पनी

क्लोथ मरचेन्ट एण्ड कमीशन एजेण्ट

कृष्ण मेन्शन, चौथी मन्जिल
घी बाजार
अहमदाबाद ३८०००२

टेलीफोन : ३८९९२४
३८०४२५

ग्राम–बक्तावर

आधुनिकतम डिजाइन, रंग एवं मेचिंग में
श्रेष्ठ छींट एवं बुश शर्टिंग के

निर्माता

जयभारत फेब्रिक्स मिल्स (प्रा.) लि.

१६३, न्यू क्लोथ मार्केट,
अहमदाबाद-३८० ००२

टेलीफोन कार्यालय : ३६१९८
मिल : ५१२९५

तार : VEDIK

New Gujarat Cotton Mills Ltd.

AHMEDABAD-2

INSIST ON
"NEW GUJRAT FABRICS"
FOR HOME & EXPORT

For 100% Polyester, Printed Shirting,
80/20 Filament Shirting, Fancy Wash
and Wear Poplins of latest fashions

Regd. Office :
18 A, Braborne
Road,
Calcutta.

Mill No. 1
Naroda Road,
Ahmedabad-380002
Phone : 372266
372317
374527

Mill No. 2
Outside Dariapur Gate,
Ahmedabad-380016
Phone : 383493
380389

Telegram : NEW GUJRAT Telex : AM-311

INSIST ON

ASARWA FABRICS

100% Polyster Prints in Eye-catching Designs :
Loveable Shades and
Lovely Matchings for
Fashionable Fabrics
AND
Feel the Difference, Warmth
And the Feeling of a new Life

REGISTERED USER OF TRADE MARK
"EVA PRESHRUNK & SUNFULGENT"

Choose From ASARWA'S
Exciting Varities of Polyseter Cotton
Blended Shirting, Suiting, Sarees,
And Dress Materials.

ASARWA MILLS

(Prop. Bengal Tea and Industries Ltd.)
Asarwa Road AHMEDABAD-380 016

Regd. Office : 9, Brabourne Road, **Calcutta-700 001.**
Phone : 67301-2 Gram : MILLASARWA Telex : 012-479

सुधाबिन्दु

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी

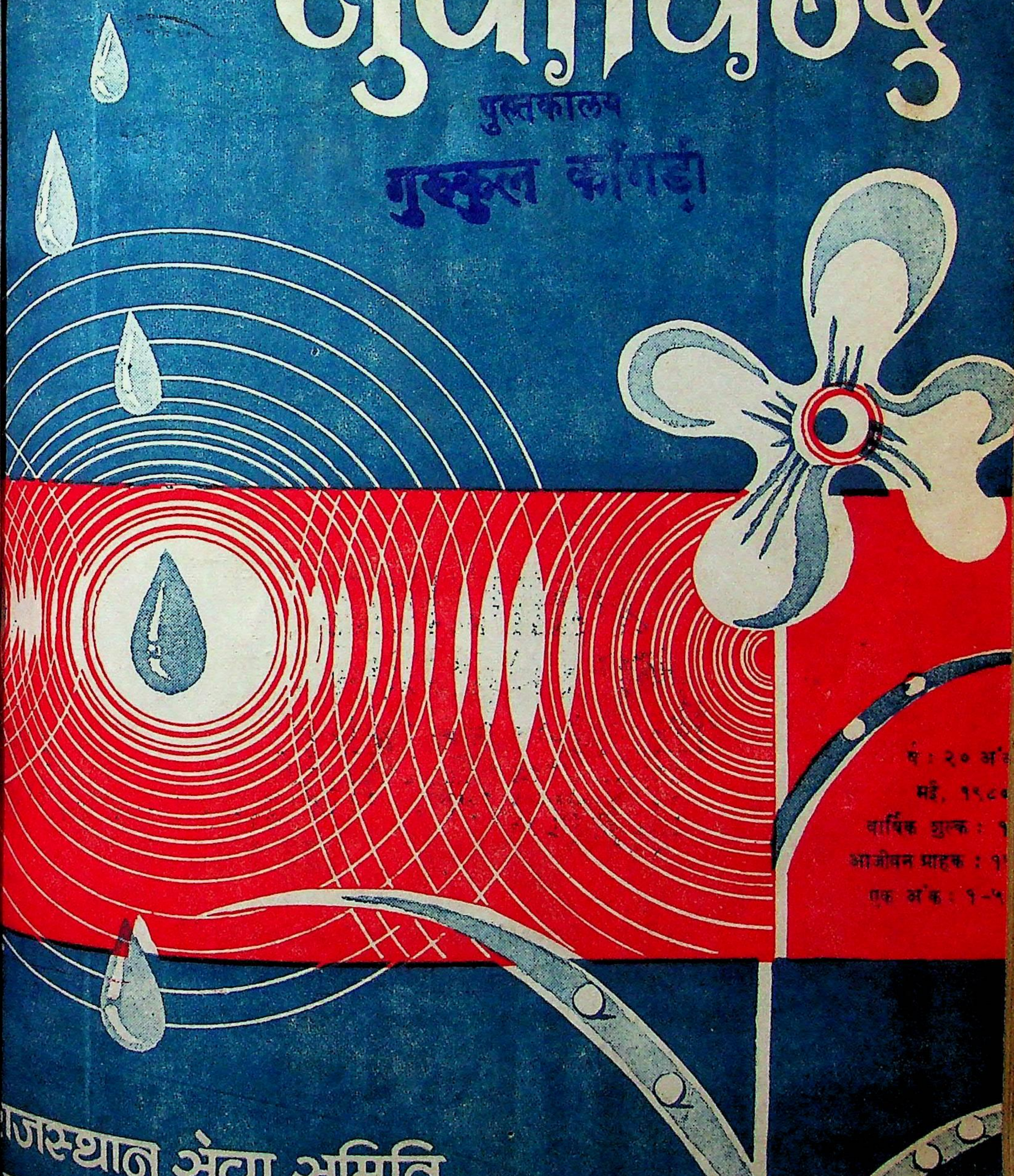

र्ष : २० अं
मई, १९८
वार्षिक शुल्क : १
आजीवन ग्राहक : १
एक अंक : १-५

ाजस्थान सेवा समिति

INSIST ON

ASARWA
FABRICS

100% Polyester Prints in Eye-catching Designs :
Loveable shades and
Lovely Matchings for
Fashionable Fabrics

AND

Feel the Difference, Warmth
And the Feeling of a new Life

Registered User Of Trade Mark

"EVA PRESHRUNK & SUNFULGENT"

Choose From ASARWA
Exciting Varieties of Polyester/Cotton
Blended Shirting, Suiting, Sarees,
And Dress Materials.

ASARWA MILLS

(Prop Bengal Tea & Industries Ltd.)
Asarwa Road AHMEDABAD-380016
Regd. Office : Brabourne Road, CALCUTTA-700001
Tl. Phone : 67301-2 Gram : MILLASARWA Telex : 012479

सुधाबिन्दु

सम्पादक
डा० राजनाथ पाण्डेय
एम० ए० (संस्कृत, हिन्दी, पालि), पी-एच० डी०
व्याकरणाचार्य "लब्धस्वर्णपदक"
रामअवधेश त्रिपाठी
साहित्यरत्न

लेखकों से निवेदन

(अ) हमें कैसे लेख-कविता-कहानी आदि चाहिए :—

(१) जो मानव में जीवन के प्रति आस्था जगाकर जीवन को सुन्दरतर बनाए और जो जीवन जीने की कला सिखाए ।

(२) जो मानव-मानव में अपनत्व बढ़ाए, जो करुणा जगाए और जो परसेवा सिखाए ।

(३) जो मानव को आत्माभिमुख करके प्रकृति–परायण बनाए ।

(४) जो हमारे भारत राष्ट्र की, विशेषतः राजस्थान की गरिमा को उजागर करे ।

(५) जो हमारी विभिन्न प्रजाओं, जातियों एवं व्यवस्थाओं के उत्कृष्ट गुणों का विवेचन करे ।

(६) जो प्राचीन-अर्वाचीन ज्ञान-विज्ञान का संतुलित विवेचन करे ।

(७) जो मानव को श्रेष्ठ मानव बननेके लिए प्रेरित करे ।

(आ) रचनाएँ कागज के एक ओर लिखकर भेजें ।

- अप्रकाशित और अप्रसारित रचनाएँ ही भेजें ।
- निर्विवादास्पद विषयों पर लिखी हुई रचनाएँ ही भेजें ।
- रचना अस्वीकृत होने पर वापस मँगानेके लिए टिकट लगा लिफाफा भेजें ।
- तीन–चार फुलस्केप में लिखी ही रचनाएँ भेजें तो बड़ी अनुकूलता होगी ।
- अपना परिचय तथा योग्यता-विवरण भी भेजें ।

पत्राचार : रामअवधेश त्रिपाठी
२, उत्तर भारतीय कोलोनी नागरबेल के पास
अमराईवाड़ी, अहमदाबाद–२३

संयोजक
गिरधारीलाल सराफ
एम० कॉम०, एल-एल० बी०, रा० रत्न

राजस्थान सेवा समिति, अहमदाबाद का
मासिक मुखपत्र

वर्ष : २० मई
अंक : ५ १९८०

वार्षिक शुल्क : १५ रुपए
आजीवन ग्राहक : १५० रुपए
एक अंक का मूल्य : १.५० रुपए

*

'सुधाबिन्दु' में विज्ञापन की दरें निम्नांकित हैं :

स्थान	वार्षिक
कवर पृष्ठ नं.–४	३,०००
,, ,, नं-२ और ३	२,५००
रंगीन पूरा पृष्ठ	२,०००
,, आधा ,,	१,०००
साधा० पूरा पृष्ठ	१,५००
,, आधा ,,	७५०

व्यवस्थापक 'सुधाबिन्दु'
राजस्थान सेवा समिति, शाहीबाग मार्ग अहमदाबाद–४

राजस्थान सेवा समिति, शाहीबाग मार्ग, अहमदाबाद ४ के लिए श्री रामावतार शर्मा ने प्रकाशित किया एवं श्री रामानन्द प्रिंटिंग प्रेस कांकरियारोड, अहमदाबाद २२ ने मुद्रित किया ।

अनुक्रमणिका

(गुजरात यूनिवर्सिटी द्वारा शोधपत्रिका के रूप में मान्य)

तथा

[राजस्थान सरकार के माध्यमिक, उच्चतरमाध्यमिक विद्यालयों तथा पुस्तकालयोंके लिए 'सुधाबिन्दु' मान्य है।]

मई , १९८०

१–मेघ-गीत — सम्पादकीय ५
२–दो कविताएँ — श्री विद्या 'रश्मि' ६
३–हमारी जनसंख्या : एक समस्या (सामयिक) — डा० प्रदीप व्यास ७
४–शौर्य (कहानी) — श्री सलीम शेख १२
५-जँवाई : दसवाँ ग्रह (विचार-परक) — प्रो० श्रीचन्द जैन १५
६–कहकहे (संकलित) १६
७–ईश्वर भवन (संस्था-परिचय) १७
८–व्यापार व्यवहार की शिक्षा शती (नीति-परक) — श्री नयनचन्द बोरडिया १९
९-आदर्श नारी (नारी-परक) — श्री शंभुनाथ दुबे २१
१०–अन्तर्घट (कहानी) — श्री राम अवतार 'अभिलाषी' २३
११–लश्कर पाछो घेर (लोककथा) — डा. रूपचन्द पारीक २४
१२–सूरज नई रोशनी (कविता) — श्री जगन्नाथ 'विश्व' २५
१३–बरसात में सावधानी (व्यवहार-परक) — श्री मती कुमुद सिंह २६
१४–मोहन का साहस (बाल विभाग) — श्री रवीन्दु सुमन २७
१५–समाज का गौरव — अनिल गोपीशंकर (परिचय) २८
१६–हैण्डलूम, पावरलूम (उद्योगपरक) — श्री कान्ति कुमार पोद्दार २९
१७–एक वर्ष हिजड़ा वर्ष भी हो (व्यंग्यपरक) — श्री पूरन सरमा, ३१
१८–पुस्तक—परिचय ३३
१९–समिति—समाचार ३४

आजीवन ग्राहक बनिए

'सुधाबिन्दु' एक साहित्यिक और सांस्कृतिक मासिकपत्रिका है। इसका ग्राहक बनना गौरव की बात समझी जाती है। ग्राहक-शुल्क वार्षिक १५ रु० है और वह भी महँगाई के साथ बढ़ता रहता है। इस परेशानी को दूर करनेके लिए केवल १५० रु. डिपोजिट भरकर आजीवन ग्राहक बनना अधिक सुविधाजनक है। अब तक इस योजना का लाभ अनेक ग्राहक ले चुके हैं।

कृपया, आप भी १५० रुपए भेजकर शीघ्र इस योजना से लाभ उठाइए।

व्यवस्थापक 'सुधाबिन्दु'
राजस्थान सेवा समिति, शाहीबाग मार्ग, अहमदाबाद-४

० निर्भयता ०

यथा ब्रह्म च क्षत्रं च न निभीतो न रिष्यतः
एवा मे प्राण मा बिभेः एवा मे प्राण मारिषः

—अथर्ववेद—२।१५।७

जिस प्रकार ब्रह्म और क्षत्री न डरते हैं, न क्षीण होते हैं । हे मेरे प्राण ! उसी प्रकार तुम भी न डरो, न क्षीण हो ।

क्या भरोसा

मैंने भगवान् से कहा, "सब कुछ तो खोलकर रखा हुआ है—जैसे पहाड़, समुद्र, वन, आकाश, सूरज, चाँद, सितारे, नदी, नाले, धातु-जगत्, वनस्पति-जगत्, पक्षी-जगत्, भाँति-भाँति की मनुष्य-जातियाँ, सुर-असुर किन्तु स्वयं को क्यों छिपा रखा है ?"

भगवान् कहने लगे कि मैंने तो यह सब कुछ मनुष्य-जाति के हित के लिए दिखाया था कि सृष्टि का विकास हो; परन्तु मनुष्य ने इसको बाजार ही बना दिया, बल्कि सुपर बाजार बना दिया । आटा, दाल, तेल, मिर्च, मसाला तो बिकता ही था; मछली-मांस भी बिकने लगा । धातु और खनिज भी बिकने लगे और यहाँ तक कि ज्ञान और विद्या भी बिकने लगे । मैं तो डर गया कि अगर मैं भी सामने आ गया तो मैं भी बेच दिया जाऊँगा । इसीलिए तो मैंने खुद को छिपा रखा है ।

परन्तु क्या भरोसा, मुझे भी ढूँढ़-ढाँढ़ कर निकाल ले । मनुष्य को यह सम्भावना तो मैंने दे ही रखी है ।

यदि आदर-सन्मान हो और मेरा ठीक-ठीक इस्तेमाल किया जाए, तो मैं अपने-आप ही जाहिर हो जाऊँ ।

—सुरेंद्रनाथ जौहर

* समिति के दो प्रकाशन-पुष्प *

१. आधुनिक राजस्थानी साहित्य : लेखक—प्रा. **भूपतिराम साकरिया**

डेमी साइज, पक्का जिल्द कलात्मक आवरण-पृष्ठ, सुन्दर छपाई वाली इस पुस्तक की प्रशंसा बड़े-बड़े विद्वानों ने की है । पुस्तकालयों तथा पुस्तक-प्रेमियोंके लिए विशेष उपयोगी है । मूल्य—केवल ६ रुपए

२. बातां बखत बखत की : लेखक—श्री **महावीरप्रसाद हलवाई**

डेमी साइज, पक्की जिल्द, उत्कृष्ट छपाई तथा मोहक आवरण-पृष्ठ । यह पुस्तक राजस्थानी भाषा में लिखी गई मौलिक और जीवनोपयोगी कविताओं का एक सुन्दर संग्रह है , जिसके प्रत्येक दूहे अँगूठी के नगीने हैं । मूल्य—केवल ६ रुपए

इस पुस्तक पर सम्मति देते हुए आचार्य बदरीप्रसाद साकरिया ने लिखा है—"सुन्दर और सुबोध नीति के दोहे अपने ढंग की यह एक कृति है । कवि का प्रयास वास्तव में सराहनीय है । राजस्थानी भाषा के माध्यम से कवि और कृति साहित्य-गगन में प्रकाशमान हों, ऐसी अपेक्षा-अभिलाषा है ।"

प्राप्तिस्थान
राजस्थान् सेवा समिति, शाहीबाग मार्ग, अहमदाबाद-४

० पाठकों के पत्र ०

महीनों प्रतीक्षोपरान्त 'सुधाबिन्दु' का जनवरी, ८० 'संस्कृति विशेषांक' मिला। पढ़कर हृदय-आह्लादित हो उठा। यह वस्तुतः एक स्मरणीय एवं संग्रहणीय अंक है। सम्पादकीय तो खैर इसकी परम्परा के अनुरूप विशिष्ट है ही, कविताएँ भी कम मोहक, सशक्त, सुरुचिपूर्ण एवं यथार्थपरक नहीं। इस विशेषांक रूपी बाग में अधिकांशतः दिग्गज विद्वानों के संस्कृति सम्बन्धी सुविचारों के सुमन सजाये गए हैं, जिसके पराग का प्रसार कर पाठक-भ्रमर मुग्ध हो रहे हैं। वाकई यह विशेषांक आपकी ओर से अध्येताओं एवं साहित्य-प्रेमियोंके लिए सशक्त भेंट स्वरूप है। अतः, सुसंपादन हेतु शत्-शत् शुभ-कामनाएँ।

संस्कृति राष्ट्रीय जन के जीवन-वृक्ष का पुष्प है। उसमें मानव-जीवन का सौन्दर्य अन्तर्निहित है। ज्ञान और कर्म दोनों के पारस्परिक प्रकाश की सत्ता संस्कृति के विच्छिन्न होने से मानव-समाज का पतन अवश्यम्भावी है। संस्कृति के विकास और अभ्युदय के द्वारा ही सम्पूर्ण मानव-समाज की प्रगति सम्भव है। अतः, मानव-जीवन में जो कुछ सुन्दर श्लाघनीय और महान् है, वही संस्कृति है।

यद्यपि इस अंक में प्रकाशित सम्पूर्ण सामग्री-उपर्युक्त तथ्यों से भरपूर लगी, फिर भी प्रो० जगदीश शुक्ल, डा० इन्दिरा-जोशी, श्री रामअवधेश त्रिपाठी, श्री विनोद दीक्षित, डा० अवधनारायण त्रिपाठी, डा० के० बी० व्यास, डा० राजनाथ पाण्डेय तथा श्रीमती उमा नेगी के लेख विशेष रूप से ज्ञानवर्द्धक एवं विचारोत्तेजक लगे। एतदर्थ लेखक-लेखिकाओं को ढेरों बधाइयाँ।

आजकल यहाँ प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाएँ गुटबन्दी से ग्रस्त होकर नवीन प्रतिभाओं के प्रति उदासीनता बरत रही है, वहाँ 'सुधाबिन्दु' मुक्तहृदय से सबके प्रति समान उदात्त भावना और सम्यक् दृष्टि से नवयुगीन लेखक-लेखिकाओं को सम्मान-पूर्वक सहारा दे रही है, तभी तो प्रतिष्ठित-अप्रतिष्ठित कतिपय सशक्त हस्ताक्षर एक साथ यहाँ दृष्टिगोचर हो रहे हैं। आशा ही नहीं, अपितु पूर्ण विश्वास है यह विशेषांक मेरे स्तर के पाठकों को विशेष रूप से आकृष्ट कर सकेगा।

आचार्य सीताराम पांडेय
ग्राम-अकुराहाँ, पो० कांटी (बिहार)

⁂

'सुधाबिन्दु' का 'संस्कृति-विशेषांक' मेघों को लिए हुए सरसा, बहुत आनन्द आया। मेरी हार्दिक बधाइयाँ एवं शुभ कामनाएँ सादर अर्पित हैं। विषय-वस्तु की विविधता एवं विभिन्न विधाओं का समागम अत्यधिक सराहनीय और प्रशंसनीय है।

माँ सरस्वती के चरणों में इसी प्रकार हर वर्ष विशेषांक रूपी पुष्पहार समर्पित होते रहेंगे, पूरा विश्वास है कि आपके अथक श्रम और कर्तव्यनिष्ठा के संकल्प ने विशेषांक के रूप में नवीन चोला पहना है। भविष्य में भी आपके स्वप्न साकार हों, प्रभु से प्रार्थना है।

जानकीप्रसाद स्वर्णकार
केन्द्रीय विद्यालय शाहीबाग, अहमदाबाद-४

सुधाबिन्दु

वर्ष : १९ मई, १९८० अंक : ५

सम्पादकीय

मेघ का गीत

इन्द्र देवताओं के राजा हैं। ये मानवों पर भी कृपा कर उन्हें अनुगृहीत और उल्लसित बनाते हैं। इन्द्र का वाहन मेघ है। इसलिए मेघवाहन शब्द इन्द्र का पर्यायवाची बन गया है। मेघ द्वारा जल बरसा कर, धरती माता का ताप-सन्ताप मिटा कर इन्द्र अपनी कृपा प्रकट करता है। जल ही प्राणिमात्र और वनस्पतियों का प्राण-रक्षक है, जीवन है। इससे धान्य-वृद्धि होती है, धन-वृद्धि होती है और प्राणियों का पालन-पोषण होता है। इसीलिए इन्द्र को वैदिक काल का मुख्य देव-पद प्राप्त है। मेघ का आगमन रुदन को गान में बदल देता है।

मेघागमन से जहाँ मयूर अपने पंख फैलाकर छमाछम नृत्य करता है, मयूरों को रिझाता है वहीं पपीहा पी-पी की रट लगा कर भूले-बहके प्रिय को उसकी प्रियतमा की याद दिलाता है, सरिता के शुष्क हृदय को तरंगित करके प्रियतम सागर से मिलने के लिए बावली बना देता है। हरियाली बनों और बागों में, खेतों और खलिहानों में हँस-विहँस कर मखमली चादर बिछाती है, लहराने लगती है। वृक्षों से लिपटी हुई लताएँ मत्त-प्रमत्त बनकर प्रेम प्रदर्शित करती हैं। जुगनू चमक-चमक कर निशा की काली चादर में चाँदी के फूल टाँकता है और बिजली चमक-छमक कर प्रियतम बादल की मनुहार करती है। प्रकृति में सर्वत्र आनन्द और सौन्दर्य बिखर पड़ता है। बहार देखकर सभी को आनन्द होता है, हास-विलास का सरगम छिड़ जाता है।

मेघागमन से प्रफुल्ल नर-नारी हिंडोले पर झूल-झूलकर गाते हैं। नवेलियाँ मेंहदी रचाती हैं और सावन में मनभावन को पाकर हर्षोन्मत्त बन जाती हैं। कृषक अपनी कृषि का सर्वोत्तम सुख मेघ पर आधारित मानता है। मलार राग गाकर मेघ का स्वागत किया जाता है। सर्वत्र शीतलता और प्रसन्नता बिखर जाती है। इस प्रकार मेघ सुरकृपा को नर लोक में बिखेर देता है। एक अजीब वातावरण और विचित्र आकर्षण।

मेघ का गर्जन संगीत के मध्यम-तार स्वर की तरह कर्ण-कुहरों में पड़ कर खुशियाँ बिखेरता है। इससे मन और हृदय दोनों आन्दोलित हो उठते हैं। मेघ का गीत मानव को विह्वल और पुलकित बनाता है। हे मेघ! तुम अपने जल-मौक्तिक बरसाकर रिक्त की झोली भर दो, उदारता और सहृदयता से भारत भूमि को, जन-जन को सराबोर कर दो, देश की सिद्धि-समृद्धि में नई-नई कलियाँ खिला दो, हँसा दो, दैन्य-मुक्त कर दो, यही कामना है।

दो कविताएँ

सु श्री विद्या 'रश्मि,

० विषपायी कंठ नहीं मेरा ०

विषपायी कंठ नहीं मेरा, मैं कालजयी कैसे बनती,
तुमने वंशी स्वीकार न की, मैं वृन्दावन से क्या कहती।

मेरे श्रृङ्गार न हँस पाए, तुमको उपहार न बन पाए,
रह गए होंठ ये अनगाए; फूलों के झरने मुरझाए।
सिन्दूर महावर छूट गया, एक इन्द्रधनुष-सा टूट गया,
कोई घर आकर लूट गया, मेरा मन मुझसे रूठ गया।
एकाकी दीपक बुझा दिया, आखिर मैं क्यूँ तनहा जलती।

सोये तारों को छूकर तुम, कुछ दिन तक रहे मेरे सरगम
आंसू जैसे ये जो शबनम, वे लगा नहीं पाये मरहम।
कुछ टुकड़े सूखे हुए फूल, उड़ती आँगन की घनी धूल,
चौखट कैसे कर ले कबूल, सांकल खटकाती हुई भूल।

तुम अगर साथ हो जाते तो,
क्यूं नाहक यह छाया छलती ॥

कब सुबह-शाम आते जाते, क्षण बीत रहे रोते-गाते,
पाथेय स्वयं अब समझाते, पग पीछे कभी नहीं जाते।
जो कुछ नसीब जिसका होता,
वह केवल वह गठरी ढोता।
मछवा लेता जल में गोता, सीपों में नभ मोती बोता
जिन्दगी अमावस के तम-सी,
क्यों पीड़ा के स्वर में ढलती।

० जवाब ०

प्रश्नों से माँग कर जवाब
और हुए लोग, लाजवाब।
जुड़े हुए हाथ, नत नयन
विस्थापित हुआ आदमी,
शिवरों के ओढ़कर कफन
स्थापित हुआ आदमी।

दूभर हो गया आफताब
खण्डित प्रतिमान हो गए।
अर्थहीन जीवन का क्रम
द्वन्दों के बीज बो गए।
बुद्धिमान होने के भ्रम
अंगारे पी गए गुलाब।

मुट्ठी में आग को लिये
ओठों से बर्फ पी रहे।
कैसा समझौता है यह
शीत युद्ध स्वप्न जी रहे।
पीढ़ा की बाँचकर किताब

दरवाजे खिड़की सब बंद।
घर के भीतर है कुहराम
सन्नाटा उगल रहे छंद।
कौन बुने नूतन आयाम
मुर्दा हो गया इन्कलाब ॥

मंजु तेलो की गली
दीक्षितपुरा, जबलपुर (म०प्र०)

सामयिक

हमारी जनसंख्या : एक समस्या

डॉ० प्रदीप व्यास
एम० बी० बी० एस०

लेखक

[डा. व्यास जी हाल हा में एम. बी. बी एस. में सफल हुए हैं। वो. एस० होस्पिटल में इन्टर्न हैं। आपने भारत को जनसंख्या के बढ़ते हुए जल-प्रवाह का अध्ययन-पूर्ण विवेचन इस लेख में प्रस्तुत किया है और हमारा ध्यान विशेष रूप से केन्द्रित किया है, जो पठनीय है। सम्पादक]

सर ज्युलियन हक्सले ने "मानव को समस्त भूखंड का केन्सर कहा है।" इसका कारण है कि पृथ्वी पर मानवजाति का विकास अनियंत्रित हो गया है। पशुओं की उत्पादन-शक्ति ऋतुचक्र पर आधारित है, मानव की नहीं। मानव-जाति को जीवित रहनेके लिए और अपना अस्तित्व प्रस्थापित करनेके लिए संघर्ष करना पड़ता है।

प्राचीन युग में मानवजाति के विकास पर विविधप्रकार की बीमारियों, युद्ध, प्राकृतिक प्रकोप- दुर्भिक्ष-बाढ़-भूकंप आदि से नियंत्रण रहता था। अतएव, उस समय मृत्युदर विशेषकर शिशुओं की मृत्यु अधिक होती थी। लेकिन पिछले पचास वर्षों में डाक्टरी विद्या एवं दवाइयों के नए-नए संशोधनों से जनसाधारण के स्वास्थ्य की सुरक्षा, खेती के विविध साधनों की वृद्धि, अधिक अन्न के उत्पादन तथा सामान्य मानव के भी जीवनस्तर की वृद्धि के कारण मृत्युदर कम हो गया। इससे प्रजा की सुख-शांति में भी वृद्धि हुई और धीरे-धीरे जनसंख्या भी बढ़ती गई।

आजकल विश्व के प्रत्येक भूभाग में बढ़ती हुई जनसंख्या और उसके नियंत्रण का प्रश्न बहुचर्चित है। क्योंकि जनसंख्या का नियंत्रण समाज की प्रगतिके लिए अधिक आवश्यक है। क्योंकि जनसाधारण के स्वास्थ्य का प्रभाव उसकी संख्या, मकान (आवास) और कार्य-शक्ति पर निर्भर रहता है। जीवन की तीन मूलभूत आवश्यकताएँ-अन्न-वस्त्र-मकान हैं, जो अधिक जनसंख्या के कारण सर्वसाधारण को सरलता से प्राप्त नहीं हो सकती हैं।

"जनसंख्या का नियंत्रण" एवं 'संततिनियमन' की विचारधारा में आमूल अन्तर है। जनसंख्या की वृद्धि को रोकने का कार्य सरकार का है, जो आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति को ध्यान में रखकर-जनस्वास्थ्य को केन्द्र में रखकर करती है। 'संतति-नियमन' पति और पत्नी का व्यक्तिगत दायित्व है। W.H.O.(विश्वस्वास्थ्य संस्था) ने इसे व्यक्तिगत 'विचारने' और 'जीने' की ही एक महत्त्वपूर्ण व्यक्तिगत बात मानी है। यह व्यक्तिगत प्रश्न है और इसे अपने स्वास्थ्य एवं कुशलता के लिए अपनाया जाता है। इसीसे जनकल्याण एवं जनस्वास्थ्य की भावना दृढ़ होती है। देश की प्रगति में "संतति-नियमन' सहायक सिद्ध होता है।

तेहरान में १९६८ में अन्तरराष्ट्रीय संस्थान की समिति ने "कुटुम्ब योजना" को मानव के मूलभूत अधिकार के रूप में स्वीकृत किया। इसे 'जनकल्याण' एवं 'जनस्वास्थ्य' के लिए आवश्यक समझा। इसी अनुसंधान में सन् १९७४ वि० वर्ष को "विश्वजन-

संख्या वर्ष" की तरह मनाया गया । इस वर्ष में विश्व की बढ़ती हुई जनसंख्या के नियंत्रण पर विचार किया गया । इसी तरह १९७५ को "अन्तरराष्ट्रीय महिला वर्ष" के रूप में मनाया गया । इस वर्ष में प्रत्येक स्त्री को अपने तथा अपने बालक के स्वास्थ्य–सुरक्षा की स्वतंत्रता का अधिकार उद्घोषित किया गया ।

'जनसंख्या का आयोजन' और 'संतति नियमन' का एक ही अर्थ नहीं समझना चाहिए। क्योंकि आयोजन में जनता के स्वास्थ्य एवं प्रगति का ध्यान रखा जाता है । साथ ही भयंकर बीमारी, माता–पिता की शिक्षा, यौन–शिक्षा, शादी के पूर्व गर्भाधान, शादी के बाद गर्भाधान, गर्भाधान के समय स्वास्थ्य सुरक्षा तथा अपरिणीत–गर्भाधान के समय भी 'स्वास्थ्य सुरक्षा' का ध्यान इस 'आयोजन' द्वारा किया जाता है। अतएव, कुटुम्ब-आयोजन के द्वारा व्यक्ति अनिच्छित संतान को भी टाल सकता है और इच्छित बालक के स्वास्थ्य की सुरक्षा भी कर सकता है । इससे बालकों की संख्या, गर्भधारण के समय की मर्यादा, एक बालक और दूसरे बालक के बीच जन्म–समय का अन्तर भी निश्चित किया जाता है ! माता–पिता की उम्र एवं बालकों के जन्म-समय का भी आयोजन किया जाता है । निम्नलिखित तालिका से इस समस्या पर अधिक प्रकाश डाला जा सकता है-समस्या का आभास प्राप्त हो जाता है ।

वर्ष	विश्व की आबादी
0000 ई.	25 करोड़
1600	50 ,,
1800	100 ,,
1930	200 ,,
1960	300 ,,
1975	400 ,,
यदि यही बढ़ौती जनसंख्या में होती रही–कोई योजनाबद्ध प्रयत्न इसे रोकने का नहीं किया गया तो	
2000	600 करोड़
2025	1,000 ,,

वर्ष	भारत की आबादी
1900	24 करोड़
1920	25 ,,
1940	30 ,,
1950	36 ,,
1960	43 ,,
1970	54 ,,
1980	65 ,,
2000	100 ,,

यह अंदाज लगाया गया है कि पृथ्वी पर एक हजार करोड़ से अधिक जनसंख्या नहीं रह सकती है... यह आँक अगले ५० वर्षों में इसी तरह जनसंख्या वृद्धि निरंतर होती रही तो पूरा हो ही जाएगा ।

भारत विश्व का महान् देश है । जनसंख्या की वृद्धि में इसका दूसरा स्थान है । प्रथम चीन है । भूभाग के क्षेत्रफल के हिसाब से भारतवर्ष का सातवाँ स्थान है । अतः, २.४ प्रतिशत भूभाग पर भारतवर्ष विश्व की १५ प्रतिशत जनता को पाले हुए है । आज भारत की आबादी-(अमेरिका...२१ करोड़, रशिया...२६ करोड़,तथा जापान...११ करोड़)से अधिक है। यहाँ जनसंख्या की वृद्धि प्रत्येक वर्ष अधिक हो रही है । आजकल ६.५ करोड़ व्यक्तियों की संख्या प्रतिवर्ष विश्व की जनसंख्या में वृद्धि हो रही है । इसमें ५.४ करोड़ प्रगतिप्राप्त हो रहे देशों की और १.१ करोड़ प्रगतिशील देशों की जनसंख्या में वृद्धि हो रही है । भारतवर्ष में भी प्रतिवर्ष १.५ करोड़ की वृद्धि जनसंख्या में हो रही है । जो आस्ट्रेलिया की कुल जनसंख्या के समान है । जबकि आस्ट्रेलिया का भूभाग भारतवर्ष से २.५ गुना अधिक है । अतः, यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि भारतवर्ष अधिक जनसंख्या से सदा–सर्वदा घिरा हुआ है ।

जनसंख्या की वृद्धि की गणना जन्मदर–मृत्युदर से ही की जा सकती है । इस हिसाब से भारत में जनसंख्या अधिक से अधिक बढ़ती जा रही है । करीब ७० प्रतिशत विश्व की जनसंख्या प्रगति–पथ पर अग्रसर होने

वाले एशिया-अफ्रिका-दक्षिणो अमेरिका आदि देशों में ही प्राप्त है। इनका वृद्धिदर २.५ प्रतिशत है, जबकि प्रगतिप्राप्त देशों की जनसंख्या दर १ प्रतिशत ही है। जर्मनी, यू.के०, फिनलैण्ड, आस्ट्रिया और पूर्वी यूरोप के देशों की जनवृद्धि ०.२ प्रतिशत ही है। अब तो वहाँ जनसंख्या की वृद्धि जरा भी नहीं होती है। उसे बिलकुल नियंत्रित कर दिया है। कुवैत में ७.१ प्रतिशत जनसंख्या की वृद्धि होती है, जो विश्व में सब से अधिक है। अतः, हम कह सकते हैं कि विश्व के कई भूभागों में जो जनसंख्या की वृद्धि हो रही है, वह समानगति से नहीं हो रही है १९३० से ४५ तक विश्व जनसंख्या वृद्धि का दर एक प्रतिशत था, जो १९६० और तत्पश्चात् यह वृद्धिदर दो प्रतिशत हो गया।

भारत में आजकल सबसे अधिक चिन्ता जनसंख्या वृद्धि की है, जो प्रतिवर्ष २.२ प्रतिशत के हिसाब से हो रही है। इस वृद्धि का कारण मृत्युदर की कमी भी है।

वर्ष	प्रगतिशील देश			भारत	
	जन्म दर	मृत्यु दर	विकास दर	जन्म	मृत्यु
1900	40	30	10	49	42
1970	18	8	10	37	15

इससे यह स्पष्ट होता है कि भारतवर्ष में जन्मदर और मृत्युदर में बहुत ही विशाल अन्तर है। इसे डेमोग्रेफिक गैप कहते हैं। जो विशेषतः अति जनवृद्धि का ही कारण है।

(१) जनवृद्धि का विपरीत प्रभाव :

हम बढ़ती हुई जनसंख्या पर नियंत्रण क्यों रखते हैं? अधिक से अधिक जनवृद्धि राष्ट्रीय आय को कम कर देती है। रहन-सहन का स्तर भी निम्न हो जाता है। जिन देशों में एक प्रतिशत या उससे अधिक जनसंख्या बढ़ती है, उनकी राष्ट्रीय आय एवं रहन-सहन के स्तर में बहुत ही कमी आ जाती है।

देश	विकास दर	प्रति व्यक्ति आय वर्ष 1977	देश में की आय काक्रम
यू.एस ए.	1%	6200	N. 1
भारत	2 2%	120	N. 101

(२) अनाज उत्पत्ति और जनसंख्या :

जनवृद्धि की शक्ति अधिक है। पृथ्वी की उत्पादकता धीरे-धीरे कम होती गई है, जिससे मानव की खाद्यसामग्री की आवश्यकताएँ पूरी नहीं हो सकती हैं। अतएव, खाद्यसामग्री अधिक से अधिक पैदा करने के लिए अच्छी खाद, रासायनिक खाद तथा उपाय, 'बीज' की अच्छी जाति, सिंचाई योजनाएँ तथा कृषकों की सुख-सुविधा का प्रश्न, शिक्षा का प्रबन्ध आदि को पूरा करना जरूरी है। हरियाली क्रान्ति तभी सफल हो सकती है, जब बढ़ती हुई जनसंख्या पर नियंत्रण किया जाएगा।

(३) अधिक बालकों की उत्पत्ति से जनसंख्या में तो वृद्धि होगी ही लेकिन वे बालक माता-पिता की आय पर ही निर्भर रहेंगे और देश को या समाज को किसी भी रूप में उपयोगी सिद्ध नहीं हो सकेंगे। भारत में ४२ प्रतिशत ऐसे बालक हैं, जो १५ वर्ष की आयु से छोटे हैं। यू. के. (इंगलैंड) में २२ प्रतिशत ऐसे बच्चे हैं। इससे राष्ट्रीय व्यक्तिगत आय भी कम हो जाती है। इन बच्चोंके लिए प्रतिवर्ष खाद्यसामग्री, स्कूल, कॉलेज, मकान, अस्पताल और ऐसी कई वस्तुएँ चाहिए जो अनुत्पादक हैं और जिससे देश की आय में वृद्धि नहीं होती, बल्कि खर्च अधिक से अधिक बढ़ता जाता है। इसी के साथ-साथ देश में बाढ़, प्राकृतिक प्रकोप और मानवसंहार आदि के समय भी आर्थिक सहायता आवश्यक हो जाती है। इन सभी कारणों से व्यक्तिगत आय में वृद्धि न होकर कमी होती है जो देश की प्रगति में बाधक है। आर्थिक दृष्टि से व्यक्तिगत आय बढ़नी ही चाहिए।

(४) हम दिन-प्रतिदिन गरीब होते जा रहे हैं :

विश्व में सभी देश अपनी राष्ट्रीय आय में ४ प्रतिशत वृद्धि का दर प्रतिवर्ष करते रहे हैं। इसका यह तात्पर्य है कि जिन धनी देशों की जनसंख्या में केवल एक प्रतिशत वृद्धि हो रही है, वे अधिक से अधिक धनी हो रहे हैं। जब वे देश, जिनकी जनसंख्या में दो प्रतिशत या उससे अधिक वृद्धि प्रतिवर्ष होती जा रही है वे अधिक से अधिक गरीबी की ओर बढ़ रहेहैं।

जनवृद्धि के विविध-कारण :

इतनी अधिक जनसंख्या-वृद्धि हो रही है- इसके विविध कारण निम्न हैं।

(अ) ऊँचा जन्मदर :

यहाँ विवाह जल्दी या देर से सभी के होते ही हैं। यों तो जल्दी शादी हो जाती है । संतान-उत्पत्ति में भी इसलिए वे सहयोग देते हैं और संख्या की अभिवृद्धि होती है। आर्थिक स्वतन्त्रता या भावुक मनोवृत्ति-परिपक्वता का यहाँ बहुत ही कम ध्यान रखा जाता है।

ब-शादी :

हमारे देश में विवाह की वयमर्यादा कानून की दृष्टि से लड़की की १८ वर्ष और लड़के की २१ वर्ष है ।- लेकिन आज भी भारत में १० से १४ वर्ष की उम्र में दस प्रतिशत शादी कर लेते हैं । हाँ, ६०% प्रतिशत लड़कियाँ १५ वर्ष से १९ वर्ष की उम्र में शादी कर लेती हैं। यदि शादी की उम्र में देर की जाए-शादी कुछ समय के लिए स्थगित कर दी जाए तो बच्चों की संख्या में २५ प्रतिशत कमी हो जाएगी । जन्मदर भी ३६ से २७ हो जाएगा ।

भारत की ओसत आय-दर

वर्ष	पुरुष	स्त्री
1950	20.oyrs	13.0yrs
1970	23.8yrs	18,0yrs

(स) यौवन-प्राप्ति :

भारत में लड़कियों की यौवन-प्राप्ति जल्दी छोटी उम्र में हो जाती है। इसलिए वे गर्भधारण भी जल्दी ही कर लेती हैं। यहाँ लड़कियाँ १२ वर्ष से १४ वर्ष की उम्र में ही मासिकधर्म प्राप्त कर लेती हैं । जबकि विदेशों में १६ से १८ वर्ष की उम्र में यह परिपक्वता आती है। इसलिए भातीय लड़कियों का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता है । ऊँचाई भी कम ही होती है ।

(द) सन्तान :

जीवनस्तर जितना नीचा होगा संतान अधिक होगी, जितना ऊँचा होगा संतान कम होगी।-

(ध) अशिक्षा :

भारत में २९ प्रतिशत व्यक्ति ही पढ़े-लिखे हैं ! ये ही व्यक्ति अपनी संतान के प्रति पूरी तरह जाग्रत हैं। ये ही बालकों के प्रति अपने उत्तरदायित्व को समझते हैं, अशिक्षित व्यक्तियों के वहाँ ६.६ प्रतिशत संतान पैदा होती हैं, जबकि पढ़े-लिखे व्यक्तियों के यहाँ २ प्रतिशत ही जन्म लेते हैं ।

(न) रूढ़िगत परंपरा एवं व्यवहार:

यहाँ भारत में प्रत्येक स्त्री को शादी करनी ही चाहिए । प्रत्येक व्यक्ति के "पुत्र" होना ही चहिए, यह बच्चों को भगवान् की देन या आशीर्वाद माना गया है ।

(त) कुटुम्ब-आयोजन का अभाव : भारत में कुटुम्ब-आयोजन या नियंत्रण का विचार अभी नया-नया है । अभी भी जनसाधारण के विवाह-जीवन में इसका पूरा प्रचार या प्रसार नहिंवत् है । यदि सहजता से प्रत्येक कुटुम्ब में बच्चों की संख्या पर नियन्त्रण अपना लिया जाए, तो उनकी संख्या कम हो सकती है और धीरे-धीरे जन्मदर घटता जाएगा -

If the number of chiidren per couple i? brought down to —	Then the birtherek will fall to
3	25
2	17
1	9

लेकिन हमारे प्रजातन्त्रात्मक स्वतंत्र देश में इस तरह का विचार अधिक प्रचलित नहीं हो सका है।

(थ) मृत्युदर की कमी :

मृत्युदर की कमी के विविध कारण हैं । इस कमी से कई लाभ प्राप्त हो सकते हैं । लेकिन भारत में यह मृत्युदर की कमी भविष्य में भी नहीं हो सकेगी । क्योंकि आधुनिक वैज्ञानिक दवाइयाँ जिससे स्वास्थ्य की सुरक्षा रहती है । Antibiotics और कितनी ही ऐसी दवाइयाँ जो मानव-जीवन को दीर्घायु करने में सहायक हैं, मृत्युदर कम हुआ है । लेकिन अभी भी स्वच्छता एवं जनस्वास्थ्य की सुरक्षा के कई कार्य बाकी हैं। तथा अन्य छूत की दवाइयाँ जनसाधारण तक नहीं पहूँच सकी है ।

(स) उत्पादक-शक्ति :-

जब स्त्री की आयु १७ वर्ष की हो और उसकी शादी हो जाए तो वह १३ बच्चों की माँ बन सकती है

ऐसी संभावना है । लेकिन यह संख्या बहुत कम है । भारतीय नारी औसतन ६–७ बच्चों की माँ बन जाती है ।

राज्य	सैंतालीस वर्ष या उससे अधिक उम्र की स्त्रियों से पैदा होने वाले बच्चों का औसत जिनका वैवाहिक सम्बन्ध छिन्न-भिन्न न हुआ हो ।	
आन्ध्र	5.59	न्यूनतम
राजस्थान	7.07	
गुजरात	7.23	
उत्तर प्रदेश	7.47	
बिहार	8.05	अधिकतम
औसत	6.54	

यह उत्पादकता निम्नलिखित कारणों से प्रभावित होती है :-

(अ) शादी की उम्र :

शादी की उम्र का प्रभाव संतान– उत्पत्ति पर अवश्य रहता है । यदि बड़ी उम्र में शादी होगी तो बच्चों की संख्या कम होती जाएगी । ४५ वर्ष तक की उम्र की कन्याओं की संतानों की उत्पत्ति और परिणीत जीवन का परिणाम इस प्रकार है :

6.7	विवाहित वच्च की उम्र	14 वर्ष
6.0	,, ,, ,,	14–77 ,,
5.7	,, ,, ,,	18–21 ,,
4.6	,, ,, ,,	22 वष से कम

(ब) संतान के जन्म की समय-मर्यादा :

यदि प्रत्येक बालक के जन्म को एक वर्षके लिए स्थगित कर दिया जाए, तो प्रत्येक की उम्र में अन्तर रहेगा और कुल उत्पादकता में भी कमी आ जाएगी । अतएव, बच्चों के जन्म की समय–मर्यादा का प्रभाव कुल उत्पादकता पर भी पड़ता ही है । इस तरह जनसंख्या की वृद्धि में भी कमी आ जाती है ! इसी तरह शिक्षा--'सामाजिक एवं आर्थिक प्रभुत्व' तथा 'भोजन' का प्रभाव भी उत्पादकता एवं प्रजनन–शक्ति पर पड़ता ही है ।

जनसंख्या–वृद्धि की समस्या का निराकरण :

जनसंख्या की समस्या को उपर्युक्त सभी कारणों के संदर्भ में देखना चाहिए, समझना चाहिए । इनमें से कोई भी ऐसा कारण नहीं है जो उपयोगी न हो, लेकिन कुटुम्ब आयोजन' इनको सबसे अधिक श्रेष्ठ और प्रभावित कर सकता है । संततिनियमन से केवल स्त्रियों का ही स्वास्थ्य नहीं सुधरेगा, बच्चे भी स्वस्थ--'हृष्टपुष्ट' होंगे । इससे बालकों की मृत्यु--संख्या में भी कमी हो जाएगी । बालक दीर्घायु होंगे, स्वस्थ भी होंगे । माता पिता का संपूर्ण प्रेम उन्हें प्राप्त होगा । छुआछूत की बीमारो से मुक्त रहेंगे और सामान्यज्ञान भी अच्छा और ऊँचा होगा ।

भारत में १०.४ करोड़ दम्पति १४ से ४५ वर्ष की उम्र के ऐसे हैं, जो प्रजनन की शक्ति रखते हैं । इन सभी को 'कुटुम्ब–नियोजन' पद्धति को अपनाना चाहिए यह एक सर्वस्वीकृत सत्य है । इससे जन्मदर में अवश्य कमी हो जाएगी । अब तक कोई ऐसा तरीका कुटुम्ब नियोजन का प्राप्त नहीं हो सका है जिससे सामाजिक–सांस्कृतिक परंपरा एवं सौंदर्य की प्रतिरक्षा की जा सके और जो जन–समाज की नैसर्गिक प्रगति में सहायक–सिद्ध हो । अतएव, अभी तक जो प्रचलित वैज्ञानिक तरीके कुटुम्बनियाजन के हैं उनमें से किसी को भी व्यक्ति अपनी इच्छानुसार अपना सकता है और जीवन को अधिक से अधिक सुखी–समृद्ध–आनन्दायी बना सकता है ।

संततिनियमन के लिए ऑपरेशन ही एक मात्र निश्चित और स्थाई उपाय है । अतएव भारत एवं समस्त विश्व में 'जनसंख्या' वृद्धि को रोकनेके लिए आवश्यक है । हाँ, शारीरिक स्वास्थ्य–सुरक्षा का ध्यान रखकर ही यह अनुकूल उपाय सर्वत्र अपनाना चाहिए । तभी 'दिन-दूनी रात चौगुनी' बढ़ती हुई इस जनसंख्या पर नियंत्रण हो सकेगा और जनसाधारण के विशेषकर बच्चों और स्त्रियों के स्वास्थ्य की पूर्ण सुरक्षा हो सकेगी ।

अंग्रेजी से अनुवादक–
प्रो० अखिलेश शाह

स्वराजनगर
अहमदाबाद–३८००१५

शौर्य

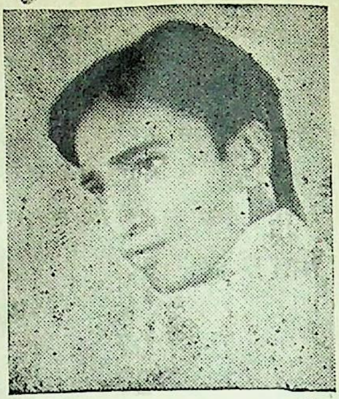

लेखक

श्री सलीम शेख

[श्री शेख जी तरुण और होनहार लेखक हैं । मेवाड़ के महाराणा अजयसिंह जब विलासिता में डूब गए थे, तब उनके सेनापति महासिंह ने किस प्रकार शौर्याभिभूत किया, उनकी इस कहानी में पढ़िए । —सम्पादक]

राजस्थान का सुयश यदि था, तो मेवाड़ के कारण । चित्तौड़ की गौरवान्वित भूमि अभी प्रताप के त्याग-बलिदान को विस्मृत नहीं कर पाई थी । भले ही युवराज अजय सिंह भोग-विलास में लिप्त राणावंशीय शौर्य से हीन था ।

उस दिन तो उसकी विलासिता और भी चरमसीमा पर पहुँच गई थी । वसन्त के बाद होली की मादकता छाई हुई थी । रनिवास से लेकर नगर के हाट-गलियारों तक रंग भरे बड़े-बड़े पात्र सुसज्जित रखे हुए थे, स्थान-स्थान पर कुकुंम-गुलाब के थाल शोभित थे । हर एक चौराहे पर लकड़ियों के मंच होली-दहनके लिए सजे थे । सुन्दर नवेली नारियाँ रंग-विरंगे वस्त्रों से सुसज्जित उन होलिकाओं की पूजा-अर्चना कर रही थीं ।

राजप्रासाद और रनिवास के मध्य एक अपूर्व होलिका सुसज्जित की गई थी । चन्दन की शलाकाओं से निर्मित अगर, धूप आदि द्रव्यों से पूरित उस होलिका को वन्दनवार-पताकाओं से सुशोभित किया गया था । सामन्तपरिवारों तथा राजाओं के रंगमहल की महिलाओं द्वारा उसे पूजित और पुष्पित किया गया था ।

प्रातः की मधुरिम बेला । अभी भास्कर उदय नहीं हुए थे । मन्द-मन्द शीतल समीरण बह रहा था । प्रातः की पावन बेला के कारण मंदिरों में शंख-घड़ियालों की ध्वनि प्रस्फुटित हो रही थी । ऐसे समय में राजपुरोहित द्वारा मन्त्रोच्चारण हुआ । महाराज अजयसिंह ने होलिका-वंदन किया और तत्पश्चात् विधिवत् होलिका दहन कर दिया गया । एकाएक वातावरण में उल्लास छा गया... होली है... के गगन-भेदी स्वर वायुमण्डल में गूँज उठे। गुलाब, अबीर की प्रबल बौछार से वायुमण्डल ही रंग-बिरंगा हो उठा, सो मानव-मन को तरंगित होते कहां समय लगता है ।

मादक-पेय भर-भर कर पात्र पिये और पिलाये जाते लगे । सारा नगर रंग-विभोरित हो कर नाच उठा ।

महाराणा ने ज्यों ही रनिवास में पदार्पण किया; नवयौवनाओं की मदमाती टोलियों की टोलियों से घिरी चंचल कटाक्ष छेड़ती सखियों के मध्य में थिरकती महारानी विजयलता ने श्वेत परिधान से लसित महाराज का खश और केवड़े की सुगन्ध से सुरभित केशु के पुष्पों से और रंजित जल की पिचकारी के प्रहार से स्वागत किया । महाराना ने भी दोनों मुट्ठियों में गुलाल लेकर उनके अरुनारे कपोलों पर मल डाला । परम उल्लास की लहर व्याप्त हो गई । रंग को रंग-बिरंगी पिचकारियों की फुहार ने अनोखा ही रंग बिखेर दिया । महाराज मतवाले हुए सुकुमारियों के मध्य कान्हा की तरह अठखेलियाँ कर रहे थे । तभी प्रतिहारी का स्वर गूँजा- 'सावधान ! महाराणा के समीप निवेदनार्थ सिंहवंशशिरोमणि सेना-

नायक पधार रहे हैं ।' सभी कुछ एकदम शान्त हो गया । महिलाओं का थिरकता शरीर स्थिर हो गया । महारानी ने घूँघट खींच लिया, सखियाँ सिमट गईं । तभी तेजस्वी सेनापति महासिंह ने पदार्पण किया । महाराणा जो झल्लाहट के कारण भृकुटि ताने खड़े थे, महासिंह जी का रौद्र रूप देखकर सहम गए ।

'क्या बात है पूज्य काकाजी' वे बोले ।

'जुल्फिकार खाँ पूरी मुगलिया फौज के साथ चढ़ आया है और अभी कुछ ही देर में नगर में प्रवेश कर जाएगा । इसलिए राग-रंग छोड़ कर युद्धके लिए तैयार हो जाइए ।'

उन्होंने उसी प्रकार कड़े शब्दों में कहा, 'नगर का आबाल-वृद्ध अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित शत्रु के प्रहार का प्रत्युत्तर देनेके लिए नगर के बाहर पहुँच चुका है । मैं जा रहा हूँ तथा आशा करता हूँ कि महाराणा के कुल का तिलक आर्योचित सम्मान के साथ शत्रु का सामना करेगा ।'

और सेनापति जिस वेग से आए थे, उसी वेग से वहाँ से चले गए । महाराणा कुछ देर तो खड़े सोंचते रहे फिर शीघ्र शस्त्रागार की ओर बढ़ गए ।

एक ओर यवनसेना आक्रमणातुर खड़ी थी, दूसरी तरफ मेवाड़ की सेना रक्षाके लिए प्राण अर्पित तक कर देने का संकल्प लिये बढ़ आई, घोड़े हिनहिनाने लगे, हस्तिदल चिग्घाड़ने लगा । वीर अपने-अपने पक्ष का घोष कर एक-दूसरे पर टूट पड़े । भयंकर मार-काट मच उठी । वीर महासिंह तथा महाराज अजयसिंह के द्वारा प्रोत्साहित क्षत्रियदल आक्रमणकारियों पर टूट पड़ा-गुलाल, अबीर की होली भूलकर रक्त-होली खेलने लगा । यह उस रक्त का मनोहर रंग था जिसके आगे गुलाल अबीर का रंग वैसे भी फीका पड़ जाता है । प्रातः से सांझ तक भयंकर ताण्डव होता रहा । घमासान युद्ध में दोनों दलों के शूर-वीर कटते-छंटते रहे । नगर के बाहर का मैदान लाशों से पट-सा गया । हर युवक रक्त-स्नान के कारण नहाया-सा लगता प्रतीत होता था । भला, उस होली के मदमाते शूरों को कौन हरा पाता ?

सांझ होते ही एक ओर प्रबल हल्ला बोल कर राजपूत सेना ने मुगलिया सेना के सेनापति जुल्फिकारखाँ को शिकस्त दे डाली । मुगलिया फौज भाग छूटी... राजपूत उन्हें दूर तक खदेड़ कर वापिस लौट आए ।

लेकिन यह जीत अस्थाई जीत थी । कल फिर आक्रमण होना था और आज के आक्रमण के कारण सैकड़ों राजपूत अपने प्राण अर्पित कर चुके थे ।

उन वीरों को उठाया-सजाया गया । गुलाल, अबीर से उन्हें पाट-सा दिया गया और फिर वीरोचित सम्मान के साथ उनकी चिताएँ सजाई गईं । बिल्कुल होलिका-दहन की ही तरह की । चन्दन और अगर से सुशोभित...इत्र आदि से सुगन्धित वे चिताएँ प्रज्ज्वलित हुईं तथा वीर राजपूत बालाएँ उनके शौर्य का गायन करती हुई सहर्ष चिता की लपलपाती ज्वाला में प्रविष्ट होने लगीं । अभी होलिका की अग्नि शीतल भी नहीं हो पाई थी कि प्रचण्ड जौहर-व्रत की ज्वालाएँ भड़क उठीं और आर्यबालाओं का शौर्य आकाश चूमने लगा ।

-५६-५, सोमाजी की चाली,
चमनपुरा, अहमदाबाद-३८००१६

रंगायन
लोकसंस्कृति तथा लोककला का हिन्दी
मासिक पत्र । वार्षिक मूल्य ७ रुपये
सम्पादक : डा० महेन्द्र भानावत
लोककला मण्डल, उदयपुर

आत्म-विश्लेषण
(श्रेष्ठ चिन्तन का संकलक पाक्षिक)
संपादक : अशोक कुमार,
सह सम्पादक राजेन्द्र मानव
वार्षिक शुल्क १२ रु., : प्रति ६७ पैसे
३०९/७ चौधरियान स्ट्रीट, जींद १२६१०२

विचार-परक

जँवाई-दसवाँ ग्रह

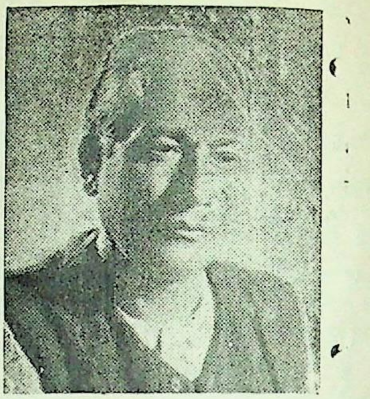

लेखक

प्रो० श्रीचन्द्र जैन

एम. ए. (हिन्दी)

[श्री जैन जी एक अनुभवी, ज्ञानवान और कुशल लेखक हैं । इस लेख में जमाई या दामाद की ग्रहीय स्थिति पर प्रकाश डालने वाले तर्क-प्रमाण काफी दिलचस्प हैं । इसे पढ़िए और स्थिति के सुधारने की प्रेरणा लीजिए । सम्पादक]

यह एक भोजपुरी कहावत है जिसमें संतप्त ससुर द्वारा दमाद को दसवाँ ग्रह कहा गया है । संस्कृत में भी इसी भाव को प्रदर्शित करने वाली लाकोक्ति है :- "जामाता दशमो ग्रहः ।" इससे प्रमाणित होता है कि दामाद की कुत्सित प्रवृत्तियों ने ही उसे ईस निन्दनीय स्थिति में चिरकाल से पटका है । अन्यथा जिस प्रकार पुत्री दोनों कुलों की दीप्ति मानी गई है, उसी प्रकार दामाद को भी दोनों परिवारों का द्युतिमान नक्षत्र कहा गया है । जामाता (दामाद) इस विराट् विश्व की अनुग्रहात्मक निधि है, जो पुत्रवत् अपना महत्त्व रखता है । परिवार के कुशल-क्षेम का मूल आधार दामाद है और यही भाग्यविधाता माना जाता है एवं अपने ससुर-सास का प्राण-प्रिय कहा गया है ।

संसार के अस्तित्व के साथ दामाद का अस्तित्व चिरंतन है । हम भले ही स्वयं को भूल जाएँ, लेकिन दामाद शब्द के माधुर्य को कभी विस्मृत नहीं कर सकते । ससुर का घर जामाताके लिए स्वर्ग है और इसीलिए भगवान् शंकर हिमालय को कभी भूलते ही नहीं हैं । विष्णु अपनी प्रिया के सलौने-सजीले मधुर निवास जलनिधि की लहरों के साथ निरन्तर झूलने में ही सदा आनंद का अनुभव करते हैं । फलतः,इस असार संसार में श्वसुर(ससुर) का मंदिर (घर) ही सारभूत है । इसलिए, भगवान् शिव हिमगिरि (हिमालय) की ओर आँखें लगाए रहते हैं । कभी इससे विलग होना ही नहीं चाहते हैं । इसी प्रकार कमला (लक्ष्मी) के महल-सागर में विष्णु रहकर ही विश्व की संरक्षा में दत्तचित्त रहा करते हैं । कहा भी तो है :-

असौ खलु संसारे सारं श्वसुर मंदिरम् ।
हरौ हिमालये शेते, हरिश्शेते महोदधौ ।

इतना मधुर सम्बन्ध कैसे कठोर बना, रसभरी प्यारी जलेबी कैसे नीम-सी कटु हो गई, भागीरथी (गंगा) का स्नेहिल सलिल कैसे कड़ुआने लगा, मीठा अंगूर किस प्रकार खट्टा बना और मिसरी-सा मीठा स्वाद क्यों विष-युक्त बनने लगा-इसकी भी युगानुकूल एक लम्बी कहानी है । विश्वासपात्र दामाद अविश्वास का आज कारण बन रहा है, यह भी एक विचित्र व्यथा-कथा है ।

नीति-निपुण लोक-कवि घाघ का कहना है कि संसार में ये तीनों ही महामूर्ख हैं—

घर घोड़ा पैदल चलै, तीर चलावै बीन ।
थाती धरै दामाद घर, जग में भकुआ तीन ।

जो घर में घोड़ा रहते हुए भी पैदल चलता है, जो बीन-बीन कर तीर चलाता है तथा जो अपनी कमाई की थाती एवं बचे-बचाए धन को दामाद (जमाई) के घर जमा रखता है, संसार में ये तीनों ही मूर्ख हैं ।

कोयल की भाँति काला दामाद यदि परी-सी गोरी पत्नीके लिए निरन्तर लालायित रहे तो उसकी यह

कामना तुच्छ मानी जाएगी। यदि वह सीता–सी साध्वी जीवन–संगिनी चाहता है तो, उसे राम की भाँति आदर्श चरित्रवान् होना पड़ेगा। यह स्पष्ट है कि वैवाहिक जीवन की सफलता वर्तमान अथवा भावी जामाता के सच्चरित्र पर पूर्णरूपेण आधारित है। लोभी अथवा चरित्र–हीन दामाद ही आज अभिशाप बना हुआ है। हजारों ऐसे दृष्टान्त देखने में आ रहे हैं जहाँ लोभी जामाता अनावश्यक अथवा अनुपयोगी वस्तुओं की माँग अपने ससुर के सामने प्रस्तुत करते हैं तथा दूसरों की देखा–देखी पिता के समान श्वसुर एवं मातृवत् सास को निरन्तर ऐसे बहुमूल्य पदार्थों को देनेके लिए परेशान किया करते हैं, जिन्हें देना दोनों (सास–ससुर) के लिए असंभव–सा हो जाता है। परिणामस्वरूप बहू ससुराल में रात-दिन यातनएँ सहती हैं और दामाद निकर्म होकर अपनी जीवन-संगिनी को आत्महत्या करनेके लिए विवश कर देता है। ऐसे ही निष्ठुर दामादों ने समाज को कलुषित बना दिया है और ये ही जामाता 'यम' की भाँति राक्षसी प्रकृतियों के साकार प्रतीक बन बैठे हैं। यदि दसवाँ ग्रह न कहा जाए, तो क्या वे केन्द्र में स्थित गुरु की संतान बनेंगे? ऐसे लोकगीतों का अभाव नहीं है जिनमें कन्या की ओर से पिता अथवा बाबा से निवेदन किया गया है कि वे ऐसे वर की खोज करे जो शक्तिशाली हो, सच्चरित्र हो, लोभी न हो, धनहीन न हो, हल जोतने वाला न हो, परन्तु चन्द्रमा के समान मुँहवाला हो, गंभीर हो, परोपकारी हो और गौर वर्ण का हो, शास्त्रज्ञ हो, सबका नायक हो, सभा-प्रवीन हो, पूर्ण वयस्क हो, जिसकी माता कर्कशा न हो, धार्मिक हो, कुरूप न हो, विविध कला प्रवीण हो और धैर्यवान् भी हो।

(१) जे वर सुगना तु देखेउ सुन्दर जेकरि चाल गम्हीर।
जेहि घरा सुगना तु सम्पति देखेउ
वहि घर रचेउ विआह।

सभवा बैठ हम बर जे चाहिल, जैसे सरैया में चाँद रे।

देत्र मैं अंग कै अँगरखा औ सिर कै पगड़िया रे।
दुलरू देवै मैं सोरहो सिंगार पहरि गंगा आवहु रे।

बाबा एक कहा मेरा मानियो, साँवरला बर मत ढूँढ़ियो।

बेटी मनत करै मन पछतावला तेरी भाभी गोरी सैयाँ सांवला।

एक निर्धनि या जिन देउ बाबुल, रहन देउ कुवाँरी।

एक हर जोतिया जिन देउ बाबुल, रहन देउ कुवाँरी।
चंद–बदन से लरिका ढूँढ़ो, मेरे कान्हा का उनहार॥

अवध के विवाह–गीतों की ये पक्तियाँ हैं और आज जामाता हिन्दी जमाई जामातृ या जामाता से सम्बद्ध है।

निरुक्तकार यास्क के अनुसार 'जाय भाति मिनोती वा' अर्थात् दामाद वह है जो स्त्री से संतान पैदा करे। ऋग्वेद में तथा अन्यत्र भी इस शब्द का प्रयोग बहनोई या पति के अर्थ में हुआ है। ये ही संतान पैदा करते हैं। अतः, इनके लिए भी यह शब्द उपयुक्त ही है। बाद में इस शब्द का प्रयोग दामादके लिए ही सीमित हो गया है। क्योंकि कन्या संतानार्थ दामाद को ही दी जाती है।"

जैसा कि पूर्व में संकेत किया जा चुका है, दामाद की ललचाई आँखें हमेशा ससुराल के सुखों की ओर ताकती रहती हैं। क्योंकि इसके दामाद के सारे नखरे ससुराल की चिकनी भीतों से ही टकराते रहते हैं। प्रायः देखा गया है कि जब कभी दामाद के दिल में नजाकत या ऐश की तड़पन होने लगती है, वह इठलाता हुआ ससुराल की डगर में चलता दिखाई देता है। शहरों की खुशनुमा सड़कों पर तैरनेवाली ससुरालों की कमी आज के युग में है ही नहीं। जिस प्रकार चातक स्वाति–बुन्द को पीकर तृप्त हो जाता है, वैसे ही जामाता प्रेम के मदभरे जाम को पीकर अपनी जिन्दगी को सफल बनाता देखा गया है। उस इश्क के जाम में सालियों का मृदुल हास्य अधिक मादकता देता है लेकिन यह सब क्षणिक हैं।
डॉ० भोलानथ तिवारी: शब्दों का अध्ययन पृ०२१२

इस संदर्भ में कई कहावतें चर्चित हैं।
ससुराल सुख की सार जो रहे दिना दो चार।
जो रहे मास पखवारा, हाथ में खुर्पी बगल में चारा।

–हिन्दुस्तनी कहावत कोश पृ. ३५२ ।

दुर जंवाई फूल बरोबर गांव जवाई आंदो ।
घर जंवाई गधे बराबर चाये जितना लादो ।
सासरो सुख बासरो, पण च्यार दिनां रो आसरो ।
रैसां मास दो मास, देसां दाती बढ़ासां घास ।
(राजस्थानी कहावत)

ससुराल में अधिक रहने पर दाव (एक प्रकार का घास काटने वाला औजार,) हाथ में लेकर घास काटना पड़ता है

ससुराल सुख को सार, जो रये दिना दो चार ।
जो रहे मास पखवार, हाथ में खुरपी बगल में फार ।
(बुंदेली कहावत)

सासरा सुख वासरां, ने वे घड़ीनां आसरा, ।
तीजें दहाड़े रहे तो खाय खासड़ाँ ।

गुजराती कहावत खासड़ाँ = दुर्व्यवहार एवं मोटा भोजन

ससुराल सुख की सार ।
रहे दिन दो चार ।
रहे दिना दस बीस ।
(खड़ी बोली कहावत)

खरिया खुरपा है बख्शीस ।
एक दिन का मेहमान,
दो दिन की पई पई"
तीसरे दिन नहीं जाए तो उसकी अक्कल गई ॥
(मालवी कहावत)

हमारे युवक दामादों को स्वावलंबी–स्वाभिमानी एवं मनस्वी रहकर हर वक्त ससुराल की तरफ नहीं देखना चाहिए तथा पिता–तुल्य एवं माता–तुल्य सास–ससुर को उचित सम्मान देकर अपनी जीवन–संगिनी को किसी भी रूप में अपमानित और पीड़ित नहीं करना चाहिए। उसके त्याग, सेवा, साधना का आप आदर करें और अपने परिवार को सुखी–सम्पन्न बनाएँ । यदि आप इस प्रकार बदलते हैं, विश्वास कीजिए कि कोई भी आपको कष्टदायी दसवाँ ग्रह नहीं कहेगा, वरन् आप केन्द्रस्थ गुरु की भाँति सबको प्रिय लगेंगे ।

मोहन निवास
कोठी रोड, उज्जैन (म. प्र.)

० कहकहे ०

पति–"क्या तुम अपनी बेवकूफी का सबसे बड़ा प्रमाण दे सकती हो ?"

पत्नी–"तुमसे शादी कर ली, यही क्या छोटा प्रमाण है ।"

+ + + +

पिता–(अपने बेटे से) "बेटा, मैंने तुमसे वादा किया था कि यदि तुम पास हो गये, तो तुम्हें मोटर दिलाऊँगा । फिर भी तुम फेल हो गए । अबतक तुम क्या कर रहे थे ?"

बेटा–"पिता जी, मैं मोटर चलाना सीख रहा था ।"

+ + + +

शिक्षक–"बच्चो, तुम्हें मालूम है कि पक्षियों की आँखें तेज होती हैं ।"

लड़का–"जी हाँ ।"

शिक्षक–"तुम कैसे जानते हो ?"

लड़का–"क्योंकि हमने कभी भी पक्षियों चश्मां पहने हुए नहीं देखा ।"

+ + + +

होटल का मैनेजर–"कहिए साहब, रात कैसी कटी ?"

यात्री–"बहुत अच्छी । आपके होटल के मच्छर इतने शक्तिशाली थे कि मुझे चारपाई से उड़ाकर ले जाते, किन्तु आपकी चारपाई के खटमलों ने मुझे पकड़ रखा था ।"

ईश्वर भवन

-आधुनिक सुविधा से सुसज्ज सामाजिक केन्द्र

अहमदाबाद नगर को साबरमती नदी दो भागों में बाँटती है । मूल नगर साबरमती के पूर्व में है । नदी के पश्चिम भाग को जोड़ने के लिए अब छोटे-बड़े पाँच-छः पुल बन गए हैं । पहले केवल एलिसब्रिज था। उसी के नाम पर इस पूरे समृद्ध-संभ्रान्त भाग को एलिसब्रिज कहते हैं, जो आजकल कई विभागों में बँट गया है। उनमें नवरंगपुरा विभाग गाँधी पुल के पश्चिमी भाग में स्थित है, जो सचमुच नूतन रंग-ढंग में अपना विशिष्ट स्थान रखता है । इसमें स्कूल, कालेज, स्टेडियम, स्नानागार, नवजीवन प्रेस, आयकर कार्यालय, गुजरात विद्यापीठ, आकाशवाणी के साथ नई दर्शनीय-उल्लेख्य इमारत ईश्वर भवन है । यह तिमंजिला इमारत केवल ७-८ वर्ष पूर्व ही निर्मित हुई है, किन्तु सामाजिक-सांस्कृतिक प्रवृत्तियों का आधुनिक केन्द्र यह भवन अपनी व्यवस्था और सुविधा के कारण इस विभाग का आकर्षण-केन्द्र बना हुआ है ।

निर्माण :

ईश्वर भवन का निर्माण-कार्य ईश्वरदास झाबरमल ट्रस्ट द्वारा हुआ है । भोजनगर (राजस्थान) के निवासी सेठ श्री झाबरमल जी ने इस भवन का शिलान्यास ता० ४-२-१९७१ को किया था । भवन दो वर्ष में बनकर तैयार हुआ और यह सन् १९७३ में सम्पूर्ण रूप से तैयार होकर सर्व साधारण के उपयोग में आने लगा ।

विस्तार और स्थिति :

भवन कुल १५०० वर्ग गज के घेरे में स्थित है । इसमें तीन मंजिलों में कुल ३३ कमरे हैं, जिसमें दो बड़े हाल भी सम्मिलित हैं । विशेषता तो यह है कि १८ कमरों में शायिकाएँ, पंखे, स्नानघर आदि की आधुनिक सुविधाएँ हैं, हवा-प्रकाश की सुन्दर व्यवस्था है । एक साथ ७० व्यक्तियोंके लिए सर्वाधिक सुविधाएँ हैं । ईश्वरदास झाबरमल ट्रस्ट के ट्रस्टी सेठ श्री झाबरमल जी, श्रीमती कलावती देवी, श्री रमाकान्त जी, श्री श्रीकान्त जी तथा श्री योगेशकुमार जी हैं । यह भवन एच० एल० कामर्स कालेज के उत्तर में स्थित है । स्थापना का उद्देश्य समाज-सेवा, प्राणी-सेवा और धर्मपरायणता है । इस भवन में प्यासोंके लिए प्याऊ और पशुओं के लिए हवाड़े का प्रबन्ध बारहों महीने रहता है ।

उपयोगिता :

भवन में शिशु-कक्षा से लेकर सातवीं कक्षा तक तेरह कमरों में प्राथमिक विद्यालय चलता है । उसमें १६ अध्यापक-अध्यापिकाएँ तथा सात कर्मचारी हैं । शादी-ब्याह और उत्सव-अभिनन्दनके लिए यहाँ इतनी सुन्दर व्यवस्था है कि लोग छह-सात महीने पहले ही से बुकिंग प्राप्त करनेके लिए लालायित रहते हैं । भवन में होमियोपैथिक दावाखाना भी है, जो आसपास के लोगों में परिचित और चर्चित है । इसका लाभ प्रतिदिन औसतन ५० रोगी लेते हैं । भवन की सारी प्रवृत्तियों पर वर्ष भर में कम से कम एक लाख रुपए खर्च होते हैं ।

जब हमने श्री झाबरमल जी से इस भवन के सम्बन्ध में जानकारी लेनी चाही, तब उन्होंने इसे ख्याति समझकर संकोच प्रकट किया, किन्तु उपयोगिता का प्रकाशन करने की बात से वे सहमत हुए । हमने सेठ जी से पूछा कि इस भवन के बारे में अभी आपके कौन-कौन से स्वप्न शेष हैं और भवन की अतिप्रियता का कारण क्या है, तब उन्होंने मुस्कराते हुए कहा ।

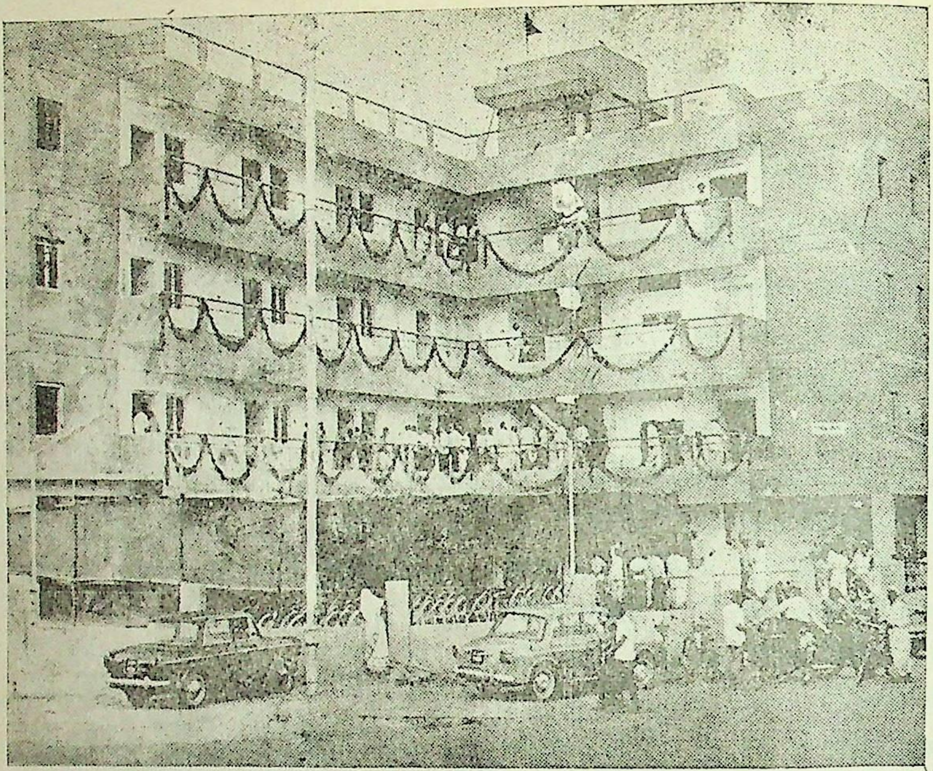

"मैं प्रति दिन नियमित रूप से भवन के प्रबन्ध को दो घण्टे देखता हूँ। भवन की स्वच्छता, सुघड़ता, व्यावहारिकता और आवश्यकता पर ध्यान देता हूँ। त्रुटियों को दूर करने का प्रयत्न करता रहता हूँ। समीपस्थ थोड़ी भूमि मिलने की आशा है। वह जमीन मिल जाए, तो हाई स्कूल तक की पढ़ाई का प्रबन्ध करने की मेरी कल्पना है।"

भवन में समय-समय पर व्याख्यान और धार्मिक प्रवचन के भी आयोजन होते हैं, जिसका लाभ आस-पास के लोग बड़े उत्साह से लेते हैं।

सचमुच, ईश्वर-भवन इस विभाग का एक परिचित-स्थान है। भवन की विशेषता के कारण इससे पूर्व जाने वाले मार्ग का नाम ईश्वर भवन मार्ग रखा गया है। आसपास के सुन्दर, सुसज्जित, विशाल, मनोहर भवनों के बीच यह भवन अपना मस्तक ऊँचा किये खड़ा है और सेठ जी के पिता की याद दिलाता हुआ ईश्वर की भी याद दिलाता है। यह भवन भौतिकता और आध्यात्मिकता का संगम-स्थल बन गया है।

राजस्थान भवन

॰ सूचना ॰

राजस्थान भवन में विवाहादि प्रसंगों में उपयोगी सभी तरह के बर्तन, गिद्दे, दरियाँ, टेबल-कुर्सी आदि उपलब्ध हैं, जो भवन के बाहर भी उपयोग के लिए दी जाती हैं। आप उनका आवश्यकतानुसार लाभ-लें।

टे. नं २३२२५

गोरधनदास मदनलाल गुप्ता
संयोजक, भवन कमेटी—
राजस्थान सेवा समिति, शाहीबाग अहमदाबाद-४

व्यापार-व्यवहार की शिक्षा-शती

(भाग १)

-श्री नयनचन्द बोरड़िया बी. ए.
बी० एस-सी०एल-एल०बी०

[श्री नयनचंदजी बोरडिया बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी के सन् १९३१ के ग्रेज्युएट हैं। ७५ वर्षीय श्री बोरडिया जी वाचन-प्रिय, विचारशील एवं समाजिक चेतनावाले वृद्ध युवक हैं। स्वयं को अभी भी विद्यार्थी मानते हैं, थोक कपडे के प्रमुख व्यापारी हैं उनके अभ्यास और चिन्तन में से कुछ कणिकाएँ पाठकों के लाभार्थ दी जो रही हैं -सम्पादक]

१ जो अपने बच्चों को व्यवसाय सिखाते हैं, वे उनके लिए बेहतर करते हैं बनिस्बत उनके जो उन्हें सम्पत्ति देते हैं।

२ एक काम जो अच्छी तरह से किया जाए, उससे बढ़कर कोई दूसरी खुशी नहीं है।

३. कठिन परिश्रम, एकाग्रता, संलग्नता ये व्यापार में सफलता के रहस्य हैं।

४ उन्नति हेतु जो यथार्थ विचार पैदा होते हैं वे व्यक्तिगत मस्तिष्क की उपज हैं न कि भीड़ के दिमाग।

५ छोटी चीजों को बड़ा मानकर पूरा करना सीखो, तब तुम बड़ी चीजों को करने योग्य हो जाओगे। यह मानो कि वे छोटी चीजें बड़ी हैं।

६ कार्य संचालकोंके लिए यह सलाह है कि वे अपने चारों तरफ दीर्घ दृष्टि वाले पुरुष रखें।

७ अनुभव के आधार का एक विचार चेतावनी के समग्र वन के तुल्य है।

८ किसी खतरे का आधे रास्ते ही मुकाबला करना बेहतर है। यद्यपि उसके पहुँचनेके लिए लम्बी दृष्टि डालने से वे नजदीक नहीं आते हैं, लेकिन यदि व्यक्ति बहुत देर तक सोचेगा तो वह सो जाएगा।

९ छोटा कार्य मिल जाना ही निसरणी के समान है। उसपर चढ़ना सीखो, उसको अच्छा बनाओ, अपने मालिक को चकित कर दो, विचारों को सुधारो, ये आपके मालिक को आश्चर्य में डाल देंगे।

१० एक सफल एवं असफल व्यक्ति में अधिकतर अंतर दिमागी है। एक व्यक्ति प्रायः जैसा विचारता है अंत में उसी प्रकार का हो जाता है।

११ याद रखें व्यावसायिक लोग छोटे बच्चों के समान हैं। उनके अच्छे और बुरे दिन होते है परन्तु वे हमेशा हमदर्दी और सब के साथ काम करते हैं वे उन पुरुषों की इज्जत करते हैं जो उनके कभी के बदमिजाज पर ध्यान नहीं देते हैं। -एव जोहनग्रिनवड

१२ खाली बर्तनों से जोरों की आवाज निकलती है। जिनमें थोड़ी सी अक्ल है वे बड़े गप्पी होते हैं।
-प्लेट

१३ याददाश्त से हिसाब लिखना वैसा ही है जैसे ऊँट पर सवारी करते हुए सोना। -गुजराती कहावत

१४ किसी भी काम में इतने व्यस्त न हो जाओ कि तुम्हें विचारने का मौका भी न मिले।

१५ उत्साह रखो पर साथ ही साथ ध्यान रखो कि तुम कर्ता भी हो और तुम अपनी शक्ति का इस प्रकार व्यय करो कि थोड़े खर्च से अधिक लाभ उठा सको।

१६ जिन चीजों की जरूरत नहीं है उनका खरीदना अपने आपको गरीबी की ओर ले जाना है।

१७ पुरुषार्थ करोगे, तो भाग्य का खजाना खुला मिलेगा।

१८ यदि तुम धन का मूल्य जानना चाहते हो, तो उधार लो क्योंकि जो उधार लेता है उसे चुकाना पड़ेगा।

१९ अच्छा और बुरा भाग्य अधिकतर अपने अच्छे व बुरे निर्णयों पर आधारित है। एक अक्लमन्द विचारशील सावधान और मेहनती मनुष्य अपने दुर्भाग्य की शिकायत नहीं करता है, जुवारी आलसी असंतोषी लोग ही दुर्भाग्य की शिकायत करते हैं ।

२० विश्व तीन भागों में विभक्त है कुछ व्यक्ति ऐसे हैं जो घटना पैदा करते हैं, बहुत से ऐसे हैं जो घटना बनती देखते है जब कि सबसे बड़ी तादाद उनकी है कि जो गुजर रहा है उसपर ध्यान ही नहीं देते हैं ।

२१ गरीबी सहन न करना शरम की बात है, परन्तु अधिक शरम की बात है यह है कि जो अपनी मेहनत से गरीबी नहीं हटा पाते है ।

२२ व्यवसाय पानी के बहाव के सामने नाव ले जाने के समान हैं। उसके लिए अन्य मार्ग ही नहीं है। या तो वह उसके सामने जाएगा या उसको वापस लौटना पड़ेगा।

२३ बात करना भी एक कला है ।

२४ एक बुद्धिशाली व्यक्तिके लिए इससे अधिक अयोग्य बात नहीं है कि वह बेकार और तुच्छ चीजों के लिये वाजिब से अधिक समय दे ।

२५ मूर्ख लोग जिनका इल्म पर आधार है दो धारवाले शस्त्र लिये बच्चों के समान हैं वे आपको घायल करते हैं या दूसरों को कष्ट में डालते हैं वे अर्ध-पठित गँवारों से अधिक खतरनाक हैं ।

२६ किसी भले मनुष्यके लिए पढ़े-लिखे परिवार को छोड़ जाने से अधिक अच्छी कोई दूसरी विरासत नहीं है ।

२७ वही धनाढ्य है, जिसकी आय खर्च से अधिक है। वह गरीब हैं जिसका खर्च आय से अधिक है ।

२८ किसी भी व्यक्ति को अपने व्यवसाय में यह जानकर परिश्रम करना चाहिए कि उसको अपने व्यापार में मदद करनेवाला कोई मित्र नहीं है ।

२९ हमारी सब सम्पत्तियों में हिम्मत एवं साहस सबसे बड़ा सम्पति हैं। यह न तो विद्यालयों में सिखाई जाती हैं, न अन्य कहीं । यह प्रत्येक व्यक्ति को अपने से सीखना है । —बाटा

३० वह जो भविष्य से डरता है, असफलता से भ रखता है वह अपने प्रयत्न को सीमित करता है। असफल के डर से कोई बेइज्जती नहीं होती हैं ।—हेनरी फो

३१ मालिक अपने कर्मचारियों को नरम स्वभाव औ रहम से सुधारे न कि अशिष्ट और अपमानका भाषा से। ऐसी भाषा से उसकी गलती बता दे जिससे वह जागृत हो जाए ।

३२ जो लोग सफलता प्राप्त करते हैं, वे स प्रसन्न चित्त रहते हैं । वे अपने कार्य को मुस्कराह के साथ करते हैं और अपने जीवन-मरण के अवसरों क बहादुरों के समान झेलते और सामना करते हैं ।

३३ अपने काम में खुश रहना, दूसरों से उत्साह के साथ बोलना, वर्तमान में प्रसन्न रहना, भविष्य में भरो रखना यह एक प्रकार से जीवन में उन्नति हासिल क लेना हैं । क्रमशः अनुवादक हिम्मतसिंह सरुपारि

एम. ए.

० सूक्तिसुधा ०

इदमेव हि पाण्डित्यं चातुर्यमिदमेव हि ।
इदमेव सुबुद्धित्वं आयादल्पतरोव्ययः ॥

[यही पाण्डित्य है, यही चातुर्य एवं बुद्धिमत्ता है कि आय की अपेक्षा व्यय कम किया जाए"]

स्त्री विनश्यति गर्वेण तपः क्रोधेन नश्यति ।
गावः दूरप्रसारेण हरिणो गानशङ्कया ॥

[गर्व से स्त्री नष्ट होती है, क्रोध से तप नष्ट होत है, दूर जाने से गायें नष्ट होती हैं एवं गान की शङ्क से हरिणी नष्ट होती है ।]

अमृतं दुर्लभं नृणां देवानामुदकं तथा ।
पितृणां दुर्लभः पुत्रः तक्रं शक्रस्य दुर्लभम् ॥

[मनुष्यों के लिए अमृत दुर्लभ है, देवों के लि जल दुर्लभ है, पितरों के लिए पुत्र दुर्लभ है एवं इ (शक्र) के लिए छाछ (तक्र) दुर्लभ है ।]

आदर्श नारी

श्री शंभुनाथ दुबे
एम० ए०

[श्री दुबे जी एक कुशल प्राध्यापक और लेखक हैं । इस लेख में आपने भारतीय नारी के उदात्त गुणों की चर्चा सप्रमाण की है और उसे विश्व के लिए अनुकरणीय बताया है । सम्पादक]

यह कहना अत्युक्ति नहीं होगा कि संपूर्ण विश्व के स्त्री-चरित्रों में भारतीय नारियों का चरित्र सबसे उत्कृष्ट है । जगज्जननी सीता, सावित्री एवं अनुसूया का चरित्र समस्त स्त्री-चरित्रों में सर्वोत्तम, सर्वथा आदर्श और पग-पग पर आज के नारी-समाज के लिए अनुकरणीय है । श्रीराम प्रिया माता जानकी का चरित्र भारतीय नारियों के लिए सन्मार्ग पर चलनेके लिए पूर्ण मार्गदर्शक है । सीता जी के असाधारण त्याग, अभय, शान्ति, क्षमा, दया, धर्मपरायणता, सेवा, संयम, सदव्यवहार, साहस, शौर्य आदि गुण विश्व की किसी भी नारी में एक साथ नहीं मिल सकते ।

भारतीय नारी ने अपनी संस्कृति के अनुरूप ही आचरण किया है । वे पुरुषों के कदम से कदम मिला कर हर समय चली हैं । पुरुषों से कभी पीछे नहीं रही हैं । कहीं-कहीं पर पुरुषों से भी बढ़कर कार्य किया है । सतीत्व की रक्षा करने वाली सावित्री ने अपने पति देव के प्राण को मृत्यु के देवता 'यमराज' से छीन लिया है । यमराज हारे से रह गए हैं ।

समय-समय पर भारतीय नारी ने अनेक रूप धारण किया है । कभी रमा, कभी राधिका और कभी चण्डी का रूप धारण करके देश एवं समाज की सेवा की है । महिषासुर के अत्याचार से समस्त प्राणियों की रक्षा चण्डी के रूप में की है । वे अबला नहीं हैं । देश एवं समाज की सेवा भारतीय नारी हर रूप में करना जानती है ।

एक बार ब्रह्मा, विष्णु और शंकर जी माता अनुसूया के पास उसके सतीत्व की परीक्षा लेने के लिए गए । माता जी उन तीनों महान् देवताओं को देख कर अपने भाग्य की सराहना करने लगीं और कहा, "मैं बहुत बड़ी भाग्यशालनी हूँ कि जो आप तीनों महादेव का दर्शन मिला ।" उचित आसन देकर आगमन का कारण पूछा । इसपर तीनों महादेवों ने कहा, 'हे देवि, मैं आज तुम्हारे हाथ से भोजन करना चाहता हूँ ।' माता जी ने कहा, 'जैसी आप देवों का इस दासीके लिए आज्ञा हो ।" इसपर तीनों देवताओं ने कहा, "सती ! शर्त है कि तुम विवस्त्र होकर भोजन कराओ ।" इसपर माता जी ने कहा, "कोई बात नहीं, वैसा ही करूँगी ।"

देवी ने अपने तप-बल से उन महादेवों को छोटा शिशु बनाकर भोजन कराया और उनको पालने पर सुला दिया । वाह रे भारतीय नारी ! तीनों महादेवों को बच्चा बनाकर गोंद में रखा, और आधुनिक नारियों के लिए सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया ।

रामचरितमानस में गोस्वामीजी ने माता अनुसूया के मुख से सीता जी के माध्यम से कहलवाया है:—

कह रिषि वधू सरस मृदुबानी ।
नारि धर्म कछु व्याज बखानी ॥
मातु पिता भ्राता हितकारी ।
मित सुखप्रद सुनु राजकुमारी ॥
अमित दानि भर्ता वैदेही ।
अधम सो नारि जो सेव न तेही ॥

स्त्री के लिए उसका पति ही सब कुछ है, उसके अलावा इस संसार में उसके लिए कोई अन्य कर्म नहीं है । पुरुष जब आपत्ति में पड़ जाता है, तब उसकी पत्नी का क्या कर्तव्य है ? इसको गोस्वामी जी की इस चौपाई में देखिए-

एकइ धर्म एक व्रत नेमा ।
काय बचन मन पति-पद प्रेमा ॥
धीरज धर्म मित्र अरु नारी ।
आपद काल परिखिअहिं चारी ॥
वृद्ध रोग बस जड़ धनहीना ।
अंध बधिर क्रोधी अति दीना ॥
ऐसेहु पति कर किय अपमाना ।
नारि पांव जमपुर दुःख नाना ॥

भारतीय संस्कृति के अनुरूप नारी बंदनीय एवं अनुकरणीय है । हमारे नारी-समाज को भटकना नहीं चाहिए । उसको अपना विकास भारतीय संस्कृति के अनुरूप चल कर ही करना श्रेयस्कर है । वैसे तो रामचरितमानस में अनुसूया के मुख से गोस्वामी जी ने नारियों को चार भागों में विभक्त कराया है । इन चारों में जो आदर्श स्वरूप एवं अन्य पीछे आने वाली पीढ़ीके लिए अनुकरणीय हो; उसे वरण करना चाहिए । ये चार प्रकार इस तरह हैं:-

"जग पतिव्रता चारि विधि अहहीं ।
वेद पुरान संत अस कहहीं ॥
उत्तम के अस बस मन माहीं ।
सपनेहुँ आन पुरुष जग नाहीं ॥
मध्यम पर पति देखइ कैसे ।
भ्राता पिता पुत्र निज जैसे ॥
धर्म बिचारि समुझि कुल रहई ।
सो निकृष्ट तिय स्रुति अस कहई ॥
विन अवसर भय ते रह जोई ।
जानेहु अधम नारि जग सोई ॥
पति वंचक परपति रति करई ।
रौरव नरक कल्प सत परई ॥"

इस तरह हमारी संस्कृति और हमारा धर्म भारतीय परिवेश में यही है । इसके अलावा कोई दूसरा धर्म नारियोंके लिए कहीं पर नहीं है । अन्य कर्म गौण हैं । नारी और पुरुष एक दूसरे के पूरक हैं । दोनों एक रथ के दो पहिए हैं । दोनों को एक साथ मिल कर देश और समाज की सेवा में रत रहना ही पुनीत कर्तव्य है । नारी अपने को कमजोर किसी स्थिति में न समझे उसका कर्तव्य मार्ग पुरुष के साथ-साथ है । उसने पुरुष के सानिध्य में रहकर पति की सेवा से सभी पुरुषार्थों को प्राप्त किया है और आज भी कर सकती है । वे आज भटकी प्रतीत होती हैं। वे अपना रास्ता अलग का समझ बैठी हैं । इस सोरठे का अर्थ सही माने में नहीं हैं:-

'सहज अपात्रनि नारि, पति सेवत सुभ गति लहइ ।
जसु गावत श्रुति चारि अजहु तुलसिका हरिहि प्रिय ॥

अतः, गोस्वामी जी का संदेश समस्त नारी-समाज के लिए शिरोधार्य और स्वाभाविक होना चाहिए । प्रतिकूल जाने में जीवन को कंटकमय बनाने के अलावा कुछ हाथ नहीं लगेगा, पूरे जीवन पश्चात्ताप की अग्नि में झुलसने के अतिरिक्त कुछ नहीं मिल सकता। नारी-समाजके लिए कलंक का टीका बनना उचित नहीं होगा । इसके लिए गोस्वामी जी ने लिखा है,

"छन सुख लागि जनम सत कोटी ।
दुख न समुझ तेहि सम को खोटी
पति प्रतिकूल जनम जहुं जाई ।
विधवा होइ पाइ तरुनाई ॥"

पति से अपमानित या परित्यक्त होने पर साहस एवं व्रत को नहीं छोड़ना चाहिए । माता जानकी को मर्यादा पुरुषोत्तम राम त्याग देते हैं; परन्तु माता जानकी मानव-लीला में इस बात को प्रमाणित कर गईं कि बिना दोष भी यदि स्वामी स्त्री को त्याग दे, तो स्त्री का कर्तव्य है कि विपत्ति में दुःखमय जीवन बिताकर भी अपने पतिव्रत धर्म की रक्षा करे । परिणाम उसका कल्याणकारी होगा । सत्य एवं पतिसेवा अन्त में अवश्य ही शुभ फल देंगे । माता सीता अपने जीवन में कठोर परीक्षा देकर स्त्री मात्रके लिए यह मर्यादा स्थापित कर गई हैं कि जो स्त्री आपत्तिकाल में सीता की भाँति धर्म एवं संस्कृति का पालन करेगी, उसकी कीर्ति संसार में ध्रुवतारे की भाँति अन्य स्त्रीके लिए मार्गदर्शन का कार्य करेगी । उनका अनुकरण सभी स्त्रियाँ कर सकेंगी ।

श्री गणेशप्रसाद हण्टर कालिज
बरवा, जिला-वाराणसी (उ. प्र.)

लघु कथा

अन्तर्घट

पं. रामअवतार अभिलाषी

'बस जी, आज तक मैं आपकी सुनती आई हूँ। सहती आई हूँ, अब किसी भी दशा में....' इससे पूर्व कि वह कुछ और आगे कहती, मैंने उसे अंक में भर लिया था उस दिन। और संयोग देखिए कि बाहर जोर की आँधी चल पड़ी थी जिससे कमरे की बन्द खिड़कियाँ शोर बचाती हुई खुल गईं। मद्धम चाँदनी हम तक पहुँच गई थी। पल भर में ही कमरा धूल से भर चुका था। सरला ने अपने को मुझसे अलग कर लिया था, बुड़बुड़ाते हुए, "अब मुझे भी आँधी बनना है।"

दिन गुजरने लगे। पति--पत्नी के बीच की खाईं भी बढ़ती ही चली गई। सरला अब बात-बात पर झुंझला उठती थी और चेतावनी दे देती थी, "अब की बार मुझे मायके जाने तो दो। नाकों चने न रगड़वा दूँ, तो मेरा नाम सरला नहीं।" और मैं मन मसोस कर ही रह पाता था, क्योंकि मेरी सहज सरलता सरला को सरल नहीं बना पा रही थी। अधिक चिन्तित होने पर अदृश्य वाणी सुनाई देती।

"शिवानन्द! साहस से काम लो। नारी का डरावा सदा ऊपरी ही होता है।" परन्तु मैं इस बात पर विश्वस्त नहीं हो पा रहा था। क्योंकि सरला ने अपना समस्त व्यवहार परिवर्तित कर लिया था और उसकी मायके जाने की जिद पक्की होती जा रही थी।

आज प्रातः उषा देवी ने प्रांगण में दर्शन दिए ही थे कि वह मेरे सामने आकर खड़ी हो गई। मैंने कुछ छेड़ते हुए कहा, "कहो महारानी जी सेवकके लिए क्या आदेश है?"

"कुछ नहीं" आवाज तीखी थी। "आज मैं जा रही हूँ। मेरा भाई मुझे लिवा लेने के लिए आने ही वाला है और अब तुम्हें पता लग जाएगा मेरा भी कुछ अस्तित्व है।"

मैं इस अप्रत्याशित सम्वाद से चौंका भी और दुखी भी हुआ। मेरा दिल रो पड़ा। समझ नहीं पा रहा था कि सरला को अकस्मात क्या हो जाता है। साझा परिवार है। सूनी तो रहा ही करती है। कितनी बार समझाया जा चुका है उसे और वह मान भी जाती है, परन्तु न जाने उसे ऐसा फिर क्या हो जाता है?

ठक्...ठक्....दरवाजे पर दस्तक होने के साथ ही, दरवाजा खुश गया तो मैं और चौंक उठा सामने शालिगराम को देखकर। विचार मस्तिष्क में घूमा-तो क्या चेतना वास्तविक होने जा रही है? पारस्परिक अभिवादन के बाद कुछ चर्चा छिड़ी और अन्दर चला गया।

"अच्छा जी, मैं जा रही हूँ। अब मेरी प्रतीक्षा मत करना।"

इससे पूर्व कि मैं कुछ कहूँ, उसका भाई भी वहाँ पहुँच चुका था। व्यावहारिक दृष्टि के नाते मैं भी स्टेशन तक गया। गाड़ी आई। वह मुझे देखे बिना डिब्बे में चढ़ गई, बैठी खिड़की के पास ही। मैं सालिगराम से बातें करता रहा और आभास पाता रहा कि वह कनखियों से कभी-कभी देख तो रही है। इञ्जिन ने सीटी दी। वह अपनी सीट पर बैठ गया। गाड़ी रेंगने लगी। वह हरकत में आई। आँखें मिलाकर बोल उठी,

"सुनना, जल्दी लेने आ जाना। वहाँ मेरा दिल नहीं लगेगा।"

गाड़ी सरक गई। आँखों से ओझल भी हो गई, किन्तु मेरे मस्तिष्क में प्रश्न बना रहा कि सरला का **कौन-सा रूप सच्चा है।**

अभिलाषी साहित्य-कुञ्ज
बाजरान गली, जीन्द--१२६१०२
हरियाणा

राजस्थानी लोकगीत

लश्कर पाछो घेर

डा०रूपचन्द पारीक
एम. ए. पी-एच. डी.

लेखक

[श्री पारीक जी जोधपुर विश्वविद्यालय में राज्यस्थानी के प्राध्यापक हैं और हिन्दी तथा राजस्थानी के सुलेखक हैं।

प्रस्तुत लेख में नवविवाहिता राजस्थानी नारी का अपने पीहर के प्रति प्रेम वर्णित किया गया है, जो बड़ा स्वाभाविक और द्रावक है।

सम्पादक]

लोकजीवन का मुखरित रूप लोकगीत है। लोकजीवन अपने बाहुपाश में विराट् संसार को बाँधे हुए हैं। सामाजिक जीवन में विविध पक्ष लोकगीत के माध्यम से कलात्मक अभिव्यक्ति पाते हैं। लोकगीत की चेतना मस्तिष्क को ही नहीं, मन के मर्म को भी छूती है और सच्चा साहित्य वही है जो मस्तिष्क को उत्तेजित करने की अपेक्षा हृदय को रससिक्त करने की क्षमता रखे। कला के आधुनिक अर्थ में लोकगीत का महत्त्व भले ही न हो, परन्तु जीवन के चिन्तन में, सत्य की भावात्मक अनुभूति और रसात्मक अभिव्यक्ति के अर्थ में उसे अपार गौरव और सम्मान प्राप्त है। लोकगीत की इस कसौटी पर राजस्थानी लोकगीत बिलकुल खरे उतरते हैं।

'लश्कर पाछो घेर' लोकगीत विदाई के उपलक्ष्य में गाया जाता है। एक अनजान व्यक्ति वर का वेश धारण करके आता है और बधू को साथ लेकर जिस समय ऊँट पर चढ़ कर रवाना होने के लिए तैयार होता है, उस समय स्त्रियों की सम्मिलित वेदना इस गीत के माध्यम से फूट पड़ती है। पिछले जीवन की सुखद और मादक स्मृतियाँ वधू को वर के साथ जाने से रोकती हैं। माता-पिता का दुलार, भाई-भाभी का प्यार, सहेलियों का स्नेह उसे कुछ समय और रुकने के लिए बाध्य करता है। अपने प्रयत्न को सफल बनाने के लिए वह तरह-तरह के बहाने बनाती है। उसका मानसिक अन्तर्द्वन्द ही इस गीत का प्राण है।

एकरिये म्हाराजा लश्कर पाछो घेर
बुगचा ने भूली बाबोसा रे आंगणे,
झूठी म्हारी सुन्दर झूठा तजा-सा मत बोल
बुगचो ने पड़ियो भूराले रे बासिये।
एकरिये म्हाराजा लश्कर पाछो घेर
ओलूं तो आवै बाबोसा रे लाड़री,
झूठी म्हारी सुन्दर गोरी झूठा-सा मत बोल
थांरे ने बाबोसा रा भोला
सुसरोजी थांरा साजसी
एकरिये म्हाराजा लश्कर पाछो घेर
ओलूंडी आवै माताजी रे लाड़ री
कूडी म्हारी सुन्दर गोरी कूड़ा ते मत भोल
थांरे ने माताजी रा भोला
बूजीसा थांरा साजसी
एकरिये म्हाराजा लश्कर पाछो घेर
ओलूं तो आवै वीरोसा रे लाड़ री
लूँठी म्हारी सुन्दर गोरी झूठा-सा मत बोल
थांरे वीरोसा ए भोला
नैनजी सा थांरा साजसी

एकरियै म्हाराजा लश्कर पाछो घेर
ओलूँ ने आवै भाभीजी रे लाड री
कूड़ी म्हारी सुन्दर गोरी कूड़ा ने मत बोल
थांरे थारे ने भाभीजी रा भीता
बाईजी म्हारा साजसी

भावार्थः-हे मेरे मन के महाराजा ! तुम सिर्फ एक बार अपना यह लश्कर वापस घेर लो, मुझे एक बहुत जरूरी काम याद आ गया है। मैं व्यर्थ में बहाना नही बना रही हूँ। सच कह रही हूँ अपने बाबीसा आंगन में मैं अपना बुगचा भूल आई हूँ, उसे तो कम से कम वापिस ले लेने दो। इतनी देरके लिए तो तुम रुको। पति अपनी पत्नी के मन की बात समझ जाता है और कहता है कि हे गोरी, तुम व्यर्थ में झूठ बोल रही हो। तुम्हारा बुगचा तो ऊँट पर रखा हुआ है। मुझे इस बात का अच्छी तरह पता है।

पत्नी तो किसी प्रकार रुकना चाहती है। वह बहाना बनाती हुई कहती है कि सिर्फ एक बार लौट चलो। मुझे मेरे पिता का प्यार बेहद याद आ रहा है। उनसे तो कम से कम एक बार मुझे मिल लेने दो। पति उत्तर देता है, तुम चिंतित क्यों होती हो ? मेरे पिता तुम्हारी देख-भाल बहुत अच्छी तरह से करेंगे।

इस बात का भला क्या विरोध हो सकता था। फिर नया मार्ग खोजती हुई वह कहती है, मुझे मेरी माँ की याद बहुत सता रही है। कम से कम उससे तो एक बार मुझे मिल लेने दो, यह लश्कर वापस फेर लो। पति उत्तर देता है, सास ही अब तुम्हारी माँ है। वह तुम्हें कम प्यार नहीं करेगी।

इसपर वह क्या कहे ? तुरन्त एक दूसरा विचार उसके मस्तिष्क में आता है और वह कहती है, "भाई से तो एक बार मिल लेने दो। उनका-सा प्यार और दुलार मुझे और कहाँ मिलेगा ?" पति उत्तर देता है, "अपने छोटे देवर के साथ हँसो-खेलो और आनन्द मनाओ। सभी रास्ते बन्द देख कर अंतिम अस्त्र का प्रयोग करती है कि मुझे भाभी का प्यार बेहद सता रहा है। उनसे एक बार मुझे मिल लेने दो। पति फिर उसे समझाता हुआ कहता है कि वहाँ तुम्हें तुम्हारी ननद का स्नेह मिलेगा, किसी चीज की कमी तुम्हें वहाँ महसूस न होगी। उस घर को भी इस घर के ही समान समझो और आनन्द मनाओ।

माणक चौक, जोधपुर (राज.)

• सूरज •

रात हुई सुबह हुई
टूटा भ्रमित सपना
प्रखर सूरज से सीखें जग रोशन करना
नई रचना का हर क्षण
लगन से संवारें
दृढ़ निश्चय का अर्थ समूचा ही स्वीकारें
असम्भव हर संभव संघर्षरत बदलना।
प्रखर सूरज से सीखें जग रोशन करना।
कोई अर्थ नहीं जल में
खींचना लकीर है
श्रमदान करें ज्यों दुआ बाँटता फकीर है
अच्छा नहीं है व्यर्थ वक्त का गुजरना
प्रखर सूरज से सीखें जग रोशन करना

० नई रोशनी ०

बुला रही मंजिलों के पास
काफिला
बढ़ता चले-इस्पाती विश्वास
है चाँद और सूरज
प्रत्यक्ष गवाही-
ज्यों रास्ता न हारे
कभी नहीं राही
थकान ही पराजय और कुंठा संत्रास
काफिला बढ़ता चले इस्पाती विश्वास
यह बीत गया आज
पर आगामी कल
माँग रहा धरती में
जोश नया बल
चेतना ही युग का आलोकित इतिहास
काफिला
बढ़ता चले इस्पाती विश्वास

श्री जगन्नाथ 'विश्व'

'गरिमा' सो०।१७, दुर्गापुरा
बिरलाग्राम, नागदा (म.प्र.)

बरसात में सावधानी

सुश्री कुमुद सिंह

एम० ए०

बरसात के मौसम में प्रायः सभी गृहिणियाँ परेशान रहती हैं । क्योंकि इस मौसम में कहीं कोई चीज सड़ जाता है या किसी में कीड़े लग जाते या किसी में सीलन पहुँच जाती है । अतः, बेचारी गृहिणियाँ दिन भर घर–गृहस्थी के कामों में उलझी रहती हैं ! तो लीजिए इस बरसात में कुछ खास चीजों की सुरक्षा इस प्रकार कीजिए ।

बरसात से सबसे ज्यादा सीलन नमक को मिलती है । नमक के घड़े में हाथ डालने से सारा हाथ नमक के पानी से भीग जाता है । नमक को सुरक्षित रखने के लिए उसमें चावल के कुछ दाने डाल दें । नमक नहीं सीलेगा ।

माचिस भी बरसाती हवा लगते ही सील जाती है और आप एक बार स्टोव जलाने के लिए कितनी ही तीलियाँ जलाती जाती हैं, तब कहीं माचिस जलती है । इसलिए माचिस को या तो आटे में डाल दें या फिर प्लास्टिक की थैली में छिपा दें । नहीं तो किसी डब्बे में नीचे थोड़ी रूई रख कर माचिस बन्द कर के रखें, तो माचिस नहीं सीलती है । । चाय के डिब्बे में डालने से भी माचिस सुरक्षित रहती है ।

चावल में भी बरसात में कीडे पड़ जाते हैं । कीड़ों से बचाव के लिए चावल में चूना मिला दें । चावल कीडे और घुनों से महीनों सुरक्षित रहेगा ।

ऐसे ही गेहूँ को भी सुरक्षित रखनेके लिए एक बड़ा-सा ड्रम ले लें । उसकी पेंदी में चूना बिछा दें । और एक मोटी प्लास्टिक की थैली बिछा दें । अगर हो सके तो ऊपर से नीम की पत्तियाँ बिछा दें । ऐसा करने से गेहूँ अगले साल तक सुरक्षित रहेगा ।

बरसात में जूते तो अक्सर भीगते ही जाते हैं । अतः, जहाँ तक हो सके चमडे के जूतों का प्रयोग न करें, बल्कि प्लास्टिक या रबड़ की चप्पल या जूता पहनें करें यदि चमडे के जूते पहने तो जूतें के नीचे अखबार का टुकड़ा बिछा दें या फिर स्याहीसोख रख दें । इससे जूते बिगड़ेंगे नहीं । अगर कभी जूते भीग जाएँ, तो उसमें कागज भर कर रख दें । इससे जूते सूख जाते हैं ।

बरसात में अक्सर आपकी बड़ी मेहनत से डाले गए अचार भी खराब हो जाते हैं । इनमें फफूंद लग जाती है । अचार को सीलन से बचानेके लिए मर्तबान के नीचे ब्लौटिंग पेपर या प्लास्टिक बिछा दें । आचार खराब नहीं होंगे ।

बिस्कुटों को सीलन से बचाने के लिए उनके नीचे यानी कनस्तर के नीचे भी ब्लाटिंग पेपर रख दें । बिस्कुट बिल्कुल नहीं सीलेंगे ।

बरसात के दिनों में लकड़ी का सामान अक्सर खराब हो जाता है । खाट और अन्य फर्नीचर भीगने से फूल जाते हैं । और कई बार चटक भी जाते हैं । इसलिए ऐसे सामानों को ऐसी जगह रखना चाहिए जहाँ पानी की फुहारें न पहुच पाएँ । अगर घर छोटा हो तो बाजार से बड़ा सा मोटा वाला प्लास्टिक खरीद कर ऐसे डाल दें कि कहीं से भी पानी जाने की गुंजाइश न रहे ।

गीले कपड़ों को भी सुखानेके लिए कमरे में एक रस्सी की अलगनी बाँधें और उसपर गीले कपडे तुरन्त फैला दें । नहीं तो बदबू आने लगती है ।

वैसे भी बरसात में गृहिणियों का उत्तरदायित्व कुछ अधिक ही बढ़ जाता है । समय-समय पर जब भी धूप निकले अचार, मसालों, अनाज आदि को धूप दिखाती रहें । इससे आपकी तमाम चीजें नष्ट होने से बच जाएँगी और आपका पारिवारिक बजट भी असन्तुलित नहीं होगा ।

म. नं. ३२२, गिरीश वर्मा मार्ग,
मोती नगर, उन्नाव (उ. प्र.)

मोहन का साहस

श्री रवीन्दु सुमन

मोहरसिंह को कोई डाकू न समझे, न वह कोई पुलिस अफसर है । लड़के जानते हैं—वह सेन्ट जेवियर्स स्कूल में आठवीं कक्षा में पढ़नेवाला एक कम बोलने वाला छात्र है । उसके बिस्तार के लोग जानते हैं—वह एक गरीब घर का सीधा-सादा लड़का है। उच्च अधिकारी कहते हैं—वह एक छोटा जासूस है ।

सबकी अपनी-अपनी बात सच है । वह क्लास में कभी फिजूल बातें नहीं करता । दत्तचित होकर अपने टीचर की बात सुनता है और समझमेंन आने पर ही अपने शिक्षक से दुबारा समझाने को कहता है । कभी उसने अपने शिक्षक की हँसी नहीं उड़ाई ।

गरीब परिवार में पलनेवाला मोहर अपने माँ-बाप के लिए कभी कोई शिकायत नहीं करता । न कोई किसी से लड़ना-झगड़ना न बेमतलब का उठना-बैठना । बिलकुल सीधा-सादा सरल, सुकोमल बालक ।

तीसरी बात सुनकर सब दंग रह गए कि बाहर से ऐसा दिखनेवाला कभी कोई ऐसा साहस भरा काम कर सकता है भला !

जैसा कि मोहर का नियम है—सुबह जल्दी पाँच बजे ही उठ जाना । उस दिन वह उठा तो देखा अभी चार ही बज रहे थे । सोचा—अब वापिस सोना अपने में इससे आलस भरना है । क्यों न दूर जाकर लौट आऊँ घूमना भी हो जाएगा ।

वापिस आ रहा-सोचा, बहुत समय हो गया है, सीधे रास्ते निकलकर जल्दी घर पहुँच जाऊँ । गली के अन्दर से गुजर रहा था कि देखा—एक बंद-से घर में कार में से कुछ रखा जा रहा था और वे इस स्थिति में थे कि उतावले से और बार-बार सन्देह की नजर से ताकते-से काम कर रहे थे । वह भी कुछ डरा हुआ-सा इस तरह गुजर गया कि उनमें से कोई भी न देख सका ।

उसके मन में उस रहस्य का भूत सवार हुआ । वह उस दिन से उस विषय पर जानने की चेष्टाएँ करने लगा । धीरे-धीरे वह ऐसे खेल अक्सर देखा करता । कभी वहाँ से माल भरा जाता और कभी वहाँ खाली किया जाता । एक दिन उसने गुप्त होने वाली बातों के कान लगाए। उसने समझा-कोई चोरी का व्यापार चलता है । उसके बाद उस सिलसिले का पूर्ण ब्यौरा जानना उसका शौक हो गया । उसकी यह कार्यविधि बढ़ती गई । उसने जाना कि विदेशी माल करचोरी कर लाया जाता है और उसे उच्च मूल्य पर बेचा जाता है ।

वह कभी उनका पीछा करता और इतनी सावधानी से कि उनको गंध भी नहीं आती । माल-सामान रखने के सारे अड्डे उसने देख लिये । कभी शहर की प्रख्यात होटल में उनकी महफिल जमती । अब वह अक्सर उनके बारे में सुनता । उनकी रईसी ठाठ की बातें सुनता, दान की बातें सुनता, उनकी होशियारी की बातें सुनता कि वे किस तरह सरकार के हाथों को नाकाम बना देते हैं ।

वह अपने स्मृति के पन्नों को काला करता जाता था । उसकी पूरी एक फ़िल्म तैयार हो गई थी ।

उसके दिमाग में कभी-कभी उथल-पुथल मच जाती । यह कैसा जीवन ! उसके मां-बाप रात-दिन पसीना बहाते फिर भी दो वक्त का भोजन ही बनता है और यह केवल गाड़ी में आना-जाना और लक्ष्मीश्वर ! दौलत का खजाना ! राष्ट्र का धन हमारा धन है । वह हमारे लिए खर्च होता है, लेकिन ये लोग

राष्ट्र के धन की चोरी करते हैं। यानो हमारे धन से महफिलें उड़ाते हैं। पर वह क्या करे, सरकार के पुर्जे भी तो घिसे हुए हैं, वे तेल-पानी देकर चला लेते हैं।

उसकी वह खोज निरन्तर जारी ही रही।

एक समय आया-देश में आन्तरिक असुरक्षा का नियम लागू हो गया और तस्करों की धड़ाधड़ धरपकड़ होने लगी। उसे लगा, अब समय आ गया है-उसकी इच्छा पूर्ण होगी। तस्कर गायब से रहने लगे। पकड़ में नहीं आते। वह उनकी हर हरकत का ध्यान रखने लगा।

दिन गुजरने लगे। सरकार के हाथ उनको पकड़ने में नाकाम रहे। वह जानता रहता-कब, कौन, किस जगह है। कब कौन से शहर में है। उसको एक सूराग मिला कि वे जल्दी ही विदेश भागने वाले हैं।

उस दिन उसने नैतिक साहस किया। एक भिखारी के वेश में उसके घर जा पहुँचा। कैसा विचित्र था। उसे लग रहा था कि उसका कोई नहीं है। निरस्त चेहरा, उलझे बाल मैले-फटेले कपड़े।

वह पूर्ण जानकारी एक कागज पर लिखकर आफिस में ले गया और एक उच्च गुनाहशोधक अफसर को सौंप दिया। उसकी जानकारी इतनी बारीक और गुप्त थी कि अफसर पढ़कर कुछ विस्मित रह गया।

उसे क्या मालूम था कि उसकी यह मानव-सेवा इतनी कीमत दे जाएगी। वे सब पकड़ लिये गए। सब जब्द हो गये। लाखों का माल!

वह कितना भाग्यशाली था कि उसके जानकारी देने के एक दिन पहले ही उनपर दो हजार का ईनाम जाहिर किया गया था और उसे मालूम भी न था।

अधिकारियों ने सच कहा था कि वह एक छोटा जासूस है। दो हजार का ईनाम मिला। सबसे बड़ा ईनाम तो उसे अपने काम की सफलता का मिला।

नबो मास्टर का डेला, नागोरीवाड, शाहपुर
अहमदाबाद-३८०००१

समाज का गौरव

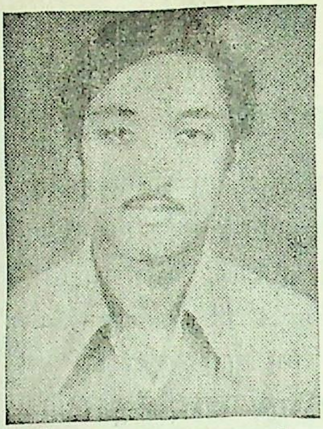

चि. अनिल गोपीशंकर मुकीम

१९ वर्षीय चि. अनिल मुकीम सेंट जेवियर स्कूल में पहले से ही पहले दर्जे में उत्तीर्ण होता रहा। ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षा में तो पढ़ाई में सर्वश्रेष्ठ रहने के उपरांत सांस्कृतिक, सामाजिक एवं साहित्यिक प्रवृत्तियों में भी अग्रसर रहा। अपने अहिन्दीभाषी स्कूल में हिन्दी साहित्यिक परिषद को स्थापना कर दो वर्ष मन्त्री रहा। अनेक कविगोष्ठियों, वाद-विवाद स्पर्धाओं, निबन्ध-स्पर्धाओं और प्रदर्शनियों का आयोजन किया। कई चर्चाओं, स्पर्धाओं एवं नाटकों में इनाम जीते-विद्यार्थी परिषद् एवं वाणिज्य समिति का अध्यक्ष बनने का गौरव प्राप्त किया, इन सब प्रवृतियों का यशकलश रूप १९७८-१९७९ में चि. अनिल को विद्यालय का सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी एवं सर्वश्रेष्ठ वक्ता घोषित किया गया।

७३ प्रतिशत प्राप्तांक से बारहवी कक्षा उत्तीर्ण कर अनिल ने एच.एल. कालेज आफ कामर्स में प्रवेश किया। यहाँ भी कई वादविवाद-स्पर्धाओं एवं नाटकों में इनाम जीते, कई स्थानों पर कालेज का एवं विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया। आकाशवाणी, अहमदाबाद के कार्यक्रमों में भी अनिल सक्रिय है। जे-सी संस्था के उपरांत चुनाव विज्ञानिकों की संस्था के विकास के लिए भी प्रयत्नशील है। पुष्प बनने को आतुर कलिका तुल्य चि. अनिल को फिल्सूफी और सर्जनात्मक चिन्तन का भी शौक है। परम शक्तिमान परमात्मा उसके उद्देश्य में सफलता के लिए प्रेरणा प्रदान करे।

उद्योग-परक

हैण्डलूम, पावरलूम और मिल उद्योग

श्री कान्तिकुमार पोद्दार

लोगों को उचित कीमत पर अच्छा, टिकाऊ कपड़ा अधिकाधिक अनुपात में मिल सके तदुपरान्त देश के आर्थिक विकास में भी वह अधिक अनुपात में अपना योगदान दे सके इस हेतु कपड़ा-उद्योग के उत्पादन को उच्चतम स्तर पर ले जाने के विषय में कोई भी दो राय नहीं हो सकती। खादी को यदि एक बार किनारे रख दिया जाए तो कपड़ा उद्योग-हेन्ड लूम, पावरलूम तथा व्यवस्थित मिल उद्योग, इस प्रकार तीन क्षेत्रों में विभाजित है। इनके एक समान विकास हेतु संयुक्त एवं सुसंगत कपड़ा-नीति की जरूरत है। ये तीनों ही क्षेत्र एक-दूसरे के पूरक होने चाहिए, न कि प्रतिस्पर्धी। किसी एक क्षेत्र को दी जाने वाली प्रमुखता (महत्ता) के कारण अधिक परेशानी एवं वाद-विवाद खड़े हो जाते हैं। यहाँ इस लेख में ये तीनों क्षेत्र मिलकर किस प्रकार अपना सुव्यवस्थित विकास कर सकते हैं उसका सुन्दर रेखाचित्र प्रस्तुत किया गया है।

सुमेलपूर्ण अंतर क्षेत्रीय संयुक्त विकास :

उत्पादनक्षमता का अधिक से अधिक उपयोग और मानव-शक्ति तथा साधन-सामग्री का मितव्ययी उपयोग-ये दोनों अच्छी तरह तैयार किए गए आर्थिक विकास के कार्यक्रम का मुख्य ध्येय होना चाहिए। यह ध्येय समाज की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरी करने के लिए कपड़ा-उद्योग में कितने अंश तक अपनाए गए हैं, यह देखने का हेतु इस लेख में है।

देश के अर्थतंत्र में कपड़ा-उद्योग कुंजी रूप से अपना भाग अदा करता है तथा लाखों लोगों को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जीवन-निर्वाह का साधन उपलब्ध करता है। प्रति वर्ष देश की तिजोरी में करोड़ों रुपयों का योगदान कर सकता है, तथा विदेशी मुद्रा की आय में सहायता देता है। लोगों को उचित कीमत पर अच्छे टिकाऊ कपड़े अधिक अनुपात में प्राप्त हों, देश के अर्थतंत्र में भी अधिक अनुपात में योगदान मिले, इस हेतु कपड़ा-उद्योग का उत्पादन श्रेष्ठतम सतह पर लाना जरूरी है।

कपड़ा उद्योग के चार विभाग हैं। एक ओर खादी है, तो दूसरी ओर अत्याधुनिक टेक्सटाइल मिल हैं। इन दोनों के बीच प्राचीन टेकनोलोजी का प्रतिनिधित्व करती हेन्डलूम और मध्ययुगीन टेकनोलोजी का प्रतिनिधित्व करती पावरलूमें हैं। इनमें से खादी का क्षेत्र इतना न्यून है कि वह देश की कपड़े की आवश्यकताएँ पूर्ण करने के लिए महत्त्वपूर्ण योगदान नहीं दे सकती। इसके बावजूद भी पोलिस्टर पर खादी का ढोल चढ़ाकर इस क्षेत्र की कार्यवाही को गतिशील बनाने के प्रयत्न जारी हैं।

तीनों क्षेत्र एक दूसरे के पूरक :

एक समान अन्तरक्षेत्रीय विकासके लिए संयुक्त एवं सुसंगत कपड़ा-नीति जरूरी है। ये तीनों क्षेत्र एक दूसरे के पूरक होने चाहिए, न कि प्रतिस्पर्धी। कुछ क्षेत्रों को दी जाने वाली महत्ता के कारण कई दिक्कतें और वाद विवाद खड़े होते हैं। पावरलूम के अनियमित और अनियंत्रित विकास के कारण उसकी अपनी तकलीफें बढ़ी हैं। हेन्डलूम क्षेत्र के संदर्भ में संसद की अंदाज समिति बताती है कि हेन्डलूम क्षेत्र में देश के अर्थतंत्र में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त होने के बावजूद भी एवं देश के कुल कपड़ा-उत्पादन में इसका हिस्सा २५ प्रतिशत होने पर भी उसे महत्त्वपूर्ण स्थान नहीं दिया गया है।

इस उद्योग के बारे में जानकारी का अभाव वस्तुतः दयनीय है। वास्तव में, हेन्डलूमों और पावरलूमों की संख्या, उनकी उत्पादन-पद्धति और जुलाहों की आय के सम्बन्ध में कोई भी कुछ नहीं जानता। अंदाज समिति

ने प्रश्न किया था कि इस प्रकार के व्यापक अंकों के अभाव में आयोजित विकास किस प्रकार किया जा सकता है ? समिति के अनुमानानुसार हेन्डलूमों के विकास हेतु विविध कदम उठाए गए हैं तथा लगभग १०० करोड़ रुपए से भी अधिक रकम खर्च की गई है। फिर भी उनकी कार्यक्षमता में नहिवत् सुधार हुआ है तथा बुनकरों की परिस्थिति में भी शायद ही कोई सुधार देखा गया है। अंदाज–समिति के बताए अनुसार हेन्डलूम क्षेत्र की आंतरिक कमजोरी तथा उत्पादन एवं मार्केटिंगके लिए कमजोर ढाँचों में मिलती सुविधाएँ और क्षेत्र की सहकारी मंडलियों की असंतोषकारक कार्यवाही के कारण आरंभ की तरह ही दिक्कतों का आज भी सामना करना पड़ता है।

हेन्डलूम और पावरलूम का वर्तमान उत्पादन बनाए रखनेके लिए केवल ८५,००० पावरलूमें और १५ लाख हेन्डलूमों की आवश्यकता होगी। शेष हेन्डलूमों एवं पावरलूमों की संख्या घटाई जानी चाहिए।

उत्पादनक्षमता की ग्रोस-वृद्धि के प्रश्न का भी निराकरण लाना चाहिए। प्रत्येक क्षेत्र की अनावश्यक उत्पादन–शक्ति तथा बिनकार्यक्षम इकाइयों को दूर करना चाहिए तथा शेष इकाइयों का आधुनीकरण करना चाहिए।

मिलों की बेकार लूमों ने पावरलूम उद्योग में मार्ग बना लिया है। वास्तव में पावरलूमों के टेकनोलोजिकल घिसाव की परिस्थिति को जाननेके लिए कोई प्रयास नहीं किया गया। ऐसा होने पर भी ये पावरलूम येन केन प्रकारेण चालू रह सके हैं। कारण कि कोई कपड़ा (ग्रे फेब्रिक्स) कर–मुक्त है तथा यह ग्रे फेब्रिक्स हेन्ड प्रोसेसिंग फेक्टरियों में ही प्रोसेस किया जाता है। इसलिए प्रत्येक प्रकार की कर–सम्बन्धी कुरीतियों को बढ़ावा मिला है। इन सभी कारणों से पावरलूम उद्योग मूलभूत रीति से मजबूत न होने के कारण भी चालू रह सका है। पावरलूम उद्योग के कारीगर हमेशा से मेहनत करते आए हैं एवं अभी भी मेहनत करनेके लिए कटिबद्ध हैं। अतः, पावरलूम तथा हेन्डलूम क्षेत्रों की अत्यंत आवश्यक पुनर्रचना कर सके ऐसी प्रभावयुक्त एजन्सी की जरूरत है। सामान्य आदमी का हित देखा जाना चाहिए।

(शेष पृष्ठ ३४ पर)

शोक–समवेदना

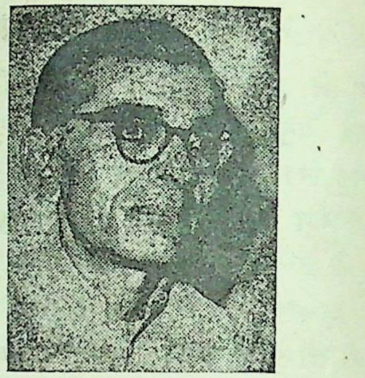

● श्री सोमेश पुरोहित ●

गाँधीवादी विचारधारा के दृढ़व्रती, हिन्दी के सुलेखक एवं सात्विक सौजन्य मूर्ति श्री सोमेश जी पुरोहित 'सुधाबिन्दु' के प्रारंभिक काल के सम्पादक–मण्डल के एक गंभीर कर्तव्यशील सम्पादक थे। उनका स्वभाव बड़ा विनम्र और मिलनसार था। क्रोध और घृणा तो उनमें नाममात्र को भी न थे। श्री पुरोहित जी ने बड़वानी-मध्य प्रदेश में जन्म लिया था और गत चालीस वर्षों से अहमदाबाद में निवास करते हुए नवजीवन कार्यालय में सेवारत थे, जहाँ से दो वर्ष पूर्व अपना कार्यकाल समाप्त करके सेवामुक्त हुए थे। फिर भी साहित्य–सेवा और सत्चिन्तनमय जीवन व्यतीत कर रहे थे। काफी प्रवृत्तिमय थे। गत ३१ मई, १९८० को वे अपनी धर्मपत्नी के साथ बड़वानी अपनी जन्मभूमि पर मिलने–जुलने गए थे। वहीं पर अचानक हृदय–गति बन्द हो जाने के कारण ६७ वर्ष की उम्र में आप का स्वर्गवास हो गया। इससे सुधाबिन्दु-परिवार गहरे शोक का अनुभव करता है।

श्री पुरोहित जी के दो पुत्र और एक पुत्री उनकी धर्मपत्नी के साथ शोकाभिभूत हैं। भगवान् दिवंगत आत्मा को शुभगति प्रदान करे और कुटुम्बी जनों को यह आघात सहन करने का बल दे। —सम्पादक

व्यंग्य परक

एक वर्ष हिजड़ा वर्ष भी हो

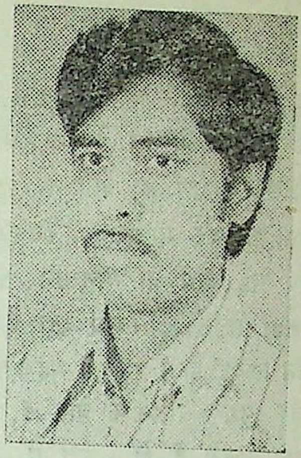

लेखक

श्री पूरन सरमा

एम० ए०

महिला वर्ष सन् १९७५ में मनाया जा चुका है १९७९ को भी बाल वर्ष के रूप में मनाया गया है। वैसे अब नम्बर पुरुष वर्ष का आता हैं। चूंकि महिला वर्ष मनाया जा चुका है। अब यदि पुरुष वर्ष मनाया जाता है तो महिलाओं और पुरुषों के बीच कुछ मतभेद उभर आने का सम्भावना है और उनके आपसी सम्बन्ध गड़बड़ाने की पूरी गुंजाइश है। अतः, मेरे ख्याल से पुरुष वर्ष नहीं मनाया जाना चाहिए। पुरुष वर्ग को उसी दलित और पीड़ित अवस्था में पड़ा रहने देना चाहिए। आगामी कोई एक वर्ष हिजड़ों के लिए बुक कर देना चाहिए। क्योंकि महिला, पुरुषों–बालकों के बाद मानव जाति में हिजड़ा वर्ग ही बच पाता है।

विश्व में हिजड़ा वर्ग ही एक ऐसा वर्ग है जिसके लिए कहीं भी किसी भी रूप में कार्यक्रम नहीं चलाये गए हैं। जिस तरह सरकार द्वारा नौकरियों में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अपंग तथा विकलांग फौजियोंके लिए आरक्षण होता है, उसमें हिजड़ों के लिए भी कुछ स्थान अवश्य सुरक्षित होने चाहिए, ताकि ये लोग भी अपने आपको हीनता से मुक्त समझें और बराबर से बैठकर काम करने लगें। मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि वह दिन दूर नही जब कि हिजड़े विश्व का अधिकांश सरकारों को अपनी कला के बूते पर निश्चय ही हथिया लेंगे।

उस दिन की कल्पना कीजिए जब एक देश का प्रधान मंत्री एक हिजड़ा बन जाए। कितना स्वर्णिम काल होगा उस देश का वह। सभी बड़ी–बड़ी पोस्टों पर हिजड़े नजर आएँगे और इस तरह भ्रष्टाचार और व्यभिचार स्वतः समाप्त होता चला जाएगा, दफ्तर में काम करने वाली महिलाओं के सतीत्व को सदैव जो खतरा बना रहता है, वह टल जाएगा, देश में एक नया अनुशासन और चरित्र–निर्माण शुरू हो जाएगा। अनुशासन पर्व सही रूप में मनाये जाने की स्थिति में वह राष्ट्र पहुँच जाएगा।

सरकार का परिवार–कल्याण कार्यक्रम भी सफल बनाने में हिजड़ावर्ष कारगर सिद्ध होगा। इसके लिए महिलाओं को और पुरुषों को आगे आकर पहल करनी होगी। महिलाएँ हिजड़ों से शादियाँ करें और पुरुष हिजड़ियों से ब्याह रचाएँ, तो दो या तीन बच्चों का जो नारा है वह भी फीका पड़ जाएगा, पति–पत्नी के बीच बच्चों को लेकर होने वाली तकरार से जान बचेगी। आबादी अपने आप घटने लगेगी, स्कूलों और कालेजों में छात्रों की संख्या कम रह जाएगी।

इससे रोज–रोज की होने वाली हड़तालों से बचा जा सकेगा और एक आक्रोश जो दिनोंदिन राष्ट्र के हर वर्ग में पनप कर चुनौती बनता जा रहा है, वह अपने आप क्षीण हो जाएगा, पति–पत्नी चैन की नींद सो सकेंगे और इस प्रकार शादी के बाद हनीमून और सुहागरात के आयोजनों में होने वाले अपव्यय से बचा जा सकेगा। वह गृहस्थी कितनी खुशहाल होगी, जिसमें

केवल दो प्राणी होंगे और बैठे-बैठे मक्खियों से दुश्मनी मोल लेंगे।

बहुत ही सहज और मानवीय दृष्टिकोण से सोचिए कि यह कहाँ तक न्यायोचित है कि हम विलुप्त होते वन्य-प्राणियों के संरक्षण की बात तो करें और इस मानव-प्रजाति के बारे में जरा भी चिन्ता न करें। इस लेख से आप यह अर्थ या अनुमान कतई न लगाएँ कि मेरा हिजड़ों से कोई सम्बन्ध रहा है या मैंने उनसे कोई कमीशन लिया है। यह तो महज समय का तकाजा और सामयिक युग-चिन्तन की बात है, लोग जब भूत-प्रेतों पर लिख सकते हैं तो क्या मैं हिजड़ों पर भी नहीं लिख सकता हूँ, । समय की माँग है और वह आ गया है जब सारी सामाजिक और सांस्कृतिक जिम्मेदारियाँ हमें हिजड़ों को सौंप देनी है।

सिकन्दरा-३०३३२९ जयपुर- (राजस्थान)

विश्व के अधिक आबादी वाले दस शहर

राष्ट्रसंघ के नवीनतम प्रकाशन के अनुसार बम्बई विश्व की अधिकतम आबादी वाले शहरों में दसवाँ शहर है। प्रथम दस शहर एवं उनकी आबादी निम्न प्रकार है:—

शहर	आबादी
१ शांघाई (चीन)	१,०८,२०,०००
२ मेक्सिको (मेक्सिका)	८९,८८,२३०
३ टोक्यो (जापान)	८५,४३,७७५
४ पेकिंग (चीन)	७५,७०,०००
५ न्यूयोर्क (अमरीका)	७४,८१,६१३
६ साव पावलो (ब्राजिल)	७१,९८,६०८
७ लन्दन (इंगलेन्ड)	७०,२८,२००
८ मोस्को (रूस)	६९,४१,९६१
९ सिओल (दक्षिण—कोरिया)	६८,७९,४६४
१० बम्बई (भारत)	५९,७०,५७५

॰ सराय ॰

कहीं कोई बादशाह अच्छा होता है !! लेकिन फिर भी यह बादशाह अच्छा था। उसने पहरेदारों को हुक्म दे रखा था कि कोई फकीर, साधु, सन्त, महात्मा अथवा संन्यासी मेरे महल में आना चाहे, तो उसे रोकना नहीं। एक फकीर पहुँचे, तो बादशाह ने बाहर आकर पूछा—"क्या चाहिये, कैसे आये हो ? फकीर ने कहा-मैं आपके यहाँ दो-चार दिन ठहरना चाहता हूँ। बादशाह को बड़ा तैश आया, बोला—"तुम्हारा दिमाग तो खराब नहीं है, यह कोई सराय है? यह तो महल है। फकीर ने कहा, "सराय तो है ही। बादशाह आपे से बाहर हो गया कि जरूर इस फकीर का दिमाग खराब है। संतरियों को बुलाया कि इसको पीट-पीटकर बाहर निकाल दो। बेचारा फकीर बहुत बुरी तरह पीटा गया।

फकीर ने बादशाह से कहा, "मैंने तो सिर्फ चार-पाँच दिन ठहरने के लिए पूछा था, तो मेरी इतनी पिटाई हुई और आप यहाँ वर्षों से ठहरे हुए हैं, न मालूम आपको क्या सजा मिलेगी ?

बादशाह ने सोचा कि फकीर की इस बात में कुछ भेद है। उसने पूछा, तुम्हारा क्या मतलब है ? फकीर ने बादशाह से पूछा, "आपसे पहले यहाँ कौन ठहरा हुआ था" बादशाह ने कहा, "मेरा बाप।" फकीर ने पूछा उससे पहले ? बादशाह ने कहा, 'मेरा दादा' फकीर ने पूछा, -'और उससे पहले, बादशाह ने कहा, मेरे परदादा। फकीर ने पूछा, "अब आपके बाद कौन ठहरेगा, ?" बादशाह ने कहा,' 'मेरा पुत्र" फिर यह सराय नहीं तो और क्या है ? फकीर बोला।

बादशाह को ज्ञान हुआ। वह बहुत शर्मिन्दा हुआ फकीर से क्षमा माँगी और कहा, "आप मेरे महल में जितने दिन इच्छा हो ठहरें और जो भोजन मैं खाता हूँ वही आप भी स्वीकार करें।"

फकीर ने कहा, "महल मेरे ठहरने की जगह नहीं है। मेरे लिए तो सारा संसार ही सराय है। जहाँ फकीर की मौज होगी वहीं ठहरेगा —सुरेन्द्रनाथ जौहर

पुस्तक परिचय

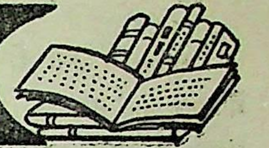

बदलते भाव : उभरते स्वर (काव्य-संग्रह)

रचयिता-श्री जगदीशचन्द्र 'जीत'

प्रकाशक-श्री शान्ति कुञ्ज प्रकाशन, राणाप्रताप बाग दिल्ली ११०००७ पृष्ठ सं० ४८ डेमी साइज, मूल्य-६ रु०

कवि 'जीत' एक सुबुद्ध और अनुभवी लेखक हैं। आप एक अच्छे कवि और सधे हुए संपादक-अनुवादक भी हैं। आपकी कविताएँ खूब चर्चित-प्रशंसित हुई हैं।

प्रस्तुत काव्य-संग्रह में कवि ने गीत, ग़ज़ल और कविता की त्रिवेणी बहाई है। प्रत्येक रचना में ताजगी है, कल्पना है, माधुर्य है और प्रासादिकता है। पुरानी और नई दोनों विधाओं को बखूबी निभाने का हस्त-कौशल आपकी उल्लेखनीय विशेषता है। विषयों का चयन-वैविध्य कवि के रचना-पाटव का परिचय देता है-डाक्टरेटः एक अध्ययन, आज की मित्रता, सूनी राहें, एक आदमीः दो मूल्यांकन, शोषण, नेताई खिलवाड़, दल-बदलू रचनाएँ जहाँ अत्याधुनिक हैं, वहाँ साजन की याद, दुखदाई गीत, विरह की आग कविताएँ मध्य काल का दृश्य सामने खड़ा कर देती हैं। हाँ, गजलों में कहीं-कहीं रवानी और कहीं-कहीं उर्मिलता की कमी दृष्टिगोचर होती है, रंग चोखा नहीं प्रतीत होता। पुस्तक की छपाई और साज-सज्जा आकर्षक है। गेट अपटुडेट है। 'राम'

रोशनी की तलाश (काव्य-संग्रह)

रचयिता-श्री डा० दयाचन्द जैन तथा प्रा० भगवान दास जैन,

प्रकाशक-वर्षा प्रकाशन, मुरलीधर को० हा० सो० ओढव, अहमदाबाद, पृष्ठ सं० ८० डेमी साइज सजिल्द। मूल्य-दस रुपए

इस काव्य-संग्रह में दा जैन सुहृदों के क्रमशः बत्तीस और तैंतालीस कविताओं का संकलन किया गया है। उनमें गीत, गजल, कविताएँ, क्षणिकाएँ, मुक्तकद्विपदियाँ, दोहे प्राचीन और नवीन दोनों विधाओं का दिग्दर्शन कराते हैं। ये कविताएँ अलग-अलग क्षणों में अलग-अलग अवसरों पर उत्पन्न भावोर्मियों के मनोहर रूप हैं। उत्तम भाव, प्रवाहमयी कल्पना और रूप-विधान अपने ढंग का अनूठा है। छपाई, गेट-अप, आवरण पृष्ठ आदि सभी आकर्षक है। अवकाश के क्षणों में पढ़ने योग्य और आनन्दानुभूति कराने के योग्य इन कविताओं का सहर्ष स्वागत है। —राम

सींग पर उगी हुई लाशः (काव्य-संग्रह)

लेखक श्री ओमप्रकाश भाटिया 'अराज'

प्रकाशक-सूर्यप्रकाशन, नई सड़क दिल्ली

पृष्ठ-२० डेमी साईज मूल्य १ रु०

रिसर्च पेपर १ से ४ तक) लेखक और प्रकाशक उपर्युक्त दोनों पुस्तकें उपयोगी और पठनीय हैं। हम लेखक को धन्यवाद देते हैं। -राम

विवेक विकास
[साहित्य-संस्कृति-कला का स्तरीय मासिक]
सम्पादक : रामनिवास स्वामी
वार्षिक शुल्क १२ रुपये
आजीवन सदस्य शुल्क : २२१ रुपये
सम्पर्क : केसरगढ़, जवाहरलाल मार्ग, जयपुर-४

तारिका
रोचक तथा जीवनपयोगी मासिक पत्रिका
वार्षिका शुल्क ५रु. आजीवन शुल्क ५०रु०
सम्पर्क-कहानी-लेखन महाविद्यालय
अम्बाला छावनी-१३३००१ (पंजाब)

(पृष्ठ ३० का शेष)

इन तीनों क्षेत्रों को कुशलतापूर्ण अभिगम के अभाव में बहुत कुछ नुकसान सहन करना पड़ता है। इस परिस्थिति में सुधार करना चाहिए तथा सामान्य जनता के हितों को ध्यान में रखकर परेशानी तथा अराजकता को दूर करना चाहिए। इस हेतु समग्र कपड़ा उद्योग का पुनः निर्माण करने की आवश्यकता पड़ सकती है। हमें उद्योग के विविध क्षेत्रों की दृष्टि से नहीं, पर समग्र उद्योग की दृष्टि से विचार करना चाहिए। व्यक्तिगत प्रतिक्षेत्र उत्पादन-लक्ष्य निर्धारण करते के बदले समग्र उद्योग का उत्पादन-लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए। जब तीनों क्षेत्रों को अलग गिना जाता है तथा उनके उत्पादन-लक्ष्य भी अलग-अलग निश्चित किये जाते हैं। तभी उनके बीच घर्षण उत्पन्न होता है। पावरलूम तथा हेन्डलूमों से सख्ती करनी चाहिए कि जिससे उत्पादन-पद्धति निश्चित की जा सके तथा योग्य व्यवस्था भी की जा सके। सहकारी मंडलियों को इस संदर्भ में इकाई बनाने के प्रयास किए गए थे; परन्तु अंदाज समिति के बताए अनुसार वे असफल सिद्ध हुए।

हेन्डलूम तथा पावरलूम की पुनः व्यवस्थाके लिए सभी प्रयत्न करने के बावजूद भी बीच के लोग उन्नत होते रहे हैं। अंतिम तीन दशकों से किए गए सभी प्रयोग असफल हुए हैं। इस उद्योग के सुव्यवस्थित क्षेत्र में परिवर्तन लाने हेतु उसी के साधन एवं अनुभव (खासतौर पर मार्केटिंग प्रबुद्धता के साथ) हेन्डलूम और पावरलूमों को पुनः व्यवस्थित करने का एक नया प्रयोग किया जा सकता है। सरकारी नीतियाँ आज तक मध्यस्थियों द्वारा हेन्डलूम तथा पावरलूम के उत्पादन क्षेत्र के कमजोर श्रेणी के शोषण में ही परिवर्तित हुई हैं। इन परिस्थितियों का लाभ मध्यस्थियों को लेने-देने के बदले तथा क्षेत्र को सरकार की गिनती में न लिया जा सके, ऐसा बना देने के बदले राष्ट्रीय हित को ध्यान में लेकर विकेन्द्रित क्षेत्र में उत्पादन और मार्केटिंग की पुनः व्यवस्था करने का कार्य सफल करनेके लिए सुव्यवस्थित क्षेत्रों को आमंत्रित किया जाना चाहिए। जब इस प्रकार होगा तभी मध्यस्थियों के अलावा प्रत्येक को लाभ मिल सकेगा।

हेन्डलूमों को कारखानों में बदलने तथा पावरलूमों को फेक्टरियों में बदलने की कल्पना अनुसार पुनर्व्यवस्था में वेतन-स्तर ऊँचा लाना जरूरी पड़ जाएगा। अतः, स्वाभाविक रीति से अच्छे अनुपात में कमीशन भी मिलना चाहिए। सिवाय कि वर्तमान में विकेन्द्रित क्षेत्रों को जो राहत दी जाती है, वैसी ही राहत, "सुव्यवस्थित क्षेत्र" को भी, वे जहाँ हेन्डलूमों तथा पावरलूमो को अपनाएँ वहाँ देनी चाहिए।

उत्पादन और मार्केटिंगके लिए कपड़े का ऐसा कुशलतापूर्ण अन्तरक्षेत्रीय संयुक्त विकास हेन्डलूम, पावरलूम मिलों के लिए अत्यंत लाभदायी सिद्ध होगा। साथ ही साथ कपड़े का उद्योग तथा देश के अर्थतन्त्रके लिए भी उतने ही प्रमाण में लाभदायी बन जाएगा। हेन्डलूमों की सफलता ऊँची कीमत के उच्च टिकाऊ कपड़े के उत्पादन में ही निहित है। इससे उत्पादन के वर्तमान अनुपात में भी हेन्डलूम के बुनकरों को ऊँचे वेतन-दर मिल सकेंगे। पावरलूम के कारीगरों से सख्त कार्य लिया जाता है, यह बात विदित है। उनके कार्य-स्तर में भी अधिक परिवर्तन करने की जरूरत है। साहसिकों तथा कारीगरों के लाभके लिए समग्र उद्योग की कार्यवाही में सुधार लाने का कार्य केवल सुव्यवस्थित क्षेत्र सहित की योग्य पुनः व्यवस्था द्वारा ही की जा सकती है।

नई कपड़ा-नीति के अन्तर्गत, १२२० करोड़ के उत्पादन-लक्ष्य में से हेन्डलूमके लिए ३७० करोड़ मीटर का लक्ष्यांक निश्चित किया गया है जो वर्तमान २३० करोड़ मीटर के उत्पादन की तुलना में १४० करोड़ मीटर अधिक है। पावरलूम का उत्पादन वर्तमान २९० करोड़ मीटर से १०० करोड़ मीटर बढ़कर ३९० करोड़ मीटर जितना अनुमानित किया गया है। परन्तु सुव्यवस्थित क्षेत्र को उसके उत्पादन में ४२० करोड़ मीटर से ४६० करोड़ मीटर अर्थात् केवल ४० करोड़ मीटर जितना ही उत्पादन बढ़ाने की अनुमति दी गई है। अभी तक के पूर्व अनुभवों को ध्यान में लेकर, हेन्डलूम उद्योग इतना माल दे सकेगा कि नहीं इस संदर्भ में शंका व्यक्त की गई है।

शेष पृष्ठ ३६ पर

समिति समाचार

परीक्षाफल :

राजस्थान सेवा समिति संचालित राजस्थान हिन्दी हाईस्कूल की कक्षा दसवीं (एस० एस० सी०) और कक्षा बारहवीं (हायर सेकेण्डरी) के विद्यार्थियों ने मार्च १९८० में बोर्ड की परीक्षाएँ दी थीं। उनका परीक्षाफल निम्नानुसार है—

कक्षा दसवीं के २२८ बालक बालिकाओं ने आवेदन पत्र भरे और सब परीक्षा में सम्मिलित हुए। उनमें से १८६ उत्तीर्ण हुए। परीक्षाफल ८१.५७ प्रतिशत हुआ।

प्रथम श्रेणी	५२
द्वितीय ,,	९७
तृतीय ,,	३७
कुल	१८६

इस परीक्षा में यशस्वी विद्यार्थियों और विद्यार्थिनियों का विवरण नीचे लिखे अनुसार है—

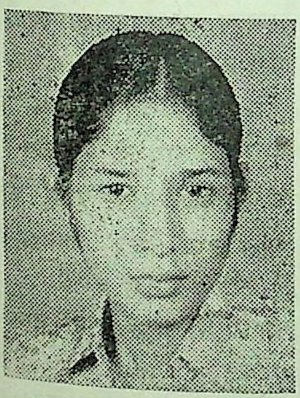

कुमारी
सुजाता

स्कूल में सर्व प्रथम—सुजाता तुलसीराम अग्रवाल ७६.७%
द्वितीय—विमलेश त्रिलोकचन्द भनसाली ७५%
तृतीय—घनश्याम दाऊलाल अग्रवाल ७५
तृतीय—रविप्रकाश मातादीन गुप्त ७२.७

बोर्ड में कुमारी सुजाता तुलसीराम अग्रवाल को तथा घनश्याम-दाऊलाल अग्रवाल को हिन्दी उच्चतर परीक्षा में उच्चतम अंक ७९ मिलने के कारण पचास-पचास रुपए का नकद पारितोषिक मिला।

उच्चतर माध्यमिक विभाग की परीक्षा में दो प्रवाहों में विद्यार्थी सम्मिलित हुए। सामान्य प्रवाह में १६० और विज्ञान-प्रवाह में ६१ विद्यार्थी विद्यार्थिनियों ने परीक्षा दी। उनका परीक्षाफल क्रमशः ८६.८८ प्रतिशत और ८४.५ प्रतिशत रहा।

कुमारी
मंजु

इस परीक्षा में भिन्न-भिन्न प्रवाहों में यशस्वी रूप से उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थी-विद्यार्थिनियों का विवरण नीचे लिखे अनुसार है—

श्रेणी,	सामान्य प्रवाह	विज्ञान-प्रवाह
विशेषयोग्यता	–	५
प्रथम	३४ –	१३
द्वितीय	८३ –	३१
तृतीय	२२ –	००
अनुत्तीर्ण	२० –	९
अनुपस्थित	१ –	३
	१६०	६१

सामान्य-प्रवाह में विद्यालय में प्रथम तीन के नाम

१- मंजु बुद्धिलाल अग्रवाल	७१ प्रतिशत
२- अनूपकुमार सांवरमल गाड़िया	७० ,,
३- राजेश्री प्रकाशचन्द्र जैन	७० ,,

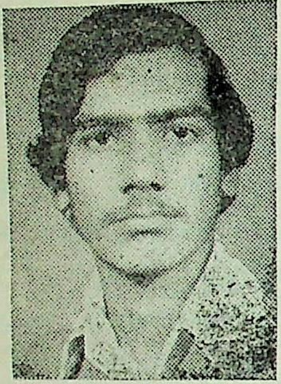

कुमार

अनिल

विज्ञान-विभाग में प्रथम तीन

१- अनिल कुमार हरवंशलाल अरोरा	७४ प्रतिशत
२- अमीरूल अब्दुल हुसेन हक	७२ ,,
३- विश्वनाथ सूरजमल शुक्ल	७२ ,,

बच्चों का एक मात्र प्यार लघु मासिक
राकेट
पढ़िये
वार्षिक शुल्क ७ रुपया मनीआर्डर द्वारा भेजकर सदस्य बने
बाल-प्रेरक रचना सादर आमन्त्रित

राकेट-प्रकाशन
आकोला-३१२२०५
जिला-चितौड़गढ़)

★

(पृष्ठ ३४ शेषांक)

आधुनीकरण भी, कपड़ा उद्योग की बीमारी के प्रश्न का लंबी अवधि का उत्तर है । इससे उत्पादन-क्षमता में वृद्धि होगी एवं उत्पाददन में भी कर-कसर होगी । हाल में अपनाए गए मल्टी फाईबर अभिगम से अच्छे लाभ तो हुए ही हैं । फिर भी योग्य भावों पर कच्चे माल का विश्वासपूर्ण माल, तथा प्रोडक्ट मिक्स के सुधार, कपड़ा उद्योग की उन्नति और प्रगति के लिए अधिक मददगार सिद्ध होंगे, परन्तु मल्टी फाइबर नीति के संदर्भ में किसी प्रकार की अनिश्चितता या ढिलाई नहीं रहनी चाहिए ।

बिजली की कमी का प्रश्न समस्याओं का सृजन कर रहा है । अतः, बिजली की समस्या सुधरे ऐसे प्रयत्न किये जाने चाहिए तथा केप्टीव प्लान्ट द्वारा होने वाले उत्पादन को अधिक सुविधाएँ देकर उत्तेजन दिया जाना चाहिए ।

अधिक अच्छे अनुपात में कपड़े के उत्पादन से रंग एवं रसायन के उत्पादन घटक घटेंगे तथा अधिक अनुपात में रूई की बचत होगी ।

कपड़े पर लगनेवाला कर भी यदि कम हो जाए, तो उनकी कीमत घटेगी जिससे उपयोग बढ़ेगा एवं उत्पादन में अच्छी गतिशीलता आएगी ।

अधिक एवं अच्छा उत्पादन अनिवार्य :

कारीगर भी उत्पादकता में वृद्धि कर उतनी आय बढ़ाकर वेतन खर्च में परोक्ष ढंग से कमी कर सकते हैं । उद्योग में कारीगरों के कार्य के निश्चित किए गए ध्येय में उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि, कौशल्य का विकास एवं कच्चे माल तथा अन्य उत्पादन-घटक के मितव्ययी उपयोग का भी समावेश होगा ।

शायद कार्य-क्षमता में वृद्धि करना तथा खर्चों में कमी करने की योग्य पद्धतियाँ तथा नफे को बाँटने का सिद्धांत, उत्पादकता को गतिमान बना सकेगा ।

भारत में अधिकाधिक अच्छे उत्पादन की हर समय आवश्यकता रही है । कपड़ा उद्योग-जो लोगों की मूलभूत आवश्यकताओं के उत्पादन में लगा हुआ है, उसे सरकार को चाहिए कि टेकनोलोजिकल सुधार तथा अधिक अच्छी व्यवस्था एवं संचालन द्वारा इसके विकास के शक्य सभी कदम उठाए । प्रमाण बढ़ाने का व्यवस्थित प्रयत्न करना चाहिए ।

Give
Ambiprincess Dress Materials
the total test... Check the fabric
Check the finish
Check the design
Check the quality
Check the price
Check the name
Shri Ambica Mills

Bidhan-AG42 B

मेसर्स विनोदकुमार अग्रवाल

पट्टा, लेडीज एवं जेन्ट्स कलर पोपलीन, चैक शर्टिंग, पापलीन प्रिन्ट,
पोलीस्टर प्लेन तथा प्रिंटिंग एवं पोलीनोजिक प्रिन्ट के थोक व्यापारी

33/A, मस्कती मार्केट

अहमदाबाद ३८०००२

T. No. 382310, 384735

टेलीफोन नं० 362546

श्री भगवती ट्रेडिंग कम्पनी

न्यू स्वदेशी मिल आफ अहमदाबाद

की

प्रिन्ट फेयरलेडी, तथा राजरत्न, रंगीन शाम के विक्रेता :

अन्य प्रतिष्ठान

श्री जय अम्बे ट्रेडिंग कम्पनी

श्री जगदम्बा ट्रेडिंग कम्पनी

१६८, न्यू क्लॉथ मार्केट

अहमदाबाद-२

सेन्चुरी की नई देन

कोजीकॉट

कॉटन शर्टिंग

सुन्दर सुहावने चेक्स में उपलब्ध है।

पहनने में ऊनी कपड़े-सा आनन्द मिलता है।

निर्माता

दि सेन्चुरी स्पिनिंग एण्ड मैन्युफेक्चरिंग कंपनी लिमिटेड

'सेन्चुरी भवन', डॉ. एनीबेजण्ट रोड, वरली

बम्बई—४०००२५

हमारे पास हैं लुभावने कपड़े
आपके पास है आकर्षक व्यक्तित्व
जी हाँ, कपड़े की इतनी किस्में कि
हर व्यक्ति अपना मनपसन्द कपड़ा चुन सके,
सबके लिए-खास तौर से आपके लिए

जियाजी

टेरीन, सूटिंग-शर्टिङ्ग, काटन-शर्टिङ्ग प्रिन्ट्स

निर्माता :

जियाजीराव काटन मिल्स लि०

बिरलानगर, ग्वालियर (म० प्र०)

Piramal Mills

Piramal Fabrics

Piramal Fabrics

Maheshwari Mills

Manufacturers of Cotton & Polyester Suitings, Shirtings & Dress Materials.

with best compliments from

Messes Zenith Distributors

Wholeseller

CAPRIHANS INDIA LIMITED

ROHA. DIST. KOLABA

Head Office : 46, Bajaj Bhavan, 4th Floor,
Nariman Point, Bombay-400021.
Phone : 234022 & 230370.
Gram : FASHFAB
Teloex : 011-4209 IPTC IN

Ahmedabaad : Daud Manzil, 2381, Relief Road,
Ahmedabad-380001.
Phone : 383195 & 383756
Gram : PAPERDEAL,

Baroda : 'Shreej Krupa, Opp Mahavir Colony,
Rajmahal Road, Baroda-390001.
Phone : 54567.
Gram : GLAZEBOARD.

Jajpur : Jayanti Market, M. I. Road, Jaipur.

Madras : Ahad Mansion, 74, Mount Road,
British Council, Madras-600002.
Distributors for Rajasthan

Hydrabad Asbestos Cement Products Ltd.

HYDERABAD-500018.

INSIST ON
"LOTUS ASBESTOS CEMENT PRODUCTS"
Lotus Asbestos Cement Pressure Pipes
for
WATER SUPPLY AND IRRIGATION

Manufactured by :-Shri Digvijay Cement Company Limited
Digvijaynagar
Ahmedabad-382470.

A. C. PRESSURE PIPES

(1) Cool, pure, clean water-the source of life is made possible from distant sources by the use of "LOTUS" Asbestos Cement Pressure Pipes. Strong as cast iron and full proof against rust, corrosion or incrustation, Lotus Pressure Pipes are economical, easy to drill and maintain the same flow even after a number of years

Exclusive Lamination process makes it lighter and stronger, conforming to ISS No. 1592/1970.

Available for different pressure ratings in diametres 80 mm. to 40- mm.

"LOTUS" Asbestos Cement Roofing Sheets.

(2) "LOTUS" AC Roofing sheets and Building Boards for housing industrial roofing and partition and interior decorations.

Phones : 867264
867265
867267
867266

Gram ; "LAXCEMENT"
Telex : AM-Lotus-012-345

Please address Enquiries to :-

Laxmi Cement Distributors Private Ltd.
DIGVIJAYNAGAR
AHMEDABAD-382470
"LIONS DO NOT COMPROMISE NOR DO WE"

USE

ORIENT

FANS

With Best Compliments from

ORIENT TRADING COMPANY

Gandhi Road, Opp. Fatasa Pole,
AHMEDABAD.

Phone 383834 & 383836

In fant
B. C. M. Suitings
Made just for today's High Fashions
and make them better,
Much Better
classical in feeling
and
Bright and Soft Colourful Composition
B, C. M.
POLYESTER SUITINGS & SHIRTINGS

The Birla Cotton Spg.
&
Wvg Mills Ltd

P. O. Birla lines,
Delhi-110007.

Gram : PARAMSUKHI
Telex : 012-552-Gupta-in-

Phone Offi. : 382138
Resi. : 441348

Selling Agents for Kerala :

- The Mahendra Mills Ltd.
- The Bharat Vijay Mills Ltd ,Kalol.
- The Maheshwari Mills Ltd., Ahmedabad.

With Best Compliments from

K. G. AND COMPANY

Cloth Merchants & Commission Agents.
H. A. Market Kapasia Bazar,
Ahmedabad-380 002.

Branch :

80, NEHRUNAGAR, TRICHUR-680 006.

Gram : PARAMSUKHI

Phone : 20258

ફોન 233261
233342
233417

TUNGABHADRA INDUSTRIES LTD.

"Bakhtwar" 7th Floor,
Nariman Point, Bombay-400 021

Manufacturers of :

"Tushar Brand" Vanaspati
"Niralall" Brand Washing Soap

Leading Exporters of :

Groundnut Deoiled Cake
Ricebran Extractions

WE MANUFACTURE
A.A.C. AND A.C.S.R. CONDUCTORS
AND

ALUMINIUM WIRES
FOR YOUR REQUIREMENT IN ANY SIZE AND QUANTITY
PLEASE CONTACT

**PREM CONDUCTORS
PRIVATE LIMITED**

Registered Office
211, New Cloth market
Ahmedabad-380002
Phone : 360551/367730

Administrative Office & Works
Station Road,
Vatava (Ahmedabad) 382440
Phone : 877283/877281

With best compliments from

Gram : Good Faith

Phone : 366283
Resi. : 444229

PRAYAGRAJ VINODKUMAR

Cloth Merchant & Commission Agents

187, New Cloth market Ahmedabad–380002

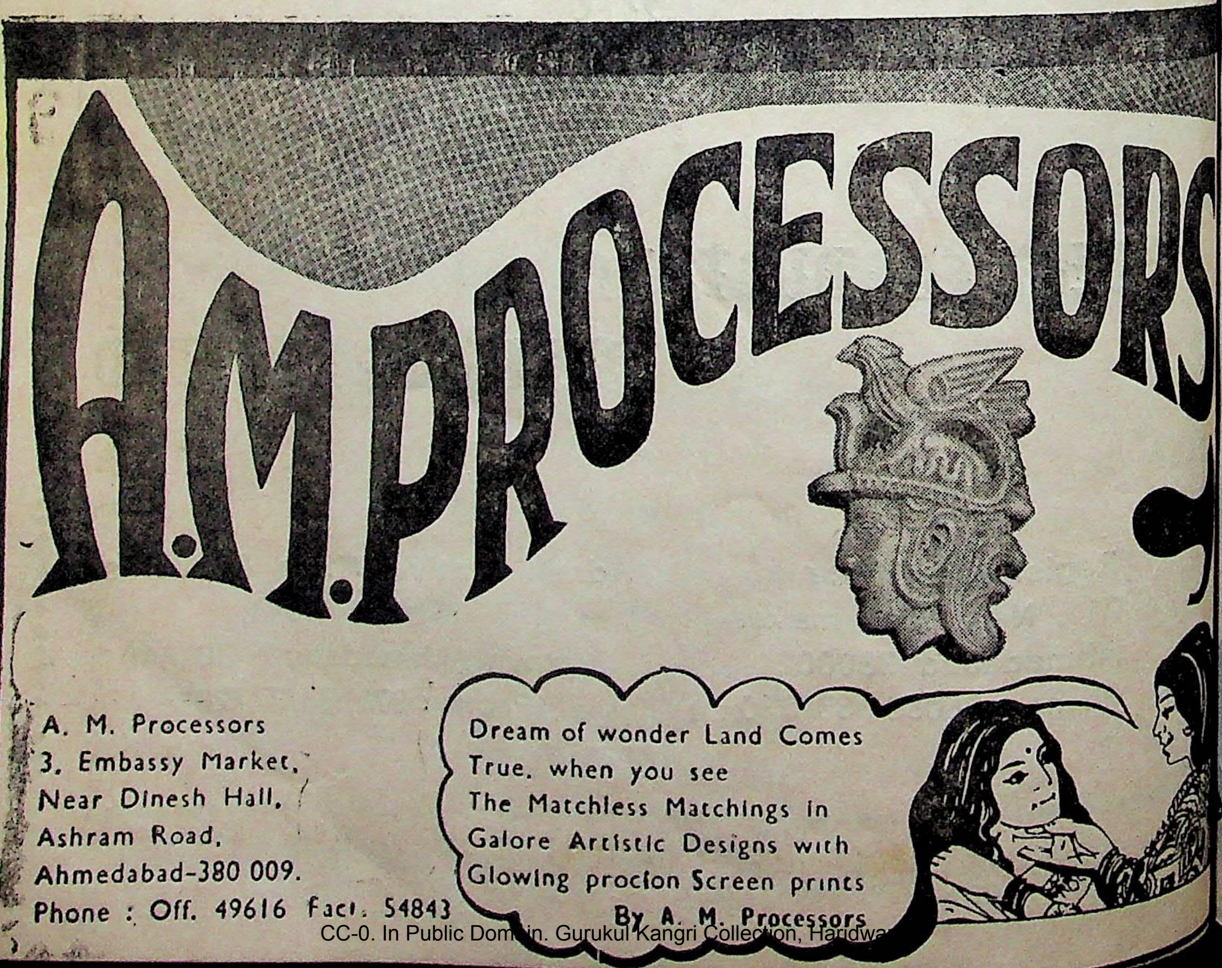

A.M. PROCESSORS

A. M. Processors
3. Embassy Market,
Near Dinesh Hall,
Ashram Road,
Ahmedabad-380 009.
Phone : Off. 49616 Fact. 54843

Dream of wonder Land Comes True. when you see The Matchless Matchings in Galore Artistic Designs with Glowing procion Screen prints
By A. M. Processors

New Gujarat Cotton Mills Ltd.
AHMEDABAD–2

INSIST ON
"New Gujarat Fabrics"
For Home & Export

For 100% of Polyester, Printed Shirting, 80/20 Filament Shirting, Fancy Wash and Wear Poplins of Latest Fashions

Regd. Office :
18 A. Brabourne
Road,
Calcutta

Mill No. 1
Naroda Road
Ahmedabad–380002
Phone : 372266
372317
374526
Telegram : NEW
GUJRAT

Mill No. 2
Out side Dariapur Gate,
Ahmedabad–380016
Phone : 383493
380389
Telex : AM 311

ALWAYS INSIST ON
QUALITY FABRICS
OF

न्यू स्वदेशी

**NEW SWADESHI
MILLS OF
AHMEDABAD LIMITED**

NARODA ROAD, Ahmedabad-380002

मंजुश्री

MANJUSHRI TEXTILES

GIRDHARNAGAR, Ahmedabad-380010

**Manufacturers of Quality textiles
Cotton as well as Synthetic
Shirtings, Suitings, Dress Materials
Bedsheeting etc.**

Phone : 67221/2/3
Gram : MANJUSHRI
Telex : NEWSWA 222

Phone : 372121
Gram : "Newswadeshi"
Telex : 222

सुधाबिन्दु

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी

० : अंक : ७
ई, १९८०
☆
शुल्क : १५ रु.
ग्राहक: १५० रु.
क : १.५० रु.

राजस्थान
सेवा समिति
अहमदाबाद

INSIST ON

ASARWA FABRICS

100% Polyester Prints in Eye-catching Designs :
Lovable shades and
Lovely Matchings for
Fashionable Fabrics

AND

Feel the Differece, Warmth
And the Feeling of a new Life

Registered User Of Trade Mark
"EVA PRESHRUNK & SUNFULGENT"

Choose From ASARWA'S
Exciting Varieties of Polyester/Cotton
Blended Shirting, Suting, Sarees,
And Dress Materials

* * *

ASARWA MILLS

(Prop Bengal Tea æ Industries Ltd.,)

Ashrwa Road AHMEDABAD-380 016
Regd. Office : Brabourne Road, CALCUTTA-700001
Tl. Phone : 67301-2 Gram : MILLASHARWA Telex : 012479

सुधाबिन्दु

सम्पादक

डा० राजनाथ पाण्डेय
एम० ए० (संस्कृत, हिन्दी, पालि), पी-एच० डी०
व्याकरणाचार्य "लब्धस्वर्णपदक"

रामअवधेश त्रिपाठी
साहित्यरत्न

संयोजक

गिरधारीलाल सराफ
एम० कॉम०, एल-एल० बी,० रा० रत्न

लेखकों से निवेदन

(अ) हमें कैसे लेख-कविता-कहानी आदि चाहिए :–

(१) जो मानव में जीवन के प्रति आस्था जगाकर जीवन को सुन्दरतर बनाए और जो जीवन जीने की कला सिखाए।

(२) जो मानव-मानव में अपनत्व बढ़ाए, जो करुणा जगाए और जो परसेवा सिखाए।

(३) जो मानव को आत्माभिमुख करके प्रकृत्ति परायण बनाए।

(४) जो हमारे भारत राष्ट्र की, विशेषतः राजस्थान की गरिमा को उजागर करे।

(५) जो हमारी विभिन्न प्रजाओं, जातियों एवं व्यवस्थाओं के उत्कृष्ट गुणों का विवेचन करे।

(६) जो प्राचीन-अर्वाचीन ज्ञान-विज्ञान का संतुलित विवेचन करे।

(७) जो मानव को श्रेष्ठ मानव बनने के लिए प्रेरित करे।

(आ) रचनाएँ कागज के एक ओर लिखकर भेजें।

° अप्रकाशित और अप्रसारित रचनाएँ ही भेजें।

° निर्विवादास्पद विषयों पर लिखी हुई रचनाएँ ही भेजें।

° रचना अस्वीकृत होने पर वापस मँगानेके लिए टिकट लगा लिफाफा भेजें।

° तीन-चार फुलस्केप में लिखी ही रचनाएँ भेजें तो बड़ी अनुकूलता होगी।

° अपना परिचय तथा योग्यता-विवरण भी भेजें।

पत्राचार : रामअवधेश त्रिपाठी
२, उत्तर भारतीय कोलोनी नागरवेल के पास
अमराईवाड़ी, **अहमदाबाद–३८००२३**

राजस्थान सेवा समिति, अहमदाबाद का मासिक मुखपत्र

वर्ष : २० **जुलाई**
अंक : ७ **१९८०**

●

वार्षिक शुल्क : १५ रुपए
आजीवन ग्राहक : १५० रुपए
एक अंक का मूल्य : १.५० रुपए

●

'सुधाबिन्दु' में विज्ञापन की दरें निम्नांकित हैं :

स्थान	वार्षिक
कवर पृष्ठ नं. ४	३,००० रु०
,, ,, नं. २ और ३	२,५०० रु०
रंगीन पूरा पृष्ठ	२,००० रु०
,, आधा ,,	१,००० रु०
साधा० पूरा पृष्ठ	१,५०० रु०
,, आधा ,,	७५० रु०

व्यवस्थापक 'सुधाबिन्दु'

राजस्थान सेवा समिति, शाहीबाग मार्ग अहमदाबाद–४

राजस्थान सेवक समिति, शाहीबाग मार्ग, अहमदाबाद ४ के लिए श्री रामावतार शर्मा (सचिव) ने प्रकाशित किया एवं श्री शान्तिलाल हरजीवन शाह ने नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद १४ से मुद्रित किया।

अनुक्रमणिका

[गुजरात यूनिवर्सिटी द्वारा शोध-पत्रिका के रूप में 'सुधाबिन्दु' मान्य है।
तथा
राजस्थान सरकार के माध्यमिक, उच्चतरमाध्यमिक विद्यालयों तथा पुस्तकालयों के लिए मान्य]

१. दूरदर्शी बनो		सम्पादकीय	५
२. नकाब	(कविता)	डा० भगवतशरण अग्रवाल	६
३. गुजराती कविता का आधुनिक युग	(समीक्षा-परक)	डा० रजनीकान्त जोशी	७
४. ममतामयी	(सत्य-कथा)	श्री अनिता जैन	१०
५. सांस्कृतिक पुनरुत्थान के प्रणेता प्रेमचन्द	(शताब्दी-परक)	श्री श्यामसुन्दर सुल्लेरे	१२
६. अग्रवाल समाज : एक दृष्टि	(परिचय-परक)	श्री रामेश्वरदास गुप्त	१६
७. दक्षिण भारतीय भाषाओं में अनूदित प्रेमचन्द साहित्य	(शताब्दी-परक)	श्री माणकचन्द नाहर	१९
८. राजस्थानी साहित्य में नीति वचनावली	(परिचय-परक)	श्रीमती सुगनी देवी बासोतिया	२१
९. दृष्टि-परिवर्तन	(नारी-परक)	कुमारी सुमन मित्तल	२३
१०. केन्द्रीय बजट	(बजट-समीक्षा)	श्री रामनिवास राठी	२५
११. हल्दी	(स्वास्थ्य-चरक)	श्री भानुप्रताप मिश्र	२९
१२. इलजाम	(बाल-परक)	श्री विनोद खत्री	३२
१३. व्यापार-व्यवहार की शिक्षा-शती	(व्टवहार-परक)	श्री नयनचन्द बोरडिया	३४
१५. सेठ श्री झाबरमलजी भोजनगरवाला	(व्यक्ति-परिचय)	एक समाजसेवी	३५
१४. कपड़ा प्रोसेसिंग उद्योगमें अहमदाबादका महत्त्वपूर्ण योगदान	(उद्योग-परक)	श्री अजीत मेहता	३७
१७. विज्ञापन			४०

• आवश्यकता है •

"सुधाबिन्दु" का प्रचार-प्रसार करने और ग्राहक बनाने तथा विज्ञापन लानेके लिए उचित कमीशन पर उत्साही कार्यकरों की आवश्यकता है। पत्र—व्यवहार करें—

व्यवस्थापक 'सुधाबिन्दु'
राजस्थान सेवा समिति शाहीबाग मार्ग, अहमदाबाद - ४

देश-विदेश की पत्र-पत्रिकाओं तथा सुधाबिन्दु के अधिकृत एजेण्ट
सौरभ पुस्तक भण्डार
केलिकी डेमके सामने रिलीफ रोड अहमदाबाद-१

— प्रार्थना —

प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम, वयं पुत्रमदिते र्यो विधर्त्ता।
आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चित, राजा चिद्यं भग भक्षीत्याह ।।

यजुर्वेद: ३४-३५

हे भगवान्, हम प्रातःकाल सकल ब्रह्माण्ड को धारण करनेवाले विजयशील उग्र अमरत्व के रक्षक अदिति के मूर्तरूप आपके उस दिव्य महिमामय भगरूप का आह्वान करते हैं, जिस भगरूप के सम्मुख दरिद्र, निर्बल, अभिमानी, बलवान तथा बड़े-बड़े राजा भी सब समान भाव से "प्रदान करो" "प्रदान करो" ऐसी याचना करते हैं।

• समिति के दो प्रकाशन–पुष्प •

१. आधुनिक राजस्थानी साहित्य : **लेखक — प्रा. भूपतिराम साकरिया**

डेमी साइज, पक्का जिल्द, कलात्मक आवरण–पृष्ठ, सुदर छपाईवाली इस पुस्तक की प्रशंसा बड़े-बड़े विद्वानों ने की है। पुस्तकालयों तथा पुस्तकप्रेमियोंके लिए विशेष उपयोगी है। मूल्य – केवल ६ रुपए

२. बातां बखत बखत की : **लेखक — श्री महावीरप्रसाद हलवाई**

डेमी साइज, पक्की जिल्द, उत्कृष्ट छपाई तथा मोहक आवरण-पृष्ठ। यह पुस्तक राजस्थानी भाषा में लिखी गई मौलिक और जीवनोपयोगी कविताओं का एक सुन्दर संग्रह है, जिसके प्रत्येक दूहे अँगूठी के नगीने हैं। मूल्य – केवल ६ रुपए

इस पुस्तक पर सम्मति देते हुए आचार्य बदरीप्रसाद साकरिया ने लिखा है, "सुन्दर और सुबोध नीति के दोहे अपने ढंग की यह एक कृति है। कवि का प्रयास वास्तव में सराहनीय है। राजस्थानी भाषा के माध्यम से कवि और कृति साहित्य-गगन में प्रकाशमान हों, ऐसी अपेक्षा-अभिलाषा है।"

प्राप्तिस्थान

राजस्थान सेवा समिति, शाहीबाग मार्ग, अहमदाबाद – ४

• आजीवन ग्राहक बनिए •

'सुधाबिन्दु' एक साहित्यिक और सांस्कृतिक मासिक पत्रिका है। इसका ग्राहक बनना गौरव की बात है। ग्राहक-शुल्क वार्षिक १५ रु० है और वह भी महँगाई के साथ बढ़ता रहता है। इस परेशानी को दूर करनेके लिए केवल १५० रु० डिपोजिट भरकर आजीवन ग्राहक बनना अधिक सुविधाजनक है। अबतक इस योजना का लाभ अनेक ग्राहक ले चुके हैं।

कृपया आप भी १५० रु० भेजकर शीघ्र इस योजना से लाभ उठाइए।

व्यवस्थापक **'सुधाबिन्दु'**

राजस्थान सेवा समिति, शाहीबाग मार्ग, **अहमदाबाद—४**

• पाठकों के पत्र •

सुधाबिन्दु का 'संस्कृति विशेषांक' प्राप्त हुआ, इस कृपाके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

प्रत्येक व्यक्ति को अपने देश की संस्कृति एवं साहित्य पर गर्व होता है। भारत अपनी संस्कृति के लिए सदा से ही प्रसिद्ध रहा है। अपनी इस विशाल संस्कृति को अमरत्व प्रदान करने हेतु, हमारे सभ्य समाज में सदैव ही ऐसे साहित्य का सृजन होता रहा है, जिससे हमारे भारतीय जीवन का पूर्ण प्रतिबिम्ब 'सुधाबिन्दु' जैसी उच्चकोटि की पत्रिकाओं में आज भी स्पष्टता से दृष्टिगोचर होता है।

'सुधाबिन्दु' का यह विशेषांक आज हमारे विज्ञान-युग के समक्ष एक नयी शक्ति लेकर उपस्थित हुआ है, जिसके लिए हम विश्वास रखते हैं कि निश्चय ही साहित्य का यह अंग लोगों में नूतन सांस्कृतिक भावना उत्पन्न करने के एक अच्छे साधन के रूप में सफल होगा।

वैसे तो विशेषांक की प्रत्येक रचनाएँ ही पूर्णतया सफल एवं संग्रहणीय हैं, लेकिन उनमें भी कुछ रचनाएँ (जैसे-संस्कृति के सप्त सोपान, मानव संस्कृति का मूलाधार, संस्कृति, सभ्यता एवं शिष्टाचार, भारतीय संस्कृति एवं नारी इत्यादि) ऐसी हैं जिनके अध्ययन मात्र से ही पाठक को एक अद्भुत ज्ञान एवं शान्ति का अनुभव होता है। निःसंदेह, विशेषांक की ये रचनाएँ भारत की महान् संस्कृति की भव्य झाँकी प्रस्तुत करने में सफल हुई हैं।

—— राकेश सारस्वत

● कन्या प्राइमरी पाठशाला, बरहलगंज, जिला गोरखपुर

'सुधाबिन्दु' का संस्कृति-विशेषांक देखा। डा० पराड़कर साहब ने अपने लेख 'भारतीय संस्कृति और नैतिकता" में भारतीय संस्कृति का व्यावहारिक चित्र खींचने का सफल प्रयास किया है, 'संस्कृति की सैद्धांतिक छवि प्रस्तुत की है। डा० अम्बाशंकर नागर की 'कविता' प्रभावशाली रही। अपने अनन्य मित्र श्रीकान्त कुलश्रेष्ठ की रचना देखकर प्रसन्नता हुई।

स्वामी विवेकानन्द का चित्र भी देखने को मिला; लेकिन सांस्कृतिक चेतना के इस महान् अग्रदूत पर विशेष सामग्री का अभाव खला। स्वामी दयानन्द, रामतीर्थ और रामकृष्ण परमहंस पर भी कुछ प्रकाशित किया जाना चाहिये था। ● रमेशकुमार शर्मा, ए–३७, ब्रजनिवास तिलकनगर, जयपुर-४

'सुधाबिन्दु' प्राचीन संस्कृति की धरोहर है। आशा है यह युवकों को भारतीय संस्कार प्रदान करेगी।

● श्रीराम मीना, कोयलाखान रोजगार कार्यालय परासिया (म० प्र०)

सुधाबिन्दु का अप्रैल '८० का अंक प्राप्त हुआ। धन्यवाद।

श्री राकेश सारस्वत की कहानी 'सुधा' प्रभावशाली रही। वास्तविक परिस्थिति का वर्णन लेखक ने बड़ी कुशलता से किया है। जीवनोपयोगी लेख 'सुखी बनने का रहस्य' मार्गदर्शक है।

● मुकुन्द महाजन, तात्याटोपे नगर, भोपाल (म० प्र०)

आपका पत्र तथा संस्कृति-विशेषांक मिले, विशेषांक अद्वितीय बन पड़ा है। कर्मठ संपादन के लिए धन्यवाद।

● सलीम शेख, सोमाजी की चाल, चमनपुरा, अहमदाबाद-१६

'सुधाबिन्दु' के मार्च, १९८० अंक में डा० सावित्री डागा ने 'आत्मजयी की प्रतीकात्मकता' लेख में समसामयिक सरोकारों और काव्यानुभूति का सही विश्लेषण किया है। आत्मजयी की मूल संवेदना उद्घाटित हुई है। श्री पोशाकवाला का लेख 'संत शिरोमणि श्री पीपाजी महाराज' भी खोजपूर्ण और प्रभावशाली है।

——प्रकाश मनु

२३०।३, निकट जिला रोजगार कार्यालय

●

कुरुक्षेत्र – १३२११ (हरियाणा)

सुधाबिन्दु

वर्ष : २० जुलाई, १९८० अंक : ७

सम्पादकीय

• दूरदर्शी बनो •

एक अत्यन्त बूढ़े माली को फल लगाते देखकर राजा ने उससे पूछा, "माली, तुम इतने बूढ़े हो गए हो, फिर भी यह पौधा लगा रहे हो। क्या इसके पेड़ बन कर फूलने-फलने तक तुम जीवित रह सकोगे?"

माली ने नम्रता से कहा, "सरकार, मेरे बाप-दादों ने जो पेड़ लगाए थे, उनके फल मैं खाता हूँ, तो मेरे लगाए गए पेड़ों के फल मेरे बाल-बच्चे खाएँगे।"

राजा यह बात सुनकर बहुत प्रसन्न हो उठे और उन्होंने माली को पाँच सौ रुपए ईनाम दिए। माली ने झुककर सलाम करते हुए कहा कि सरकार मेरे पेड़ों ने अभी फल दे दिया।

हमारा जीवन तीन कालों में विभक्त है। पहला भूतकाल है, जो हमारी आँखों से ओझल रहता है, वह जड़ के समान है, जो वृक्ष का मूलाधार होते हुए भी अदृश्य है। दूसरा काल वर्तमान काल है, वह तने के समान है, जो दृश्य है, स्पष्ट है, मूर्त है। वह तनकर और स्थिर बन कर संकल्प-विकल्प में स्थिरता का बोध कराता है, शाखाओं-प्रशाखाओं में विभक्त होकर अपने रूप-वैविध्य का परिचय कराता है, आगे बढ़ने, झूमने-हिलने का उपदेश देता है। तीसरा काल भविष्य काल है। वह मूल और तने का प्रतिफल है। उसमें फूल-फल उगते हैं, बढ़ते हैं। तीनों कालों का अपना-अपना महत्त्व है।

हमें यह भूल जाना है कि सब कुछ हमीं हैं। तथ्य यह है कि हम किसी के हैं और किसी के लिए हैं। अपने कर्त्तव्य से, आदर्श से, नीति से, सदाचार से, प्रेम-प्रमोद से, आनन्द-विनोद से कुछ ऐसा कर जाइए कि लोग याद करें, श्रद्धा के सुमन चढ़ाएँ। यही उऋण होने का, मनुष्य-शरीर पाने का सबसे बड़ा साफल्य है।

बारे दुनियाँ में रहो गमजदा या शाद रहो ऐसा कुछ करके चलो जिससे बहुत याद रहो।

तुम दीपक का बलिदान याद करो जो जल-बल कर प्रकाश देता है,, पथ प्रशस्त करता है और हँसते-हँसते अपने को बलिदान कर देता है। पुष्प को देखो जो तोड़ा जाता है, छेदा जाता है, बाँधा जाता है, टाँगा जाता है; किन्तु अपनी सुगन्धि से जन-जन को, कन-कन को अभिभूत कर देता है। दोनों ही–दीपक और और पुष्प संसार को भविष्य की ओर देखने और भविष्य के लिए कुछ करने का आवाहन करते हैं, दूरदर्शी बनने की सीख देते हैं।

अतः, आप जो कुछ कहते या करते हैं उसमें भविष्य को याद कीजिए, दूरदर्शी बनिए। आप ऐसा कुछ मत कहिए या मत कीजिए, जो केवल दूसरों के लिए हो। दूसरों को और अपने को समझाइए। आप आज हैं, कल काल के कराल गाल में समा जाएँगे। जब आपका पार्थिव शरीर संसार में न रहे, तब भी लोग आपको स्मरण करें, वन्दन करें, अनुकरण करें, स्तवन करें, ऐसा कुछ कर जाइए। आपके बाद में भी कवि की ये पंक्तियाँ गाई जाएँ —

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले, वतन पर मरनेवालों का यही केवल निशाँ होगा।

नक़ाब

●

डा० भगवतशरण अग्रवाल
एम० ए० पी–एच० डी०

कल रात भर मैं
इतिहास के मुर्दे जलाता रहा,
दीवारों पर टँगे कैलेन्डर
और राजनीति की पुस्तकें फाड़ता रहा,
क्योंकि, मृतक और जीवित –
अनेक महान् नेताओं के
महत्तर अनुयायियों ने
अपने-अपने गुरुओं की नकाबें उलट दी हैं।
और अब हर विकृत और नग्न चेहरे से मुझे
विश्वासघात, व्यभिचार और
विकृत-अहम्पूर्ण –
स्वार्थ-लिप्सा की बू आ रही है
और सारे का सारा कमरा
एक अजीब दुर्गन्ध से भर गया है,
कैलेन्डरों और पुस्तकों के
चेहरों पर से भी
जैसे रंग उड़ गए हैं
और उनके चेहरे ही नहीं–
आदर्शमय संदेश भी
नंगे और भयावने हो गए हैं,
और इसीलिए कर रात भर मैं
अपने आदर्शों, मान्यताओं और संस्कारों की
होली जलाता रहा, और फिर बाकी रात
कुंठाओं और हीनताओं से
पूर्णतया मुक्त हो
चैन की नींद सोया –
शैशव के बाद
शायद, पहली बार
किन्तु सुबह को देखा
कमरे की दीवारें और,
सभी आल्मारियाँ भी
नंगी-सी लग रही हैं
अब यहाँ किन्हें लटकाऊँ मैं?
धार्मिक चित्रों और आस्थाओं से तो
वाराणसी के पंडों, और
प्रगतिवादी साहित्यिक-मित्रों ने
न जाने कब की छुट्टी दिला दी है,
और किसी नए नेता का
चित्र डाँगते
अब मुझे भय-सा लगता है,
अब किसी के चेहरे पर विश्वास ही कहाँ रहा!
और फिर किसे खबर कल को ही
उनका ही कोई अनुयायी
गुण-ऋण चुकाने, श्राद्ध करने
उनकी भी नकाब न उलट देगा
डेढ़ किलोमीटर लम्बी
वर्षों पुरानी
नकाबें ही नकाबें,
क्यों न मैं दीवारों के इस नंगेपन को
नग्न, अर्ध-नग्न नर्तकियो
और विदेशी अभिनेत्रियों के
चित्रों से भर दूँ?
जिससे मुझे फिर से
इन दीवारों को नंगा न करना पड़े।
नग्न-नर्तकियों की नकाब कौन उठाएगा?
कल रात भर मै इतिहास के गड़े मुर्दे
उखाड़ता रहा, फूँकता रहा,
अब सिर्फ कुछ राख
बाकी रह गई है
इससे कम से कम मेरे लिए
एक अच्छी सी नकाब ही तैयार हो जाएगी।

●

३१, प्रोफसर्स क्वार्टर्स
अटीरा के पास
नवरंगपुरा, अहमदाबाद – ९

गुजराती कविता का आधुनिक युग

: सन् १८५० से १९७९ :

— डा० रजनीकान्त जोशी
एम० ए०, पी.-एच० डी०

[श्री जोशीजी गुजराती के प्राध्यापक और कुशल लेखक हैं। प्रस्तुत लेख में श्री जोशीजी ने गुजराती कविता के आधुनिक काल की विविध विधाओं पर विचार किया है। वह तीन युगों में विभक्त होकर कहाँ जा रही है, इसपर भी विचार किया गया है, जो पठनीय है। — सम्पादक]

प्रारंभ से ही गुजरात की साहित्यिक परंपरा समृद्ध रही है। हेमचन्द्राचार्य से आरम्भ कर नरसिंह मेहता तक और इनसे दयाराम तक गुजरात के कवियों ने अपने कृतित्व से गुजरात के साहित्य को संपन्न बनाया है। गुजराती साहित्य का मध्यकाल दयाराम की मृत्यु (सन् १७६७-१८५२) के साथ समाप्त हुआ। सन् १८५० से आरम्भ होनेवाला गुजराती साहित्य-का आधुनिक युग विषय तथा साहित्य-रूपों की दृष्टि से मध्यकालीन युग से बहुत ही भिन्न दृष्टिगोचर होता है। अंग्रेजों का आगमन, उनके द्वारा बदलती परिस्थिति, गुजरात पर महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व का पूर्ण प्रभाव, साहित्य का विश्वविद्यालयों द्वारा अध्ययन-अध्यापन — इन सबके कारण गुजराती साहित्य में नए युग का प्रादुर्भाव हुआ। अतः, यह कहने की आवश्यकता नहीं कि गुजराती साहित्य का आधुनिक युग अपना एक स्वतंत्र अस्तित्व रखता है।

गुजराती साहित्य के आधुनिक काल का उसके इतिहासविदों[1] ने इस प्रकार विभाजन किया है —

१. सुधारक युग (सन् १८५०-१८५७)
२. पण्डित युग (सन् १८५७-१९२०)
३. गाँधी युग (सन् १९२० से आज तक)

सुधारक युग :

सुधारक युग का सूत्रपात भारत में अंग्रेजों के पूर्ण रूप से जम जाने के बाद आरंभ हुआ। भिन्न-भिन्न आन्दोलनों ने समाज में एक नवीन जागृति उत्पन्न कर दी। इन आन्दोलनों ने हिन्दू-समाज में प्रचलित बुराइयों को झकझोरने एवं मिटाने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। अतः, यह सुधार तथा संघर्ष का युग था। पाश्चात्य शिक्षा और संस्कृति के संपर्क में आने पर अपने निजत्व की भावना से प्रेरित होकर रूढ़ियों के विरोध तथा नवयुग की चुनौतियों को स्वीकार करने की प्रवृत्ति से सुधारक युग का जन्म हुआ।[2] कवि दलपतराम, नर्मदाशंकर, नवलराम महीपतराम, भोलानाथ, दुर्गाराम मेहता, रणछोड़भाई, उदयराम आदि सुधारक साहित्यकारों ने साहित्य-सृजन, ज्ञान-वितरण और समाज-सुधार का कार्य किया। इस काल के साहित्यकारों को मूलतः संघर्षरत रहकर साहित्य-सृजन करना था। अतः, इस समय चिरन्तन और मूल्यवान साहित्य का सृजन कम दिखाई देता है।

पण्डित युग :

नर्मद की मृत्यु के उपरान्त गुजराती साहित्य ने एक मोड़ ले लिया था। बम्बई विश्वविद्यालय

---

१ — गुजराती साहित्यनुं रेखादर्शन- मनसुखलाल झवेरी, रमणलाल शाह पृष्ठ — ९७

२. गुजराती साहित्यनुं रेखादर्शन- मनसुखलाल झवेरी, रमणलाल शाह पृष्ठ — ९७

स्थापित हो चुका था। वहाँ से अध्ययन कर निकलनेवाले कुछ लोग साहित्य-सेवी भी थे, जिन्होंने अंग्रेजी, संस्कृत, फारसी और पुरानी गुजराती की सौन्दर्य-दृष्टि तथा विचार-स्वातंत्र्य की निधि प्राप्त की। इसके साथ-साथ कुछ नवीन प्रभाव भी अपना काम कर रहे थे। अतः, इस नए युग का नाम 'पण्डित युग' रखा गया। व्यक्तिगत प्रतिभा के कारण इस युग को गोवर्धन-युग भी कहा गया है।[3]

पाण्डित्य की प्रधानता ने इस युग की शैली को संस्कृतमय बनाकर कृत्रिम कर दिया। गोवर्धनराम त्रिपाठी, मणिलाल नभुभाई, नर्सिंहराव, आनन्दशंकर, रमणभाई, मणिशंकर, रामनारायण आदि इस युग के मुख्य साहित्यसेवी हैं।

गुजराती साहित्य में पण्डित युग आधुनिक काल का स्वर्ण युग माना गया है। साहित्य की सभी विधाओं पर इस युग में कार्य हुआ है। पण्डित युग की विचारधारा में पांण्डित्य, परिपक्वता, गंभीरता, सूक्ष्मता एवं व्यापकता सुधारक युग की अपेक्षा अधिक देखने को मिलती है। साथ ही साहित्यिक रचनाओं में कलात्मकता, रसमयता तथा साहित्यिक गहनता भी परिलक्षित होती है। इसके अतिरिक्त इस युग के कई महारथियों ने गाँधी-युग में भी अपने-अपने ढंग से साहित्य-सेवा करके गुजराती साहित्य को विशेष समृद्ध किया।

गांधी युग :

पण्डित युग अथवा गोवर्धनयुग सन् १९१४ तक रहा। इसी वर्ष प्रथम विश्वयुद्ध छिड़ गया था। विश्व की मनुष्य-जाति ने इस प्रकारकी भयानकता इससे पहले कभी नहीं देखी थी। सन् १९१५ में गाँधीजी द० अफ्रीका से स्वदेश वापस आए। जब वे भारत आए, तब गोवर्धनराम, मणिभाई, नभुभाई, बालशंकर आदि साक्षरों का समुदाय बिदा हो चुका था और नए साक्षरों के द्वारा गुजरात की साहित्यिक साधना सुचारु रूप से हो रही थी। सन् १९१५ से १९४७ तक भारत-स्वतंत्रता की घोषणा हुई और सन् १९४८ में गाँधीजी की मृत्यु हुई। अतः, इस समय तक गाँधीजी की प्रवृत्तियों का गहरा प्रभाव गुजराती साहित्य पर पड़ा।

इनके युग में साहित्य की सभी विधाओं का विकास हुआ। विशेष रूप से गुजरात विद्यापीठ अहमदाबाद में, जहाँ शिक्षा-प्रणाली का पुर्ननिर्माण किया गया और इसके साथ नए कवियों और लेखकों का भी आगमन हुआ[4]। गाँधीजी ने भाषा एवं विषय की दृष्टि से पण्डित युग की जटिलता को सरलता में परिवर्तित कर दिया। गाँधी-विचारधारा के परिणामस्वरूप कवि और लेखक जीवन में मानवीय भावों को लेकर चले और साहित्य में भी उसी को प्रधानता दी गई।

कहने का अभिप्राय यह है कि महात्मा गाँधी ने राजनीतिक क्षेत्र में सत्य, अहिंसा के शस्त्रों से जिस प्रकार आमूल परिवर्तन कर दिया, उसीप्रकार समाज और साहित्य के क्षेत्र में भी व्यापक रूपसे परिवर्तन किया। अतः, अर्वाचीन गुजराती साहित्य का तीसरा युग गाँधी-युग के नाम से अभिहित किया गया है। महात्मा गाँधी, काका कालेलकर, रामनारायण वि० पाठक, आनन्दशंकर ध्रुव, बलवंतराय क० ठाकोर, स्नेहरश्मि एवं उमाशंकर तथा सुन्दरम् आदि इस युग के प्रमुख साहित्य-सेवी हैं।

गाँधीजी ने स्वयं को कभी साहित्यकार नहीं कहा, किन्तु वे अपने युग के सर्वश्रेष्ठ लेखकों में से एक थे। 'सत्यना प्रयोगो' या 'आत्मकथा,' 'हिन्द-स्वराज्य', 'सत्याग्रहनो इतिहास,' 'धर्मयुद्धनुं रहस्य', 'धर्ममन्थन,'' मंगलप्रभात,' 'रचनात्मक कार्यक्रम' एवं 'आरोग्यनी चावी' आदि उनके उल्लेखनीय ग्रन्थ हैं। इन सब में उनका आत्मचरित्र 'सत्यना प्रयोगो' या 'आत्मकथा' साहित्य की दृष्टि से केवल गुजराती साहित्य में ही नहीं, अपितु विश्वसाहित्य में सर्वश्रेष्ठ आत्मचरित्रों में से एक है।

गाँधीजी ने जिन्हें 'सवाई गुजराती' की उपाधि दी थी, उन दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर (सन् १८८६) की मातृभाषा मराठी थी। मराठीभाषी होते हुए

---

३. अर्वाचीन गुजराती साहित्य की रूपरेखा. डा० धीरूभाई ठाकर पृ० – ६२

४. गुजराती साहित्य विहंगावलोकन-कलावती वोरा पृ. ११

भी उन्होंने गुजराती भाषा पर असाधारण प्रभुत्व प्राप्त कर लिया था। गांधी-युग के विद्वानों में गाँधीजी के बाद गुजराती गद्य को परिपूर्ण तथा परिष्कृत रूप देने में काकासाहब का स्थान महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

श्री रामनारायण वि० पाठक (सन् १८८७-१९५५) गुजरात विद्यापीठ में गुजराती के प्राध्यापक थे। उनमें पण्डित युग की विद्वत्ता और गाँधी युग की सरलता का सामंजस्य था। गुजराती के शीर्षस्थ कवि-सुन्दरम् और स्नेहरश्मि जैसे कवि भी उनके शिष्य थे। इसी प्रकार आचार्य आनन्दशंकर ध्रुव (सन् १८६९-१९४२) समन्वयलक्षी गोवर्धन युग के महा-पण्डित के नाते ही नहीं, अपितु समूचे गुजराती साहित्य के विद्वान्, तत्त्वमूलक आचार्य के नाते स्मरणीय हैं। गुजराती कविता को जिन्होंने एक नई दिशा दी, वे बलवन्तराय क० ठाकोर भी इसी युग के नामी कवि हैं। इन्होंने गुजराती कविता के क्षेत्र में छन्द, भाषा, विषय एवं शैली आदि की दृष्टि से क्रान्तिकारी प्रयोग किए। श्री ठाकोर ने विचारप्रधान कविता के द्वारा नई कविता का प्रवर्तन किया।

आधुनिक साहित्य के क्षेत्र में उमाशंकर जोशी (सन् १९११) तथा 'त्रिभुवनदास लुहार 'सुन्दरम्' (सन् १९०८) का योगदान महत्त्वपूर्ण रहा है। दोनों शीर्षस्थ विद्वानों ने गांधी-युग प्रेरित स्वतंत्रता-आन्दोलनों में सक्रिय रूप से अपना योग दिया और इसी वातावरण में उनका विकास भी हुआ। गुजराती साहित्य में बंगला साहित्य के गहरे प्रभाव का श्रेय श्री उमाशंकर जोशी को है। उनके साहित्य में गाँधी-विचारधारा, समाजवाद एवं प्रगतिवाद का प्रभाव भी दृष्टिगत होता है। कवि श्री उमाशंकर ने 'विश्व-शांति' नामक कविता में अहिंसा तथा शान्ति के गीत गाँधी-विचारधारा को लेकर गाए हैं। उन्होंने समग्रतः सात कविता-संग्रह प्रस्तुत किए हैं, किन्तु 'गंगोत्री' नामक कवितासंग्रह उनकी कीर्ति को अक्षय बनानेवाला काव्य-संग्रह है।[५]

आलोच्य युग में उमाशंकर के साथ कवि सुन्दरम् का स्थान भी महत्त्वपूर्ण है। वे गुजराती साहित्य में प्रथम पंक्ति के कवि एवं आलोचक माने जाते हैं। कवि सुन्दरम् का सर्वप्रथम कवितासंग्रह है 'कोया भगतनी कडवी वाणी अने गरीबोनां गीतो,' जिसमें कवि पर पड़ा गाँधी विचारधारा पर मार्क्स का प्रभाव प्रकट हुआ है। तत्पश्चात् इसी कवि ने 'काव्यमंगला,' 'वसुधा,' 'रंग रंग वादलिया' 'बाल काव्य' एवं 'यात्रा' शीर्षक के अंतर्गत काव्य-ग्रंथ दिए। कवि सुन्दरम् श्री महर्षि अरविंद की विचारधारा के अनुयायी हैं। इन्होंने अपने आपको भी अरविंदाश्रम की सेवा में समर्पित कर दिया है। सन् १९४५ से इस कवि ने पाण्डिचेरी अरविंदआश्रम को ही अपना निवास बना लिया है। उनकी श्री अरविंदके सम्पर्क के बाद की एवं पूर्व की कविताओं में पर्याप्त अन्तर दिखाई देता है। अरविन्द-आश्रम में आज भी सुन्दरम् उसी दिशा में प्रवृत्तिरत हैं। कवि सुन्दरम् ने हिन्दी में भी सुन्दर कविता की है। सन् १९४९ में पाण्डिचेरी आश्रम में श्री दिलीपकुमार राय श्री सुन्दरम् का परिचय कराते हुए कहते हैं,

"Supposed to be the best Poet of Gujarati" और तब सुन्दरम् से ही वे पूछते हैं, "I have heard you write in Hindi also?" सुन्दरम् उत्तर देते हैं।[६] दार्शनिक, वैचारिक एवं आध्यात्मिक भावभूमि की दृष्टि से भी सुन्दरम् की हिन्दी रचनाएँ महत्त्वपूर्ण हैं। जैसे कि—

"मेरे पिया मैं तो कछु नहीं जानूं,
मैं तो चुप-चुप चाह रही।
मेरे पिया तुम कितने सुहावन,
तुम बरसो जिम मेहा सावन।
मैं तो चुप-चुप नाह रही।
मेरे पिया तुम अमर सुहागी,
तुम पाये मैं बहु बड़भागी,
मैं तो पल-पल व्याह रही।[७]

इस प्रकार उपयुक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि गाँधीजी ने गुजराती वांङ्मय की जो सेवा की है, वह अविस्मरणीय है। ●

सी—५ ओजस एपार्टमेण्ट्स
सुरेन्द्र मंगलदास मार्ग अहमदाबाद १५
(क्रमशः)

---

[५] व्यक्ति और वाङ्मय डा० प्रभाकर याचवे पृ० २८६

[६] तपोवन—संपादक—सुरेक दलाल पृ. ८८

[७] यात्रा—सुन्दरम् पृ. १९९

सत्य-कथा

ममतामयी

•

श्री अनिता जैन

[इस सत्य कथा में बेटी विमला के वैधव्य को बहू विमला के रूप में ग्रहणकर सासु की उदारता का जो सत्य वर्णन किया गया है, वह स्पृहणीय और अनुकरणीय है। ——सम्पादक]

बड़े सलोने, मधुर मीठे होते हैं शहनाइयों के साये। परिणय– वेदी पर जब एक भोलीभाली मासूम भारतीय बाला जीवनभर साथ निभाने के संकल्प का प्रतीक अपना हाथ अपने आराध्य के हवाले करती है, तब उसकी सखी-सहेलियों का यह स्वर-गीता-ताल–"यह साथ कभी छूटे ना, यह प्रीत कभी टूटे ना," वातावरण को कितना मोहक बना देता है।

जब अपने गाँव-भर एवं परिवारजनों को छोड़ नववधू अपनी नई दुनिया बसाने को प्रस्थान करती है, मोह-ममता के प्रतीक अश्रुकण आसपास की फिजा को कितना नम और मर्मस्पर्शी बना देते हैं।

उस दिन जब हिंगनघाट से अपने आराध्य डा० रवीन्द्र के साथ माँग में सुहाग का सिन्दूर डाले, मेंहदी रचे हाथों में हरे काँच की चूड़ियाँ और गले में मंगल-सूत्र पहने हिंगनघाट की बेटी विमला ससुराल को चली, तब शहनाइयों की दिल को छू लेने वाली स्वर-लहरियाँ और बेटी की बिदाई में बहते आँसुओं के साथ सहेलियों की मधुर स्वरलहरी : "यह साथ कभी छूटे ना, यह प्रीत कभी टूटे ना" ने जन-जन की आत्मा को विभोर कर दिया।

बारात का यह काफिला अभी मध्य मार्ग में अमरावती के निकट ही पहुँचा था कि डा० रवीन्द्र को दिल का दौरा पड़ा और देखते-देखते निर्मल हृदया विमला का सुहाग–सिन्दूर पुंछ गया, चूड़ियाँ चटक गईं और देखते-देखते प्रणय-वसन वैधव्य-वसन में परिवर्तित हो गए। क्रूर कराल काल जब-जब किसी भोली-भाली निर्मल हृदय वाली भारतीय बाला के सुन्दर सलोने सपनों को तोड़ देने को अधीर हो जाता है, तब-तब यही कुछ होता आया है।

अविरल बहते आँसुओं तले अभागी विमला ने लड़खड़ाते कदमों से घर की चौखट पर पाँव रखा कि उस बाला ने देखा कि उसके सास-ससुर माथे पर बेशुमार परेशानियों की सिलवटें लिये एक अप्रत्याशित ऐतिहासिक निर्णय की तलाश में विचारमग्न थे। मन ही मन विमला ने सोचा कि तनाव, विषाद और वेदना के इन क्षणों में कोई भी निर्णय लेना संभव नहीं।

विमला को क्या पता कि इस देव-धरा पर अवसर आने पर सम्पूर्ण पीड़ा और विषाद को पीते हुए, मानसिक सन्तुलन बनाए रखते हुए सामाजिक मान्यताओं और रूढ़ियों को आत्मसात करते हुए वज्र से भी कठोर निर्णय लेकर इतिहास की धारा को बदल देने की क्षमता मात्र कुसुम-सी कोमल निरूपित भारतीय नारी में ही है।

ममतामयी माँ का चिंतन चरमबिन्दु को छू चुका, तभी उन्होंने अपना निर्णय सुनाया,

'विमला इस परिवार की बहू बन कर आई है। इस कन्या की नियति को संवारने का उत्तरदायित्व इसी परिवार का है। जब वह बहू बन कर आई है, तब इस घर की बहूरानी बन कर ही रहेगी।'

और . . . . . . और...... २४ जनवरी को इंदौर नगरी में डा० रवीन्द्र के अनुज श्री अरविन्द कुँवर के साथ विमला को परिणय-सूत्र में बाँधते हुए उनकी ममतामयी माँ ने भारतीय ही नहीं सम्पूर्ण नारी-जगत् की गरिमा को इंच-दो-इंच ऊपर उठा दिया।

यों तो भारतीय वाङ्मय माँ की ममता और महानता के अनगिन पृष्ठों से भरा पड़ा है, पर सास की महानता के इनेगिने पृष्ठों में इस श्वेत अध्याय को छोड़कर उस वन्दनीय-अभिनन्दनीय नारी ने जो कुछ किया इतिहास उसे कभी विस्मृत नहीं कर सकेगा। सम्पूर्ण जीवन जीकर मानव इससे अधिक और क्या कर सकता है?

तभी तो विमला को जीवन-भर वैधव्य-वसन में देखने की यमराज की ललक को उस दिन बेमौत मरने को मजबूर होना पड़ा था। एक भारतीय नारी के हाथ अपनी करारी ऐतिहासिक हार के कारण शक्ति-पुंज यमराज उस रोज रोया – बहुत रोया।

●

द्वारा कैलाश जैन एडवोकेट,
३४, बन्दा रोड भवानीमंडी (राज०)

–: सूक्तिसुधा :–

संपूर्ण कुम्भो न करोति शब्द-
मर्धो घटो घोषमुपैति नूनम्।
विद्वान् कुलीनो न करोति गर्वं
गुणैर्विहीना बहु जल्पयन्ति ।।

[पूरा भरा घड़ा आवाज नहीं करता, जब कि आधा भरा घड़ा आवाज करता है। इसी प्रकार विद्वान् एवं कुलीन व्यक्ति अभिमान नहीं करता और गुण रहित मूर्ख अधिक बोलते हैं।]

अयं निज परोवेत्ति गणना लघु चेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।।

[यह अपना है, यह पराया है ऐसी गणना तुच्छ मनवालों की होती है। उदार व्यक्तियों के लिए तो सारा संसार उनका कुटुम्ब है।]

कः कालः कानि मित्राणि
को देशः को व्ययागमौ।
कश्चाहं का च मे शक्ति-
रिति चिन्त्यं मुहुर्मुहुः ।।

[समय कैसे हैं, मित्र कैसे हैं, देश कैसा है, आय और व्यय का क्या हाल है, मैं कौन हूँ, मेरी शक्ति क्या है; मनुष्य को सदा इन बातों पर विचार करना चाहिए]

सांस्कृतिक पुनरुत्थान के प्रणेता प्रेमचन्द

—श्री श्यामसुन्दर सुल्लेरे
एम. ए.

[श्री सुल्लेरेजी एक अध्ययनशील सुलेखक और विचारक हैं। साहित्य की अनेक विधाओं के शिल्पी हैं।

यह वर्ष प्रेमचन्द शताब्दी का वर्ष है। उपन्यास–सम्राट प्रेमचन्द के सांस्कृतिक सौष्ठव को इस लेख में उजागर करने का जो संक्षिप्त प्रयास किया गया है, वह सर्वथा पठनीय है। — सम्पादक]

शताब्दी मनाने की परम्परा अब हमारे रक्त में समा चुकी है। अच्छी बात है, पर प्रेनचंद की शताब्दी को अन्य शताब्दियाँ मनाने के शोरगुल और भगदड़ में खो नहीं जाना चाहिए। क्योंकि प्रेमचंद केवल एक अग्रगण्य कलाकार ही नहीं थे, वे एक स्पष्ट जीवन–दर्शन के कलात्मक प्रतिपादक भी थे। यह एक ऐसा दर्शन है, जिसे अणुवीक्षण यंत्र से लेकर खोजना नहीं पड़ता, जो हमारी आँखों के सामने सूर्य और चन्द्रमा की तरह ऊर्जा और चन्द्रिका प्रदान करता है।

प्रेमचंद शुरू से आखिर तक पूर्णरूप से धर्मनिरपेक्ष थे। रहा यह कि वे आरंभ में इतने परिपक्व नहीं थे, धीरे-धीरे उनके विचार निखरे। इसमें न तो आश्चर्य की बात है, न इससे उनका मूल्य किसी प्रकार स्रस्त होता है।

प्रेमचंद पहले उर्दू में लिखते थे, फिर हिन्दी में लिखने लगे। क्योंकि वे समझ गए कि हिन्दी का भविष्य बहुत उज्ज्वल है। उनका यह विचार ऐतिहासिक रूप से सही प्रमाणित हुआ।

जिस समय प्रेमचंद के साहित्यिक व्यक्तित्व का अभी निर्माण हो ही रहा था, उस समय उर्दू का प्रभाव प्रेमचंद पर सबसे अधिक था। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं, क्योंकि पढ़े-लिखे लोगों म उर्दू का प्रचार यथेष्ट था। उस समय अत्यन्त आशावादी हिन्दी-भक्त भी यह कहने का साहस नहीं कर सकता था कि आगे चलकर हिन्दी उपमहादेश की सब भाषाओं को पीछे छोड़कर अग्रगण्य हो जाएगी, उसमें उसीका सूर्य चमचमाएगा और भारत में उर्दू केवल टिमटिमाएगी।

प्रेमचंद ने स्वयं 'मेरी पहली रचना' में यह लिखा है, "उस समय मेरी उम्र कोई तेरह साल की रही होगी। हिन्दी बिलकुल नहीं जानता था। उर्दू के उपन्यास पढ़ने का उन्माद था। मौलाना शरर, रतननाथ सरशार, मिर्जा रुसवा, मौलवी मुहम्मद अली हरदोई निवासी उस वक्त के सर्वप्रिय उपन्यासकार थे। इनकी रचनाएँ जहाँ मिल जाती थीं, स्कूल की याद भूल जाती थी और पुस्तक समाप्त करके ही दम लेता था। उस जमाने में रेनाल्ड के उपन्यासों की धूम थी। उर्दू में उनके अनुवाद धड़ाधड़ निकल रहे थे और हाथोंहाथ बिकते थे। मैं भी उनका आशिक था। स्वर्गीय हजरत रियाज ने, जिनका अभी देहांत हुआ और जो उर्दू के प्रसिद्ध कवि हैं, रेनाल्ड की

एक रचना का अनुवाद ‘हरमसरा” के नाम से किया था। उसी जमाने में लखनऊ के साप्ताहिक ‘अवध पंच’ के संपादक स्वर्गीय मौलाना सज्जाद हुसैन ने, जो हास्यरस के अमर कलाकार हैं, रेनाल्ड के दूसरे उपन्यास का अनुवाद ‘धोखा’ या ‘तिलस्मी फानूस’ के नाम से किया था। ये सारी पुस्तकें मैंने उसी जमाने में पढ़ीं। दो-तीन वर्षों में मैंने सैंकड़ों उपन्यास पढ़ डाले होंगे। जब उपन्यासों का स्टाक समाप्त हो गया, तो मैंने नवलकिशोर प्रेस से निकले हुए पुराणों के अनुवाद और तिलस्मी ग्रन्थ के १७ भाग (उस समय निकल रहे थे और एक एक भाग बड़ा सुन्दर रायल आकार में दो-दो हजार पृष्ठों से कम न होगा और इन १७ भागों के उपरांत उसी पुस्तक के अलग-अलग प्रसंगों पर पच्चीस भाग छप चुके थे) इनमें से भी मैंने कई पढ़े।”

पहले उर्दू में :

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि उन्हें पहलेपहल जो कुछ प्रेरणा या अनुवाद प्रेरणा मिली, वह उर्दू लेखकों से मिली और दूसरी भाषाओं के साहित्यों का जो कुछ भी परिचय उन्हें मिला, वह उर्दू के माध्यम से मिला। इसका कारण यह था कि वे उर्दू के सिवा कोई भाषा नहीं जानते थे। बाद को वे अंग्रेजी, हिन्दी और फारसी भी सीख गए, तो उन भाषाओं से भी अनुप्रेरणा लेने लगे। आज लोगों को इस बात से आश्चर्य होगा कि वाराणसी के एक गाँव में यह हालत थी। इस संबंध में यह बता दिया जाए कि उस युग में कायस्थों में यही स्थिति थी। कायस्थ उर्दू भी पढ़ते थे और शराब भी पीते थे। कैसे उर्दू का प्रचार घटता चला गया और हिन्दी का प्रचार बढ़ा और प्रेमचंद उर्दू लेखक से हिन्दी लेखक होने को एक तरह से मजबूर हुए यह अपने में एक न्यारी कहानी है। इस कहानी का एक बहुत मजेदार हिस्सा यह है कि पहले स्त्रियाँ अनपढ़ होती थीं, पर जब पढ़ने लगीं; तब वे हिन्दी लिपि पढ़ने लगीं, क्योंकि तुलसी और सूर–साहित्य (साहित्य रूप में नहीं, धार्मिक पाठ के रूप में) हिन्दी लिपि में ही प्राप्त था।

प्रेमचन्द की साहित्यिक गतिविधि उर्दू-हिन्दी की इस प्रतिद्वंद्विता के परिणाम से परिचालित हुई, पर वे स्वयं उर्दू की इस रकाबत से बहुत ऊपर थे। इतने ऊपर मानो उनको इस प्रतिद्वंदिता का जैसे पता ही न हो। वह इस संबंध में सम्पूर्ण रूप से अछूते रहते हुए भी उस युद्ध के परिणाम के प्रति उदासीन नहीं रह सकते थे। क्योंकि हर लेखक की यह ख्वाहिश रहती है कि उसे अधिक से अधिक पाठकों का पृष्ठपोषण प्राप्त हो।

प्रेमचंद न स्वयं अपने भाषा संबंधी विकास पर जामियामिलिया के मौलाना मुहम्मद आकिल से कहा था, “मेरी संस्कृति और तर्जे मुआशिरत मिला-जुला है; बल्कि मुझपर मुसलमानों की तहजीब का असर हिन्दुओं की तहजीब से ज्यादा पड़ा है। मैंने मकतब में मियाँजी से फारसी-उर्दू पढ़ी। हिन्दी से बहुत पहले मैंने उर्दू में लिखना शुरू किया, हिन्दी जबान मैंने बाद में सीखी। कभी मैं उर्दू में लिखता हूँ और उसका हिन्दी में अनुवाद करता हूँ और कभी हिन्दी में लिखता हूँ और उसका उर्दू में तर्जुमा करके शाया करता हूँ।”

प्रेमचंद की पत्नी शिवरानी देवी ने भी लिखा, “वे किसी कहानी का अनुवाद हिन्दी में करते और किसी का उर्दू में।”

पर इसके पहले एक सोपान यह रहा होगा कि पहले उर्दू में लिखते, फिर हिन्दी में उसका तर्जुमा करते।

प्रेमचंद ने अपनी कहानी उर्दू में लिखी थी। वे लिखते हैं, “मैंने पहलेपहल १९०७ में गल्पें लिखनी शुरू कीं। डाक्टर रवीन्द्रनाथ की कई गल्पें मैंने अंग्रेजी में पढ़ी थीं और उनका अनुवाद पत्रिकाओं में छपवाया था। उपन्यास मैंने १९०१ से लिखना शुरू किया। मेरा एक उपन्यास १९०२ में निकला और दूसरा १९०८ में, लेकिन गल्प १९०७ के पहले मैंने एक भी न लिखी। मेरी पहली कहानी का नाम था “संसार का सबसे अनमोल रत्न।” वह “जमाना” (उर्दू पत्रिका) में छपी। इसके बाद मैंने

चार-पाँच कहानियाँ और लिखीं। पाँच कहानियों का संग्रह "सोजेवतन" के नाम से छपा। उस समय बंगभंग का आन्दोलन चल रहा था। कांग्रेस में गरमदल की सृष्टि हो चुकी थी। इन पाँचों कहानियों में स्वदेश-प्रेम की महिमा गाई गई थी।"

यहाँ यह दृष्टव्य है कि प्रेमचंद गाँधी-आन्दोलन से प्रभावित होकर नहीं, उससे पहले ही देशभक्ति की ओर झुके थे। सोजेवतन प्राक्गाँधी युग की कृति थी और जैसा प्रेमचंद ने स्वयं लिखा है वे वंगभंग--आन्दोलन (क्रांतिकारी आन्दोलन) से प्रभावित होकर सोजे-वतन की कहानियों के लेखक हुए। प्रेमचंद बाद में गाँधीवाद से प्रभावित होकर लिखते रहे।

हिन्दी की ओर :

प्रेमचंद जब उर्दू से हिन्दी में आ रहे थे, उस समय यह परिवर्तन उनके लिए एकदम आसान रहा हो, ऐसी बात नहीं। इसका कम से कम एक नमूना हमारे सामने है, जिसका उल्लेख हरिभाऊ उपाध्याय ने किया है, जो बाद को गाँधीजी के हिन्दी अनुवादक के रूप में प्रसिद्ध हुए। जब हरिभाऊ 'सरस्वती' में काम करते थे, तो उनको प्रेमचंद की एक कहानी की पांडुलिपि देखने का मौका मिला। उसमें उन्हें "यह आपकी बड़ी ज्यादती है" की जगह यह वाक्य पढ़ने को मिला--"यह आपका बड़ा आधिक्य है।" स्वाभाविक रूप से हरिभाऊ को इसपर बहुत हँसी आई। बाद को प्रेमचंद हिन्दी के मर्म को बहुत अच्छी तरह समझ गए थे।

इस प्रकार हमने देख लिया कि प्रेमचंद कहाँ तक उर्दू के ऋणी थे। वह उर्दू से हिन्दी में धार्मिक कारणों से नहीं आए थे। सचाई तो यह है कि उनका सारा साहित्य धार्मिक पक्षपात के पास भी नहीं जाता। वे उर्दू उपसंस्कृति से हिन्दी में आए थे। इसी कारण उनका साहित्य गहराई के साथ धर्म-निरपेक्ष है। उन्हें राजनीतिक लोगों से धर्म-निरपेक्षता सीखनी नहीं पड़ी। उनके लिए यह स्वतः स्फूर्त थी। उनके साहित्य में धर्म-निरपेक्षता का वह बाँझ रूप नहीं है कि तू भी भला और तू भी भला, बल्कि उन्होंने मौलवियों और पुरोहितों को अपने साहित्य में काले रूप में पेश किया है।

युग-निर्माता :

प्रेमचंद के सारे साहित्य में उनका युग बहुत कुछ प्रतिफलित हुआ है, पर यह प्रतिफलन मात्र चित्रवत् नहीं था, वे एक चिन्तक के मन में आया हुआ तरल प्रतिफलन था, जिसमें वर्तमान के अलावा भूत पर अन्तर्दृष्टि और भविष्य की रेखाओं का आकलन भी सम्मिलित है। उनके पहले या उर्दू या हिन्दी के कथा-साहित्य में ऐसी किसी सर्वग्राही प्रतिभा का जन्म नहीं हुआ था। इस नाते वे अग्रणी और अग्रदूत रहे।

प्रेमचंद पर जो लोग पुरानेपन का आरोप लगाते हैं, वे हीनता-बोध से त्रस्त और विताड़ित हैं। इसलिए उनके लिए खंभा नोंचना बिलकुल स्वाभाविक है।

साहित्य प्रेमचंद पर रुका या उनतक चुका नहीं रहेगा, पर यह कथन कितना हास्यास्पद था। इसे हम आज अधिक समझ सकते हैं। प्रेमचंद के समय अणु-बम नहीं था, हिरोशिमा, नागासाकी नहीं हुआ था, न वियतनाम युद्ध हुआ था, लोकतंत्र का मुखौटा इतना बुरी तरह नहीं खुला था, जितना आज खुला है--हमारे घर-आँगन में। काला धन उस प्रकार सर्वशक्तिमान नहीं हुआ था, जैसा अब है। उस समय तक राजनीति पर शहीदों की छाप थी, आज की तरह उसपर सर्वत्र (यहाँ तक कि वामपंथी खेमों पर भी) शोहदे नहीं छाए हुए थे।

प्रेमचंद कभी फालतू या पुराना नहीं पड़ेगा। क्योंकि उसमें गाँधी-युग की आँधी का सरगम लिपिबद्ध है। रंगभूमि, प्रेमाश्रम आदि उपन्यासों में उनकी गाँधीवाद के प्रति निष्ठा स्पष्ट परिलक्षित होती है। रंगभूमि का सूरदास सर्वांशतः गाँधीवाद का मूर्तिमान व्यक्ति है तथा उसका जीवन और कार्यकलाप आदर्शवाद तथा नैतिकता से ओतप्रोत है, किन्तु उनका अन्तिम उपन्यास 'गोदान' का नायक होरी यथार्थवाद तथा भारत के कृषकवर्ग की मजबूरी का प्रतीक है। मानों प्रेमचंद की कथायात्रा भारत के परंपरागत आदर्शवाद से प्रारंभ होकर यथार्थवाद तक पहुँच गई, किन्तु उनके समस्त साहित्य में चाहे कहानी 'कफन' हो चाहे उपन्यास 'रंगभूमि' अथवा 'गोदान' छोटे वर्ग, किसान-मजदूर और कमजोर वर्ग का

ऐसा सर्वांगीण चित्रण है, जो उन्हें संसार के महानतम साहित्यकारों में प्रतिष्ठित कर देता है।

गाँधी-युग :

उनकी मृत्यु पर गाँधीजी ने कहा था, "हमारा देश जब स्वाधीन होगा और जब यहाँ का ग्रामीण समाज बेगार, गरीबी, शोषण और अशिक्षा से मुक्त हो जाएगा, तब लोग यह कल्पना भी न कर सकेंगे कि कभी भारत का किसान और मजदूर उस हालत में भी रहा होगा। तब प्रेमचंद के उपन्यास और कहानियाँ क्लासिक के रूप में पढ़े जाएँगे और उनसे ही पता चलेगा कि तत्कालीन समाज कैसा था?" किसी साहित्यकारके लिए राष्ट्रपिता की यह श्रद्धांजलि हर्ष और स्पृहा की वस्तु है।

प्रेमचंद का साहित्य केवल रेल की यात्रा काटने का संबल नहीं है, वह पाठक का मनोरंजन करने के साथ (और यह बहुत जरूरी गुण है) उसे गहराई में जाकर सोचने को और अपने को बदलने को विवश करता है। पहले चिन्तकों का काम इतना भर रहा है कि वे जगत्-व्यापार की कहीं की ईंट और कहीं का रोड़ा लाकर जैसे-तैसे एक व्याख्या प्रस्तुत करें, पर क्रांतिकारी चिन्तक समाज को आमूलचूल बदलने के लिए एक मुकदमा प्रस्तुत करना चाहता है। प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य यह है कि वह जिस जगत् में आया है, वह उसे उससे कुछ बेहतर बनाकर छोड़ जाए, चाहे वह ऐसा एक पेड़ लगाकर ही करे। "कर्मभूमि" उपन्यास में प्रेमचंद क्रांति की व्याख्या राजनीतिक परिवर्तन से आगे बढ़कर इस रूप में करते हैं —

"ऐसी क्रांति जो सर्वव्यापक हो, जीवन के मिथ्या आदर्शों, झूठे सिद्धातों-परिपाटियों का अन्त कर दे, जो एक नए युग का प्रवर्तक हो, एक नई सृष्टि खड़ी करदे।"

प्रेमचंद साहित्य को यशपाल बहुत दूर ले गए और सींचते रहे। आनेवाले साहित्यकारों का कर्तव्य है कि मनोरंजन में किसी प्रकार कमी न आने देकर मिथ्या आदर्शों, झूठे सिद्धांतों और परिपाटियों का हननकर नये युग का आवाहन करें। ●

४८२, उपरैनगंज वाड
मुहल्ला—नुनहाई जबलपुर, ४८२००२ (म० प्र०)

• कहकहे •

ग्राहक – (दुकानदार से) "यह टाई कितने की है?"

दुकानदार – "पचास रुपए की।"

ग्राहक – "अरे, इतने रुपए में तो एक जोड़ी जूते आ जाते हैं।"

दुकानदार – "गुस्ताखी माफ हो। आप एक जोड़े जूते ही अपने गले में बाँध लीजिए।"

× × ×

पत्नी – 'पता नहीं इस बार साड़ियों के कौन-कौन से नए डिजाइन निकलेंगे?'

पति – 'वही दो, एक जो तुम्हें पसन्द नहीं है और दूसरा जिसे लेनेके लिए मेरे पास पैसे नहीं।'

× × ×

एक हकला व्यक्ति – "भ . . . भा . . . . भाई साहब, आ . . . आ . . . आपका नाम क . . . क्या है?"

दूसरा हकला व्यक्ति – 'घ . . . घ . . . घ . . . घ . . . घ . . . घ . . . घ . . . घसीटा। लेकिन आ . . . आ . . . आ . . . आपका क . . . . क . . . क्या नाम है?'

पहला – 'नाम तो मेरा भी घ. . . घ. . . घसीटा है, लेकिन उतना नहीं जितना आपने घसीटा है।'

× × ×

ट्रेन के डिब्बे में बहुत भीड़ थी। एक मुसाफिर उसमें चढ़ने की कोशिश कर रहा था।

"इधर जगह नहीं है। कृपया, आप दूसरा डिब्बा देखिए।" अन्दर से आवाज आई।

मुसाफिर बोला – "अरे भाई, मुझे तो सिर्फ खड़े रहने भर की जगह चाहिए।"

"तो फिर प्लेटफार्म पर ही खड़े हो जाइए।" अन्दर से आवाज आई।

अग्रवाल-समाज : मेरी दृष्टि में

श्री रामेश्वरदास गुप्त

महामंत्री, अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन

[श्री गुप्तजी लक्ष्मी और सरस्वती के वरद पुत्र हैं। वे अग्रणी उद्योगपति औरजाति-समाज-देश के परम सेवक भी हैं।

अग्रवाल-समाज का मूल स्थान अग्रोहा है; जो हरियाणा राज्य में है। इस समाज के मूल पुरुष महाराज अग्रसेन की व्यवस्था, विचारशीलता और नीतिमत्ता विलक्षण थी। उसीसे प्रभावित होकर अग्रवाल समाज आज किस प्रकार उन्नति-पंथ का पथिक बना हुआ है, उसीकी एक सुन्दर झाँकी इस लेख में कराई गई है, जो पठनीय है। —सम्पादक]

'अग्रवाल' दो शब्दों से मिलकर बना है। अग्र+वाल=अग्रवाल। 'अग्र' के कई अर्थ हैं। अग्र सुगन्धित द्रव्य है जो स्वयं जलकर वातावरण को सुगन्धित बना देता है। दूसरा अर्थ है अग्रसर रहने वाला—आगे-आगे चलने वाला। तीसरा अर्थ 'अग्र' से अग्रसेन भी लिखते हैं। वाल का अर्थ है वाला अर्थात् अग्र-वाल। अग्रवाल का अर्थ हुआ, अग्रोहा वाला, अग्रसेन वाला, आगे-आगे चलने वाला और अपने को स्वाहा करके वातावरण को सुगन्धित बनाने वाला, अपने को समर्पित करने वाला। क्या अग्रवाल समाज पर उपर्युक्त चारों व्याख्याएँ घटती हैं। मेरे विचार से अग्रवाल समाज पर ये चारों उक्तियाँ तो घटती ही हैं, इसके साथ ही यदि इस 'अग्र' के सम्बन्ध में अन्य व्याख्याएँ भी की जाएँ, तो संभवतः वे भी पूरी उतरेंगी।

'अग्र' के समान जलकर दूसरों को खुशबू प्रदान करना इस समाज के सदस्यों का जन्मजात कार्य रहा है। लोटा-डोरी और एक अंगोछा कन्धे पर डालकर अपने गाँव से निकल गया और चलते-चलते न जाने कहाँ पहुँच गया। जहाँ भी पहुँचा, वह वहीं का ही हो गया। यदि आसाम पहुँचा, तो वहाँ धान कूटने से लेकर चाय के बगीचे में मजदूरी करने तक का धन्धा उसने पेट की ज्वाला शान्त करने के लिए अपना लिया और मजदूरी करते-करते एक दिन वह चाय-बागान का स्वामी बन गया। उसने धान की छानस खा-खाकर गुजारा किया और बढ़िया-बढ़िया चावल समाज को अर्पित कर दिया। अपने इस अथक परिश्रम के कारण एक दिन वह सेठ और साहूकार कहलाने लगा; परन्तु उसने अपना कर्म नहीं छोड़ा, वह निरन्तर कर्मयोग में लगा रहा। मोटा खाना, मोटा पहनना तथा उच्च विचार रखते हुए निरन्तर सादा जीवन व्यतीत करता रहा और कर रहा है।

फालतू पैसा होने पर उस पैसे से उसने परहित एवं सार्वजनिक उपयोग के लिए मंदिरों, धर्मशालाओं, विद्यालयों, महाविद्यालयों, अनाथालयों और अस्पतालों आदि की स्थापना की और उनका कुशलतापूर्वक संचालन भी किया। उसी 'अग्र' का यह परिणाम है कि आज देश का कोई भी भाग ऐसा नहीं है, जहाँ अग्रवालों द्वारा निर्मित कोई मन्दिर, कोई धर्मशाला,

कोई अस्पताल, कोई कुआँ, कोई बावड़ी, कोई तालाब आदि न हो।

विविध क्षेत्रों में :

अब मैं 'अग्र' अर्थात् आगे-आगे चलने वाले के सम्बन्ध में आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूँगा। जीवन के किसी भी क्षेत्र में अग्रवाल-समाज के किसी सदस्य ने पदार्पण किया, तो उसने अपने परिश्रम, कार्यकुशलता, निष्ठा, ईमानदारी और वफादारी के कारण अपने आपको एक्स्ट्रीम पर पहुँचा दिया। उदाहरणार्थ दर्शन एवं साहित्य के क्षेत्र में डा० भगवानदास, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, वासुदेवशरण अग्रवाल, जगन्नाथदास रत्नाकर, हनुमानदास पोद्दार, बाबू गुलाबराय, बाबू बालमुकुन्द, राजा शिवप्रसाद गुप्त आदि महानुभावों से कौन भारतीय परिचित नहीं है।

राजनीति और समाज-सेवा के क्षेत्र में शेरे पंजाब लाला लाजपतराय का नाम लेते ही हर भारतीय का मस्तक ऊँचा उठ जाता है। इसी पंक्ति में आचार्य जुगल किशोर, गाँधीजी के पाँचवें पुत्र सेठ जमनालाल बजाज, डा० राममनोहर लोहिया, देशबन्धु गुप्ता, लाला हरदेवसहाय एवं वसन्तलाल मुरारका आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। उद्योग के क्षेत्र में कमलापति सिंहानिया, राजबहादुर पद्मभूषण सेठ गूजरमल मोदी और लाला श्रीराम से कौन वाकिफ नहीं है। कानून के क्षेत्र में इस समाज के लोगों ने अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ब्रिटिश काल में लाहौर हाईकोर्ट के पहले भारतीय चीफ जस्टिस शादीलाल इसी समाज के एक होनहार सपूत थे। प्रसिद्ध इंजीनियर सर गंगाराम के नाम के बिना यह सूची अधूरी रहेगी।

आजकल भी संसद—सदस्य, विधायक, प्रदेशों में मंत्री एवं मुख्यमंत्री, कुलपति, आचार्य मंत्रालयों में मुख्य सचिव, वकील, मजिस्ट्रेट, जिलाधीश तथा हाई कोर्ट में जज आदि पदों पर भारी संख्या में अग्रवाल-समाज के सदस्य सेवा-रत हैं।

अग्रोहा का शासन :

औद्योगिक, सामाजिक, राजनैतिक, व्यापारिक, साहित्यिक, व्यावसायिक क्षेत्र में ही नहीं; अपितु आर्थिक क्षेत्र में भी अग्रवाल समाज का जो स्थान है उसका वर्णन शब्दों में करना संभव नहीं है। अधिकांश फाइनेन्स कम्पनियों और बैंकों की स्थापना में, उनके संचालन में अग्रवाल समाज का महत्त्वपूर्ण स्थान है। अकाउन्टन्ट तथा मुनीमी का काम इस समाज के लोग कुशलतापूर्वक करते रहे हैं और कर रहे हैं। इसलिए इसे यहाँ समाप्त करते हुए अब मैं 'अग्र' के अग्रोहा वाले के अर्थों पर आता हूँ। अग्रवाल समाज के प्रायः सभी सदस्यों का यह विश्वास है कि महाराजा अग्रसेन हमारे पूर्वज थे। महाराजा अग्रसेन की राजधानी अग्रोहा थी। अग्रोहा में वैश्यों के एक-सवा लाख परिवार रहते थे। कहते हैं कि अग्रोहा में यदि कोई निर्धन हो जाता था अथवा बाहर से आकर कोई अग्रोहा में बसता था, तो ये सवा लाख परिवार एक-एक मुद्रा (रुपया) और एक-एक ईंट उसके यहाँ स्वयं पहुँचा देते थे। इस प्रकार उस निर्धन अथवा आगन्तुक को अपने बराबर बना देते थे। सवा लाख ईंटों से वह अपना मकान बना लेता था और सवा लाख मुद्राओं से वह अपना कारोबार प्रारम्भ कर देता था। यह था महाराजा अग्रसेन की राजधानी अग्रोहा का समाजवाद।

एक समय आया, अग्रोहा ध्वस्त हो गया। ध्वस्त होने से कुछ समय पूर्व किसी भविष्यवाणी द्वारा अग्रोहा के निवासियों को यह ज्ञात हो गया कि अग्रोहा ध्वस्त होने वाला है। लोग हतप्रभ रह गए। उनके सामने पलायन करने के अलावा अन्य कोई चारा नहीं रह गया था। ये अग्रोहा को "खैर आबाद" कहते हुए पलायन कर गए। अग्रोहा ध्वस्त हो गया और आज तक वह ध्वस्त पड़ा हुआ अपने अग्रवाल समाज के सदस्यों से जो सारे देश में फैले हुए हैं, उनको मूक भाषा में चिल्ला-चिल्ला कर पुकार रहा है, "मेरी ओर देखो, मुझे उठाओ, स्नान कराओ, संवारो, सजाओ, मैं तुम्हारा हूँ, तुम्हारा अपना हूँ।"

भारत भर में :

अग्रोहा से निकलकर अग्रवाल–समाज के लोग जहाँ-जहाँ भी गए थे वहाँ के ही हो गए और वहाँ के जन-जीवन में घुल-मिल गए। यहीं कारण है कि आज तमिलनाडु का अग्रवाल जितनी अच्छी तमिल भाषा बोल सकता है, उतनी अच्छी संभवतः तमिलनाडु का अपना निवासी भी नहीं बोल पाएगा। बंगाल के अग्रवाल ने बंगाली जीवन से अपने आपको आत्मसात किया है। केरल के अग्रवाल ने मलयाली को अपनाया है। आन्ध्र का अग्रवाल अपने आपको पहले तेलगू भाषी कहता है, बंगलौर के अग्रवाल को कन्नड़ भाषा का अच्छा ज्ञान है। अग्रवाल अपने स्थान पर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सेवाकार्य कर रहा है। वह अग्रोहा का निवासी होने के कारण अपने आपको अग्रवाल कहता है। उसके पूर्वज महाराजा अग्रसेन थे। इसलिए भी वह अपने आपको अग्रवाल कहता है। आज भी 'अग्र' की भाँति वह अपने आपको 'होम' रहा है इसलिए वह अपने आपको अग्रवाल कहता है। आज भी वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अग्रसर है। इसलिए वह अपने आपको अग्रवाल कहने में गौरवान्वित होता है।

अन्ततः, यही निष्कर्ष निकलता है कि अग्रवाल समाज न केवल मेरी दृष्टि में एक गौरवपूर्ण समाज है, अपितु समस्त भारतीय समाज की दृष्टि में इसका इतिहास गौरवमय है। हम सबको इस बात का गौरव है कि हम एक गौरवशाली समाज के सदस्य हैं।

●

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन
डी-३५, साउथ एक्सटेंशन भाग–१
नई-दिल्ली-११००४९

• लोकतंत्र •

श्री राजीवकुमार गुप्त 'प्रभाकर'

एक बार साहित्य और राजनीति में इस बात को लेकर बहस छिड़ गई कि दोनों में बड़ा कौन है ? जब काफी वाद-विवाद के बाद भी यह तय न हो पाया कि साहित्य बड़ा है या राजनीति, तो दोनों ने किसी एक व्यक्ति को मध्यस्थ बनाने का फैसला किया ।

मध्यस्थ के चुनाव के पश्चात् दोनों ने अपने-अपने गुण मध्यस्थ को बताने प्रारम्भ किए।

पहले साहित्य ने बताया, 'मैं समाज का दर्पण हूँ तथा समाज को नई दिशा प्रदान करता हूँ।'

साहित्य की बात सुनकर मध्दस्थ राजनीति के गुण सुननेके लिए जैसे ही मुड़ा, उसके गाल पर राजनीति का थप्पड़ पड़ चुका था। राजनीति का हाथ हवा में लहरा रहा था और वह मध्यस्थ से पूछ रही थी, 'अब बताओ हम दोनों में कौन बड़ा है ?'

इससे पहले कि राजनीति का दूसरा थप्पड़ मध्यस्थ के गाल पर पड़े, उसने तुरन्त राजनीति को बड़ा घोषित कर दिया ।

इसके बाद मध्यस्थ राजनीति की ओर मुखातिब हुआ, 'अगर तुम्हें शक्ति-प्रयोग से ही स्वयं को बड़ा घोषित करवाना था तो यह शक्ति-परीक्षण तुम दोनों आपस में ही कर लेते ।'

मध्यस्थ की बात सुनकर राजनीति पहले तो मुस्कराई, फिर बोली, 'वह तो ठीक है; परन्तु आज देश में लोकतंत्र है और लोकतंत्र में अंतिम निर्णय जनता के हाथ में होता है ।'

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

दक्षिण भारतीय भाषाओं में अनूदित प्रेमचन्द साहित्य

●

श्री माणकचन्द नाहर
एम० ए०

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

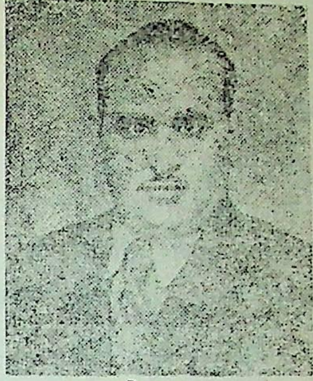

लेखक

[श्री नाहरजी एक उच्च कोटि के विचारक, लेखक और समाज-सेवक हैं। वर्षों से मद्रास में रहते हैं। हिन्दी, अंग्रेजी, राजस्थानी और दक्षिण की भाषाओं से सुपरिचित हैं। साहित्य और भाषा से आपको प्रगाढ़ प्रेम है।

उपन्यास-सम्राट प्रेमचन्द की रचनाओं का दक्षिण की भाषाओं (तमिल, तैलुगु, मलयालम और कनड़) में जो अनुवाद हुआ है, आदर और प्रचार हुआ है उसका संक्षिप्त वर्णन इस लघु लेख में किया गया है। इससे प्रेमचन्द की लोकप्रियता का पता लगता है। प्रेमचन्द की रचनाओं ने उत्तर और दक्षिण भारत की विचारधाराओं में किस प्रकार सेतुबन्धन किया है, इसे समझिए। ——सम्पादक]

अनूदित साहित्य की अधिकता किसी भाषा की पराधीनता का लक्षण नहीं है, बल्कि उस भाषाभाषी लोगों की सहृदयता, उदार दृष्टि, अपने पड़ोसियों को समझने की त्वरा आदि सभ्यता-द्योतक विशिष्ट गुणों का लक्षण है। किसी भाषा की प्रौढ़ रचना का अनुवाद वही भाषा कर सकती है, जो खुद प्रौढ़ बन गई हो।

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास की स्थापना सन् १९१८ में महात्मा गाँधीजी द्वारा हुई। सभा की परीक्षा के पाठ्यक्रमों में प्रेमचंदजी की कहानियाँ एवं उपन्यासों का समावेश होना ही दक्षिण भारतीय भाषाओं में अनुवाद का एक मुख्य कारण है।

मलयालम :

साधारणतया मलयालम भाषी उपन्यास पढ़ना अधिक पसंद करता है, मौलिक और अनुवाद का भेद नहीं मानता। प्रेमचंदजी की भाषाशैली, कथावस्तु एवं शिल्प तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं का समावेश आदि पर मलयालम भाषी एकाग्र होकर चिंतन करता है। यही कारण है कि मलयालम भाषा में प्रेमचंदजी के प्रायः सभी उपन्यास अनूदित हो चुके हैं।

मलयालम में अनुवाद के संदर्भ में पड़ोसी भाषा तमिल के पारिवारिक, ऐतिहासिक उपन्यासों के अनुवाद हुए। तत्पश्चात् बंगला के बंकिमचंद्र तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुर के क्रमशः उपन्यास और कहानियाँ अनूदित हुईं। इसके पश्चात् प्रेमचंदजी की कहानियाँ और उपन्यास अनूदित हुए।

हिंदी भाषी की भूमिका मलयालय अनुवादक के रूप में

तेलुगु :

सर्वप्रथम हिंदी भाषी श्री धारासिंह ने प्रेमचंदजी की चुनी हुई कहानियोंका अनुवाद कर एक कहानी-संग्रह प्रकाशित किया। शतरंज के खिलाड़ी, ईदगाह, कफन आदि प्रसिद्ध कहानियों के साथ २२ कहानियों का एक संग्रह नेशनल बुक ट्रस्ट की ओर से प्रकाशित हुआ है। प्रेमपंचमी की सभी कहानियाँ मलयालम में प्रकाशित हुई हैं।

प्रेमचंदजी के सभी उपन्यास श्री ई० के० दिवाकरन पोट्टी द्वारा अनूदित होकर प्रकाशित हो चुके हैं।

शोधग्रंथ :

मलयालम भाषी विद्वानों ने अधोलिखित शोधग्रंथ भी प्रेमचंदजी के साहित्य पर प्रस्तुत किए हैं– प्रेमचंदोत्तर तथा साहित्य में समाज-तत्त्व – (डा० वी० डी० कृष्णन कोचीन विश्वविद्यालय, १९७१)

प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यास साहित्य पर मार्क्सवाद का प्रभाव (एन० रवीन्द्रनाथ, कालीकट विश्वविद्यालय) प्रेमचंद कालीन सामाजिक उपन्यास उनके समकालीन मलयालम के सामाजिक उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन (वी० कृष्णन, सरदारपटेल विश्वविद्यालय, १९७५)

इसके अतिरिक्त प्रेमचंदजी के शोध-संदर्भ में के० बी० अबुल जलील, वी० के० दामोदरन का नाम भी उल्लेखनीय है। कन्नडभाषी शोधार्थी सर्वश्री गणपति भट्ट एवं आर० डा० हेगड़े ने प्रेमचंदजी के उपन्यास साहित्य को कन्नड़ भाषा में शोध के रूप में उजागर किया है।

तेलुगु में प्रेमचंदजी के साहित्य पर अधोलिखित फिल्में निर्मित हुईं–

"निर्मला" पर आधारित फिल्म "माईटि महालक्ष्मी" "कफन" पर आधारित फिल्म' "ओक ऊरि कथा" उल्लेखनीय हैं। फिल्म-निर्माताओं में श्री मृणालसेन अग्रगण्य रहे।

तेलुगु में प्रेमचंद साहित्य का अनुवाद तथा उसका प्रकाशन सुगठित तथा व्यवस्थित ढंग से हुआ। अधोलिखित प्रकाशक इस संदर्भ में उल्लेखनीय हैं–

प्रेमचंद पब्लिकेशन्स (विजयवाड़ा) विशालांध्र पब्लिकेशन्स हाउस जनता प्रचुरणालय आदर्श ग्रंथ मंडल इत्यादि

अनुवादक में सर्व श्री के० सूर्यनारायण शास्त्री जिन्होंने "निर्मला" और "प्रेम की वेदी" का अनुवाद किया। एन० एस० वी० सोमायाजुलु ने 'सेवासदन' का अनुवाद किया। श्री पुराणम कुमार राघव शास्त्री ने तो रेकार्ड तोड़ अधोलिखित कहानियों का अनुवाद किया है–

शांति, अप्पसेल्लेंडु (बड़ी और छोटी बहनें) गृहस्वामिनी आभरणमुलु (गहने) गृहदाहमु, पूलमतिपिल्ललु (पुलमति के बच्चे) गृहनीति, अंतिम शांति कारागरमु, जीवन शापमु, कौशलमु, सहगमतमु आदि हैं। अट्लूरिपिच्छेश्वरराव (गोदान,) श्री चावलि रामचंद्र राव (मंगलसूत्र का) आलूरि भुजंगराव (गबन और कायाकल्प का) तथा संयुक्तरूप से क्रमशः रंगभूमि, कर्मभूमि तथा प्रतिज्ञा उपन्यासों का आलूरि भुजंग राव, सुंकर सत्यनारायणराव तथा कौमुदी ने किया है।

तेलुगु की प्रसिद्ध लेखिका श्रीमती वासिरेड्डी सीतादेवी ने भी प्रेमचंदजी की कहानियों का अनुवाद किया है।

तेलुगु भाषी अधोलिखित शोधार्थी विद्वानों ने शोधग्रंथ प्रस्तुत किए हैं–

प्रेमचंद और गोपीचंद (बी० सत्यनारायण आंध्र विश्वविद्यालय, वाल्टेयर १९७४)

प्रेमचंदोत्तर कालीन हिंदी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास (वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति आंध्र १९६८)

तमिल;

तमिल में १९२४ में प्रेमचंदजी का अनुवाद आक्कूर अनंताचारी ने तथा सेवासदन का अनुवाद श्रीमती अंबुजम्माल ने तथा वी० एम० कृष्णस्वामी और वी० एस० रामैय्या ने प्रेमचंदजी की कहानियों के अनुवाद किए।

तमिल की पत्र-पत्रिकाओं जिनमें प्रेमचंदजी का साहित्य अनूदित होकर प्रकाशित हुआ।

आनंद विकटन (सा०) स्वदेशमित्रन (सा- अब दैनिक) कलैमगल (मा०) कावेरी (मा०) मणिक्कोडि (मा०) हनुमान (सा०) तेनी (मा०) चिन्तनं

(शेष पृष्ठ २८ पर)

राजस्थानी साहित्य में नीति-वचनावली

—श्रीमती सुगनी देवी बासोतिया

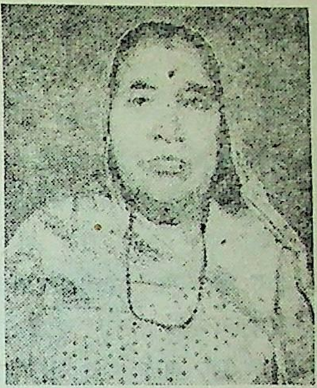

लेखिका

* * *

[श्रीमती बासोतिया एक अध्ययनशील महिला हैं। उन्होंने राजस्थानी भाषा में प्रचलित नीति-पदों के कुछ उदाहरण इस लेख में दिये हैं, जो पठनीय हैं। — सम्पादक]

राजस्थानी भाषा का साहित्य भी हिन्दी साहित्य का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। जिस प्रकार संस्कृत साहित्य में सुभाषित संग्रह तैयार होते रहे हैं वैसे ही राजस्थानी साहित्य में भी कुछ पद्यसंग्रह बने, परन्तु वे प्रकाशित नहीं हुए। सैकड़ों वर्षों से राजपूताने के भिन्न-भिन्न हिन्दू राजाओं के आश्रय में अनेक चारणों, भाटों तथा कवियों ने राजस्थानी भाषा में प्रचुर मात्रा में रचनाएँ कीं, जो साहित्य उन लोगों की वाणी में अब भी कण्ठस्थ है।

राजस्थानी की कविता भी वैसी ही मर्मस्पर्शिनी, ओजस्विनी एवं प्रभावोत्पादिनी है, जैसी प्राचीन संस्कृत और हिन्दी की कविता। राजस्थानी के चुभते हुए पद्यों को पढ़ या सुनकर उनकी हृदय से सराहना किये बिना नहीं रह सकते। जिस राजस्थानी भाषा का काव्य-साहित्य इतना व्यापक एवं प्रभावोत्पादक है, उसके विभिन्न विषयों के चुने हुए कुछ भावपूर्ण पद्यों को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करती हूँ।

दोहा—झूठे की कुछ पत नहीं, साजन झूठ न बोल।
लखपति को भी झूठ से, दो कोड़ी को मोल॥

पत्नी कहती है कि हे पति, झूठ नहीं बोलना चाहिए। झूठे मनुष्य की कोई इज्जत नहीं है। यदि लक्षाधीश भी झूठ बोलता है, तो उसकी कीमत दो कौड़ी की है।

दोहा—सत मत छोडे साहेबा, सत छोड़ा पत जाय।
सत की बांधी लिच्छमी, फेर मिलेगी आय॥

हे पति, सत्य मत छोड़ना। सत्य को छोड़ने से मनुष्य की इज्जत चली जाती है। यदि आप सत्य को रखेंगे, तो सत्य से बँधी हुई यह लक्ष्मी आपको फिर प्राप्त हो जाएगी।

दोहा—धर्म घटा तो धन घटे, धन घट मन घट जाय।
मन घट्या महिमा घटे, घटत-घटत घटि जाय॥

धर्म के घटने से मनुष्य का धन घट जाता है। धन की कमी हो जाने से मन संकुचित हो जाता है। मन के घटने से मनुष्य का बड़प्पन कम हो जाता है। इस प्रकार एक धर्म के घटने से सब प्रकार से मनुष्य का पतन हो जाता है।

दोहा—माखी बैठी सहद पर, पंख गया लिपटाय।
पांख हिलावे शिर धुने, लालच बुरी बलाय॥

लालच (लोभ) बहुत बुरी चीज है। मक्खी लोभवश शहद पर बैठी। पंख शहद में चिपट गए। जब उड़ा जाता नहीं, तब सिर धुनकर पछताने लगी और कहने लगी लोभ बहुत बुरी बलाय है।

दोहा—चंदन पड़्यो चमार घर, नित उठ कूटे चाम।
चंदन बिचारा क्या करे, पड़्या नीच से काम॥

एक हरिजन ने चमड़ा कूटने का मूसल चंदन का बनवा लिया और उससे नित्यप्रति चमडा कूट

का काम करने लगा। कवि कहता है कि इसमें चंदन का क्या दोष है। संगति का फल मिलता है। नीची संगति में जाने से चंदन को भी नीच काम करना पड़ा।

दो० – चंदन की चुटकी भली, गाडो भलो न काठ।
चात्रक तो एकज भलो, मूरख भला न साठ।।

चंदन तो एक तोले भर हो तो भी अच्छा है। काठ का एक गाड़ी जितना भार हो, वह भी कुछ काम का नहीं। चतुर बुद्धिमान् मनुष्य तो एक भी हो तो अच्छा, मूर्ख साठ भी काम के नहीं।

दो० – बड़ा भया तो क्या भया, जैसे पेड़ खजूर।
बैठण को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।।

मनुष्य बड़ा हो जाता है, परन्तु किसी की सहायता करने में असमर्थ होता है तो वह खजूर के पेड़ की तरह निरर्थक है। क्योंकि खजूर का पेड़ लम्बा तो बहुत होता है, परन्तु उसकी छाया किसी के काम में नहीं आती है और फल बहुत ऊँचे लगते हैं, प्राप्त नहीं होते हैं, इसलिए व्यर्थ है।

दो० वांस चढ़ी नटनी कहे, होत न नटियो कोय।
मैं नट कर नटनी भई, नटे सो नटनी होय।।

बाँस पर चढ़ी हुई नटनी कहती है कि मनुष्य के पास कोई वस्तु हो और कोई माँगने के लिए आए तो होती हुई वस्तु के लिए ना नहीं कहना चाहिए। जो होती हुई चीज को ना कहता है वह मेरी तरह नट की योनि में जन्म लेता है और नित्य उसको बाँस पर चढ़ना होता है। इसलिए होती बस्तु को देना ही चाहिए। नहीं मेरे जैसी दशा होगी।

दो० पंडित ओर मुशालची, दोऊ उलटी रीत।
और दिखावे चानणो, आप अंधेरे बीच।।

पंडित और मशालची दोनों की उलटी रीति है। क्योंकि पंडित दूसरों को उपदेश करता है, परन्तु आप उन वचनों पर अमल नहीं करता है और मशालची दूसरों को तो प्रकाश दिखाता है परन्तु अपने सिर पर अंधेरा रखता है। इसलिए उन दोनों की उलटी रीति है।

दो० गहली जोवन मूर्ख धन, नदी नीर हर लेत।
बलिहारी नृप कूप की, गुण बिन बूंद न देत।।

गहली (मूर्खा स्त्री) का यौवन, मूर्ख मनुष्य का धन और नदी का पानी हरेक मनुष्य सहज में ही प्राप्त कर लेता है, परन्तु कुएँ तथा राजा लोग गुण के बिना (रस्सी तथा गुण चमत्कार) एक बूंद नहीं देता है। अर्थात् कुए में रस्सी हो तो पानी मिले और राजा गुणी को इनाम देता है। सहज में इनके पास से प्राप्ति नहीं होती है।

दो० जन्म अकारथ ही गयो, भड़सिर खग न भग।
तीखा तुरी न म:णीया, गौरी गले न लग।।

अपने जीवन में जिस मनुष्य ने यह तीन कार्य नहीं किए उसने अपना अमूल्य जीवन व्यर्थ ही गँवाया। प्रथम तो युद्ध में योधाओं के सिर पर तलवार का बार नहीं किया, दूसरे सुन्दर और हवावेग दौड़ने वाले घोड़े की पीठ पर सवारी नहीं की, तीसरे सुन्दर स्त्री को अपने गले से नहीं लगाया, तो उसका जीवन व्यर्थ ही गया।

दोहा: जांका पड़ गया स्वभाव, जासी जीव से।
नीम न मीठो होय, सींचो गुड़ घीव से।।

मनुष्य की जैसी आदत पड़ जाती है, छूटती नहीं है। चाहे मर भले ही जाओ, स्वभाव नहीं बदलता। यदि नीम के वृक्ष में कितना ही गुड़ और घृत सींचो तो भी अपना कड़वापन नहीं छोड़ता, मीठा नहीं होता है।

राजस्थानी के पुरातन साहित्य के कुछ पृष्ठ लिखे गए हैं। अब हर्ष का विषय है कि इधर कुछ वर्षों से राजस्थान के कपितय इने-गिने ,उत्साही साहित्य सेवी ने राजस्थानी साहित्य की सेवा का व्रत ग्रहण करके राजस्थान का आधुनिक गौरव बढ़ाने पर कटिबद्ध हुए हैं। समस्त राजस्थानियों को भारत के सुविख्यात दानवीर सेठ श्री घनश्यामदासजी बिड़ला का कृतज्ञ होना चाहिए। क्योंकि उन्होंने राजस्थानी साहित्य को पुनर्जीवित करनेके लिए एक ग्रन्थमाला स्थापित करके इसके प्रकाशन की व्यवस्था कर दी है। बिड़लाजी की दानशिलता के फलस्वरूप ही राजस्थानी साहित्य का आधुनिक गौरव बढ़ना शुरु हुआ है। ●

ब्लोक नं. ४२ रूम नं. ९००
मेघाणीनगर, अहमदाबाद–३८००१६

नारी-परक

दृष्टि–परिवर्तन

कुमारी सुमन मित्तल
बी० ए०

[कुमारी मित्तल एक अध्ययनशील विद्यार्थिनी हैं। प्रस्तुत लेख में लेखिका ने नारी-वर्ग के परिवर्तित विचार-व्यवहार पर हमारा ध्यान खींचा है, जो पठनीय है। — सम्पादक]

दुनियां ने करवट बदल ली है। जमाना भी है कि कहाँ था – कहाँ पहुँच गया और आज पुरुषों का दृष्टिकोण बदलने का यह ठेका नारी पर क्यों? यह सिर-दर्द मोल लेने से पहले बहुत कुछ सोचने को नारी आज स्वतंत्र है, सक्षम भी है। यह तो मानना पड़ेगा कि कुछ चीजें अवश्य बदलनी पड़ती हैं। तो कुछ ऐसी भी होती हैं, जो रंग बदलते खरबूजे को देख कर स्वत: रंग बदल जाती है, रूप बदल जाता है। सप्रयास की उस प्रथम लिखित उपलब्धि की तुलना में निर्प्रयास की यह वैकल्पिक द्वितीय उपलब्धि अधिक स्वाभाविक, अधिक स्थायी सिद्ध होती है। ठीक ऐसे ही जैसे पेड़ पर आम के पकने तक कौन प्रतीक्षा करे। घास-फूस में या हीटरों से ही जल्दी पका कर तैयार कर लिया। दूसरे उदाहरणस्वरूप सर्दियों की शीत लहर को या पेड़ के चिलचिलाते लू के थपेड़ों को हम ओढ़े-लपेटे या वातानुकूलित कमरे में बैठे रास्ता दे देते हैं, परन्तु उन्हें रोक नहीं सकते, उनके रुख बदल सकते नहीं। बस यही कि अपनी साधन-सुविधानुसार खुद को बदल लेते हैं।

प्राचीन काल :

यहाँ पर तवारीखी मिसालों का पोथीपत्रा खोलकर उन ऐतिहासिक दृष्टान्तों से ज्यादा बोझिल नहीं करूँगा, पौराणिक काल, मध्यकाल, वर्तमान शताब्दी, दशाब्दी और इधर के वर्ष दो वर्ष तक के लम्बे फलक पर से केवल इक्का – दुक्का नारी रत्न एक-एक क्षेत्र से चुन कर आज की नारी की सुप्त शक्ति पर से, आदि शक्ति की विस्मृतशक्ति पर से पर्दा उठाने का तनिक प्रयास करूँगी। महासती अनसूया किस पुरुष से पूछने गई थीं त्रिदेवों को घुटने टिका देते समय, सावित्री किस मर्द से परामर्श लेने गई थीं यमराज को नकेले बन्द करने से पूर्व। नितान्त अन्ध और बधिर हेलेन केलर किस जादुई स्पर्श से विश्व की अप्रतिम शिक्षाविद बन गई। फ्रान्स की जोन आफ आर्क और भारत की बुन्देलखंडी झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई किन मर्दों के सहारे मर्दानगी का खिताब ले गई। पोलेन्ड की मादाम क्यूरी किन पुरुषों का दृष्टिकोण बदलने की मोहताज रह कर दो चार नोबेल पुरस्कार लेकर पुरुषों के लिए आज तक अजेय मिसाल बन सकी। सोवियत संघ की बेलेन्तिना ताराश्कोव किस पुरुष के सहारे विश्व की प्रथम महिला अन्तरिक्षनाविक बन सकी। जापान की जुन्को तावी किस नर की मुखापेक्षी रह कर विश्व की प्रथम महिला एवरेस्ट विजेता बनी और अन्तिम दृष्टांत स्वरूप हमारी वर्तमान प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी किन पुरुषों की सहायता रूपी वैसाखियों पर विश्व की राजनीतिक शतरंज में अपनी ही विजय की पेगें बढ़ाये जा रही हैं। सब का उत्तर यही है कि चुनौती का सामना हो जाने पर नारी चूल्हे – चौके की चहारदीवारी लाँघ कर यह दिखाती रही है कि क्या कमाल बन सकता

है जब – बीवियां शौहर बनें। शौहर बनें जब बीवियां। यों देखने निकलें तो आज भी आदिवायियों में तथा अन्यान्य की कुछेक जन–जातियों में गृहस्थी की गाड़ी का सारथ्य तो नारी करती है और जुये में जुतना पड़ता है पुरुष को।

यदि यथार्थ का सामना करने का साहस और समझने का प्रयास करें तो प्रतीत होगा कि आज की नारी-मुक्ति की उठती–उमड़ती आँधी को आज का पुरुष बांहों में समेटना तो बहुत दूर, उसे एक दुर्धर्ष चुनौती के रूप में उद्भूत देख कर त्रस्त–सा हो उठा है। अतः, पुरुष-प्राणी का एक दृष्टिकोण ही क्यों, उसका समूचा बाना ही आमूल परिवर्तन, मनो काया-कल्प ही के कगार पर है। नारी को पुरुष के लिए" करना कुछ नहीं, केवल स्वयं में कुछ वे खूबियां पैदा करनी हैं जिनसे सिद्ध किया जा सके कि खुदी को कर बुलन्द इतना की हर तजवीज से पहले पुरुष नारी से ये पूछे, बता तेरी रजा क्या है?

आधुनिक काल :

अतः, एक विशिष्ट दृष्टिकोण से आज की नारी को नरावलम्बी रहने की तो तुक ही नहीं। ऊपर गिनाये दृष्टान्तों से स्पष्ट है कि नारी ने नर के समकक्ष ही नहीं, कहीं–कहीं बहुत आगे बढ़ कर दिखा दिया है। कर्मक्षेत्र धर्म का हो या शिक्षा का, ज्ञान–विज्ञान का हो या साहस का, रणनीति का हो या राजनीति का – है कौन सा वो मोर्चा जिस पर कि जन नहीं।

तो बात रही, खुदी को बुलन्द करने की, खुद में कमाल पैदा करने की खुद को बदलने की। इसके लिए सर्व प्रथम आवश्यकता है ज्ञानार्जन की। ज्ञानदीप हाथ में लिये बगैर तो नारी एक पग भी आगे न बढ़ सकेगी। ज्ञान-प्राप्ति का अर्थ ही है अपनी सुप्त प्रतिभाओं को शक्तियों में जाग्रत करना। यहाँ एक यह रहस्योद्घाटन भी अप्रासंगिक न होगा कि यदि युगों तक नर ने नारी को दासत्व में रखा है तो केवल अज्ञान के अन्धकूप में ही लटकाये रख कर। वह समझे हुए था कि ज्ञानदीप रूपी अल्ला-दीन का जादुई चिराग यदि नारी के हाथ पड़ गया तो गंगाराम को लेने के देने पड़ जाएँगे।

आवश्यकताएँ :

अतः, स्वयंसिद्ध है कि प्रथम आवश्यकता है अन्तरतम से अज्ञान-तिमिर को भगा देना। कोई जमाना था जब कहा जाता था – सर्वे गुणाः कांचनमाश्रयन्ति – अब तनिक शव्दान्तर से यह कहना अधिक सुसंगत होगा कि – सर्वे गुणाः ज्ञानलोकाश्रयन्ति।। आज के आंकड़े भी गवाह हैं कि शिक्षार्जन में भी महिलाएँ पुरुषों को मात देती आ रही हैं। किसी भी विश्वविद्यालय के परीक्षाफल को एक नजर देख जाइए। किसीसे पूछने कहीं न जाना पड़ेगा।

यहाँ तक तो हुई ज्ञानार्जन की बात। अब आवश्यकता रह जाती है अपनी भारतीय संस्कृति और अपनी पारिवारिक स्वस्थ परम्परानुसार व्यर्थ के संघर्षों से बचते-बचाते अपने ज्ञान का सदुपयोग करने की बात। सदुपयोगों की उस सूची में भी धार्मिक संपन्ना आर्थिक नरावलम्बन से भक्ति (आर्थिक स्वतन्त्रता भिन्न वस्तु है) का प्रथम स्थान रहेगा। यह इसलिए कि नारी की पुरुषाधीनता का यदि एक शिकंजा अज्ञानावरण था तो उसपर जड़ा हुआ यह था कि पैसे – पैसे के लिए नारी नर की मुखापेक्षी रहे। अतः, जहां तक सम्भव हो, यदि परिवार के परिपालन में नारी अर्थोपार्जन के मोर्चे पर पुरुष के समकक्ष हो तब तो उसे सोने में सुहागे का कहना ही क्या? अन्यथा ज्ञानलोक नारीके लिए इतना तो अनिवार्यतः आवश्यक है ही कि निजी आवश्यकता भर के लिए पुरुष पर अविलम्बत न रहे। यों भी तो कमाऊ पूत और दुधारी गाय की लात पुरुष-वर्ग चुपचाप सह लेने का आदी है। वह दुधारी गाय ही आज की अर्थोपार्जिका नारी है। मेरी मान्यतानुसार ये दो मोर्चे जीत लेने पर ही आज की नारी कह सकती है–

अहसान मरदुओं का उठाये मेरी बला,
कश्ती को खुद सम्हाल लूं, लंगर समेट लूं।

●

८९, ग्वालियर रोड
आगरा–१ (उ० प्र०)

केन्द्रीय बजट : एक दृष्टि

—श्री रामनिवास राठी

चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट

[श्री राठीजी एक कुशल और अनुभवी लेखा-परीक्षक हैं। इस वर्ष के केन्द्रीय बजट पर उनका अध्ययनशील निरीक्षण पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत है। —सम्पादक]

केन्द्रीय वित्तमन्त्री श्री आर. व्यंकटरामन ने सन् १९८०-८१ का जो केन्द्रीय बजट गत दिनांक १८ जून, १९८० को भारतीय संसद में पेश किया वह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। बजट प्रस्ताव देश की अर्थव्यवस्था के वेगके लिए बहुत महत्त्वपूर्ण होते ही हैं। इसका अन्दाज बजट की सन्ध्या को शेयर मार्केट से मिल जाता है। बजट के पूर्व कई उपभोक्ता वस्तुओं का मार्केट से गायब हो जाना एवं कई वस्तुएँ जैसे फ्रीज, सिगरेट एवं अन्य वस्तुएँ स्टाक में नहीं हैं, का एक प्रतिबिम्ब नजर आने लगता है। वैसे प्रत्येक वर्ष के बजट में कुछ वस्तुओं पर ड्यूटी तो स्वतः ही मान ली जाती है। यह तो मार्केट-स्तर की बात हुई, किन्तु मैं इस लेख में प्रत्यक्ष कर–प्रस्तावों की चर्चा करने जा रहा हूँ। क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति को ये प्रत्यक्ष कर-प्रस्ताव विशेष रूप से प्रभावित करते हैं। जहाँ तक प्रत्येक प्रत्यक्ष कर–प्रस्तावों का प्रश्न है माननीय वित्तमंत्रीजी ने इस वर्ष बजट में काफी छूटें दी हैं। हालांकि यह बात दूसरी है कि अगर-मगर करके ये छूटें अप्रत्याशित रूप से वापस ले ली हैं। जहाँ तक प्रत्यक्ष करों का प्रश्न है यह अगर-मगर ही विशेष रूप से हमारी कर-प्रणाली के सरलीकरण की जो पद्धति है उसके साथ जुटे रहते हैं और यह सरलीकरण विशेष रूप से विशेषज्ञोंके लिए भी एक पेचीदा प्रश्न पैदा कर देते हैं, जिनका निर्णय देश के उच्चतम न्यायालय में ही होता है तो जनसाधारणके लिए यह सरलीकरण क्या हुआ इसका हिसाब तो हमारे देश के राजनैतिक जो कि सत्ता पर रहते हैं वे ही लगा पाते हैं, लेकिन कानून की किताबों में इसका उल्लेख तो अवश्य हो जाता है।

व्यक्तिगत सीमा :

प्रत्यक्ष करों के क्षेत्र से वित्तमंत्रीजी ने आयकर की व्यक्तिगत सीमा १० हजार से बढ़ाकर १२ हजार की है। इसी प्रकार सम्पत्तिकर १ लाख से बढ़ा कर के डेढ़ लाख किया गया है, किन्तु जैसा कि मैंने अभी आपको बताया कि अगर-मगर का प्रश्न है कि यह छूट केवल उन्हीं महानुभावोंके लिए होगी, जिनकी अपनी आमदनी १२ हजार तथा सम्पत्ति डेढ़ लाख से ज्यादा नहीं होगी। अगर इससे ज्यादा होगी तो मार्जिनल रिलीफ के मामलों को छोड़कर व्यक्तिगत आमदनी एवं सम्पत्ति की छूट वही रहेगी जो पहिले थी। सम्पत्ति–कर की यह छूट वित्तीय वर्ष १९८०-८१ से लागू है।

(२) दूसरी छूट जो कि वित्तमन्त्रीजी ने प्रस्तावित की है वह सरचार्ज जो कि अभी २० प्रतिशत था १० प्रतिशत कर दिया है। यह छूट कंपनियों को नहीं मिलेगी।

(३) संवत् २०३६ से बीमा, प्रोविडेन्ट फन्ड एवं पोस्ट आफिस सेविंग बैंक आदि अन्य पर जो

छूट पहिले थी, उन्हें वापस कर लिया गया है। जिन-पर जनता सरकार के भूतपूर्व वित्तमन्त्री ने सन् १९७९ के बजट में जो कटौती की थीं उन्हें हटा दिया गया है और अब आयकर अधिनियम की धारा ८० सी के अन्तर्गत जो छूट पहिले मिलती थी, पुनः उसी प्रकार से मिला करेगी।

(४) आयकर अधिनियम की धारा ३२ के अन्तर्गत जो मशीनरी (फैक्टरी) १ मार्च, सन् १९८० के बाद लगाई गई है, उसपर ५० प्रतिशत डेप्रीशियेशन अधिक मिलेगा, किन्तु यह छूट केवल फैक्टरी के अन्तर्गत जो मशीनें लगाई गई हैं या लगाई जाएँगी उन्हीं पर मिलेगी। आफीस के अन्तर्गत जो मशीनरी लगाई गई है या लगाई जाएगी उसपर यह छूट नहीं मिलेगी।

(५) पेन्शनरों को भी वेतन पाने वालों की भाँति स्टैन्डर्ड डिडक्शन आदि का लाभ मिल सकेगा।

(६) अन्धे या अपंग व्यक्तियों को २० हजार तक वेतन देने पर ३३ प्रतिशत छूट अधिक मिलेगी यानी उन्हें १०० रुपए वेतन दिया जाता है तो १३३ रुपए आपको आपकी आमदनी से छूट मिल सकेगी।

(७) वित्तमन्त्रीजी के कर-प्रस्ताव को आर्थिक वेग देने के लिए जो विशेष रूप से प्रभावित करती है वह आयकर अधिनियम की धारा ८० जे के स्थान पर ८० आई की एक नई धारा जोड़ी गई है। ८० जे के अन्तर्गत औद्योगिक संस्थानों को अपनी पूँजी विनियोजन के आधार पर अब तक छूट मिलती आ रही थी और यह छूट लगातार ५ वर्षों तक उपयोग में ली जा सकती थी, किन्तु १ अप्रैल सन् १९८१ से अब पूँजी विनियोजन के आधार पर औद्योगिक संस्थानों को उनके द्वारा अर्जित लाभ पर २० प्रतिशत तथा कंपनियों के मामले में २५ प्रतिशत छूट मिल सकेगी, यह छूट शुरूआत के ७ वर्षों तक मिल सकेगी। वित्तमन्त्रीजी का यह प्रस्ताव औद्योगिक संस्थानों को काफी मुश्किलों में डालने वाला है। पूंजी विनियोजन की जगह नफे के आधार पर जो छूट दी गई है, वह कहाँ तक व्यावहारिक है तथा औद्योगिक संस्थानों में पूँजी-विनियोजन को कहाँ तक वेग दे पाएगी यह तो भविष्य ही बताएगा; किन्तु एक बात सर्वविदित है कि किसी भी नए उद्योग से पहले दो-तीन साल तो नफे के दर्शन ही नहीं हो पाते हैं। क्योंकि उद्योगों को लगाना तथा उनपर नफा अर्जित करना यह एक बहुत ही कठिन प्रयास है। जबकि धारा ८० जे के अन्तर्गत जो छूट मिलती थी, वह उद्योग के नफे के आधार पर नहीं बल्कि उसपर पूँजी के आधार पर मिलती थी। इससे छूट का लाभ सभी औद्योगिक इकाइयों को मिल पाता था। जबकि धारा ८० आई के अन्तर्गत जो छूट मिलेगी वह केवल उन औद्योगिक इकाइयों को मिल पाएगी जो कि नफा कमाने में समर्थ हैं।

(८) व्यक्तिगत कर-स्तर पर वित्तमन्त्रीजी ने संयुक्त हिन्दू परिवार के रूप में टैक्स प्लानिंग के एक भाग को विशेषरूप से जाल में डाल दिया है। यह सर्व विदित है कि संयुक्त हिन्दू परिवार की एक इकाई से अनेक इकाइयाँ करना तथा उनके अलग-अलग रूप से टैक्स की निम्नतर दर पर लाना टैक्स प्लानिंग इधर तीन-चार वर्षों में व्यापक रूप से अपनाया गया है। संयुक्त हिन्दू परिवार का परिवार के सदस्यों के लिए तथा पारिवारिक सम्पत्ति का आंशिक बँटवारा (पार्शियल पार्टीशन) करके एक इकाई से अनेक इकाइयाँ तैयार की जा सकती थीं, किन्तु अब वित्तमन्त्रीजी ने आयकर की धारा १७१ में सुधार करके आंशिक बँटवारे (पार्शियल पार्टिशन) को ३१ दिसम्बर सन् १९७८ के बाद से आयकर एवं सम्पत्तिकर के अन्तर्गत टैक्स लेनेके लिए अवैध कर दिया है। अगर किसी भी संयुक्त हिन्दू परिवार का आंशिक बँटवारा ३१-१२-१९७८ के बाद से हुआ हो, तो बँटवारे की इकाई की आमदनी तथा सम्पत्ति आयकर एवं सम्पत्तिकर के लिए मूल परिवार की ही मानी जाएगी।

संयुक्त हिन्दू परिवार :

संयुक्त हिन्दू परिवार का पूरा बँटवारा अभी भी कानून के अन्तर्गत है तथा पूरे बँटवारे से किये गए

परिवार के सदस्यों की जो संयुक्त हिन्दू परिवार के रूप नई कर इकाई होने उसके बारे में कोई दिक्कत नहीं है। आंशिक बँटवारे के अन्तर्गत जो संयुक्त हिन्दू परिवार की अनेक कर-इकाइयाँ तैयार करने के नियम में जो वित्तमन्त्रीजी ने प्रास्ताविक प्रारूप तैयार किया है, उसमें से छूट लेते हुए भी अनेक तरीकों से यह इकाइयाँ तैयार की जा सकती हैं, किन्तु इस कर-प्रारूप को जो कि अभी तक सभी कर-दाता अपनाते आए थे बदलना पड़ेगा और प्रस्तावित बजट-प्रस्तावों की सीमा में नहीं आए इस ढंग से प्लानिंग करनी पड़ेगी। आंशिक बँटवारों को जो कि ३१, दिसम्बर सन् १९७८ से अवैध किया गया है उसमें कितनी कानूनी अड़चनें आएँगी जिनका निपटारा अपीलों के माध्यम से होगा। वित्तमंत्रीजी ने बँटवारे को अवैध बताया है तथा बँटवारा करके जो संयुक्त हिन्दू परिवार की इकाई हैं उसे पुनः किसी दूसरी इकाई के साथ मिलकर काम करने में कोई दिक्कत नहीं है। उदाहरण के रूप में अ ब स द चार भाइयों ने एक संयुक्त हिन्दू परिवार का पूर्व बँटवारा कर लिया तथा बँटवारे के बाद अगर ब तथा स शामिल होकर पुनः ब स के नाम से एक नई इकाई कायम कर सकते हैं, जिसे हिन्दू-कानून में रीयुनियन कहते हैं। यह तो एक तरीका है। इस प्रकार अनेक तरीकों से अभी संयुक्त हिन्दू परिवार को टैक्स के लिहाज से टैक्स प्लानिंग करने के लिए एक अच्छे साधन के रूप में काम लिया जा सकता है, किन्तु इसका प्रारूप बदलना पड़ेगा।

संयुक्त हिन्दू परिवार पर (जिसके किसी एक सदस्य की आमदनी १२ हजार से ज्यादा) हो, तो २५ हजार तक की आमदनी पर क्रमशः १८ प्रतिशत से २२ प्रतिशत, २५ प्रतिशत से २७ प्रतिशत तथा ३० प्रतिशत से ३५ प्रतिशत तक बढ़ा दिया गया है। २५ हज़ार से ऊपर वाली आमदनी पर कोई कर नहीं बढ़ाया गया है।

(९) कर-योजना के अन्तर्गत प्राइवेट ट्रस्टों को विशेष रूप से उपयोग में लिया जा रहा है। माननीय वित्तमन्त्रीजी की नज़र इस रास्ते को भी बन्द करने पर पड़ी, किन्तु यह नजर पूरी तरह से नहीं पड़ सकी। ट्रस्टों को केवल डिस्केशनरी ट्रस्ट पर कर का उच्चतम रेट लगेगा। इसमें अभी जो चालू यानी जिन ट्रस्टों में बेनीफिशयरियों के हिस्से तथा वे स्वयं ट्रस्टडीड के अन्तर्गत लिखे गए हैं, उनपर तथा बेनीफिशयरों पर चालू दर के हिसाब से ही टैक्स लगेगा। इस प्रकार व्यापारिक क्षेत्र में जो ट्रस्टों के प्रति विशेषप्रेम है उसको अभी तक तो सरकार ने कायम रखा है। यह बात अलग है कि आयकर अधिनियम संशोधन में जो कि इस वर्ष संसद में पेश होने जा रहा है, उसके द्वारा कुछ नई योजना लागू पड़े। वसीयत द्वारा भी केवल एक डिस्केशनरी ट्रस्ट को ही मान्यता दी है। बाकी के बसीयत द्वारा किये गये डिस्केनरी ट्रस्ट आयकर की उच्चतम दर से टैक्स भरेंगे। वसीयत द्वारा स्पेशिक ट्रस्ट पर कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाया गया है। इसी प्रकार धर्मार्थ ट्रस्टों पर भी पूंजी-विनियोजन पर जो प्रतिबन्ध लगाये गए हैं उनकी तिथि निश्चित कर दी गई है और वित्तमंत्रीजीने उससे आग और तिथि बढ़ाने से इन्कार कर दिया गया है। इस प्रकार ट्रस्ट द्वारा कर – योजना का आयोजन केवल स्पेशिक ट्रस्ट द्वारा ही किया जा सकता है; किन्तु जिन ट्रस्टों तथा ट्रस्टडीड में बेनेफिशयरों के हिस्से आमदनी एवं सम्पत्ति में निश्चित नहीं हैं उन ट्रस्टों में ६५ प्रतिशत फ्लेट रेट लगेगा। इसीप्रकार से संपत्ति-कर में ३ प्रतिशत टैक्स संपत्ति पर लगेगा। यह प्रावधान कर-निर्धारण वर्ष १९८०-८१ से लगेगा।

(१०) संपत्ति कर से कृषिसंपत्ति को मुक्त किया गया है; किन्तु आयकर के अन्तर्गत आयकर की उच्चतम दर के लिए कृषि की आमदनी जोड़ी जाएगी।

प्रत्येक करों के सम्बन्ध में वित्तमन्त्रीजी ने कर-प्रावधान किए हैं उसमें एक तरफसे देकर दूसरी तरफ से वापस ले लिये हैं। आयकर की सीमा जो १२ हजार की है उससे केवल नौकरी-पेशा वाले व्यक्तियों के अलावा अन्य करदाताओं को कोई विशेष लाभ नहीं मिलेगा। हालाँकि मन्त्री महोदय ने छह लाख करदाताओं को आयकर से मुक्त किया है। इसी प्रकार सम्पत्तिकर की डेढ़ लाख सीमा से भी भाववृद्धि के कारण करदाताओं को विशेष लाभ

नहीं मिलेगा। संयुक्त हिन्दू परिवार की पहले ग्रूप की आमदनी पर टैक्स का दर बढ़ा कर तथा आंशिक बँटवारा ३१-१२-७८ से अवैध कर के जो कानूनी दिक्कतें पेश हुई हैं उससे करदाताओं की अनेक दिक्कतें बढ़ेंगी। इसी प्रकार से ८० जे के अन्तर्गत औद्योगिक इकाइयों को जो पूँजी-विनियोजन पर छूट मिला करती थीं, उसके स्थान पर उनके द्वारा अर्जित लाभ पर छूट देने का वित्तमन्त्रीजी का प्रस्ताव अर्थ-व्यवस्था में पूँजी-विनियोजन के वेग को कम करेगा, जिसका एक चित्रण शेयर मार्केट में शेयरों के भाव से पता लग गया है। शुरूआत में जो बजट का स्वागत किया जा रहा था, वह धीरे-धीरे बजटप्रस्ताव का पता लगने के पश्चात् उनके विश्लेषण से पता लग गया कि यह तो एक हाथ लेना तथा दूसरे हाथ वापस देने वाला बजट है। ●

मेहरा-सोमानी एण्ड कम्पनी
हीराभाई मार्केट, **अहमदाबाद – २२**

(पृष्ठ २० का शेषांश)

(मा०) कल्कि (सा०) मंजरी (तमिल डायजेस्ट) आदि हैं।

फिल्म :

तमिल में सेवासदन पर फिल्म बनी। क्रमश: नानुभाई वकील, के० सुब्रह्मन्यम, एम० एस० सुब्बालक्ष्मी, नरेश अय्यर इत्यादि फिल्म—निर्माता, निदेशक, गायिका, अभिनेता के रूप में उल्लेखनीय हैं।

का. श्री. श्रीनिवासाचार्य, रा. कृष्णमूर्ति, विलीनाथन, शोरिराजन, सरस्वती रामनाथ आदि प्रेमचंदजी के साहित्य को तमिल में अनुवाद करने में लोकप्रिय तथा विशेषज्ञ हैं। १९७५ में नेशन बुक ट्रस्ट द्वारा प्रेमचंदजी की कहानियों का तमिल अनुवाद भी प्रकाशित हुआ था।

दिसम्बर, १९३४ में स्वयं प्रेमचंदजी मद्रास पधारे थे। पाँच दिन तक दक्षिण भारत का दौरा किया था तथा दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के पदवीदान समारोह में दीक्षांत भाषण भी दिया था। ●

—निदेशक
सेठ बख्तावर रिसर्च इंस्टीट्युट (रजिस्टर्ड)
५८, मैलापुर बाजार रोड, मद्रास – ४

● दृष्टिकोण ●

मधुप मगधशाही

अपने को बुद्धिजीवी कहनेवालों की जमात थी। पहले उनका एक ही संगठन था। सभी उसीके अधीन एकत्रित होते; साहित्यिक चर्चाएँ करते; देश-काल की बातें करते; कविताएँ, कहानियाँ और नाटक पढ़ते। कुछ दिनों बाद कुछ लोगों ने दूसरा संगठन बना लिया।

संचालकों ने अपने लिए सिद्धान्तों का लिबास ओढ़ा। पहले का कहना था, 'बुद्धिजीवी युगद्रष्टा होता है, इसलिए हम उसकी मुक्तता पसंद करते हैं।'

दूसरे ने कहा, "हमें प्रतिबद्ध होना ही पड़ेगा। यदि हम अपनी कल्पनाओं को साकार देखना चाहते हैं। अन्यथा दिशाहीन भटकाव हमारे परिश्रम को व्यर्थता प्रदान करता रहेगा।"

पहले ने दूसरे पर अभियोग लगाया, "बुद्धिजीवी बेबाक बात कहने के लिए अपनी रचनाधर्मिता के प्रति प्रतिबद्ध होगा, न कि किसी विशेष दृष्टिकोण के प्रति।"

दूसरे का उत्तर हुआ, "हम प्रगतिशील हैं। वक्त के साथ कदम मिलाकर चलते हैं। हमारे साथ न चल सकने वाले लोग बुर्जुआ हैं।"

किन्तु इन संगठनों के संचालकों के अतिरिक्त नगर के शेष बुद्धिजीवी सिद्धान्तों की इस लड़ाई में कहीं शामिल नहीं थे। तटस्थ थे। पूछने पर उनमें से एक ने कहा, "मुखियागिरी के लिए यह सिर्फ व्यक्तियों की लड़ाई है। हम दोनों ही जगह इसलिए चले जाते हैं कि दोनों ही हमें बुलाते हैं, हमारी खातिर करते हैं, न जाएँ तो वे बुरा मान जाएँगे और विरोधी समझ बैठेंगे!"

— मार्फत बैंक ऑफ बड़ौदा, बेगूसराय

हल्दी

●

डा० भानुप्रताप मिश्र
आयुर्वेद रत्न

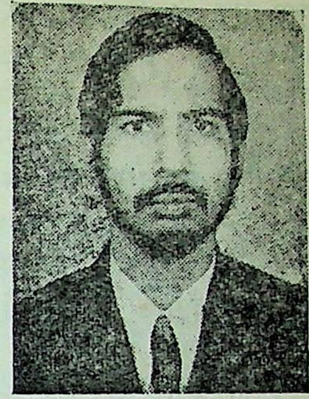

लेखक

[श्री मिश्रजी तरुण अनुभवी वैद्य हैं। आप इस समय आयुर्वेद महाविद्यालय लोढ़ा में विवेचक-पद पर कार्य कर रहे हैं। बड़े ही मिलनसार और सेवाभावी हैं।

हल्दी हमारी परिचित और व्यवहृत उपयोगी वस्तु है; किन्तु उसका आयुर्वेदिक गुण हमें अनेक छोटे-बड़े रोगों में किस प्रकार मुक्ति दिलाता है उसे छोटे-से लेख में पढ़िए और अपने रोग की औषधि स्वयं तैयार कीजिए, घर का डाक्टर बनिए। —सम्पादक]

देश की माटी पर एक छोर से दूसरे छोर तक फैली हुई जीवनदायिनी वनस्पतियाँ (जड़ी-बूटियाँ) रोग और पीड़ा से कराहते दुःखी जनों के लिए ईश्वरीय वरदान हैं। हमारे प्राचीन महर्षियों ने अपनी अनवरत साधना और तपस्या के द्वारा इन्हीं वनस्पतियों से सार-तत्त्व निकालकर करोड़ों लोगों को सुदीर्घ-स्वस्थ जीवन प्रदान किया। यहाँ हल्दी के विषय में मैं अपना विचार प्रगट करता हूँ।

वानस्पतिक वर्णन :

इसका पौधा अदरख के समान होता है। पत्तियाँ १ से १.५ फुट लम्बी और चौड़ी होती हैं। जिनसे आम की तरह गन्ध आती है। पत्रवृत्त भी पत्तों की तरह चौड़ा होता है। पुष्पदण्ड ४ से ६ इंच लम्बा होता है। जिसमें हल्दी के रंग के लगभग १ इंच लम्बे पुष्प निकलते हैं। इसका कन्द लम्बा, गोलाकार और गाँठदार होता है। इसका भीतरी भाग अधिक पीला होता है। वर्षाऋतु के आरम्भ में पुष्प निकलते हैं।

प्रयोज्य अंग :

हल्दी का कन्द चिकित्सा और मसाले के लिए उपयोगी है।

गुणधर्म :

हल्दी उष्णवीर्य होने से कफवात शामक पित्तरेचक और तिक्त होने से पित्तशामक है। हल्दी का लेप शोथहर, वेदनाशामक, कुष्ठघ्न, व्रणशोधक है। हल्दी वर्ण्य होने के कारण शादी के पहले भावी बर और वधू को पीठी के रूप में लगाई जाती है। इसका धूम्र हिक्का-निग्रहक, श्वासहर और विषघ्न है। यह उष्ण होने से दर्दनाशक और गर्भाशय शोधक है। तिक्त होने से यह रक्तप्रसादक, रक्तवर्धक, रक्तस्तम्भक, कफघ्न, स्तन्य शोधक एवं शुक्र शोधक है। यह रुचिवर्धक, अनुलोमक, पित्तरेचक, कृमिघ्न, मूत्र संग्रहणीय एवं मूत्र विरेचनीय है।

सामयिक प्रयोग :

(१) **प्रमेह :**— आज के युग में मीठा पेशाब, डायाबिटीज प्रमेह या मधुप्रमेह के नाम से व्यापक रूप में फैले हुए इस रोग में आयुर्वेद ने श्रेष्ठ औषध के रूप में हल्दी बताया है।

आँवले का रस और शहद के साथ हल्दी का चूर्ण खाने से प्रमेह मिटता है। इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि जो व्यक्ति प्रतिदिन प्रचुर मात्रा में हल्दी खाता है, उसे कदापि प्रमेह नहीं हो सकता। शायद इसीलिए हमारें पूर्वजों ने हल्दी का उपयोग मसाले के रूप में करने का प्रारम्भ किया होगा।

प्रमेह कफप्रधान व्याधि है। बीस प्रकार के प्रमेहों में दस कफ के, छः पित्त के और चार वात के प्रमेह हैं। हल्दी कफवात–शामक है। तिक्त और

कषाय होने से पित्त का भी नाश करती है। शोषक, ग्राही और पाचक है। इसीलिए सभी प्रकार के प्रमेहों में लाभदायक औषधि हैं। १०० मिलीग्राम हल्दी के रस में आवश्यक शहद मिलाकर लम्बे समय तक पथ्य पालन करते रहने से असाध्य प्रमेह भी मिट सकता है अथवा वह आगे बढ़ने नहीं पाता। प्रमेह अधिकतर कफ प्रकृतिवाले स्थूल और मेदसार व्यक्तियों को होने की संभावना काफी रहती है। जब कि हल्दी शोषक और अपकर्षण करनेवाली होने के कारण मेद और कफ को दूर करती है।

मेरे पिताजी मधुप्रमेह के रोगी हैं। हल्दी, मेथी आँवला और शहद को समान भाग में मिलाकर चूर्ण तैयार कर लेते हैं। १० ग्राम चूर्ण सुबह-शाम-दोपहर को पानी के साथ लेते हैं और अपना जीवन आराम से बिता रहे हैं। यह योग अनुभव करने योग्य है। हमारे 'सुधाबिन्दु' के पाठक इसे पढ़कर अवश्य लाभ उठाएँगे और इसकी सफलता की सूचना हमें अवश्य देंगे।

(२) **शीतपित्त :** जिसे आधुनिक विज्ञान में एलर्जी कहा जाता है। इसका मुख्य कारण अनुपयुक्त आहार-विहार हैं। हमारे सार्वजनिक चिकित्सालय में सुरेन्द्र-भाई शाह शीतपित्त लेकर आए थे। ये महाशय अहमदाबाद के अच्छे-अच्छे चर्मरोग विशेषज्ञ डांक्टरों से चिकित्सा करा चुके थे; परन्तु स्थायी लाभ नहीं हो पाया था। इसलिए निराश होकर आयुर्वेद की शरण में आए थे। इनके लक्षण इस प्रकार थे। चींटी या मधुमक्खी ने काटा हो ऐसे आकारवाले चकत्ते, खुजलीयुक्त सर्वांग दर्द,जीर्ण ज्वर, दाह के साथ सर्वांग शरीर में शोथ था। हमारा निदान शीतपित्त था। मैंने चिकित्सालय से त्रिफला, गुग्गुलु, दो-दो गोली दिन में तीन बार खाने के लिए दी। स्वर्णिकाक्षार पानी में मिलाकर लगानेके लिए दिया। हरिद्रा खण्ड श्री कृष्णगोपाल आयुर्वेद फार्मेसी का पाँच-पाँच ग्राम दिन में तीन बार शहद के साथ लेने के लिए बाजार से लिख दिया। पथ्यापथ्य का विस्तृत मार्गदर्शन देते हुए विदा किया। दुबारा जब एक सप्ताह के बाद सुरेन्द्रभाई पुनः चिकित्सालय में आए, तब उनकी निराशा आशा में बदल चुकी थी। इसलिए मैंने पुनः दो सप्ताह औषधि लेने को कहा। उनकी चार महीने की बीमारी केवल तीन सप्ताह में ठीक हो गई थी। वे छः महीने के बाद हमारी संस्था को अभिनन्दन देने के लिए आए थे और कहते थे कि मुझे यह नहीं मालूम था कि आयुर्वेदिक दवाएँ इतनी प्रभावशाली होती हैं।

(३) **सर्दी-दमा-खाँसी :–** मैं १९७४ में श्रीअखंडानंद आयुर्वेद महाविद्यालय में पढ़ता था। तब वैद्य श्री एम० एच० बारोट साहब के नेतृत्व में हल्दी पर संशोधन किया गया था। हल्दी के चूर्ण को घी में भूनकर २ से ४ ग्राम की मात्रा में दिन में तीन बार सर्दी, दमा, खाँसी के रोगियों को शहद के साथ दिया जाता था। उग्र रोग में मात्रा बढ़ा दी जाती थी। सभी रोगियों में अच्छा परिणाम देखने को मिला। सर्दी, दमा, खाँसी में हल्दी सर्वश्रेष्ठ औषध सिद्ध हुई।

वैद्य श्री शोभनजी ने अपने "नित्य निरोगी" नामकी पुस्तक में लिखा है कि सर्दी और श्वास में गोमूत्र भावित हल्दी का चूर्ण २ से ४ ग्राम की मात्रा में शहद के साथ चटाने से और हो सके तो उसमें काली मिर्च, लींडींपीपर या त्रिकतु चूर्ण मिलाकर शहद में लेने से चमत्कारिक फायदा होता है।

(४) **अर्श :–** बवासीर के मस्से सूज गए हों, तो घृतकुमारी के गर्भ पर हल्दी बिखेर कर या दोनों को मिलाकर, पीसकर, गुनगुना कर पुल्टिस जैसा बनाकर के बाँधा जाता है या लेप किया जाता हैं अथवा हल्दी को घी में घिसकर लेप करने से भी लाभ होता है।

हल्दी के चूर्ण में थूहर का दूध मिलाकर उसमें सूत का डोरा भिगोवें। उस डोरे को अर्श के मस्से पर ५ से ६ बार बाँध देने से मस्सा कट कर गिर जाता है।

(५) **सद्योव्रण तथा मूढ़मार :–** गिरने से, चोट लगने पर, मारने से या कट जाने आदि कारणों से एकाएक घाव हो जाता है और उसमें से रक्तस्राव होने लगता है, उसे रोकने के लिए हल्दी का बारीक चूर्ण दबाकर ऊपर से सख्त पट्टी बंधन करने से तुरन्त रक्तस्राव बन्द हो जाता है। मूढ़मार में हल्दी, मेथी और प्याज को पीसकर सरसों के तेल में

दर्द में काफी लेप करने से सूजन उतर जाती हैं और दर्द में काफी आराम होता है।

हल्दी के सुप्रसिद्ध योग :

(१) **मंजिष्ठादि क्वाथ :–** यह क्वाथ विभिन्न प्रकार के चर्म रोग, वातरक्त, अर्दित, उपदंश, श्लीपद, पक्षाघात, मेदोवृद्धि, नेत्ररोग आदि में उपयोगी है। २० से ४० मिलीलीटर मधु के साथ देना चाहिए।

(२) **रजन्यादि क्वाथः–** यह क्वाथ उल्टी, स्वेद, प्रलाप, शरीर का ठंडा हो जाना, मोह आलस्य, तृषा, खाँसी, दमा, जलन, भूख न लगना, हृदयशूल, पार्श्वशूल विष्टम्भ, कर्णशूल को शीघ्र नष्ट कर देता है। सन्निपात ज्वर की यह उत्तम औषधि है। इसे २० से ४० मिलीलीटर मधु के साथ देना चाहिए।

(३) हरिद्रा खण्ड :– इसके सेवन से खुजली शीतपित्त, विस्फोट, दाद, उदर्द और कोठ का नाश होकर शरीर तप्तकंचन के समान हो जाता हैं। इसे ५ से १० ग्राम तीन बार पानी के साथ लेना चाहिए।

(४) **दशांग लेप :–** इस लेप में थोड़ा घी मिला कर पानी के साथ घोटकर मोटा लेप करके ऊपर से रूई लगा देना चाहिए। इससे उग्र विस्फोटक, विसर्प, दाह, विषदोष शोथ, सर्वांग शोथ, व्रणशोथ, दुष्टव्रण आदि में अच्छा कार्य करता है। घी न मिल सके तो केवल पानी के साथ लेप करने से भी फायदा होता है। ज्वर में सिरदर्द के समय इसे सिर में लेप करने से सिरदर्द तथा ज्वर दोनों में फायदा होता है।

घर-घर में आहार के रूप में प्रयोग की जानेवाली हल्दी प्रमेह, पांडु, त्वचारोग, कुष्ठ, मेदोरोग, सर्दी, खाँसी एलर्जी, खुजली, घाव की सूजन, स्वरभेद, श्लीपद, प्रदर, आदि में प्रचुर मात्रा में प्रयोग करनी चाहिए। सब्जी में, दाल में, भात में, खिचड़ी में, रोटी में खाना चाहिए। कच्चा टुकड़ा के रूप में अचार में शरीर के बाहरी भाग में जहाँ आवश्यक हो, वहाँ स्नान में, लेप में, उद्वर्तन या मालिश में बिना संकोच के प्रयोग करना चाहिए। ●

वालाहनुमान आयुर्वेदिक महाविद्यालय **लोद्रा,**
ता.–बीजापुर, जिला–मेहसाना, (गुजरात)

● आत्म–विश्लेषण ●
(श्रेष्ठ चिन्तन का संकलक पाक्षिक)
संपादक : अशोक कुमार
सहसम्पादक–राजेन्द्र मानव
वार्षिक शुल्क १२ रु., : १ प्रति ६७ पैसे
३०९/७ चौधरियान स्ट्रीट, जींद १२६१०२

● रंगायन ●
लोकसंस्कृति तथा लोककला का हिन्दी मासिक पत्र। वार्षिक मूल्य ७ रुपये
सम्पादक : डा० महेन्द्र भानावत
लोककला मण्डल, उदयपुर

● विवेक विकास ●
[साहित्य–संस्कृति–कला का स्तरीय मासिक]
सम्पादक : **रामनिवास स्वामी**
वार्षिक शुल्क १२ रुपये
आजीवन सदस्य शुल्क २२१ रुपये
सम्पर्क : केसरगढ़, जवाहरलाल मार्ग, जयपुर-४

मरू–श्री
भाषा, साहित्य, इतिहास एवं साँस्कृतिक
शोध–त्रैमासिक
सम्पादक—गोविन्द अग्रवाल
वार्षिक मूल्य १५ रुपए
सम्पर्क–लोक-संस्कृति शोध संस्थान
नगर-श्री चुरू (राज०)

इलज़ाम

श्री विनोद खत्री

[प्रस्तुत कहानी में राजू के असत्य बोलने के कारण उसके सहपाठी सोहन को जमींदार द्वारा दण्डित और अपमानित होना पड़ा। फिर भी सोहन ने अपने मित्र राजू को संकट से बचाया। यह देखककर राजू ने अपने जमींदार पिता से सच्ची बात कह सुनाई। जमींदार ने सोहन का आदर किया और दोनों परम मित्र बन गए। सत्य का चमत्कार देखिए। ——सम्पादक]

राजू गाँव के जमींदार का बेटा था। छोटे राजू को गाँव के लोग प्यार करते थे और पाठशाला में मास्टरजी उसे कभी डाँटा-पीटा नहीं करते। इसकी एक ही वजह थी—वह जमींदार का सुपुत्र था और एक अमीर घराने में पैदा हुआ था।

जमींदार आलीशान हवेली में रहता था, जिसके चारों ओर सदाबहार फूलों से सजे बगीचे थे और उनमें एक खूबसूरत फुवारा था। नौकर-चाकर भी काफी थे और सारा दिन मेहमानों का आना-जाना लगा रहता था। सारे परिवार में इतनी खुशियाँ थीं मानो हर वसंत अपना सलाम पेश करके वहाँ से गुज़रती हो।

ऐसी शानदार हवेली में अनगिनत खुशियाँ पाकर राजू शरारती लड़का बन गया था। उसकी शरारत के किस्से तो जमींदार के कानों में पड़ते, पर वह अपने काम में इतना मशगूल रहता कि उसे अपने बेटे की हरकतें सुधारने का वक्त ही न मिलता।

राजू के कितने ही यार-दोस्त थे, सब उससे ज्यादा उसकी दौलत की इज्जत करते थे। उसका एक ही दुश्मन था—सोहन। सोहन जमींदार के बगीचे के माली गंगाराम का बेटा था—गरीब तो था ही परन्तु बड़ा ही होनहार और होशियार था। पढ़ाई-लिखाई में बहुत तेज था और अपनी कक्षा में सदा प्रथम आया करता था। उसकी इस सफलता को देखकर गाँव के लोग उसकी तारीफ करते और उसे सराहते। मास्टरजी भी सोहन की प्रशंसा करने में कोई कमी नहीं रखते थे। राजू से यह सहन न हो सका और वह हर वक्त सोहन को उसकी तारीफ करनेवालों की नजरों से नीचे गिराने के मौके की इन्तजार करने लगा। वह सोचता, "यह लड़का प्रथम आता है और सारा गाँव इसकी सराहना करता है। काश, सराहना करनेवालों की जीभ मेरी ओर मुड़ जाती।"

सोहन अपने पिता की मदद कर लेता था और सारा दिन जमींदार की सेवा तथा बगीचे को अधिक सुन्दर बनाने की कोशिश करता था। वह रात में लालटेन जलाकर अपनी पढ़ाई में मशगूल हो जाता था। सोहन जैसा होनहार बेटा पाकर भला कौन बाप खुश नहीं होगा—यही बात गंगाराम में थी, वह सोहन की कामयाबी पर खुश था और सदा उसकी हिम्मत बढ़ाता था।

एक शाम राजू के हठ करने पर सोहन उसके साथ हवेली में खेलने लगा। खेलते-खेलते राजू का हाथ एक गुलदस्ते से टकरा गया और अगले ही पल गुलदस्ता चूर-चूर हो गया। वह गुलदस्ता सचमुच बहुत कीमती था और जमींदार साहब उस गुलदस्ते को सम्हालकर रखते थे। किसी चीज़ के गिरने की

आवाज़ सुनकर जमींदार भागा-भागा आ पहुँचा। राजू और सोहन दोनों पुतलों की तरह अपनी जगह पर आश्चर्य-चकित खड़े थे। उनकी हालत ऐसी थी मानो काटो तो बदन में ख़ून नहीं। अपनी प्यारी चीज़ को बरबाद देखकर जमींदार आगबबूला हो गया। उसके गुस्से की कोई सीमा न रही। राजू काँप रहा था, पर बेगुनाह सोहन अवाक् था। "पिताजी . . . सोहन ने . . . सोहन ने तोड़ा है।" थरथराते होंठों से राजू ने वह झूठ कह दिया। अपनी औलाद होती तो भी जमींदार उसे माफ न करता और सोहन तो उसका नौकर था। गुस्से में आकर उसने सोहन के गाल पर कसकर दो-चार थप्पड लगा दिया।

सोहन से यह बेइज्जती सही न गई। वह उदास होकर अपनी झोंपड़ी में आकर बैठ गया। गंगाराम को हवेली में जमींदार ने बुलवा भेजा और सोहन की हरकतें और शरारतें पेश कीं। गंगाराम अपनी आँखों पर विश्वास न कर सका। फिर भी जमींदार की बात सच मानकर उसने सोहन को बुरी तरह पीटा और घर से निकाल दिया। सोहन ने कुछ भी नहीं कहा और चुपचाप गाँव के बाहर चल दिया। अनजाने ही जमींदार सोहन पर बरसा था और दोष था राजू का, पर उसने झूठा इलज़ाम लगाया सोहन पर। बेचारे सोहन की पिटाई की गई। वह बेवजह घर से निकाल दिया गया।

अगले दिन गाँव के बाहर राजू और उसके मित्र खेलने-कूदने आए थे। छुट्टी का दिन था। पिकनिक मनाने के ख्याल से राजू और उसके चार दोस्त वहाँ आए हुए थे। सोहन वहीं एक पेड़ पर सोया हुआ था। उसकी नज़र सोहन पर नहीं पड़ी थी।

सोहन के पेट में चूहे दौड़ रहे थे, वह परेशान हो गया था। कुछ ही क्षणों में खेल-ही-खेल में एक अजीब-सी घटना हो गई। सभी झगड़ने लगे और देखते ही देखते राजू की उसके दोस्तों के हाथों पिटाई शुरू हो गई। राजू बुरी तरह फँस गया था। राजू को मुश्किल में देखकर सोहन का ख़ून खौल उठा। वह पेड़ से उतरकर सीधे वहीं पर पहुँच गया और एक अच्छा खिलाड़ी होने के नाते अपने बल तथा कल से उसने राजू को उसके मित्रों के पंजों से छुड़ा लिया।

सोहन की दशा देखकर राजू को तरस आया अपनी करनी पर राजू शर्मिन्दा हो गया। सोहन को घर वापस ले आया और उसपर झूठ इलजाम लगाने के कारण होने वाली स्थिति के लिए माफी माँगी। सारी स्थिति साफ हो गई। प्यार से जमींदार ने सोहन को अपनी गोद में बिठाया और तरह-तरह के पकवान खिलाए। गंगाराम ने भी बड़ी खुशी से अपने बेटे को फिर से घर में स्थान दिया। अब राजू और सोहन गहरे मित्र हो गए हैं, राजू अब सोहन की तारीफ करता है। ●

२१, कृष्णकुंज सोसायटी
भैरवनाथ रोड
अहमदाबाद–३८००२२

● घर बैठे संगीत सीखिए ●

घर बैठे गायन, वादन और नृत्य सीखनेके लिए चौबीस रुपए भेजकर 'संगीत' मासिक पत्र का ग्राहक बन जाइए। इसमें संगीत के शिक्षात्मक लेखों के साथ-साथ शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत (भजन, गीत और गजल) फिल्म संगीत (नई फिल्मों के गाने) संगीत लिपि सहित, लोक–संगीत, सरल गेय काव्य संगीतकारों के सचित्र परिचय तथा भेंट–वार्ताएँ एवं काका हाथरसी के हास्य–व्यंग की कविता इत्यादि अत्यंत उपयोगी सामग्री प्रकाशित होती है।

संगीत सम्बन्धी हर प्रकार की पुस्तकोंके लिए मूल्य सूची मुफ्त मंगाएँ।

सम्पर्क 'संगीत' कार्यालय
हाथरस–२०४१०१ (उ० प्र०)

विचार-व्यवहार की शिक्षा-शती

(भा० ३)

●

श्री नयनचन्द बोरडिया
बी० ए०

[श्री बोरडियाजी बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी के सन् १९३१ ई० के ग्रेज्युएट हैं। आप एक कुशल व्यापारी और अध्ययनशील वृद्धयुवक हैं। आपकी चिन्तन-कणिकाओं की तीसरी किश्त पाठकों के लाभार्थ दी जा रही है। सम्पादक]

५५. जो हमें लाभ पहुँचाते हैं उन्हें हमें कभी न भूलना चाहिए, परन्तु हम जो दान देते है उसे हमें कभी न याद करना चाहिए।

५६. नसीहतें समय की बरबादी या गतियों को को नहीं रोकती हैं, लेकिन गलतियाँ ही अकसर सबसे उत्तम शिक्षक होती हैं।

५७. अपने पड़ोसी की विध्वंसात्मक टीका-टिप्पणी न करो। वह तुम्हारे जैसा भले न हो, परन्तु वह वैसा हो अच्छा है जैसे तुम हो। तुमने समझ का एकाधिकार नहीं ले रखा है।

५८. बुद्धिमान् बोलने के पहले विचारता है कि उसे क्या कहना है, परन्तु मूर्ख बोलने के बाद विचारता है कि उसने क्या कहा।

५९. सुधार करना लेकिन जबरन नहीं, राहबरी करना, परन्तु मजबूर नहीं करना; यह चातुर्य की जीत है और सफलता का रहस्य है।

६०. सही खर्च जीवन का आधा संग्राम है। धन कमाना उतना कठिन नहीं है, जितना कठिन सही खर्च करना है।

६१. यह मत भूलो कि गुणानुवाद उत्साहवर्धक है। लोग यह जानने को उत्सुक रहते हैं कि दुनिया उनके प्रयोग की कैसी कदर करती है।

६२. किसी व्यक्ति की योग्यता की परीक्षा केवल इसमें नहीं है कि वह क्या करता है, परन्तु यह भी है कि वह कहाँ तक अपने साथियों के सहयोग से करता है।

६३. यह बेहतर है कि आगे देखें और गलतियाँ करें बनिस्बत इसके कि पीछे देखें और कुछ न करें।

६४. जब उद्योग नष्ट होता है, तब उसका दोष प्रायः उसके उच्चपदाधिकारी पर होता है।

६५. जो व्यक्ति धन कमाता है, वह उसका बहुत कम संरक्षण कर पाता है।

६६. पहले से ही आगे देखो। अभी सब कुछ संभव है। बात यह है कि सावधान रहो।

६७. सब बातों से पहले मुकदमेबाजी से दूर रहो। मुकदमेबाजी तुम पर खरा असर डालती हैं, हव तुम्हारे स्वास्थ्य को बिगाड़ हैं और तुम्हारा धन वरबाद करती हैं। ●

श्री सेठ झाबरमलजी भोजनगरवाला

[सेठ झाबरमलजी अहमदाबाद के एक कुशल व्यापारी और समाज-सेवी हैं। उनका जीवन-दर्शन इस छोटे-से लेख में कराया गया है, जो पठनीय है। सं०]

श्री झाबरमलजी का जन्म वैसाख सुदी द्वादशी संवत् १९७१ वि० में राजस्थान के जयपुर जिलान्तर्गत नवलगढ़ के पास भोजनगर में हुआ। आपके पिताजी का नाम श्री ईश्वरदासजी और माताजी का नाम श्रीमती बरजी देवी था। आपकी प्रारंभिक पढ़ाई अपनी जन्मस्थली पर ही हुई।

आपके पिताजी के कपड़े का व्यवसाय कलकत्ते में था। गाँव में कुछ पढ़ाई करने के बाद आप भी कलकत्ते चले गए। वहाँ कुछ आगे की पढ़ाई की और अपने पिताजी के साथ व्यापार में लग गए। आपके परिश्रम से व्यापार में अच्छी उन्नति हुई।

श्री झाबरमलजी सन् १९४१ ई० में कलकत्ता छोड़ कर अहमदाबाद आ गए और यहाँ आपने कपड़े का थोक व्यापार आरंभ किया। आपने सुप्रसिद्ध कस्तुरभाई ग्रूप की कपड़े की एजेंसी ली। आपका व्यापार खूब चमका। व्यापार के उपरान्त आपने सूत बनाने की फैक्ट्री भी खोली।

सन् १९४६ ई० में इण्डियन मर्चेण्ट एसोसिएशन की स्थापना हुई और पाकिस्तान से आनेवाले विस्थापित बन्धुओं की सेवा की गई। उस समय आपको इस संस्था का अध्यक्ष बनाया गया। यह गौरवमय पद आज भी आप उसी तन्मयता से सम्हाल रहे हैं। आप मस्कती मार्केट, अहमदाबाद की कार्यकारिणी समिति के भी वर्षों तक सदस्य रहे हैं।

आपको विद्या और विद्वानों के प्रति आरंभ से ही बड़ा आदरभाव रहा है। अहमदाबाद में सन् १९५१ में हिन्दी शिक्षण-समिति की स्थापना हुई। उसके आप संस्थापक अध्यक्ष थे। इस समिति के द्वारा अहमदाबाद में हिन्दी माध्यम के हाईस्कूल की सर्वप्रथम स्थापना हुई। कई वर्ष तक आपकी अध्यक्षता में इस समिति द्वारा हिन्दी-शिक्षण तथा हिन्दी की उन्नतिके काम होते रहे। आज भी यह संस्था हिन्दी माध्यम के हाईस्कूल चला रही है। इसके विकास में आपने तन-मन-धन से जो सहयोग दिया है, वह सदैव स्मरणीय रहेगा।

राजस्थान सेवा समिति, अहमदाबाद की स्थापना सन् १९६१ ई० में हुई। समिति की स्थापना में श्री सेठ झाबरमलजी का सहयोग, श्रम और प्रोत्साहन प्रशंसनीय था। इसीलिए समिति के निर्माताओं ने श्री झाबरमलजी को संस्थापक-अध्यक्ष चुना। आपकी प्रेरणा और कुशल मार्गदर्शन से समिति ने आरंभ काल में ही अहमदाबाद निवासी राजस्थान और गुजरात की जनता में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बना लिया।

श्री झाबरमलजी एक उत्तम कोटि के व्यापारी हैं और आपका अपना एक व्यापारिक आदर्श है। आप अच्छा माल अच्छे मूल्य पर देना पसन्द करते हैं। इसे आप एक प्रकार की व्यापारिक सेवा मानते हैं। इसीलिए आपने अपने ग्राहकों की दुनिया में अच्छा आकर्षण जमा लिया है। आप कपड़े को अपना सेठ मानते हैं और उच्च नीतिमत्ता के कारण व्यापारी-शिरोमणि श्री सेठ कस्तुरभाई को सच्चा सेठ (श्रेष्ठ) मानते हैं।

हमने एक बार सेठ श्री झाबरमलजी से उनकी व्यापारिक सफलता का सच्चा रहस्य बताने की प्रार्थना की। आपने बताया कि व्यापारिक सफलता

का मूलमंत्र है लक्ष्य के प्रति दृढ़ता। किसी कार्य को हर पहलू से विचार और देख कर उसे हाथ में लेना चाहिए। ईश्वराराधन, यज्ञ-हवन, पाठ-पूजन और धार्मिक अनुष्ठानों से भी कार्य की संपन्नता में सहायता मिलती है।

आपने सन् १९७१ में 'ईश्वर भवन' नाम की एक धार्मिक और शैक्षणिक संस्था स्थापित की है। इस संस्था ने थोड़े समय में ही बड़ी सफलता प्राप्त की है। संस्था की लोकप्रियता में सेठ झाबरमलजी की तत्परता, अनुभवशीलता और संनिष्ठता से काफी बल मिला है। अभी-अभी तीन वर्ष पूर्व आपकी शुभ प्रेरणा से पूर्णानन्द आश्रम की स्थापना ईश्वर भवन के समीप ही की गई है। इसमें लाखों रुपए खर्च करके भव्य मन्दिर, उत्तम मूर्ति और विशाल सभागार की स्थापना की गई है। यह मन्दिर इस क्षेत्र के धार्मिक आकर्षण का केन्द्र है और इसमें प्रति दिन सन्ध्याकाल को भजन-कीर्तन, आरती-पूजन का कार्यक्रम नियमित रूप से चलता है। इस कार्यक्रम में आसपास की जनता बड़े ही मनोयोग से भाग लेती है। इस आश्रम के मुख्य ट्रस्टी भी झाबरमलजी हैं।

श्री झाबरमलजी को धार्मिक अनुष्ठानों में पूर्ण विश्वास है और कर्मकाण्ड के अच्छे ज्ञाता हैं। आपकी संकल्प-शक्ति बड़ी दृढ़ है, वाणी बड़ी बुलन्द है, बड़ी-बड़ी आँखें, दृढ़ निश्चय की साक्षी-सी प्रतीत होती है। इस समय आपकी उम्र छाछठ के पार जा रही है, फिर भी आप नित्यप्रति प्रातः ५-३० बजे शय्या-त्याग कर देते हैं। तदुपरान्त शौच, स्नान, ध्यान, पूजा-पाठ आदि में लग जाते हैं। नियत समय पर प्रतिदिन ईश्वर-भवन और पूर्णानन्द आश्रम में जाते हैं। वहाँ का काम देखते हैं और उचित मार्गदर्शन देते हैं। अपराहन का समय आप व्यापार-उद्योग में देते हैं। नियमितता ही आपके जीवन का सच्चा रहस्य है।

व्यापारी-समाज के इस मूर्धन्य और कर्तव्यनिष्ठ व्यापारी सज्जन श्री झबरमलजी के लिए हम स्वास्थ्य-पूर्ण दीर्घायुष्य की कामना करते हैं। ●

—एक समाजसेवी

● बड़े भाई ●

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ को आम खूब पसन्द थे, उन दिनों वे चीन में थे। बात उड़ती-उड़ती फिलीपाइन तक पहुँची और वहाँ से तार आया, "आपके लिए हम फिलीपाइनवासी आम भेज रहे हैं।"

आम आ गए। गुरुदेव बड़ी अभिलाषा से आम खाने बैठे। आमों में रेशे बहुत थे। उन्हें चाकू से काट कर खाना दुष्कर था। अतएव, गुरुदेव आमों की ढेरी के सामने करबद्ध नमस्कार करके बैठ गए। जब उनसे पूछा गया कि यह आप क्या कर रहे हैं? तब गुरुदेव बोले, "मैं इन्हें नमस्कार कर रहा हूँ। क्योंकि इनके रेशे मेरी दाढ़ी के बालों से भी लम्बे हैं। अतएव, ये आम नहीं, बल्कि मेरे बड़े भाई हैं।"

● प्रार्थना ●

○ अभाव से निवृत्ति बैंक-एकाउण्ट से नहीं होगी।

○ अभाव से निवृत्ति मोटर, बंगला या बाग-बगीचे से नहीं होगी।

○ अभाव से निवृत्ति सुन्दर स्त्री अथवा शोभावान बालकों से नहीं होगी।

○ अभाव से निवृत्ति पदार्थों की प्राप्ति अथवा अनुकूल परिस्थिति से भी नहीं होगी।

इन सबसे तो थोड़े क्षणोंके लिए अभावमुक्ति का अनुभव होता है।

अभाव की सच्ची निवृत्ति तो जीवन में भगवद्भाव आने पर ही होती है।

जीवन में भगवद्भाव आ जाने से जीवन की परिस्थिति चाहे कितनी ही जटिल हो, वस्तु की प्राप्ति भले ही कठिन हो, तो भी अभाव का अनुभव हमें खटकता नहीं है।

जीवन को अभाव के संकट से बचाने वाला भगवद्भाव एकमात्र प्रार्थना से ही मिलता है। इसलिए प्रार्थना से चिपके रहना चाहिए।

—पूज्य श्री वैरागी बाबा

कपड़ा प्रोसेसिंग उद्योग मे अहमदाबाद का महत्वपूर्ण योगदान

•

श्री अजीत सी. महेता

गुजरात राज्य के और खास तौर पर अहमदाबाद के वस्त्र (टैक्सटाइल) प्रोसेसिंग उद्योग की महत्ता के बारे में कुछ बताने के पहले यह उचित होगा कि अहमदाबाद के वस्त्रोद्योग के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी जाए। वस्त्रोद्योग की शुरूआत में इसमें केवल बुनाई विभाग का समावेश किया गया था, जिसमें गृह-उपयोगी एवं साधारण उपयोग में आने वाले कपड़े की बुनाई होती थी। उद्योग विकास के साथ-साथ इन बुनकरों ने 'मिश्र टेक्सटाइल मिल का रूप धारण कर लिया, जिसके अन्तर्गत 'स्पीनिंग,' वीविंग एवं 'प्रोसेसिंग' विभागों का समावेश किया गया। इतना ही नहीं आधुनिक समय में तो वस्त्रोद्योग नाम ही अशुद्ध बन गया है। कारण कि वस्त्रोद्योग अनेकार्थी कृत्रिम एवं अकृत्रिम रेशों का उपयोग करने वाला उद्योग बन चुका है। गुजरात और खास तौर पर अहमदाबाद में आज के पूर्ण विकसित वस्त्र-उद्योग की स्थापना और इसके जीवित रहने का श्रेय उन व्यापारिक साहसवीरों तथा दूरदर्शी उन औद्योगिक घरानों को दिया जाना चाहिए जिनसे स्थानिक ही नहीं पूरे देश के औद्योगिक विकास ने अपना निजी स्थान बना लिया है। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि देश की आर्थिक दशा सुधारने के लिए गुजरात राज्य ने इस उद्योग की नींव डालने का काम किया था और इस नींव डालने एवं इसे विकास के पथ पर ले चलने का काम केवल आजादी के बाद ही हुआ है ऐसा नहीं है, परन्तु महत्त्वपूर्ण योगदान की शुरूआत ब्रिटिश राज्य के समय से ही गाँधीजी जैसे संचालक की निगरानी में हो चुका था। कारण कि गाँधीजी के 'स्वदेशी आन्दोलन' की एक थपथपाहट ने इस उद्योग में देश के प्रति 'समर्पण' का एक भाव भर दिया था।

गुजरात का योगदान :

जहाँ तक वस्त्र-उद्योग में गुजरात राज्य के योगदान का सम्बन्ध है वहाँ पूरे भारत में फैले संगठित मिल उद्योग के दो लाख करघों (लूमों) में से ४८,००० करघे अहमदाबाद शहर-स्थिति मिलों में तथा १६,००० गुजरात के अन्य भागों में फैले इस उद्योग में आज भी कार्यरत हैं। दूसरे शब्दों में संगठित मिल-क्षेत्र में गुजरात की बुनाईशक्ति का योगदान एक तिहाई है। उत्पादन के हिसाब से भी इस क्षेत्र में गुजरात में उत्पादित कपड़े का स्थान पूरे देश के उत्पादन की तुलना में $\frac{१}{३}$ है। राज्य के कुल उत्पादन में ९० प्रतिशत का योगदान सिर्फ अहमदाबाद शहर का है।

जो बात सम्पूर्ण वस्त्र-उद्योग तथा गुजरात एवं खासतौर पर अहमदाबाद शहर के प्रमुख योगदान के बारे में सत्य है, वही बात कॉटन एवं कृत्रिम रेशों को प्रोसेसिंग करने से सम्बन्धित उद्योगके लिए सत्य है। प्रोसेसिंग उद्योग ने भी वस्त्रोद्योग के इस विकास में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

यहाँ इस बात को भारपूर्वक कहना होगा कि यह अद्भुत विकास जिसे संगठित वस्त्र-उद्योग ने अपनी नजरों से देखा है, इस कहानी का अंत नहीं है। विकेन्द्रित क्षेत्रों में करीब ५२० करोड़ मीटर कपड़ा उत्पादित किया जाता है और उस कपड़े को प्रोसेसिंग करने की क्रिया का भार भी उन स्वतंत्र

प्रोसेसिंग घरों पर पड़ता है जो कि बिजली अथवा हस्तचालित हैं।

वर्तमान समय में अहमदाबाद स्थित ८० प्रतिशत कपड़े के मिल मिश्र इकाइयाँ हैं, जहाँ 'बुनाई', 'कताई' और प्रोसेसिंग विभाग एक ही स्थान पर काम करते हैं। इन दिनों प्रोसेस्ड किये कपड़े की माँग इतनी तेजी से बढ़ रही है कि अहमदाबाद और गुजरात में स्थित कपड़े के मिल इस माँग को पूरा करने में असमर्थ हैं। उनकी असमर्थताके कारण निम्न हैं:–

शक्ति बढ़ाने पर प्रतिरोध:

तकनीकी विकास एवं तत्सम्बन्धी विशिष्ट जानकारी होना जरूरी होने के कारण प्रोसेसिंग उद्योग में काफी परिवर्तन हुए हैं। साथ ही मानवरचित एवं मिश्र रेशों को प्रोसेसिंग करने के काम से भी समस्याएँ ख़ड़ी हुई हैं।

टैक्स्टाइल प्रोसेसिंग उद्योग का विशिष्टीकरण होने की वजह से विद्युत-चालित अनेक प्रोसेसिंग घरों का अहमदाबाद-सूरत आदि स्थानों पर निर्माण हो चुका है। इनका निर्माण उन हस्तचालित प्रोसेसिंग उद्योग-गृहों के अलावा है जिनकी शुरूआत थोड़े ही वर्षों में खूब बड़े पैमाने पर हुई है। प्रोसेसिंग उद्योग के इस विकास ने धनी एवं गरीब दोनों प्रकार के ग्राहकों की प्रोसेस्ड कपड़े के लिए बढ़ती माँग को पूरा करने में अपना उचित योगदान दिया है।

वस्त्रोद्योग के प्रोसेसिंग एवं इससे संलग्न रंग-रसायन तथा साइजिंग उद्योगों ने अहमदाबाद एवं अन्य स्थानों पर लोगों को बड़े पैमाने पर रोजी देने में सहायता की है। अहमदाबाद शहर में निर्मित कपड़े को छोड़कर इस उद्योग के पास ३० प्रतिशत से ४० प्रतिशत तक प्रोसेसिंग हेतु आया हुआ कोरा कपड़ा अहमदाबाद के बाहर से आता है। अलबत्त इसकी कोई निश्चित संख्या नहीं बताई जा सकती, परन्तु ऊपरी तौर से यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि इस उद्योग ने क़रीब एक लाख से ज्यादा परिवारों को रोजी-रोटी का सहारा दे रखा है।

वस्त्रोद्योग द्वारा प्रतिवर्ष केन्द्रीय सरकार को ६५५ करोड़ रु. उत्पादन-कर के रूप में चुकाए जाते हैं। इसके अलावा वस्तुओं पर लगे ऑक्ट्रोय, सेलसटक्स आदि टैक्सों के माध्यम से भी काफी बड़ी राशि राज्य एवं केन्द्र सरकार को चुकाई जाती है। देश के आर्थिक विकास के लाभ का एक अंग बनने के लिए यह उद्योग राज्य, केन्द्र एवं स्थानिक स्वशासन संस्थाओं के साथ सहकार की भावना रखने का हामी रहा है। आज के समय को देख सहकार की इस भावना का होना अति आवश्यक है।

उदाहरण के तौर पर पूरे देश में और खास तौर पर पश्चिम विभाग में आज यह उद्योग इन्धन की कमी का सामना भयंकर रूप से करता आ रहा है। अहमदाबाद एवं अन्य स्थानों पर इस उद्योग की इकाइयाँ कोयले का उपयोग करती हैं। वैसे बिजली-शक्ति का अभाव सारे देश में फैला हुआ है, फिर भी सम्मिलित आवाजों में मेरी भी एक आवाज है कि यदि शासन के उच्चस्तरीय तौर पर इस समस्या को हल नहीं किया गया, तो इस उद्योग के बंद पड़ने के दिन नजदीक हैं।

एक बात और:

वस्त्रोद्योगके लिए निर्मित पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत संगठित और विकेन्द्रित उद्योग के पालन हेतु कुछ नियम बने हैं। "आंन थांट प्रोसेस" योजना के अंतर्गत इस उद्योगके विकाश हेतु कोई लक्ष्य निश्चित किया गया है ऐसा मैं नहीं सोचता। इसलिए इस विषय में राज्य और केन्द्र सरकार की सत्ताओं से मेरा नम्र निवेदन है कि उसे एक योग्य आयोग की रचना कर राष्ट्रीय तौर पर एक नीति निश्चित करनी चाहिए, जिसके अन्तर्गत यह उद्योग अपना संपूर्ण उत्साह दिखा कर लाखों लोगों को योग्य दाम पर अच्छे कपड़े द्वारा उनका तन ढँक सके। अगर सरकार पावरलूम क्षेत्र की ओर विशिष्ट ध्यान देकर कोई सुदृढ़ योजना बनाती है तो भविष्य में अधिक से अधिक लोगोंके लिए रोजी-रोटी के लिए दरवाजे खोले जा सकते हैं। इस सन्दर्भ में यहाँ यह बता देना उचित

रहेगा कि अप्रैल १९७९ में उस समय के मंत्री ने लोकसभा में पूछे गए एक प्रश्न के उत्तर में बताया था कि केन्द्रीय सरकार ने "एस्टीमेट कमेटी" की सूचनाओं को स्वीकार कर लिया है। इसके अन्तर्गत पावरलूम उद्योग के विषय में विस्तार से अभ्यास किया जाएगा तथा कमेटी की अन्य बातों को अन्तिम-रूप दिया जा रहा है।"

हमारी आशा यही है कि वर्तमान सरकार को एक दृढ़ योजना के साथ अग्रसर होना चाहिए जो कि वस्त्र-उद्योग को सुसंगठित बनाए तथा पावरलूम और हेन्डलूम उद्योग को उनका योग्य स्थान दें। वह प्रोसेसिंग उद्योग का विकास कर सके, जिसमें लोगों को अधिक रोजी देने की क्षमता है। वस्त्र-प्रोसेसिंग उद्योग ने गुजरात में रंग-रसायन उद्योग को बढ़ाने एवं स्थानिक लोगों को रोजी देने में खूब मदद की है।

प्रत्येक प्रोसेस गृह के पास अपनी दक्ष टुकड़ी जो कि सारे देश से आने वाली ग्राहको की मांग को पूरा करने में संलग्न हैं।

विकास मार्ग :

"गुजरात स्मॉल इन्डस्ट्रीज कोर्पोरेशन लि०"ने दूसरे राज्यों की प्रतियोगिता में रहकर वीवरों (बुनकरों) को आर्थिक एवं अन्य सुविधाएँ देकर एक सराहनीय काम किया है। इससे उद्योग की ये इकाइयाँ आर्थिक दृष्टि से विकासशील और सुदृढ़ बन सकी हैं। यह कहना ठीक रहेगा कि उपर्युक्त कोर्पोरेशन का क्षेत्र बढ़ाकर प्रोसेसिंग उद्योग को न मिलने वाली चीजें की उपलब्ध बचाने का प्रयत्न किया जा सकता है। इस उद्योग में बड़े पैमाने पर उपयोग में आनेवाले साधनों का उत्पादन सार्वजनिक संगठनों द्वारा किया जाता है, परन्तु इन साधनों को बाँटने का काम इस कोर्पोरेशन के हाथ में नहीं है। अगर कोर्पोरेशन प्रोसेसिंग उद्योग को सस्ते दामों पर उसकी माँग को योग्य समय सुलभ बना सकता, है यह निश्चित है कि राज्य सरकार की उदार, सहकारपूर्ण एवं योग्य नीतियाँ ही इस उद्योग के सम्पूर्ण विकास का मार्ग खोल सकती हैं। ●

● ज्योतिष मार्तण्ड (मासिक) पत्रिका ●

"ज्योतिषमार्तण्ड" पत्रिका एक मासिक प्रकाशन है, जो कि १९६९ से प्रकाशित हो रहा है। इसका वार्षिक शुल्क २५.५० रु० है। छै रंगों का टाइटिल कवर और ७० पन्नों की इस पत्रिका में ज्योतिषशास्त्र, अंकशास्त्र, सामुद्रिकशास्त्र, रमल-शास्त्र, स्वर-शास्त्र आदि के अतिरिक्त तन्त्र-मन्त्र, यन्त्र, पुनर्जन्म प्रेतात्मा आदि अन्य कई गूढ़ विषयों पर सैद्धान्तिक ज्योतिषीय आधार लेकर भारत के विद्वानों के खोजपूर्ण उच्चकोटि के गवेषणात्मक लेख सरल हिन्दी भाषा में प्रकाशित होते हैं। इसके साथ ही महापुरुषों की जन्मकुण्डलियाँ एवं उनका फलित ज्योतिष पाठ, प्रश्न-उत्तर, सूक्ष्म पञ्चांग, मासिक भविष्यफल, व्यापारिक भविष्य आदि अनेक स्तम्भो के कारण यह पत्रिका अलौकिक तत्त्वों और दुर्लभ साहित्य से भरपूर है।

आशा है, इस पत्रिका को पढ़कर आप अवश्य आनन्दित होंगे। निःशुल्क पत्रिका भेजने में वर्तमान कठिनाइयों के कारण हम असमर्थ हैं। आप इस पत्रिका के वार्षिक ग्राहक बनकर प्रचार-प्रसार में सहयोग दें।

व्यवस्थापिका "ज्योतिषमार्तण्ड"
डी १९, गणेश मार्ग, बापूनगर
जयपुर-३०२००४ (राज०)

Give
Ambiprincess Dress Materials
the total test ... Check the fabric
Check the finish
Check the design
Check the quality
Check the price
Check the name
Shri Ambica Mills
Bidhan-AG42B

हमारे पास हैं लुभावने कपड़े
आपके पास है आकर्षक व्यक्तित्व
जी हाँ, कपड़े की इतनी किस्में कि
हर व्यक्ति अपना मनपसन्द कपड़ा चुन सके,
सबके लिए खास तौर से आपके लिए

जियाजी

टेरीन, सूटिंग–शर्टिङ्ग, कॉटन–शर्टिङ्ग प्रिन्ट्स

निर्माता :

जियाजीराव काटन मिल्स लि०

बिरलानगर, ग्वालियर (म० प्र०)

सेन्चुरी की नई देन

कोजीकॉट

कॉटन शर्टिंग

सुन्दर सुहावने चेक्स में उपलब्ध है ।

पहनने में ऊनी कपड़े–सा आनन्द मिलता है ।

निर्माता

दि सेन्चुरी स्पिनिंग एण्ड मैन्युफेक्चरिंग कंपनी लिमिटेड

'सेन्चुरी भवन', डॉ. एनी बेज़ण्ट रोड,
वरली, बम्बई–४०००२५

मेसर्स विनोद कुमार अग्रवाल

पट्टा, लेडीज, एवं जेन्ट्स कलर पोपलीन, चैक शर्टिंग, पोपलीन प्रिन्ट,
पोलीस्टर प्लेन तथा प्रिंटिंग एवं पोलीनोजिक प्रिन्ट के थोक व्यापारी

33 A, मस्कती मार्केट

अहमदाबाद ३८०००२

T. No. 382310, 384735

श्री भगवती ट्रेडिंग कम्पनी

न्यू स्वदेशी मिलकी प्रिन्ट फेयरलेडी तथा
पोपलीन, राजरत्न, रंगीन शाम के विक्रेता
अन्य प्रतिष्ठान
श्री जय अम्बे ट्रेडिंग कम्पनी
श्री जगदम्बा ट्रेडिंग कम्पनी

168, न्यू क्लाथ मार्केट
अहमदाबाद–२
टे. नं. 362546

WE MANUFACTURE
A.A.C. AND A.C.S.R. CONDUCTORS

AND

ALUMINIUM WIRES

FOR YOUR REQUIREMENT IN ANY SIZE AND QUANTITY

PLEASE CONTACT

**PREM CONDUCTORS
PRIVATE LIMITED**

Registered Office
211, New Cloth Market
Ahmedabad-380002
Phone : 360551/367730

Administrative Office & Works
Station Road,
Vatava (Ahmedabad) 382440
Phone : 877283/877281

With best compliments from

Messers Zenith Distributors

Wholeseller

CAPRIHANS INDIA LIMITED

ROHA. DIST. KOLABA

Head Offine : 46, Bajaj Bhavan 4th Floor,
Nariman Point, Bombay-400021.
Phone : 234022 & 230370.
Gram : FASHFAB
Telex : 011-4209 IPTC IN

Ahmedabad : Dau Manzil, 2381, Relief Road.
Ahmedabad-380001.
Phone : 383195 & 383756
Gram : PAPERDEAL,

Baroda : 'Shreej Krupa, Opp Mahavir Colony.
Rajmahal Road, Baroda-390001.
Phone : 54567.
Gram : GLAZEBOARD.

Jaipur : Jayanti Market, M. I. Road, Jaipur.

Madras : Ahad Mansion, 74, Mount Road,
British Council, Madrass-600002.
Distributors for Rajsthan

Hyderabad Asbestos Cement Products Ltd.

HYDERABAD-500018.

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

Gram : Good Faith

Phone : 366283
Resi : 444229

PRAYAGRAJ VINODKUMAR

Cloth Marchant & Commission Agents

187, New Cloth Market, Ahmedabad-380002

Gram : PARAMSUKHI
Telex - 012-552-Gupta-in-

Phone Offi. : 382138
Resi. : 441348

Selling Agents for Kerala :
The Mahendra Mills Ltd.
The Bharat Vijay Mills Ltd., Kalol.
The Maheshwari Mills Ltd., Ahmedabad.

With Best Compliment From :-

K. G. AND COMPANY

Cloth Merchants & Commission Agents.
H.A. Market, Kapasia Bazar,
AHMEDABAD-380 002

Branch :
80, NEHRUNAGAR, TRICHUR-680 006

Gram : PARAMSUKHI
Phone : 20258

Shri Ambica Flour Milling Corporation

(The B.B.S Roller Mills Compound)

चांदतारा सुपरफाइन मैदा, सोजी, आटा व स्पे० भूसे के उत्पादक

Outside Prem Darwaja,
AHMEDABAD-380 002.

A.M.PROCESSORS

A. M. Processors
3, Embassy Market,
Near Dinesh Hall,
Ashram Road,
Ahmedabad-380 009.
Phone : Off. 49616 Fact. 54843

Dream of wonder Land Comes True, when you see The Matchless Matchings in Galore Artistic Designs with Glowing procion Screen prints By A. M. Processors

Piramal Fabrics

Piramal Mills

Piramal Fabrics

Maheshwari Mills

Manufacturers of Cotton & Polyester Suitings, Shirtings & Dress Materials.

RADEUS/PH/

New Gujarat Cotton Mills Ltd.
AHMEDABAD-2

INSIST ON
"New Gujarat Fabrics"
For Home & Export

For 100% of Polyester, Printing. Shirting.
80/20 Filament Shirting. Fancy Wash
and Wear Poplins of Latest Fashions

Regd. Office :
18 A. Brabourne
Road,
Calcutta

Mill No. 1
Naroda Road
Ahmedabad-380002
Phone : 372266
372317
374526
Telegram : NEW
GUJRAT

Mill No. 2
Out side Dariapur Gate,
Ahmedabad-380016
Phone : 383493
380389

Telex : AM 311

ALWAYS INSIST ON
QUALITY FABRICS
OF

न्यू स्वदेशी

NEW SWADESHI
MILLS OF
AHMEDABAD LIMITED.

NARODA ROAD, Ahmedabad-380002

MANJUSHRI TEXTILES

मंजुश्री

Manufacturers of Quality textiles
Cotton as well as Synthetic
Shirtings, Suitings, Dress Materials
Bedsheeting etc.

Fhone : **67271/2/3**
Gram : MANJUSHRI
Telex : NEWSWA 222

Phone : **872121**
Gram : Newswadeshi'
Telex : 222

सुधाबिन्दु

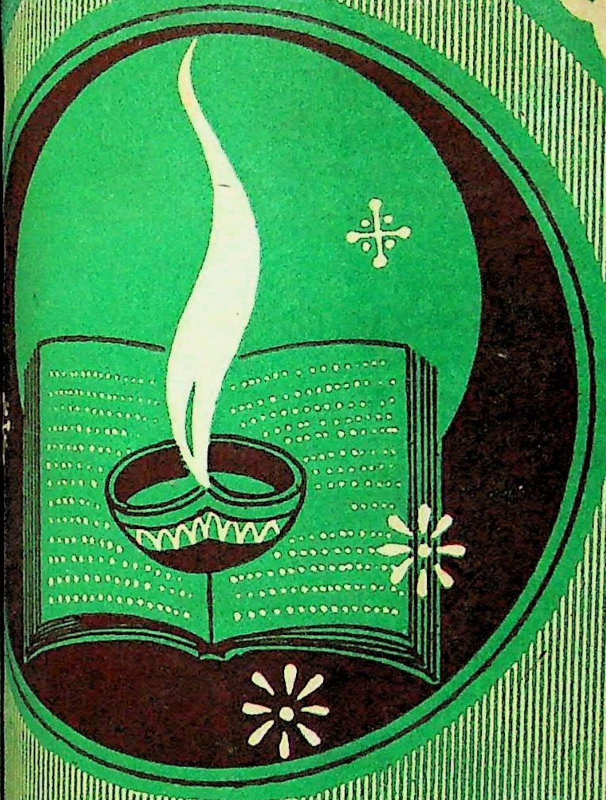

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी

वर्ष : २० अंक : ८
अगस्त १९८०
वार्षिक शुल्क : १५ रुपए
आजीवन ग्राहक : १५० रुपए
एक अंक : १-५० रुपए

राजस्थान सेवा समिति · अहमदाबाद

INSIST ON

ASARWA FABRICS

100% Polyester Prints in Eye-catching Designs :
Loveable shades and
Lovely Matchings for
Fashionable Fabrics

AND

Feel the Difference, Warmth
And the Feeling of g new Life

Registered User Of Trade Mark

"EVA PRESHRUNK & SUNFULGENT"

Choose From ASARWA
Exciting Varieties of Polyester/Cotton
Blended Shirting, Suiting, Sarees.
And Dress Materials.

ASARWA MILLS

(Prop Bengal Tea & Industries Ltd.)

Asarwa Road AHMEDABAD-380016
Regd. Office : Brabourne Road, CALCUTTA-700001
Tl. Phone : 67301-2 Gram : MILLASARWA Telex: 012476

सुधाबिन्दु

सम्पादक

डा० राजनाथ पाण्डेय
एम० ए० (संस्कृत, हिन्दी, पालि) पी-एच० डी०
व्याकरणाचार्य "लब्धस्वर्णपदक"

रामअवधेश त्रिपाठी
साहित्यरत्न

संयोजक

गिरधारीलाल सराफ

एम० कॉम०, एल-एल० बी०, रा० रत्न

लेखकों से निवेदन

अ) हमें कैसे लेख-कविता-कहानी आदि चाहिए:-

१) जो मानव में जीवन के प्रति आस्था जगाकर जीवन को सुन्दरतर बनाए और जो जीवन जीने की कला सिखाए ।

२) जो मानव-मानव में अपनत्व बढ़ाए, जो करुणा जगाए और जो परसेवा सिखाए ।

३) जो मानव को आत्माभिमुख करके प्रकृति-परायण बनाए ।

४) जो हमारे भारत राष्ट्र की, विशेषतः राजस्थान की गरिमा को उजागर करे ।

५) जो हमारी विभिन्न प्रजाओं, जातियों एवं व्यवस्थाओं के उत्कृष्ट गुणों का विवेचन करे ।

६) जो प्राचीन-अर्वाचीन ज्ञान-विज्ञान का संतुलित विवेचन करे ।

७) जो मानव को श्रेष्ठ मानव बननेके लिए प्रेरित करे ।

आ) रचनाएँ कागज के एक ओर लिखकर भेजें ।

अप्रकाशित और अप्रसारित रचनाएँ ही भेजें ।

निर्विवादास्पद विषयों पर लिखी हुई रचनाएँ ही भेजें

रचना अस्वीकृत होने पर वापस मँगानेके लिए टिकट लगा लिफाफा भेजें ।

तीन-चार फुलस्केप में लिखी रचनाएँ ही भेजें तो बड़ी अनुकूलता होगी ।

अपना परिचय तथा योग्यता-विवरण भी भेजें ।

पत्राचार : रामअवधेश त्रिपाठी
उत्तर भारतीय कोलोनी नागरबेल के पास
अमराईवाड़ी, अहमदाबाद-२३

राजस्थान सेवा समिति, अहमदाबाद का

मासिक मुखपत्र

वर्ष : २० अगस्त
अंक : ८ १९८०

वार्षिक शुल्क : १० रुपए

आजीवन ग्राहक : १५० रुपए

एक अंक का मूल्य : १.५० रुपए

*

'सुधाबिन्दु' में विज्ञापन की दरें निम्नांकित हैं :

स्थान	वार्षिक
कवर पृष्ठ नं.-४	३,०००
,, ,, नं.-२ और ३	२,५००
रंगीन पूरा पृष्ठ	२,०००
,, आधा ,,	१,००९
साधा० पूरा पृष्ठ	१,५००
,, आधा ,,	७५०

व्यवस्थापक 'सुधाबिन्दु'
राजस्थान सेवा समिति, शाहीबाग मार्ग अहमदाबाद-४

राजस्थान सेवा समिति, शाहीबाग मार्ग, अहमदाबाद ४ के लिए श्री रामावतार शर्मा (सचिव) ने प्रकाशित किया एवं श्री रामानन्द प्रिंटिंग प्रेस कांकरिया रोड, अहमदाबाद २२ ने मुद्रित किया ।

अनुक्रमणिका

(गुजरात यूनिवर्सिटी द्वारा शोधपत्रिका के रूप में मान्य)

तथा

[राजस्थान सरकार के माध्यमिक, उच्चतरमाध्यमिक विद्यालयों तथा पुस्तकालयोंके लिए'सुधाबिन्दु' मान्य है।]

अगस्त , १९८०

१	सत्यं शिवं सुन्दरम्		सम्पादकीय	५
२	स्वाधीनता दिवस	(कविता)	श्री राजकुमार जैन	६
३	संस्कृति और जीवन	(विचार-परक)	प्रा० भूपतिराम साकरिया	७
४	मराठी लोकगीतों में वर्षा-वैभव	(वर्णन-परक)	श्रीमती मालती शर्मा	९
५	सबसे सरल और सबसे कठिन	(व्यवहार-परक)	आचार्य रामचरण महेन्द्र	१३
६	महिमा सात की		श्री सरोज शर्मा	१५
७	हमारी राष्ट्रीयता	(सामयिक)	श्री राकेश सारस्वत	१९
८	शुक्रिया	(सत्य कथा)	श्री राजेन्द्र जैन	२३
९	डूंगजी जवारजी	(लोक कथा)	डा० रूपचन्द पारीक	२५
१०	टैक्सटाइल मैनचेस्टर : पाली	(उद्योग-परक)	अर्जुन सिंह् शेखावत	२७
११	कहकहे	(व्यंग्य-विनोद		२९
१२	सुख-दुःख	(कविता)	सुश्री सावित्री डागा	३०
१३	व्यापार--व्यवहार की शिक्षा-शती	(व्यवहार-परक)	श्री नयनचन्द बोरडिया	३१
१४	आँवला	(स्वास्थ्य-परक)	अनुभवी	३२
१५	क्या आप पच्चीस सौ रुपयों से अधिक का भुगतान नकद कर रहे हैं ?	(कराधान-परक)	श्री रमेश मोदी	३३
१६	महँगाई	(कविता)	काका बैसवारी	३६
१७	प्रार्थना की आवश्यकता		वैरागी बाबा	३७
१८	समिति-समाचार			३८
१९	विज्ञापन			

आजीवन ग्राहक बनिए

'सुधाबिन्दु' एक साहित्यिक और सांस्कृतिक मासिकपत्रिका है। इसका ग्राहक बनना गौरव की बात समझी जाती है। ग्राहक--शुल्क १५ रु० वार्षिक है और वह भी महँगाई के साथ बढ़ता रहता है। इस परेशानी को दूर करनेके लिए केवल १५० रु. डिपोजिट भरकर आजीवन ग्राहक बनना अधिक सुविधाजनक है। अब तक इस योजना का लाभ अनेक ग्राहक ले चुके हैं।

कृपया, आप भी १५० रुपए भेजकर शीघ्र इस योजना से लाभ उठाइए।

व्यवस्थापक 'सुधाबिन्दु'
राजस्थान सेवा समिति, शाहीबाग मार्ग, अहमदाबाद—४

प्रार्थना

इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे ।
पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वाद्मानं वाचः सुदिनत्वमह्नाम् ॥

ऋग्वेद २-२१-६

[हे ऐश्वर्यशाली भगवन् ! हमें श्रेष्ठ ऐश्वर्य दीजिए, कार्य करने की सामर्थ्य का ज्ञान दीजिए, सब प्रकार का सौभाग्य दीजिए, धनों से होनेवाली पुष्टि दीजिए, शरीरों का आरोग्य दीजिए, वाणी का मिठास दीजिए और दिनों का सुदिनत्व दीजिए अर्थात् हमारे दिनों को सुदिन बनाइए ।]

समिति के दो प्रकाशन-पुष्प

१. आधुनिक राजस्थानी साहित्य : लेखक—प्रा. **भूपतिराम साकरिया**

डेमी साइज, पक्का जिल्द, कलात्मक आवरण-पृष्ठ, सुन्दर छपाई वाली इस पुस्तक की प्रशंसा बड़े-बड़े विद्वानों ने की है । पुस्तकालयों तथा पुस्तक-प्रेमियोंके लिए विशेष उपयोगी है । मूल्य—केवल ६ रुपए

२. बातां बखत बखत की : लेखक—**श्री महावीरप्रसाद हलवाई**

डेमी साइज, पक्की जिल्द, उत्कृष्ट छपाई तथा मोहक आवरण-पृष्ठ । यह पुस्तक राजस्थानी भाषा में लिखी गई मौलिक और जीवनोपयोगी कविताओं का एक सुन्दर संग्रह है, जिसके प्रत्येक दूहे अँगूठी के नगीने हैं । मूल्य-केवल ६ रुपए

इस पुस्तक पर सम्मति देते हुए आचार्य बदरीप्रसाद साकरिया ने लिखा है, "सुन्दर और सुबोध नीति के दोहे अपने ढंग की यह एक कृति है । कवि का प्रयास वास्तव में सराहनीय हैं । राजस्थानी भाषा के माध्यम से कवि और कृति साहित्य-गगन में प्रकाशमान हों, ऐसी अपेक्षा-अभिलाषा है ।"

प्राप्तिस्थान · राजस्थान सेवा समिति, शाहीबाग मार्ग, अहमदाबाद-४

आवश्यक निवेदन

नगर की विषम परिस्थिति के कारण जुलाई, १९८० का 'सुधाबिन्दु' हमें सितम्बर, १९८० के अन्तिम सप्ताह में भेजने के लिए विवश होना पड़ा है । कृपया, उसके लिए पत्र-व्यवहार न करें और थोड़ी प्रतीक्षा करें ।

व्यवस्थापक 'सुधाबिन्दु' राजस्थान सेवा समिति, शाहीबाग, अहमदाबाद- ४

देश-विदेश की पत्रिकाओं के तथा "सुधाबिन्दु" के विश्वस्त एजेण्ट

श्री सौरभ पुस्तक भण्डार

केलिको डोम के सामने, रिलीफ रोड, अहमदाबाद ३८०००१

पाठकों के पत्र

'सुधाबिन्दु' का वार्षिकाङ्क 'संस्कृति–विशेषाङ्क' प्राप्त हुआ। देख–पढ़ कर परम प्रसन्नता हुई। आप कितने मनोयोग, निष्ठा एवं उत्साह के साथ इस गुरुतर कार्य में जुटे हैं, आज के युग में उसे देखकर बहुत आश्चर्ययुक्त हर्ष होता है। आपका काम कितना दुष्कर है, इसका मुझे कुछ–कुछ अनुमान है। मुझे खेद है कि बहुत चाहने पर भी आपके विशेषांक के लिए कुछ न भेज पाया। अब नियमित रूप से कुछ न कुछ ऐसी चीज भेजता रहूँगा जो आपको पसन्द हो।

लक्ष्मणस्वरूप त्रिपाठी
पुलिस लाइन के पास, जोधपुर ३४२०२१ (राज०)

⁂

आपका सुधाबिन्दु (संस्कृति विशेषांक) पढ़ा। अंक लेखन, सम्पादन, संकलन, प्रकाशन आदि सभी दृष्टियों से अत्यन्त सराहनीय है। आजकल इस स्तर के साहित्य का सर्वथा अभाव है। आपने इस अंक को तैयार करने में कितना श्रम किया है वह प्रत्यक्ष एवं अभिनन्दन पात्र है। अंक में भारतीय संस्कृति के विविध पहलुओं पर अनेक विद्वानों के विचार एवं कवियों की वाणी मुखरित हो उठी है। संकलन का कार्य आज के युग में कितना कठिन है, फिर भी आपके अथक प्रयत्नों से संभव हो सका है।

आशा है, आप इसी तरह भारतीय संस्कृति एवं साहित्य को समृद्ध बनाने हेतु अपना प्रयत्न निरंतर जारी रखेंगे और ज्ञान–पिपासुओं एवं साहित्य–रसिकोंके लिए ज्ञान–गंगा का प्रवाह प्रवाहित करते रहेंगे। परम कृपालु परमात्मा आपको इस सद्कार्यके लिए शक्ति दे।

आद्या प्रसाद त्रिवेदी
अन्धजन उच्चतर माध्यमिकशाला, अहमदाबाद २७

⁂

'सुधाबिन्दु' संस्कृति विशेषांक : उल्लेखनीय विशेषांक--प्रकाशन पर हार्दिक बधाई। संस्कृति का व्यापक परिवेश सहज और आकर्षक रूप में मुखरित हुआ है। विधाओं की विविधता के साथ उनकी सशक्त अभिव्यक्ति सममुच शपाघनीय है और इन सबका समवेत संयोजन–सम्पादन करने के लिए आप साधुवाद के पात्र हैं।

जगदीशचन्द्र शर्मा
पो० गिलूंड उदयपुर (राज०)

⁂

"सुधाबिन्दु" का बिशेषांक मिला। इतनी कठिनाइयों के बावजूद भी आपने जिस ढंग से प्रकाशित, सम्पादित किया उसके लिए दाद देनी पड़ेगी। बधाई स्वीकार करें।

बाबूलाल श्रीमयंक
श्रीमयंक साहित्य-सदन जीरन (म० प्र०)

⁂

'सुधाबिन्दु' का वार्षिक अंक 'संस्कृति अंक' प्राप्त हुआ। अंक की सामग्री एवं साज–सज्जा सराहनीय है।

लेखों के वैविध्य से संस्कृति के सभी पक्ष उभरे हैं। भारतीय संस्कृति के सभी अंगों पर प्रभूत सामग्री प्रस्तुत की गई हैं। संस्कृति के सामान्यरूप पर भी काफी लेख हैं। वस्तुतः, संस्कृति के विषय में इतना सुरुचिपूर्ण एवं विस्तृत अंक इधर देखने में नहीं आया है।

इस स्तुत्य प्रयासके लिए आप एवं आपके सहयोगी सभी अभिनन्दन के पात्र हैं।

आचार्य रघुनाथ भट्ट
गोस्वामी आर्ट्स कालेज देहगाम (गुजरात)

⁂

सुधाबिन्दु

वर्ष : २० अगस्त, १९८० अंक : ८

सम्पादकीय

सत्यं, शिवं, सुन्दरम्

ब्रह्माण्ड की रचना दो मुख्य तत्त्वों से हुई है। एक तत्त्व सूक्ष्म है और दूसरा स्थूल। सूक्ष्म तत्त्व अदृष्ट और स्थूल तत्त्व दृष्ट है। दोनों का सन्तुलन इस ब्रह्माण्ड को उचित दिशा में गति देता है, उचित गन्तव्य की ओर ले जाता है। सूक्ष्म तत्त्व के दो सात्विक गुण हैं, जिन्हें सत्य और शिव कहते हैं। कुछ लोग सत्य को ईश्वर और ईश्वर को सत्य स्वरूप मानते हैं। सत्य में सत् या सतोगुणों का समावेश हो जाता है। सतोगुणों में सृष्टि के पोषक तत्त्व सद्भाव, सेवा, प्रेम और समन्वय का समावेश होता है। सेवा मीठा मेवा है, सद्‌भाव भवसागर तरने की नाव है, प्रेम सुत्र है, जो दो बिछुड़ तत्त्वों को समीप लाकर उचित दिशा में मोड़ता है। सत्य किसी वस्तु, विचार, भाव, कार्य का वह रूप है, जो अन्दर-बाहर से एक है, स्वयं प्रकाश्य है। इसीलिए गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है-

"सत्य मूल सब सुकृत सुहाए। वेद पुराण उपनिषद गाए।"

शिव इस जीव का भव्य और मनोहर तत्त्व है। इससे परोपकार, परोन्नति और पर कल्याण की भावना का बोध होता है। इसीलिए भगवान् शंकर ने हँसते-हँसते हलाहल विष पी लिया था और सुरों को बचा लिया था। जब शिव-तत्त्व की वृद्धि होती है, तब सृष्टि में शांति और सौमनस्य का शीतल मन्द-सुगन्ध पवन चलने लगता है और मुरझाई हुई हृदय-कलिका विहँसने-खिलने लगती है। उस समय विश्वपुरुष स्वस्थ और सानन्द बनता है। हिंसा-द्वेष की जहरीली हवा से बचने-बचाने की एक मात्र औषधि शिव ही है। युद्ध और घृणा, शोषण और परपीड़न, ध्वंस और संहार से बचने के लिए मनुष्य को शिव की आराधना करनी पड़ेगी।

सत्य और शिव ये दोनों मन की आन्तरिक प्रकृति हैं। ये मन-मन्दिर की मनोहर मूर्ति है। ये प्रेरक और प्राणद हैं। इनका प्रभाव डायनेमा के समान है; जो ऊर्जा पैदा करता है। स्थूल से संबन्धित सुन्दर तत्त्व सृष्टि की व्यापक छटा से सम्बन्ध रखता है। सुन्दर तत्त्व के कारण हमें सृष्टि के घृणा-भाव, अरोचकत्व और उपेक्षा भाव से मुक्ति मिलती है,। वह ऐसा गुण है, जो व्यक्ति, समाज देश और विश्व को जीने की कला सिखाता है, आनन्द का मन्त्र देता है। साहित्य और कला इसी की देन है। किसी ने कहा है — "सुन्दर है विहग सुमन सुन्दर, मानव ! तुम सबसे सुन्दरतम"

आज विश्व की विघातक शक्तियों ने इसे अजगर की तरह अपने में लपेट लिया है और लपेटती चली जा रही है। मानव-मन को मननशील बनकर इन तीनों महान् तत्त्वों का सत्य, शिव और सुन्दर का दीपक जलाकर अन्तर और बाह्य को प्रकाशित करना है, मन का मैल धोना है और नूतन विश्व के नवनिर्माण का स्वप्न साकार करना है।

* * *

स्वाधीनता दिवस

श्री राजकुमार जैन 'राजन'

एक गीत ने मुझे जगाया बड़े सवेरे,
और दूसरे ने रातों की लोरी गाई ।
मेरी धरती के पागल गीतों की धुन में,
आजादी की डोली मेरे द्वारे आई !

गीतकार ने कहा कि इसके पांव पखारो,
और लेखनी ने वीणा पर स्वागत गाया ।
होंठ हिले तो मन्त्र बरसने लगे धरा पर,
छलक पड़ा जब आँखों में सुख नहीं समाया ।

रावी के तट ने जिसकी आरती उतारी
और खून से देश-प्रेम ने तिलक लगाया ।
सूरज ने वरदान दिये लाखों हाथों से,
मौन दिशाओं ने जिसके स्वर को दुहराया ।

और आदमी ने सोचा कब फूल खिलेंगे,
महँकेगी जब धरती बगिया में कुरबानी ।
दीप जला दीवाली, होली रंग उड़ा-कर,
कोन-कोने में भर देगी नई जवानी ।

किन्तु आदमी राह देखता रहा आज तक
आजादी तो आई लेकिन प्यार न आया ।
जिन मुस्कानों से जीवन का रूप निखरता,
कोशिश करके भी लोगों ने उन्हें न पाया ।

सोच रहा हूँ मेरा देश कि जिसका गौरव,
सदा हिमालय से बातें करता आया है ।
आज कफन ओढे सोया है मजबूरी का
और स्वार्थ के बादल को है इसपर छाया ।

हिन्द देश के रहने वालो ! तुम्हे कहूँ क्या,
आज करोड़ों कण्ठों से है तुम्हें बधाई ।
अधिकारों-कर्तव्यों में तुम प्राण फूंक दो
आजादी की कर दो, सुख के साथ सगाई ।

आकोला—३१२२०५-
जिला-चित्तौड़गढ़ (राज.)

नम्रता

नम्रता मनुष्य का एक ऐसा गुण है; जो उसे 'महापुरुष' की श्रेणी में ला खड़ा करता है । नम्रता का मेरुदण्ड है, अटूट आत्मविश्वास और सत्यनिष्ठा । जो व्यक्ति किसी भी परिस्थिति में अपने दैनिक आचार-व्यवहार में नम्रता का साथ नहीं छोड़ता, वही सच्चा संत है ।

एक बार गाँधीजी और श्रीमती ऐनीबेसेण्ट के मध्य राजनीतिक विचारधारा को लेकर गंभीर मतभेद पैदा हो गए । परिणाम स्वरूप श्रीमती बेसेण्ट ने व्यापक रूप में गाँधीजी की कटु आलोचना की । आज की परिस्थिति में कोई दूसरा व्यक्ति होता, तो श्रीमती बेसेण्ट को प्रमुख प्रतिद्वन्द्वी एवं विपरीत विचारधारा का मानकर अपने मन में उसके प्रति कभी न मिटनेवाली कटुता पैदा कर लेता; लेकिन बावजूद इसके गाँधीजी का व्यवहार उनके प्रति सदैव आदर का रहा । उन्होंने अपनी वाणी से अथवा लेखनी से उनके विरुद्ध कभी कुछ नहीं कहा ।

उन्हीं दिनों बेलगांव में गाँधीजी की अध्यक्षता में कांग्रेस की सभा हो रही थी । उस सभा में श्रीमती बेसेण्ट भी भाग ले रही थीं । जैसे ही उन्होंने सभा में प्रवेश किया, गाँधीजी को नजर उनपर पड़ी । वे तुरन्त मंच से नीचे उतर आए और स्नेहपूर्वक उनका हाथ पकड़कर उन्हें मंच पर ले गए और आदरपूर्वक अपने पास बिठाया ।

गाँधीजी की इसी महान् नम्रता ने केवल श्रीमती बेसेण्ट ही नहीं, उस वक्त के अनेकानेक पुरुषों, महापुरुषों के हृदय में अपना अमिट स्थान बना लिया था ।

— आनन्द विल्थरे
—बालाघाट (म० प्र०)

विचार-परक

संस्कृति और जीवन

लेखक

श्री भूपतिराम साकरिया

एम० ए०, साहित्यरत्न

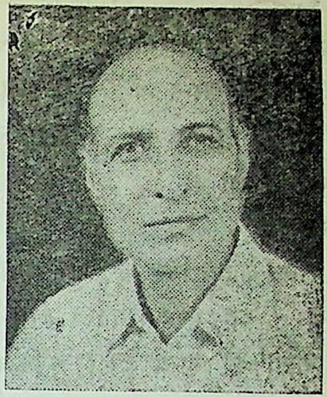

[श्री साकरिया जी नलिनी कालेज वल्लभविद्यानगर के प्राचार्य हैं। आपने कई पुस्तकें भी लिखी हैं और भाषा-साहित्य पर पर्याप्त चिन्तन करते हैं।

प्रस्तुत लेख में जीवन और संस्कृति को एक सिक्के के दो पहलू के समान बताया गया है और जीवन को उन्नत तथा महान् बनाने में संस्कृति को मुख्य बताया गया है। लेख पठनीय और चिन्तनीय है। — सम्पादक]

जाने-अनजाने आजकल लोग संस्कृति के स्थान पर सभ्यता और सभ्यता के स्थान पर संस्कृति का प्रयोग निःसंकोच कर बैठते हैं। अतएव, इसके पूर्व कि हम संस्कृति और जीवन के पारस्परिक प्रगाढ़ संबंधों पर सविस्तर विचार करें, हमें सभ्यता और संस्कृति के अंतर को भलीभाँति समझ लेना चाहिए।

सभ्यता बाह्य वस्तु है और उसका अनुकरण हो सकता है, इसके विपरीत संस्कृति आंतरिक वस्तु है और उसका अनुकरण असंभव है। सभ्यता भौतिक है और संस्कृति आध्यात्मिक। सभ्यता शरीर है, तो संस्कृति आत्मा। रेल, तार, मोटर, वायुयान आदि सभ्यता के विकास के द्योतक हैं, तो सच्चाई-झुठाई, संयम-असंयम सन्तोष और असंतोष मनुष्य की उच्च संस्कृति के परिचायक हैं जबकि झूठ; असंयम और असन्तोष आदि उसकी निम्न संस्कृति के प्रतीक हैं।

सभ्यता और संस्कृति :

गुलाब के पुष्प का आकार, उसका वर्ण और उसका सौंदर्य उसकी सभ्यता है, पर उसके भीतर जो भीनी सुवास है, वही संस्कृति है। इस विवेचन से यह स्पष्ट है कि सभ्यता से संस्कृति का स्थान कहीं अधिक उच्च है। जीवन में दोनों की आवश्यकता है, परंतु दोनों में से किसी एक के चयन का प्रश्न हो तो संस्कृति का चयन ही श्रेयस्कर है। वैसे समग्र संसार की संस्कृतियाँ तत्त्वतः एक ही हैं, पर प्रत्येक देश के आचार-विचार की भिन्नताओं के कारण उनकी संस्कृतियाँ भी भिन्न-भिन्न हो गईं।

संस्कृति शब्द संस्कृत भाषा के 'संस्कृ' धातु में 'क्तिन' प्रत्यय लगने से बना है। इसका शाब्दिक अर्थ 'अच्छी स्थिति' अथवा 'सुधरी हुई स्थिति' होता है, परन्तु इसका भावार्थ निश्चय ही अधिक व्यापक है। सुधरी हुई स्थिति का अर्थ है जिसमें परिष्कार अथवा परिमार्जन किया हो। संस्कारों में परिष्करण की प्रकृति से ही संस्कृति का जन्म है।

संस्कृति का उद्भव जातीय जीवन के किसी ऐसे सशक्त विचार से होता है, जो उस जाति की समूची विकास-गाथा का केन्द्रबिन्दु होता है, जिस जाति या समाज के पास ऐसे केन्द्रबिन्दु का अभाव होता है, वह जाति या समाज निर्बल होता है, काल के थपेड़ों को सह सकने में अक्षम होता है और उसका विनाश भी स्वाभाविक गति से होता रहता है। मिस्र, रोम, यूनान और बेबीलोन की संस्कृतियाँ आईं और कराल काल के मुख में समा गईं। क्योंकि उनके पास जीवन जीने का ऐसा सशक्त आधार नहीं था। आज मात्र उनके अवशेष रहे हैं, जो मानो यह कह रहे

हैं कि कभी हम भी गौरवमय रहे हैं–'खण्डहर बता रहे हैं कि इमारत बुलन्द थी' और सच ही तो है कि इनकी इमारत ही बुलन्द थी. इनके भीतर रहने वाला जीवन उच्च न था ।

आत्म-तत्त्व :

ऊपर जिस केंद्रीय बिंदु की बात हमने की है आखिर वह है क्या ? यह है आत्मतत्त्व और उसका विकास प्रकृति की सत्ता को अन्य देशों के विचारकों के समान भारतीय ऋषियों ने भी स्वीकार किया है, पर आत्मा की सत्ता के बहुत नीचे के स्तर पर । भारतीय संस्कृति यह मानती है कि परमतत्त्व के सम्मुख प्रकृति-तत्त्व तुच्छ है । इसी प्रकार जीवात्म तत्त्व के सम्मुख शरीर तत्त्व भी तुच्छ है । इसी आधार या केन्द्रीय बिन्दु के कारण भारतीय संस्कृति अनेक विपदाओं के बीच अडिग रही और आज एक बार जब पुनः पश्चिमी संस्कृति का तूफानी आक्रमण हो रहा है, न केवल उसे अपनी रक्षा करना है, परन्तु जीवन के समुचित विकास के लिए नेतृत्व भी करना है ।

जीवन का समुचित विकास क्या है ? इसे समझने के पूर्व हमें आदिम मानव के समग्र क्रिया-कलापों को समझना पड़ेगा । मानव-जीवन एक अनबूझ पहेली है । इसकी उत्पत्ति और उत्पत्ति का प्रदेश आदि कुछ ऐसे प्रश्न हैं, जिनपर न तो इतिहासकार ही और न नृवंश-विशेषज्ञ ही एक मत हैं । फिर भी मानव-जीवन के सम्बन्ध में एक बात तो निश्चित है कि मनुष्य में कुछ निसर्ग-सिद्ध संस्कार हैं । जैसे आत्मरक्षा, समुदाय में रहना, समुदाय को नियंत्रित करनेके लिए नियमादि बनाना और प्रेम-भावना । इस दृष्टि से सामाजिक जीवन का आधार पारिवारिक जीवन और पारिवारिक जीवन का मूल दाम्पत्य-जीवन में निहित है । पुनः दाम्पत्य जीवन का आधार प्रणय और पारस्परिक समझौते में निहित है ।

पारिवारिक जीवन के अतिरिक्त हमारे सामाजिक जीवन के मूलाधार तीन प्रसिद्ध ऋण हैं-पितृ, ऋषि, और देव ऋण । यद्यपि इन ऋणों का इन दिनों ह्रास हो रहा है, फिर भी यह सुनिश्चित है कि ये ही ऋण भविष्य में हमारे उत्थान में सहायक रहेंगे । हमारी संस्कृति के दो अन्य अधार हैं (१) आश्रम-व्यवस्था और वर्ग-चतुष्टय ।

जीवन में जिन तीन ऋणों का बन्धन था, उनसे मुक्त होना हर मनुष्य का कर्त्तव्य समझा जाता था । पितृ-ऋण का संबंध परिवार से है । आवश्यक संतानोत्पत्ति द्वारा ऋण से मुक्त हुआ जा सकता है । कैसी सन्तान ? जो अपने उत्तरदायित्वों और कर्त्तव्य से पूर्णतया परिचित हो । ऋषि-ऋण केवल स्वाध्याय द्वारा ही चुकाया जा सकता है और देव-ऋण यज्ञादि द्वारा चुकाया जा सकता हैं । निसर्ग-शक्तियाँ ही देव कहलाती हैं ।

आश्रम व्यवस्था (ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम और संन्यासाश्राम भी हमारी संस्कृति का एक अपरिहार्य अंग था, पर बढ़ती हुई औद्योगिकता और जनसंख्या तथा नगरीय जीवन के कारण इनका पालन नहीं हो सकता, फिर भी ब्रह्मचर्य के पालन में तो दो मत हो ही नहीं सकते ।

स्थायी मूल्य :

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष-वर्ग चतुटय को पुरुषार्थ भी कहा जाता है । इन्हीं पुरुषार्थों की सिद्धि के लिए उपर्युक्त चार आश्रमों की स्थापना की गई थी । पुरुषार्थ में जीवन की सफलताके लिए आवश्यक प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों का समावेश रहता है । प्रत्येक मनुष्यके लिए आवश्यक है कि एक ओर वह जहाँ सांसारिक वैभव एवं ऐश्वर्यादि प्राप्त करे, तो दूसरी ओर इससे उच्च आदर्श की पूर्तिके लिए भी समुचित ध्यान दे । वह आदर्श है जीवात्मा को जन्म-मरण के बन्धन से छुटकारा दिलाना । हमारे पूर्वजों ने इसी आदर्श की सिद्धिके लिए धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, कामशास्त्र और ब्रह्मविद्या का विकास किया था । इसके पीछे आशय यही रहा था कि मनुष्य अपने जीवन में दोनों का समन्वय कर श्रेष्ठ जीवन बिता सके ।

युग-परिवर्तन के साथ-साथ जीवन-मूल्यों में परिवर्तन आया है । पर स्थायी मूल्य सदैव अपरिवर्तनीय हैं । ये ही स्थायी मूल्य संस्कृति हैं । जीवन को श्रेष्ठता की ओर ले जाने में इसका योगदान अमूल्य है ।

'साकरिया-सदन'
वल्लभविद्यानगर (गुजरात)

वर्णन-परक

मराठी लोकगीतों में वर्षा-वैभव

श्रीमती मालती शर्मा
बी० ए०, साहित्यरत्न

लेखिका

* * *

[श्रीमती शर्मा एक अनुभवी लेखिका और कवयित्री हैं । खूब लिखती हैं और पत्र-पत्रिकाओं का गौरव बढ़ाती हैं ।

वर्षाऋतु का आकर्षण अपने ढंग का निराला है । घटा को देख योगिजन भी जटा पटकने लगते हैं, जन-जीवन एक विशेष ताजगी और शीतलता का अनुभव करता है । महाराष्ट्र के जीवन को वर्षा किस प्रकार मस्त बना देती है, उसका परिचय प्रस्तुत लेख में प्राप्त कीजिए और अपने प्रदेश के आनन्द से तुलना कीजिए ।

—सम्पादक]

"ये बाप्पा ये पाऊसा ये..."

ऋतुओं में जीवन-संजीवनी ऋतु है वर्षा । बादल, बिजली, वर्षा, पुरवा जैसे लोक-संस्कृति के अमर निर्झर सोते हैं । इनसे छन्द भी झरते हैं, गीत भी फूटते हैं और धरती अन्न, धन से शृंगारित भी होती है । मराठी लोकगीतों में वर्षा का अनूठा-अछूता रूप वैभव है । ये लोकगीत गागर में सागर जैसे "ओवी" छन्द में गुँथे हैं । इनमें विदर्भ, खानदेश और कोंकण का निजी अंचलीय गंध है, एक रूप-रङ्ग और स्वर हैं । वर्षा की आतुर प्रतीक्षा में पाऊस बापा को करुणा भरे निमन्त्रण-आवाहन, खेत-खलिहानों की वर्षाकाल की कर्ममयी हलचलें, आँधी-पानी, बादलों भरे दिनों में हँसती-थिरकती प्रकृति पावसीय पर्व उत्सवों की धूम और वर्षा सम्बन्धी अनोखी कल्पनाएँ सभी कुछ शामिल है ! ऐसा लगता है, जैसे ये गीत वर्षा के धूपछांही रंगों से सजा मीलों तक फैला दृश्य फलक ही है जो बरबस आँखों को बाँध लेता है ।

पावस की फुहारें :

लोकगीतो में प्रकृति पारिवारिक जीवन का हो कहीं वृहद् और कहीं लघु संस्करण है मराठी लोकगीतों में पाऊस गया है । अर्थात् पिता जो कौटुम्बिक जीवन के साधनो का आधार है खेती-बाड़ी देखता है अन्न-धन करता है । यही पावस तो धरती बाई का पति है । पति जो सुख सौभाग्य, संतति, भंडार सभी कुछ होता है । धरती का सर्वस्व वर्षा है उससे पति छोड़कर और कौन सा रिश्ता हो सकता है । महाराष्ट्र के किसानोके लिए वर्षाऋतु मेघराज पिता और धरती माँ के विवाह की मङ्गलमय बेला है । इसी बेला में उनके जीवन की नींव पड़ती है । घर की देहरी बँधती है, मेघ-गर्जन के डफ बज उठते हैं, वर्षा की बौछार पावस बाप्पा के हरियाले स्नेह की फुहारें मोती-मूँगों की बखेर के सदृश्य बरस उठती हैं :–

देवा मेघाजी ने सूर्या समोरे१ डेर दिला
पाऊस पावणा दारी२ आला
मेघरायां चं लगीन३ ढगांचा४ बाजे डफ
आ ला नवरी५ झप झप
पाऊस पडला पडला, नका करूँसा गलबला६
धरनी बाई चं पति आला
पाऊसा पडला पडला मोत्या पवळ्यांचा७ धारा
सुगी८ आलीया बग भरा
पडूंदे पाऊस बाई पिकूँ दे उसमळा९
बाजूबन्द मी लोन ये ळा१०

कृषकों की विपुलपुकारें "ये बाप्पा ये पाऊसा ये"

मगर कब आती है यह विवाह की मंगल-वेला जब धरणीबाई सुरंगा धानी आँचल ओढ़ दुलहन बनती है-सारी सृष्टि के तरने पर तृषित हो पुकारने पर पर। जब बैसाख-जेठ की चिलकती धूप में चिड़ियाँ पानी-पानी कर उठती है, पक्षी-पखेरू, तृण-अंकुर जल उठते हैं, महाराष्ट्र का किसान सारी धरती की हाल-बेहाल स्थिति देख मेघराज से प्रार्थना करता है, "अब क्या शेष बचा है ? ताल का पानी सूख गया, कमल मुरझा गए, गाय-बछड़े, नन्हें पंखेरू सभी तो तड़प रहे हैं। अब तो अपनी शीतल फुहारें ले आओ:-

ये बाप्पा ये पाऊसा ये।
तुझ्या चरणाची पूंजा मांड्र११ दे
भूई१२ तापली माती सुकली१३
तर्या१४च्या तरी कमल सुकला
नदीचा झारा१५ आटून१६ गेला
गाईचं वासरू१७ लई तानेल१८
मिरगाची१९ सावली२० नाचत ये बूंदे

घर-खेतों में वर्षा-मंगल :

इन्द्रदेव से विनती खाली नहीं गई। घटाएँ घिरीं, गरजते मेघों के नगाड़े बज उठे और फिर झिरमिर-झिरमिर वर्षा होने लगी। जैसे मोती बिखर रहे हों, अमृत की धाराएँ गिर रही हों। घर, खेत, आँगन तुलसी, वृन्दावन, सभी भीग रहे हैं, जीवनदायिनी बौछार से कण-कण में स्फूर्ति और चैतन्य लौट आया है। वर्षा की फुहारों में भीग गर्भस्थ शिशु भी किलक रहा है। कितनी अनूठी कल्पना है:-

पाऊस पडला पडयिलाग
ढग आस्मानी फुटला२१
पाऊस पडतो झिरी मिरोग
पावसाची सर२२ आली घरावर२३
भिजलं मांह२४ देवघर
पावसाची सर बिन्द्रावनावर
अम्नितांची धार देहावर
पावसाचीसर पड़े कंठावर
हासे पोटचा गरभार

मृगनक्षत्र की आड़ी तिरछी-झकोरों-बौछारों वाली पहली वर्षा क्या हुई जैसे किसान के घर उमङ्ग-उल्लास का ज्वार आ गया। मोती जैसी बूँदों से वर्षभर के साज-सामान, गहने-कपड़े की आशाएँ उगने लगीं धरती बो-आई के लायक हो गई, तो बहन भाई से, पत्नी पति से बीजों से प्रकृति की गोद भरने को कहती हैं। उनके हृदय किसान वेष में सजे, हाथ में धान बोने की कुरी लिए, बैलों की पीठ पर चाबुक मारते बंधू और राजा को देख किसी बाग-से हरिया उठते हैं :-

पाऊस पडनी पडयिनीग झाली जमीन वजगदार
२६सांगा सजना राजसाला सख्या कुणव्यां वटीभर
बळवाचा२७ पाऊस फळी२८ धरूनी उठयिला
ताईता२९ बन्धुराजा बाळ कुणाव्याचा३० नटयीला
बळवाचा३१ पावसानं फळो३२ मांडली मैलावरी
ताईता बन्धुराजा टाकी ३४चाबुक बैलावरी

ससुराल में बोआई शुरू हुई तो सासुरवासिनी को मायके का ख्याल आया।" अरे मेघो ! बरसों, मेरे पीहर के गाँव जाकर बरसो "पड़ पड़ रे पाउसा मांझ माहे घरुन" फिर जैसे कोई दिव्य दृष्टि मिल गई हो। वह देखती है कि मृगनक्षत्र की वर्षा में उसका भाई उड़द बो रहा है:-

शेतीला१ गेली२ कुरो३ बी४ न्हेल्यां उडीदाचं
आता५ माझा बन्धुराया पेरे पेरी तो मीरगाचं

---

१ सामने २ द्वार पर ३ विवाह ४ बादल गर्जना के ५ दुल्हन ६ शोरगुल ७ मूँगों की धाराएँ ८ खेती ९ ईख १० बाँह का आभूषण ११ सजाने दो १२ धरती १३ सूख गई १४ तालाब १५ स्रोत ऊँट गया सूख गया १७ बछड़ा १८ प्यासे हैं १९ मृग नक्षत्र की वर्षा २० छाया

२१आसमान बादलों से ढंक गया है २२. बौछार २३. धरती पर २४. मेरा पेटका ८ गर्म २५ कहा २५ सजकर २५ किसान के वेश में २६ गोद भर दें २७ झकोरों वाली वर्षा २८ फलक २९ बहन का ३० सज गया है ३१ झकोरोंवावा ३२ फलक ३३ मीलों तक ३४ मारता है।

वर्षाऋतु ही ऐसी है कि हरी–भरी प्रकृति और वर्षा की फुहारों में नहा मानव–हृदय के रागात्मक सम्बन्ध सहज ही उद्दीप्त हो उठते हैं। मोर पपीहे की कुहुक प्रिया को प्रियतम की याद में विकल बना देती है, बहन भाई से मिलने को व्याकुल हो उठती है। इन्हीं दिनों आते हैं नागपञ्चमी, मङ्गला गौर और रक्षा-बन्धन जैसे त्यौहार। महाराष्ट्र में नागपञ्चमी की बड़ी धूम रहती है। इस त्यौहार पर लड़कियों का मायके आना अनिवार्य है। बैलपोळा होते ही बहनें भाई की बाट जोहने लगती हैं। पहाड़ के दूसरी ओर बसे भाई को पुकार उठती हैं, वर्षा में उमड़ी नदी देख उनके हृदय भाई की याद में भर–भर आते हैं :–

किती हाँक मारू बन्धु डोंगरा वरून५
मिरगाचे पाणी नद्या६ चाल्या भरून
भड़क लाल लाल नदीला आला पूर७
बन्धूची आठवान८ भरून ये तो उर

वर्षा में उमड़ते प्यार के नाते–रिश्तों का यह साम्राज्य मनुष्यों पर ही खत्म नहीं हो जाता, इसकी सरहदों में तो सावन–भादों और बिजली भी भाई–बहन है। सावन छोटा भाई है और भादों बड़ा, बिजली है दोनों की लाड़ली बहन। विदर्भ के एक लम्बे कथागीत में इस मधुर कल्पना के साथ सावनी आकाश में तड़पती बिजली में मेघराज से युद्ध का रूपक है। बिजली बहन जब धरती पर गिरकर मर जाती हैं, तब सावन–भादों हिचक–हिचक कर रोते हैं, तब चाँद–तारे उनके आँसू पोंछते हैं। वर्षा–समाप्ति का यहाँ कितना व्यंजनामय संकेत है।

हस्त नक्षत्र लगते ही जोरदार वर्षा शुरू हो जाती है। इस नक्षत्र में महाराष्ट्र की कन्याएँ और सौभाग्य-वती भोंडला उत्सव मनाती हैं। "भोंडा' ज्वार के दानों को कहते हैं। भोंडला के गीतों में दूध जैसी धाराओं के सिंचन से बालों में घने दाने भरने वाले "दुनियाँ के राजा" हस्त नक्षत्र की वर्षा के प्रति कृतज्ञता भाव है :

भोंडला और वर्षा भरे दिन :

"हस्तहा दिनीय१चाराजा, तयार्शा२नमस्कार माझ्या३
धाराया दुधाच्या दिसतोत्यानेग४ पिकें५ ही पोसती

यह वर्षा कभी–कभी हफ्तों थमने का नाम नहीं लेती। सारा काम–काज ठप्प पड़ जाता है। लोकमानस बड़ी उलझन महसूस करता है। घर से बाहर आना–जाना दूभर, धूप के दर्शन नहीं, सूरज–चाँद लापता। जो जहाँ है, वहीं फिर गया भीग गया। विदर्भ के निम्न गीत में ऐसे ही बादल–वर्षा भरे दिन का हृदयग्राही चित्र है, जिसमें पहाड़ियों के कभी इधर कभी उधर के गाँवों में समय–समय पर होने वाली वर्षा को गाँव-गाँव घूमते किसी फेरी वाले के रूप में सादृश्यित कर सुन्दर रूप में अभिव्यक्त किया गया है :—

पान्यान् पावसानं६ धंदाक नाहीं झाला
प्रितीची श्यामी७ माहा वावरांतच८ राहयला
नंदीले आलापूर सूर्य९ बसला डोंगीत१०
चाँद लपे डोंगराचा माझ्या गावच्चर कुशींत११
पान्यान् पावसानं कवलावर१२ बाहे गंगा
मात्याच्या शिरवान हासे तुलसी वृंदावन
पान्यान् पावसानं चव१३ दिशा झाला धुंद
पावस फेरी वाला गांवो गांवी हिंडे१४ भारी
माझ्या श्यामी चा वाहणा१५झाल्याकवल्या१६दावो

उमड़ी चन्द्रभागा :

मगर बाढ़ की चर्चा के बिना महाराष्ट्र के वर्षा–वैभव का यह चित्र अधूरा रहेगा। मराठी लोकगीतों में बाढ़ से उफनती कृष्णा, कोयना, भीमा और चन्द्रभागा के तटीय परिवेश से रंगे–सुरंगे एवं रोमांचपूर्ण बाढ़ के दृश्य हैं–आश्रय की खोज में गुहार के पुकार के गेयात्मक और हृदयस्पर्शी। चन्द्रभागा की बाढ़ का एक दृश्य देखिए :–

---

१ खेत में २ गई ३ धान बोने का यंत्र ४ बीज ५ अब ६ पहाड पर से ७ नदी बाढ़ ८ याद में

(१) दुनियाँ का (२) उसे (३) मेरा (४) उसमे (५) कृषि (६) बादल वर्षा में (७) मेरा प्यारा श्याम (८) खेतों में (९) सूर्य (१०) नाव (११) चाँद गाँव के बगल की पहाड़ी के पीछे छिप गया है। (१२) खपरैलों पर (१३) चारों (१४) घूमता है (१५) (१६) द्वार पर भीग गये।

'भड़ली चन्द्रभागा पाणी लागलं लिम्बाला
सावका पांडुरंग अभा गरुड़ खम्भाला

० ० ० ०

भरलो चन्द्रभागा पानी शिरलं गांवांत
पांडुरंग ये धावत

भरली चन्द्रभागा नाव झालीया नवरी
शेला गोताचा आवरी
भरली चन्द्रभागा भरली दुही थड़ी
उतार दे ग भाई दूर देशी जाण हाई"

भारी तेज वर्षा से चन्द्रभागा उमड़ पड़ी। पानी नीम से लग गया है और गाँव में घुस आया है। हे पांडुरंग! दौड़ो-दौड़ो। तेज थपेड़ों में पड़ी नाव तट से अपने नाते-गोते तोड़ लहरों का शाल ओढ़ दुल्हन बन गई है। दोनों पाट दबा उमड़ी चन्द्रभागा से विनय है, "हे माता! दूर देश जाने वालोंके लिए थोड़ी उतर जाओ।"

और चन्द्रभागा के उतरते ही, नारियल पूर्णिमा होते ही कोंकण के नाविक "दैरियांत मचवा झुलतय लाड़ले सांवला बंधु तुझ्या ये तांयगो" गाते हुए तेज चप्पू चलाने लगते हैं। तब लोकगीतों की बरसात लौट जाती है-कृष्ण जन्मोत्सव मना, मोंगरे को सुवास दे, मक्का बाजरे में मोती से दाने भर, अगले वर्ष तक की प्रतीक्षा देकर। सच है, प्रतिवर्ष गीतों की गूँज के बाद यह प्रतीक्षा ही तो शेष रह जाती है :-

आला पाऊस गेला पाऊस किश्न जन्म झाला
आला पाऊस गेला पाऊस मोंगरेला वास आला
आला पाऊस गेला पाऊस कणस मोती आला

२५।२ "पाखर"
बम्बई-पूना मार्ग
पूना-३ (महाराष्ट्र

* * *

सहायता

छः वर्ष पहले की बात है। हम लोग तबादला हो जाने की वजह से जयपुर से भीलवाड़ा जा रहे थे। अजमेर में प्लेटफार्म पर ही मेरे पति का अचानक ब्लडप्रेशर तेज हो गया और वह बेहोश हो कर वहीं गिर पड़े। मेरे साथ तीन बच्चे भी थे, जो सामान के साथ गाड़ी में चढ़ चुके थे। गाड़ी जाने का समय हो गया था। मैं पति के पास बड़ी दुविधा में खड़ी थी कि उसी समय एक युवक मेरे पास आया और मेरी समस्या पूछी। सारी बात सुनकर उसने अपनी यात्रा स्थगित कर दी।

उसने स्टेशन-मास्टर से कह कर सारा सामान उतरवाया, बच्चों को भी संभाला और मेरे साथ अस्पताल भी गया। उसने हमारे रिश्तेदारों को टेलीफोन पर सूचना भी दी।

अगर उस समय वह युवक मेरी मदद न करता, तो न जाने मेरे परिवार और सामान का क्या होता और मैं अकेली अपने बीमार पति के साथ-साथ इन सब को कैसे संभालती. घबराहट में मैं उस युवक का नाम-पता भी नहीं पूछ पाई।

–सुशीला आसोपा

धन्यवाद

तब मैं आठवीं कक्षा का छात्र था और अपने चाचाजी के पास कसबे में रहता था, हर सप्ताह छुट्टी के दिन मैं रेलगाड़ी से चला जाता था। एक बार रेलवे स्टेशन पहुँचने पर मेरी गाड़ी छूट गई। मुझे परेशान देखकर कर एक ड्राइवर ने पूछा, "क्यों बेटे, क्या बात है ?,,

मैंने परेशानी बताई, तो वह मुझे समझाते हुए बोला, "आओ, इस इंजन में बैठ जाओ"

रास्ते में उसने मेरा परिचय भी प्राप्त कर लिया जब उसे मालूम हुआ कि मैं स्टेशनमास्टर का लड़का हूँ तो उसने इंजन ठीक मेरे घर के पास रोक दिया।

मैं उसको धन्यवाद भी न दे सका. पर आज भी मैं उस व्यक्ति का मन ही मन बहुत आदर करता हूँ।

–ए. लक्ष्मणराव

सबसे सरल और सबसे कठिन

डा० रामचरण महेन्द्र
एम० ए०, पी-एच० डी०

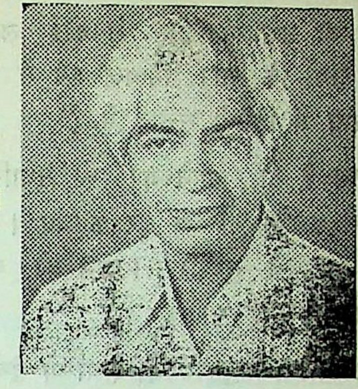
लेखक

[श्री महेन्द्र जी बिरला कालेज भवानीमण्डी के प्राचार्य हैं। आप शील-सौजन्य परक लेखों के प्रख्यात लेखक और गंभीर विचारक हैं।

मनुष्य-जीवन के एक छोर पर सरलता और दूसरे पर कठिनता है। एक खांड जैसी मीठी है, तो दूसरी कुनैन जैसी कड़वी। इन दोनों को मनुष्य के भाव-जगत् में खोजकर, इनका ठीक मर्म समझकर हम कैसे उन्नत बन सकते हैं, इसका मर्म लेख में बड़ी खूबी से बताया गया है। पढ़िए और तुष्ट हो कर ग्रहण कीजिए।

— सम्पादक]

"दुनिया में सबसे आसान काम क्या है ?"

आप शायद उत्तर देंगे, "आलस्य में पड़े-पड़े मजे में जीवन गुजारना।"

'चटपटी गप्पें मारना, मनचाही बातें बनाना!'

"सुखद कल्पना में हिरणों की तरह कुलाँचें भरना!"

नहीं, ये काम भी मुश्किल हैं।

फिर, सबसे सरल कार्य क्या है ?

सबसे आसान काम है, परनिन्दा करना। दूसरे शब्दों में स्वयं कुछ रचनात्मक कार्य न करके आस-पास, पड़ोस, परिवार, समाज, देश के बड़े व्यक्तियों के दोष निकालना, व्यर्थ की झूठी आलोचनाएँ करना, बकवास में लगे रहना, निर्बलताओं में आनन्द अनुभव करना।

ऐसे लोगोंके लिए प्रसिद्ध विद्वान् डेल कार्नेगी ने सत्य ही कहा है कि ओछे लोगों को दूसरों की दुर्बलताएँ देखने में बड़ा मजा आता है। जैसे गाय के थन में लगी हुई जोंकें दूध न पीकर रक्त ही पीती हैं, वैसे ही ये लोग दोष ही देखते हैं, अच्छाइयों पर उनकी दृष्टि नहीं जाती!

परनिन्दा :

सदियों पूर्व प्रसिद्ध दार्शनिक शोपेनहावर ने मानव-प्रकृति के बारे में बड़े मर्म का उद्घाटन करते हुए लिखा था, "निकम्मे लोग बड़े लोगों की भूलों और दोषों से बहुत खुश होते हैं।"

नासमझ और अविकसित व्यक्तियों को कुछ सृजनात्मक कार्य तो करना नहीं होता, बैठे-बैठे परनिन्दा कर मन को बहलाते रहते हैं। व्यर्थ की निस्सार आलोचनाओं में फँसे रहते हैं। अपने फालतू समय को काटने का यही सबसे सरल तरीका लगता है। वे उठते हुए व्यक्तियों की त्रुटियाँ निकालकर खुद को उनसे ऊँचा सिद्ध करने का प्रयत्न किया करते हैं। आलोचना का मतलब खुद की श्रेष्ठता महसूस कर खुश होना है। यह मनुष्य की एक भारी कमजोरी है, जो उन्नति के मार्ग में बाधक है। जो अंदर से निकृष्ट है, वे भर्त्सना करके संतोष प्राप्त करते हैं। अतः, आप परनिन्दा के रोग से बचें और कभी उसमें आनन्द न लें।

किन्तु यदि आपकी आलोचना हो, तो आप क्या करें ?

आप उससे यकायक डरिए नहीं ! अनायास ही उग्र, निराश या उत्तेजित होने से कोई लाभ नहीं । बेहतर यह होगा कि आप निष्पक्ष रूप से देखिए कि उस आलोचना में कितनी सचाई है ?

यदि सत्य है तो अपनेआप को सुधारिए और उन चारित्रिक कमजोरियों को दूर कीजिए । उन्नति के लिए प्रत्येक भूल को सुधारिए । मन को कठोरता से उन्नति-मार्ग पर आरूढ़ रखिए ।

यदि आलोचना अनुचित है, ईर्ष्या या द्वेष के कारण उत्पन्न हुई है, पक्षपातपूर्ण अथवा नीचा दिखाने मात्र के लिए की गई है, तो झूठी बकवास को अपने गुप्त मन में कभी भी स्वीकार मत कीजिए । उसकी कतई परवाह मत कीजिए । याद रखिए, अनुचित आलोचना परोक्ष रूप में आपकी योग्यता, दक्षता, कार्यकुशलता और उन्नत होती हुई शक्तियों की प्रशंसा है । पक्षपातपूर्ण आलोचना की उपेक्षा कर स्थायी महत्त्व का ठोस कार्य कीजिए । जितना ही आप अपने विशेष क्षेत्र में समुन्नत होंगे, उतने ही शत्रु या जलनेवाले व्यक्ति स्वयं पीछे हट जाएँगे या चुप हो कर बैठ जाएँगे ।

यदि आप परदोष दर्शन करते हैं, तो उसे त्याग दीजिए । उससे आपको कुछ भी मिलने वाला नहीं है ।

सबसे कठिन कार्य :

दुनिया में मनुष्यके लिए सबसे कठोर कार्य क्या है ? आप उत्तर में तरह-तरह के काम गिनाएँगे- जैसे रोजी-रोटी कमाना, विदेशों की यात्राएँ करना-बड़े-बड़े उद्योग-धन्धों, कारोबार, व्यापार आदि को सम्हालना, देश के चुनाव लड़ना, सरकार बनाना और प्रशासन चलाना आदि ।

किन्तु ये तथा अन्य कठिन कार्यों से भी कठोर एक और कार्य है ? वह है, आत्मालोचना (सेल्फ क्रिटीसीज्म) अर्थात् खुद अपना आत्मपरीक्षण करना, अपने चरित्र, जीवन, कार्य, व्यापार, पेशे, योग्यता पूँजी, परिवार अथवा उपलब्धि की अच्छाई-बुराई की कसौटी पर कसना, अपनी कमजोरियों, बुराइयों अपराध-पूर्ण कार्यों, भूलों, निरर्थक कार्यों की निन्दा करना, चुन-

शेष पृष्ठ २२ पर

◦ सूक्तिसुधा ◦

बुभुक्षितैः व्याकरणं न भुज्यते,
पिपासितैः काव्यरसो न पीयते ।
न विद्यया केनचिदुद्धृतं कुलं
हिरण्यमेवार्जय निष्फला वकला ॥

[भूखे लोगों से व्याकरण खाया नहीं जाता, प्यास से ब्याकुल व्यक्तियों से काव्यरस का पान नही किया जाता । विद्या से किसी ने अपने कुल का उद्धार नहीं किया है । इसलिए हिरण्य (स्वर्ण-धन) का ही अर्जन करो, अन्य सभी कलाएँ निष्फल हैं]

अर्थातुराणां न गुरुर्न बन्धुः
कामातुराणां न भयं न लज्जा ।
क्षुधातुराणां न रुचिर्न पक्वं
चिन्तातुराणां न सुखं न निद्रा ॥

[धन (अर्थ) के लिए आतुर व्यक्ति के लिए न कोई गुरु होता है न भाई-बन्धु, कामातुर व्यक्तियों को न भय होता है न लज्जा । भूख से पीड़ित व्यक्तियों को न रुचि होती है, न पक्के-कच्चे का विवेक और चिन्ता से आतुर व्यक्तियों को न सुख होता है न निद्रा ही आती है ।]

काके शौचं द्यूतकारे च सत्यं,
क्लीबे धैर्यं मद्यपे तत्त्वचिन्ता ।
सर्पे शान्तिः स्त्रीषु कामोपशान्तिः,
राजा मित्रं केन दृष्टं श्रुतं वा ॥

[कौए में पवित्रता, जूआ खेलनेवाले (द्यूतकार) में सत्यता, नपुंसक व्यक्ति में धीरता, मद्यपान करनेवाले में तत्त्वचिन्तन, सर्प में शान्तिस्त्रियों में कामवासना की उपशान्ति एवं राजा का मित्र होना किसने देखा या सुना है ?]

महिमा सात की

श्री सरोज शर्मा

[सात का हमारे दैनिक जीवन और चिन्तन में बड़ा महत्त्व है । उसी महत्त्व को प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक के उद्धरणों द्वारा देश–विदेश का जन-जीवन किस प्रकार आन्दोलित होता रहा है, उसे इस लेख में पढ़िए ।

सम्पादक]

पिछली केंद्रीय सरकार ने कोकाकोला बन्द कराने के बाद एक नया पेय चलाया था, जिसका नाम रखा गया था, '७७' और इसके लिए भूतपूर्व संसद–सदस्य श्री हरिविष्णु कामत को दस हजार रुपयों की एक पुरस्कार-राशि भी मिली थी.। '७७' नाम का पेय अब कितना चलता है, यह तो पता ही है सबको, लेकिन शायद यह नहीं मालूम है कि ७ के प्रति भारत का मोह बहुत पुराना है–कहिए सनातन । क्योंकि 'शतपथ' ब्राह्मण में वर्णित सप्तर्षियों में गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र, यमदग्नि, वसिष्ठ, कश्यप और अत्रि हैं, जो कि महाभारत काल में मरीचि, अंगिरा, पुलह, क्रतु, पुलस्त्य के साथ वसिष्ठ और अत्रि बन गए थे। इनकी सातों पत्नियाँ भी 'लोकमाता' मानी गई हैं । उनमें अत्रि की पत्नी अनसूया और वसिष्ठ की पत्नी अरुन्धती को तो सभी जानते हैं, बाकी पाँच (संभूति, स्मृति, क्षमा, सन्नति और प्रीति) को बहुत कम लोग जानते हैं ।

फारसी में सप्तर्षि के पर्याय बनातुन्नश या हफ्त–अख्तर और हफ्त पकरः है । लेकिन हैं ये सात सितारे ही, जो ध्रुव के चारों ओर घूमते हैं । बाबीलोनी पोतचालकों ने आकाश में कई–कई सात–सात सितारों के समूह पहचान रखे थे, जिनसे वे अपनी लम्बी समुद्र–यात्राओं में गंतव्य दिशाएँ पहचाना करते थे । उन्होंने भी भारतीय ज्योतिर्विदों की तरह सात और नौ जाने- माने ग्रहों में से सूर्य और चन्द्र को शामिल करके आजकल का यह 'सप्ताह' या हफ्ता चला दिया था ।

पहले हर हफ्ते का सातवाँ दिन शनि होता था; यहूदी लोग उस दिन विशेष पूजा-प्रार्थना करते थे । फिर ईसाइयों ने रविवार का महत्त्व बढ़ा दिया । मुसलमानों ने यह रुतबा जुमा या शुक्रवार को दिया था और हिंदुओं ने यह महत्त्व शायद बृहस्पति या गुरुवार को ।

पूर्वी लोगों में सात द्वीप, सात समुद्र, सात पाताल और सात आकाश मशहूर थे। पूर्वी संस्कृतियों में सात स्वर्ग और सात नरक भी जाने-पहचाने गए हैं । वेदांत की सात भूमिकाएँ अथवा चेतना के सात स्तर–भेद भी सुविदित हैं । आजकल भी सात महासमुद्र भूगोल में पढ़ाए जाते हैं--महासागर नाम से । प्राचीन मन्दिरों में तो अभी तक सात मण्डल और सात परिक्रमा–स्थल बनाने की प्रथा देखी जा सकती है ।

यह बंबई महानगरी भी सन् १५० में सात द्वीपों की स्वामिनी थी, जिसे यूनानी इतिहासकार प्तोलेमी ने हेप्ता नासिया नाम दिया था । बाद में कोली मछुओं की देवी मुम्बा के नाम पर यह मुम्बई और अठारहवीं सदी से बम्बई बन गई ।

भारतीय पण्डित–पुरोहितों ने सप्तसागरों के दान की एक प्रथा चलाई थी, जिसमें सात बड़े–बड़े पात्रों (महाभाण्डों) में लवण, इक्षु, सुरा, सर्पि, दधि, दुग्ध और जल भरकर उन्हें भेंट किए जाते थे। 'सर्पि' माने यहाँ घी है ।

प्राचीन संस्कृतियों में सात :

मनुस्मृति में ब्रह्मचारियों के लिए 'सप्तरात्र अवकीर्णि

व्रत' की चर्चा की गई हैं और महात्मा गांधी ने भी सप्त महाव्रत के पालन का निर्देश अपने अनुयायियों को बड़े आग्रह से दिया था ।

पुराणेतिहास में सप्तपुरी, सप्तमातृका और सप्तसिंधु की धारणा वैदिक काल से ही चली आ रही है। यह दूसरी बात है कि नाम भिन्न हैं उन सभी नदियों के जो इन सातों में गिनी जाती हैं। हर युग में नदियों के कुछ नाम तो बदलते ही रहते हैं। एक युग के देवताओं, ऋषियों और पवित्र नदियों की मान्यता दूसरे युगों में बहुत कम रह पाती है। कुछ थोड़े से ही नाम हैं ऐसे, जो हिंदुओं में सदा ही पुजते रहे हैं। जैसे गंगा, यमुना, सरस्वती, चन्द्र,सूर्य, इन्द्र,वरुण, यम, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, दुर्गा, चण्डिका, लक्ष्मी, वाराही, गणेश आदि।

सात का बोलबाला अन्य क्षेत्रों में भी बरकरार रहा है। माघ शुक्ला सप्तमी के सात भेद करके उन्हें रविवार और सात नक्षत्रों से जोड़कर विशेष व्रत-फलदाता बताया गया है। इनमें जप-तप करने का अनन्त फल क्यों होता है, इसकी कोई व्याख्या कहीं नहीं मिलती; किन्तु संयोग और नियति को देने वाली प्राचीन संस्कृतियों के लिए यह कोई नई बात नहीं है।

महाभारत में सप्त प्रौढ़ महारथियों ने मिलकर युवा अभिमन्यु के प्राण ले लिये थे। इनमें से केवल अश्वत्थामा ही नहीं और भी छह पौराणिक व्यक्तियों को मिलाकर 'सप्त चिरंजीवी' भी माने गए हैं, किंतु इनमें से अब कोई दिखाई नहीं पड़ता। क्योंकि यह मिथकीय धारणा है, संभाव्य तथ्य नहीं।

आयुर्वेद में या कहिए चिकित्साशास्त्र में सात ही अवयव विशेष रक्तमय माने गए हैं; सातों धातुओं को ठीक रखनेके लिए भी उसमें निर्देश दिए गए हैं।

सूर्य के सात घोड़े, चन्द्रमा के एक घोड़े का नाम सप्तधातु, इसी प्रकार सप्तपर्णा, सप्तपत्र, सप्त पलाश या सप्तच्छद भी हमारे चिरपरिचित शब्द हैं। ज्योतिषी लोग प्रायः सप्तनाडीचक्र बनाकर वर्षा होने न होने की भविष्यवाणी किया करते हैं। पण्डित लोग सप्तपदी के बिना विवाह-संस्कार को पूर्ण नहीं मानते। कवियों ने सात कदम एक साथ चले हुए अच्छे लोगों की दोस्ती भी उद्घोषित की है (सतां साप्तपदीनं सख्यम्)। सप्तधा होत्र या यज्ञ का वर्णन तो यजुर्वेद में भी है-'सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति ।' (१७-१९)

मनुस्मृति में सात महाव्यसन गिनाये गए हैं। सात लोगों या भवनों को हर प्राणायामी संध्या-वन्दन में याद करता है। 'सप्त-भूम' या सतमंजिला प्रासाद की महिमा स्थापत्य में थी। जैनियों के स्याद्वाद का 'सप्तभंगी' (सात प्रकार की युक्तियों और तर्कों वाला) सिद्धांत प्रसिद्ध है। राजनीति में सप्तप्रकृति या सप्तांग पर जिसका वश चलता है, अन्त में वही सबको पछाड़ता रहा है। किसान सतनजा (सप्तधान्य), कर्मकाण्डी सप्ताह्वि या सप्तार्चि (अग्नि) की चर्चा करते हैं। संगीत के स्वरसप्तक, साहित्य में 'तार सप्तक', सप्तशती या सतसई, आभूषणों में सतलड़ी करधनी, सतलड़ा हार, गणित की सप्तराशिक प्रक्रिया, सप्तात्मा (ब्रह्मा), सप्तकोण या सप्तभुज आकार और यन्त्र-तन्त्र, सात पर्वत (सप्ताद्रि), सतपुतिया (सात बेटे या बेटियों वाले) मां-बाप, सप्तगोदावरी, सप्तशीर्ष (विष्णु), सप्तमृत्तिका (सात जगहों की मिट्टी), सप्तभद्र, सप्तपर्णी (छुईमुई), विश्वेदेवों में से एक सप्तकृत, सप्तग्रही अनिष्टकारक योग, सप्ततन्त्री (वीणा), सप्तसारस्वत, सप्तग्राम, यूनानी चिकित्सा का 'हफ्तः जोश' नुस्खा, पत्र-पत्रिकाओं के साप्ताहिक और अर्धसाप्ताहिक संस्करण, मुगलों की हफ्तः हजारी पदवी, मुल्लाओं की सात दुआएँ (हफ्तः हैकल), सतरंगा स्पेक्ट्रम और इन्द्रधनुष, सात पुश्तों तक लागू रहने वाले शाप या वरदान एवं अधिकार तथा बीमारी आदि, सात भाषाओं का जाकार (हफ्तःजबां), सात लिपि लिखने वाला (हफ्तःकलम) और दूर की जान-पहचान वाला दोस्त (हफ्तः दोस्त) आदि सभी संज्ञाएँ या शब्द सात का महत्त्व दर्शाते हैं, किंतु प्रायः इसकी युक्तिसंगत व्याख्या कहीं नहीं मिलती।

रहस्यमयता :

असल में सात के अंक का कोई गुणनखंड नहीं है, न ही सत्रह का है; ये दोनों अंक कुछ लोगों को इसी कारण बहुत ही रहस्यमय लगते हैं। यूनानी दार्शनिक पिथागोरस कहा करता था कि सात

के अंक में स्वास्थ्य या सेहत की कुन्जी छिपी है। जैसे, अगर कोई बीमार व्यक्ति एकदम ला-इलाज मान लिया अथवा हो गया हो, तो उसे किसी ऐसे डाक्टर या वैद्य के पास जाना चाहिए, जो किसी भी 'सात-पाँच' में नहीं रहता हो अर्थात् चालाकी और बहानेबाजी या शरारत नहीं करता हो और बीमार यदि सिर्फ सातवें दिन यानी शनि या रवि को ही जाए तो उसे शीघ्र फायदा हो सकता है। बहुत-से जादूगर भी सात-सात चीजों के समूह बनाकर अच्छी-बुरी जोड़-तोड़ की जादूगरी या टोटके-टमने दिखाते-बताते हैं। ये लोग मध्ययुग तक तो यह भी मानते थे कि सातवें बेटे का सातवाँ बेटा 'जन्मजात जादूगर' होता है।

मजेदार कहानियाँ :

चीन में सृष्टि रची जाने के बारे में एक मनोरम मिथक प्रचलित है। सृष्टि का मतलब यहाँ अव्यवस्था की स्थिति में व्यवस्था कायम करना है। चीनियों के अनुसार जब पृथ्वी और आकाश अपना काम ठीक तरह करते हैं, तभी समूची सृष्टि में व्यवस्था आ पाती है। आदमी के चेहरे पर ज्ञानेन्द्रियों के जो सात छेद हैं, वे भी इसी बात के प्रमाण हैं। समस्त सृष्टि जीवन में सुनने, देखने और साँस लेने या खानेपीने की व्यवस्था इन सात छिद्रों से होती है। चीन में यह एक बहुत लम्बा 'शु-हु' और 'हुन-तुन' का मिथक बन गया है।

चीन के सात समझदारों ने भी चीनी संस्कृति एवं सभ्यता से कन्फ्यूशस के सड़े-गले सिद्धांत हटाकर 'ताओ चि की अक्लमन्दी' चलाने की कोशिश की थी। उन्होंने बौद्ध तांत्रिकों या वु-ममनों के जादू-टोनों का भी जमकर विरोध किया था। ये सातों समझदार दूसरे सब धार्मिक ठेकेदारों की तरह सम्राटों को समर्थन करने के लिए तरह-तरह के साम्प्रदायिक मतवाद चलाने के बहुत ज्यादा खिलाफ थे। इसके लिए उन्हें भाँति-भाँति के कष्ट भी सहने पड़े थे। सम्राट लोग बुद्धिजीवियों के के साथ हमेशा से यही करते आए हैं।

चीन में एक जमाने तक यही माना जाता था कि बुद्धिमान् वही होता है, जो अपने हिया (हृदय, दिल) के सातों द्वार या पर्त खोल देता है। बहुत पहले के चीन में हर सातवें महीने में प्रांतीय स्तर पर एक विशेष उत्सव भी मनाया जाता था, जिसमें स्थानीय देवताओं की रथयात्राएँ निकाली जाती थीं। जापान में भी एक जमाने तक भाग्य के सातों देवता पूजने का रिवाज था। वहाँ वे तीनों बन्दर, जो अपने चेहरे के सातों छेद बन्द रखते थे, बहुत बुद्धिमान् माने जाते थे।

बाइबिल तो सात की महिमा का महान् ग्रन्थ है। बाइबिल में वर्णित सृष्टि सात दिन में पूरी होती है। केन के द्वारा आदमी के सात वंशधर होते हैं और सातवाँ वंशधर लोमक ७७७ वर्ष जीवित रहता है। जेरिको वर्ग की लड़ाई में जोशुआ सात दिन तक पादरियों को साथ लेकर सात तुरही बजाता हुआ चढ़ाई करता रहता है और उसके सात चक्कर लगाने पर किले की दीवारें अपने-आप ढह पड़ती हैं! बाईबिल में सात दिन के गुजारे का, सात संप्रदायों का, सात विपदाओं का सलोमे के सात घूँघटों का एपोकैलिप्स में संत जोन द्वारा सात दिन तक बाढ़ की मुसीबतें सहने का भी वर्णन है। उसमें सात फरिश्तों की कथा है, सात प्लेगों की चर्चा है। सात सितारों, सात सीलों (समुद्री जीवों) और सात सुनहरे लैंप के दस्तों का हाल बताया गया है। सात तरह के महापाप, सात तरह के सद्गुण और सात सैक्रामेंटों की बातें हैं। सन्त मैथ्यू कहते हैं : 'Until seventy times seven'—अर्थात् ७×७०= ४९० बार तक।

यहूदियों के यहाँ भी 'जीवनवृक्ष' की सात शाखाएं गिनी जाती हैं। यही मेनोरा का पेड़ है, सतमुंही मोमबत्ती है। जिप्सियों का कथन है कि सातवीं संतान अगर लड़की हो, तो वह बहुत अच्छी तरह भविष्य बता सकती है। भागवत पुराण में देवकी की सातवीं संतान योगमाया ने कंस का भविष्य बताया था न! किंतु रूमानिया में सातवीं संतान को बहुत अशुभ मानते हैं और जर्मनी में सदा पीछे पड़ी बकझक करने वाली पत्नी को 'सातवीं मुसीबत' बोलते हैं।

संसार के इतिहास में कई सातसाला युद्ध मशहूर हैं। ये लड़ाइयाँ कभी-कभी तो सात सप्ताह तक ही चलती थीं। यूरोप में 'रिनासां' (पुनर्जागरण) के बाद

बहुत से विश्वविद्यालय केवल 'सेविन लिबरल आर्ट्स' की पढ़ाई कराते थे। भारत में लोग सात के सात गुने पवन कहते हैं (४९)। सारे संसार में ताशों के कई खेल सात की संख्या पर आधारित हैं। कुछ लोग सात को 'शैतान' का वाचक भी मानते हैं। साती या साढ़े साती दशा (शनि देवता या ग्रह की) से हम लोग प्रायः घबड़ाते हैं। इसमें कुछ-न-कुछ अनिष्ट अनिवार्यतः घटता है। लोकनायक जयप्रकाशनारायण ७७ पूरे करते ही चले गए।

यूनान के सात नायकों और उनकी संतान ने थेवेस का युद्ध जीता था। पुराना रोम शहर भी सात पहाड़ियों पर बसाया गया था अमरीकी लोग भी इस मामले में पीछे नहीं हैं। उनके यहाँ बहुतेरे कालेज और चर्च 'सेविन सिस्टर्स' और 'सेविन्थ डे एडवेन्टिस्ट' कहलाते हैं। अमरीकी 'स्पेस प्रोग्राम' भी सात एस्ट्रानाटों (महाकाशचारियों) को लेकर बनाया गया था। 'द मैग्नीफिसेंट सेविन', 'सेविन डेज इन मे', 'द सेविंथ सील', सेविंथ हैविन' या 'स्नो ह्वाइट एंड द सेविन ड्वार्फ्स' नाम से फिल्में बनी हैं। उनके प्रसिद्ध खेल 'बेस बाल' की 'सेविंथ इनिंग स्ट्रेच' भी सभी जानते हैं। ताश खेलते वक्त वहाँ प्रायः लोग कहते हैं : 'आइए, सेविन कार्ड स्टड हो जाए एक।'

और भी कुछ अजीब बातें :

यदि आपने 'सेविन ईयर्स इच' फिल्म देखी हो तो बखूबी समझ गए होंगे—मनोवैज्ञानिकों की वह सही या गलत धारणा कि हर सातवें साल मानव तन और मन कुछ नवीनीकरण चाहते हैं।

दुनियाँ के सात आश्चर्य तो आपको मालूम ही हैं। भारत में जैसे षोडशी तरुणी का स्वतन्त्र अलहदा माना जाता है, वैसे ही यूरोप आदि में 'स्वीट सेवेन्टीन' की चर्चा की जाती है; क्योंकि उसमें भी सात का अंक जो मौजूद है।

एक तरह का गुलाब 'सेविन सिस्टर्स रोज' कहलाता है। लोग ७० से ७९ तक अंक पाने वाले को 'किस्मत वाला' मानते हैं—चाहे वह कोई परीक्षा फल हो या गोल्फ का खेल। *

बोध-कथा

० कथनी करनी ०

एक बार एक महिला अपने पुत्र को लेकर पैगम्बर मोहम्मद साहब के पास गई और बोली—"इस बालक को बहुत अधिक मिठाई खाने की आदत है, जिससे इसका स्वास्थ्य चौपट हुआ जा रहा है। मैं हमेशा इसे यह बुरी आदत छोड़ देने की कोशिश करती हूँ; लेकिन इसपर कोई असर ही नहीं होता। अगर आप कृपा करके इसे समझाएँ तो यह अपनी बुरी आदत छोड़ देगा।"

पैगम्बर क्षण-भर तो चुप रहे, फिर बोले, "मैं अवश्य इस बालक को समझाऊँगा, लेकिन अभी नहीं, सप्ताह भर बाद।"

उनके इस कथन से विस्मित हुई वह महिला वापस लौट गई। सप्ताह-भर बाद पुनः अपने पुत्र के साथ पैगम्बर के पास आई।

पैगम्बर ने अपना वादा पूरा किया। उन्होंने बालक को सीधे-सादे शब्दों में अधिक मिठाई खाने से होने वाली हानियाँ समझाईं और यह बुरी आदत छोड़ देने को कहा।

तब उस महिला ने पैगम्बर से प्रश्न किया कि यह तो आप पहले दिन ही समझा सकते थे, इसके लिए आपने सप्ताह-भर का समय क्यों लिया?

पैगम्बर का उत्तर था, "सप्ताह-भर पहले जब आप इस बालक को लेकर आई थीं, मैं स्वयं इस आदत का शिकार था। लेकिन इस एक सप्ताह में मैंने यह छोड़ दी है। सप्ताह-भर पहले मैं सलाह देने योग्य नहीं था। स्वयं को इस योग्य बनाने के लिए एक सप्ताह का समय लिया था।"

—सत्यकाम विद्यालंकार

हमारी राष्ट्रीयता

श्री राकेश श्रीवास्तव
विशारद

[श्री सारस्वत जीं एक होनहार लेखक और अध्ययनशील साहित्याराधक हैं । प्रस्तुत लेख में राष्ट्रीयता को अनेक कोणों और पक्षों देखा गया है । इसके साथ हीं उसके मर्म को पालने की अनुरोध किया गया है; जो पठनीय है । —सम्पादक]

क्या संसार में कोई ऐसा भी व्यक्ति जीवित होगा, जिसने मन में कभी यह न सोचा हो कि यह मेरी प्रिय मातृभूमि है अथवा अपनी मातृभूमि के प्रति स्नेह की भावना से रहित हो । शायद ऐसा कोई भी व्यक्ति न होगा और यदि कोई जीवित भी होगा, तो उसका समाज में कोई मूल्य न होगा, अस्तित्व न होगा । क्योंकि यह पवित्र प्रेम मानव-मात्र का स्वाभाविक गुण है । जिस देश की मिट्टी में लोट-पोट कर हम बड़े हुए, जिस का पवित्र जल हमारी धमनियों में तप्त रक्त बनकर दौड़ता-फिरता है, उसके इस प्रेम को भुला देना हमारी कृतघ्नता ही होगी । क्योंकि, वह हमारी माता है और हम उसके पुत्र "माता भूमिःपुत्रोऽहं पृथिव्याः।"[१]

हृदय के अन्दर पनपनेवाली राष्ट्रीयता मानव का नैसर्गिक गुण है । इस गुण के कारण ही वह स्वदेश से विशेष रूप में प्रेम करने लगता है । वह सदैव अपने राष्ट्र के हित की बात ही सोचता है । वह स्वराष्ट्र को विश्व का शिरोमणि के रूप में देखने को लालायित रहता है । देशहित में अपना सर्वस्व लुटा देने में उसे अपार सुख एवं शान्ति का अनुभव होने लगता है । जिस देश में राष्ट्रीयता की यह भावना जितनी ही प्रबल होगी, वह देश उत्तरोत्तर उन्नतिशील होगा ।

राष्ट्रीयता एक ऐसी पवित्र चेतना है, जो उन लोगों में अपना विस्तार कर लेती है जो एक ही जाति एवं स्थान से सम्बन्धित होते हैं । यह एक ऐसी भावना है जो मनुष्य की अन्तश्चेतना से जुड़ी होती है और केवल अनुभूति का विषय है । सामान्यत: यह पैतृक स्मृतियों से उत्पन्न होती है । ये स्मृतियाँ अनुकरणीय कर्तव्य, बलिदान एवं गौरव की भी हो सकती हैं और महान कष्ट एवं विपत्तियों की भी ।

राष्ट्रीयता की यह भावना उस समय अत्यधिक उग्र हो जाती है, जब कि देश एवं जाति पर संकट आ जाने पर भयंकर परिस्थितियों का सामना करने हेतु निर्बल से निर्बल व्यक्ति भी राष्ट्रीयता की उमंग में बड़ा से बड़ा त्याग और साहस लेकर भयंकर तत्पर हो जाता हैं । इस प्रसंग में इस समय ईरान एवं वियतनाम के ज्वलन्त उदाहरण दिये जा सकते हैं जिन्होंने कुछ दिनों पूर्व केवल राष्ट्रीयता के अस्त्र-शस्त्र पर ही क्रमशः अमरीका एवं चीन को भी चुनौती दे डाली था ।

हमारा भारतवर्ष तो सदा से ही राष्ट्रीयता का केन्द्र रहा है । यह प्रकृति से सम्पन्न, विशालकाय एवं प्राचीन देश है । इसके एक तरफ हिमालय की विस्तृत गगनचुम्बी शैलश्रेणियाँ हैं, तो दूसरी तरफ पैरों को धोता हुआ जलनिधि शोभायमान है । अनेक विदेशी विद्वानों ने तो इसे 'धरती का स्वर्ग' ही कहकर पुकारा है । प्राचीन भारत की शिल्प-कला एवं विज्ञान के चमत्कार आज भी अजंता एवं एलौरा की गुफाओं में देखे जा सकते हैं । और कहना ही क्या ! जब इसके आकर्षण के वशीभूत हो देवता भी इसपर अवतरित होने को लालायित रहते हैं

स्तुते भारत'भूमि भागे गायंति देवाः किल गीतकानि धन्या
स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात

---

[१] –'अथर्ववेद काण्ड १२, सूक्त १।१२

भारतवासियों की स्वदेश के प्रति सदैव पुनीत भावना रही है । उन्होंने विभिन्न देवताओं के साथ-साथ अपनी भूमि एवं देश को भी आराध्य देव के समान ही वन्दनीय समझा है । उन्होंने जन्मभूमि को स्वर्ग से भी उत्तम स्थान माना है । फिर ऐसे दिव्यदेश में उत्पन्न होकर कौन नहीं धन्य हो जाएगा, जो देश ही स्वर्ग का प्रांगण है,

अहो अमीषां किमकारि शोभनं
प्रसन्न एषां स्विदुत स्वयं हरिः ।
यैर्जन्मलब्धं नृपु भारताजिरे
मुकुन्द सेवौपथिकं स्पृहा हि नः ।।"२

अर्थात्-यह भारत वैकुण्ठ का प्रांगण है, जो मनुष्य यहाँ उत्पन्न होता है, वह कितना भाग्यवान है, क्योंकि इस तरह उसे भगवान् की सेवा करने का सुअवसर मिल जाता है ।

आदिकाल में भारतीय राष्ट्रीय भावना में कुछ संकीर्णता अवश्य थी, लेकिन इससे यह नहीं कहा जा सकता कि राजपूत देश-प्रेम से हीन हो चुके थे । हाँ, परस्पर की लड़ाइयों के फलस्वरूप उनमें यह भावना कुछ निस्तेज होती हुई अवश्य दीख पड़ी थी, किन्तु स्वराष्ट्र-प्रेम में मर मिटने की उनकी भावना कभी भी कम न हुई । पुरुष-वर्ग की बात ही अलग रही, उस समय की क्षत्राणियाँ भी रण-क्षेत्र को दहला देनेवाली होती थीं । उन्हें कभी भी पति की कायरता नहीं पसन्द थी । इसी सन्दर्भ में 'आल्हा खण्ड' में एक क्षत्राणी अपने पति से कहती है,

लड़नो; मरनो समर भूमि में
यह ही क्षत्रिय को बयपार ।
लहंगा लुगरां हमरो पहिरो अपनी देउ ढाल तलवार ।"

भक्ति एवं रीतिकालीन अधिकाधिक कविताएँ मानव-जीवन से परे कहीं भक्ति एवं शृंगारमयी कुञ्ज के नीचे उष्ण-उष्ण साँसें छोड़ने लगी थीं । यह समय ही हिन्दू-मुस्लिम संस्कृतियों के समन्वय का था । फिर भी इस समय भी लोगों में पर्याप्त राष्ट्रीयता बनी रही ।

तत्पश्चात् नवयुग का सूत्रपात हुआ । मध्यकालीन मूर्च्छना के पश्चात् भारतीय जन-मानस में नूतन चेतना के लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं । अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना शिक्षा-प्रसार एवं बौद्धिक उन्नति के साधनों की सुलभता से भारतीयों की संकीर्ण भावनाओं को विकास का पर्याप्त क्षेत्र प्राप्त हुआ । इस समय के जन-कवियों ने जनता में नवीन भावनाओं का उद्रेक किया । उन्होंने अपनी कविताओं के द्वारा भारत-दुर्दशा के साथ-साथ राष्ट्र के प्रति गौरव एवं प्रेम के स्पष्ट चित्र अंकित किये हैं । कितना गौरव है 'भारतेन्दु बाबू की वाणी में--

"भारत के भुजबल जग रक्षित,
भारत विद्या जेहि जग सिच्छित ।
भारत तेज जगत विस्तारा,
भारत भय कंपित संसारा।"

यही नहीं, 'प्रेमघन' को तो मातृभूमि के समक्ष स्वर्ग की भी शोभा फीकी जान पड़ती है । स्वराष्ट्र की अद्भुत रमणीयता को देख वे गा उठते हैं-

जय जय भारत भूमि भवानी ।
जाकी सुयश-पताका जग के दसहू दिसि फहरानी ।
जा श्री सोभा लखि अलका अरु अमरावती खिसानी ।
धर्म सूर ऊयो नीति जँह गई प्रथम पहिचानी"

वह समय ही ऐसा था, जबकि हमारे देश को धन-वैभव की अधिकता के कारण 'सोने की चिड़िया' एवं आदर्श पर अवलम्बित होने के कारण 'जगद्गुरु' कहा था । लोग अपने-अपने चरित्र का उदाहरण भारत के नागरिकों से लिया करते थे, तभी तो महर्षि दयानन्द ने विश्वास के साथ कहा है, "धरती पर भारतवर्ष ही एक ऐसा स्थान है, जिसका निर्माण देवताओं ने किया है । पूरी धरती को आदर्श चरित्र और व्यवस्था देने का अधिकार यहाँ की आर्य जाति को है । सारी दुनियाँ उसका शिष्य और भारतवर्ष जगद्गुरु है ।"

भारतवर्ष प्राचीन काल से ही 'देव-भूमि' के नाम से प्रसिद्ध है । हमारे सृष्टि-पालक भगवान् ने यहाँ

१–विष्णुपुराण अं० २, अ० ३, श्लोक २४
२-श्रीमद्भागवत, ५।१९।२१।

समय-समय पर अवतार लेकर इसे धन्य किया है। तभी तो इस देश के प्रति यहाँ के निवासियों का सदा से ही अगाध प्रेम रहा है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने इसका कितना वास्तविक चित्र उतारा है,

प्रभु ने स्वयं 'पुण्यभू' कहकर यहाँ पूर्ण अवतार लिया
देवों ने रज सिर पर रखी, दैत्यों का हिल गया हिया।
देखा श्रेष्ठ इसे शिष्टों ने, दुष्टों ने देखा दुर्द्धर्ष,
हरि का क्रीड़ा-क्षेत्र हमारा भूमि-भाग्य सा भारतवर्ष

स्वराष्ट्र का गुणगान करते हुए गुप्त जी की नजर चारों तरफ दौड़ जाती है, लेकिन उन्हें भारत-जैसा प्रिय देश कहीं नहीं नजर आता है, तभी वे दृढ़ता के साथ कह उठते हैं,

"हाँ, वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है,
ऐसा पुरातन देश कोई विश्व में क्या और है?
भगवान की भव-भूतियों का यह प्रथम भाण्डार है।"

ऐसे गौरवपूर्ण देश में पैदा होकर भला किसे अभिमान न होगा। कुछ ऐसा ही अभिमान श्री रामनरेश त्रिपाठी को भी है,

पृथ्वी पर कोई देश भी इसके नहीं समान है।
इस दिव्य देश में जन्म का हमें बहुत अभिमान है।

आज भारत पूर्ण प्रभुता-सम्पन्न गणराज्य है, लेकिन दीर्घकालीन पराधीनता से छूटने पर भी उसके प्रभाव ने इसे लूला एवं पंगु बना दिया है। ऐसे विपत्ति में भी, क्या कोई स्वाभिमानी अपने देश को भुला सकता है? कदापि नहीं। हाँ, यह अवश्य है उस समय वह अतीत की यादों में डूबा हुआ वर्तमान स्थिति पर आँसू बहाया करता है। इसी प्रकार दुखी होकर ठाकुर प्रसाद शर्मा कहते हैं-

"जो जग के निवासियों को, भोजन सदा खिलाता है।
वही देश हा! क्यों पैरों के नीचे कुचला जाता है॥
सदा-सर्वदा जो करता था, दीन दरिद्रों का साहाय्य।
वहि करि मलिन वसन क्यों, यों बैठा है शीश नवाय॥"

० राष्ट्रीय एकता ०

आदर्श व्यवहार में दुःख का लेश नहीं होता। उसमें शान्ति होती है, वह प्रेम तथा प्रकाश का विस्तार करता हुआ चलता है, परन्तु पीड़ा-रहित शान्ति तथा जाग्रत करने वाला प्रकाश उस कौम में क्या एक साथ चल सकते हैं; जहाँ प्रकाश को अभी तक मद्धम ही रहने दिया गया है! अतः, जैसी इस समय वास्तविकता है, उसमें यदि आप अपने व्यवहार को आदर्श नहीं बना सकते, तो कम से कम इसे वास्तविक यानी सत्य पर आधारित तो बनाइए। इस समय यही सबसे बड़ी आवश्यकता है।

कोई भी देश हीन-विचारों वाले महान् पुरुषों द्वारा शक्तिशाली नहीं बन सकता; बल्कि ऊँचे विचारों वाले छोटे लोगों द्वारा ही देश महान् बनता है।

– स्वामी रामतीर्थ

हाँ, यह अवश्य है कि प्राचीन काल की राष्ट्रीय कविताओं का स्थान आज के सिनेमा-गीतों ने ले लिया है। फिर भी आजकल की कविताएँ कम ओजपूर्ण नहीं हो रही हैं,

"यह हिन्दूस्तां बिहँसता चमन है,
यहीं फलता-फूलता, जग का अमन है।
अरे दुश्मनो! मत इधर देखना तुम,
कि हम हैं वतन के, हमारा वतन है।"

यदि देखा जाए तो 'राष्ट्रीयता' भारत के कण-कण में समाई हुई है। इतिहास बताता है कि राष्ट्रीयता का जितना दिव्य रूप यहाँ के साहित्य एवं संस्कृति में उपलब्ध है, उतना संसार के किसी भी साहित्य या संस्कृति में नहीं। ऐसा हो भी क्यों न! जब कि प्रत्येक भारतीय इसे स्वर्ग एवं प्राणों से भी अधिक चाहता है और प्रत्येक जन्म में इसके आँचल में ही खेलना चाहता है, जैसा कि डा० देवेन्द्रदत्त तिवारी भी कहते हैं,

"इच्छा है इस जन्म-भूमि पर,
शत-शत बार जन्म लें हम।
शत-शत बार इसी की सेवा-
में अपना जीवन दें हम॥" ०

कन्या प्राइमरी पाठशाला बरहलगंज, गोरखपुर (उत्तरप्रदेश)

१-भारत वन्दना, प्रेमघन सर्वस्व (भाग-१) पृ० ६२९
२-मङ्गलघट, पृ० सं० ५५।
३-भारत-भारती, अतीतखण्ड-पृ०सं० १३२
४-राष्ट्रीय वाणी, (भाग-१) पृ०सं० ७७

(पृष्ठ १४ का शेष)

चुन कर स्वयं अपने दोष निकालना और उन्हें दूर करना, अपनी असफलताओं और निराशाओं के कारण ढूँढ़ना और उन्हें भविष्य में न दोहराना, नाजायज खर्च, नशेबाजी, बिना सोचे-समझे उद्वेग या आवेश में कोई अनुचित काम कर बैठना, मर्यादाओं की सीमा लाँघना, अनैतिक कार्य, दुःख, चिन्ता, शोक, सन्ताप और बीमारी के विचार और निर्बलता और शक्तिहीनता के काम जो अनजाने में शायद आपसे हुए हैं। या ऐसा दूषित खानपान, रहनसहन, दैनिक कार्यक्रम जिससे आपकी पाचनशक्ति, आपका मस्तिष्क, जिगर, आपकी आँखें, नाक-मुँह, आपके गुप्त अंग बीमार या कमजोर बने हैं, उन्नति या अवनति, अनुकूल या प्रतिकूल अवसर। आत्म-आलोचना वह दर्पण है, जो हमारी सुन्दरता और कुरूपता को पूर्णरूपेण सही व्यक्त करती है और हमें उनसे बचने का मार्ग बताती है।

अपनी ओर :

खुद अपने दोष निकालना, उन्हें दूर करना सबसे कठोर कार्य है। कुछ लोग अपनी दैनिक डायरी में अपना हृदय खोलकर रख देते हैं, अभिन्न मित्रों की तरह सब कुछ खरी-खोटी कह देते हैं। डायरी से कुछ नहीं छिपाते। डायरी एक ऐसा दोस्त है जिससे अपने दुःख-दर्द, कष्ट-पीड़ा या कमजोरियों को कह कर अपने मन को हलका कर लेते हैं। यह आलोचना हमारे चरित्र-निर्माण में बड़ी सहायक होती है।

आत्मालोचना (खुद अपने को खरी-खोटी कहना) हमारी विवेक-शक्ति (रीजन) को जाग्रत करती है। विवेक वह लंगर है जो आवेश, शोक या उद्वेग के तूफान में भी हमें सुरक्षित रखता है। प्रसिद्ध विचारक डेल कार्नेगी ने उचित ही लिखा है, "हम विवेक को ताक पर रखकर केवल भावनात्मक प्राणी मात्र रह जाते हैं। भावना हमें कभी भी धोखा दे सकती है। हमारा विवेक भावनाओं के धूमिल एवं क्रुद्ध सागर पर डोंगी की तरह थपेड़े खाता रह जाता है। हममें से अधिकांश समझते हैं कि अपनी वर्तमान परिस्थितियों के बारे में जो कुछ हम सोचते हैं, वह सही है, किन्तु संभव है चालीस वर्ष बाद हमें अपने वे ही विचार मूर्खतापूर्ण प्रतीत हों और हम उनपर हँसने लगें।"

० अनुभव-सार ०

पीठ पर भारी बोझ लादकर लम्बी यात्रा करने जैसा है यह मानव-जीवन। इसलिए धीमे और दृढ़ता से पग धरो ताकि गिरने का डर न रहे।

मन को य बात समझा लो कि अपूर्णता और असुविधा तो मानव-जीवन में अनिवार्य हैं। फिर न असंतोष सताएगा, न नैराश्य।

जब तुम्हें महात्वाकांक्षाएँ सताने लगें, तब उन बुरे दिनों को याद करो, जो तुमने जीवन में देखे हैं।

क्षमा मन की शांति और समाधान का मूल है। क्रोध तुम्हारा सबसे बड़ा शत्रु है। उसे पहचानों, उसका दमन करो।

यदि तुम जीतना-ही जीतना जनते हो और हारना नहीं जानते, तो निश्चय ही तुम्हारे भाग्य में बुरे दिन बदे हैं, सदा पैनी दृष्टि से दोष देखते रहो, परंतु दूसरों के दोष नहीं, अपने दोष ?

-जापान का राजा जनक शोगुन ईचासु

हम जो दिनरात सज्जनता का मुखौटा लगाए दूसरों को धोखा दे रहे हैं। संभव है बाहर वालों की नजरों में वह कुछ दिनों के लिए छिपा रहे, कोई उसे न परख सके, वह दुनिया को मालूम न हो पाए, परन्तु यह दुराव-छिपाव खुद अपनी आत्मा को धोखा देना है। बाहर वाले चाहे आपकी कमजोरियों को न जानें और कुछ दिनों तक आपकी कमजोरियों से अपरिचित रहें, किन्तु परमात्मा के अंश आपकी आत्मा से वह निर्बलताएँ भला क्योंकर छिपी रहेंगी ? 'आत्मा जानाति यत् पापम्।' आत्मा से हमारे कौन पाप-कर्म छिपे हैं ? वे आखिर कब तक छिपे रहेंगे ?

अतः, आत्म-विश्लेषण द्वारा निरन्तर अपने दोषों को स्वयं आलोचना करना और आत्म-सुधार करना चाहिए। इस पद्धति से आपकी कमजोरियों की संख्या घटती रहेगी और स्वस्थ उपयोगी आदतों का निर्माण होगा।

बिड़ला कालेज, भवानीमण्डी (राजस्थान)

शुक्रिया

श्री राजेन्द्रप्रसाद जैन
एडवोकेट,

[श्री जैन जी एक कुशल वकील और लेखक हैं । मननशील विषयों पर आप बड़े ही प्रभावशाली और प्रिय ढंग से प्रकाश डालते हैं ।

प्रस्तुत लेख में सत्यकथा द्वारा मनुष्य चरित्र की दुर्बलता को भगाने का जो सन्देश दिया गया है, वह पठनीय है । काश, पक्षी-जगत् हमें आशीर्वाद देता ! सम्पादक]

महाश्रमण महावीर ने कहा था-"मन-वचन-कर्म से किसी भी प्राणी को पीड़ा पहुँचाना हिंसा है-प्राणी मात्र समान हैं । उनका चिंतन मात्र मानव-समाज तक ही सीमित नहीं रहा-सम्पूर्ण विश्व के प्राणियों को उन्होंने अनुकम्पा की दृष्टि से देखा था, परखा था । वे जानते थे कि स्वतंत्रता की अभिलाषा एवं कामना प्राणी-मात्र का जन्म सिद्ध अधिकार है । अतः, प्राणी-मात्र की स्वतन्त्रता के प्रति आकांक्षा स्वाभाविक ही है । पिंजरे में बन्दी पक्षी के निकल भागने का कारण निरी मूर्खता एवं अज्ञान के अतिरिक्त कुछ नहीं-चाहे बन्दी पक्षी को रत्न-जटित स्वर्ण-रौप्य प्यालियों में भले ही दाना, पानी मिल रहा हो वह फड़फड़ाएगा-पंख तोड़ेगा- पिंजड़े की तीलियों से सिर फोड़ेगा, उसके सिर में प्रवाहित रक्त और उसका कण-कण स्वतन्त्रता इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों पर ऐसे काले धब्बे हैं जिसके लिए पशु-पक्षी जगत् सदैव तथा कथित विकसित मानव एवं स्वतंत्रतांके लिए गली-चौराहों पर गला फाड़ उद्‌घोष करने वाले तथाकथित राज-नेताओं और उनके अनुयायियों के समक्ष यह जलता प्रश्न "तुमने हमारे लिए क्या किया ?" खड़ा कर उन्हें उद्वेलित करता रहेगा ।

मुझे प्रसन्नता-मिश्रित आश्चर्य होता है, जब मैं अहिंसा के उच्च आदर्शों का परिपालन न करने वाले प्राणी भी अनुकम्पा के प्रभाव में कभी-कभी ऐतिहासिक निर्णय लेकर अहिंसा के आदर्शों पर चलने वाले प्राणियों के मानस पर अज्ञात प्रश्न-चिन्ह "तुमने इन बन्दी मूक प्राणियों के लिए क्या किया ?" स्थापित करते उनके मानस को झकझोड़ते हुए उन्हें चिन्तन के धरातल पर खड़ा करते हैं-ऐसी एक तस्वीर यदा-कदा मेरे मानस पर उभर जाती है-यह स्वर्णिम तस्वीर जीवन-पर्यन्त मेरे मानस पर अमिट रहेगी । मैं चाहता हूँ और हृदय से जानता हूँ कि मेरे जीवन में इन तस्वीरों का एक ढेर जमा हो जाए और मेरे महाप्रयाण की बेला में भी ये चमकीली तस्वीरें मेरी अन्तिम निधि के रूप में मेरे पास रहें और अगले जीवन में मैं जहाँ कहीं किन्हीं परिस्थितियों में जन्म लूँ-मेरी यह अमूल्य निधि मेरे पास रहे ।

वह तस्वीर है, जो कुछ मिला खा-पी लिया, जो कुछ पहनने को मिला पहनने वाले उस स्वर्गीय लाला लुहार की, जो मेरे आफिस के नीचे धूल एवं सीलन भरी कोठरी में चार रुपए मासिक किराये पर रह कर अपनी जिन्दगी व्यतीत कर रहे थे । उनकी आवश्यकताएँ-आकांक्षाएँ सीमित थीं ।-इस चकाचौंध भरे भौतिक संसार में एक अपरिग्रही अहिंसा-प्रेमी के परिवेश में उसने सम्पूर्ण जिन्दगी काट दी ।-उसने कभी समृद्धि एवं भौतिक प्रगति के सपने नहीं देखे । आजादी को समर्पित इस अजीब अशिक्षित प्राणी में उस दिन मानवता के दर्शन पा मैं कृतार्थ हो उठा था । मूसलाधार वर्षा ने जन-जीवन को ठप्प कर दिया था । तीन-चार

दिन से उसको एक पाई की प्राप्ति नहीं हुई, पर उसके चेहरे पर अभाव की रेखाएँ नहीं- पीड़ा की लकीरें नहीं । तभी एक देहाती ने तोते का एक टूटा पिंजरा उसके समक्ष रख उसकी टूटी तीलियों को ठीक करने को कहते हुए एक रुपए का रंगीन नोट उसके सामने किया । अनमने भाव से नोट को उँगलियों में दबाये कुछ क्षणों के लिए वह चिन्तन में डूब गया और फिर उस देहाती की ओर दृष्टि फेरकर कहने लगा,

“मेरे प्यारे मित्र ! तुम्हें पता होना चाहिए कि सैकड़ों माताओं की माँगों का सिन्दूर पुंछ गया, हजारों बहिनों के हाथों की रंगीन चूड़ियाँ-हमेशा-हमेशा के लिए चटक गईं, हजारों मासूम मुन्ने-मुनियों के सिरों से उनके माता-पिता की छाया उठ गई । तब कहीं आजादी आई । आजाद मुल्क का आजाद इन्सान, महज एक जून रोटी की खातिर इन मूक पक्षियों के बन्दी-गृहों का निर्माण कर आजीवन उन्हें तिल-तिल कर तड़पने को मजबूर कर दे, यह मुझसे नहीं होगा-हरगिज नहीं होगा ।

यह कहते-कहते एक रुपया और पिंजरा उसने उस देहाती को लौटा दिया । देहाती के चले जाने के पश्चात् मैंने लाला से प्रश्न किया,

“लाला’ तुम भूखे थे, तुम्हारी कुरबानी की दाद देता हूँ-तुम्हारी इन्सानियत को मेरा सलाम”-

आँसू से आँखें शीतल करते हुए लाला बोले, “आपने मेरे भावों का आदर किया, धन्यवाद । मैंने कुछ नहीं किया, महज अपना कर्तव्य निभाया । आजादी की देवी को चढ़ानेके लिए इस गरीब के पास क्या है सिवाय इस जलते भावों के ?—और मैंने देखा उसकी नेक आँखों से टपके आँसू मेरे फर्श को सर्द कर रहे थे ।

लाला आज इस दुनियाँ में नहीं हैं, पर उनकी तस्वीर मेरे दिल पर है-जब-जब वह तस्वीर मेरे ध्यान पर उभरती है एक जलता सवाल पैदा होता है---

“आजादी और बराबरी का आसमानफाड़ नारा लगाने वाले, जेलों में बन्दी जीवन का प्रत्यक्ष अनुभव कर सत्ता पा लेने वाले मेरे मित्र इस देश के इन जन-प्रतिनिधियों ने, केवल मनबहलावके लिए देश के करोड़ों बन्दी पशु--पक्षियों की आज़ादीके लिए क्या किया ?’’—

कुछ नहीं-कुछ नहीं-तो स्वतन्त्रता देवी को डालने वाला सुमन चढ़ाने को वे इस ओर अब तो कुछ करें, जब तक इस देव-धरा पर पशु-पक्षी बन्दी हैं आजादी अधूरी है ——

श्रीमाल भवन
भवानीमण्डी (राज०)

बोध-कथा

या खुदा, तेरा कितना शुक्र है

एक थे शेख सादी । एक बार उनके जूते फट गए, उन्होंने उन्हें मरम्मत करवा-करवा कर पहनना शुरू किया; परन्तु इस तरह कब तक पहनते ? आखिर एक दिन आया कि मरम्मत होने की कोई गुंजाइश न रही और जूते फेंक देने पड़े ।

अब दूसरा जोड़ा जूता कहाँ से आए ? कौन दे ? क्यों दे ? फकीर थे । उनसे किसी को बदले में क्या लाभ होता है ।

धीरे-धीरे नंगे पैर रहने की आदत पड़ गई और कभी महसूस भी नहीं हुआ कि जूता नहीं पहन रखा है ।

ईद के दिन बड़ी मस्जिद में नमाज पढ़ने गए, जहाँ हजारों आदमी और भी गए थे । सब लोग अपने-अपने जूते कतारों में खोलकर मस्जिद में जा रहे थे । शेख सादी भी जूता खोलने के लिए कतार में गए । जब जूता खोलनेके लिए पाँव उठाया तो देखा कि पैर में जूता ही नहीं था । दिल पर क्या गुजरी होगी, भगवान् जाने ।

वहाँ से हटकर मस्जिद जाने लगे, तो देखा कि दो लकड़ियों पर एक ऐसा व्यक्ति अन्दर जा रहा है, जिसके जूते तो क्या, पाँव ही नहीं हैं । शेख सादी हैरान हो गए । खुदा की ओर हाथ उठाकर प्रार्थना की, “या खुदा, तेरा कितना शुक्र है, तूने मुझे पाँव दिये हैं ।”

राजस्थानी लोकगाथा

डूंगजी-जवारजी

लेखक

डॉ. रूपचन्द पारीक
एम ए०, पी० एच डी.

[श्री पारीक जी उच्चकोटि के लेखक और राजस्थानी के प्राध्यापक हैं। विविध विषयों पर आपके लेख पठनीय होते हैं।

प्रस्तुत लेख में डाकू डूंगर जी की राष्ट्रीयता और अत्मीयता का परिचय कराया गया है, जो लोक जीवन की जिह्वा पर आसीन है। काश! इसका अनुकरण अनेक लोग करते। —सम्पादक-]

राजस्थान में प्रचलित एवं प्रसिद्ध वीरकथात्मक लोकगाथा के नायकों के प्रति जन-मानस में व्याप्त श्रद्धा उनके महत्त्व को प्रकट करती है। इनमें से कुछ के पात्र ऐतिहासिक अवश्य हैं, पर जन-मानस ने उनके साथ अलौकिक क्रियाकलापों को जोड़ कर उन्हें अपने रंग में रंग डाला है। डूंगजी और जवारजी के वीर-कृत्यों से संबद्ध यह लोकगाथा भोपों द्वारा गाई जाती है। भोपे प्रायः युगल रूप में रहते हैं। भोपा गीतों का प्रारम्भ करता है और भोपी अलाप लेकर कथा आगे बढ़ाती है।

डूंगसिंह बठींठा के जागीरदार थे। उस समय देश में अंग्रेजों की ताकत निरन्तर बढ़ रही थी। भगवान् का प्रकोप भी था। मनुष्य के लिए अन्न और पशुओं के लिए घास का मिलना दुर्लभ था। डूंगसिंह के आश्रित उनकी आँखों के आगे ही भूख से व्याकुल तड़प रहे थे। अंगरेजों का त्रास देने वाला राज्य-चक्र गतिशील था। ऐसी स्थिति डूंगसिंहके लिए असह्य थी। अतएव डूंगसिंह और उनके भतीजे जवारजी ने प्रजा की रक्षाके लिए तत्कालीन शासकों के विरुद्ध शस्त्र ग्रहण किया। डूंगसिंह के दो परम मित्र थे-लोट्या जाट और करणिया मीणा।

एक बार डूंगसिंह ने रामगढ़ में अंग्रेजों की छावनी को लूटने का विचार किया। अपने दोनों प्रिय मित्रों को वहाँ जानकारी लेनेके लिए भेजा। लोट्या जाट और करणिया मीणा ने वेष बदला और रामगढ़ के सेठों की थाह ली। सेठ घुरसामल और अनन्तमल की कतारें जा रही थीं। उनमें अपार धन, सोना और मोती-माणिक्य आदि थे। लोट्या जाट ने डूंगसिंह के पास संदेश भेजा। सात सवारों को लेकर डूंगसिंह आया और सेठों का सारा धन लूट लिया। बोरी काट कर सारा धन लुटा दिया गया। ग्वाले चुनते-चुनते हार गए, लोगों ने डूंगसिंह की जयजयकार की। सात बोरे लेकर डूंगसिंह पुष्कर गए, वहाँ भी पर्याप्त धन बाँटा। चारण-भाटों का दारिद्रय दूर हो गया।

उसके बाद डूंगसिंह अपनी ससुराल झड़वासा ग्राम आए। उनके सालों ने दूध और घी से उनका सत्कार किया-घी से धोकर तथा दूध से भिगोकर चावल पकाए। डूंगसिंह सुखपूर्वक वहाँ रहा। उधर रामगढ़ के सेठों ने अंग्रेजों को पत्र लिखा कि डूंगसिंह उनके धन के बारे में जान गया है। अतः, उसे दंड देना जरूरी है। आज उसने कतारें लूटी हैं, कल हवेली भी लूटेगा।

अंगरेजों ने शीघ्र चार सुसज्जित सेनाएँ सीकर भेजी । सीकर के ठाकुर प्रतापसिंह से डूंगसिंह को पकड़ने में सहायता माँगी गई । उसने डूंगसिंह का सम्बन्धी होने के कारण इन्कार कर दिया, पर फिर भी उसने डूंगसिंह का पता बता दिया ।

अंगरेजी सेना ने झड़वासा घेर लिया तथा डूंगसिंह के साले भैंरूसिंह को बुलाकर कहा कि या तो वह डूंगसिंह को उनको सौंप दे अन्यथा उसे बन्दी बना दिया जाएगा । उसने सहायता देने का वादा किया। भैंरूसिंह ने डूँगसिंह को इतनी ज्यादा शराब पिलाई कि वह मदहोश हो गया । तब अचेत और निःशस्त्र डूंगसिंह को अंगरेजों ने बन्दी बना लिया । चेत होने पर डूंगसिंह ने अपने को जंजीरों से जकड़ा पाया । उसे बहुत गुस्सा आया । अंगरेजों ने पूरी तरह सुरक्षा का प्रबन्ध कर उसे आगरे के किले में कैद कर दिया ।

होली का त्योहार पास आने लगा । जवारसिंह और उनके साथी होली का उत्सव मनाने लगे । बोतलें खुलने लगीं, प्याली खाली होने लगी । लोट्या जाट और करणिया मीणा भी इस उत्सव में शामिल थे । ऐसे वक्त डूंगसिंह की रानी बाहर आई और जवारसिंह तथा अन्य सभी का तिरस्कार करती हुई कहने लगी, 'तुम्हारा काका अंगरेजों का कैदी है और तुम होली मना रहे हो । तुम स्त्री का वेष धारण कर लो, मैं तुम्हारे काका को छुड़ाने अकेली ही जाती हूँ ।' रानी के इन शब्दों से सभी उत्साह में आ गए । उसी समय सभा की गई । पाँच पान का बीड़ा रखा गया । लोट्या जाट ने बीड़ा उठाया और डूंगसिंह को छुड़ाने चला ।

लोट्या जाट ने गेरुआ वस्त्र पहने और बंदियों के सामने धूनी रमा कर बैठ गया । वह दिन को भूखा रहता और रात में छिपकर पूरा भोजन कर लेता । इस तरह वह छह महीने तक बैठा रहा । छठे महीने में अंगरेजों ने उसे कुछ रुपए देकर जाने को कहा । जाट ने जबाब दिया, 'मैं तो जोगी हूँ, मुझे रुपयों से क्या मतलब ? रुपए तो गृहस्थ लेते हैं । मैं तो गंगा-स्नान को जा रहा हूँ । एक झलक डूंगसिंह की देखना चाहता हूँ ।' अंगरेज उसकी लुभावनी बातों में आ गए । इसलिए प्रहरियों को आज्ञा दी गई कि कठोर पहरे में लोट्या को डूंगसिंह से मिलने दिया जाए । लोट्या किले में गया । चार प्रहरी आगे और चार उसके पीछे चले । वेष बदले हुए करणिया मीणा भी साथ हो गया । इन दोनों ने चतुराई से किले के सभी भेद जान लिये । लोट्या डूंगसिंह से मिला तो उसकी आँखें भर-भर आईं । डूंगसिंह ने इशारे से ही उसे बता दिया कि सात दिन के बाद उसे काले पानी भेजा जा रहा है । लोट्या ने आश्वासन दिया कि सात दिन के भीतर ही उसे छुड़ा लिया जाएगा । लोट्या किले के बाहर आया और एक तेज ऊँट पर सवार होकर रातोरात सीकर पहुँचा । उसी समय समस्त परिजन इकट्ठे हुए । सबने निश्चय किया कि बारात के रूप में आगरा पहुँचें । भूपालसिंह दूल्हा बने । अपने वस्त्रों में अस्त्र छिपाकर सभी राजपूत बारात के रूप में आगरा गए। आगरे से तीन कोस पर डेरे लगा दिये गए ।

यमुना नदी के किनारे पर भेड़ों का समूह चर रहा था । करणिया भी अच्छी कीमत देकर एक मेढ़ा लाया । उसकी गर्दन तोड़ कर मुर्दा बनाया । सभी सरदार सिर मुंडा अरथी में शामिल हुए । कम्पनी बाग में चिता जलाई गई । घी-नारियल के साथ दाह-संस्कार होने लगा । चिता देखकर अंग्रेज क्रोधित हुए और कहने लगे, 'मुर्दा यहाँ क्यों जलाया ?' राजपूतों ने भी कुपित होकर उत्तर दिया कि बावन गढ़ी के सरदार मेढ़ासिंह को पुनः मुर्दा कहा, तो खून बहा देंगे । अंग्रेजों ने कहा, " तीन घड़ी में तीया, बारह में द्वादश और तेरह घड़ी में तेरही करके सीधे भाग जाओ ।" राजपूतों ने उत्तर दिया कि वे सभी काम विधिपूर्वक करके ही जाएँगे । अंगरेज यह सोच कर लौट गए कि ये स्वभाव से ही अक्खड़ हैं, इनसे झगड़ा कौन करे ।

उधर ताजिये निकलने का दिन आया । अंगरेज ताजियों के साथ थे । इधर मरदों का दाव लगा । लोट्या जाट और करणिया मीणा ने देवी का ध्यान किया और सीढ़ी की सहायता से चुने हुए वीरों के साथ किले में कूद पड़े । लोट्या डूंगजी की बेड़ी काटने लगा । डूंग

शेष पृष्ठ ३२ का

उद्योग-परक

टेक्स्टाइल - मेनेचेस्टर:पाली

— श्री अर्जुन सिंह शेखावत

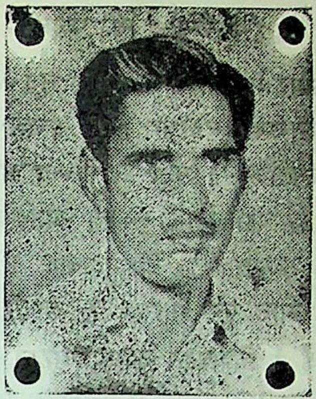
लेखक

मुगल-काल में ढाका की मलमल सारे देश-विदेश में ख्याति प्राप्त थी। इसी प्रकार आज पाली की रंगीन वायल प्रसिद्ध है। पाली में वायल-उद्योग घर-घर एवं गली-गली में फैल गया है। जगह-जगह मकानों की छतों पर एवं बाँस के अडाँणों पर रंग-बिरंगी वायलों के थान के थान हवा की लहरों में लहराते बड़े आकर्षक लगते हैं, मानो सारी नगरी नव-वधू-सी इन्द्रधनुषी साड़ी में सजी-धजी अपनी छबि पर इतराती है, अंगूरी नारी नारंगी ओढणा ओढ़े अपनी सुन्दरता में चार चाँद लगा रही है, तो कहीं चन्दम चम्पाई पद्मिनी सतरंगी साड़ी में गर्व से जा रही है। देश-विदेश में वायल की साड़ियाँ महिला जगत् में अत्यधिक लोकप्रिय हैं।

(१) ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

पाली की रंगाई-छपाई का इतिहास अत्यधिक प्राचीन है। मुगल-काल से ही यहाँ की रंगाई-छपाई देश में प्रसिद्ध थी। उस समय भी यहाँ के मुसलमान-वह कार्य करते थे और आज भी वंश-परम्परा से उनके हाथ ही इसके कारीगर हैं। ब्रिटिश काल में रंगाई-छपाई के कार्य का पतन हुआ। जैसी कि अंग्रेजों की नीति कुटीर-उद्योगों को हतोत्साह करने की रही थी। स्वतन्त्रोपरान्त इस धंधे का पुनरुत्थान अथवा पुनरोदय हुआ। पहले खादी और लट्ठे पर ही रंगाई-छपाई होती थी। अब गत १५ वर्षों से वायल पर रंगाई-छपाई होने लगी है। टेक्सटाइल रंगाई-छपाई का उद्योग, पिछली एक शताब्दी से एक पुरानी पद्धति से चला आ रहा था। दस-बारह वर्ष पूर्व इस उद्योग को सही और नया मोड़ मिला है। पूरे भारत में पाली की वायल ने अपनी विशेषता की छाप छोड़ी है। छापों के करीब २०० घर हैं, रंगाई-छपाई का इनका खानदानी धन्धा है। उम्मेद मिल में मोटर मशीन से रंगाई पहले से ही होती है। इस मिल की स्थापना १९४० में हुई थी। सर्व प्रथम रूपचन्द जी एवं समीरमलजी ने बम्बई में वायल रंगाई-छपाई की फैक्ट्री लगाई थी। फिर पाली में वायल फैक्ट्री लगाने का विचार सर्वप्रथम श्री समीरमल लोढ़ा के मस्तिष्क में आया और इन्होंने पाली में "लोढ़ा फैब्रिक्स" १९६० में खोली। प्रारम्भ में कुण्डों और ढोपलें में रंग घोलकर रंगते थे। श्री समीरमल आज ६५ वर्ष के हैं और अपनी आँखों के सामने पाली के वायल व्यवसाय को फलता-फूलता देख रहे हैं।

वायल छपाई-रंगाई की प्रणाली (प्रोसेस)

वायलों को छपाने एवं रंगने के लिए निम्नांकित प्रोसेस हैं :-

1. ब्लीचिंग 2. डिजोइनिंग, 3. डाइनिंग
4. प्रिन्टिंग 5. स्टेन्टरिंग, 6 फोल्डिंग तथा पेकिंग

उक्त छः विधियों द्वारा वायल को धोना, रंगना, डिजायन बनाना, डाई बनाना, छपाई करना, कड़ेप देना और अन्त में समेट कर पेकिंग करना आदि होता है। केवल दस फैक्ट्रियाँ ही उक्त सारे छः प्रोसेस करती हैं। शेष केवल एक या दो प्रोसेस के कार्य करती हैं। कोई केवल धुलाई का काम करती हैं या तो कोई केवल रंगाई या छपाई का, तो कोई फोल्डिंग एवं पैकिंग का काम करती हैं। इससे कार्य तेज गति से होता है एवं माल

शीघ्रातिशीघ्र तैयार करके मार्केट में भेजा जा सकता है ।

देश-विदेश और कच्चा-पक्का माल :

पाली नगर में अधिकांश कच्चा सूत बम्बई से खरीदा जाता है । भिवण्डी (महाराष्ट्र) एवं इच्छालकरण(कोलापुर) में वायल बनती है । वहाँ से कच्चा माल पाली मंगवाया जाता है, जहाँ रंगाई--छपाई आदि होती है । रंग (केमिकल्स) अधिकांश अहमदाबाद से मंगाया जाता है । पक्का माल पूरे भारत के अतिरिक्त विदेशों में भी जाता है । विशेषकर नेपाल, भूटान, आसाम, ब्रह्मा, अरब एवं अफ्रीका आदि में जाता है । सुधा इन्डस्ट्रीज कॉर्पोरेशन कलर केमिकल्स बनाती है और निर्यात भी करती है ।

आँकड़ों में पाली-वायल :-

पाली नगर में कुल वायल फैक्ट्रियाँ ३०० हैं तथा ४०० और लगाने की योजना है । इस फैक्ट्रियों में करीब २०,००० मजदूर कार्य कर रहे हैं, ४९ ट्रांसपोर्ट कम्पनियाँ हैं, ५००-६०० व्यापारी अलग से कच्चा पक्का माल खरीदते-बेचते हैं, प्रतिदिन २०,००० गाँठें अर्थात् दस लाख मीटर वायल तैयार होती हैं । सूत नम्बर ३६-४६ से १००-१२० तक एवं नायलोन, रूबिया आदि की भो रंगाई--छपाई आदि होती है । इस प्रकार पन्द्रह लाख का उत्पादन प्रतिदिन होता है । एस० के० शाह एण्ड कं० अकेली का उत्पादन ५० लाख से एक करोड़ के बीच प्रति वर्ष होता है । इन फैक्ट्रियों में करोड़ों की पूँजी लगी हुई है ।

पाली में राजस्थान से बाहर से भी आकर लोग फैक्ट्रियाँ लगा रहे हैं । पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र, मद्रास, उत्तर प्रदेश व मध्यप्रदेश से भी यहाँ आए हैं तथा आ रहे हैं । राजस्थान से बालोतरा, बीकानेर, बाडमेर; नागोर, सीकर, शेखावाटी आदि के लोगों ने भी यहाँ फैक्ट्रियाँ लगाई हैं । सुधा इण्डस्ट्रीज कॉर्पोरेशन ने निर्यात का काम शुरू किया है, यह कलर के लिए केमिकल्स बनाते हैं, जापान से नमूना पारित हो गया है ।

विशेषताएँ :-

पाली के वायल उद्योग की अनेक विशेषताएँ भी है, जिनमें प्रमुख निम्नांकित हैं ।

(१) हैण्ड प्रोसेस :

यहाँ इस धंधे की सबसे बड़ी विशेषता है कि प्रारम्भ से अंत तक सारा काम हाथ से होता है । यद्यपि इसी प्रकार हैण्डप्रोसेस से कुछ काम जयपुर, जोधपुर, अजमेर, ब्यावर, किशनगढ़, बालोतरा में भी होता है, परन्तु देश में इस प्रकार की ९० प्रतिशत युनिट फैक्ट्रियाँ पाली में हैं । हैण्ड प्रोसेस में विशेष बड़ी मशीनें नहीं होतीं, न बिजली, तेल या अन्य शक्तियों से संचालित की जाती हैं, मजदूर स्वयं ही अपने हाथ-पाँवों से चलाते हैं, वंशपरम्परा से युगों से वे अत्यधिक अभ्यस्त हो गए हैं । इनकी मजदूरी २०-२५ रुपए प्रति दिन तक है, इसके तकनिकी विशेषज्ञ व्यक्ति तो दो हजार मासिक तक वेतन लेते हैं, इनकी आर्थिक स्थिति बड़ी सम्पन्न है ।

(२) दूसरी विशेषता यह है कि यहाँ के मजदूरों एवं टेक्नीशियनों को किसी प्रकार का कोई प्रशिक्षण नहीं दिया जाता है । वे वंश--परम्परा से इस धंधे को सीखते आए हैं । यहाँ तक कि रंग आदि तोल कर नहीं डालते, बल्कि मुट्ठियाँ भरकर अंदाज से डालते हैं जो बिलकुल सही उतरता है ।

(३) पाली के प्राकृतिक जल की यह देन रही है कि इसमें कपड़े पर रंग का निखार विशेष महत्त्वपूर्ण ढंग से बैठता है । पाली की जलवायु इस उद्योग के लिए अत्यधिक अनुकूल है । ऐसा रंग में निखार एवं चमक अन्य स्थानों के जल से नहीं आ पाया है ।

(४) वर्ष में चार माह वर्षा में ये फैक्ट्रियाँ बंद रहती हैं । क्योंकि कपड़े सुखाना संभव नहीं होता और मजदूर भी अपने खेतों पर खेती के लिए चले जाते हैं ।

(६) जन-हानि :

फैक्ट्रियों के प्रदूषित जल एवं वायु का प्रभाव जन-स्वाथ्य पर बुरा पड़ रहा है । यहाँ के दूषित जल एवं वायु से खुजली, पाण्डुरोग, उदरशूल, ज्वर आदि रोग फैलते हैं । इसी प्रकार अलकोहल, एसिड (तेजाब) आदि से कृषि-भूमि जल जाती है और उर्वरा शक्ति

नष्ट हो जाती है । फैक्ट्रियों का पानी नगर के बाहर कृषि-योग्य भूमि में जाता है इससे कृषि-भूमि को हानि हो रही है ।

(७) भावी योजना :

नगर में जल-प्रदूषण के कारण नगर के बाहर इण्डस्ट्रीज एशिया नम्बर ३ की योजना बनाई गई है, जिसके अनुसार सभी फैक्ट्रियाँ नगर के बाहर शिफ्ट हो जाएँगी । नगर में कोई फैक्ट्री नहीं रहेगी । सरकार की यह योजना तो सुन्दर है ।

एसोसियेशन :

वायल फैक्ट्रियों का अपना एक एसोशियेशन है जिसका नाम "राजस्थान टेक्सटाइल्स हैण्ड प्रोसेस एसोशियेशन" है, जिसकी स्थापना जुलाई १९७१ में हुई थी । ऐसोशियेसन रजिस्टर्ड है, इसका अपना संविधान है, इसके लीगल एडवाइजर आदि हैं । सामान्य सभा का चुनाव प्रतिवर्ष होता है । वर्तमान में इसके मंत्री श्री सोहनलाल तोसनीवाल हैं । मसराइज डियूटी से साढ़े चार हजार प्रति यूनिट प्रति माह प्रत्येक फैक्ट्री को सरकार को देना पड़ता था । एसोशियेशन ने केन्द्रीय सरकार से संघर्ष किया और २७-९-७४ को ये माफ करवा दी । स्टन्टरिन डियुटी पाँच हजार प्रति माह लगती है, इसे भी माफ करने हेतु संघर्ष जारी है । प्रतिवर्ष बजट के समय प्रायः फैक्ट्रियों का काम बंद हो जाता है, अस्थिरता की स्थिति बन जाती है । पता नहीं टैक्स की क्या नीति सरकार की इस वर्ष रहेगी । इस वर्ष पावर लूम सेटेक्स हटाने से इस उद्योग पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा । कारण कि मशीन से उत्पन्न माल और हाथ से बना माल बाजार में बराबर में आकर खड़ा हो गया, इससे हैण्डप्रोसेस की खपत एवं माँग कम हो गई थी । कुछ माह तक फैक्ट्रियाँ बंद-सी हो गई थीं । अंत में सरकार ने जब पुनः पावर लूम पर टेक्स लगाया और हैण्डप्रोसेस वायल को टेक्स से मुक्त रखा, तब यह धंधा पुनः जम पाया ।

इसी प्रकार एक पावर लूम वस्त्र व्यापार संघ भी है, जिसमें ४००-५०० व्यापारी हैं, जो वायल खरीदते-

[शेष पृष्ठ ३० कालम १ पर]

° कहकहे °

आधुनिक सहकारी भण्डार में एक छह साल का लड़का रोने लगा । सेल्समैन ने पूछा, 'क्या बात है ?' 'मम्मी खो गई ।' लड़का बोला ।

'तुम्हें मम्मी की स्कर्ट पकड़े रखनी चाहिए थी ।' 'पर वहाँ तक तो मेरा हाथ ही नहीं पहुँचता था ।' बच्चे की मायूसी आँखों से बह निकली ।

× × ×

'आपका वकील कौन है ?' मैजिस्ट्रेट ने पूछा । 'मैं अपनी पैरवी खुद करूँगा ।' मुलजिम ने शान्तभाव से उत्तर दिया ।

' तुम अपराधी हो या... !' मैजिस्ट्रेट का प्रश्न पूरा नहीं हुआ था कि मुलजिम बोला,

'मैं बिलकुल बेकसूर हूँ हुजूर ! अन्यथा मैं वकील अवश्य रखता ।'

× × ×

एक महत्वाकांक्षी लेखक ने अपने दोस्त से बड़े उत्साह से कहा, "आज मैंने एक ऐसी चीज लिखी, जो निस्सन्देह किसी भी पत्रिका द्वारा स्वीकृत हो जाएगी ।"

"आखिर मैं भी तो देखूँ ?" दोस्त जिज्ञासा प्रकट करने लगा ।

लेखक ने एक वर्ष के चन्दे का चेक सामने कर दिया ।

× × ×

"तुम्हारे पति को पूर्णतया आराम करना चाहिए । मैं यह सोने की गोलियाँ दिए देता हूँ ।" डाक्टर ने कहा ।

"ये गोलियाँ मैं उन्हें कब दूँ " पत्नी ने पूछा "उन्हें देने की आवश्यकता नहीं, तुम खुद खा लेना" डॉक्टर ने सलाह दी ।

पृष्ठ १९ का शेष

बेचते हैं। महाराज उम्मेद मील पाली को भी माल देते-लेते हैं। कच्चा माल खरीदकर ये लोग फैक्ट्रियों को देते हैं और पक्का माल खरीद कर बेचते हैं।

यहाँ एक जिला उद्योग-कार्यालय भी है, यह भी फैक्ट्रियों के विकास एवं प्रगति में सहयोग देता है। जैसे निर्यात-सुविधा दिलाना, लाइसेन्स दिलवाना, प्लाट दिलवाना, ऋण दिलवाना, बिजली पानी फोन की व्यवस्था करवाना, नई योजना बनाना एवं सही मार्गदर्शन देना आदि है।

सुझाव :

इस उद्योग का विस्तार से सर्वेक्षण करवाया जाए, टेकनिकल प्रशिक्षण हेतु व्यवस्था की जाए, एक प्रयोगशाला स्थापित की जाए, एक्ससाइज डियूटी बिलकुल माफ की जाए, पाली जिले को पिछड़ा हुआ जिला घोषित किया जाए, प्रदूषित जल के शुद्धीकरण की व्यवस्था की जाए, टेकनिशियनों और तकनिकी कारीगरों को प्रशिक्षण दिया जाए तथा उनकी एक टीम विदेशों में इस उद्योग के अध्ययन हेतु भेजी जाए। यदि इन पर सरकार ध्यान दे, तो पाली भारत का वायल उद्योग का (टेक्सटायल) का मेनेचेस्टर बन सकता है। इसकी चौमुखी प्रगति एवं व्यापक विकास के अवरुद्ध द्वार खुल सकते हैं और राजस्थान से ही नहीं देश के कोने कोने से लोग यहाँ फैक्ट्रियाँ लगाने आएँगे और इस उद्योग का महत्त्व उभर कर आएगा। केन्द्र एवं राजस्थान सरकार को इस ओर ध्यान देना चाहिए।

सर्वाधिक उत्पादन करने वाली श्रेष्ठ फैक्ट्रियों में प्रमुख हैं :- लोव फेब्रिक्स, प्रकाश टेक्सटाइल, बसंत ट्रेडिंग कम्पनी, एस०के० शाह एण्ड कम्पनी, चतुरभुज भंवरलाल इन्डस्ट्रीज, जिनेन्द्र टैक्सटाइल, बोरडाँ डाइंग कम्पनी, नाहटा टेक्सटाइल, केशरीचन्द महाराणा डाइंग एण्ड प्रिंटिंग मिल्स, छीपा करीम सुल्तान मोतीवाला, आदि हैं। इनका वार्षिक औसत उत्पादन ५० लाख से डेढ़ करोड़ तक का है!

राजकीय माध्य० विद्यालय खीमेल
पो० फालनागाँव, वाया-फालना स्टेशन, (राजस्थान)

सुश्री सावित्री डागा
एम० ए०

सुख-दुःख

जीवन की सुख-सुविधा
जीवन की कोमलता
हरी-हरी पत्तियों से लदे हुए गमले में
लम्बे समय बाद खिले एक फूल-सी
कितनी प्रतीक्षा के बाद एक फूल खिला
किन्तु मुरझा गया चन्द क्षण बाद ही
फिर वही काँटों-भरी टहनियाँ, फिर वे ही पत्तियां
दुःख-सी लग रहीं,
शेष रही सुख के उस सुमन की सुवास-सी
बस केवल याद ही!
मानव का सुख
जैसे रात के सपने-सा
दो क्षण को बहला कर अधूरा टूट गया
या, राह में जो मीत मिला राह में ही छूट गया
याद केवल शेष रही
उसने हा बाँह गही
कभी-कभी जीवन में डूबते मानस की!

११८, नेहरू पार्क, जोधपुर (राज०)

व्यापार व्यवहार की शिक्षा-शती

(जीवन की सफलता के स्वर्णिम सूत्र)

श्री नयनचन्द बोरड़िया

बी०ए०,बी–एस०सी०, एल–एल०बी०

[श्री बोरड़िया जी बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी के सन् १९३१ई.के ग्रेज्युएट हैं । आप एक कुशल व्यापारी और अध्ययनशील वृद्ध युवक हैं ।

आपकी चिन्तन-कणिकाओं की प्रथम किश्त मई १९८०के 'सुधाबिन्दु' में दी गई है । यह दूसरी किश्त पाठकों के लाभार्थ दी जा रही है ।

सम्पादक]

३४-अवसर कम नहीं हैं वे हर जगह हैं ।

३५-विज्ञापन की तीन कसौटियाँ हैं क्या उससे पर्याप्त बेचान मिलता है, क्या उससे आपकी आबरू में बढ़ावा होता है क्या वह मूल्य की पंक्ति बनाता है।

३६-इतनी बातें कठिन हैं (१) क्षमा माँगना (२) पुनः शुरू करना (३) सलाह देना (४) गलती कबूल करना (५) क्रोध को दबाना (६) दातार होना (७) कामयाबी हासिल करने में जुटे रहना (८) गलतियाँ न करना (९) प्रयत्न करते रहना (१०) अपने अन्तःकरण की आवाज को मान देना (११) अपनी गल्तियों से लाभ उठाना (१२) गंदे विचारों को रोकना (१३) विरोध को सहन करना (१४) मूर्ख के साथ विवाद करना (१५) माफ करना (१६) दूसरे के अपराधों को भूल जाना (१७) पहले सोचना बाद में करना (१८) कम को बहुत करना (१९) अपने बुरे मिजाज को काबू में रखना (२०) अपने रुतबे को कम रखना (२१) बहुत बाबतों में से अच्छी बाबत चुनना (२२) विपत्ति में धैर्य रखना (२३) यश से न्याय-नीति का महत्त्व देना (२४) दिखावटीपन और वास्तविकता का समझना ।

३७-जीवन किसी दरजे में स्वयं का संयम है और किसी दरजे में स्वयं का वर्णन है । वह जो दोनों को समझता है, वह सफल एवं प्रसन्न है ।

३८-वह जो बहुत से काम एक साथ करने का प्रयत्न करता है, वह उनके विस्तार के दलदल में फँस जाता है ।

३९-कोई व्यक्ति ऐसा नहीं है, जिसके जीवन में कोई समय भाग्योदय का न आए । वह खिड़की से प्रवेश करता है, लेकिन उसका स्वागत न होने से वह दरवाजे द्वारा भाग निकलता है ।

४०-क्या एक सत्तर वर्षीय पुरुष कम्पनी का प्रबन्ध सम्हाल सकता है, यह प्रश्न अधिकतर इस बात पर आधारित है कि उसका युवा-वर्ग के साथ कैसा बर्ताव है ।

४१-जो व्यक्ति भविष्य से डरता है, वह वर्तमान में विशेष सफलता नहीं पा सकता है ।

४२-वह जो धुंधले में है, वह हमारा मुख्य व्यवसाय नहीं है, परन्तु वह जो अभी हाथ में है, उसे करना है ।

४३-हमारी असफलता के बहुत कारण हैं या तो हम प्रबन्ध करने में अयोग्य हैं या अपने कामों में कन्ट्रोल नहीं कर पाते या उससे किनारा करते हैं या उसपर सोचते ही नहीं ।

४४-सम्पत्ति से प्रीति नहीं खरीदी जाती है, लेकिन उसके द्वारा अच्छे इरादे हासिल कर सकते हैं ।

४५-बिना विज्ञापन के व्यवसाय करना वैसा ही है जैसा किसी व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति को अंधेरे में आँख से इशारा करना ।

४६-कभी अवसर आदमी को बना सकता है । फिर भी प्रायः आदमी अवसरों को पैदा करते हैं ।

४७-जोरों से काम करना कठिन नहीं है, लेकिन कड़ी मेहनत शारीरिक एवं मानसिक शक्तियों के लिए हानिकारक है ।

४८-अनुशासन, सतर्कता, विनयशीलता युवक-वर्ग को आगे बढ़ाती हैं ।

४९–एक काम अच्छी तरह से करना, इससे बढ़कर संसार में दूसरी खुशी नहीं है।

५०–किसी व्यक्ति के गुण उसके धन से नहीं नापे जाने चाहिए। धन में प्रायः लोलुपता और स्वार्थ-परता है।

५१–मनुष्य की परीक्षा इससे होती है कि वह दूसरों के लिये क्या करता है न कि स्वयं के लिए।

५२–तुम्हारे कार्य का ध्येय सिर्फ पैसा ही न हो पहला ध्येय अच्छापन होना चाहिए। अच्छी मजदूरी अवश्य मिलेगी, मालिक अच्छे काम करनेवालों की इज्जत करता है।

५३–प्रसन्न चित रहो, प्रिय बनो, मुसकराते रहो, ये सब हालतों में तुम्हें श्रेष्ठ बना देंगे–तुम्हारे जीवन के प्रशिक्षण को सुधारेंगे, तुम ऐसे हो जाओगे कि प्रत्येक दिशा में स्वस्थता से प्रसारण कर सको।

५४–अद्भुत नाम पैदा करे, वह पुरुष बड़ा नहीं है, परन्तु वह बड़ा है जो कठिन काम को सरल तरीके से करे, वह व्यक्ति बड़ा प्रसारण कर सकता है।

(क्रमशः)

(पृष्ठ २६ का शेष)

जी ने कहा कि किले में सत्तर कैदी और हैं। पहले उन्हें छुड़ाओ। लोट्या ने वैसा ही किया। चौबीस बंदी एक साथ उतरे और सीढ़ी टूट गई। किले के सिंहद्वार पर भयंकर युद्ध हुआ। वीर राजपूत दरवाजा तोड़ कर बाहर आए। उसके बाद डूगसिंह जोधपुर चले गए।

डूगजी-जवारजी का वृत्त ऐतिहासिक है। अंगरेजों ने उन्हें डाकू कहा है, परन्तु लोक-मानस तो उनकी पूजा करता आया है। डूगसिंह परमार्थी था, लोट्या जब उसकी बेड़ियाँ काटने पहुँचा तो उसने कहा–

म्हारी बेड़ी काटयां लोटाया ना निसरेगो नाम
म्हारी बंध में सीतर बंध्या वाकी पैली काट।
कै को रोवै बैण भाणजी कै को रोवै माय
पैलां तो बंध वाकी काटो पाछा म्हारी काट।

डूगसिंह के चरित्र में एक सच्चे राजपूत के सभी गुण थे। इसलिए इस वीर का गीत आज भी श्रद्धापूर्वक गाया जाता है। लोट्या जाट का चरित्र मित्रता का आदर्श और वीरता का अनुपम उदाहरण है।

माणकचौक, जोधपुर (राज०)

स्वास्थ्य-परक

आँवला

बवासीर खूनी में–सूखे आँवले बारीक करके छ मासा सुबह, छ मासा शाम को गाय के दूध के साथ खाएँ।

पेशाब की जलन में–हरे आँवले का रस ५ तोला, शहद २ तोला दोनों मिलाकर दिन में एक-दो बार पिएँ। पेशाब खुलकर आएगा और जलन को ठीक करेगा। यह एक खुराक का वजन है।

शक्ति-वर्धन में–सूखे आँवले एक पाव बारीक करके आँवलें के आधे पाव रस में बीस दिन तक खरल करो। सूखने पर बराबर की मिश्री मिलाओ, खुराक दो मासा शाम को गाय के दूध के साथ खाने से धातु को बहुत फायदा करता है।

सिर के चकराने में–गर्मियों में चक्कर आते हों, जी घबराता हो, तो आंवले का शरबत पिएँ।

बलगम दूर करने के लिए–आँवला सूखा दो मासा, मुलहठी २ मासा बारीक करके दिन में दो बार गर्म पानी के साथ खाने से बलगम साफ हो जाता है।

श्वेत प्रदर में–आंवला तीन मासा बारीक करके छ मासा शहद में मिलाकर दिन में एकबार पन्द्रह दिन खाए, खटाई का पहेज करें।

नकसीर दूर करनेके लिए–अगर नाक से खून बन्द न हो, तो आधा पाव आंवले बारीक करके बकरी के दूध में मिलाकर माथे और सिर पर लेप करें। पीली मिट्टी गीली करके नाक पर लगाये।

दिल की धड़कन में–जिन आदमियों का दिल बहुत धड़कता हो एक छटाँक आँवले के मुरब्बे पर चाँदी के बर्क लगाकर सुबह निहार मुख कुछ दिन खाए बहुत फायदा करेगा।

कब्ज–हड़े, बहेड़ा व आँवला बराबर मिलाकर बारीक पीस रखो। एक तोला गर्म दूध के साथ खाने से कब्ज दूर हो जाता है। दो माशा पानी के साथ रोजाना खाने से स्वप्न-दोष होगा।

– अनुभवी

करधान-परक

क्या आप २५०० रुपयों से अधिक का भुगतान नकद कर रहे हैं ?

श्री रमेश मोदी, चार्टर्ड एकाउन्टेंट

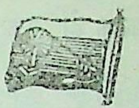

आयकर कानून, १९६१ की धारा ४०ए (३) के अन्दर यह प्रावधान है कि कुछ विशेष प्रस्तावित परिस्थितियों को छोड़ कर यदि २५०० रुपयों से अधिक का भुगतान (किसी भी खर्च की मद में) आप क्रास चेक अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा नहीं करते हैं, तो आयकर अधिकारी को यह अधिकार है कि वह उस खर्च को आपकी आय में जोड़ सकता है, चाहे आयकर कानून की किसी भी अन्य धारा में वह खर्च जायज रूप से आपको वापस मिलता ही क्यों न हो । इसे पढ़ कर ही आप समझ सकते हैं कि यह प्रावधान कितना दूरगामी है और जरा सी भी चूक अथवा गफ़लत का कितना भयंकर दुष्परिणाम निकल सकता है । इस लेख में कानूनी भाषा की जटिलता से परे इस प्रावधान का संक्षेप में मैंने जिक्र किया है । यदि पाठक इससे तनिक भी लाभान्वित हों, तो मैं अपनी मेहनत को सार्थक समझूँगा ।

तीखा विरोधाभास :

१-जैसा कि इस लेख के प्रारम्भ में ही मैंने बताया है कि किसी भी खर्च की मद में यदि २५०० रुपयों से अधिक का भुगतान (कुछ अपवादों को छोड़ कर जिनके बारे में नीचे विवेचना की गई है) क्रास चेक अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा न किया गया हो, तो वह खर्च आपकी टैक्स योग्य आय में से बाद नहीं मिलेगा चाहे आय-उपार्जन की दृष्टि से वह खर्च कितना भी जरूरी अथवा जायज क्यों न हो । यहाँ सवाल उठता है कि 'खर्च' क्या है ? क्या केवल वही मद जो कि आमतौर पर शुद्ध-लाभ (net-Profit) निर्धारित करने के लिए लाभ-हानि (प्रॉफिट एण्ड लास एकाउण्ट) में (डेबिट) दिखाई जाती हैं, उधार खाते खर्च की परिभाषा में आएगी अथवा इस शब्द का कुछ और भी अर्थ है ? हालाँकि ऊपरी तौर पर यही बात समझ में आती है और ठीक भी लगती है, किन्तु सच्चाई इससे पृथक् है । 'खर्च' शब्द जैसा कि इस धारा में प्रयोग किया गया है केवल gross profit से कम की जाने वाली मद के लिए ही नहीं; अपितु कुल लाभ के निर्धारण में आने वाली मदों के लिए भी लागू होता है । आशय यह है कि ट्रेडिंग अथवा मेन्युफेक्चरिंग हिसाब में भी जो खर्च आप करते हैं (उदाहरणार्थ माल की खरीद, मजदूरों का वेतन, कुली-कार्टेज एवं अन्य मेन्यु० खर्च) यदि उनमें से भी किसी का भुगतान २५०० रुपयों से अधिक आप नकद करते हैं और यह भुगतान छूट अथवा अपवादों की सूची में नहीं आता है, तो यह खर्च आपको आपकी कर-योग्य राशि में से बाद नहीं मिलेगा । माल की खरीद के अन्तर्गत किया जाने वाला भुगतान 'खर्च' की परिभाषा में नहीं आना चाहिए-यह तर्क हर बार करदाता की तरफ से दिया जाता रहा है, किन्तु देश के विभिन्न उच्च-न्यायालयों ने अलग-अलग मौकों पर एक मत से इस तर्क को अस्वीकार कर दिया है । अतः जब तक उच्चतम न्यायालय से इस सम्बन्ध में कोई फैसला करदाता के पक्ष में नहीं हो जाता, तब तक यही सर्वमान्य कानून है कि माल की खरीद भी इस धारा के लिए 'खर्च' ही मानी जाएगी । फर्ज कीजिए आप किसी से भी अपने उद्योग अथवा व्यापार के लिए दस हजार रुपयों का कच्चा अथवा तैयार माल खरीदते हैं और उसका भुगतान नकद कर देते हैं । यदि आपका यह लेनदेन कानून द्वारा प्रस्तावित छूट की परिधि में नहीं आता,

तो आयकर अधिकारी सप्रेम ये दस हजार रुपए आपकी करपात्र राशि में जोड़ सकता है और उसपर टैक्स वसूल कर सकता है । इस तरह की कई मदें यदि आपके बही या रजिस्टर में हों तो, आप स्वतः अनुमान लगा सकते हैं कि परिणाम कितना भयानक हो सकता है । बिलकुल सही–और व्यापारके लिए किया गया खर्च भी इस छोटी–सी चूक के कारण आपकी 'आय' बन सकता है । कितना तीखा है यह विरोधाभास ?

२. आइए, अब एक दूसरा उदाहरण देखें । मान लीजिए कि आप अपनी बही व्यापारी हिसाबी रीति के आधार पर रखते हैं और आपकी वर्ष–समाप्ति ३१ मार्च है । आर्थिक वित्तीय वर्ष १९७८–७९में आपका कानूनी सलाहकार आपको अपनी फीस का बिल भेजता है, जो कि ३००० रुपए है और आप वर्षान्त के पहले इसका भुगतान नहीं करते अतः अपने रजिस्टरों में कानूनी खर्च खाते (लीगल एक्सपेंसेस एकाउण्ट) नांवे कर देते हैं और अपने सलाहकार के खाते जमा कर लेते हैं–३,००० रुपयों से । आयकर अधिकारी उस वर्ष का आपका हिसाब (एसेसमेण्ट) पूरा कर देता है और यह खर्च आपको काटकर मिल जाता है । अब आर्थिक वित्तीय वर्ष १९७९–८०में आप इस बिल का नकद भुगतान अपने कानूनी सलाहकार को भेज देते हैं । यह बात इस वर्ष के एसेसमेण्ट के दौरान आपके आयकर अधिकारी के ध्यान में भी आ जाती है । ऐसी हालत में आपके आयकर अधिकारी को कानूनन इस बात का हक है कि वह आपके पिछले वर्ष (१९७८—७९) का एसेसमेण्ट जो कि पूरा हो चुका है, पुनः सुधार सकता है और जो ३,००० रुपये कानूनी खर्च की मद में आपको काटकर मिले थे उन्हें उस वर्ष की आय में जोड़ कर आपसे टैक्स वसूल कर सकता है । यह बात हर तरह के लेन–देन पर लागू होती है । इसप्रकार हम देखते हैं कि केवल हाथों–हाथ किये नकद भुगतान पर ही नहीं, अपितु खर्च के लिए किये गये प्रोविजन के भुगतान पर भी यह धारा लागू होती है । अतः आप को हमेशा इस बात का ध्यान रखना है कि किसी भी खर्च की मद में कोई भी इकलौता लेन देन (चाहे वह चालू वर्ष से संबन्धित हो अथवा पिछले वर्षों से) २५०० रुपयों से ऊपर क्रास चेक अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा ही किया जाए ।

३. अब मैं उन मुख्य–मुख्य परिस्थितियों का जिक्र करूँगा जिनके अन्दर यदि आप २५०० रुपयों से अधिक का भुगतान नकद भी करते हैं, तो भी आप पर यह धारा लागू नहीं होती :–

(क) बैंक को किये गए भुगतान पर (यदि आप बैंक से कोई रेलवे रसीद (आर. आर.) २५०० रुपयों से अधिक नकद दे कर भी छुड़ाते हैं, तो इस छूट में आ जाते हैं ।)

(ख) जीवन बीमा निगम को किये गए भुगतान पर (यदि आप जीवन बीमा पालिसी का प्रीमियम २५०० रुपयों से अधिक नकद भी करते हैं तो इस छूट में आ जाते हैं ।)

(ग) युनिट ट्रस्ट ऑफ इण्डिया को किये गए भुगतान पर ।

(घ) यदि १ अप्रैल १९६९ के पहले आपने किसी पार्टी से कोई ठेका या शर्त किया हो और उसके अन्दर आपको कोई भुगतान नकद ही करना हो, तो आप कर सकते हैं ।

(च) बुक एडजेस्टमेण्ट द्वारा किये गए भुगतान पर । जैसा कि आपने गौर किया होगा धारा ४० ए (३) वहीं लागू होती है जहाँ नकद रुपयों द्वारा भुगतान किया गया हो । यदि किसी लेनदेन में नकद रुपयों का भुगतान न हो तो निश्चय ही यह धारा उसपर लागू नहीं होगी । मान लीजिए ए ने बी से १०,००० रुपयों का माल खरीदा और बी ने ए से ८,००० रुपयों की एक मशीन खरीदी । इस प्रकार आखिरी तौर पर ए द्वारा बी को २,००० रुपये देने रह गए । इसका भुगतान बाकायदा नकद भी कर सकता है एवं माल की खरीद के बदले मशीन की बिक्री का एडजेस्टमेन्ट कानूनन कर सकता है । हालाँकि दोनों सौदे २५०० रुपयों से अधिक के हैं ।

(छ) कृषि सम्बन्धी या वन-उत्पादन संबंधी या दूध उत्पादन या मुर्गी पालन एवं बिना बिजली की मदद से चलने वाले कुटीर उद्योगों में उत्पादित किसी भी माल की खरीद का भुगतान २५०० रुपयों से अधिक नकद किया जा सकता है बशर्ते कि भुगतान खेतिहर अथवा उपजाने वाले अथवा उत्पादनकर्त्ता को ही दिया जाए ।

(ज) यदि भुगतान किसी ऐसे शहर अथवा गाँव में किया जाए जहाँ बैंक की सुविधा नहीं है और जिसे भुगतान किया जाए वह आमतौर पर वहीं रहता हो अथवा व्यापार करता हो ।

(झ) अन्य किसी भी ऐसी परिस्थिति में २५०० रुपयों से अधिक के नकद किये गए भुगतान पर यह धारा लागू नहीं होगी । यदि करदाता आयकर अधिकारी को इस बात से सन्तुष्ट कर सके कि किन्हीं विशेष कारणों से अथवा अपरिहार्य परिस्थिति जन्य हालतों में क्रास चेक अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा भुगतान करना या तो असम्भव था अथवा व्यापारिक दृष्टि से दुष्कर था । वैसी हालत में करदाता को भुगतान की वास्तविकता और जिसको भुगतान किया गया है (प्राप्तकर्ता) उसका प्रमाण आयकर अधिकारी को देना होगा । कौन-सी ऐसी परिस्थिति उपरोक्त छूट में आएगी, इसका कोई सर्व-सम्मत विधान बना सकना न तो व्यावहारिक है और न ही संभव । सेण्ट्रल बोर्ड आफ डाइरेक्ट टैक्सेस ने एक सर्क्युलर द्वारा ऐसी कुछ स्थितियाँ बताई हैं जिनके अन्दर इस मद में छूट मिल सकती है ।

उदाहरण देखिए

(ए) माल खरीदने और बेचने वाला एक दूसरे से अपरिचित हो ।

(बी) सौदा किसी ऐसे स्थान पर हो जहाँ खरीददार अथवा बेचने वाले में किसी एक (अथवा दोनों) का बैंक-खाता नहीं हो ।

(सी) सौदा एवं उसका भुगतान उस दिन हो जब बैंक की छुट्टी हो ।

(डी) यदि माल बेचने वाला क्रास चेक अथवा बैंक ड्राफ्ट ? लेने से इनकार करता हो एवं उस विशिष्ट व्यापारी से माल न ले पाने पर खरीददार के व्यापारिक हितों को नुकशान पहुँचता हो अथवा पहुँचने की सम्भावना हो ।

(ई) यदि नकद भुगतान करने पर खरीददार को कुछ विशेष नकद छूट (कैस डिस्काउण्ट) मिलती हो ।

(एफ) यदि बैंक कर्मचारियों के हड़ताल अथवा किसी भी अन्य वजह से चेक, क्लीयरिंग आपरेशन बन्द हो ।

उपर्युक्त कुछ विशिष्ट परिस्थितियों में यदि २५०० रुपयों से नकद भुगतान किया जाता है तो यह धारा ४० ए (३) का उल्लंघन नहीं माना जाएगा, किंतु ऐसी हालत में नकद भुगतान करने वालों को प्रत्येक सौदे के संदर्भ में माल बेचने वाले से एक पत्र ले लेना होगा, जिसमें माल बेचने वाले का पूरा नाम और पता हो, उसके सैल्स टैक्स एवं इन्कम टैक्स नम्बर हों जिससे कि आयकर अधिकारी यदि किसी तरह की जानकारी लेना चाहे, तो ले सके ।

ऊपर मैंने आयकर कानून की धारा ४० ए (३) और उससे सम्बन्धित अन्य बातों की चर्चा की है, किंतु इससे पहले कि मैं अपना लेख समाप्त करूँ, दो चार बातें और कहना अप्रासंगिक नहीं होगा ।

(i) Loan transactions (नकद रुपयों के लेन-देन) पर यह धारा लागू नहीं होती है । इस प्रकार यदि आप किसी से पचास हजार रुपए नकद लेते हैं और कुछ समय उपरांत नकद रूप में ही आप उसे वापस लौटा देते हैं, तो यह सौदा धारा ४० ए (३) की परिधि से बाहर होगा । किंतु इस तरह के कैश ट्रान्जेक्सन पर बनने वाला व्याज यदि २५०० रुपयों से अधिक हो तो उसका भुगतान नकद नहीं कर सकेंगे ।

(ii) कमीशन एजेन्ट अथवा आढ़तियों द्वारा कमीशन पर बेचने को लिये जाने वाले माल पर अथवा उसके पेटे अग्रिम भुगतान (advance payment) किये जाने पर भी यह धारा लागू नहीं होती है, किंतु यदि कमीशन एजेन्ट अथवा आढ़तिया अपने स्वयं के लिए माल खरीदता हो (न कि कमीशन पर बेचने

के लिए) वैसी हालत में धारा ४० ए (३) उसपर लागू होगी।

(iii) Excise Duty अथवा Sales tax का भुगतान, रेलवे का किराया अथवा बैगन बुकिंग के संदर्भ में होने वाला खर्च भी २५०० रुपयों से अधिक नकद किया जा सकता है।

(iv) यदि उधार पर खरीदे गए माल का भुगतान भी (बाद में) एक बार में २५०० रुपयों से अधिक नकद किया जाए, तो इस प्रावधान के अन्तर्गत आयकर अधिकारी उसे आपकी करपात्र आय में जोड़ सकता है। ऊपर क्रम (२) के अन्तर्गत इसे सोदाहरण बताया गया है।

C/o मोदी एण्ड एसोसिएट्स
१०१, न्यू क्लाथ मार्केट, अहमदाबाद

ज्योतिष मार्तण्ड (मासिक) पत्रिका

"ज्योतिषमार्तण्ड" पत्रिका एक मासिक प्रकाशन है जो कि १९६९ से प्रकाशित हो रहा है। इसका वार्षिक शुल्क २५. ५० रु० है। छै रंगों का टाइटिल कवर और ७० पन्नों की इस पत्रिका में ज्योतिष-शास्त्र, अंक-शास्त्र, सामुद्रिक शास्त्र, रमल-शास्त्र, स्वर-शास्त्र आदि के अतिरिक्त तन्त्र-मन्त्र, यन्त्र, पुनर्जन्म, प्रेतात्मा आदि अन्य कई गूढ़ विषयों पर सैद्धान्तिक ज्योतिषीय आधार लेकर भारत के विद्वानों के खोजपूर्ण उच्चकोटि के गवेषणात्मक लेख सरल हिन्दी भाषा में प्रकाशित होते हैं। इसके साथ ही महापुरुषों की जन्मकुण्डलियाँ एवं उनका फलित ज्योतिष पाठ, प्रश्न-उत्तर, सूक्ष्म पञ्चाग, मासिक भविष्यफल, व्यापारिक भविष्य आदि अनेक स्तम्भों के कारण यह पत्रिका अलौकिक तत्त्वों और दुर्लभ साहित्य से भरपूर है।

आशा है, इस पत्रिका को पढ़कर आप अवश्य आनन्दित होंगे। निःशुल्क पत्रिका भेजने में वर्तमान कठिनाइयों के कारण हम असमर्थ हैं। आप इस पत्रिका के वार्षिक ग्राहक बनकर प्रचार-प्रसार में सहयोग दें।

व्यवस्थापिका 'ज्योतिष मार्तण्ड"
डी १९, गणेश मार्ग, बापूनगर, जयपुर-३०२००४
(राज०)

व्यंग्य-काव्य

महँगाई

काका बैसवारी

प्राण प्रिय महँगाई! तुम मुझसे न रूठो,
हम मिनिस्टर हैं तुम्हें जाने न देंगे.
देशभक्ति ईमानदारी तेरी सौतन ?
हम मिनिस्टर हैं उसे आने न देंगे।

सत्य-सस्तापन-अहिंसा-परमोधर्मा,
त्याग कर जनता बनेगी तेरी चेरी,
भूँकते कुत्ते हों चाहे डगर में,
मस्त हाथी की तरह है चाल मेरी।
खुल के लवमैरिज करें जो रात में,
दिन के पण्डित! अब तुम्हें ताने न देंगे।
प्राणप्रिय महँगाई तुम मुझसे न रूठो
हम मिनिस्टर हैं तुम्हें जाने न देंगे।

खाई थी पन्द्रह अगस्त को कसम मैंने,
वह नहीं इतिहास हम दोहराएँगे।
बाटिका सींची शहीदों की लहू से,
उसी में टी पार्टी करवाएँ गे।
देश की कीमत किसी बिधि कम पड़े,
ऐसा सस्तापन कभी लाने न देंगे।

प्राणप्रिय मँहगाई तुम मुझसे न रूठो,
हम मिनिस्टर हैं तुम्हें जाने न देंगे।
पो० अकवा, जिला- उन्नाव (उ० प्र०)

आत्म-विश्लेषण

(श्रेष्ठ चिन्तन का संकलक पाक्षिक)

संपादक : अशोक कुमार,
सह सम्पादक : राजेन्द्र मानव
वार्षिक शुल्क १२ रु., : १ प्रति ६७ पैसे
३०९/७ चौधरियान स्ट्रीट, जींद १२६१०२

प्रार्थना की आवश्यकता

आर्त और अर्थार्थी भक्तके लिए प्रार्थना ही एक मात्र मंत्र है ।

प्रार्थना द्वारा आर्त के दुःखों की निवृत्ति होती है और अर्थार्थी के संकल्पों की पूर्ति होती है ।

अभावों से निवृत्तिके लिएभी प्रार्थना का सहारा लेना, संकल्पों की पूर्ति के लिए भी प्रार्थना का सहारा लेना ।

अभाव से निवृत्ति भगवद्भाव द्वारा होती है और भगवद्भाव की प्राप्ति प्रार्थना से होगी । दोनोंके लिए तुम्हें प्रार्थना का सहारा लेना ही पड़ेगा ।

प्रार्थना का सहारा लेने से तुम्हारे अभावों की निवृत्ति भी हो जाएगी और संकल्पों की पूर्ति भी हो जाएगी ।

संकल्पों की पूर्ति होना ही महत्त्व की बात नहीं है, बल्कि संकल्पों से निवृत्ति पाना अधिक महत्त्वपूर्ण है ।

जापान में एक सुशिक्षित सज्जन ने मुझसे पूछा, "आज के विज्ञान के युग में भगवान् की प्रार्थना की क्या आवश्यकता है ?"

मैंने उत्तर दिया, "विज्ञान कदाचित् हमारे संकल्पों की पूर्ति कर सकता है, किंतु संकल्पों के बन्धन से मुक्ति नहीं दिला सकता । प्रार्थना द्वारा ही संकल्प से निवृत्ति मिलती है । इसीलिए प्रार्थना की आवश्यकता है ।"

—पूज्य वैरागी बाबा

बच्चों का एक मात्र प्यार लघु मासिक

राकेट पढ़िये

वार्षिक शुल्क ७ रुपया मनीआर्डर द्वारा भेजकर सदस्य बने

राकेट-प्रकाशन

आकोला-३१२२०५

घर बैठे संगीत सीखिए

घर बैठे गायन, वादन और नृत्य सीखनेके लिए चौबीस रुपए भेजकर 'संगीत' मासिक पत्र का ग्राहक बन जाइए । इसमें संगीत के शिक्षात्मक लेखों के साथ-साथ शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत (भजन, गीत, और गजल), फिल्म-संगीत (नई फिल्मों के गाने) संगीत लिपि सहित, लोक-संगीत सरल गेय काव्य संगीतकारों के सचित्र परिचय तथा भेंट-वार्ताएँ एवं काका हाथरसी के हास्य-व्यंग की कविता इत्यादि अत्यंत उपयोगी सामग्री प्रकाशित होती है ।

संगीत सम्बन्धी हर प्रकार की पुस्तकोंके लिए मूल्य सूची मुफ़्त मँगाएँ ।

सम्पर्क : 'संगीत' कार्यालय
हाथरस—२०४१०१ (उ० प्र०)

रंगायन

लोकसंस्कृति तथा लोककला का हिन्दी
मासिक पत्र । वार्षिक मूल्य ७ रुपये
सम्पादक : डा० महेन्द्र भानावत
लोककला मण्डल, उदयपुर

विवेक विकास

[साहित्य-संस्कृति-कला का स्तीय मासिक]
सम्पादक : रामनिवास स्वामी
वार्षिक शुल्क १२ रुपये
आजीवन सदस्य शुल्क : २२१ रुपये
सम्पर्क : केसरगढ़, जवाहरलाल मार्ग, जयपुर-४

तारिका

रोचक तथा जीवनपयोगी मासिक पत्रिका
वार्षिका शुल्क ५रु. आजीवन शुल्क ५०रु०
सम्पर्क-कहानी-लेखन महाविद्यालय
अम्बाला छावनी-१३३००१ (पंजाब)

समिति समाचार

स्वतंत्रता दिवस समारोह :

राजस्थान सेवा समिति संचालित राजस्थान हिंदी हाईस्कूल तथा ज्ञानोदय हिंदी–प्राथमिक शाला की ओर से चौंतीसवें स्वातंत्र्यदिन समारोह की योजना समिति–प्रांगण में की गई । समिति के अध्यक्ष श्री अशोककुमार डागा के शुभ हाथों राष्ट्रध्वज फहराया गया । विद्यालय के बालकों का मार्चपास्ट हुआ । बैंड-बाजे के साथ राष्ट्रगीत गाये गए । बालकों ने भिन्न–भिन्न भावों से भरे हुए आठ गीत लय पूर्वक गाये । हस्तलिखित अंक, जिसे विद्यालय के विद्यार्थियों ने बड़े मनोयोग से तैयार किया था, उसका विमोचन अध्यक्ष जी ने किया और धन्यवाद दिया ।

इस अवसर पर सेठ जिन्दल टैक्सटाइल्स वाले श्री चन्द्रभान जी अग्रवाल की ओर से उपस्थित बालकों और सज्जनों को लड्डू बाँटे गए ।

अध्यक्ष महोदय ने बालकों को अपने सद्ज्ञान और सदाचरण से देश का संगठन और गौरव बढ़ाने की प्रेरणा दी ।

इस कार्यक्रम में समिति के पदाधिकारी, सदस्य, अभिभावक और अन्य सज्जनों ने उपस्थिति देकर अधिक शोभा प्रदान की ।

समिति के नये सदस्य :

राजस्थान सेवा समिति के नये सदस्यों की नामावली सधन्यवाद प्रकाशित की जा रही है–

४०२–श्री अल्काबेक्स मेटल प्रा० लि०
२८ सिद्धार्थ भवन,
तनुमती नर्सिंग होम के सामने
रिलीफ रोड अहमदाबाद ३८०००१

४०३– श्री गोविन्दराम पूनमचन्द
४२७।११, चोखा बाजार
कालूपुर अहमदाबाद ३८०००२

४०४–श्री गौरीशंकर लक्ष्मीनारायण
२, न्यू क्लोथ मार्केट अहमदाबाद ३८०००२

४०५–श्री गोविन्दराम रामधन अग्रवाल
१२ बी, कृष्णकुंज सोसायटी
रसाला मार्ग, एलिसब्रिज, अहमदाबाद ३८०००६

४०६–श्री मे० टैक्सटाइल मार्केटिंग एजेण्ट
२२८, न्यू क्लाथ मार्केट अहमदाबाद ३८०००२

४०७–श्री क्लोम डिस्ट्रीब्यूटर्स
१६२, न्यू क्लाथ मार्केट अहमदाबाद ३८०००२

४०८–श्री पारसमल एण्ड कम्पनी
११७, न्यू क्लाथ मार्केट अहमदाबाद ३८०००२

४०९–श्री हीराचन्द शान्तिलाल
१२४, न्यू क्लाथ मार्केट अहमदाबाद ३८०००२

४१०–श्री मेसर्स मदनलाल लक्ष्मीचन्द मेहरा
११६।१, न्यू क्लाथ मार्केट अहमदाबाद ३८०००२

४११–श्री गोयल एण्ड कम्पनी
दाणापीठ कालूपुर, अहमदाबाद ३८०००२

४१२–श्री कमल मेटल कार्पोरेशन
लुणसावाड़, सत्यनारायण मन्दिर चौक
दरियापुर, अहमदाबाद ३८०००१

४१३–श्री केसरिया जी मेटल कार्पोरेशन
लुणसावाड़, दरियापुर–अहमदाबाद ३८०००१

४१४–श्री शान्ति मेटल सिंडिकेट
१७८८, भगवती पोल के नाके पर
लुणसावाड, दरियापुर, अहमदाबाद ३८०००१

४१५–श्री के० आर० मेटल कार्पोरेशन
छगरा की पोल, लुणसावाड़
दरियापुर, अहमदाबाद ३८०००१

४१६–श्री इण्टरनेशनल एक्जीम कार्पोरेशन
७, नवीनचन्द पार्क,
शाहीबाग, अहमदाबाद ३८०००४

Give
Ambiprincess Dress Materials
the total test ... Check the fabric
Check the finish
Check the design
Check the quality
Check the price
Check the name

Shri Ambica Mills

Bidhan-AG42 B

मेसर्स विनोदकुमार अग्रवाल

पट्टा, लेडीज एवं जेन्ट्स कलर पोपलीन, चैक शर्टिंग, पोपलीन प्रिन्ट,
पोलीस्टर प्लेन तथा प्रिंटिंग एवं पोलीनोजिक प्रिन्ट के थोक व्यापारी

33/A, मस्कती मार्केट

अहमदाबाद ३८०००२

T. No. 382310, 384735

टेलीफोन नं० 362546

श्री भगवती ट्रेडिंग कम्पनी

न्यू स्वदेशी मिल आफ अहमदाबाद

की

प्रिन्ट फेयरलेडी, तथा राजरत्न, रंगीन शाम के विक्रेता :

अन्य प्रतिष्ठान

श्री जय अम्बे ट्रेडिंग कम्पनी

श्री जगदम्बा ट्रेडिंग कम्पनी

१६८, न्यू क्लॉथ मार्केट

अहमदाबाद-२

सेन्चुरी की नई देन

कोजीकॉट

कॉटन शर्टिंग

सुन्दर सुहावने चेक्स में उपलब्ध है।

पहनने में ऊनी कपड़े-सा आनन्द मिलता है।

निर्माता

दि सेन्चुरी स्पिनिंग एण्ड मैन्युफेक्चरिंग कंपनी लिमिटेड

'सेन्चुरी भवन', डॉ. एनीबेजण्ट रोड, वरली

बम्बई–४०००२५

हमारे पास हैं लुभावने कपड़े
आपके पास है आकर्षक व्यक्तित्व
जी हाँ, कपड़े की इतनी किस्में कि
हर व्यक्ति अपना मनपसन्द कपड़ा चुन सके,
सबके लिए–खास तौर से आपके लिए

जियाजी

टेरीन, सूटिंग-शर्टिङ्ग, काटन-शर्टिङ्ग प्रिन्ट्स

निर्माता :

जियाजीराव काटन मिल्स लि०

बिरलानगर, ग्वालियर (म० प्र०)

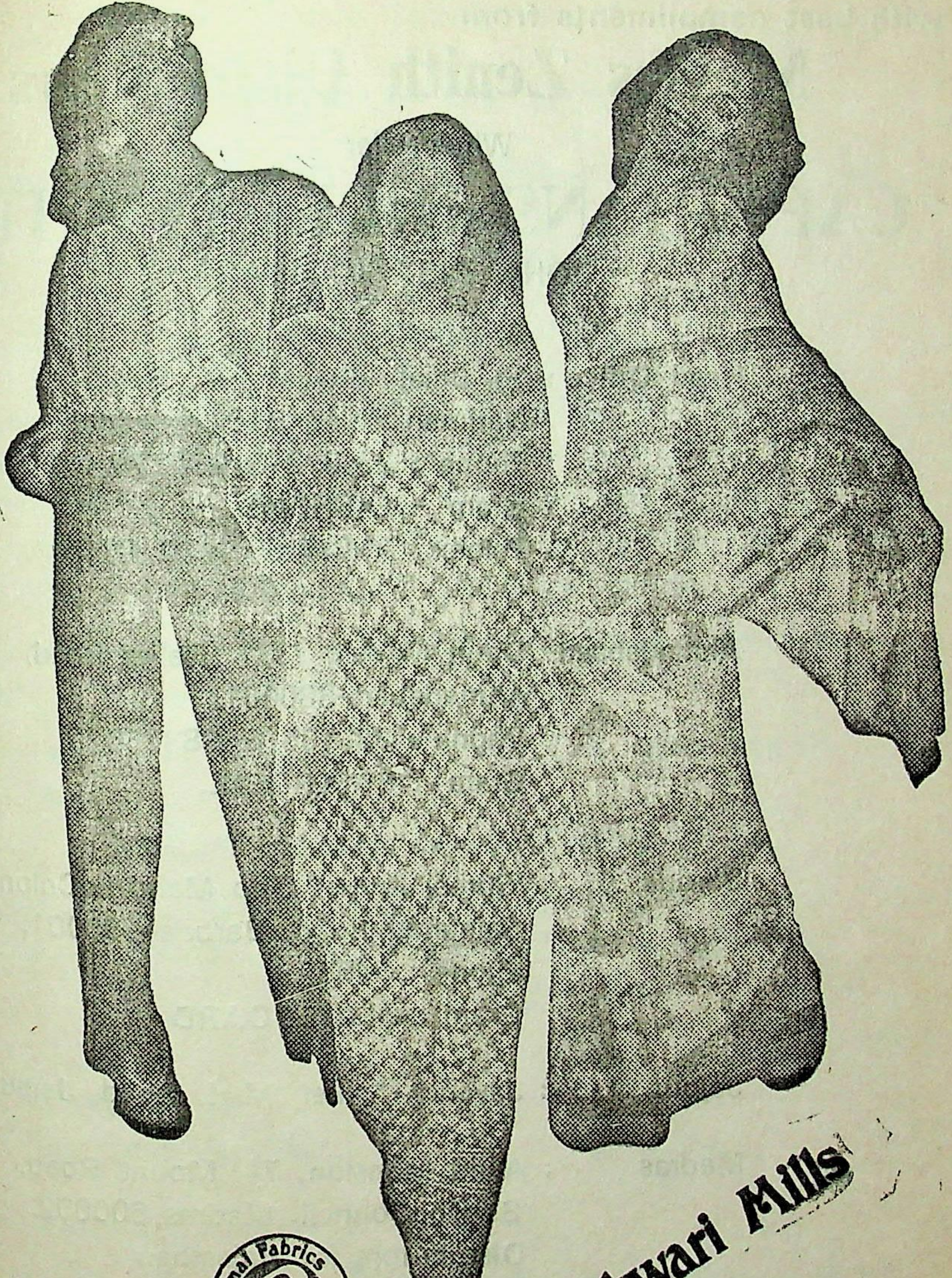

Piramal Mills

Piramal Fabrics

Piramal Fabrics

Maheshwari Mills

Manufacturers of Cotton & Polyester Suitings, Shirtings & Dress Materials.

with best compliments from

Messes Zenith Distributors

Wholeseller

CAPRIHANS INDIA LIMITED

ROHA. DIST. KOLABA

Head Office : 46, Bajaj Bhavan, 4th Floor,
Nariman Point, Bombay–400021.
Phone : 234022 & 230370.
Gram : FASHFAB
Teloex : 011–4209 IPTC IN

Ahmedabaad : Daud Manzil, 2381, Relief Road,
Ahmedabad–380001.
Phone : 383195 & 383756
Gram : PAPERDEAL,

Baroda : 'Shreej Krupa, Opp Mahavir Colony,
Rajmahal Road, Baroda–390001.
Phone : 54567.
Gram : GLAZEBOARD.

Jajpur : Jayanti Market, M. I. Road, Jaipur.

Madras : Ahad Mansion, 74, Mount Road,
British Council, Madras–600002.
Distributors for Rajasthan

Hydrabad Asbestos Cement Products Ltd.

HYDERABAD–500018.

INSIST ON
"LOTUS ASBESTOS CEMENT PRODUCTS"
Lotus Asbestos Cement Pressure Pipes
for
WATER SUPPLY AND IRRIGATION

Manufactured by :–Shri Digvijay Cement Company Limited
Digvijaynagar
Ahmedabad–382470.

A. C. PRESSURE PIPES

(1) Cool, pure, clean water–the source of life is made possible from distant sources by the use of "LOTUS" Asbestos Cement Pressure Pipes. Strong as cast iron and full proof against rust, corrosion or incrustation, Lotus Pressure Pipes are economical, easy to drill and maintain the same flow even after a number of years

Exclusive Lamination process makes it lighter and stronger, conforming to ISS No. 1592/1970.

Available for different pressure ratings in diametres 80 mm. to 40– mm.

"LOTUS" Asbestos Cement Roofing Sheets.

(2) "LOTUS" AC Roofing sheets and Building Boards for housing industrial roofing and partition and interior decorations.

Phones : 867264
867265
867267
867266

Gram ; "LAXCEMENT"
Telex : AM–Lotus–012–345

Please address Enquiries to :—

Laxmi Cement Distributors Private Ltd.
DIGVIJAYNAGAR
AHMEDABAD-382470
"LIONS DO NOT COMPROMISE NOR DO WE"

USE

ORIENT

FANS

With Best Compliments from

ORIENT TRADING COMPANY

Gandhi Road, Opp. Fatasa Pole,
AHMEDABAD.

Phone 383834 & 383836

In fant
B. C. M. Suitings
Made just for today's High Fashions
and make them better,
Much Better
classical in feeling
and
Bright and Soft Colourful Composition
B, C. M.
POLYESTER SUITINGS & SHIRTINGS

The Birla Cotton Spg.
&
Wvg Mills Ltd

P. O. Birla lines,
Delhi-110007.

Gram : PARAMSUKHI
Telex : 012-552-Gupta-in-

Phone Offi. : 382138
Resi. : 441348

Selling Agents for Kerala :

- The Mahendra Mills Ltd.
- The Bharat Vijay Mills Ltd. ,Kalol.
- The Maheshwari Mills Ltd., Ahmedabad.

With Best Compliments from

K. G. AND COMPANY

Cloth Merchants & Commission Agents.
H. A. Market Kapasia Bazar,
Ahmedabad-380 002.

Branch :

80, NEHRUNAGAR, TRICHUR-680 006.

Gram : PARAMSUKHI
Phone : 20258

ફોન
233261
233342
233417

TUNGABHADRA INDUSTRIES LTD.

"Bakhtwar" 7th Floor,
Nariman Point, Bombay-400 021

Manufacturers of :

"Tushar Brand" Vanaspati
"Niralall" Brand Washing Soap

Leading Exporters of :

Groundnut Deoiled Cake
Ricebran Extractions

WE MANUFACTURE
A.A.C. AND A.C.S.R. CONDUCTORS
AND

ALUMINIUM WIRES
FOR YOUR REQUIREMENT IN ANY SIZE AND QUANTITY
PLEASE CONTACT

PREM CONDUCTORS
PRIVATE LIMITED

Registered Office
211, New Cloth market
Ahmedabad-380002
Phone : 360551/367730

Administrative Office & Works
Station Road,
Vatava (Ahmedabad) 382440
Phone : 877283/877281

With best compliments from

Gram : Good Faith

Phone : 366283
Resi. : 444229

PRAYAGRAJ VINODKUMAR

Cloth Merchant & Commission Agents

187, New Cloth market Ahmedabad–380002

A.M.PROCESSORS

A. M. Processors
3, Embassy Market,
Near Dinesh Hall,
Ashram Road,
Ahmedabad-380 009.
Phone : Off. 49616 Fac. 54843

Dream of wonder Land Comes True, when you see The Matchless Matchings in Galore Artistic Designs with Glowing procion Screen prints

By A. M. Processors

New Gujarat Cotton Mills Ltd.

AHMEDABAD-2

INSIST ON

"New Gujarat Fabrics"

For Home & Export

For 100% of Polyester, Printed Shirting, 80/20 Filament Shirting, Fancy Wash and Wear Poplins of Latest Fashions.

Regd. Office :	Mill No. 1	Mill No. 2
18 A. Brabourne Road, Calcutta	Naroda Road Ahmedabad–380002	Out side Dariapur Gate, Ahmedabad–380016
	Phone : 372266 372317 374526	Phone : 383463 380389
	Telegram : NEW GUJRAT	Telex : AM 311

ALWAYS INSIST ON
QUALITY FABRICES
OF

न्यू स्वदेशी

NEW SWADESHI
MILLS OF
AHMEDABAD LIMITE

NARODA ROAD, Ahmedabad-380002

मंजुश्री

MANJUSHRI TEXTILES

GIRDHARNAGAR, Ahmedabad-380010

Manufactures of Quality Textiles
Cotton as well as Synthetic
Shirtings, Suitings, Dress Materia
Bedsheeting etc.

Phone : 67221/2/3
Gram : MANJUSHRI
Telex : NEWSWA 222

Phone : 372121
Gram : "Newswadeshi"
Telex : 222

सुधाबिन्दु

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी

ंक : १२

१९८०

: १५ रुपए

: १५० रु०

१-५० रुपए

राजस्थान
सेवा समिति
अहमदाबाद

INSIST ON

ASARWA
FABRICS

100% Polyester Prints in Eye-catching Designs :
Loveable shades and
Lovely Matchings for
Fashionable Fabrics
AND
Feel the Difference, Warmth
And the Feeling of a new Life

Registered User of Trade Mark
"EVA PRESHRUNK & SUNFULGENT"
Choose From ASARWA
Exciting Varieties of Polyester/Cotton
Blended Shirting, Suiting, Sarees.
And Dress Materials.

ASARWA MILLS
(Prop Bengal Tea & Industries Ltd.)
Asarwa Road, AHMEDABAD-380 016
Regd. Office : Brabourne Road, CALCUTTA 700001
Tl. Phone : 67301-2, Gram : MILL ASARWA Telex : 012476

सुधाबिन्दु

सम्पादक

डा० राजनाथ पाण्डेय
एम० ए० (संस्कृत, हिन्दी, पालि) पी-एच० डी०
व्याकरणाचार्य "लब्धस्वर्णपदक"

रामअवधेश त्रिपाठी
साहित्यरत्न

लेखकों से निवेदन

(अ) हमें कैसे लेख-कविता-कहानी आदि चाहिए:-

(१) जो मानव में जीवन के प्रति आस्था जगाकर जीवन को सुन्दरतर बनाए और जो जीवन जीने की कला सिखाए।

(२) जो मानव-मानव में अपनत्व बढ़ाए, जो करुणा जगाए और जो परसेवा सिखाए।

(३) जो मानव को आत्माभिमुख करके प्रकृति-परायण बनाए।

(४) जो हमारे भारत राष्ट्र की, विशेषतः राजस्थान की गरिमा को उजागर करे।

(५) जो हमारी विभिन्न प्रजाओं, जातियों एवं व्यवस्थाओं के उत्कृष्ट गुणों का विवेचन करे।

(६) जो प्राचीन-अर्वाचीन ज्ञान-विज्ञान का संतुलित विवेचन करे।

(७) जो मानव को श्रेष्ठ मानव बननेके लिए प्रेरित करे।

(आ) रचनाएँ कागज के एक ओर लिखकर भेजें।

- ° अप्रकाशित और अप्रसारित रचनाएँ ही भेजें।
- ° निर्विवादास्पद विषयों पर लिखी हुई रचनाएँ ही भेजें
- ° रचना अस्वीकृत होने पर वापस मँगानेके लिए टिकट लगा लिफाफा भेजें।
- ° तीन-चार फुलस्केप में लिखी रचनाएँ ही भेजें तो बड़ी अनुकूलता होगी।
- ° अपना परिचय तथा योग्यता-विवरण भी भेजें।

पत्राचार : रामअवधेश त्रिपाठी
२, उत्तर भारतीय कोलोनी, नागरबेल के पास
अमराईवाड़ी, अहमदाबाद-२३

संयोजक

गिरधारीलाल सराफ
एम० कॉम०, एल-एल० बी०, रा० रत्न

राजस्थान सेवा समिति, अहमदाबाद का

मासिक मुखपत्र

वर्ष : २० दिसम्बर
अंक : १२ १९८०

वार्षिक शुल्क : १५. रुपए

आजीवन ग्राहक : १५० रुपए

एक अंक का मूल्य : १.५० रुपए

*

'सुधाबिन्दु' में विज्ञापन की दरें निम्नांकित हैं :

स्थान	वार्षिक
कवर पृष्ठ नं.-४	३,००० रु०
,, ,, नं.-२ और ३	२,५०० रु०
रंगीन पूरा पृष्ठ	२,००० रु०
,, आधा ,,	१,००० रु०
साधारण पूरा पृष्ठ	१,५०० रु०
,, आधा ,,	७५० रु०

व्यवस्थापक 'सुधाबिन्दु'
राजस्थान सेवा समिति, शाहीबाग मार्ग अहमदाबाद-४

राजस्थान सेवा समिति, शाहीबाग मार्ग, अहमदाबाद ४ के लिए श्री रामावतार शर्मा (सचिव) ने प्रकाशित किया एवं श्री रामानन्द प्रिंटिंग प्रेस कांकरिया रोड, अहमदाबाद २२ ने मुद्रित किया।

अनुक्रमणिका

(गुजरात यूनिवर्सिटी द्वारा शोधपत्रिका के रूप में मान्य)
तथा
[राजस्थान सरकार के माध्यमिक, उच्चतरमाध्यमिक विद्यालयों तथा पुस्तकालयोंके लिए 'सुधाबिन्दु' मान्य है।]

दिसम्बर , १९८०

१-हम कहाँ हैं ?		सम्पादकीय	५
२-दो कविताएँ	(कविता)	श्री मदनमोहन परिहार	६
३-श्री अनन्तगोपाल शेवड़े की हिन्दी साहित्य को देन	(समीक्षा-परक)	डा० इन्द्रपाल सिंह 'इन्द्र'	७
४-मजलूम	(कहानी)	श्री वसन्तकुमार परिहार	११
५-पूरब का प्रतिभा पुत्र : विवेकानन्द	(परिचय परक)	श्री बालमुकुन्द	१५
६-राजस्थान की लोक-अलंकरण कला	(लोक परक)	डा० प्रेमचन्द गोस्वामी	१८
७-गायत्री महामन्त्र	(जीवन परक)	श्री श्यामसुन्दरलाल पोशाकवाला	२०
८- रघुनाथ लीला	(शोध परक)	श्री बी०मानेकचन्द नाहर	२५
९-कर्म	(कविता)	श्री विनय फत्तन	२७
१० हंसीले दोहे	(व्यंग्य)	श्री सरल शिवानवी	२७
११-प्रशंसा कीजिए	(व्यवहार परक)	श्रीमती कुमुद सिंह	२८
१२-विरोधाभास	(व्यंग्य परक)	श्री जमनालाल बायती	३०
१३-भारतीय नारी समाज	(नारी परक)	श्री अमरपुरी गोस्वामी	३२
१४-आरती चीनो चाची की	(कविता)	श्री काका हाथरसी	३४
१५-दो छोर	(यात्रा-परक)	डा० पुष्कर चन्दरवाकर	३५
१६-वे दिन : वे लोग	(संस्मरण-परक)	श्री गौरीशंकर गुप्त	३८
१७-मोटापा	(बाल कथा)	श्री रवीन्दु सुमन	४०
१८-गुजरात के बन्दरगाह	(व्यापार परक)	श्री इन्द्रवदन प्राणलाल	४२
१९-व्यापार-व्यवहार की शिक्षा-शती	(नीति परक)	नयनचन्द बोरडिया	४६
२०-भारतीय उद्योग की नब्ज	(उद्योग-परक)	श्री-के०एन०मोदी	४७
२१-शिशु भैषज्य : अति विष	(स्वास्थ्य-परक)	डा० भानुप्रताप मिश्र	४९
२२-पुस्तक-परिचय			५२
२३-समिति समाचार			५३
२४·वार्षिक लेख-सूची			५८

*

-: प्रार्थना :-

येन पूता ऋतवो येनार्तवा
येभ्यः संवत्सरो अधिनिर्मितः ।
तेना सहस्रधारेण पवमानः पुनातु माम् ॥

—अथर्ववेद पैप्पलादसंहिता—९।२३।१२

जिससे ऋतुएँ तथा ऋतुओं में उत्पन्न होनेवाले रस पवित्र हुए हैं तथा जिससे संवत्सर का निर्माण हुआ है, उस सहस्रधार सोम से पवमान हमें पवित्र करे ।

समिति के दो काशन-पुष्प

१. आधुनिक राजस्थानी साहित्य : लेखक—प्रा. **भूपतिराम साकरिया**

डेमी साइज, पक्का जिल्द, कलात्मक आवरण-पृष्ठ, सुन्दर छपाई वाली इस पुस्तक की प्रशंसा बड़े-बड़े विद्वानों ने की है । पुस्तकालयों तथा पुस्तक-प्रेमियोंके लिए विशेष उपयोगी है । मूल्य—केवल ६ रुपए

२. बातां बखत बखत की : लेखक—**श्री महावीरप्रसाद हलवाई**

डेमी साइज, पक्की जिल्द, उत्कृष्ट छपाई तथा मोहक आवरण-पृष्ठ । यह पुस्तक राजस्थानी भाषा में लिखी गई मौलिक और जीवनोपयोगी कविताओं का एक सुन्दर संग्रह है, जिसके प्रत्येक दूहे अँगूठी के नगीने हैं । मूल्य-केवल ६ रुपए

इस पुस्तक पर सम्मति देते हुए आचार्य बदरीप्रसाद साकरिया ने लिखा है, "सुन्दर और सुबोध नीति के दोहे अपने ढंग की यह एक कृति है । कवि का प्रयास वास्तव में सराहनीय है । राजस्थानी भाषा के माध्यम से कवि और कृति साहित्य-गगन में प्रकाशमान हों, ऐसी अपेक्षा-अभिलाषा है ।"

प्राप्तिस्थान—
राजस्थान सेवा समिति, शाहीबाग मार्ग, अहमदाबाद-४

"सुधाबिन्दु" के तथा देश-विदेश की पत्रिकाओं के विश्वस्त एजेण्ट

श्री सौरभ पुस्तक भण्डार

केलिको डोम के सामने, रिलीफ रोड, अहमदाबाद ३८०००१

० पाठकों के पत्र ०

इस वर्ष १९८० का विशेषांक "संस्कृति विशेषांक" मुझे मिल गया है । इसकी जितनी प्रशंसा की जाए, बहुत कम है । संस्कृति विशेषांक में पृष्ठ ८३ पर डा० किशोर काबरा द्वारा रचित 'संस्कृतियों की प्रसव पीड़ाएँ' मुझे सबसे अच्छी रचना लगी । निस्संदेह उन्होंने आधुनिक समाज का वही चित्रण किया है, जिसे हम अपनी आँखों से देखते हैं । आज की युवापीढ़ी पतन के कगार पर खड़ी है । जिसके लिए उनकी कविता मानो चेतावनी है ।

घनराज पंवार
महादेवजी के मन्दिर के पास. पो. समदड़ी Pin 344036

★

मैंने आपका 'सुधाबिन्दु' नामक मासिक पत्र पढ़ा, वैसे मैंने बहुत-सी पुस्तकें पढ़ीं, किन्तु 'सुधाबिन्दु' ही ऐसी पुस्तक है जिसमें कि जातीय पक्षपात नहीं है और इसी वजह से इसके पाठकों की संख्या दिन-प्रति दिन बढ़ती जा रही है और मैं भी आपका ग्राहक बनना चाहता हूँ ।

मुहम्मद सलीम ग्राम- गौहरपुर, पोस्ट-सराय ममरेज
बड़ा पोस्ट- फूलपुर, जिला इलाहाबाद (यू०पी०)

★

आचार्य सीताराम पाण्डेय जी के माध्यम से प्राप्त "सुधाबिन्दु" को देखा । समसामयिक सुरुचिपूर्ण सामग्रियों का चयन एवं मानवीय मूल्यों से प्रतिबद्ध रचनाओं का प्रकाशन निश्चित ही आपकी बहुमुखी प्रतिभा का परिचायक है । एतदर्थ सुसम्पादन हेतु शत-शत शुभ कामनाएँ ।

डा. गोविन्द पाण्डेय एम. ए. पी.-एच. डी. साहित्याचार्य (प्राप्तस्वर्णपदक)
ग्रा. पो० जनताजरीडीह वाया पीलोंजिया जि. गिरिडीह (बिहार)

★

"सुधाबिन्दु" का मई, ८० का अंक पिछले दिनों देखने को मिला-भाई जगन्नाथ "विश्व" के सौजन्य से । ऐसे शुद्ध-साहित्यिक मासिक को देख-पढ़ कर सुखद अनुभूति हुई । सतही या व्यावसायिक पत्र-पत्रिकाओं की भीड़ में "सुधाबिन्दु" वस्तुतः साहित्य-क्षेत्र में पीयूष-वर्षी सम लगा ।

बालमुकुन्द गर्ग 'मुकुन्द'
६७।५ नयापुरा, उज्जैन. (म०प्र०)

★

'सुधाबिन्दु' में वैद्य श्री प्रेमचन्द वासोतिया का लेख मैंने 'पोलियो माइलाइटीस' पर पढ़ा । पढ़कर बहुत आनन्द हुआ ।

मैं बी. एच. आयुर्वेद कालेज लोद्रा में "शरीर विभाग" में प्राध्यापक की सर्विस करता हूँ । यह लेख पढ़कर आनन्द हुआ और विश्वास भी हुआ । आपसे मेरी नम्र विनती है कि वैद्यजी द्वारा आप मुझे विस्तृत जानकारी भेजेंगे । मेरी बहन का लड़का-भानजा इस रोग से पीड़ित है । तो आप उचित सुश्रुषा भेजेंगे, ऐसी प्रार्थना ।

डा. एम. डी. मोवलिया
लोद्रा (गुजरात)

★

आप द्वारा प्रेषित "सुधाबिन्दु" का नवीन अंक-हस्तगत हुआ । धन्यवाद ! इसके पूर्व भी नियमित अंक मिलते रहे । आभारी हूँ "सुधा-बिन्दु" ने विशेष रूप से आकर्षक छपाई, विचारोत्तेजक सामग्री, कुशल सम्पादकीय हेतु मुझे आकर्षित किया । ऐसी सामग्री बहुत ही कम पत्र-पत्रिकाओं में देखने को मिलती है । यह निश्चय ही आपके अथक परिश्रम, कार्य-कुशलता तथा सहयागियों की शुभ कामनाओं से ही संभव हो सका हैं । मेरी समस्त शुभकामनाएँ आपके साथ हैं ।

विप्लव चक्रवर्ती
(अम्बाला छावनी हरियाणा)

सुधाबिन्दु

वर्ष : २० दिसम्बर, १९८० अंक : १२

सम्पादकीय

हम कहाँ हैं ?

उस दिन समाचारपत्र के पन्ने उलट रहा था कि निगाह एक समाचार पर पड़ी । उसे पढ़ा तो ज्ञात हुआ कि अमेरिका में चर्च के पादरी के पास बाइबिल और रिवाल्वर दोनों का होना आवश्यक है। इसका कारण यह बताया गया था कि चर्च में चोरियाँ अधिक होती हैं। उनसे अपने जानमाल की रक्षा के लिए रिवाल्वर का रखना जरूरी है, वर्णा कब क्या हो जाए। क्षमाशील महात्मा ईसा के धर्मावलम्बी कहाँ पहुँच गए हैं, सभ्यता के शिखर पर आसीन धनमद मत्त अमेरिका की आन्तरिकता का यह वास्तविक और स्पष्ट चित्र है। तात्पर्य यह है कि मानव आज मन के गहन स्तर को पार कर गया है, सीमा का उल्लंघन कर दानव भूमि पर चल पड़ा है। उसे यह भी मालूम नहीं कि हम कहाँ हैं ?

ईंट सीधी हो और एक दूसरे का साथ करे तो दीवाल बन जाती है। फूल किसी डोरे में गुंथ-बँध कर माला बनता है और गले की शोभा बढ़ाता है। ठीक उसी प्रकार व्यक्ति अपने संयम, अनुशासन और सदाशयता से समाज रूपी उद्यान की शोभा बढ़ाता है, उसे पल्लवित-पुष्पित बनाता है, उसमें सुगन्धि और सारस्य पैदा करता है। हमारी अपनी संवेदनाएँ मानव मात्र की संवेदनाएँ हैं, हमारी अपनी वेदनाएं प्राणी मात्र की वेदनाएँ हैं। हमें यह ध्यान रखना है कि मानव और मानवता ये दोनों हमसे महान् हैं, ये हमारे मुख्य लक्ष्य हैं। कट-छँट कर, कह-सह कर भी हमें इन दोनों की रक्षा करना है, दोनों का गौरव बढ़ाना है। इस कलियुग अथवा कलयुग में स्वार्थान्ध और मदान्ध मनुष्य में सहिष्णुता और सदाशयता का होना परमावश्यक है, वर्ना पूरे भवन का प्रकम्पित होने और ज़मींदोस्त होने की संभावना खड़ी हो गई है। आज का मानव दानव रिहर्सल कर रहा है सभ्यता के शिखर पर बैठकर। यह कैसी विडम्बना है।

धर्म, नीति और सदाचार ये तीनों मुख्य देवदूत हैं, जो देववाणी और देव सन्देश को पृथ्वी-लोक पर पहुँचाते हैं, भूतल को स्वर्ग बनाने की सीढ़ी तैयार करते हैं। महात्मा बुद्ध, भगवान् महावीर, महात्मा ईसामसीह और पैगम्बर मुहम्मद आदि ने धर्म नीति और सदाचार के इन आयामों को पृथ्वी पर उतार कर मानव और मानवता की बड़ी सेवा की है। कन्फूसियम, गाँधी और लेनिन इस पन्थ के आधुनिक सन्देश दाता हैं। अब इनके पावन मार्ग पर चलकर ही हम मनुष्यता की खेती को हरी-भरी बना सकते हैं। विज्ञान-यान पर चढ़ी हुई सभ्यता धरती को बरबाद कर समुद्र में डुबाने की तैयारी कर रही है, उसकी रक्षा करना प्रत्येक मानव का कर्तव्य है। यह तभी हो सकता है, जब हम अपने से अधिक दूसरे की चिन्ता करने लगें। अब विज्ञान अपने बन्धनों से त्रस्त-ध्वस्त होकर अपने बड़े भाई धर्म की शरण में जाने वाला है। इसलिए हमें यह सोचना परमावश्यक है कि हम कहाँ हैं। अभी तो "हम वहाँ हैं जहाँ से हमको भी कुछ हमारी खबर नहीं आती।

दो कविताएँ

श्री मदनमोहन परिहार

अस्तित्व

पी गया
मेरा दर्द
सारा कोलाहल,
छा गया
विधवा के आँचल-सा सन्नाटा ।।
मैं ही हूँ सदियों से
रेगिस्तां में खड़ा,
संन्यासी-सा ठूँठ ।
मैं ही हूँ
बच्चों द्वारा गढ़ा घरौंदा
जो कई बार बना और
कई बार टूटा ।।
मेरी ही आकृतियाँ
उभरती आती रहीं
"फोसिल्स" सी
हर युग में ।।
हर कविता का
वियोगी शब्द मैं ही हूँ,
हर उपन्यास का
बिछुड़ा-ठुकराया
अभागा पात्र
मैं ही हूँ
मैं ही हूँ ।।

गाँव का प्रभात

(१)

कोयले-सा अंधेरा
सूरज-अंगीठी में जल गया,
स्वर्ण-किरणों ने
लीप दिया आँगन,
फैल गया
प्रभात का
दूधिया दामन ।।
जग गई
स्वप्न खोई
खगों की सीपियाँ आँखें,
नाश्ता चुगने
चल पड़ी हैं
खग-दलों की पंक्तियाँ
खोल कर
पुस्तकी पाँखें ।।
हर कली
लेकर अंगड़ाई
यौवना बन गई,
हवा ने थपथपाया तो
महक सारी छन गई ।।
झर गया
ओस का झरना,
पातों से
फूलों से,
भर लिया
धरा ने
मोतियों से अंगना ।।
रात भर
सजन संग
लिपटी-बिखरी लाज
फिर सिमट आई आँखों में,
उग आए
नये अंकुर,
फूट आई नई कोंपलें
शाखों की शाखों में

(शेष पृष्ठ १४ पर)

श्री अनन्त गोपाल शेवड़े की हिन्दी साहित्य को देन

—डा. इन्द्रपाल सिंह 'इन्द्र'

लेखक

[श्री शेवडेजी मध्यप्रदेश के उच्चकोटि के हिन्दी के साहित्यकार थे। उनकी महान् प्रतिभा ने ...क रूप में जो प्रसाद दिया है उसकी झाँकी इस लेख में कराई गई है, जो प्रशंसनीय है।

—सम्पादक]

साहित्य साहित्यकार की आत्मानुभूति का दर्शन है, जिसमें जीवन का सत्य उसकी प्रतिभा का संस्पर्श पाकर सौन्दर्य से अभिमण्डित होकर शिव की प्रतिष्ठा करता है। साहित्य के इस प्राण-तत्त्व को आधार मानकर जिसका सृजन होता है, वह शाश्वत होता है। अंग्रेजी के ...कार, दो विश्व हिन्दी सम्मेलनों के महामन्त्री, मराठी-भाषी स्वर्गीय अनन्त गोपाल शेवड़े की हिन्दी साहित्य ...ना इसी कोटि की है। उनके साहित्य का उद्देश्य ...स्व आत्माभिव्यक्ति नहीं है, वह केवल 'साहित्य साहित्य के लिए' के सिद्धान्त के परिपालनार्थ नहीं लिखा गया, अपितु उसके मूल में जीवनादर्शों की प्रतिष्ठा निहित है। इसलिए वह यथार्थ की पृष्ठभूमि में आदर्श को प्रस्तुत करता है।

शेवड़े जी ने अपने साहित्य द्वारा जीवन के प्रति आस्था एवं निष्ठा जगाने का प्रयत्न किया है, सत्य जिसका अवलम्ब है और प्रेम जिसका पाथेय है, जिसमें एकनिष्ठता, निश्छलता, त्याग एवं समर्पण की भावना जीवन-रस का संचार करती है और विभेद-वैषम्य के लिए जिसमें किंचित् मात्र भी स्थान नहीं है। कलाकार के जीवन का तो यही मूल आदर्श है। शेवड़े जी ने अपने उपन्यासों में कलाकारों को नायक बनाकर इसी आदर्श की प्रतिष्ठा की है।

'मृगजल' का नायक अशोक ठाकुर चित्रकार है, जो चित्रकला के लिए समर्पित है, उसकी इस निष्ठा को न माया देवी के रूप का आकर्षण एवं उसकी सम्पत्ति प्रलोभन डिगा सकता है और न सारंगपुर नरेश का खोखला सम्मान। प्रकृति के रमणीय दृश्य, जीवन के मार्मिक आघात, संस्कृति एवं धर्म के पावन चरित्र उसकी तूलिका पर थिरकते हैं, जो मरियम के निश्छल निस्वार्थ तथा त्यागमय प्रेम की प्रेरणा पाकर फलक पर आविर्भूत हो जाते हैं और अपने कलात्मक सौन्दर्य से मनः-प्राण को अभिभूत कर देते हैं। अरुणा की भाव-भंगिमाएँ एवं उसकी वाग्मिता में उसे प्रेम की भ्रान्ति होती है, जिसके कारण वह उसमें परिणत हो जाता हैं, किन्तु जब देखता है कि वह उसकी कला-साधना की भंजिका है, तो उसके द्वारा परित्यक्त होकर उसे मुक्ति की ही अनुभूति होती है और फिर मरियम की स्मृति तथा उसका वियोग उसकी कला को अनुभूति की गहनता से रंजित कर उत्कृष्ट रूप प्रदान करता है। लेखक ने कलाकार की निष्ठा के साथ मरियम के प्रेम की उदात्तता का भी चित्रण किया है। जहाँ धर्म-जाति की संकुचित सीमाएँ तिरोहित हो जाती हैं।

'मंगला' का सदानन्द अन्धा गायक है। संगीत ही जिसका जीवन है और वह उसी में एकरस होकर आत्म-विस्मृत हो जाता है। संगीत-साधना द्वारा जब वह नवीन रागों का आविष्कार करता है, स्वर-लहरियों की नूतन रंगमयी सृष्टि करता है, तो उसका रोम-रोम आह्लाद से उन्मेषित हो उठता है। उसकी शिष्या मृणालिनी की एकान्त श्रद्धा उसके संगीत की उत्प्रेरिका है, किन्तु उसमें रस-संचारके लिए प्रेम की स्रोतस्विनी का

आवश्यकता है, जिसकी कल्पना वह मंगला में करता है। मंगला के प्रति उसका प्रेम इतना उत्कट है कि जिसकी शक्ति वियोग के क्षणों में उसकी कला को हृदय-रस से सिक्त कर देती है और मंगला का हृदय-परिवर्तन कर उसे साधक के चरणों में नत करने के लिए विवश कर देती है। कलाकार का विशाल हृदय पश्चात्ताप की अग्नि से तप्त मंगला को स्वीकार कर अपनी कला का अभिषेक करता है। इस उपन्यास में भी लेखक ने कलाकार की उसी निष्ठा के साथ सच्चे प्रेम की शक्ति का परिचय दिया है। मृणालिनी के प्रेम में आत्मा की उस भास्वरता के दर्शन होते हैं, जिसका एक किनारा भक्ति से और दूसरा श्रद्धा से ज्योतिष्मान है।

'कोरा कागज' का निरंजन लेखक है। कथाकार हैं। लेखन उसका जीवन है, उसकी आत्मा है, उसके हृदय का स्पन्दन है, इसी कारण उसकी कृति पाठक के हृदय को छूकर उसकी आत्मा को आन्दोलित कर देती है। वह भी लेखन-कला के लिए समर्पित है। वह जिस जीवन को चित्रित करना चाहता है, उसे स्वयं जीकर उसके द्वारा अपनी कला में प्राण-प्रतिष्ठा करता है। शोषित, पीड़ित, उपेक्षित, दलित, पथभ्रष्ट, पतित व्यक्तियों का यथार्थ चित्रण करनेके लिए एक ओर वह अपने श्वसुर की अपार सम्पत्ति एवं पत्नी का भी परित्याग कर बम्बई के फुटपाथ एवं दुर्गन्धयुक्त तंग कोठरियों का जीवन स्वीकार करता है, तो दूसरी ओर प्रकृति के नैसर्गिक सौन्दर्य आत्मा के उन्नयन एवं आत्मिक सुख का चित्रण करने के लिए हिमालय की उपत्यकाओं में एकान्त साधना का जीवन व्यतीत करता है। उसे न तो बम्बई की सौन्दर्य-प्रतिमा, वैभव-विलास की प्रतिमूर्ति, कान्त कामिनी मन्जुश्री के मोहक हाव-भाव आकर्षित कर पाते हैं और न फिल्म-निर्माताओं का प्रलोभन। जब वह देखता है कि राजकीय सम्मान एवं राज्य-सभा की मानद सदस्यता के कारण उसके लेखक की आत्मा मर रही है और वांछित कृति का शीर्षक मात्र अंकित होकर 'कोरे कागज' द्वारा केवल व्यंग्य बनकर रह गया है, तो उसे उसका त्याग करने में देर नहीं लगती, जैसे उसके लेखक को पुनर्जीवन मिल गया हो। निरंजन की उस कला-साधना के पीछे भी आकाशवाणी की उद्घोषिका अपर्णा का निश्छल त्यागमय प्रेम एवं पुत्री वन्दना का वात्सल्य प्रेरक का कार्य करता है। इससे प्रतीत होता है कि शेवड़े जी की मान्यता है कि कलाकार चाहे चित्रकार हो, गायक हो या लेखक हो, उसकी कला में जीवन्तता तभी आती है, जब कि वह एकान्त निष्ठा के साथ उसके प्रति समर्पित हो और उसे प्रेम का पाथेय मिलता हो।

शेवड़े जी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में निष्ठा, प्रेम, त्याग और साधना को आवश्यक मानते हैं। यही उन्होंने अपने साहित्य के द्वारा प्रतिपादित किया है 'निशागीत' का नायक मधुसूदन डाक्टर है, उसके जन्म के समय प्रसव-वेदना उसे मातृसुख से वंचित कर देती है, जिसकी पीड़ा शैशव से ही उसे डाक्टर बनने और मातृ-जाति की सेवा की प्रेरणा देती है। आर्थिक कठिनाइयों से संघर्ष करता हुआ अपने ध्येय की प्राप्ति करता है, डाक्टर बनता है और अपना स्वतन्त्र चिकित्सालय खोलकर मातृ-जाति की सेवा में अथवा अपने डाक्टरी-व्यवसाय में अपने को समर्पित कर देता है और उसकी इस निष्ठा को सम्बल मिलता है नर्स सुशीला राजेश्वर के त्यागमय प्रेम का, पद्मा के मूक अनुराग का। सुशीला डा. मधुसुदन के प्रेम से अभिभूत होकर, आत्मा से उसके प्रति समर्पिता होकर भी अपने गलित यौवन की आशंका और डाक्टर के यौवन की उद्दामता की सम्भावना से दैहिक साम्य न देखकर उसके विवाह-प्रस्ताव को ठुकरा देती है और जब डाक्टर के अंधा होने पर उसे उसके उत्कट प्रेम का परिचय मिलता है, तो अपने को छिपा नहीं पाती। तब दोनों एकाकार हो जाते हैं और ग्रामीण अंचल में जाकर जन-सेवा में अपने को खपा देते हैं। इस उपन्यास में लेखक ने प्रेम के अतीन्द्रिय स्वरूप का चित्रण किया है।

'इन्द्र धनुष' के नायक ज्ञानशंकर दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर हैं, जो विचारक होते हुए भीउदार, सहृदय और सेवावृत्ति वाले हैं। वे भी अपने ध्येय के लिए, अध्यापन के लिए समर्पित हैं और उनकी पत्नी वीणा का प्रेम उनका प्रेरक है, किन्तु उनके जीवन में एकांगिता है,

एक अभाव है और वह है पितृत्व की असामर्थ्य। उनकी पत्नी वीणा को भी पति का प्यार मिला है, जीवन का प्रत्येक सुख प्राप्त है, किन्तु उसमें मातृत्व की ललक है। वह इसी बुभुक्षा से विवश होकर दलीप को-अपने पति के दया-पात्र को देह-दान कर देती है तथा पति के प्रति निष्ठा रखते हुए भी इस अनुताप से जलती रहती है और डा. ज्ञानशंकर भी इस तथ्य को जानकर हीनता की भावना के कारण सुलगते रहते हैं। पास होकर भी दोनों दूर हैं सुख-सुविधाओं से सम्पन्न होते हुए भी दोनों का जीवन नरकागार बन जाता है। डा. सुमित्रा और डा. सुमन्त का स्नेहमय मनोवैज्ञानिक उपचार दोनों के कल्मष को धोकर दोनों के हृदयों को मिला देता है। लेखक इस उपन्यास द्वारा प्रेम को अतीन्द्रिय प्रमाणित करते हुए भी इन्द्रियों की नैसर्गिक प्रवृत्ति और भावना की परितुष्टि को भी आवश्यक मानता है तथा प्रेम की सीमाएँ इतनी महान् निरूपित करता है, जिसमें दैहिक नैसर्गिकता समाहित हो जाती है, डूब जाती है।

साहित्यकार देश एवं राष्ट्र के प्रति भी सजग रहता है। शेवड़े जी ने गाँधी जी के नेतृत्व में राष्ट्रीय आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया था। उनके नेत्रों में भी गाँधीजी के समान स्वतन्त्र भारत का एक चित्र था। स्वतन्त्रता मिली, किन्तु वांछित चित्र निर्मित न हो सका, जिसके उल्लास और पीड़ा को शेवड़े जी अपनी कृतियों में चित्रित करते हुए गाँधीजी एवं उनके सिद्धान्तों के प्रति गम्भीर निष्ठा व्यक्त की है।

'ज्वालामुखी' सन् १९४२ के आन्दोलन की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है, जिसमें शोधछात्र अभयकुमार अपने अध्ययन को छोड़कर मधु-यामिनी से ही नव परिणीता का मोह त्यागकर और उससे ही उत्प्रेरित होकर देश के लिए अपने को बलिदान कर देता है। वस्तुतः, अभयकुमार तो स्वतन्त्रता के निरीह सेनानियों का प्रतीक है, जिनके त्याग और बलिदान से देश को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। यह उपन्यास इतना लोकप्रिय हुआ कि देश की प्रायः सभी भाषाओं में इसका अनुवाद हुआ तथा अंग्रेजी में भी यह अनूदित हुआ।

'भग्नमन्दिर' में लेखक ने बड़ी पीड़ा के साथ स्वतन्त्रता के मन्दिर की भग्नता का चित्रण किया है। सत्ता-मद ने देश-सेवकों को जन-नेताओं को किस प्रकार भ्रष्ट कर दिया है, अवसरवादियों ने मुखौटा बदलकर किस प्रकार स्वार्थ-साधन किया है, प्रत्येक क्षेत्र में भ्रष्टता के चरणों का किस प्रकार प्रसार हो रहा है, इसका उद्घाटन इस उपन्यास द्वारा किया गया है। यहाँ तक कि लेखक ने अप्रत्यक्ष रूप से नेहरू जी की प्रशंसा करते हुए भी उनकी दुर्बलताओं पर तीव्र कटाक्ष किया है। उपन्यास का नायक धनंजय एक ऐसा पत्रकार है, जो शासकीय दमन को झेलते हुए भी अपने कर्तव्य से च्युत नहीं होता। वह शासकों का भ्रष्टता का उद्घाटन करते हुए जनता को जाग्रत रखता है और अगले निर्वाचन में भ्रष्ट सत्ताधारियों को पद-भ्रष्ट करने में समर्थ होता है। लेखक ने इस उपन्यास में पत्रकार की निष्ठा और समर्पित भावना का चित्रण करते हुए उसकी शक्ति से भी परिचित कराया है।

'अमृत कुंभ' भारतीय अध्यात्म-साधना एवं नैतिक आदर्शों की प्रतिष्ठा करने के लिए लिखा गया है। कुमारी माता का अनाथालय में पालित सत्यकाम अपनी प्रतिभा से ज्ञानार्जन कर एक रेयान फैक्टरी का मैनेजर बनता है, आनन्द की खोज में विश्व-भ्रमण करता है, किन्तु उसे सन्तोष नहीं होता। अपनी विश्व-यात्रा में उसे पश्चिम के विभिन्न देशों में ऐसे युवक और युवतियाँ मिलती हैं, जो भौतिक उत्कर्ष, समृद्धि एवं दैहिक सुख-भोग के साधनों से आक्रान्त होकर, ऊब कर आत्मिक शान्ति के लिए भारत की ओर उन्मुख हैं। इसलिए वह त्यागपत्र देकर वृन्दावन के समीप हरिपुरा ग्राम में शान्त जीवन बिताकर अन्तर्मुखी साधना में प्रवृत्त होता है। वहीं उसकी भेंट पालीन नामक एक अमेरिकन युवती से होती है। जो पश्चिमी चकाचौंध से ऊबकर शांति की खोज में भारत आई है। दोनों का एक-दूसरे के प्रति सात्विक आकर्षण होता है और दोनों हिम-शिखरों के नैसर्गिक सौन्दर्य एवं उत्तरापथ के तीर्थों के पावन वातावरण से अभिभूत होकर आत्मिक ज्ञान के आनन्द में निमज्जित हो जाते हैं

और तब आत्मा और शरीर से एकाकार हो जाते हैं।

लेखक ने अध्यात्म-साधना को एवं अन्तर्मुखी चिन्तन-मनन को सच्चे सुख और शान्ति का आधार निरूपित किया है। अपने अन्य उपन्यासों में भी उन्होंने नैतिक आदर्शों की प्रतिष्ठा की है। आदर्श के प्रति अतिशय आग्रह होने के कारण उसके चरित्र कहीं-कहीं अस्वाभाविक एवं कल्पनालोक के प्राणी होकर रह गए हैं। साधु-सन्तों के प्रति शेवड़े जी का अधिक अनुराग प्रतीत होता है, इसलिए उन्होंने अपने कई उपन्यासों में उनकी अनावश्यक रूप से सृष्टि की है। आदर्श ने कहीं-कहीं यथार्थ की भूमि को भी त्याग दिया है। कला की दृष्टि से यह लेखक की एक दुर्बलता कही जाएगी।

शेवड़े जी के कई कहानी-संग्रह भी प्रकाशित हुए हैं। कहानियों में उन्होंने गांभीर्य के स्थान पर स्वस्थ मनोरंजन का विशेष ध्यान रखा है, फिर भी किसी न किसी आदर्श की ओर संकेत अवश्य मिलता है। कहानी-कला की विशेषता है-कौतूहल, एवं उसका आकस्मिक उद्घाटन। शेवड़े जी की कहानियाँ इस विशेषता से युक्त हैं। 'संतरों की डाली' में डाली देखकर पति को पत्नी के पर-प्रेम की भ्रांति होती है, जबकि तथ्य इसके विपरीत उद्घाटित होता है। जब 'साहब का ओवर कोट' में एक युवती पर कोट देखकर उनकी पत्नी को पति के उसके प्रति अनुरक्त होने की भ्रांति होती है, जबकि उससे जज साहब का औदार्य उद्घाटित होता है। 'डा० सुनीता' में वात्सल्यवश एक युवक रोगी को अचानक वायु-परिवर्तनके लिए पहाड़ पर ले जाने के कारण उसपर चरित्रहीनता का आरोप लगता है, जबकि उसका उद्घाटन डाक्टर की कर्तव्यशीलता और मातृत्व की परितृप्ति में होता है। 'अंडे के छिलके" में वैष्णव पंडितों की बस्ती में रहने वाले युवक पर अंडा खाने की भ्रांति के कारण कोप किया जाता है, किन्तु उसका उद्घाटन होता है उसकी चित्रकला के नैपुण्य की सिद्धि में। 'चैती का व्याह' में एम०ए० का छात्र अपने कमरे की साज-सज्जा को अशिक्षिता कामवाली का कार्य समझकर उससे विवाह करता है, किन्तु उद्घाटन होता है कि उसके मूल में उसके प्रति अनुरक्ता मकान-मालिक की पुत्री है। शेवड़े जी ने अपनी कहानियों में कहानी-कला के इसी तत्त्व का निर्वाह किया है। आधुनिक कहानी जो एक संवेदना जगाती है, जो हृदय में एक आन्दोलन उत्पन्न करती है और चिन्तन को एक दिशा देती है, उसका शेवड़े जी की कहानियों में अभाव है।

शेवड़े जी के दो ललित निबन्धों के संग्रह भी प्रकाशित हुए हैं-'तीसरी भूख' और 'जिन खोजा तिन पाइयाँ।' प्रथम संग्रह में कहानी की शैली में लिखे गए निबन्ध हैं, जिनमें व्यावहारिक जीवनके लिए कुछ न कुछ संदेश देते हैं। उदाहरण के लिए 'जीवन की किताब' निबन्ध पुस्तकीय ज्ञान की अपेक्षा व्यावहारिक ज्ञान पर बल देता है, 'तीसरी भूख' में लोकैषणा के प्रति मोह को उद्घाटित किया गया है, 'हाथी के दाँत' में बाह्य प्रदर्शन पर तीखा व्यंग्य है। इन निबन्धों का उद्देश्य भी जीवन के सत्य का उद्घाटन करते हुए प्रेरणा देना रहा है। द्वितीय संग्रह में नैतिक विषयों पर लघु निबन्ध हैं, जिनमें उपदेशात्मक वृत्ति दृष्टिगत होती है।

'दुनियां रंग रंगीली' यात्रा-साहित्य की अमूल्य निधि है, जिसमें उन्होंने औपन्यासिक शैली में रूस, स्विटजरलैण्ड, यूनान, फ्रांस, अमेरिका तथा जापान की यात्राओं का वर्णन रोचकता के साथ किया है। लेखक ने विभिन्न देशों के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए वहाँ के निवासियों के आन्तरिक सौन्दर्य की भी झाँकी कराई है तथा भारतीय संस्कृति के प्रति उनकी ललक का भावात्मक रूप प्रस्तुत किया है। कहीं-कहीं वर्णन करते समय लेखक इतना रम गया है कि उसमें काव्य जैसी सरसता आ गई है।

इस प्रकार शेवड़े जी ने सोद्देश्य साहित्य-सर्जना की है और उपन्यास, कहानी, ललित निबन्ध एवं यात्रा-वर्णन जैसी विधाओं में रचना करके हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि करते हुए कुछ ऐसा दिया है, जो व्यक्तिगत जीवनके लिए, समाजके लिए और देशके लिए उपादेय है। यही वे साहित्य का अभिप्रेत मानते हैं।*

ए-१४, यूनिवर्सिटी. क्वार्टर्स, अमरावतीरोड, नागपुर-१०

मजलूम

–श्री बसन्त कुमार परिहार

बी० ए०

[श्री परिहारजी एक कुशल अध्यापक, पत्रकार और लेखक हैं । आपकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं । नाटक लिखने में आपको विशेष पटुता प्राप्त है ।

प्रस्तुत कहानी में गाँवों में शासन-शप्त जीवन भोगने वाली कोमल हृदय विनीत नारी कमला का चित्रण बुआ के हीनताग्रस्त कठोर स्वभाव के परिप्रेक्ष्य में किया गया है । कारुणिक चित्रण मन को मसोसने वाला और यथार्थ को सामने उपस्थित करने वाला है । कहानी सामाजिक है, बड़ी ही सशक्त और पठनीय है । — सम्पादक]

गाड़ी से जब मैं उतरा तब धीमी-धीमी वर्षा हो रही थी । आज से कई साल पहले जब मैं इसी स्टेशन से गाड़ी में सवार होकर बाहर गया था, तब भी ऐसी ही धीमी-धीमी वर्षा हो रही थी...। स्टेशन पर मेरे अलावा सिर्फ तीन-चार ही और पैसेंजर थे । लाइन पर यह आखिरी स्टेशन था । गाड़ी यहीं से वापिस मुड़ जाया करती है । इक्कल-दुक्कल मुसाफ़िर ही यहाँ चढ़ते-उतरते हैं । मेरे पास कोई खास सामान नहीं था । सिर्फ़ एक अटेची था । हाथ में अटेची थामे जब मैं स्टेशन के छोटे-से मुसाफ़िरखाने में से होता हुआ बाहर आया तो अजब-सा सुनसान था । कोई ताँगा इत्यादि दिखाई नहीं दिया । अब तक वर्षा थम चुकी थी । चार-पाँच किलोमीटर का फासला तै करके मुझे गाँव पहुँचना था । पैदल चलने के इरादे से जैसे ही मैंने दो-चार कदम बढ़ाए कि मेरे कानों में भनक पड़ा ।

"आ जाओ बादशाहो... आ जाओ... हम तो आप ही का इंतजार कर रहे थे ।... बाबूजी, हमें पता था कि आप इस गाड़ी से जरूर उतरेंगे । सब ताँगे चले गए, पर हम आपकी आस में खड़े हैं । वह देखो सामने नीम के नीचे अपना ताँगा खड़ा है ।.. आओ बादशाहो.. चलें ।"

मेरा अटेची उठाते हुए ताँगेवाले ने आत्मीयता बतलाते हुए यह सब एक ही साँस में कह दिया । उसकी आवाज मुझे परिचित-सी लगी । मैंने गौर से देखा । बुझी-बुझी सी आँखें... कपास जैसे सफ़ेद बाल... समय की सख्त मार के शिकार झुर्रीदार चेहरे पर सात-आठ दिन की बढ़ी हुई दाढ़ी.. नाक के ऊपर माथे की नस जरूरत से ज्यादा फूलकर उभरी हुई.. झुकी हुई गर्दन...। पहली नजर में अनजान लगनेवाले चेहरे में से एक पुरानी पहचान उभरती हुई-सी प्रतीत हुई । मैंने बड़े धीमे लेकिन आश्चर्य भरे स्वर में कहा, "मिलखीराम !"

अटेची को झटके से ऊपर उठा, कंधे पर रखकर अपनी झुकी गर्दन को और भी झुकाते हुए उसने कहा,

"जी हाँ... मिलखीराम... आपका मिलखीराम ताँगे-वाला ।. आप लोगों की सेवा करते-करते अब तो हुलिया ही बदल चुकी है ।... खैर, आपने पहचान तो लिया... शुक्र है खुदा का...।"

मिलखीराम ने अटेची ताँगे में रख दिया था । मैं भी ताँगे में सवार हो गया । उसने घोड़े की पीठ थपथपाई और उछलकर ताँगे की अगली सीट पर बैठ गया । मिलखीराम के ताँगे पर मैं अनेक बार बैठा हूँ । मिलखीराम और उसके ताँगे की हर कैफियत से

मैं वाकिफ़ हूँ । उसने चाबुक के इशारे से घोड़े को चलाया....

"चल मेरे पुत्तर... चल मेरे सोहने... शाबाश ! शाबाश !."

मिलखीराम की इस परिचित शब्दावली का जायका लेता हुआ मैं पिछली सीट पर बैठा हिचकोले खाता, पीछे छूटते हुए उस सुनसान स्टेशन को अनमना-सा देख रहा था ।

"बहुत बरसों के बाद आए बाबूजी ।. आपने तो हमारी याद ही भुला दी ।"..

मिलखीराम ने बिलावजह ही घोड़े को चाबुक मारा । उसके शिकायत के लहजे से मेरे बहुत पुराने घाव कसक उठे । मुझे लगा जैसे मिलखीराम ने चाबुक घोड़े की पीठ पर नहीं मेरी पीठ पर दे मारा है । याद एक फोड़े-सी मेरे हृदय पर उभर आई-कहाँ भूलती हैं यादें ..।. राख जम जाने से अंगारे बुझ तो नहीं जाते ।... सब कुछ भूल जानेके लिए ही तो आज से कई साल पहले मैं मिलखीराम के इसी ताँगे पर बैठकर कहीं दूर निकल जानेके लिए गाड़ी में सवार हुआ था ।...... कमला की मृत्यु ने मुझे भी जैसे मार डाला था । उससे भी अधिक मरने से पूर्व झेली हुई उसकी यातनाओं ने मुझे बोटी-बोटी नोच डाला था । कमला के जीवन में विवाह का सुख शायद लिखा ही नहीं था । नवोढ़ा की उमंगों से छलकता हृदय लेकर उसने हमारे घर में प्रवेश किया था । गृह-प्रवेश के साथ ही उसका पाला मेरी बुआ से पड़ा था । बुआ अपने कठोर स्वभावके लिए गाँवभर में मशहूर थीं, पर कमला के प्रति उनका व्यवहार अत्याचार की सीमा तक पहुँचा हुआ था । वैसे तो मेरी माँ भी उनकी ज्यादतियों के कारण कुढ़-कुढ़ कर मरी थी पर कमला से उनकी न जाने कौन से जन्म की दुश्मनी थी ।

बुआ विधवा थीं-माँ ने मुझे बताया था ।...बड़ी रूपवती थीं...शीशे-सी दमकती काया...बिल्लौरी काँच की -सी चमकती आँखें-पतले गुलाबी होंठ. नक्श मानो किसी संगतराश के फ़न का कमाल हो । पर लाड़ों पली रूपसी बुआ को एक काले-कलूटे व्यक्ति के साथ ब्याह दिया गया ।

"उन दिनों पसन्द का सवाल कहाँ होता था बिट्टू । -माँ ने मुझे बताया था... फिर घर तो अच्छा खासा था ।.."

पर दुर्भाग्य । छः महीने में ही बुआ हमारे घर विधवा और गर्भवती होकर लौट आईं । गर्भ भी ज्यादा दिन न टिका रह सका । बुआ मरती-मरती बचीं । पिताजी ने बुआ के आँसू पोंछे और ऐलान कर दिया कि बुआ के बारे में अगर किसी के मुँह से कुछ भी ऐसा-वैसा निकला तो उनसे बुरा कोई न होगा । पिताजी की शह पाकर बुआ एक ओर जहाँ अपने प्रति हुए विधाता के अन्याय को भूलती गईं, वहाँ धीरे-धीरे सब पर उनका अन्याय और अत्याचार बढ़ता गया । बाबूजी के सिवा उन्हें बाकी सबसे चिढ़ थी । बच्चों को बुरी तरह मार-पीट लेतीं । पिताजी के डर के मारे कोई उनके सामने जबान नहीं खोल सकता था । उनका एकाधिकार शासन हमारे घर पर छा गया । बुआ को लेकर पिताजी कई बार माँ पर बेरहमी से बरस पड़ते थे । मैं अभी छोटा ही था । माँ को प्रताड़ित होते देख चिल्ला-चिल्लाकर रोने लगता । माँ घण्टों मुझे छाती से चिपकाए रोती रहतीं और मैं उनकी गोद में मुँह दुबकाए सिसकता रहता । धीरे-धीरे माँ इन स्थितियों से अनुकूलन प्राप्त कर गईं, पर यह अनुकूलन बाहरी था-बिलकुल सतही । अन्दर तो न जाने वे किस आग से झुलसती रहती थीं... और एक दिन जब जीवन की रस्सी झुलस-झुलस कर खत्म हो गई तो माँ ने आँखें मूँद लीं ।

एक तीव्र झटका लगा और मैं गिरते-गिरते बचा । ताँगा पक्की सड़क छोड़कर अब गाँव के कच्चे रास्ते पर उतर रहा था ।

"सम्हल के बाबूजी जरा सम्हल के ।" मिलखीराम ने कहा, "सोहरा सवराज आए इतने बरस हो गए पर यह सड़क पक्की नहीं हुई...जैसी आप छोड़ गए थे न वैसी की वैसी ।" कुछ रुककर उसने कहा,

"बड़ा पक्का दिल है आपका बाबूजी !... गए तो ऐसे गए कि इस तरफ़ मुँह ही नहीं किया। बड़े बाबूजी बेचारे जी जलाते-जलाते ज़िन्दगी पूरी कर गए पर आप न आए... बुआ भी चल बसीं... ज़िन्दगी काट दी आप लोग के दरवाजे... बड़े बाबू के सिर पर राज करती रहीं।"

घोड़ा भागते-भागते हिनहिनाया। उसकी हिनहिनाहट से मेरा सारा तन ऐसे सिहर उठा जैसे बाबूजी की डाँट से उस दिन सिहर उठा था।

"देख बिट्टू, अगर फिर कभी बुआ के बारे में कुछ कहा तो चमड़ी उधेड़ दूँगा। दो रोज़ शादी को हुए नहीं और पर निकालने लगे। अगर तेरे मन में कोई भरम है तो निकाल दे।.... नहीं रह सकते तो बोरिया-बिस्तर उठाओ और चलते बनो।"

मेरा फैसला या उत्तर सुनने से पूर्व ही बाबूजी अपने स्वभावानुसार आगबबूला होते, सारे घर पर आतंक फैलाते बाहर खेतों की तरफ़ निकल गए थे। वे रिटायर्ड पुलिस इन्सपेक्टर थे। गुस्सा उनके स्वभाव के तानेबाने में गुंथकर एक बन चुका था। मेरे मन में एक अंधड़-सा मच गया। कमला को लेकर अनेक विसंगतियों की प्रक्रिया की यातनामयी घड़ियों से गुजरते-गुजरते मेरा स्वत्वप्रिय मन निचुड़ कर रह गया। मैंने कमला से सचमुच बोरिया-बिस्तर बाँधकर तैयार हो जाने को कह दिया। उसने न माना...."इस हल्ले के बाद घर से पाँव निकालने से तो प्राणांत करना बेहतर है।" उसने कहा, और हिचकियों की झड़ी के साथ उसकी आँखों में वर्षा उतर आई। अपने इस निर्णय के द्वारा वह भारतीय नारी की किस गरिमा की रक्षा करना चाहती थी, मुझे नहीं मालूम।

माथा ठनक उठा। मेरा सिर एकबारगी ही ताँगे के छज्जे की कमान से जा टकराया।...

"सम्हल के बाबूजी, सम्हल के...। यह राह बड़ी टेढ़ी है....।" घोड़े को पुकारते हुए मिलखीराम ने ताँगा साफ़ रास्ते पर लाते हुए कहा, "बड़ा खराब रास्ता

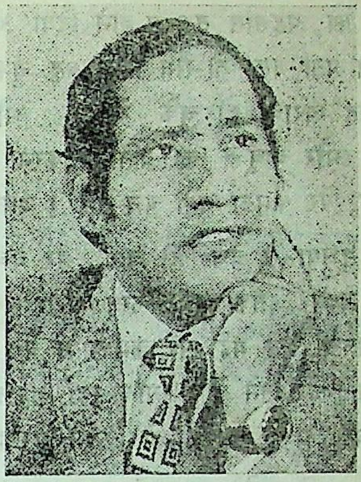

है... पर क्या करें बाबूजी... इसीतरह सुबह-शाम करते जिन्दगी गुजर गई।"

मेरा मन हूक उठा, "फिर भी रास्ते पर तो हो मिलखीराम ! ...एक हम हैं कि रास्ते पर ऐसे भटके कि आज तक भटक रहे हैं।"

ऐसा क्यों सोचते हैं बाबूजी। घर, जायदाद, अब तुम्हारे सिवा कौन सम्हालनेवाला रह गया है... और तुम्हारी...।"

"उसका नाम लेना मिलखीराम ! यादों के खंजर अभी तक वैसे के वैसे खुपे हुए हैं।....

मिलखीराम स्तब्ध था। ताँगा हाँकते-हाँकते उसने मेरी ओर नजर उठाकर देखा। चौदह साल पहले और आज में उसे कोई खास फ़र्क नज़र नहीं आया। तब वह एक दर्द के पुलिन्दे को स्टेशन ले जा रहा था और आज ले आ रहा है।... आज से चौदह साल पहले ही तो कमला, सख्त अनुशासन की शिकार होकर मरी थी। एक बार प्रतिकार नहीं किया तो फिर कभी न कर सकी। उसे तरसाने में बुआ को पता नहीं कौन-सी तुष्टि प्राप्त होती थी। हमारे दाम्पत्य के अन्तर्गत क्षण भी बुआ की मेहरबानी के मोहताज थे। बुआ के भद्दे व्यंग्यवाणों, अभिशप्त यौवन के संत्रासों और पीड़ाओं को सहते कमला मुरझा गई।

वह बीमार थी, पर बुआ के डर के मारे उसने मुझे अपनी बीमारी का अहसास तक न होने दिया और जब आखिरकार मुझे पता चला तो रोग काफ़ी बढ़ चुका था। फेफड़े बुरी तरह खराब हो चुके थे. . . . और तब मुझे बुआ का और बाबूजी का प्रतिकार करना पड़ा। सब कुछ किया, पर कमला नहीं बच सकी। शायद मेरी आस्था और सुश्रुषा से बच ही जाती, पर बच्चो को जन्म देने की वेदना उसका जर्जर–रुग्ण शरीर बर्दाश्त न कर सका। बच्ची बच गई, पर कमला न बच पाई। अन्त्येष्टि के बाद जितने दिन गाँव रहा कमला मेरी स्मृति पर हावी रही। बच्ची को किसने सम्हाला यह मुझे कुछ पता नहीं। मेरे जहन में बस एक ही विचार कोसता रहता कि बाबूजी, बुआ और बच्ची इन सब ने मिलकर कमला की हत्या कर दी है। बच्चों के प्रति ममता के स्थान पर घृणा ही हावी रही . . . और एक दिन सब कुछ छोड़, मिलखीराम के ताँगे पर सवार हो मैं ने गाँव को अलविदा कह दिया। . . .

मैंने फिर कभी गाँव की ओर रुख नहीं किया। बाबूजी के मरने की खबर पाकर भी नहीं . . . बुआ के लिखवाए पत्रों को पढ़कर भी नहीं . . .। बुआ के मरने के बाद भी मैं शायद न आता अगर मिलखीराम का पत्र मुझे न मिला होता। उसने बस एक ही तगादा किया था, "बाबूजी, . . बड़ा भरोसा है तुम पर ! बस एक बार आओ और एक नजर अपनी बेटी को देख जाओ... फिर बेशक लौट जाना। मैं मजबूर नहीं करूँगा। बिन्नू को ले जाने के लिए भी नहीं। . . ."

मिलखीराम की चिट्ठी मेरे दिल के फफोले पर शूल-सी आकर चुभी। मैं उसके सहानुभूतिपूर्ण तगादे को नहीं टाल सका। उसने बचपन में मुझे पिताजी के बेतों से कई बार बचाया है . . .मेरी खातिर खुद बाबूजी से बेत खाए हैं . . . कई झूठ बोले हैं . . . कमला को बचाने की मेरी कोशिश में रात–दिन ताँगा चलाया है उसने . . . वही तो एक हमदर्द है।

(शेष पृष्ठ १७ पर)

(पृष्ठ ६ का शेषांश)

(२)

मनुष्यों के स्वरों से मन्दिर की आरती में
फिर साँस आ गई
आस्था और विश्वास से
प्रतिमाएँ फिर
भगवान बन गई रात भर
भींगे बदन सुखाकर पनघट
पनिहारियों के पगों की
थपकियों से फिर थिरक-थिरक उठे।

रात भर के
बिखरे-बिखरे कुंतलों की
उलझी–सुलझी कथाओं से
जल प्रकम्पित होने लगा।
शर्मीली-लाजवंती
अधप्यासी चाहों के स्वर झंकृत हो उठे।

प्रश्न पर प्रश्न
उत्तर पर उत्तर
अधरों से अधरों तक बार-बार
चहक-लहक उठे ॥
शांत-क्लांत सरोवर के दर्पण में,
सुन्दर, रेशमी
आकृतियाँ उभर आई।
सूखे-प्यासे-रीते गागर के अधरों पर
लहरों की कुँवारी उमंगें उमड़ आईं ॥

(३)

खेतों में
लहलहाती खड़ी फसलें मेड़ों के बाहर
लगी झाँकने, जैसे कोई बिरहन
परदेशी पिया की राह में
लगे मुण्डेर से ताकने ॥
सारी धरा पर मेहमान दिन का
हो गया आगमन,
अतिथि का सत्कार करने
जुट गया काम में हर तन-मन ॥

१२९।१।अ, सड़क सरदारपुर, जोधपुर (राज०)

पूरब का प्रतिभापुत्र : विवेकानन्द

श्री बालमुकुन्द

[इस लेख के लेखक एक अनुभवी और अध्ययनशील व्यक्ति हैं । आपने साहित्य की विविध विधाओं में अपनी लेखनी का जौहर दिखाया है ।

प्रस्तुत लेख में स्वामी विवेकानन्द जी के जीवन की विविधतामयी संक्षिप्त झाँकी कराई गई है, जो आदर्श, त्याग, संयम और देश-प्रेम से ओतप्रोत है । यह चरित्र आज के इस अन्धड़ में शीतल शांत पवन को तरह प्रेरक और पठनीय है ।

सम्पादक]

पूरब के प्रतिभा-पुत्रों में स्वामी विवेकानन्द का नाम सदैव बड़ी ही आत्मीयता और आदर भावना से लिया जाएगा ! उन्होंने कथनी-करनी के सामंजस्य के साथ ही साथ जन-सामान्य में स्वातंत्र्य-चेतना, मानवीय मूल्यों की पूर्ण प्रतिष्टा, गृहस्थ-जीवन में रहकर भी धर्माचरण आदि के प्रति जन-सामान्य का ध्यान आकर्षित किया था ।

उनके जीवन की अनेक छोटी-छोटी घटनाएँ अपने अन्दर जीवन की गहन गुत्थियों को सुलझाने की क्षमता वाला तत्त्व रखती हैं । जरूरत है हम इस दिशा में प्रयत्न करें कि उनके जीवन-नवनीत से कुछ नवनीत ग्रहण करें ? आइए, हम प्रयत्न तो कर देखें इस दिशा में ।

अपने अपने भाग्य का लेखा :

१८९९ है यह, कलकत्ता महानगर प्लेग की विभिषिका में दहक रहा है । घर-घर प्लेग जा बैठा है । शायद ही कोई घर इससे बचा हुआ हो । स्वामी विवेकानन्द शिष्यों और शुभचिन्तकों को सेवा-सुश्रुषा करने में लगे हुए थे ! वे सफाई, रोगियों को औषिधि-वितरण आदि अपने हाथों से करते रहते थे ! लोगों को धैर्य खास तौर पर बँधवाते ।

कुछ पौंगापन्थी पण्डितों को उनकी यह सेवा बिना बात ही चुभने लगी । उनमें से एक ने स्वामीजी से कहा, "स्वामीजी , आप यह कार्य ठीक नहीं कर रहे हैं ! पाप बहुत अधिक हो गया है । इसलिए महामारी फैलाकर भगवान् लोगों को दण्ड दे रहे हैं । आप उन्हें बचाने का प्रयत्न कर रहे हैं । ऐसा करके आप भगवान् के कार्य में, प्रकृति के मार्ग में वाधक नहीं बन रहे हैं, क्या ?"

स्वामीजी ने प्रमुदित होकर कहा, "अरे पण्डित गणो ! कष्ट तो मनुष्य सचमुच ही अपने ही कर्मों के कारण पाता है, लेकिन उसे कष्ट से मुक्त करने वाला अपने पुण्य को पुष्ट करता है । जिस प्रकार से उनके भाग्य में दुःख पाना लिखा है, कष्ट-सहन लिखा है, उसी प्रकार इन कार्यकर्ताओं के भाग्य में रोगियों का कष्ट हर करके पुण्य अर्जित करना भी बदा है ।"

ईंट का जवाब पत्थर से नहीं मीठी गुड़-डली द्वारा देकर स्वामी विवेकानन्द जी ने विरोधी पण्डितों को ठण्डा कर ही दिया । अब वे भी कहीं-कहीं यथाशक्ति पीड़ितों की सहायता करते नजर आ रहे थे ।

अहम् को उपकार में बदलो :

उस दिन स्वामी विवेकानन्द शंकाओं का समाधान कर रहे थे । उस दिन चर्चा चला पड़ी 'अहं' पर । स्वामीजी की शिष्या भगिनी निवेदिता ने कहा, 'मेरा मैं मुझे चाहिए ही , सदा के लिए निस्सीम में स्वयं को विलुप्त करने की मेरी इच्छा नहीं है । अपने आपको मिटा देने के विचार से ही मैं व्यथित हो उठती हूँ ।"

स्वामी विवेकानन्द भगिनी निवेदिता की इस बात को स्वाभाविक मुस्कान के साथ सुनते हुए फिर गम्भीरता से बोले, 'एक दिन एक जल-बिन्दु अथाह सागर में

गिरकर– तुम्हारी तरह ही रोने लगा । निवेदिता वह भी तुम्हारी तरह ही अपने स्वातंत्र्यके लिए कह कर व्याकुल हो उठी । उसकी अधीरता देखकर सागर बोला कि "मुझमें मिल कर तो तुम अपने असंख्य भाई-बहिनों के साथ मिल गए हो । मैं तो तुम सबसे ही मिलकर बना हूँ । वास्तव में सागर तो तुम्हीं हो । यदि तुम मुझसे स्वतंत्रता चाहते हो तो सूर्य–किरणों की सहायता से ऊपर उठकर बादलों की मदद लो । फिर वहाँ से आशीर्वाद के रूप में प्यासी धरती पर उतर आओ ।"

इस कथा को सुनते ही निवेदिता के मन में उठ रहा अपने अस्तित्व का द्वन्द्व समाप्त हो गया । गुरु के समझाने के उस विशेष तरीके पर वे मुग्ध होकर समाज–सेवा में रत रहने लगीं । अपने अहं को उन्होंने परोपकार में बदल लिया ! भगिनी निवेदिता अपने अहं की कारा से बाहर आईं तो करोड़ों का सात्विक स्नेह उनपर न्योछावर होता ही चला गया ।

पाने से देने का आनन्द बढ़ा :

स्वामीजी उन दिनों अमेरिका में एक अकेली रहने वाली वृद्धा महिला के घर पर ठहरे हुए थे । आहार–विहार के मामले में वे सावधान रहा करते इसलिए भोजन वे वहाँ अपने ही हाथ से बनाया करते थे ! अक्सर नन्हें–नन्हें बालक स्वामीजी के पास आ जाया करते थे ! वे उन्हें प्यार करते, खेलाते, कहानियाँ सुनाकर सीख भी देते रहते थे ।

उस दिन बच्चे भूखे थे, स्वामी जी ने उनसे खाने के लिए पूछा तो उन्होंने हाँ कर दी । चट से स्वामी जी ने अपने लिए बनाई सारी की सारी रोटियाँ बाल–गोपाल में बाँट दीं ! उस वृद्धा के पास एक महिला बातें कर रही थीं, उसने तभी पूछा, "अरे, अपने तो सारी को सारी रोटियाँ ही बच्चों को दे डाली हैं । अब आप क्या खाएँगे ?"

स्वामी जी मुस्करा उठे और बोले,

"अम्माजी ! रोटी तो पेट की ज्वाला शान्त करने की वस्तु है । इस पेट मे नहीं सही, उस पेट में रह कर उसकी ज्वाला शान्त करेगी, परन्तु देने का भी अपना एक ही आनन्द है ! देने का आनन्द पाने के आनन्द से बड़ा है ।"

क्या स्थान है यही बतलाने को :

स्वामी जी ने एक दिन अपने प्रभावशाली प्रवचन में अमेरिका में बसे हुए भारतीयों पर स्वदेशी कपड़ा पहननेके लिए काफी जोर दिया । श्रोताओं में बैठी एक अंग्रेज महिला को उनका यह स्वदेशीप्रेमीपन बड़ा अखरा । उसने स्वामीजी को घूरकर ऊपर से नीचे तक देखा । वे सारे वस्त्र स्वदेशी ही पहने हुए थे । तभी उसकी नजर पड़ी उनके पैरों पर । उसमें उनको विदेशी जूता नजर आया । बस उसका दाव लग गया । चट से उसने पूछा, "स्वामी जी ! आप तो स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोगके लिए अपने प्रवचनों में उपदेश देते थकते ही नहीं हैं , लेकिन आपके स्वयं के ही पैरों में विदेशी जूता है । यह आखिर क्यों है ! विदेशी जूता आपने क्यों पहनना शुरू किया ?"

स्वामी जी तो चुटकी लेने में माहिर थे ही ! उन्होंने ऐसा जबाब दिया कि उसकी बोलती बन्द । वे धीरे से मुस्करा कर बोले, 'देवीजी हमारे देश में अंग्रेजों का क्या स्थान है केवल यही बतलाने को मैं विदेशी जूता पहनता हूँ अपने पैरों में ।'

ऐसे लाजबाब करने वाले व्यक्ति थे, स्वामीजी !

क्यों शान्ति नष्ट करूँ ?

स्वामी विवेकानन्द रेलगाड़ी में कहीं जा रहे थे । दो अंग्रेज भी उनके साथ ही उसी डिब्बे में सफर कर रहे थे । वे स्वामी जी के सहचर्य से परेशान थे, इसलिए दूर जाकर दो–चार मिनट बाद अंग्रेजो में स्वामी जी की खिल्ली उड़ाने वाली एकाध बात कहकर दोनों मजा लेते रहते । फिर अपने उसी जुमले की बार–बार आवृत्ति कर करके खुद ठहाके लगाते रहते ।

इसी बीच टिकट–निरीक्षक चेकिंग के लिए आया, उसने स्वामीजी से कुछ पूछा ! फिर वे दोनों ही फर्राटे से अंग्रेजी में बड़ी देर तक बातें करते रहे । टिकट-चेकर से अंग्रेजी में बातें करते देखकर उन दोनों

अंग्रेजों को बड़ी बेचैनी महसूस होने लगी । वे शर्मिन्दा होकर एक दूसरे की तरफ ताकने लगे । थोड़ी देर बाद चेकर चला गया । गाड़ी चल दी तो उसमें से एक अंग्रेज ने सोचते हुए कहा, "अरे स्वामी जी ! आप तो शानदार अंग्रेजी बोल लेते हैं । इतनी शुद्ध कि हम चाहकर भी नहीं बोल पाएँ । क्या आपने हमारी आपस की बातें सुनकर जरा भी बुरा नहीं माना । आप चुपचाप क्यों रहे ? हम तो न जाने क्या-क्या फब्तियाँ कसते रहे हैं आप पर ? "

स्वामीजी ने अत्यन्त शान्त स्वर में कहा, "मित्रो ! ऐसी बातें तो मैं पहले भी एक नहीं बहुत बार सुन चुका हूँ । नासमझ लोगों पर क्रुद्ध होकर मैं अपनी शक्ति और शान्ति नष्ट क्यों करूँ ? "

ऐसी सहिष्णुता रखने वाले थे स्वामी जी ! कथनी से सहिष्णु थे ही करनी से भी थे ! तब तो वे सामने वाले को सहज ही पानी-पानी कर दिया करते थे । मान-अपमान की चिन्ता किए बिना वे सत्यके लिए सजग रहते थे ।

अज्ञान दूर करना प्रथम कर्तव्य :

स्वामी विवेकानन्द को अपने गुरु श्री रामकृष्ण परमहंस से उच्च कोटि का तत्त्वज्ञान प्राप्त हो गया था । वे कमरे में बैठे एक दिन गुरु जी की परिचर्या कर रहे थे ! तभी स्वामी जी के मन में विकार आया, "बस अब मैं संसार को त्याग कर एक मात्र समाधिस्थ होकर परमानन्द का अनुभव करता हुआ सम्पूर्ण जीवन एकान्त साधना में ही बिताऊँगा । "

गुरुजी ने यह बात जान ली और कहा, "विवेकानन्द ! तुम्हारा यह स्वार्थपूर्ण परमार्थ उचित नहीं है । अभी तुम्हें छुट्टी नहीं है । समाज और संसार से अज्ञान दूर करना भी धर्म है और यह व्यावहारिक धर्म-कार्य अब तुम्हें सम्पन्न करना है । एकान्त में बैठकर आत्म-सुख का आनन्द तुम्हें अभी नहीं लेना है । अभी अपनी विद्या-बुद्धि द्वारा नैतिक जागरण करो । अब विवेकानन्द जी क्या करते ! उन्होंने गुरु की आज्ञा शिरोधार्य की । ब्रह्मानन्द में लीन होकर एकान्त में बैठ जाने की अपेक्षा लोक-सेवा में तन-मन से लग गए । संसार में अज्ञान दूर भगाने के लिए उनका हर पल लगने लगा ।

स्वामी जी भारत के दक्षिणी छोर कन्याकुमारी से लेकर हिमालय तक समाज को जगानेके लिए गरजते रहे, समझाते रहे । १९०२ में वे केवल ३८ वर्ष की भरी जवानी में हमें अकेला छोड़कर चले गए, किन्तु वे अपने संस्मरणों, भाषणों, विचारों आदि का विपुल भण्डार छोड़ गए हैं ! जो हमें मार्गदीप की तरह प्रेरणा देता रहेगा, राह बताता रहेगा ।

द्वारा विश्लेषण प्रकाशन सेवा,
२३६ व्रजराजपुरा, p o. कोटा-३२४००६(राज०)

(पृष्ठ १४ का शेषांश)

एकदम ताँगा रुक गया । गाँव अभी काफी दूर था । मैंने मिलखीराम की ओर देखा । उसकी आँखों से तरल-तरल आँसू बह रहे थे ! मिलखीराम की घिग्घी बँध गई थी । बड़े कष्टपूर्ण स्वर में उसने कहा, "बावरी-सी रोज यहाँ खड़ी रहती है और खाली ताँगा देखकर सुन्न-सुन्न चली जाया करती है . . . पर आज . . ."

मैंने देखा... कुछ दूर... आम के नीचे एक किशोरी खड़ी है । कमला-सा ही मजलूम चेहरा पर आँखों में एक खास दर्द मिश्रित आक्रोश की बिजलियाँ . . . बिन्नू मेरे बारे में क्या सोचती रही होगी कि मैं कैसा बाप हूँ । मेरे सीने में एकबारगी ही प्यार की हजारों फुनगियाँ फूट निकलीं । जी में आया कि उसे अपने सीने से लगाकर बिलख-बिलख कर रोऊँ, पर मुझे शायद इसका कोई हक नहीं । जमाने की गर्दिश में भटका बदनसीब मुसाफिर मैं ठगा-सा उस गली को देख रहा हूँ जो अब अपनी सिसकियों और आँसुओं की जबान में बहार की जुल्मोसितम की दास्तान कह रही थी ।

(सौजन्य आकाशवाणी, अहमदाबाद-बड़ौदा)
१।१, पत्रकार कोलोनी, अहमदाबाद ३८००१३

राजस्थान की लोक-अलंकरण कला

डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी

[श्री गोस्वामीजी हिन्दी और राजस्थानी के कुशल लेखक हैं । आपने कई पुस्तकें भी लिखी हैं। राजस्थान की लोक-अलंकरण कला अपनी पृथक विशेषता रखती है । उसका संक्षिप्त परिचय इस लेख में कराया गया है । जो पठनीय है ।

— सम्पादक]

राजस्थान के सांस्कृतिक जीवन में लोककला का स्थान पर्याप्त महत्त्वपूर्ण है । विविध रंगों और भिन्न-भिन्न रूपों में हमें यहाँ लोककला की अभिराम झांकियाँ देखने को मिलती हैं । लोक जीवन से उद्भुत इन रूपांकनों में जिस कलात्मकता को हम विकसित देखते हैं, उसमें निश्चय ही राजस्थान की नारियों का काफी योग रहा है ।

लोक-कला किसी भी समाज की प्रचलित धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं का दिग्दर्शन कराती हैं । राजस्थान की लोक-परम्परा के अंतर्गत हम यहाँ लोक-अलंकरण की अनेक शैलियों को प्रचलित पाते हैं । घर-आँगन में यहां की सुघड़ नारियों द्वारा बनाये जाने वाले मांडने, त्योहार के रूप में मनाई जाने वाली सांजी कला, लोकरंजन एवं लोक-सौन्दर्य के प्रतीक में मेंहदी-महावर, थापा एवं गोदना आदि विभिन्न रूपों में हम लोक-अलंकरण की परम्परा को उजागर हुआ देख सकते हैं ।

मांडना या मंडन-कला :

लोक-अलंकरण का राजस्थान में सर्वाधिक प्रचलित रूप है मांडना । महाराष्ट्र की रांगोली कला तथा बंगाल की अल्पना के समान अंकन शैली में निर्मित किए जाने वाली मांडना कला में राजस्थान की आंचलिकता विशेष रूप से मुखर रहती है । नारियों की सहज कलात्मक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति घर-घर में बनी मांडना आकृतियों में स्पष्ट होती है ।

मांडना-कला के प्रचलन के विषय में ऐसा माना जाता है कि जन-सामान्य में कलात्मक अभिरुचि के उद्भव के साथ ही इस कला का जन्म हुआ ।

मांडना के समस्त आकृतियाँ खड़िया, गेरू, हिरमिच, पेवड़ी, काजल आदि सहज उपलब्ध लोक-रंगों के माध्यम से बनाई जाती हैं । मांडना मुख्यतया होली, दीवाली तथा अन्य पर्वों पर जब घरों की पुताई या सजावट होती है तब महिलाओं द्वारा घर के आँगन, देहरी, अथवा दीवार के आलों आदि में बनाए जाते हैं । अपने गृहस्थ जीवन की व्यस्तता के उपरांत भी नारियाँ अनेक कलात्मक मांडने बनाने में सफल हो जाती हैं ।

घर की शोभा बढ़ाने वाले ये मांडने गृहस्थ-जीवन में शुभ-शकुन के प्रतीक माने जाते हैं । इनमें जीवन के मंगलमयी होने की भावना निहित रहती है ।

मांडना-कलाके लिए यहाँ की कुमारियों को किसी स्कूल में पढ़ने नहीं जाना पड़ता। यह कला उन्हें अपने घर की अधेड़ कुशल महिलाओं से विरासत में मिली होती है।

संझ्या या सांजी :

सांजी की कलात्मक आकृतियाँ बना कर मंगल गीत गाकर राजस्थान की कुमारियाँ संझ्या को एक पर्व के के रूप में मनाती हैं। यह कलापूर्ण रंग-बिरंगा उत्सव आसोज (आश्विन) महीने की पितृपक्ष प्रतिपदा से दशहरे तक बड़े उल्लास एवं आनन्द के साथ मनाया जाता है। कन्याओं द्वारा संझ्या चित्रण पूरे पन्द्रह दिवस तक किया जाता है और प्रतिदिन उसका रूप-स्वरूप नया एवं अधिक आकर्षक होता है।

ये आकृतियाँ लिपे-पुते स्थान पर गोबर की गोहली देकर कापड़ (त्रकोण) में बनाई जाती हैं। प्रतिपदा के बाद दूज से ही आकृतियाँ निरंतर बदलती जाती हैं। तिथियों के अनुसार संझ्या की बागत भी आगे बढ़ती है और पाँच पचेरा, सूरज, चाँद, कदली, पंखा, चोपड़, सांतिया, मोर, छाबड़ी, बीजणा आदि आकृतियाँ बनती जाती हैं। प्रत्येक चित्र अथवा आकृति के साथ प्रथम दिवस वाली कापड़ बनाई जाती है। सांजी को कौड़ी, हल्दी, पुष्प, पन्नी आदि से भी अलंकृत किया जाता है।

अंतिम दिन संझ्या को पाड़ कर कन्याएँ मंगल-गीत गाती हुईं उसे जल में विसर्जित कर देती हैं।

संझ्या की प्रतिष्ठा यहाँ लोकदेवी गौरी (पार्वती) के रूप में मानी जाती है। इसीलिए दूब, घी, पुष्प, नैवेद्य आदि से उसकी पूजा की जाती है।

सांजियाँ बनाने की प्रथा यहाँ उदयपुर अंचल में विशेष रूप से पाई जाती है। वहाँ का मछन्दरनाथ मन्दिर जहाँ ज्यादातर संझ्याएँ बनाई जाती हैं। 'संझ्याओं का मन्दिर' ही कहलाने लगा है। सांजी के कुछ प्रचलित लोकगीत भी हैं, जो त्रिविध लोकधुनों में निबद्ध है।

मेहन्दी-आलेखन :

मेहन्दी महावर लगा कर हाथ-पाँवों की शोभा को बढ़ाना जहाँ सौन्दर्य की अभिवृद्धि करनेके लिए गिना गया है, वहाँ इसे पारम्परिक मांगलिक लोक कला के रूप में भी स्वीकार किया गया है।

मेहन्दी की सौभाग्यसूचक अल्पनाएँ विवाह-त्योहार एवं अन्य हर्ष के अवसरों पर सुघड़ महिलाएँ अपने हाथ-पाँवों में बनाती हैं। मेहन्दी के लाल रंग को रचाकर वे अपने शरीर की शोभा में अभिवृद्धि करती हैं। इसे प्राचीन काल से ही सोलह शृङ्गार का एक विशिष्ट अंग भी माना जाता रहा है।

मेहन्दी एक बारहमासी झाड़ होता है जिसकी पत्तियों को सुखाकर पीसा जाता है। पानी के मिश्रण से मेहन्दी के पाउडर को लेही के समान बनाकर हाथ-पाँवों में लगाया जाता है।

मेहन्दी यहाँ की विवाहित एवं कुमारी सभी कन्याएँ रचाती हैं। तीज-त्योहार, होली-दिवाली, गणगौर आदि पर्वों में पाँवों में महावर एवं हाथों में मेहन्दी रचा कर नारियाँ शारीरिक सौन्दर्य की अभिवृद्धि करती हैं। महिलाएँ मेहन्दी में मीठा तेल, चीनी, अमचुर आदि अनेक वस्तुएँ मिला कर उपयोग में लाती हैं।

हाथों की मेहन्दी पाँवों की अपेक्षा अधिक कलापूर्ण दिखाई देती है। हाथ की मेहन्दी में पानभांत, बेलभांत, फूल, सांतिया, त्रिकोण, पंखा, सूरज, चन्दा, चोपड़ आदि की डिजाइनें अधिक प्रचलित हैं।

सौभाग्यसूचक मेहन्दी का मांगलिक अलंकरण एक धार्मिक कृत्य के रूप में भी माना जाता है। मेहन्दी अखण्ड सौभाग्य की कामना वाली सुरुचिपूर्ण रंग-रचना कही गई है।

थापा :

विवाह आदि के अवसर पर राजस्थान के अनेक अंचलों में अबीर-गुलाल से खेला जाता है। सगे-सम्बन्धी एक दूसरे से होली खेलते हैं। वस्त्रों पर अनेक रंग उड़ाते हुए ऐसे अवसरों पर एक दूसरे की पीठ पर रंग भरे हाथ की पूरी छाप लगाई जाती है। यही 'थापा' कहलाता है। केसरिया, कुसुम्बी अथवा कुंकुम से लगाये गए 'थापा' का लोक-मानस में बड़ा महत्त्व है।

(शेष पृष्ठ २४ पर)

गायत्री महामन्त्र

लेखक : श्री श्यामसुन्दरलाल पोशाकवाला

[श्री पोशाकवाला जी उच्च कोटि के चिन्तक और लेखक हैं। आप के 'सुधाबिन्दु' में प्रकाशित लेखों में से कई लेख अन्य पत्र-पत्रिकाओं सम्मान उद्धृत किए हैं।

प्रस्तुत लेख गायत्री महामन्त्र पर गोपाग प्रकाश डालने के कारण अधिक पठनीय और आचरणीय है। यह मानसिक शरीरिक औं आचारिक ऊर्ध्वता का भी प्रतीक है। — सम्पादक]

संक्षिप्त परिचय :

गायत्री संस्कृत का शब्द है। इसका अर्थ है गयान् (प्राणान्) त्रायते सा गायत्री अर्थात् जो प्राणों की रक्षा करती है वह गायत्री है। इस मन्त्र का देवता सविता (सूर्य) है और ऋषि विश्वामित्र है।

इस मन्त्र के प्रारम्भ में और अन्त में ऊँ (प्रणव) आता है, प्रणव अर्थात् ईश्वर का वाचक ओंकार जो प्राणों से उठता है इसलिए इसे प्रणव कहते हैं। मन्त्र के प्रारम्भ में जो ऊँ आता है उसके पश्चात् तीन महा व्याहृतियाँ आती हैं। फिर मूल मंत्र आता है। इस मन्त्र के तीन पद हैं। इसलिए उसे त्रिपदा भी कहते हैं। प्रत्येक पद में आठ-आठ अक्षर होते हैं और नौ शब्द होते हैं। प्रथम पद में वरेंणियम को वरेण्यम् भी बोल सकते हैं।

इस मन्त्र में बुद्धि को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करने की प्रभु से प्रार्थना की गई है।

गायत्री मन्त्र एवं उसका अन्वय सहित अर्थ :

ऊँ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम भर्गो देवस्य धीमहि धियोयेनः प्रचोदयात्

१: ऊँ अर्थात् ब्रह्म: यह अ: उ:म से बना है। इसमें ब्रह्मा, विष्णु व महेश, सत् चित् आनन्द व ईश्वर, जीव और प्रकृति सब ही का समावेश होता है। यह ईश्वर का श्रेष्ठ नाम है।

२. भूः अर्थात् प्राणस्वरूप ।
३. भुवः अर्थात् दुःखनाशक ।
४. स्वः अर्थात् सुखस्वरूप ।
५. तत् अर्थात् उस ।
६. सवितु अर्थात् तेजस्वी, प्रकाशवान ।
७. वरेण्यम या वरेणियम अर्थात् श्रेष्ठ ।
८. भर्गः अर्थात् तेज ।
९ देवस्य अर्थात् दिव्य, देने वाले को ।
१०. धीमहि अर्थात् धारण ध्यान करते हैं।
११. धियो अर्थात् बुद्धि ।
१२. यः अर्थात् जो ।
१३. नः अर्थात् हमारी ।
१४. प्रचोदयात् अर्थात् प्रेरित करे ।

उस सुख स्वरूप, दुःखनाशक, श्रेष्ठ, तेजस्वी पापनाशक, प्राणस्वरूप ब्रह्म को हम धारण करते हैं जो हमारी बुद्धि को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करे ।

इस मन्त्र के प्रथम भाग में भूः भुवः स्वः सविता, वरेणियम देवस्य और भर्गः शब्दों द्वारा ईश्वर का गुणगान करने से यह स्तुति है। दूसरे भाग में धीमहि शब्द का प्रयोग किया हुआ है जिसका अर्थ है ध्यान करना या धारण करना। अर्थात् हम ईश्वर के दिव्य गुणों को धारण करते हैं। इसलिए यह ईश्वर की उपासना है। तीसरे भाग में धियो+योनः प्रचोदयात् शब्दों में

ईश्वर से सदबुद्धि की प्रेरणा देने की याचना करते हैं, यह ईश्वर की प्रार्थना है। इस प्रकार इस महामन्त्र में ईश्वर की स्तुति, उपासना और प्रार्थना तीनों का समावेश होता है।

तीसरे भाग में जो प्रार्थना सद्बुद्धि की प्रेरणा के लिए की गई है, उसमें दीन-हीन विधि से याचना नहीं की गई है; वरन् वैदिक संस्कृति के अनुसार आत्मगौरव के साथ ईश्वर से आशीर्वाद पाने के रूप में सद्बुद्धि की प्राप्ति के लिए नहीं, सद्बुद्धि को प्रेरणा और प्रोत्साहन देने की प्रार्थना की गई है।

इस मंत्र में नः अर्थात् हम सबकी बुद्धियों को प्रेरणा देने की प्रार्थना की गई है। केवल अकेले प्रार्थी के लिए ही नहीं। कितनी विशालता है इसमें।

गायत्री माहात्म्य :

चारों वेद ऋग् (ब्राह्मण), यजु (क्षत्रिय), अथर्व (वैश्य) और साम (शूद्र) गायत्री के पुत्र हैं।

यज्ञोपवीत (जनेऊ) गायत्री की मूर्तिमान प्रतिमा है, जो हर समय हृदय पर रहती है।

गायत्री मन्त्र के २५ अक्षरों का सम्बन्ध शरीर में स्थित २५ ग्रन्थियों से है, जो जप द्वारा जागृत होने पर सद्बुद्धि प्रकाशक शक्तियों को सतेज करती है।

गायत्री मन्त्रों की अधिष्ठात्री है। उसे आयु, प्राण, शक्ति, कीर्ति, धन और ब्रह्म-तेज प्रदान करने वाली कहा गया है।

गायत्री माता है और यज्ञ पिता है। इन दोनों के संयोग से मानव का आध्यात्मिक जन्म होता है। गायत्री की उपासना का अर्थ है ईश्वर को माता के रूप में मानकर स्मरण करना। संसार में जितने सम्बन्ध हैं, उनमें माता का संबंध अधिक प्रेमपूर्ण और घनिष्ठ है। इसलिए पुकारने पर वह शीघ्र सुध लेती है। इसके संबंध में श्लोक है, "माता शत् गुणैर्पितुः" अर्थात् जगत् में माता-पिता से सौ गुणी अधिक श्रेष्ठ है।

जो मनुष्य तीन वर्ष तक नियमित रूप से गायत्री जप करता है, वह ईश्वर को प्राप्त करता है।

मन शुद्धिके लिए गायत्री मन्त्र अद्भुत औषधि है। इसका नित्य एक हजार जप करने वाला पापों से छूट जाता है।

इस जप से मन और बुद्धि शांत होती है। विषय-भोग की ओर अरुचि होती है। इन्द्रियों को वश में रखने का बल मिलता है। पाप-कर्म की तरफ तिरस्कार होता है। यह इस जप की प्रत्यक्ष सिद्धि है।

इस मन्त्र में महान् शक्ति है। यह बुद्धि को नीरोग बनाती है। यह शक्ति कठिन परिश्रम बिना प्राप्त नहीं होती। इसकी आराधना में क्षति हो तो मन्त्र-साधना के विफल होने का भय रहता है।

गायत्री मन्त्र को भली प्रकार समझने वाले को वेद, पुराण, शास्त्र, स्मृति, और उपनिषद् आदि का ज्ञान सरलता से हो जाता है।

जननी गायत्री विश्व की समस्त श्रेष्ठ शक्तियों को उत्पन्न करती है। इसलिए इसे सावित्री भी कहते हैं। गायत्री मन्त्र माता की तरह रक्षा और पिता की तरह हित करता है।

एक जाति के विचार अपने सजातीय विचारों को आकाश से खींचते हैं। फलस्वरूप संसार के मृत और जीवित सत्पुरुषों के फैलाए हुए अविनाशी संकल्प जो शून्य में सदैव भ्रमण करते रहते हैं, गायत्री-साधक के पास अनायास हो दैवी-वरदान की तरह आकर जमा होते रहते हैं।

गायत्री-भक्त का व्यक्तित्व आकर्षक और प्रभावशाली होता है। उसके नेत्रों में चमक, वाणी में बल, चेहरे पर प्रतिभाव गंभीरता होती है। गायत्री-जापक संजोगों का गुलाम नहीं रहता। उसके विचार वाणी और व्यवहार में संयम रहता है। गायत्री-भक्त जहां जाता है, वहाँ के वातावरण में सात्विकता छा जाती है। उसके संपर्क में आने वाले लोग प्रभावित होकर उसकी इच्छानुसार आचरण करते हैं। यज्ञोपवीत के अभाव में भी गायत्री जप की मनाई नहीं है।

भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता अध्याय १० के श्लोक ३५ में कहा है, 'गायत्री छन्द सामहम्' अर्थात् छन्दों में गायत्री छन्द मैं हूँ।

संसार की सबसे बड़ी विभूति, सुखों की आदि माता, सद्बुद्धि को प्रेरणा गायत्री जप द्वारा पाकर मानव-जीवन सफल बनाया जाता है। गायत्री जप के प्रभाव और प्रताप से सुख-साधनों में वृद्धि होती है।

अविश्वासी, अश्रद्धालु और अस्थिर चित्त वाले मनुष्य भी यदि नियमपूर्वक गायत्री-साधना करते चलें, तो कुछ समय में उनके ये तीनों दोष दूर हो जाते हैं।

शरीर और मन की प्रसन्नता से किया हुआ गायत्री-जप बहुत शीघ्र सुख, शांति और सिद्धिदायक होता है। गायत्री मन्त्र-राज है। यह जप--हवन के साथ किया हुआ अधिक लाभदायक है। गायत्री--जापक का आशीर्वाद भी निष्फल नहीं जाता। संसार में सब चीजें रुपयों से मिलती हैं, ब्रह्म की प्राप्ति केवल इस जप से ही होती है।

बुद्धि स्वयं जड़ पदार्थ है। इसकी गति प्रेरणा के अधीन रहती है। इसलिए गायत्री--मन्त्र के तीसरे पद में बुद्धि को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करने की प्रार्थना की गई है। यह मन्त्र आरोग्य और आयुष्यवर्धक है और बुद्धि को निस्सन्देह तीव्र करता है।

गायत्री की साधना निष्काम भाव से की जाए या सकाम भाव से, पर उसका फल अवश्य मिलता है। निष्काम साधना पर शास्त्रों में जोर इसलिए दिया गया है कि उचित रीति से सत्कर्म करने पर भी इच्छित फल कर्मानुसार न मिले तो साधक अश्रद्धालु हो जाता है।

यज्ञ से दान और दान से जप बलवान है। जो कार्य हजारों रुपए व्यय करने से नहीं हो, जप करने से हो सकता है। निष्काम जप से ब्रह्म की प्राप्ति होती है।

हवन के साथ गायत्री की नित्य ग्यारह माला फेरने वाला कभी दीन नहीं बनता। गायत्री के चौबीस हजार जप ९ दिन में पूरे हो सकते हैं। गायत्री के सवालक्ष जप ४० दिन में पूरे हो सकते हैं। इसे अनुष्ठान कहते हैं।

गायत्री चौबीस लक्ष जप का एक पुरश्चरण होता है। एक घण्टा में सहस्र जप हो सकते हैं। इस प्रकार ३ साल ४ मास में सहज ही में एक पुरश्चरण हो सकता है। गायत्री मन्त्र आत्मा को परमात्मा और तुच्छ को महान् बनाने वाला शक्तिशाली मन्त्र है।

गायत्री सतोगुणी स्वरूप सरस्वती, रजोगुणी स्वरूप लक्ष्मी और तमोगुणी स्वरूप काली का अवतार है। गायत्री मन्त्र का अधिकार मनुष्य मात्र को है।

गायत्री जप-विधि एवं तत्सम्बन्धित नियम :

गायत्री-जापक को शौच स्नानादि से निवृत्त होकर प्रातः ब्राह्म मुहूर्त में ४-३० बजे से ६ बजे के बीच खुली हवा में पूर्व दिशा की ओर मुँह करके सुखासन से बैठ कर नित्य नियमित रूप से श्रद्धापूर्वक जप करना चाहिए। जप करते समय सिर, शरीर और गर्दन एक सीधी रेखा में हों और आँखें बन्द हों। शरीर पर वस्त्र जहाँ तक हो कम हो और स्नायु शिथिल हों।

जप करने का उपयुक्त स्थान जलाशय का तट, पर्वत या वन है जहाँ का वातावरण शान्त और शुद्ध होता है। यदि ऐसा न बन सके, तो घर ही में एकांत और कोलाहल-शून्य स्थान में बैठकर जप करना चाहिए।

जप का स्थान, समय, आसन और माला एक ही हो। जप नियमित संख्या से कम न हो। जप की संख्या जितनी अधिक हो श्रेष्ठ है।

जप कम से कम एक घंटा प्रातः और एक घंटा सायं करना अत्युत्तम है। यदि स्नान की सुविधा न हो तो हाथ, पाँव और मुँह धोकर शुद्ध वस्त्र पहिन कर जप कर सकते हैं। कम से कम एक माला तो अवश्य ही फेरनी चाहिए। जप की संख्या रखनी चाहिए।

जप इस प्रकार हो कि केवल आपके श्रवण ही सुन सकें अथवा केवल कंठ से ही जप की ध्वनि हो। जीभ दाँतों के बीच में हिलती रहे। पास में बैठा हुआ मनुष्य भी स्पष्ट न सुन सके। इससे अनाहत नाद होता है। जिसे साधारण भाषा में अनहद नाद कहते हैं जो अनाहत नाद का अपभ्रंश है। अनाहत शब्द अन्+आहत से बना है। अन् अर्थात् नहीं और आहत अर्थात् चोट। जो ध्वनि बिना चोट के पैदा होती है, उसे अनाहत नाद कहते हैं।

जप श्रद्धा, सत्कार और भक्तिभाव से होना चाहिए। जब तक धारणा की स्थिति न हो, जप करते रहना

चाहिए। धारणा का अर्थ है बाह्य पदार्थों से मन को खींच कर अंतर्मुख करके एकाग्रता प्राप्त करना।

जप स्थिर और शांतचित्त से होना चाहिए। मन्त्र के अर्थ की भावना ध्यान में रखे बिना तोते की भाँति जप-रटन करना उपयोगी नहीं है। मंत्रार्थ का ध्यान करने से मन्त्र की शक्ति का सत्कार करना है। अर्थात् जैसा मन्त्र का अर्थ है वैसा ही ध्यान रखना चाहिए "तज्जपस्तदर्थ भावनम्" अर्थात् मन्त्र भावार्थ जप के साथ होना चाहिए। जप अंतरमन से सस्वर करना अधिक उपयोगी है।

उद्विग्न, अशांत, चिंतित, काम-उत्तेजित एवं आशंका से ग्रस्त मन से जप करने से मन स्थिर नहीं रहता। बेकार समझ कर घास काटने की भाँति जप करना निरर्थक है।

यम (शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान) और नियम (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह) का पालन करने से गायत्री मन्त्र की साधना में शीघ्र सफलता मिलती है।

जप और ध्यान का घनिष्ठ सम्बन्ध है। ध्यान के अभाव में किया हुआ जप अपूर्ण है। ध्यान का चमत्कार प्रत्यक्ष है, जिसका ध्यान किया जाता है उस पर मन जमता है। मन जमने से उसमें रुचि उत्पन्न होती है। रुचि होने से उसे प्राप्त करने की आकांक्षा बढ़ती है। इस आकांक्षा से प्रयत्न उत्पन्न होता है। प्रयत्न से अभीष्ट वस्तु प्राप्त हो जाती है। अर्थात् ध्यान बीज है, जप उपजाऊ भूमि है और सफलता उसका फल है।

जप करते-करते जब सब तरफ शून्यता प्रतीत होने लगे और बाहरी जगत् और स्थूल शरीर का भान भी न रहे और कानों में अंगुली लगाए बिना अंतरध्वनि, (अनाहत नाद) सुनाई देने लगे, तब समझो कि एकाग्रता समीप होने लगी है।

मन्त्र का उच्चारण शुद्ध और स्पष्ट होना चाहिए। अशुद्ध उच्चारण से आराध्य देव का आह्वान नहीं हो सकता। अशुद्ध उच्चारण से अर्थ का अनर्थ हो जाने से अनिष्ट होने का भय है। उदाहरणत:, शतायुभव के स्थान में हतायुभव बोलने से परिणाम विपरीत होता है।

जप और पूजा के बीच में किसी से बोलना नहीं चाहिए। गायत्री-भक्त के लिए मुख्य बात ब्रह्मचर्य रखना है। गृहस्थ नियम-संयम से रहने वाला भी ब्रह्मचारी है। आपा भूलकर सर्वव्यापक, आनन्दघन आत्मतत्व में स्थिर होना यही ब्रह्मलोक में प्रवेश करना है और यही जप की सर्वोच्चावस्था है।

जो मनुष्य व्यसनी और विषयी हों उसको गायत्री-साधना सफल नहीं होती। इस जप के लिए जापक को प्रथम पात्रता प्राप्त करनी चाहिए।

सच्चे अर्थ में मानव बने बिना गायत्री का बोझा झेला नहीं जा सकता। इसलिए वेदों में कहा है "मनुर्भव" अर्थात् मनुष्य बन।

गायत्री-जापक का कामेन्द्रिय और स्वादेन्द्रिय जो प्रधान इन्द्रियाँ हैं इन पर संयम होना चाहिए। गायत्री मन्त्र की विधिवत् साधना अधिक लाभदायक है। अन्यथा लाभ नहीं होता।

गायत्री-जापक का भोजन शुद्ध होना चाहिए और आहार बनाने में भी पवित्रता होनी चाहिए। काले धन से तैयार किया हुआ आहार करने वाला मनुष्य गायत्री-जापक नहीं हो सकता। क्योंकि आहार शुद्ध होने से मन निर्विकार होता है। अशुद्ध आहार करने वाले से गायत्री-साधना निर्विघ्न नहीं हो सकती। गायत्री-जापक को ताजा, हल्का और मिताहार करना चाहिए। गायत्री-जापक यदि एक समय ही भोजन करे तो श्रेष्ठ है। गायत्री-मंत्र के अशुद्ध उच्चारण से अशुद्ध परमाणु उत्पन्न होते हैं, जिससे वातावरण में सात्विकता नहीं आती। जप करने में बैठक का काम है। इसलिए जापक को नित्य नियमित रूप से व्यायाम करना चाहिए।

जप करते समय मन को एकाग्र करने का मुख्य उपाय केवल प्राणायाम ही है। इसके अतिरिक्त अन्य उपाय यह है कि शीघ्र-शीघ्र मन्त्रोच्चारण करना जिससे मन को इधर-उधर भागने का अवसर ही न मिले।

ध्यान करने की साधना में एकाग्रता की प्राप्ति के लिए जप करना आवश्यक है। नाम-जप दिमागी कसरत है। जिससे मन की चंचलता में अवरोध होता है। ध्यानावस्था होने पर जप का शब्द नहीं होता। गायत्री-मन्त्र साधना की विधि हर किसी को नहीं बतानी चाहिए। इस मन्त्र के निरंतर जप का अभ्यास करने से धारणा

अर्थात् एकाग्रता (Conceulration) होती है और एकाग्रता से ध्यान (Meditation) होता है और ध्यान से समाधि की अवस्था आती है ।

इस मन्त्र का जप प्रतिदिन कम से कम ३ घंटे, दो घंटे या एक घंटा सावधानी के साथ आलस्य, प्रमाद और दम्भ आदि दोषों से बचकर तत्परता के साथ करना चाहिए । इसका जप सश्रद्धा, प्रेमपूर्वक, अर्थसहित, निष्काम भाव से गुप्त रूप से किया जाने पर अधिक लाभदायक होता है ।

सागर टैक्स्टाइल
सरसपुर, अहमदाबाद-८

(पृष्ठ १९ का शेषांक)

ये मांगलिक थापे अन्य पर्वों पर भी दिये जाते हैं । दीवारों एवं आलों पर भी इन्हें लगाया जाता है । व्यापारियों की स्थापना-पूजा एवं गणगौर के अवसर पर कुमारियों द्वारा की जाने वाली पीपल-पूजा में भी इसका विशेष महत्त्व है ।

गोदना :

गोदना अलंकरण का प्रचलन ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष रूप से पाया जाता है । राजस्थानी लोक-अलंकरण की यह विशिष्ट शैली है । इसके अंतर्गत देवी-देवताओं के चित्र, घड़ी, बेलबूटे, ओम, बिच्छू आदि के चित्र हाथ, पांव, ललाट, कलाई, छाती आदि अंगों पर छपाए जाते हैं।

बीन बजा कर सर्प दिखाने वाले, नट, गाड़िया, लुहार आदि जातियों के पुरुषों एवं महिलाओं के शरीर में गोदने के चिह्न खुदाना आज भी प्रचलित है ।

गोदने की क्रिया अन्य अलंकरणों की अपेक्षा अधिक स्थायी होती है । इसके क्रियान्वयन के समय प्रायः शरीर से खून निकल आता है । अंगों पर सुई अथवा बबूल के काँटे से आकृति बना कर उसमें कोयला एवं सेबड़े के पत्तों का पाउडर डाल कर सुखाना अत्यन्त कष्टप्रद प्रतीत होता है । सूखने के बाद यह निशान स्थायी हो जाता है । जन-जीवन में इस कला का अब प्रायः लोप होता जा रहा है ।

इसी प्रकार बिन्दी, वस्त्र-चित्रांकन, भित्ति-चित्रांकन आदि विभिन्न लोक-कलाएँ आज भी राजस्थान की लोक-कला परम्परा को विकसित करती हुई यहाँ के सांस्कृतिक जीवन को प्राणवान बना रही हैं ।

ए-६० जनता कॉलोनी, जयपुर ३०२००४

-: सूक्तिसुधा :-

गुणो भूषयते रूपं शीलं भूषयते कुलम् ।
सिद्धिर्भूषयते विद्यां भोगी भूषयते धनम् ॥

[गुण रूप को भूषित करता है, शील (चरित्र) कुल को भूषित करता है, सिद्धि विद्या को भूषित करती है और भोग धन को भूषित करता है ।]

शान्तितुल्यं तपो नास्ति न सन्तोषात्परं सुखम् ।
न तृष्णया परोव्याधिर्नच धर्मो दयापरः ॥

[शान्ति के समान दूसरा तप नहीं है, संतोष से बढ़कर अन्य सुख नहीं है, तृष्णा के समान कोई दूसरी व्याधि नहीं है और दया से बढ़कर अन्य कोई धर्म नहीं है ।]

दृष्टिपूतं न्यसेत्पादं वस्त्रपूतं पिबेज्जलम् ।
शास्त्रपूतं वदेद्वाक्यं मनःपूतं समाचरेत् ॥

[दृष्टि से शोधकर पैर रखना चाहिए, वस्त्र से छानकर जल पीना चाहिए, शास्त्र से शुद्ध वाक्य बोलना चाहिए और मन से विचार कर पवित्र कार्य करना चाहिए ।]

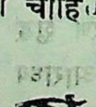

रघुनाथ लीला

श्री बी. मानेकचन्द नाहर
एम० ए०, पी-एच० डी०

लेखक

[श्री नाहर जी राजस्थान के मूल निवासी हैं और मद्रास में स्थाया हो गए हैं। आप कई भाषाओं के ज्ञाता एक सुबुद्ध सुलेखक हैं। अभी-अभी आपको सार्वजनिक अभिनन्दन दिया गया है।

प्रस्तुत शोध-लेख में राजस्थानी भाषा में उल्लिखित अप्रकाशित 'रघुनाथ लीला' नामक रामायण कथा पर प्रकाश डाला गया है, जो पठनीय है।
— सम्पादक]

राम-चरित्र के आद्य गायक वाल्मीकि ने अपनी रामायण का प्रणयन कर परवर्ती कवियोंके लिए मार्ग प्रशस्त कर दिया था।

राजस्थान के अनेक वरेण्य कवियों ने राम-कथा के चित्रण में अपनी अपूर्व काव्यकला, चमत्कार और कौशल का पूर्णरूपेण प्रदर्शन किया है।

राजस्थान के अज्ञात कवि माधोदास द्वारा रचित 'रघुनाथ लीला' राजस्थानी भाषा में रचित राम-काव्योद्यान का एक विशिष्ट सुमन है। यह कृति अभी तक अप्रकाशित है। यह कृति सन् १७१४ के आसपास की है।

"रघुनाथ लीला" अन्य राम-काव्यों की भाँदि कांड, सोपान, प्रकाश या विलास आदि में आबद्ध नहीं है।

२७१ छंदों में रचित इस लघुकाव्य में सभी प्रमुख घटनाओं का संक्षेप में वर्णन हुआ है और कुछ घटनाओं का संकेत मात्र है।

कवि ने काव्य का श्रीगणेश रामनाम की अनुपम महिमा से किया है। —

"तारक ब्रह्म श्री रामनाम तिऊं लोक को सारा
पाम प्रचंड पाखंड वृछि को रामनाम कुठारा"

रघुनाथ लीला की आधिकारिक कथा को हम तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं।

कथा-वस्तु :

प्रारंभिक भाग में राम-जन्म से लेकर वन-गमन तक की कथा समावेशित की जा सकती है। वन-गमन से सीताहरण की कथा मध्य भाग में नियोजित की जा सकती है और अंत में सीताहरण से लेकर रावण-बध और राम-राज्य तक की कथा ली जा सकती है।

इस कृति की कथा इस प्रकार है :

सम्राट दशरथ को पुत्र-रत्नों की प्राप्ति होती है। कालांतर में विश्वामित्र राम को अपने साथ ले जाते हैं। मार्ग में वे राम को शिक्षा देते हैं। आश्रम में पहुँचकर राम ने ताड़का का संहार किया। मारीच को तीर के आघात से समुद्र-तट पर फेंक दिया और सुबाहु राक्षस का वध किया। तदन्तर कौशिक सहित राम-लक्ष्मण मिथिला की ओर प्रस्थान करते हैं। मार्ग में पाषाणी अहिल्या और शतानन्द की माता का उद्धार करते हैं। विश्वामित्र राम और लक्ष्मण सहित स्वयंवर भूमि में उपस्थित होते हैं और राम धनुष तोड़कर सीता का वरण करते हैं।

धनुर्भंग के उपरान्त जनक द्वारा प्रेषित पत्रिका लेकर जनक के दूत अयोध्या पहुँचते है और सम्राट दशरथ

समस्त आत्मीय जनों एवं भरत, शत्रुघ्न सहित मिथिला में पहुँचते हैं। चारों भाइयों के विवाह के पश्चात्, बारात अयोध्याके लिए प्रस्थान करती है। मार्ग में परशुराम के क्रोध एवं गर्वहरण का प्रसंग आता है। उपर्युक्त घटना-क्रम के पश्चात् दशरथ राम को युवराज बनाने की अभिलाषा प्रकट करते हैं परन्तु कैकैयी सम्राट को उनके वचनों का स्मरण दिलाकर राम को चौदह वर्ष के वनवास का और भरत को राज्य देने का वचन ले लेती है।

वस्तु-स्थिति से अवगत होने पर राम सहर्ष वचन-रक्षा के लिए तत्पर हो जाते हैं और माता कौशल्या को समझा-बुझा कर लक्ष्मण और सीता सहित वन की ओर प्रस्थान कर देते हैं। गंगा के तीर पर गुह को संवाद भेजा जाता है फिर प्रभु भ्राता और भार्या के साथ चित्रकूट को आवास-स्थल बनाते हैं। तत्पश्चात् अयोध्या में सारथी और सम्राट वार्तालाप होता है, जिससे दशरथ संपूर्ण परिस्थिति से अवगत हो भीषण दुःख के कारण शरीर त्याग देते हैं। भरत आकर अन्त्येष्टि क्रिया करते हैं और समस्त पुरवासियों के साथ राम के पास आते हैं। राम उन्हें अपनी कुश-पादुका देकर पुनः भेज देते हैं और भरत कुश-पादुका को सिंहासन पर प्रतिष्ठित कर नंदी ग्राम में रहने लगते हैं।

तदन्तर राम चित्रकूट छोड़कर अत्रिऋषि के आश्रम में जाते हैं। वहाँ सीता की अनुसुइया से भेंट होती है। वहाँ से प्रस्थान करते समय मार्ग में विराध का वध करते हैं। मुनि सरभंग के आश्रम में पहुँचने पर आश्रमवासियों द्वारा राम का हार्दिक स्वागत किया जाता है। वहाँ से वे सुतीक्ष्ण के आश्रम में पहुँचते हैं।

आगे की जटायु-रावण, मारीच-वध, हनुमान-सीता भेंट, रावण-संग्राम, राम-राज्याभिषेक आदि कथा पूर्ववत् है।

कला-पक्ष :

काव्य-कृति जहाँ भाव-पक्ष की गंभीरता में परिपूर्ण है वहाँ कला-पक्ष की दृष्टि से भी यह अत्यंत उत्कृष्ट है। समस्त काव्योपकरणों का उचित और सुन्दर प्रयोग प्रस्तुत कृति में हुआ है। छंद, अलंकार आदि की विनियोजना में कवि ने अपनी उद्भट प्रतिभा का परिचय दिया है। लघु कलेवर होने के कारण कवि सभी काव्यांगों के निरूपण की क्षमता का प्रदर्शन नहीं कर पाया है। फिर भी जिनका प्रयोग उन्होंने किया है, वे काव्यकार की कल्पना, चित्रण-क्षमता के उत्कृष्ट परिचायक हैं। भाषा पर कवि का असाधारण अधिकार है।

कवि ने अलंकारों की स्वाभाविक एवं सुन्दर योजना प्रस्तुत की है। कवि अलंकारवादी नहीं है, इसी कारण वह शाब्दिक कलाबाजी के प्रदर्शन को प्रवृत्ति से अछूता है। अतः, इनके काव्य में शब्दाश्रित अलंकारों का प्रयोग न्यून ही हुआ है। यद्यपि सानुप्रासिक सौन्दर्य इस काव्य का एक प्रमुख विशेषता है, परन्तु इस योजना की प्रमुख विशेषता यह है कि वह प्रयत्न-साध्य नहीं है, वह कवि की भाव-धारा के साथ स्वतः प्रकट हुई है। कवि की अलंकार-योजना को हृदयंगम करने के लिए मानसिक व्यायाम की आवश्यकता नहीं है। अन्य भक्त कवियों के सदृश्य उनकी अलंकार-योजना का उद्देश्य अर्थ की रमणीय अभिव्यक्ति, अनुभूतियों, गुणों और सूक्ष्म क्रियाओं को मूर्त रूप प्रदान करना है। रूप-चित्रण और वस्तु-वर्णन में रमणीयता का संचार करने में कवि ने अलंकारों के माध्यम से पर्याप्त सफलता प्राप्त की है।

अनुप्रासिक सौन्दर्य से संपन्न कुछ पंक्तियाँ प्रकटव्य हैं-

अंग अंग को कांति देखि कोटि काम लजाई
सदा प्रसन्न शोभित मंदहासा-
पाप प्रचण्ड पाखंडबुद्धि की राम नाम कुठारा

इसी प्रकार सानुप्रासिक छटा एवं उत्प्रेक्षा और वीप्सा अलकार का प्रयोग देखिए—

है है वनस्पति कहीयो राम रावण हरि लीनी
दिसि दिसि नर नारी नैननि मानों निधि पाई।

राम के शरीर के अवयवों की सुन्दरता का चित्रण कवि ने सानुप्रासिक सौन्दर्य के साथ किया है--

उँच ललाट विसाल नैननु नित सुभ नासा ।।
सुन्दर सुमुख सदा प्रसन्न सोभित मंद हासा ।।

कवि ने अर्थाश्रित अलंकारों की योजना आलोच्य काव्य-कृति में पूर्ण मनोयोग के साथ की है । कवि की वृत्ति उत्प्रेक्षा अलंकार में अधिक रमी है । उत्प्रेक्षा अलंकार का प्रयोग कवि ने दिल खोलकर किया है । अशोक वाटिका में बंदी सीता का वर्णन कवि ने इसी अलंकार की सहायता से किया है । सीता की मानसिक-शारीरिक स्थिति के वर्णन में कवि ने उत्प्रेक्षा अलंकार की वृष्टि ही कर दी है । अत्यंत भयावह राक्षस स्त्रियों से घिरी कोमलांगी सीता का चित्रण उत्प्रेक्षा अलंकार की सहायता से किया है—

विकट विरूप निसाचरी घेरि रही चहूँ पासा ।
मनों ब्याघ्र रण में बंधि सुरभि छोड़े स्वासा ।

उपर्युक्त पंक्तियों में गुण—साम्य के आधार पर सीता की दयनीय अवस्था का चित्रण किया गया है ।

रूपक अलंकार :

मोह अंधार को दीप राम, तिउं लोक पियारा ।
पाप प्रचन्ड पाखंड बृद्धि को रामनाम कुठारा ।।

कवि को अलंकार-योजना बिंब—बिधान में पूर्णतया सक्षम है और भावों की प्रेषणीयता में सहजता एवं मार्मिकता का समावेश हुआ है । संभवतया समस्त राम-काव्यों में यही अत्यधिक लघु कृति है ।

५८ मैलापुर बाजार रोड.
मद्रास-४.

◆◆◆

रंगायन

लोकसंस्कृति तथा लोककला का हिन्दी
मासिक पत्र । वार्षिक मूल्य ७ रुपये
सम्पादक : डा० महेन्द्र भानावत
लोककलो मण्डल, उदयपुर

कर्म

श्रीविनय फत्तन
एम०ए०,एल०एल०

परमेश्वर ने हमें भेजा है
धरती पर
कर्म करने को
कीड़ों की तरह जन्म हुआ
कीड़ों की तरह ही नहीं मरना
वक्त कम है
बहुत कुछ है हमें करना
मैं जानता हूँ
मुझ जैसे लाखों इन्सानों के
पेट में भूख है
आँखों में आँसू
तन पर वस्त्र तक नहीं
क्या कर सकते हैं ?
अपने से दूसरे की मदद
क्योंकि
एक दिन तो बुलावा आएगा
जाना ही होगा
कुछ भी साथ नहीं जाएगा
बस कर्म ही हमारा साथ होगा
जो हमें अमर बनाएगा ।

द्वारा-श्री परमानन्द भगत
राजा एस०एन०रोड, मशाकचक भागलपुर

हंसीले दोहे

सरल शिवानवी

नारी, पुस्तक लेखनी, अपनी राखो नाय,
मांगे से मिल जाय तो, काहे रकम लगाय ।
कर चन्दा जितना मिले, लागे नहीं छदाम,
आम आम के रहत हैं, औ गुठली के दाम ।
ग्रन्थ पन्थ सब जगत के, बात बतावत तीन,
ले कुर्सी, धोखा करो, तन चन्दे में लीन ।

लेखिका

प्रशंसा कीजिए

श्रीमती कुमुद सिंह
एम०ए०

[इस लेख की लेखिका मननशील और अध्ययनशील महिला हैं। व्यवहारिक और वैचारिक लेख लिखने में पटु हैं।

प्रशंसा से प्रेम पैदा होता है, आनन्दामृत हाथ में आता है, किन्तु हम निन्दा का विषपान करने-कराने में अपने को डुबा देते हैं। प्रशंसा के गुणों पर लेखिका ने जो प्रकाश डाला है, वह पठनीय और आचरणीय है। —संपादक]

कहते हैं अगर किसी के हृदय में प्रवेश करना हो तो उसकी प्रशंसा करो और अगर उससे दुश्मनी मोल लेनी हो तो उसकी आलोचना करो। आलोचना एक ऐसी भयानक चिन्गारी है, जो यदि किसी के दिल में घर कर गई तो फिर वह आदमी जिन्दगी भर नहीं पनप सकता है और अगर लगातार किसी की भी आलोचना की जाए तो उस व्यक्ति में निराशा इतनी घर कर जाती है कि रात-दिन में वह आत्महत्या कर सकता है।

"प्रशंसा करना" एक ऐसी कला है, जिस कला के बिना जीवन अधूरा रहता है। वास्तव में हर आदमी में ऐसा कुछ न कुछ अवश्य होता है, जिसकी हमें प्रशंसा करनी चाहिए। किसी भी प्राणी में केवल दोष ही हो ऐसा संभव नहीं होता। अतः, यदि किसी के गुणों की तारीफ की जाती है या उसकी अच्छाइयों का उल्लेख करते हैं तो निश्चय ही उस व्यक्ति को कुछ न कुछ प्रोत्साहन अवश्य मिलता है। किसी के अच्छे कार्य एवं सद्गुणों की प्रशंसा न करके हम उसे निरुत्साहित करते हैं। जिस प्रकार प्रकाश को ढकने से अन्धकार छा जाता है, उसी प्रकार किसी के गुणों को उत्साहित न करने से उसका विकास रुक जाता है और उसमें कुंठा घर करती जाती है। हर व्यक्ति प्रशंसा का भूखा है। चाहे इसे व्यक्तिगत कमजोरी ही क्यों न मानें, पर यह मानवीय आवश्यकता है।

प्रोत्साहन :

प्रशंसा करने का तात्पर्य चापलूसी या खुशामद करने से नहीं है। केवल थोथी प्रशंसा करना उचित नहीं है। अगर किसी व्यक्ति ने कुछ गलत काम किया है या फिर किसी के साथ अनुचित व्यवहार किया है तो यह हमारा दायित्व है कि उसकी इन कमियों से उसे अवगत कराएँ, पर साथ ही उक्त व्यक्ति में निहित अच्छाइयों को उचित सम्मान देकर प्रोत्साहित भी करें। यह प्रशंसा अनुचित नहीं है और न ही इसे चापलूसी या खुशामद ही कहना चाहिए। अगर किसी व्यक्ति से अपना काम कराना है या उससे कुछ प्राप्त करना है तो वह पत्थर मारने से नहीं मिलेगा। किसी के निकट जानेके लिए उसकी सराहना करनी होगी। आखिर उसमें कुछ तो ऐसा है ही जिससे आपको प्रेरणा मिली है। अतः, उसके दोषों को न देखकर उसके गुणों, उसकी योग्यताओं पर आप अपना ध्यान केन्द्रित करें

तो ज्यादा अच्छा होगा । किसी को चित्र बनाने की यह भी एक कला है ।

जरा सोचिए, स्नेह से बोले गए दो मीठे शब्द जीवन में कितनी अहमियत रखते हैं । अगर आपके साथ कोई अच्छा व्यवहार करता है या कभी किसी अनजान व्यक्ति ने जिसको आपने न कभी देखा, न उससे आपका परिचय है फिर भी समय पर आकर आपका बिगड़ा काम बना दिया हो तो यह आपका कर्त्तव्य है कि अपने प्रति किए गए उस व्यक्ति के व्यवहार को समाज के सामने लाएँ ।

प्रेरणा :

कभी-कभी राह चलते या परदेश में अक्सर कई ऐसे सज्जन मिल जाते हैं, जो आपको बिना जाने-बूझे ही आपकी सहायता कर देते हैं । जीवन में घटी ऐसी घटनाओं को आप अवश्य प्रकाश में लाएँ । समाचार-पत्रों में अक्सर ऐसी घटनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं, जिसमें किसी व्यक्ति के अनोखे कर्त्तव्य-पालन उच्च चरित्र और ईमानदारी का उल्लेख रहता है । इसलिए अगर आपके साथ कभी ऐसी घटना घटे, तो उसे अवश्य प्रकाशित कराएँ । इससे दूसरों को प्रेरणा मिलती है और उत्तम आदर्शों के प्रति निष्ठा जाग्रत होती है ।

पत्र पत्रिकाओं में आप विभिन्न लेखकों के लेख और रचनाएँ पढ़ा करते हैं । अगर कभी कोई लेख या कहानी आपको अच्छो लगे, तो यह आपका कर्त्तव्य हो जाता है कि उस लेख की अच्छाई-बुराई आप सम्पादक के नाम लिख कर भेजें । आपका पत्र प्रकाशित होने पर लेखक को नया प्रोत्साहन मिलेगा । एक तो उसे अपने लेख की अच्छाई-बुराई समझ में आएगी, दूसरी ओर सम्पादक को रचनाओं के चयन में काफी सीमा तक सहायता मिलेगी । ऐसे ही अगर कभी किसी रचना में आपको कोई दोष नजर आए, तो उसे भी निःसंकोच लिखें । अपने दोषों को जानकर लेखक आपके प्रति अपना आभार प्रकट करेगा । क्योंकि दोषों को जानकर ही वह अपनी रचना में सुधार कर सकता है, निखार ला सकता है । बशर्ते आपकी आलोचना का ढंग संयमित हो ।

प्रशंसा :

इसी प्रकार अगर कभी आपपर कोई दुःख पड़ता है या ऐसे समय जब कि आपको किसी की सहायता की अत्यन्त आवश्यकता है और कोई आकर आपकी सहायता करता है या कभी घर में बीमारी की हालत में जब आप खाना तक नहीं बना पाती हैं और एक पड़ोसिन बहन आपको खाना बना कर दे जाती है तो यह आपका कर्त्तव्य है कि अवसर पड़ने पर उस बहन के व्यवहार की प्रशंसा अवश्य करें ।

अगर आप किसी सम्बन्धी के घर दावत या छोटी-मोटी पार्टी में जाती हैं, तो लौटते समय उसके द्वारा दिये गए भोजन की तारीफ करना न भूलें और अगर कोई आपको कभी कोई उपहार भेंट करे तो उसके द्वारा दिये गए उपहार की चाहे कितना छोटा उपहार क्यों न हो प्रशंसा अवश्य करें ।

अगर आदमी प्रशंसा करने की कला सीख ले, तो वह अपने पारिवारिक जीवन में भी काफी हद तक सफल हो सकता है । अक्सर देखा जाता है कि बच्चे पढ़ने से जी चुराया करते है, पर कभी कभी ऐसा होता है कि उसकी पढ़ाई उस समय जरूरी होती है । ऐसे समय में अगर आप प्रशंसा के दो शब्द बोल दें जैसे-आज मैं तुम्हारे स्कूल गई थी, तुम्हारी अध्यापिका कह रही थीं कि अगर सोनू थोड़ा और मन लगाए पढ़ने में तो फर्स्ट आ सकता है । आपका इतना कहना होगा कि आपका सोनू पढ़ने बैठ जाएगा ।

सुखदता :

सास-बहू, पति-पत्नी, भाभी-ननद आदि ऐसे रिश्ते हैं जो केवल आपसी सहयोग, प्रेम, सहानुभूति पर ही टिके हैं । ये रिश्ते खून के रिश्ते न होकर व्यवहार की आधारशिला पर खड़े हैं । अक्सर ये रिश्ते कम ही सफल होते हैं और घर-घर में सास-बहू, ननद-भाभी को झगड़ते देखा जाता है । पर अगर दोनों ही एक दूसरे की कमियों को कम से कम नजरअंदाज करें और एक-दूसरे की अच्छाइयों की प्रशंसा करें, तो ये रिश्ते भी सफल हो सकते हैं ।

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

व्यंग्य-परक

विरोधाभास

—डा. जमनालाल बायती

एम०ए०,पी०-एच०डी०

ले
ख
क

[श्री बायती जी हायर सेकेण्डरी स्कूल के आचार्य हैं और हिन्दी के अच्छे लेखक हैं । उनके द्वारा प्रस्तुत 'विरोधाभास' व्यंग्य पठनीय है ।
— सम्पादक]

कैसी अजीब विडम्बना है दुनिया में ! जहर खाने से मौत होती है । यह हर कोई जानता है , पर दूसरी ओर देखो तो महादेव ने जहर पी लिया और मरे भी नहीं । जिस जहर को पीने से मृत्यु होती है, उसी जहर को पीकर दुनिया को बचा लिया । है न विडम्बना । उस वक्त किसी ने भी यह नहीं सोचा होगा कि महादेव जी ने कितनी जगह अपना जीवन बीमा करा रखा है ?

आश्चर्य :

भगवान् राम की अपनी माता कैकेयी के कारण वनवास भोगना पड़ा यह भी हर कोई जानता है। यह भी सर्वविदित है कि वन में उनकी अर्द्धांगिनी सीता को रावण चुरा ले गया था । आज तक किसी ने भी राम को बेअक्ल नहीं कहा जबकि भगवान् राम ने सीता के बारे में पेड़-पौधों तथा पक्षियों से जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न किया था जैसे वे जानते हों या बोलते हों ? कितना आश्चर्य है कि किसी ने भी राम को पुलिस थाने में सीता जी की चोरी की एफ०आई०आर० दर्ज कराने की राय नहीं दी, ढूँढने पुलिस थाने वाले अपने आप सीता जी को द्रोणाचार्य समझते होंगे महान अपने आप को, आज हो तो मुकदमा चले उनपर अस्पृश्यता का । एकलव्य को भर्ती करने से मना कर दिया अपने आश्रम में भील-बालक कह कर । यह भला हो उस जमाने के लोगों का जो किसी ने एकलव्य को द्रोणाचार्य के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराने की राय नहीं दी नहीं तो द्रोणाचार्य को लेने के देने पड़ जाते ।

'दीपक तले अन्धेरा' पूर्वजों ने कहावत बना दी। सोचा ही नहीं कि यह गलत भी हो सकता है । बल्ब से प्रकाश पाकर यह कहावत झूठी हो गई । उनकी बुद्धि पर क्या किसी को तरस नहीं आएगा ?

भगवान् गणेश जी, कितने अच्छे हैं ! किसी भी कार्य की शुरूआत के समय उनका नाम, उनका स्मरण शुभ है । और हाँ उनका पेट (मेरा मतलब उनकी तोंद से है) तो देखिए और अब उसका वजन आँकिए । आपको आश्चर्य नहीं हो रहा है-उनका वाहन सोचिए चूहा । पैर रख दे तो चूहे का कचूमर निकल जाएगा और फिर चूहे की जिन्दगी का कोई बीमा भी नहीं ?

प्रजातन्त्र कितना अच्छा जीवन-दर्शन है ? हमारा संविधान धर्मनिरपेक्ष है-राज्य किसी धर्म का प्रचार नहीं करेगा । पाठ्यपुस्तकों में बच्चों को गाय का'ग' नहीं पढ़ाया जा सकता क्योंकि गाय हिन्दुओं की दृष्टि में पूज्य पशु है । हिन्दुओं का पूज्य पशु होने से हो सकता है कि मुसलमान या ईसाई गाय का'ग' पढ़ाना पसंद नहीं करेंगे, वे गधे का'ग' पढ़ाना पसंद करेंगे; उनकी दृष्टि में गधा धर्म-निरपेक्षता का प्रतीक है ।

उल्टापन :

कई बार लोग अपने बच्चों के नाम भी सोच-विचार कर नहीं रखते । कौन जाने कब किस नाम का मतलब ही उल्टा हो जाएगा ? हनुमान डाकिये ने आवाज दी, ओ-री सरस्वती, मनीआर्डर आया है,

ये लियो । सरस्वती आई उसने आव देखा न ताव, ंगूठा टेक दिया । इतनी ही नहीं उसकी पुत्री का ाम सोच-विचार के बाद उसने रखा है लक्ष्मी । ोग कहते हैं-आजकल लक्ष्मी गोबर बीनते समय बड़ी ड़ती-झगड़ती है ।

कुछ न पूछिए, ये पढ़े-लिखे लोग भी अपने को ीसमार खाँ समझते हैं । कहने को तों पढ़े-लिखे ी-एच० डी० भी और पालते हैं कुत्ते । इतना ही ो तो ठीक पर वे अपने ही जैसे आदमियों को भी कुत्ते मझने लगते हैं । कितने अच्छे हैं वे लोग—फाटक र लिखवा देते हैं 'कुत्ते से सावधान' । क्या इससे ाप यह अर्थ नहीं निकालेंगे कि वहाँ रहने वाले कुत्ते ? होशियार हैं मकान—मालिक जो आने वालों को ी कुत्ते मानते हैं । इससे ज्यादा अच्छे मकान-मालिक े और भी एक कदम आगे बढ़ जाते हैं, तो फाटक र से अक्षर ही नहीं लिखवाते सीधे ही लिखवा देते 'कुत्ते सावधान' यह पढे-लिखे लोगों का ही नमूना ाहिए पर कुत्ते पालनेवाले लोग ऐसा करेंगे ही-ते हैं ।

—राजकीय सेकण्डरी स्कूल
ो० हमीरगढ़, जिला-भीलवाड़ा (राज०) ३११०२५

(पृष्ठ २९ का शेषांश)

पति-पत्नी के सम्बन्धों में घर-घर आज जो तनाव-ी स्थिति पाई जाती है, उसका एक कारण यह भी कि दोनों एक दूसरे की कमियों की दिन भर ालोचना किया करते हैं । इससे दोनों में तनाव बना ता है और कभी-कभी स्थिति इतनी गंभीर हो ाती है कि तलाक तक की नौबत आ जाती है, न्तु अगर दोनों ही थोड़ी समझदारी से काम लें र एक दूसरे की कमियाँ देखने के बजाय एक रे में छिपी अच्छाइयों को देखकर समय-समय पर दूसरे की प्रशंसा करें तो पारिवारिक जीवन काफी ा तक सुखद हो सकता है ।

अगर हम अपने सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन अमन-चैन चाहते हैं तो इस कला को अवश्य ाना चाहिए ।

◆

म० नं० ३२२, गिरीश वर्मा मार्ग
मोती नगर, उन्नाव (उ०प्र०)

---

० कहकहे ०

एक दिन आफिस से जल्दी वापस आने पर पिता को मालूम हुआ कि बेटा आज स्कूल ही नहीं गया । उसे बुलाकर पिता ने पूछा, 'क्यों बेटे, आज स्कूल क्यों नहीं गए ? '

'पिताजी, कहीं पढ़ा था कि रोज-रोज एक ही जगह जाने से मान घट जाता है, सो मैंने सोचा कि मुझे अपना मान थोड़े ही घटाना है, फिर रोज ही क्यों स्कूल जाऊँ ।'

* * *

एक आदमी ने अपने मित्र से पूछा कि ईश्वर के बारे में आपका क्या ख्याल है । मित्र ने कहा कि मेरा तो ख्याल है कि एक दो तो वह दो करके लौटाता है ।

'सो कैसे ? '

'भाई, मैंने एक दिन एक खोटा रुपया चला दिया, दूसरे ही दिन दो खोटे रुपए मेरे पास आ गए । इसी प्रकार मैंने अपनी लड़की एक युवक को ब्याह दी तो, दूसरे हीं हफ्ते बेटी और दामाद दोनों ही मेरे घर रहने को आ गए । '

* * *

अध्यापक दुनिया में रोज सौ आदमी भूखे मरते हैं । मदनमोहन तुम बताओ कि इसे कौन-सा काल कहेंगे ?

विद्यार्थी: दुष्काल, गुरुजी !

* * *

काका के पास रहने वाले एक लड़के की हालत बहुत कमजोर थी। क्योंकि उसका काका इतना कंजूस था कि भतीजे के खाने-पीने में हद से ज्यादा कंजूसी बरतता । एक दिन काका-भतीजे साथ जा रहे थे । काका ने रास्ते में एक बहुत ही कमजोर कुत्ते को देखा जिसका केवल अस्थिपञ्जर ही शेष रह गया था । भतीजे से उसने पूछा कि पता नहीं यह कुत्ता इतना क्यों कमजोर है ।

भतीजे ने तुरन्त उत्तर दिया, 'और कोई बात नहीं, यह भी अपने काका के साथ रहता होगा । '

भारतीय नारी-समाज

श्री अमरपुरी गोस्वामी

लेखक

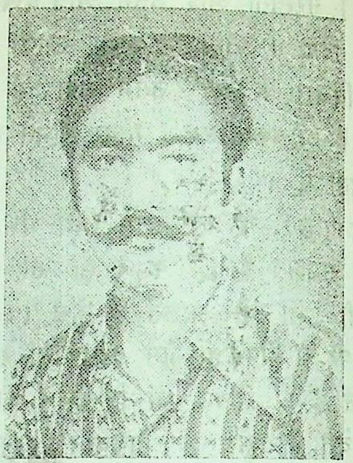

[श्री गोस्वामी जो एक अच्छे लेखक और विचारक हैं। आज का नारी-समाज किस प्रकार तप्त-अभिशप्त जीवन गुजार रहा है, बाहर दीवाली है और अन्दर होली जल रही है यह इस लेखमें स्पष्ट किया गया है। अभिशप्त नारी को तापमुक्त करने की दिशा में कदम बढाइए। — सम्पादक]

भारत के इतिहास पर दृष्टि डालने पर हमें यह ज्ञात होता है कि भारतीय संस्कृति को जीवित रखने में नारी का बहुत बड़ा योगदान रहा है। प्राचीन काल से ही नारी की प्रेरणा से अनेक पुरुष अजर-अमर हो गए। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जिन पुरुषों ने समय की शिला पर पदचिह्न छोड़े हैं, उनके पीछे किसी न किसी रूप में नारी की प्रेरणा रही हैं। यदि हम रामायण और महाभारत को इतिहास-ग्रंथ मानकर चलें, तो इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि नारी चाहे स्वतंत्र रूप से कार्य-क्षेत्र में न उतरी हो, परन्तु पुरुष सहचरी के रूप में उसने उल्लेखनीय प्रेरणाएँ दी हैं।

वेदकालीन ऋषि याज्ञवल्क्य से अनेक दार्शनिक प्रश्न करके उनकी पत्नी 'मैत्रेयी ने उन्हें चिन्तन की प्रेरणा दी थी। शिवाजी के जीवन में एक-बहुत बड़ी प्रेरणा-शक्ति उनकी माता जीजाबाई थीं, शाहजहाँ के जीवन में बहुत बड़ी रंगीन प्रेरणा उनकी पत्नी मुमताज महल थी, हाड़ी रानी ने अपना मस्तक काटकर सेनानी के रूप में भेज दिया था ताकि पति प्रोत्साहित होकर युद्ध करें। ऐसे अन्य अनेक उदाहरण हैं, जिनसे प्रतीत होता है कि नारी की प्रेरणा से पुरुष ने विश्व को कई महानताएँ दी हैं।

एक प्रश्न :

पुरुष-वर्ग ने नारी की प्रेरणा से अनेक उपलब्धियाँ हासिल करने के उपरान्त भी नारी को समानता का अधिकार क्यों नहीं दिया ! भारत के संविधान में नारी को समानता और स्वतन्त्रता का अधिकार दिया गया है, परन्तु पुरुष-वर्ग ने आज तक इसे सहज रूप से अंगीकार क्यों नही किया है यह एक प्रश्न हैं।

नारी के सम्बध में प्राचीन काल से ही एक खास किस्म का दृष्टिकोण बना हुआ है। नारी प्राचीन काल से लेकर आज तक माँग की सामग्री या काम-वासना की तृप्ति का साधन एवं मनोरंजन की वस्तु समझी जाती रही है।

नारी स्वयं भी सदियों से तिहरी गुलामी के भाव से पीड़ित रही है। बचपन में पिता पर, यौवन में पति पर, वार्धक्य में पुत्र पर आश्रित रहने की बात का प्रकारान्तर से ही समर्थन हुआ है। नारी पुरुष के बिना अपने आपको असुरक्षित महसूस करती है हर बात में पुरुष पर निर्भर या आश्रित रहने की मनोवृत्ति उसमें जड़ जमाए हुए हैं। पुरुष-वर्ग द्वारा नारी पर असंख्य अत्याचार किए जाते हैं, फिर भी नारी उन अत्याचारों को सहन करती आ रही है। क्योंकि पुरुष

के बिना वह अपने आपको असुरक्षित महसूस करती है, उसके हृदय में सदा एक ही पुरुष का वास रहता है। इसलिए उन अत्याचारों के विरुद्ध आवाज नहीं उठा पाती।

यातना :

भारतीय संस्कृति को जीवित रखने में बहुत बड़ा योगदान देने वाली भारतीय नारी को आज पुरुष-वर्ग द्वारा जितना जलील किया जा रहा है, उसे सुनते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। दहेज कम लाने, मामूली-सी बात पर कहा-सुनी होने या किसी अन्य घरेलू झगड़ों के कारण उसे बुरी तरह मारना-पीटना, जला देना, असहनीय यातनाएँ देना, उसकी हत्या करना पुरुष के लिए आज एक मामूली-सी बात हो गई हैं। राह चलती नारी के साथ छेड़छाड़, अश्लील हरकतें, उसके साथ कुकर्म करके मौत के घाट उतार देने के समाचार भी हम आए दिन अखबारों में पढ़ते हैं। राह चलते, सफर करते या किसी अन्य जगह तो क्या आज अपने घर में भी नारी की इज्जत सुरक्षित नहीं है। कभी-कभी अखबारों में पढ़ने को मिलता है कि पिता द्वारा पुत्री के साथ बलात्कार, श्वसुर द्वारा पुत्रवधू के साथ बलात्कार, भाई द्वारा बहन के साथ बलात्कार। आखिर पुरुष नारी से कौन से युग का बदला ले रहा है। क्या यही भारतीय संस्कृति है या फिर पुरुष में मानवता खत्म हो चुकी हैं। नारी की इज्जत की कोई कीमत न समझकर पुरुष मानवता का खून बहाये जा रहा है। नारी की इज्जत सरेआम नीलाम हो रही हैं। क्या पुरुष इतना भी नहीं सोच पाता कि वह जो कुछ करने जा रहा हैं उससे उस नारी का जीवन नष्ट हो जाएगा। वह फिर इस समाज में रहने योग्य भी नहीं रहेगी।

हमारे समाज में नारी की इज्जत काँच की प्याली की तरह है, जो एक बार टूटने पर पुनः नहीं जुड़ती। नारीके लिए उसकी इज्जत ही सब कुछ होती है। इज्जत की पवित्रता पर वह किसी भी कीमत पर आँच नहीं आने देना चाहती।

लुटी हुई नारी को हमारा समाज व्यंग्य बाणों से बेधकर लहूलुहान कर देता है। विवशता पूर्ण परिस्थितियों में किसी की वासना का शिकार हुई नारी समाज में अपनी प्रतिष्ठा और मान-सम्मान बनाए रखने की इच्छा से अपना मुँह सी लेती है। अपनी प्रतिष्ठा को बेदाग रखनेके लिए वह हर अत्याचार के सामने घुटने टेक देती है।

शर्म की बात :

विज्ञापनों और चलचित्रों में नारी के अंग-प्रत्यंगों के उभारों को जिस नग्नता के साथ प्रचारित किया जाता है, वह भी भारतीय संस्कृति को जीवित रखने में बाधा डाले हुए है- सौन्दर्य अभिरुचि को जाग्रत करना एक बिल्कुल ही भिन्न बात हैं और वासना को प्लेट में परोसना बिल्कुल ही भिन्न। कला के उदात्तीकरण के नाम पर आज भारतीय संस्कृति को इतना निर्वस्त्र कर दिया गया है कि देखने भर से आँखें शर्म के मारे झुक जाती हैं अथवा अपलक ही रह जाती हैं।

भारत में एक नारी के प्रधानमंत्री होते हुए भी भारत सरकार नारी पर होने वाले अत्याचारों को रोकने में असमर्थ हो रही है।

समय के रहते पुरुषों को नारी के प्रति अपने गलत रवैये को बदलना चाहिए, उसे समान अधिकार दिये जाने चाहिए। अन्यथा नारी अबला ही नहीं एक सबल चिनगारी भी बन सकती है, जो समाज में नारी पर होने वाले अत्याचारों...जुल्मों....अन्यायों और शोषण को जलाकर राख कर सकती है। जरूरत है साहस की, शक्ति की...सूझ-बूझ की और बदल जाने की।

नारी के प्रति पुरुष-वर्ग की यही मनोवृत्ति बनी रही, तो गृहस्थाश्रम धर्म की पवित्र सनातन मर्यादा का विघटन होकर स्वेच्छाचारिता और उद्दंडता का साम्राज्य स्थापित हो जाएगा। अतः, पुरुष-वर्ग को आत्म-निरीक्षण करके नारी को प्रतिष्ठित बनाना है।

◆

नारायण किराणा स्टोर, सदर बाजार (पंसारी बाजार)
जैसलमेर-३४५००१ (राज०)

आरती : चीनी चाची की

काका हाथरसी

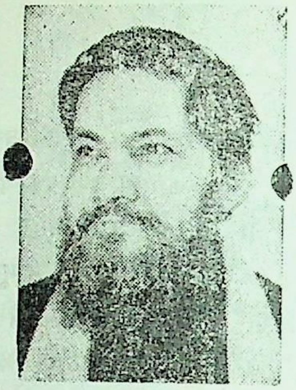

लेखक

जय चीनी चाची, ॐ जय चीनी चाची ।
तेरे विरह में डोल रही जनता नाची-नाची ॥
भाव तुम्हारे भिन्न-भिन्न डालें असमंजस में ।
कहीं तीन, छह, सात, कहीं पर मिलती हो दस में ॥

पिता तुम्हारे गन्नामल जी करते हैं खेती ।
कॉफी-लेमनचूस-बताशे हैं बेटा-बेटी ॥
खाँड़ बहिन, गुड़ जी हैं भाई, माता नहिं पाई ।
पूज्य पिता का पेट फाड़ तुम धरणी पर आई ॥

रूप रंग ह्वाट-ब्राइट, जैसे बेगम चिनियाँ ।
परदे में रखता तुमको राशनवाला बनियाँ ॥
चिपक गई तुम जिससे, उसके रेट हुए हाई ।
पन्द्रह को पच्चीस मिठाई बेचें हलवाई ॥

जमाखोर हैं मस्त, त्रस्त उपभोक्ता जी टापें ।
कृपा तुम्हारी जिनपर, वे नित नए नोट छापें ॥
पाप-ताप धोने को गंगा में मारें गोता ।
काया निर्मल होय, स्वर्ग में आरक्षण होता ॥

कहें खाद्यमन्त्री जी, यदि चीनी ज्यादा खाओ ।
श्रीमती डाइबिटीज के चंगुल में फँस जाओ ॥
फीकी चाय का प्याली, फिफ्टी पैसे में आई ।
इससे अच्छा, वह पीएँ जो पीते देसाई ॥

मित्रों में बढ़ जाती इज्जत उस दिन काका की ।
इम्पोर्टेड चीनी की चाय बनाती जब काकी ॥
एक्सपोर्ट करके तुमको सरकार भी पछताई ।
चारगुनी कीमत देकर फिर वापस बुलवाई ॥

आरती चीनी चाची की नित गाएँ जो पापा ।
भरे रहें गोदाम, नहीं पड़ सकता है छापा ॥
जो आलोचक चीनी की यह आरती नहिं गाएँ ।
पकड़ पुलिस के भूत, उसे थाने को ले जाएँ ॥

हवालात में हो जाए सूरत-मूरत ऐसी ।
नाक पिचपिची, आँख मिचमिची, चाइनीज जैसी ॥
ओउम जय चीनी चाची

संगीत कार्यालय, हाथरस

दो छोर

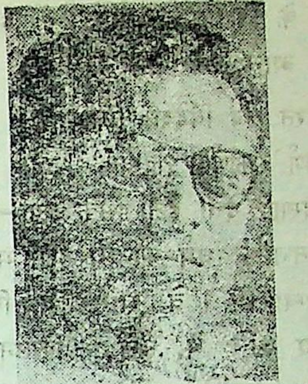

लेखक

श्री डा. पुष्कर चन्दरवाकर

एम०ए०,पी-एच०डी०

[श्री चन्दरवाकरजी गुजरातो के प्राचार्य हैं और एक समर्थ लेखक भी हैं। आपने साहित्य की विविध विधाओं में खूब लिखा है और आपकी कुछ पुस्तकें आदिवासी संस्कृति पर प्रकाशित हो चुकी हैं अब भी आप इसी कार्य में रत हैं।

श्री चन्दवाकरजी ने अभी-अभी दक्षिण भारत को यात्रा की है और वहाँ की संस्कृति को नजदीक से देखा है। आपको दक्षिण को माटी में भारतीय संस्कृति की सच्चो सुगन्धि मिली है, शंकर-रामानुज को आत्मा के दर्शन हुए हैं, जबकि उत्तर भारत उस पंथ को काफो भूल गया है, भटक गया है। इस मर्मान्तक वेदना से व्यथित होकर आपने अपने एक परम प्रिय शिष्य को गुजराती में जो पत्र लिखा है, उसी का हिन्दी अनुवाद दिया जा रहा है। आशा है, पाठकों को इससे प्रेरणा मिलेगी। -सम्पादक]

हाल ही में दक्षिण भारत की यात्रा पर जाने का अवसर प्राप्त हुआ। दक्षिण भारत की विशेषता यह है कि वे भूमि की संस्कृति और धर्म के रक्षक बनकर सांसारिक व्यवहार को बनाए रखने वाले संरक्षक बने हैं। मद्रास में (राज्यपाल) आदरणीय श्री प्रभुदासजी पटवारी स्व. श्री सत्यमूर्ति की पौत्री की शादी में साथ ले गए। शेषशायी विष्णु-भगवान् के दिव्य मन्दिर के प्रांगण में यज्ञ-मण्डप जैसे आंगन में विवाह की विधि सम्पन्न होती दिखाई दी। विवाह-मण्डप वहाँ सजाया हुआ था। लड़की भारतीय वस्त्र और आभूषणों से सुसज्जित थी। गले में फूलमाला थी। दूल्हा भी रेशमी पीताम्बर पहने खुले शरीर कंधे पर जनेऊ धारण किये हुए शादी की विधि में बैठा हुआ देखने को मिला। इस समारोह में अधिकांश लोग लुंगी और कमीज पहने मस्तक पर त्रिपुण्ड और भस्म लगाए हुए उपस्थित थे। इन उपस्थित सज्जनों में कुछ सेवा-निवृत्त अधिकारी भी थे। उन्होंने कभी कलक्टर जैसे उच्च पद पर भी कार्य किया होगा, उन्होंने अंग्रेजी सत्ता में भी नौकरी की होगी, परन्तु भारतीय शादी की विधि एक धार्मिक विधि है, इस रहस्य को समझकर मानों वे उस विधि की शान बढ़ाने और उसका औचित्य बनाये रखनेके लिए दक्षिण भारत की पोषाक में इस विवाह-समारोह में उपस्थित दिखाई दिए, तब मुझे गुजरात के बाज खेड़वाल ब्राह्मणों एवं अन्य जातियों में होने वाली शादियों की याद आई। आज गुजरात की शादियों में भी कोट-पातलून दिखाई देते हैं। उसने परंपरागत वेश-भूषा का त्याग कर दिया है।

मैंने कुछ वर्ष पहले गर्मी की एक चिलचिलाती दोपहर को धंधुका के रेल्वे स्टेशन पर चूड़ासमा क्षत्रिय-गरासिया दरबार के दूल्हे को देखा था। वह सिलवार, अचकन, सिर पर जरियन साफा, रेशमी रूमाल में तलवार लिपटाये हुए बड़े ही शान से सजा हुआ था और पग में थी शानदार मारवाड़ी मोजड़ी। मुझे उसकी इस शानके लिए उससे मिलकर धन्यवाद देने की इच्छा हुई। उसमें मुझे क्षत्रियत्व दिखाई दिया, उसमें मुझे भारतीयता के दर्शन हुए, माँ भारती का एक लोचन खुला हुआ-सा प्रतीत हुआ। फिर भी भारतीय

संस्कृति के विशाल पट में आज दरार पड़ी है, वर्णसंकरता आने लगी है।

भारत जब विदेशी सत्ता के अन्तर्गत था, तब इतनी वर्ण-संकीर्णता दिखाई नहीं देती थी जितनी आज दिखाई देती है। इसके क्या-क्या कारण होंगे ? अंग्रेजी सत्ता ने धर्म-मन्दिरो और भारतीय संस्कृति को अलग रखा था। वे शासक थे जिससे वे हस्तक्षेप करते हुए डरते थे, उन्हें आंदोलन-विप्लव का डर लगता था। क्योंकि उन्होंने सन् सत्तावन के विप्लव के कड़वे घूँट पिये थे।

परन्तु स्वतंत्रता के बाद भारत की मुक्ति में से संयम अदृश्य होने लगा है। साथ ही साथ अनुकरण वृत्ति भी विशेषरूप से देखने को मिलती है। गुजरात जैसे प्रदेश में गुजरात का शहरी जीवन पाश्चात्य संस्कृतिमय होने लगा है। बम्बई में निवास करते धनाढ्य अमीर गुजराती परिवार भारतीय संस्कृति हीन होकर जी रहे हैं ऐसा हाल ही की दो सप्ताह की यात्रा में दिखाई दिया।

मद्रास में श्री बालकृष्ण भाई जोशी से हवेली के दर्शन के समय मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। वह गुजरात के बाज खेड़ावाड़ ब्राह्मण का संस्कारी परिवार लगा। वे वेश-भूषा से नख-शिख गुजराती ही लगे। सिर पर पघड़ी, बाफनी, धोती और मस्तक पर तिलक। उनकी पुत्री से भी मिलने का अवसर मिला। उसने मेरे साथ गुजराती भाषा में बात की। इस परिवार को दक्षिण भारत में गए सौ वर्ष से भी ज्यादा हुए हैं, फिर भी मातृभाषा को बचाकर वे जी रहे हैं। जबकि श्रीमती कलाबहन तामिल भाषा की व्याख्याता हैं।

जन्माष्टमी के दूसरे दिन अर्थात् पारणा के दिन सुबह पूज्य श्री पटवारी जी के साथ बालकृष्ण के झूला-दर्शनार्थ जानेपर कुबेरशा वयोवृद्ध सेठ श्री जमनादास शाह से मद्रास में मिला। उस परिवार में गुजरात है। जहाँ जहाँ (बसे) एक गुजराती वहाँ-वहाँ सदा गुजरात के दर्शन मुझे मद्रास के परिवारों में हुए। यह परिवार मूलतः लुणावाड़ा का है, परन्तु तामिलनाडु में गए लगभग दो सौ वर्ष होने पर भी संस्कार और भाषा में गुजराती रह सका है।

परन्तु बम्बई के गुजराती परिवारों की विषम स्थिति यत्र-तत्र देखने को मिलती है। इस बार बम्बई के एक परिवार के साथ रहा हूँ और उसकी तीन पीढ़ियों का निरीक्षण शांति से किया है। पुरानी पीढ़ी में गुजरात के संस्कार और संस्कृति के दर्शन होते हैं। कालबा देवी, भूलेश्वर, मलाड़, घाटकोपर, सान्ताक्रूज, विलेपारले या अंधेरी के रास्तों पर धोती पहने हुए अनेक गुजराती दिखाई देते हैं, परन्तु उनके सिर पर नजर डालें तो वे श्वेतकेशी लगे। अर्थात् आज बम्बई में जो गुजराती परिवार बसे हुए हैं, उनकी पूर्वकी तीसरी पीढ़ी में गुजरात के दर्शन होंगे। वे बुजुर्गों की आज्ञा और इच्छा का उल्लंघन कर जी नहीं सकते, बुजुर्गों की मान-मर्यादा और स्थान बनाये रखने के आदर्श से वेश-भूषा में परिवर्तन लाकर धार्मिक विधि इत्यादि में भाग लेते हैं और परिवार के बुजुर्गों के साथ गुजराती भाषा में बातचीत करते हैं। यह पेढ़ी अनुष्ठान विधि के समय भी बुजुर्गों की भावनाओं को आदर देकर त्योहार-पर्व मनाती है और गुजराती कंसार, तलधारी, लापसी जैसे शुद्ध गुजराती भोजन का व्यवहार करती है। बीच की पीढ़ी में अधकचरा गुजरात मिलता है। ऐसे परिवारों में बीच की पीढ़ी ब्रेड, सेन्डीवीच आदि का स्वाद लेने लगी है। कितने ही घरों और परिवारों में बोइड और फ्राइड अण्डे का भी उपयोग होने लगा है। बीच की पीढ़ी अपनी संतानों के साथ अंग्रेजीभाषी बन गई है।

बीच की पीढ़ी का मुखारविन्द पश्चिम का अनुगामी है , जिससे वे अपने बच्चों को कोन्वेंट स्कूल में भेजने लगे हैं। अंग्रेजी माध्यम वाली प्राथमिक शाला में खेलने की उम्र वाला तीन वर्ष का बालक जाता हुआ देखने को मिलता है। वह जब पाश्चात्य वेष-भूषा में सुसज्जित होकर स्कूल बस में जाता है, तब गुजराती-भारतीय माता के 'टा टा' और 'बाय बाय' कहकर हँसते मुख से हाथ लम्बाकर हथेली को हिलाते हुए देख कर मुझे ऐसे बालकों और उनकी माताओं

र दया-अनुकंपा और सहानुभूति उत्पन्न होती है—नकी अंधानुकरण वृत्ति पर, विदेशी एवं गुलाम नोवृत्ति पर ।

मेरा मुसलमान परिवारों के साथ भी स्नेह—नाता । वे अपने संस्कारों को बनाये रखकर ही जीवन जी रहे हैं । हाँ खोजा जैसी जाति के पास न तो रे भारतीय संस्कार हैं और न ही इस्लामी संस्कार । फिर भी अनेक खोजा परिवारों में भारतीयता और गुजरातीपन एकत्रित देखने को मिला है। यदि व्होरा जाति के दीवानखाने में भी भारतीयता के दर्शन होते हों तो किस कारण अपने इन हिन्दू—कुटुम्बों में पश्चिम का हरा रंग लगा है, यह समझ में नहीं आता ।

स्वराज्य प्राप्ति के बाद गुजरात के लोगों की नजर अमेरिका और केनेडा की ओर गई । अफ्रीका में जो गुजराती वे इंग्लेड में जाकर बस गए । गुजराती स्वभावतः व्यापारी हैं । व्यापार में जो प्रजा होशियार होती है, वह भौतिकता से जरूर आकर्षित होती है । यही भौतिकतावादी दृष्टि गुजरातियों को उनकी संस्कृति में अवरोधक सिद्ध होती है । इसी कारण वे जिस नए प्रवाह को देखते हैं, बाजार में अधिक प्रभाव में जो कुछ आता है और जिसकी बाजार में भरमार हो ऐसी शौक-वस्तुएँ और साज-सज्जा की वस्तुएँ आभूषण और वस्त्र को वे अपनाते हैं, उनमें संस्कार-दृष्टि ही कभी देखने को मिलती है । भाषा के विषय में भी यही हुआ है, जिसके कारण भारतीय संस्कृति मुसीबत में आ गई है । अंग्रेजी में ही मुझे कहना हो तो कहूँगा कि Our Culture is in crisis अपनी संस्कृति इस समय खतरे में है।

इसकी रक्षाके लिए अपने शिक्षित वर्ग को ध्यान देना पड़ेगा । हमारे शिक्षित वर्ग को पश्चिम का रोग दिन-प्रतिदिन अधिक सताता जा रहा है, ऐसा मुझे मेरे बम्बई-प्रवास में देखने को मिला । क्योंकि जिस पीढ़ी ने बम्बई की किसी कालेज में शिक्षा प्राप्त की है, व्यापारार्थ वे विदेशियों के परिचय में आते हैं जिससे विदेशी रीति-रिवाजों का वे अनुकरण करने लगे हैं। वे अपने मन में अनुमान करने लगे हैं कि हमारे बच्चे पढ़-लिखकर अमेरिकन बनें, सवाया अंग्रेज बनें । इस ख्याल से ही गुजरातीपन और भारतीयता अदृश्य होने लगी है ।

मैं पश्चिम की एक विदुषी का उदाहरण दूँ । इस वर्ष के अगस्त महीने के (चौथे) सप्ताह में भारत-अमेरिकन लोक शास्त्र परिषद थी, उसमें अमेरिकन विदुषी डॉ बिन्दाबेक आई थीं। वे जवान थीं, लावण्यवती भी थीं । उम्र के अनुपात में गंभीर मुखमुद्रा होने पर भी हँसकर बात करती थीं । उस परिषद् के छहों दिन वे भारतीय वस्त्रों में सुसज्जित होकर आईं । उसमें भी जयपुरी साड़ी में सुसज्जित होकर हाजिरी दी, तब मेरी पत्नी देखते ही रह गई । डॉ. बिन्दाबेक ने मेरी पत्नी से कहा, "तुम मुझे अपनी पद्धति से साड़ी पहनना सिखाओगी ? तुम उसमें बहुत सुन्दर लगती हो ।" मेरी पत्नी गुजराती साड़ी पहने हुई थी ।

पाश्चात्य लोगों में अनुकरण-वृत्ति की अपेक्षा सौंदर्य वृत्ति दिखाई देती है । वे भारतीयता को स्वीकार करते हैं और अनेक बार भारत की जलवायु के अनुकूल वस्त्र भी धारण करते हैं । डॉ. पिटर कमोस केलोफोर्निया की विद्यापीठ के नृवंश शास्त्र के अध्यापक हैं, वे जवान हैं । जवान होने के बावजूद भी धीर और गंभीर हैं । वे एक दिन पायजामा और लखनवी सुथनी पहन कर परिषद में उपस्थित हुए । डॉ. रामराजू और डॉ. चूड़ासमा के अलावा अन्य अध्यापक विशेषतः पाश्चात्य वस्त्रों में थे ।

इस प्रकार भारत का शिक्षित वर्ग पश्चिम की ओर भागता हुआ दिखाई देता है । उसमें भी यदि शिक्षकों और अध्यापकों की दौड़ नहीं अटकी तो भारतीय संस्कृति के स्तम्भ क्रमशः मिट्टी में मिल जाएँगे ।

आज भारतीयता और भारतीय संस्कृति की सुरक्षा के लिए जाग्रत होकर यदि पिछली पीढ़ी को उस दिशा में मोड़ सकें तो इस देश के सबसे अमूल्य धन की रक्षा मानी जाएगी । इसके लिए हम सभी को शीघ्रता से मिलजुल कर प्रयत्न करना होगा ।

मु. पो. चंदरवा (चाँदनी) ३८२१५५
वाया—जालिया, ता. धंधुका, जि. अहमदाबाद

संस्मरण–परक

वे दिन : वे लोग

श्री गौरीशंकर गुप्त

पत्रकार

[श्री गुप्त जी उच्च कोटि के लेखक, पत्रकार और विचारक हैं । आपने कई महत्त्वपूर्ण पुस्तकें लिखी हैं ।

श्री रायकृष्णदास जी अग्रवाल कुल-भूषण उच्च कोटि के कलाकार और सुसंस्कृत व्यक्ति थे। उनके जीवन की कुछ विनोद पूर्ण झाँकियाँ इस लेख में कराई गई हैं । इस प्रकार का आत्मीयता और निश्छलता लुप्तप्राय होती जा रही है, मजा किरकिरा होता जा रहा है इसे पढ़िए और सच्चा आनन्द पानेके लिए इस पद्धति को अपनाइए ।

—सम्पादक]

कलाविद् स्व० राय कृष्णदासजी मेरे परम श्रद्धाभजन थे । यद्यपि उनसे मेरे स्वनामधन्य प्रमातामह की घनिष्ठ मित्रता थी, किन्तु मैंने उनके प्रथम दर्शन शायद १ जनवरी ४८ को उनकी रामघाट वाली कोठी 'शांति–कुटीर' में किए थे । तब से अन्त तक–लगभग ३५ वर्षों की लम्बी अवधि पर्यन्त मुझपर उनका वरद हस्त बना रहा । श्रद्धेय मैथिलीशरणजी तथा सियारामशरणजी के प्रथम दर्शन मैंने राय साहब के निवासस्थान पर ही किए थे । राय साहब का निवासस्थान अन्त तक 'सत्यं, शिवं, सुन्दरम्' का संगम बना रहा । स्व० जयशंकर 'प्रसाद' जी, मैथिलीशरण जी और रायकृष्णदास जी इन तीनों अंतरंग मित्रों की आपस में खूब घुटती थी । राय साहब के निवास स्थान पर जमने वाली कई साहित्यिक महफिलों के दृश्य आज भी मेरी स्मृति में हैं । तीनों महारथियों की मित्रता देखकर कितने हो लोगों को ईर्ष्या होती थी । ये तीनों महानुभाव परस्पर बालकों की तरह चुहल करते, झगड़ते और एक दूसरे को काफी खरी खोटी सुनाया करते थे । ऐसी ही कुछ दुर्लभ झाँकियाँ यहाँ प्रस्तुत हैं ।

एक :

प्रसंग सन् १९५१ का है । प्रयाग में आदरणीय महादेवीजी के 'साहित्यकार–संसद्' के त्रिदिवसीय-समारोह में सम्मिलित होने के लिए अनेक साहित्यिक बंधु पधारे थे । जिस कक्ष में स्व० राय साहब और मैथिलीशरण जी ठहरे थे, उसी में स्व० वृन्दावनलाल जी वर्मा और आदरणीय सीताराम जी सेकसरिया भी थे । एक दिन वर्माजी को लौटने में कुछ देर हो गई । इसपर राय साहब मैथिलीशरण जी से बोले, " मैथिलीशरण ! जरा कोने में रखो वह छड़ी देना—इस वृन्दा का सिर फोड़ूँगा ।" मैथिलीशरण जी बोले, "ऐसा क्यों ?" उत्तर मिला, "इसकी पत्नी को मुझे ही उत्तर देना पड़ेगा। पता नहीं, यह कहाँ–कहाँ घूम–फिर रहा था ! "

उसी अवसर का एक दूसरा प्रसंग भी कम रोचक नहीं है । मैथिलीशरण जी राय साहब से बोले, "कृष्णदास ! तुम 'कला–भवन' के लिए जो याचना करते फिरते हो, उसका निदान मैंने खोज लिया है, अब तुम्हें परेशान होने की जरूरत नहीं ।" उन दिनों मैथिलीशरण जी राज्य सभा के मनोनीत सदस्य के रूप में दिल्ली में निवास करते थे । सो, उन्होंने कहा, "तुम फौरन् दिल्ली चले आओ और शिक्षामन्त्री मौलाना आजाद से कहो कि मेरे पूर्वज की एक मुसलमान उपपत्नी थी, जिसका हम मातामही के तुल्य ही सम्मान करते थे । इस प्रकार हम आपके सजातीय ही हैं । इतनी जानकारी होते ही मौलाना थैली उड़ेल देंगे ।" इतना सुनते ही राय साहब बोले, "इसकी आवश्यकता ही नहीं है ।" वहाँ उपस्थित लोगों से राय साहब ने पूछा, "आज कौन–

ा दिन है ?" उत्तर में 'शुक्रवार' सुनकर वे मैथिली-शरण जी को सम्बोधित करते हुए बोले, "सुनो, कल शनिवार है। तुम महादेवी से एक लोटा लेकर उस र शनिदेव की मूर्ति स्थापित कर लेना और बाजार में खड़े हो जाना। काफी रकम जुट जाएगी।"

दो :

प्रसंग संभवतः दिल्ली का है। राज्यसभा के सदस्य के रूप में मैथिलीशरणजी उन दिनों वहाँ रहा करते थे। योगवश एक बार उनकी अनुपस्थिति में राय साहब वहाँ पधारे। मैथिलीशरणजी के लौटने के पूर्व ही राय साहब वहाँ से प्रस्थान कर चुके थे। पत्र में अपने हृदयोद्गार व्यक्त करते हुए मैथिलीशरणजी ने लिखा था—

"कृष्णदास ! यह करतूत किस क्रूर की ?
आए थके-हारे हम, यात्रा कर दूर की।
'द्राक्षासव' तो न मिला, बोतल ही रीती थी,
जानते हमीं हैं तब हमपर क्या बीती थी !
ऐसी भी घड़ी हा ! पड़ी उस दिन देखनी—
धार बिना जैसे असि, मसि बिना लेखनी !"

तीन :

काशी नागरी प्रचारिणी सभा-भवन के बाहर उन दिनों एक फव्वारा था। वहाँ राय साहब, 'प्रसाद' जी और सभवतः डॉ. श्यामसुन्दर दास जी भी बैठे थे कि एक कटी पतंग कहीं से आकर गिरी। स्व० मुंशी जगन्नाथ प्रसादजी की उन दिनों किशोरावस्था थी और वे 'सभा' के वैतनिक कर्मचारी थे। उन्होंने पतंग उठा ली। 'प्रसाद' जी ने मुंशीजी से पतंग ले ली और राय साहब से कहा, "लीजिए, उड़ाइए।" राय साहब छूटते ही बोले, "मैं किसी की 'उड़ाई हुई' नहीं उड़ाता।"

काशी नागरीप्रचारिणी सभा का ही एक दूसरा प्रसंग है। वहाँ कोई महोत्सव था, जिसमें स्थानीय तथा बाहर के बहुत से साहित्यकार पधारे थे। जब आयोजन समाप्त हो गया तो साहित्यकार भी भीड़ के साथ बाहर निकलने लगे। सबसे आगे राय साहब, उनकी दाहिनी ओर 'प्रसाद' जी और उनके पीछे मैथिलीशरणजी और पं. जगन्नारायणदेव शर्मा 'कविपुष्कर' जी थे। ये सभी महानुभाव बातें करते हुए 'सभा' के 'आर्यभाषा पुस्तकालय' के गलियारे में पहुँचे। वहाँ दोनों ओर दीवार से सटे फूल के गमले सुशोभित थे। भीड़ के कारण राय साहब बाईं ओर दबे कि उनके बाएँ पैर से एक गमला लुढ़क गया। राय साहब जरा रुक गए। तब तक 'प्रसाद' जी ने उस गमले को हँसते हुए उठाकर सीधा कर दिया। उसी समय कवि पुष्करजी ने हँसते हुए कहा, "अरे ! यह क्या बात !" 'प्रसाद' जी ने उत्तर दिया, "राय साहब कलाविद् हैं। यह भी एक कलाबाजी है !" तब तक मैथिलीशरणजी बोल उठे, "अच्छा तो यह हो कि कृष्णदास को भी लुढ़का दिया जाए कि सारी कलाबाजी एक साथ ही सामने आ जाए।" राय साहब बोले,

"चुप रहो, क्या वाहियात बातें करते हो !" फिर सभी लोग हँसते हुए सीढ़ी से नीचे उतर आए। ऐसे थे वे दिन और वे लोग, जिनकी न मालूम कितनी ऐसी स्मृतियाँ होंगी। अब उनका व्यंग्य-विनोद, अट्टहास, उनकी चुहलबाजी, उनके कहकहे-सब अतीत की वस्तु बन चुके हैं। ❀

ए २१५, कामेश्वर महादेव,
गायघाट, वाराणसी-२२१००१

---

० तू ०

कितने दिन अपने पौरुष से
तू विराट अनजान रहेगा !
कितने दिन विश्वास तुम्हारा
संशय पी म्रियमाण रहेगा ?

श्री कन्हैयालाल सेठिया की 'दीपकिरण' से

एक नेता भाषण करने एक छोटे कस्बे में गए थे। स्कूल के प्रांगण में आयोजन था। भाषण शुरू करने के पूर्व उन्होंने देखा, पास ही मैदान में कुछ गदहे चर रहे थे।

विनोद में उन्होंने सभा को संबोधित करते हुए पूछा, 'क्या यहाँ गदहे भी रहते हैं ?'

किसी ने तपाक से उत्तर दिया, 'जो नहीं, रहते तो नहीं, कभी-कभी आ जाया करते हैं। नहले पर दहला पड़ जाने से नेता जी का चेहरा देखने लायक था।

श्री श्यामसुन्दर बगड़िया

मोटापा

श्री रवीन्दु सुमन

मोटापा किसी भी शरीर का शत्रु है । उसे दूर करने में बालिका वीणा की चतुराई देखिए और धन्यवाद दीजिए । "बिनु औषधि बियाधि बिधि खोई" कथन को यहाँ चरितार्थ किया गया है । -सम्पा०]

उसके मोहल्ले में एक शानदार पुराने ढंग की हवेली, और हवेली में एक झरोखेदार खण्ड, खण्ड में एक कीमती पलंग पर सोई है एक महिला । यह महिला और कोई नहीं, इस हवेली की मालकिन है—सेठानी है, सेठानी भूरीबाई । दूसरे पास-पड़ोस के ठीक मध्यवर्गीय, पेट भर खाने वाले और इज्जत से रहने वाले लोग ।

सेठ जी का चारों ओर व्यापार से गुथा हुआ कारोबार है । सेठ कस्तूरचन्द हीराजी का नाम बूढ़े से बालक हर एक जानता है । हवेली में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं । खाना-पीना, पहनना-सोना सभी में लखपतियों की जिन्दगी का आभास । सेठानी भूरीबाई शरीर से बेहद मोटी हैं और मोटापन ऐसा कि निरन्तर बढ़ ही रहा था । घर में हर तरह का सुख होते हुए वे दुःखी थीं । दुःखी किसी घाव-ताव से नहीं—अपने आपसे ही । उनका शरीर बहुत मोटा हो गया था । उनका इलाज करवाया गया कि शरीर का मोटापा कुछ घटे, लेकिन वह तो और बढ़ता ही गया । और बढ़ा इतना कि उनको हर समय दूसरे की सहायता की जरूरत पड़ने लगी । इतना भारी-भरकम शरीर चलते-चलते डगमगाए, तो गिरने की नौबत आ जाए ।

मालकिन का इलाज पर इलाज हुआ । दवाइयों से घर में चिन्ता व्याप गई । अब भूरीबाई को हर काम सहारे बिना नहीं चले । सोनेके लिए लम्बा-चौड़ा पलंग, मुलायम गाद्दियाँ और तकिये । फिर भी उनसे सोया नहीं जाए । श्वास फूली हुई रहे ।

उनका शरीर एक समस्या बन गया । अद्भुत-सा आकार दीखने लगा । देखते-देखते सेठानी का राक्षसी शरीर घर भर की चिन्ता का विषय हो गया । पड़ोसी की वीणा को लगता कि उसके पूरे घर का खाना जितना वे अकेली खा लेती होंगी । कपड़ा भी दुगुना और चैन नहीं । सोने पर सो नहीं सकें और बैठने पर बैठ नहीं सकें यानी हर हालत में तकलीफ ।

वीणा ने भी जाना कि सेठानी को कुछ इलाज लागू नहीं होता । वह सोचने लगी कि आखिर यह मोटापा किस तरह घटाया जाए । मोहल्ले भर पर एक चिन्ता की छाया मंडराने लगी ।

एक दिन वीणा के दिमाग में समझ की एक बिजली-सी कौंधी । उसने अपनी पुस्तक में पढ़ा था और गुरुजी ने उसका अर्थ समझाते हुए उदाहरण देकर बताया था कि चिन्ता द्वारा 'बिन दाझे जल जाए' ।

वीणा की कक्षा में उसका एक साथी किसी अन्य गाँव से पढ़ने आता था । वीणा से उसकी अच्छी बनती थी । वीणा ने अपनी योजना की उससे बात की तो पता लगा कि उसके गाँव में एक पण्डित था । वह धार्मिक कर्म-काण्ड करता और भूत-भविष्य की भी बात बताता था । दोनों ने योजना बनाकर उस पंडित को बुलाया । वीणा ने उसे अच्छी तरह समझा दिया कि उसे सेठानी से क्या-क्या कहना है ।

दोपहर ढल गई थी । सेठानी दालान में गादी-तकिये का सहारा लिये आराम से बेचैनी अनुभव कर रही थीं । वीणा ने दो दिन पूर्व ही सेठानी से कहा था कि पास के गाँव का ज्योतिषी है जो भूत-भविष्य का पूरा लेखा-जोखा बताता है, जिससे शरीर का मोटापा घट जाएगा ।

सेठानी ने पण्डित को आसन देकर बैठाया । सेठानी अकेली ही थीं । दूसरे लोग ऊपर-नीचे कहीं काम में

और आराम में थे। वीणा ने बताया कि माँ जी, यही वे जानकार पंडितजी हैं। पंडितजी ने एक बार सेठानी ऊपर नजर दौड़ाई, उसका हाथ अपने हाथ में लिया और उनकी हथेली की रेखाओं पर गहरी–तीव्र नजरों से देखने लगे। वीणा ने सेठानी के जीवन की उन सभी घटनाओं का पूर्ण मनोविज्ञान पंडितजी को पहले ही बता दिया था। पंडितजी भूतकाल की कुछ बातों का उसके जीवन के साथ मेल बैठाते हुए आगे बढ़े और ग्रहों–नक्षत्रों की गिनती में रेखाओं के आकारों को स्पष्ट करते गए। सेठानी का भरोसा उनपर बैठता गया और इसी बहाव में पंडितजी एकदम अन्तिम वाक्य कह उठे, “ईश्वर ऐसा न करे लेकिन आपकी जीवन–रेखा कहती है कि आप तीस रोज बाद ....।”

उस दिन के बाद सेठानी चिन्ता–ग्रस्त हो गई कि अब रोज उसकी जिन्दगी का एक दिन कम हो रहा है और तीस रोज बाद वह मौत को प्यारी हो जाएगी। उसपर मौत का भयानक भूत सवार हो गया। सात दिन बाद ही लगने लगा कि उसका शरीर कुछ घट रहा है और कुछ दिन गुजरते सेठानी दुबली पड़ने लगीं। घर वाले आश्चर्य–चकित हुए कि अब की बार इलाज कुछ काम में आया है, परन्तु उन्हें पता नहीं कि दवाई लेना उसने कब से छोड़ दिया था। तीस रोज बीतते–बीतते सेठानी का शरीर साधारण रह गया।

तीस रोज से अधिक दस रोज निकल गए फिर भी सेठानी को मौत नहीं आई वह जीवित रही, लेकिन मोटापा अवश्य दूर हो गया। उसे लगा कि ऐसे पंडित तो कोरे झूठे होते हैं। दूसरी सुबह को उनका भरा–पुरा घर खुशी के माहौल में था—वीणा ने आकर बताया कि यह तो वजन घटानेके लिए इस्तेमाल किया गया एक तरीका था, जो उसके साथी ने मिलाकर तैयार किया था। क्योंकि वह जानती थी “चिन्ता दहन्ति शारीरम्।” सेठ ने उसे उठा कर अंक में भर लिया। सेठ ने वादा किया कि अब से उसकी पढ़ाई की सारी फीस वह स्वयं देगा। *

नबी मास्टर का डेला, नागोरीवाड़,
शाहपुर, अहमदाबाद—३८०००१

० दन्तधावन ०

मुख–शुद्धिके लिए दतुअन सर्वश्रेष्ठ हितकर साधन है। दतुअन न करने से न केवल दाँतों में, अपितु अन्य अंगों में भो रोग हो जाते हैं। दाँतों का मैल अन्नादि के साथ पेट में जाकर विष का काम करता है॥

अतः, सूर्योदय से पूर्व पूर्वाभिमुख और उसके बाद उत्तराभिमुख अथवा दोनों समय में ईशानकोणाभिमुख होकर दतुअन करें। दतुअन कूचने और फेंकने के पहले उसे धो देना चाहिए।

सर्वदा ऋतु–दोष, रस और वीर्य को देख कर कसैली, मीठी, तीती, कड़वी–यथोचित दतुअन करनी चाहिए। तीती में नीम, कसैली में बबूल, मधुर में महुआ और कड़वो में करंज की दतुअन श्रेष्ठ है। वेर की दतुअन से मधुर स्वर, गूलर की दतुअन से वाक्सिद्धि, अपामार्ग–(चिचिड़ा) से स्मृति एवं मेधा की वृद्धि बताई गई है। नीम की दतुअन से मुख के और दाँत के पायरिया आदि रोंग नष्ट होते हैं। बबूल की दतुअन से दाँत का हिलना बंद हो जाता है।

दतुअन बैठ कर, मौन होकर नीचे मुँहकर के करनी चाहिए। घूम–घूम कर या खटिया पर बैठकर सामान्य स्थिति में दतुअन नहीं करना चाहिए।

मुख के पक जाने या सूज जाने पर, कानों में पीड़ा होने या नया ज्वर होने पर प्यास लगी अवस्था में, गला, तालु, ओष्ठ, जीभ और दाँतों में रोग होने पर, ऐसी स्थिति में दातौन नहीं करनी चाहिए।

टूथपेस्ट से हानि :– दाँतों में चमक लाने वाले उसके द्रव्य से दाँतों की प्राकृतिक पालिस नष्ट हो जाती हैं, जिससे दाँतों में पानी लगने लग जाता है। फलतः, दाँत दुर्बल हो जाते हैं। ब्रश से मसूड़े खुल जाते हैं, जिससे उनमें साग–सब्जी फँस जाती है, दाँत हिलने लग जाते हैं। टूथपेस्ट की पद्धति भारतीय नहीं है।

जहाँ दातुन उपलब्ध न हो, वहाँ आयुर्वेदिक हानि–रहित देशी मंजनों का प्रयोग किया जा सकता है। शुद्ध मिट्टी अथवा बालू से भी दाँत–साफ हो जाते हैं।

‘कल्याण’ से साभार

गुजरात के बन्दरगाह और औद्योगिक विकास

— श्री इन्द्रवदन प्राणलाल

गुजरात प्राचीन काल से व्यापारिक महत्त्व को अपने में समेटे हुए है, देश-विदेश के बीच सेतु निर्माण करने वाला प्रदेश है। इस प्रदेश के औद्योगिक विकास में यहाँ के बन्दरगाहों के महत्त्व पर इस लेख में जो प्रकाश डाला गया है, वह पठनीय है। — सम्पादक]

किसी भी देश के औद्योगिक-विकास में वहाँ के 'बंदरगाह' अधिक महत्त्व रखते हैं। अन्तरराष्ट्रीय व्यापार में सागर का महत्त्व अधिक है। सागरअधिक सुलभ और सस्ता रहता है। यूरोपीय सागर-तट स्थित देशों का विकास वहाँ के बन्दरगाहों के कारण ही हुआ है।

भारत के सागरतट और गुजरात :

भारत का सागरतट ५७७० किलोमीटर तक फैला हुआ है, और १४५ बन्दरगाह हैं। इनमें से ४० बन्दरगाह तो गुजरात में ही हैं। गुजरात का समुद्री व्यापार एक पुरानी परंपरा रही है। गुजरात के सागर-तट का व्यापार विश्वभर में विख्यात था। उसका अपूर्व स्थान था। गुजरात का समुद्र १६०० कि०मी० विस्तृत है। इसमें कंडला एक बहुत ही बड़ा बन्दरगाह है, जिसका संचालन ट्रस्टीबोर्ड करता है, जो गुजरात राज्य के अधीन है। गुजरात के ३७ बंदरगाहों में से ११ बन्दरगाह मध्यमकोटि के हैं और २६ बन्दरगाह छोटे (Minor) हैं। भारतवर्ष के छोटे-बड़े और मध्यम श्रेणी के बन्दरगाहों से सन् १९७३-७४ में विदेशों से माल का जो आयात-निर्यात ८२.२८ लाख टन हुआ था, उसमें से २२.२८ लाख टन माल गुजरात के बन्दरगाहों से ही सफलतापूर्ण हुआ था।

गुजरात के बन्दरगाहों से माल का आयात और निर्यात :

गुजरात राज्य के प्राकृतिक बन्दरगाह (Hinterland) केवल गुजरात राज्य तक ही सीमित नहीं हैं, अपितु उत्तर में काश्मीर-हरियाणा, पंजाब-दिल्ली तथा राजस्थान का भी समावेश कर लेते हैं। इन राज्यों से-ओटो मोबाइल्स के भाग, वुलन होजियरी, केबल वगैरह माल का निर्यात गुजरात के बन्दरगाहों से भी हो सकता है। आज तक इनका निर्यात बम्बई बन्दरगाह से ही होता रहा है। गुजरात के बन्दरगाहों से पिछले दस वर्षों में २० से ३० लाख टन माल का आयात-निर्यात किया गया है। इन बन्दरगाहों से मुख्यरूप से खनिज तेल, कोयला-कोक, रोक-फोस्फेट, सलफर, खातर, बिल्डिंग-मटीरियल, अनाज, कच्ची रूई, खजूर, आयर्न और स्टील का आयात होता रहा है। जबकि निर्यात की वस्तुएँ-नमक, मूँगफली का तेल, केमिकल्स, सीमेन्ट चूना-चूने के पत्थर, बोक्साइड, मछलियाँ, बोन और बोनमील, कच्चा ऊन आदि हैं। इससे प्राप्त विदेशी मुद्रा लगभग १०० से २०० करोड़ रुपयों तक प्राप्त हुई है।

एक ओर बम्बई बन्दरगाह में जहाजों के प्रवेश के लिए कई दिनों तक समुद्र में ही रुका रहना पड़ता है और डिटेन्शन चार्ज भी देना पड़ता है, तो दूसरी ओर गुजरात के बन्दरगाहों की सुविधा और शक्ति का पूरा उपयोग ही नहीं होता है, यह एक आश्चर्य की बात है। अब जब पोरबन्दर बारह महीनों अच्छी सुविधा प्रदान कर सकता है और कंडला-भावनगर-वेडी-ओखा बन्दरगाहों में बड़ी स्टीमर सरलता से लंगर डाल सकती है; तो भारत के केन्द्राय-शीपिंग मिनिस्टरी को बम्बई

से स्टीमर अन्न गुजरात के बन्दरगाहों पर जाएँ, ऐसा प्रयत्न करना चाहिए।

आज भी कुछ ऐसे महत्त्वपूर्ण प्रश्न हैं, जो गुजरात के बन्दरगाहों के त्वरित विकास में अवरोध उत्पन्न करते हैं। जो मुख्य रूप से इस प्रकार हैं—

डेजींग–

गुजरात के कितने ही बन्दरगाहों में जहाजों की भीड़ हो जाती है। अतएव बड़े-बड़े स्टीमर जो 'जेट्टी' तक नहीं आ सकते हैं, सागर के मध्य में ही खड़े रहते हैं, वहीं से 'माल' की हेराफेरी होती है। अतएव, इन बन्दरगाहों पर केपीटल डेजोंग और मैन्टेनेन्स करने की विशेष आवश्यकता है। इस कामके लिए हमारे पास अधिक संख्या में ड्रेजर नहीं हैं, इसलिए इस कार्य में अधिक कठिनाई होती है। सरकार को अधिक संख्या में ड्रेजर खरीदना चाहिए अथवा किराए से प्राप्त करना चाहिए।

बार्जिस और टग्ज :

समुद्र के मध्य खड़े जहाजों के माल की हेराफेरी के लिए बार्जिस या टग्ज की आवश्यकता होती है। दुर्भाग्य से हमारे पास इनकी संख्या बहुत कम है, और जो भी हैं बहुत पुराने हैं। अतएव यह काम पूर्ण संतोष से नहीं हो रहा है।

लोडिंग का दर :

गुजरात के बन्दरगाहों पर ट्राफिक कम रहता है। इसका एक मुख्य कारण है हमारा लोडिंग दर बहुत कम है। बम्बई जैसे बन्दरगाहों पर बड़ा डिटेन्शन चार्ज देकर भी स्टीमर वहाँ रुकते हैं। क्योंकि वहाँ पर माल की हेराफेरी बहुत ही त्वरित गति से होती है। गुजरात के बन्दरगाहों पर मेकेनिक-लोडिंग की सुविधा कम है, अतः माल को ढोने में, उतारने–चढ़ाने में अधिक समय लगता है और यह उनको आर्थिक दृष्टि से अधिक महँगा पड़ता है। अतएव गुजरात के बन्दरों पर भी मेकेलाइज्ड लोडिंग की सुविधा, बम्बई तथा अन्य बन्दरगाहों के समान ही देनी चाहिए।

औद्योगिक दृष्टि से गुजरात राज्य के विविध क्षेत्रों का विकास अच्छा हुआ है। कपड़ा, केमिकल्स, डाइज, इन्जीनियरिंग, माल-सामान, स्टील, इलेक्ट्रीक, असेसरीज, बिल्डिंग-हार्डवेर, भिन्न-भिन्न उद्योगों के माल का निर्यात अच्छी मात्रा में होता है। इसका निर्यात यों तो गुजरात के बन्दरगाहों से होना चाहिए था, लेकिन अधिकतर बम्बई–बन्दरगाह से ही होता है।

रेल विभाग, हरियाणा–पंजाब–दिल्ली-जम्मू–काश्मीर आदि प्रदेशों से बम्बई माल ले जाने का किराया कम लेता है–कन्सेशन प्राप्त होता है। अतएव, इन स्थानों का माल लंबी दूरी होने पर भी बम्बई ही जाता है, जब कि गुजरात के बन्दरगाह अधिक नजदीक हैं फिर भी वे यहाँ माल न भेजकर, बम्बई ही भेजते हैं। अतः, रेल-विभाग को यह किराये का कन्सेशन बन्द कर देना चाहिए और बम्बई बन्दरगाह की भीड़ कम करने में सहायता देनी चाहिए। इससे गुजरात के बन्दरगाहों का अच्छा उपयोग हो सकेगा। यहाँ ट्राफिक बढ़ता जाएगा।

महत्वपूर्ण बन्दरगाह :

गुजरात के प्रमुख बन्दरगाहों से माल की हेराफेरी कैसे हो सकती है, उसपर भी यहाँ विचार कर लेना होगा।

कंडला :

गुजरात का सबसे बड़ा एवं महान् बन्दरगाह कंडला है। (major past) इस बन्दरगाह का विकास करांची बन्दरगाह के पाकिस्तान में चले जाने से उसकी कमी को दूर करनेके लिए हुई। उस अभाव को दूर करने में कंडला बन्दरगाह सहायक सिद्ध होगा, ऐसी धारणा है। इससे व्यापारिक सुविधाएँ भी अधिक प्राप्त होंगी। इसके लिए करोड़ों रुपए भी खर्च किए गए, लेकिन इस बन्दरगाह का अपेक्षित विकास आज भी नहीं हो सका। इसके कई कारण हैं। एक कारण यह भी है कि रेलविभाग दूसरे बन्दरगाहों पर माल की हेराफेरी में जो कन्सेशन देता है, वह यहाँ प्राप्त नहीं है। नियमित 'लाइनर सर्विस' का भी अभाव है। नाविकों को जो-जो सुविधाएँ प्राप्त हैं, वे बहुत ही कम हैं। बन्दरगाह पर माल रखने के बड़े–बड़े सुरक्षित गोदाम भी नहीं हैं। रेलविभाग से बैगनप्राप्ति में बहुत देर हो

जाती है, अनियमितता भी है । इन सब कारणों से कंडला बन्दरगाह का विकास त्वरित गति से नहीं हो रहा है । हाँ, माल की हेराफेरी दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है ।

आज कंडला बन्दरगाह पर पाँच बड़े स्टीमर खड़े रह सकते हैं, इतनी बड़ी डाइरेक्ट बर्थ है । खनिज एवं तेल उतारने के लिए दो बड़ी टैंकरें खड़ी रह सकें, ऐसी सुविधा भी है । आवश्यक टंकियाँ भी बनाई गई हैं । आजकल बम्बई बन्दरगाह में जहाजों की भीड़ लगी रहती है और उन्हें डिटेन्शन टैक्स भी भरना पड़ता है, तब भी सुविधाओं से पूर्ण सम्पन्न कंडला बन्दरगाह में ये जहाज नहीं आते हैं-यहाँ कोई विशेष काम भी नहीं रहता है । इसके अनुसंधान में केन्द्रीय सरकार ने एक उच्च कक्षा की समिति की नियुक्ति की है और उन्होंने निम्नलिखित सूचनाएँ भी दी हैं—

(१) रेल विभाग को अधिक वेगन की सुविधा तथा अधिक मालगाड़ियों को माल की हेराफेरीके लिए कंडला बन्दरगाह पर चालू करना चाहिए ।

(२) पंजाब या हरियाणा से जो अनाज रेलगाड़ी के द्वारा दक्षिण भारत में जाता है, उसे कंडला बन्दरगाह से कोचीन या मद्रास की तरफ भेजना चाहिए ।

(३) एस० टी० सी० और एम. एस. टी. सी. के द्वारा जो माल राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश पंजाब और हरियाणाके लिए आयात होता हो या उस प्रदेश से निर्यात किया जाता हो, उसका आयात-निर्यात कंडला बन्दरगाह से होना चाहिए ।

(४) कंडला बन्दरगाह पर मरीन और लोडर की सुविधा है । अतएव, फर्टिलाइजर का आयात इसी बन्दरगाह से करना चाहिए ।

(५) कंडला बन्दरगाह पर तेल सुरक्षित रखने के लिए बड़ी-बड़ी टंकियाँ बनाई गई हैं । इससे खनिज तेल अथवा खाद्य तेल का आयात इसी बन्दरगाह से हो तो स्टीमरों को अधिक रुकना भी नहीं पड़ेगा और माल की त्वरित हेराफेरी भी हो सकेगी ।

वेरावल :

यह भी गुजरात का एक महत्वपूर्ण बन्दरगाह है । अभी-अभी इसे "फीशिंग हार्बर" की तरह विकसित करने का प्रयास भी हो रहा है । इस विकास से मरीन प्रोडक्ट्स उद्योगों के विकास की अच्छी संभावना है ।

पोरबंदर :

यह बन्दरगाह अब 'बारहमासी' हो गया है । अर्थात् बारह महीनों इसपर माल की हेराफेरी हो सकती है । इस बन्दरगाह का त्वरित और अच्छा विकास हो सके- इसके लिए गुजरात राज्य ने एक समिति की रचना की थी, जिसकी सूचनाएँ इस प्रकार हैं—

(१) स्टेट ट्रेडिंग कोर्पोरेशन तथा फूडकोर्पोरेशन ऑफ इन्डिया के द्वारा जो माल गुजरात या अन्य प्रांतों में आयात होता हो, उसे पोरबंदर से ही लाना चाहिए ।

(२) सौराष्ट्र के कारखानों में जो कोयला उपयोग में आता हो, वह स्टीमर से यहाँ लाना चाहिए और इसी स्टीमर द्वारा यहाँ से नमक पश्चिमी बँगाल को भेजना चाहिए । जिससे स्टीमर को आने-जाने का किराया मिल जाए ।

(३) पोरबंदर के विकास के लिए आज जो मीटर गेज रेललाइन से जुड़ा हुआ है- वहाँ अब ब्रोडगेज रेल लाइन बिछानी चाहिए ताकि इसका विकास अधिक त्वरित गति से हो सके ।

(४) स्टेशन से स्टेशन रेल्वेफ्रेंट में योग्य सुधार होना चाहिए, जिससे कम किराये से माल का आयात और निर्यात हो सके ।

(५) वेगनप्राप्त करने में जो-जो कठिनाई हों, उसे दूर करना चाहिए ।

(६) पोर्ट के भीतर माल की हेराफेरी के लिए नए-नए गोदाम, सुविधापूर्ण सड़कें, माल चढ़ाने और उतारनेके लिए अधिक क्रेइन्स, पाइलोट की सर्विस, बर्थिंगटग, पाइलोट लॉन्च की सुविधा, आदि होनी चाहिए । संदेशों की प्राप्तिके लिए, त्वरित उत्तर-प्राप्ति के लिए, एस० टी० डी० तथा टेलेक्स की सुविधा भी प्रारंभ करनी चाहिए । संदेशों का आदान-प्रदान सुलभ होने से प्रगति शीघ्र हो सकती है ।

(७) पोर्ट चार्ज जहाँ-जहाँ ज्यादा है, वहाँ कम करना चाहिए और पोरबन्दर के विकास के लिए एक

नया बोर्ड बनाना चाहिए और एक अलग 'ट्राफिक मैनेजर' की भी नियुक्ति करनी चाहिए।

(८) कस्टम क्लियरन्स के लिए योग्य सुविधा एवं लेबोरेटरी की भी स्थापना करनी चाहिए।

यदि उपर्युक्त सूचनाओं पर पूरा-पूरा ध्यान दिया जाए, तो पोरबन्दर का विकास अवश्य ही त्वरित गति से होगा।

सलाया :

अभी-अभी सलाया बन्दरगाह से तेलपाइप लाइन द्वारा 'कोयली' तक और थोड़ी देर में ही 'मथुरा' रिफाइनरी तक यह तेल पहुँचाया जा सकता है। इसकी योजना तैयार हो रही है। इसी कारण इस बन्दरगाह का मूल्य अधिक बढ़ गया है। वर्षाऋतु में भी इस बन्दरगाह से सरलता से माल की हेराफेरी हो सकेगी, ऐसी आशा है।

कोयलेके लिए रेल्वे-वेगन नहीं मिलते हैं, इस कमी की स्थिति को दूर करनेके लिए सौराष्ट्र के बन्दरगाह भावनगर, पोरबन्दर वगैरह स्थानों से कोयले का हेरफेर समुद्री मार्ग से पूर्वभारत, कलकत्ता बिस्तार के लिए नमक की हेराफेरी सौराष्ट्र कच्छ से भी की जा सकती है।

हजारी जहाजवाड़ा :

गुजरात के समुद्रों से सम्बन्धित त्रिवेदी समिति ने "हजारी पर जहाजवाड़ा बनाने की सिफरिश की है।

यह जहाजवाड़ा जैसे भी हो, जल्दी तैयार हो जाए ऐसा प्रयत्न जरूरी है। जिससे आधुनिक अन्य जहाजवाड़ों और रीपेयरींग करनेवाले बन्दरगाहों पर भीड़ कम हो जाए। इससे गुजरात के समुद्री व्यापार को अधिक प्रोत्साहन प्राप्त होगा।

दहेज-घोघा सर्विस :

दहेज और घोघा के बीच सर्विस प्रारम्भ करने की प्रार्थना गुजरात सरकार ने स्वीकार कर ली है। यह काम एक बिख्यात-कम्पनी" खोगुले एण्ड कं." करने वाली है। यह यातायात सेवा जितनी ही जल्दी प्रारम्भ हो उतना अच्छा। क्योंकि इससे दक्षिण गुजरात और सौराष्ट्र का ट्रॉफिक बढ़ेगा और खूब कीमती ईंधन (Fuel) भी बच सकेगा।

सूचन :

अन्त में गुजरात के समुद्री व्यापार को बढ़ाने के लिए उपयोगी सूचनाएँ निम्नानुसार हैं–

(१) गुजरात के बन्दरगाहों पर यातायात कम है। अतएव, अब ऐसा प्रयत्न करना चाहिए कि बम्बई में ट्राफिक की भरमार न हो और कंडला, पोरबन्दर, भावनगर, ओखा, वेंरावल आदि बन्दरगाहों पर यह ट्राफिक आ जाए-सामान की हेराफेरी सुविधापूर्ण व्यवस्थित हो। यातायात भी सरल हो।

(२) कंडला बन्दरगाह के विकासके लिए केन्द्रीय सरकार को जरूरी प्रोत्साहन देना चाहिए और अधिक आकर्षण इस 'सागरतट' की ओर हो, ऐसा प्रयत्न करना चाहिए। सरकार की उद्घोषणा इस तट के बन्दरगाहों को अधिक कार्यरत बना सकेगी।

(३) गुजरात के उद्योंगों को अनियमित कोयला रेल्वे वेगनों के अभाव के कारण मिलता है-इस आर्थिक हानि को दूर करने के लिए यहाँ के उद्योगों को नियमित 'कोयला' कलकत्ता से सीधा इस राज्य में पहुँचाने के लिए 'स्टीमर' का उपयोग करना चाहिए। समुद्री मार्ग अधिक अच्छा रहता है।

(४) गुजरात के बन्दरगाहों के विकास-संबन्धी कितने ऐसे प्रश्न हैं, जिनके निराकरण के लिए गुजरात सरकार ने 'मेरी टाइमबोर्ड' की रचना का जो प्रस्ताव किया है, वह अवश्य ही स्वागत योग्य है। यह बोर्ड शीघ्र ही कार्य आरंभ करे, ऐसी अपेक्षा है।

(५) कोस्टल हाइवे बनवाने में जो योजनाएँ अब भी नहीं हो पाई हैं, उन्हें पुनः जल्दी जोड़कर कार्य आरम्भ हो, यही आवश्यक है।

(६) जहाँ-जहाँ आवश्यक हो वहाँ-वहाँ बन्दरगाहों को रेलमार्ग और पक्की सड़कों से जोड़ लेना चाहिए।

व्यापार-व्यवहार की शिक्षा-शती

श्री नयनचन्द बोरडिया
एम० ए०

[श्री बोरडियाजी सन् १९३१ के बनारस हिन्दू-यूनिवर्सिटी के एम०ए० हैं और चिन्तन अध्ययन आपके प्रिय विषय हैं आप थोक कपढे के व्यापारी भी हैं। आपके चिन्तन-कण की अन्तिम किश्त पाठकों के लाभार्थ दी जा रही है।
- सम्पादकीय]

६७ कौन होता है बुरे वक्त में शरीफ
तारीकी में साया भी जुदा होती है
६८ जाण आगे अजाण थइये तहाँ बचताणी
६९ बुरा जो खोजन मैं चला, बुरा न दीखा कोय।
जब दिल खोजा आपना, मुझ सा बुरा न कोय
७० यदि आदर सत्कार प्रिय है तो आदर सत्कार दें।
७१ खुदा के घर में देर है अन्धेर नहीं है।
७२ बैठे-बैठे क्या करो, बैठे देगा कौन।
धन्धे में ही धन बसे, ज्यों पंखी में पौन।
७३ पढ़त-पढ़त अक्षर के, जाने ग्रन्थ विचार।
चलत-चलत कदम के, पहुचे कोस हजार॥
७४ रोग का घर खाँसी, लड़ाई का घर हाँसी।
७५ नादान की दोस्ती जी का जंजाल
७६ मुआ-मुआ सब कहे मुआ मरे जग कोय॥
एक वार मुआ मेरे आवागमन न होय।
७७ नानक नानक होइ रहे, नन्ही जैसी दूब।
बडा झाड़ बह जायगा, दूध खूब के खूब।
७८ खांसी कहे कासो करूँ खुराकरूँ
अब भी न मरे तो मैं क्या करूं
७९ माथ जाशो बाद कर्म भजाणो आय।
८० संसारमय ज्ञान सब से वड़ी शक्ति है
८१ इस देह का यही अर्थ है देह
जब देह पड़ जाएगा कौन कहेगा देह,
८२ मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता है।
उसका विकास एवं विनाश अपने ही हाथ में है।
८३ गल्तियाँ दुहराना बुरा है, लेकिन दूर करना अच्छा है।
८४ दुनियाँ में असंभव जैसी कोई वस्तु नही है।
८५ कहीं जावें अपनी उपस्थिति सार्थक करें।
८६ सब की सुनो लेकिन करो मन की।
८७ कहीं भी जाओ लेकिन तैयारी के साथ जाओ।
८७ शक्ति आपके अन्दर आत्मा में है न कि बाहर।
८९ विजय के लिए विश्वास सब से महान शक्ति है।
९० जिन्दा रहने के हेतु भोजन है न कि भोजन के लिए जिन्दा रहना।
९१ पाप से डरें भगवान् सब ओर उपस्थित है।
९२ विधि आपकी आपकी करतूत से शर्म आती है। मूर्खों को अपने सम्पति की जब कि पंडित सम्पत्ति हीन है।
९३ संस्कार में सबसे बड़ी कला यही है कि आय से व्यय बढे।
९४ बुराई हमेशा अपने में ढूँढे जब कि नेकी के लिए दुनियाँ देखें।
९५ अभ्यास से जिवि सुन्दर बन पाएगी कि अवसर से.
९६ बुरे विचार विनाश की निशानी हैं।
९७ जिसे सब में बुराई नजर आती है उसमें खुद बुराई अवश्य है।
९८ धर्म करणी के अलावा सब बातें बुरी हैं।
९९ सत्य का आचरण करें केवल भाषण से काम न लें।
१०० फल की इच्छा न रखते हुए परिश्रम करें।
१०१ पुरुषार्थी के लिए सब काम संभव है।
१०२ सच्चा हिन्दू वही है, जिसके दिल में हिंसा के लिए स्थान नहीं है।
१०३ दोस्त बनाना आसान है, लेकिन निभाना कठिन है।
१०४ प्रेम से ही विश्व की विजय बनती है।
१०५ सन्देह मित्रता का शत्रु है।
१०६ यदि झाड़ न बन सको तो पौदा तो अवश्य बनो।
१०७ आलस्य का कुटुम्बी गरीबी है।
१०८ भूलों का परिणाम पयान है

उद्योग-परक :

भारतीय उद्योग की नब्ज ?

श्री के. एन. मोदी

[श्री मोदी जो उद्योग-प्रधान विषयों के कुशल लेखक और विचारक हैं। प्रस्तुत लेख में भारतीय उद्योग की मुख्य समस्याओं पर विचार किया गया है, जो पठनीय है। —सम्पादक]

भारत की दो मूलभूत समस्याएँ हैं-एक बेकारी और दूसरी दारुण गरीबी। इन समस्याओं का हल एक लम्बे समय तक नहीं पाया जा सकता। फिर भी विकास और उत्पादन की क्षमता को सुचारु रूप से बढ़ावा देकर इन समस्याओं को हल करने की दिशा में श्रीगणेश कर सकते हैं, परन्तु सन् १९७९-८० के समय के दरम्यान ठीक इसके विपरीत हुआ। हमारे उत्पादन में बढ़ावा हुआ परन्तु नकारात्मक रूप में। इस अर्थ में कि यदि उद्योगों में उत्पादन-बढ़ा है तो केवल सपाटी पर। भविष्य में उद्योगों में उत्पादन बढ़ाने का हमारा लक्ष्य कम से कम १० प्रतिशत रहना चाहिए तथा सम्पूर्ण अर्थ-व्यवस्था के विकास का लक्ष्य कम से कम ६ प्रतिशत रहना चाहिए। इस बात का छठो पंचवर्षीय योजना में भी विचार किया गया है। सन् १९५० से १९६० तक के दस वर्षों के बीच हम उद्योगों के लिए इस निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति कर चुके थे। अब तो और भी आधुनिक और विकासशील उद्योग हैं और साथ ही गतिशील एवं स्थायी सरकार है। इस लक्ष्य को प्राप्त करना अब सरल है।

दो मार्ग :

औद्योगिक उत्पादन को बढ़ाने के सिर्फ दो मार्ग हैं।

(१) वर्तमान सामर्थ्य (योग्यता-क्षमता) का अधिकतम उपयोग।

(२) नई क्षमताओं का जन्म।

अनेक उद्योगों में क्षमता के उपयोग की सीमा ५० प्रतिशत से ६० प्रतिशत तक है। यदि इसमें २० प्रतिशत के बढ़ावे को जोड़ दिया जाए, तो वर्ष के अन्त में ५००० करोड़ मूल्य की निर्धारित अधिक वस्तुएँ उत्पादित कर सकते हैं। इससे वस्तुओं की कमी एवं मूल्य-सम्बन्धी समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है; परन्तु इस लक्ष्य-प्राप्ति हेतु हड़ताल, तालाबंदी और धीमी गति जैसी कार्यप्रणालियों से मुक्ति मिलनी चाहिए। झगड़ों का समाधान भी मध्यस्थी द्वारा हो जाना चाहिए।

थर्मल पावर स्टेशनों की वर्तमान ४० प्रतिशत से ४५ प्रतिशत तक की कार्यक्षमता को बढ़ाकर ६० प्रतिशत तक पहुँचाना आवश्यक है। यदि निजी पावर स्टेशनों की कार्य-क्षमता ८० प्रतिशत से ९० प्रतिशत हो सकती है तो सरकार द्वारा संचालित पावर स्टेशनों को अपने लक्ष्य की प्राप्ति में कोई कठिनाई नहीं आनी चाहिए।

यदि ये पावर स्टेशन अपनी ६० प्रतिशत क्षमता के कार्य करेंगे तो ऊर्जा-शक्ति प्राप्त करने में बढ़ौती प्राप्त की जा सकती है। इसका सीधा असर औद्योगिकता पर पड़ेगा। इसलिए ऊर्जा-शक्ति के उत्पादन में बढ़ौती करना सबसे जरूरी और महत्त्वपूर्ण कार्य है। सरकार द्वारा राज्य के बिजली बोर्डों को योग्य स्वतन्त्रता देकर उन्हें लोगों के प्रति जवाबदेह बनाना चाहिए। इसके लिए उनका लक्ष्य बिजली के उपभोक्ता का होना चाहिए तथा वर्तमानपत्रों में भी इसका विश्लेषण और टीका जरूरी बना देना चाहिए।

समस्या :

कोयले की समस्या भी एक अवरोध बन गई है, जिसका हल खोजना आवश्यक है। कोयलेके लिए नई खानें शुरू करना तथा इस प्रकार उद्योग में प्रतियोगिता खड़ी करना जरूरी है, जिससे वर्तमान खानों की क्षमता बढ़ेगी। इसके उपरांत शुरू में हो कोयले पर के पत्थर आदि के भार को हटा दिया जाए, तो रेल्वे द्वारा इन्हें पहुँचाने की

क्षमता को २० से ३० प्रतिशत बढ़ाया जा सकता है । इससे मंहगे डीजल–चालित ट्रकों के उपयोग में बचत होगी । उद्योग छोटा हो, मध्यम या बड़े कद का हो प्रत्येक में कार्य–शक्ति बढ़ाना आवश्यक है । हमारा लक्ष्य छोटे उद्योग को मध्यम कद का और मध्यम कद के उद्योग को बड़ा बनाना होना चाहिए । सत्ताधीशों को बीस साल पहले लघु उद्योग को दी गई परिभाषा को बदल कर उन्हें वार्षिक ५ से १० प्रतिशत उत्पादन बढ़ाने की स्वाभाविक स्वतन्त्रता देनी चाहिए ।

हमारा देश सोमेन्ट, कागज, खाद, अखबारी कागज, सोडा–गैस और कास्टीक सोडा जैसी चीजों पर बहुमूल्य विदेशी मुद्रा खर्च करता है । इन चीजों में योग्य बदले की भावना को बढ़ावा देकर इनकी उत्पादन–क्षमता में शीघ्र बढ़ौती की सकती है ।

बड़े पैमाने पर निर्यात बढ़ाना आवश्यक है। इसके लिए निर्यात की जाने वाली वस्तुओं को बढ़ाना और लगातार आधुनिकतम तकनीकी ज्ञान को कार्य में लेना जरूरी है, ताकि निर्यात की गई वस्तुओं की कीमत और क्वालिटी में हम दुनिया में टिक सकें ।

छूट :

यह कहना कि १२ से १४ प्रतिशत का लाभ किसी भी उद्योग में अधिक है, उचित नहीं है । जिन वस्तुओं की कीमत निर्धारित है, उनपर इतने प्रतिशत लाभ की छूट देनी चाहिए । साथ ही जिन वस्तुओं की कीमतें निर्धारित नहीं हैं, उनपर एक्साइज में छूट देकर उनमें लगाये गए पैसे के भार को हल्का किया जा सकता है ।

खुले बाजार से और आर्थिक संस्थाओं से ऋण के रूप में पूँजी खड़ी करने से उद्योग बनता है । क्योंकि इस व्यवहार में अयोग्य रुकावटें है । उद्योगपति के लिए बिना लोन के उद्योग के कुल खर्च का २० प्रतिशत खर्च करना असंभव है । बचत की कमी के कारण वर्तमान कर्ज और इक्विटी के बीच का २–१ अनुपात अव्यवहारिक है । इसलिए लघु उद्योग और अधिक साख बढ़ाना चाहनेवाले उद्योगों को इसमें छूट देनी चाहिए ।

० ज्योति ०

ज्योति प्रात, ज्योति रात,
ज्योति नयन, ज्योति गात.
ज्योति चरण, ज्योति चाल
ज्योति विटप, आलबाल,
ज्योति सलिल, ज्योति ताल
ज्योति कलश, ज्योति पात ।
ज्योति प्रथम, प्रिय दर्शन
ज्योति कम्प, आकर्षण,
ज्योति मिलन शमवर्षण,
ज्योति नियम, ज्योति जात ।

महाकवि 'निराला'

बाधाएँ :

उद्योग की वर्तमान इकाइयों को बढ़ाने और आधुनिक बनाने में कनवर–टीवी लोटी क्लोज भी बाधा रूप है । क्योंकि इससे उत्पादक की उधारशक्ति घटती है । इसलिए यह सलाहयोग्य है कि बैंक तथा अर्थवस्था करने वाली संस्थाओं को किसी भी उद्योग या संस्थाओं में २५ प्रतिशत से अधिक शेयर नहीं रखना चाहिए और यदि है तो क्लोज (नियम) अनुसार इसमें परिवर्तन होना चाहिए । आर्थिक लेन–देन करने वाली संस्थाओं को लाभदायी संस्थाओं में अपने शेयर रूपी धन को लगाकर नहीं रखना चाहिए, परन्तु उन्हें बेच कर उनके द्वारा कमाए पैसे को नए उद्योग में लगाना चाहिए ।

हमारे पास बड़ा बाजार है, बड़ी संख्या में तकनीकी रूप में दक्ष व्यक्ति हैं, योग्य कुदरती साधन हैं, जरूरी औद्योगिक साहस है और व्यवस्थापकीय ज्ञान है । अतः, कोई कारण नहीं है कि हम अब तक के हिसाब से अधिक तेज न बन सकें ।

यह एक राष्ट्रीय ध्येय है जिसकी प्राप्ति उद्योग और सरकार के बीच लगातार बातचीत और सम्बन्ध कायम करके की जा सकती है तथा रुकावटें भी दूर की जा सकती हैं ।

स्वास्थ्य-परक

शिशुभैषज्य अतिविष

डा. भानुप्रताप मिश्र
बी०एल०ए०एम०, डी०एस सी ए० आयुर्वेद मध्यमा

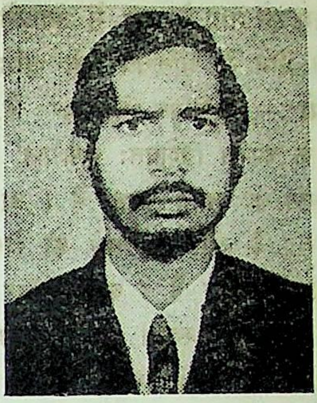

लेखक

[डॉ० मिश्रजी एक कुशल, अनुभवी और होनहार डाक्टर हैं। वे इस एक आयुर्वेद महाविद्यालय में अध्यापक भी हैं। प्रस्तुत लेख में अतिविष के औषधोपचार पर जो विचार किया गया है, वह पठनीय है। बालकों के लिए हितकारी इस दवा से लाभ उठाइए। -सम्पादक]

आजकल जब हम बच्चों के आरोग्य के विषय में सोचते हैं, तब हमारा मन व्यथित हो जाता है। एलोपैथिक औषधियों का उपयोग इतना बढ़ गया है कि उन औषधियों की विषाक्तता के विषय में अगर आपको जानकारी हो तो आप अवश्य आश्चर्य-चकित हो जाएँगे। सामान्य सर्दी, ज्वर आदि रोगों में फूल की कली के समान बच्चों को हायर एन्टिबायोटिक्स जैसी भारी दवाएँ देकर निर्दोष बच्चों पर हमारे जैसे चिकित्सक मित्र जो अत्याचार करते हैं, उसे शायद कुदरत भी नहीं माफ कर सकती। बच्चों पर इस भीषण व्यवहार को देखकर यह लेख प्रस्तुत करने की जिज्ञासा हुई। आयुर्वेद में अतिविष इसकी सबसे बड़ी दवा है।

वानस्पतिक वर्णन :—अतिविष का क्षुप २ से ४ फुट ऊँचा होता हैं। कांड जड़ में से निकलकर सीधा और चिपटा होता है। यह कभी-कभी गोल और सीधा होता है, कभी-कभी विभिन्न आकार वाली पत्ती से आवृत भी होता है। इसका पत्र नागदौना सदृश्य टूटी हुई किनारे वाली परन्तु लम्बाई २ से ४ इंच अंडाकार अथवा हृदयाकार होता है। नीचे का पत्र बड़ा और पाँच भाग में विभक्त होता है। ऊपर का पत्र छोटा और दंतुर धारवाला होता है। बड़ा पत्र चमकीला, ऊपर से हरा और नीचे पीला होता है। शाखाएँ चिपटी और जड़ में से निकलती हैं, पत्रवृंत की जड़ में से पुष्पदंड निकलता है। पुष्पदंड पर काफी फूल लगते हैं। पुष्प नीले रंग का अथवा हरा किंचित् बैगनी रंग का होता है, जिसमें अंदर की एक पंखुड़ी सबसे बड़ी और फणाकार होती है। पुष्प १ से १॥ इंच लम्बा चमकदार जामुनी किनारे वाला मनमोहक होता है। इसका फल पंचकोषीय होता है। इसकी जड़ क्षुप के नीचे जमीन की ऊपरी सतह से काफी गहराई में कंद के रूप में होती है। इसका रंग राखी जैसा चमकदार होता है। यह द्विवर्षायु होता है। दो कंद होते हैं। एक कंद बड़ा और दूसरा छोटा होता हैं। छोटे कंद की संख्या कभी-कभी एक से अधिक होती है। कंद लम्बगोल, ऊपर से भूरा, धूसर वर्ण का तोड़ने से श्वेत और लाल किंचित् पीला बीच में से तोड़ने से उसमें काला धब्बायुक्त १ से २ इंच लम्बा १/४ से १।२ इंच चौड़ा हाथी के सूंड़ जैसे शंखाकार होता है। चिकित्सा की दृष्टि से बड़े की अपेक्षा छोटा कंद अधिक क्रियाशील होता है। इसका कंद सरलता से टूट जाता है।

प्रयोज्यांग :—चिकित्सा की दृष्टि से अतिविष का कंद (जड़) उपयोगी है।

अतिविष का शोधन :—कभी-कभी इसमें मिट्टी आदि अशुद्धियाँ होती हैं तथा इसके विष-लक्षणों को दूर करने के लिए इसकी शुद्धि करना अति आवश्यक

है । सर्वप्रथम इसे गाय के दूध में उबालने से तत्पश्चात् शुद्ध जल से धोने से अतिविष की शुद्धि होती है ।

गुणधर्म :—अतिविष त्रिदोषहर है, किन्तु अति तिक्त होने के कारण विशेषतः कफपित्त शामक है । उष्णता से बात की शांति करता है । अतिविष ओज को वृद्धि करता है और अतिसार को रोकता है । यह कफघ्न, बातघ्न अर्शोघ्न है । यह जलोदर में उपयोगी है तथा यह लेखनीय, स्तन्य शोधक, पाचक, दीपक, विषघ्न, कास, छर्दि, कृमिरोग में विशेष उपयोगी है । यह आम और आमातिसार जीर्णज्वर, तृष्णा, शोथ, आमवात, यकृतविकार आदि रोगों में लाभदायक हैं । यह कोमल प्रकृतिवाले बच्चों पर तथा गर्भिणी के ज्वरातिसार में विशेष उपयोगी औषधि है ।

अनुभूत चिकित्सा प्रयोग :

(१) **खाँसी** :— यह केस जनवरी १९७७ का है । उस समय मैं अहमदाबाद मेटल महाजन में मानद् वैद्य के रूप में अपना कार्य करता था । रमणलाल पटेल अपनी दो वर्षीय इला को हमारे पास दवा कराने हेतु लाए । जब इला को मैंने देखा तो उस समय वह खाँसी से बहुत ही परेशान थी । दिन-रात रोती ही रहती थी । छाती में कफ भरा हुआ था । साँस लेने में तकलीफ भी पड़ती थी । हमारे सामने आगे कुआँ और पीछे खाईं जैसी परिस्थिति थी । मैंने काफी सोच-विचार कर इला की दवा करने का दृढ़ निश्चय किया । उसे निम्न दवाएँ दी गईं ।

(अ) सितोपलादि चूर्ण १।४ ग्राम, बालचातुर्भद्र चूर्ण १।४ ग्राम, अग्निरस १।४ ग्राम

उपरोक्त दवाएँ प्रातः-शाम दोपहर शहद के साथ खाने को दीं ।

(ब) चंदनबला लाक्षादि तैल छाती पर मालिश करने के लिए दिया गया । सिर्फ इतनी दवा दो सप्ताह चालू रखी गई । इला को खाँसी से मुक्ति मिल गई । वह सम्पूर्ण स्वस्थ हो गई । इस योग में बालचातुर्भद्र चूर्ण अतिविष का एक बहुत प्रचलित योग है ।

शय्यामूत्र :-बच्चे रात को सोते समय बिस्तर पर पेशाब कर देते हैं । उसे शय्यामूत्र कहते हैं ।

(१) अतिविष चूर्ण १ ग्राम, विडंग चूर्ण २ ग्राम ऐसी तीन मात्रा प्रातः-शाम दोपहर को पानी के साथ दी रोगी बालक मीनल को दिया। इससे रोग मिट गया।

(२) अभयादि मोदक १ गोली प्रातः गरम पानी के साथ विरेचनार्थ दी जाती थी । इस प्रकार केवल एक ही सप्ताह की चिकित्सा में मीनल का शय्यामूत्र रोग मिट गया । मीनल के बाद मैंने उपर्युक्त रोग शय्यामूत्र के पच्चीसों रोगियों को दिया होगा और सभी में सन्तोषकारक परिणाम देखने को मिला ।

(३) **मूषिकविष** :—मूषिकविष में अतिविषचूर्ण १ ग्राम और शुद्ध टंकण सोहागा १ ग्राम शहद के साथ प्रातः-शाम-दोपहर दिया जाए तो मूषिकविष में शीघ्र फल मिलता है ।

(४) **अरुचि तथा अग्निमांद्य** :-इन दोनों रोगों में अतिविष, नागरमोथा को समान भाग में लेकर सीरप बनाया । इस सीरप को मैंने अरुचि एवं अग्निमांद्य से पीड़ित १५ बच्चों को दिया, जिनकी आयु तीन वर्ष के अन्दर थी । उन्हें ५ से १० मिली० की मात्रा में प्रातः-सायं-दोपहर दिया जाता था । उपर्युक्त औषधि दो सप्ताह तक देने से सभी बच्चों की भूख बढ़ी और जो कुछ मिलता था उसे बड़े चाव से खाते थे । खाये गए आहार का सम्यक् पाचन होने के कारण उनके स्वास्थ्य में सुधार देखा गया ।

(५) **ज्वरातिसार** :-इसमें रोगी को ज्वर भी रहता है । उसके साथ ही दस्त भी काफी होता है । ऐसी अवस्था में अतिविष चूर्ण १।। ग्राम तथा रसांजन २ ग्राम सोंठ से सिद्ध किया हुआ जल के साथ प्रातः-सायं-दोपहर को देने से केवल दो ही दिन में ज्वरातिसार का रोगी शर्तिया ठीक हो जाता है । यह हमारा अनुभव सिद्ध प्रयोग है ।

(६) **अतिसार** :-सभी प्रकार के अतिसार में सोंठ, अतिविष और नगरमोथा का क्वाथ १० ग्राम लेकर १०० ग्राम पानी में मन्दाग्नि से उबाले । जब ५० ग्राम पानी शेष रहे, तब उसे गरम-गरम पीने से सभी प्रकार के दस्त बन्द हो जाते हैं । पुराना अतिसार हो तो उपर्युक्त क्वाथ दो सप्ताह तक देना चाहिए तथा रोगी को लघु, सुपाच्य आहार देना चाहिए ।

(७) **तृषा** :—गर्मी के कारण अथवा अतिसार तथा विषूचिका के रोगियों को बार-बार प्यास लगती है। ऐसी अवस्था में अतिविष यवकूट चूर्ण १० ग्राम तथा पानी १ किलोग्राम लेकर मंदाग्नि से उबाले। जब पानी ८०० ग्राम शेष रहे तब उतारकर कपड़े से छानकर उस पानी को ठड़ा कर लें। जब रोगी को प्यास लगे, तो यही पानी बार-बार यह जल पिलाने से रोगी की तृषा शान्त हो जाता हैं।

(८) **गर्भजफक्क रोग** :—जिस बालक की माता गर्भवती हो जाती हैं, उसे सामान्यतः दूध आना बन्द हो जाता है। उस दूध में पोषक तत्त्वों का अभाव हो जाता है। इसके कारण बालक कमजोर हो जाता है और कभी-कभी बालक मृत्यु की की ओर प्रयाण करने की तैयारी करता हैं। उसे गर्भजफक्क रोग कहते हैं।

ऐसी अवस्था में सर्वप्रथम बालक को माता का दूध बन्द करा देना चाहिए। उसे गाय अथवा बकरी को दूध देना चाहिए। बालक को मोसंबी, पपीता जैसे पोषणयुक्त फल देना चाहिए। साथ में निम्न दवाएँ देने से अच्छा लाभ होता हैं।

(१) चन्दनबला लाक्षादि तैल का बालक के संपूर्ण शरीर पर मालिश करना चाहिए।

(२) अरविंदासव ५ मिली लीटर प्रातः शाम समानभाग पार के साथ देना चाहिए।

(३) अश्वगंधा चूर्ण १।२ ग्राम, शृंग्यादि चूर्ण १।३ ग्राम, अतिविष चूर्ण १।२ ग्राम, अजास्थिभस्म १२ मिग्रा. कामदुधा रस १२ मिग्रा.

ऐसी तीन मात्रायें प्रातः-शाम- दोपहर शहद के साथ देनी चाहिए।

(४) लघुवसंतमालती १-१ गोली संगमनी वटी २-२ गोली

उपर्युक्त सभी दवायें पीसकर पानी के साथ देनी चाहिए। ऊपर की सभी दवाएँ नियमित एक से दो सप्ताह तक देने से गर्भजफक्क रोग अच्छा हो जाता है।

(९) **ग्रहणी** : इसमें अतिविष, जायफल और बचा का १।२-१।२ ग्राम चूर्ण लेकर शहद के साथ प्रातः-शाम- दोपहर को लें जीर्ण ग्रहणी में इसका प्रयोग एक से दो महीने तक करना पड़ता हैं।

(१०) **आमातिसार** : इसमें दस्त के साथ आम अर्थात् जिसका पाचन न हुआ हो ऐसा आहार भी निकलता हैं। ऐसी अवस्था में अतिविष चूर्ण १ ग्राम तथा सौंठ का चूर्ण १ ग्राम लेकर अदर स्वरस तथा मध के साथ प्रातः-शाम-दोपहर खाने से आम का पाचन हो जाता हैं तथा अतिसार बन्द हो जाता है।

अतिविष के सुप्रसिद्ध योग :

(१) **बालचातुर्भद्र चूर्ण** : छोटे बच्चों के श्वास खाँसी, चरातिसार और उल्टी मे लाभदायक हैं। इसे छोटे बच्चों को १।२ से १ ग्राम तथा पुख्तवय के लोगों को २ से ३ ग्राम शहद, अदरक स्वरस तथा तुलसी स्वरस के साथ देना चाहिए।

(२) **पुष्यानुग चूर्ण** : यह चूर्ण अर्श, रक्तविस्तार बालरोग, योनिरोग, रजोदोष, आदि में उपयोगी है। इसे १ से २ ग्राम चावल के मांड के साथ देना चाहिए।

(३) **बृहत् वृद्धगंगाधर चूर्ण** : प्रवाहिका (पेचिश), अतिसार और ग्रहणी आदि रोगों में पतला दस्त होता हो इस चूर्ण के सेवन से तुरन्त बन्द हो जाता हैं। इसीप्रकार उल्टी तथा विषूचिका में भी यह चूर्ण उपयोगी हैं। इसे २ से ४ ग्राम शहद अथवा चावल के मांड के साथ लेना चाहिए।

(४) **वत्सकादि क्वाथ** : यह आमातिसार और शूल सहित रक्तातिसार, जीर्ण अतिसार में उपयोगी हैं प्रवाहिक में यह अमीबा का प्रमाण घटाकर पेचिश को अच्छा करता हैं। इसे २० से ४० मिली० लीटर तैयार क्वाथ पानी के साथ लेना चाहिए।

(५) **कुटजाष्टक अवलेह** : विभिन्न प्रकार के अतिसार जीर्ण सीन्नपातिक अतिसार, प्रदर, अर्श और प्रवाहिका रोग में कुटजाष्टक अवलेह लाभकारी हैं। इसे १० से २० ग्राम स्वच्छ जल अथवा चावल के मांड के साथ लेना चाहिए।

(६) **लोध्रासव** : कफ और पित्तजन्य प्रमेह, पांडु, अर्श, अरुचि, ग्रहणी, श्वेतकुष्ठ तथा अन्य कुष्ठ रोगों में यह उपयोगी हैं। इसे २० से ४० मिली० लीटर उतना ही पानी के साथ लेना चाहिए।

अतिविष बालकों के रोगों की सर्वश्रेष्ठ औषधि हैं।

पुस्तक परिचय

विशाखा–(त्रय मासिक हिन्दी लघु पत्रिका)
सम्पादक–श्री रामनिवास चावरिया
प्रकाशक-हिन्दी साहित्य प्रेरक संस्था जीन्द (हरियाणा)
वर्ष–१, अंक–१ (अगस्त–सित०–अक्टूबर' १९८०
वार्षिक मूल्य ५ रु०, एक अंक १–५० रु.

डेमी साइज, ३२ पृष्ठ में प्रकाशित अनुक्रमणिका रहित २५ कविताओं का लघु संग्रह है। इसे लघु काव्य संग्रह भी कह सकते हैं। नए कवियों और नए हस्ताक्षर देखकर प्रसन्नता होती है। इस सहयोगी के सुन्दर प्रयत्न का हार्दिक स्वागत है।

—राम

लाल मिर्च (कविता संग्रह) रचयिता श्री श्रीराम-मोना, प्रकाशक–मिलिन्द प्रकाशन, बरारीपुरा, छिन्दवाड़ा (म. प्र.) पृ. ४० प्रथम संस्करण मूल्य सौ पैसे

प्रस्तुत लघु कविता संग्रह कुल ३९ लघु कविताओं का संग्रह है, जो बाल वर्ष को मद्दे नजर रखकर बाल-वातावरण को ध्यान में रखकर लिखी गई हैं। कोई भी कविता तीन पंक्तियों से लेकर अधिकतर १६ पंक्तियों की परिधि में बँधी कसी हैं। सीधे सरल शब्दों में दीन, छल हीन ग्राम-बालकों को मद्देनजर रखकर जो व्यंग्य-विनोद परोसा गया है, वह काबिलेदीद और काबिले तारीफ है। एक प्रति पाकेट में रखकर पढ़ने लायक है, साथियों–मित्रों को पढ़ाने लायक है।

मुलाहजा कीजिए-कविता–३३

अमीर हरी मिर्च खाते हैं,
और गरीब
लाल
बीमार
काली मिर्च

पुस्तक की साइज छोटी, छपाई साफ और टाइप कुछ बड़ा होने से पढ़ने में सुविधा रहती है।

– राम

ज्योतिष मार्तण्ड (मासिक) पत्रिका

"ज्योतिषमार्तण्ड" पत्रिका एक मासिक प्रकाशन है जो कि १९६९ से प्रकाशित हो रहा है। इसका वार्षिक शुल्क २५. ५० रु० है। छै रंगों का टाइटिल कवर और ७० पन्नों की इस पत्रिका में ज्योतिष–शास्त्र, अंक-शास्त्र, सामुद्रिक शास्त्र, रमल–शास्त्र, स्वर–शास्त्र आदि के अतिरिक्त तन्त्र–मन्त्र, यन्त्र, पुनर्जन्म, प्रेतात्मा आदि अन्य कई गूढ़ विषयों पर सैद्धान्तिक ज्योतिषीय आधार लेकर भारत के विद्वानों के खोजपूर्ण उच्चकोटि के गवेषणात्मक लेख सरल हिन्दी भाषा में प्रकाशित होते हैं। इसके साथ ही महापुरुषों की जन्मकुण्डलियाँ एवं उनका फलित ज्योतिष पाठ, प्रश्न-उत्तर, सूक्ष्म पञ्चाग, मासिक भविष्यफल, व्यावहारिक भविष्य आदि अनेक स्तम्भों के कारण यह पत्रिका अलौकिक तत्वों और दुर्लभ साहित्य से भरपूर है।

आशा है, इस पत्रिका को पढ़कर आप अवश्य आनन्दित होंगे। निःशुल्क पत्रिका भेजने में वर्तमान कठिनाइयों के कारण हम असमर्थ हैं। आप इस पत्रिका के वार्षिक ग्राहक बनकर प्रचार–प्रसार में सहयोग दें।

व्यवस्थापिका 'ज्योतिष मार्तण्ड"
डी १९, गणेश मार्ग, बापूनगर, जयपुर–३०२००४
(राज०)

विवेक विकास

[साहित्य–संस्कृति–कला का स्तरीय मासिक]
सम्पादक : रामनिवास स्वामी
वार्षिक शुल्क १२ रुपये
आजीवन सदस्य शुल्क : २२१ रुपये
सम्पर्क : केसरगढ़, जवाहरलाल मार्ग, जयपुर–४

समिति समाचार

(गुजरात राज्य के गृहमन्त्री तथा शिक्षामन्त्री श्री प्रबोधभाई रावल अतिथि-विशेष पद से भाषण दे रहे हैं।)

बाईं ओर से आचार्य श्री जे.पी. पाण्डेय, श्री मूलचन्द दसानी (संयोजक ज्ञानोदय कमेटी), श्री सम्पतराज शाह (मन्त्री राज. से.स.), श्री आत्माराम सुतरिया (सभापति), श्री गिरधारीलाल सराफ (उपाध्यक्ष राज. से.स.), श्री ओंकारमल अग्रवाल (संयोजक हाईस्कूल कमेटी), आचार्य श्री एन. सी. शर्मा

वार्षिक समारोह :

राजस्थान सेवा समित, अहमदाबाद संचालित राजस्थान हिन्दी हाईस्कूल तथा ज्ञानोदय हिन्दी प्राथमिक शाला का दसवाँ वार्षिक सांस्कृतिक समारोह दिनांक २७/२८ नवम्बर, ८० को नगर के टाउन हॉल में प्रतिदिन दो-दो प्रयोगों के क्रम से अयोजित हुआ।

इस सांस्कृतिक कार्यक्रम में विद्यालय के विद्यार्थियों तथा विद्यार्थिनियों द्वारा प्रार्थना, नृत्य, गीत, हिन्दी नाटक, अंग्रेजी नाटक, गरबा, रास, भांगड़ा नृत्य, राजस्थानी गोत-नाटिका इत्यादि कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। इन कार्यक्रमों को बालकों, अभिभावकों, समिति के सदस्य महानुभावों और सम्मानित जनों ने देखा और भूरि-भूरि सराहना की।

यह कार्यक्रम कुल चार पारियों में सम्पन्न हुआ। जिनकी अध्यक्षता कमशः श्री वी. मु. परीख (गुजरात पाठ्य पुस्तक मण्डल के संचालक), माननीय श्री प्रबोध भाई रावल (गुजरात राज्य के गृह मन्त्री और शिक्षामंत्री) म्युनि. स्कूल बोर्ड के शासनाधिकारी श्री चीमनलाल (मी.

एम.) मेहता ने की । और अतिथि-विशेष के रूप में क्रमशः हेरल्ड लास्की इन्स्टीट्यूट के अध्यक्ष तथा भूतपूर्व संसद सदस्य श्री पुरुषोत्तम जी मावलंकर मस्कती कापड़ मार्केट के अध्यक्ष श्री आत्माराम भोगीलालजी सुतरिया, गुजरात विधान सभा के अध्यक्ष श्री नटवर भाई शाह तथा अहमदाबाद म्युनि० स्कूल बोर्ड के अध्यक्ष श्री नन्दुभाई रावल ने की । सभी ने कार्यक्रम की सराहना की और इसे भारतीय विविधता में एकता का प्रतिरूप बताया एवं इसे राजस्थान और गुजरात की भौगोलिक सीमा भिन्न-भिन्न होते हुए भी दिल और दिमाग की एकता कहकर प्रशंसा की ।

इन कार्यक्रमों के भिन्न-भिन्न अवसरों पर राजस्थान सेवा समिति के उपाध्यक्ष श्री गिरधारीलाल जी सराफ, मन्त्री श्री सम्पतराज जी शाह, स्कूल कमेटी के संयोजक श्री ओंकारमल जी अग्रवाल तथा स्कूल कमेटी के उपसंयोजक श्री नेमीचन्द जी बागरेचा ने संस्था का परिचय दिया । अध्यक्ष महोदय और अतिथि-विशेष महानुभावों के परिचय, स्वागत तथा आभार-दर्शन का का कार्य आचार्य श्री एन. सी. शर्मा और आचार्य श्री रामअवधेश त्रिपाठी ने किया । बन्देमातरम् के बाद सभा विसर्जित हुई ।

कार्यक्रम की सराहना दर्शकों ने तालियाँ बजाकर की और समिति के कुछ माननीय सदस्यों ने कार्यक्रम में प्रथम, द्वितीय, तृतीय आनेवाले बालकों को अलग-अलग पुरस्कारों और चाँदी के कप देने की घोषणा करके की । इस प्रकार कुल चार हजार रुपयों की राशि मिली। राष्ट्रगीत के बाद रात्रि को ११-३० बजे कार्यक्रम समाप्त हुआ ।

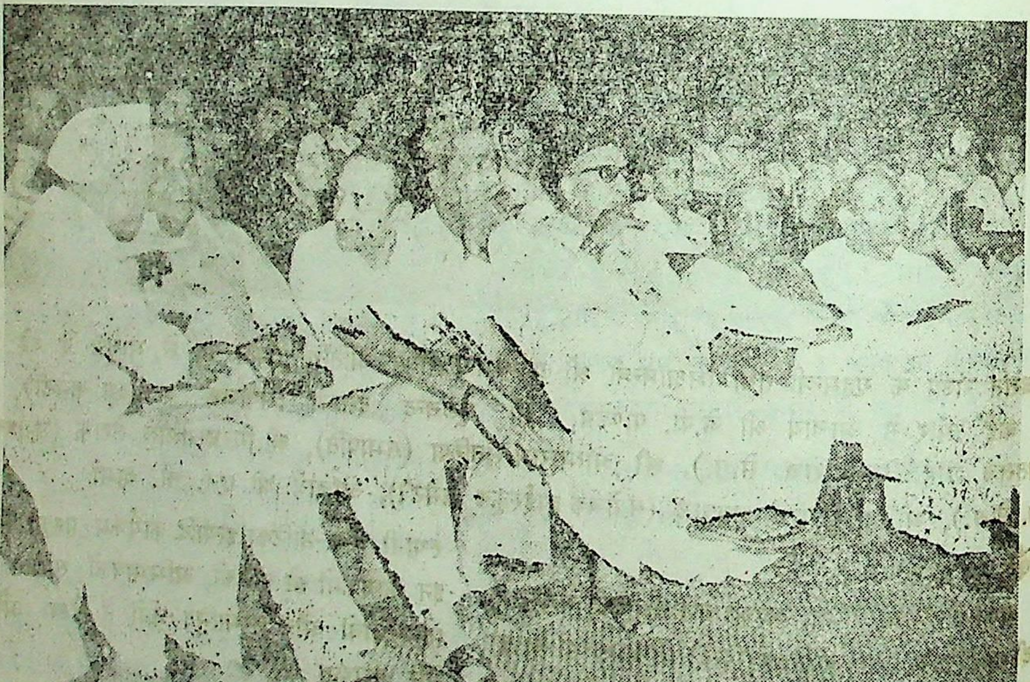

(वार्षिकोत्सव के अवसर पर दर्शकों का एक दृश्य)

इस कार्यक्रम का आयोजन मनोरंजन के साथ-साथ बालकों अभिभावकों और जन-साधारण की अभिरुचि एवं उपयोगिता को ध्यान में रख कर किया गया था। परिणाम स्वरूप कार्यक्रम ने सभी दर्शकों एवं बाल कलाकारों को प्रारम्भ से अन्त तक तन्मय बनाए रखा।

भाँगड़ा नृत्य में बाल-वृन्द

राजस्थानी गीत नाटिका का एक दृश्य

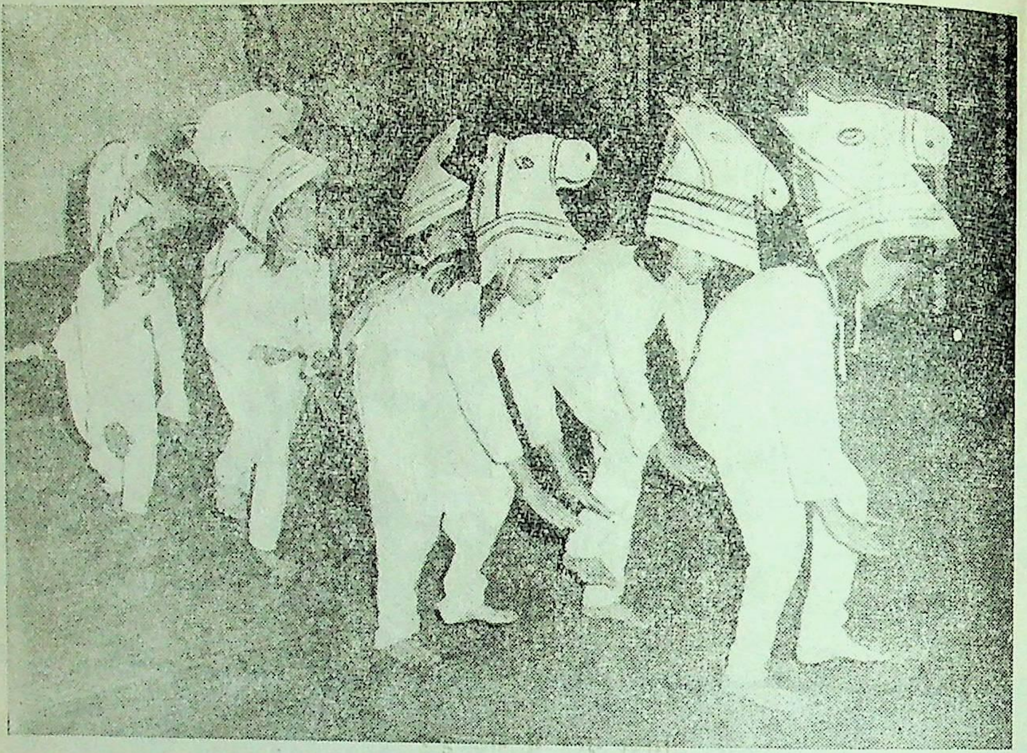

(बालिकाओं का बेला-नृत्य)

स्नेहसम्मेलन :

राजस्थान सेवा समिति, अहमदाबाद की ओर से दीपावली के शुभावसर पर सदस्य महानुभावों के मिलन और नूतनवर्षाभिनन्दन के कार्यक्रम की योजना शनिवार ताः ८-११-८० को प्रातःकाल ९-३० बजे समिति के सभागार में हुई। प्रार्थना के बाद समिति के अध्यक्ष श्री अशोककुमार जी डागा ने पधारे हुए सदस्यों और अन्य सज्जनों का स्वागत किया, नए वर्ष की शुभकामनाएँ की और समिति की आगामी योजनाओं में कन्धे से कन्धा मिलाकर काम करने को अपील की। मन्त्री श्री सम्पतराज जी शाह ने सबका स्वागत किया और नूतन वर्षाभिनन्दन दिया। समिति के प्रथम और भूतपूर्व अध्यक्ष श्री झाबरमलजी भोजन गरवाला ने सबको राम-राम कहते हुए नूतन वर्षाभिनन्दन दिया!

श्रीलाजपतराय जी अग्रवाल ने विनम्रतापूर्वक मिल-जुल कर समिति का काम आगे बढ़ाने की अपील की।

रंग-विरंगी पोशाकों और फैशनों से सुशोभित आबाल वृद्धों ने गले मिल कर, पालागन करके, नमन-प्रणाम करके, चरण-वन्दन करके, हँसते-मुस्कराते हुए एक दूसरे को नूतन वर्षाभिनन्दन दिया, आशीर्वाद और प्रणाम-नमस्कार किया। अन्त में आईस्क्रीम का आस्वाद लेते हुए कार्यक्रम समाप्त हुआ।

इसी दिन अपराह्न तीन बजे इसी स्थान पर सेवा-समिति के महिला-मण्डल की ओर से महिलाओं का भी स्नेह-सम्मेलन एवं नूतन वर्षाभिनन्दन आयोजित किया गया। इसमें हँसते विहँसते बाल-वृन्द, वृद्धाएँ, माताएँ, बहुएँ, बहनें आदि काफी संख्या में उपस्थित हुईं। परस्पर मिलकर, प्रणामाभिवादन कर सबने एक दूसरे के प्रति शुभकामना प्रकट की।

गौरव पुरस्कार :

स्थानीय इण्डियन मर्चेण्ट एसोशियेशन की ओर से दि० ८-११-८० को न्यु क्लोथ मार्केट अहमदाबाद

के सभागार में अध्यक्ष श्री झाबरमल जो भोजनगरवाला की अध्यक्षता में स्नेह-सम्मेलन आयोजित किया गया। मन्त्री श्री गोरधनदासजी गुप्ता ने उपस्थित जनों का स्वागत किया। अध्यक्ष श्री झाबरमलजी भोजनगरवाला ने उपस्थित महानुभावों को राम-राम कहा और नूतन वर्षाभिनन्दन दिया।

इस बार इस एसोशियेशन ने अहमदाबाद नगर के हिन्दी माध्यम की माध्यमिक शालाओं से बोर्ड की माध्यमिक परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं तथा उच्चस्तर हिन्दी और निम्नस्तर गुजराती में बोर्ड में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्रों-छात्राओं को पुरस्कृत किया। राजस्थान हिन्दी हाई स्कूल के निम्नलिखित छात्र-छात्राओं को यह पुरस्कार प्राप्त करने का गौरव मिला।

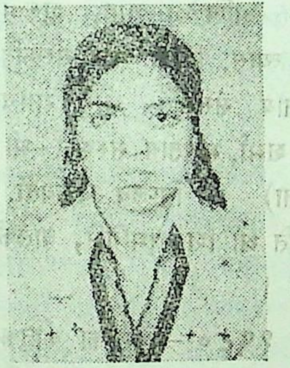

(१) कुमारी सुनीता त्रिलोकचन्द अग्रवाल
नगर की हिन्दी माध्यमिक शालाओं में प्रथम १५१ रु०

(२) कुमारी सुजाता तुलसीराम अग्रवाल २५ रु०
तथा

(३) चि० घनश्याम दाऊलाल अग्रवाल २५ रु०
(बोर्ड में उच्चस्तर हिन्दी में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने के उपलक्ष में)

(४) कुमारी शकुन्तला भंवरलाल जैन ५१ रु०
(निम्नस्तर गुजराती में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने के उपलक्ष में)

समिति के नए सदस्य :

[यहाँ हम समिति के नये सदस्यों का हार्दिक स्वागत करते हुए उनकी नामावली सधन्यवाद प्रकाशित करते हैं। – सम्पादक]

४१९ श्री ओमप्रकाश रवीन्द्रलाल
७२, हीराभाई मार्केट
कांकरिया रोड, अहमदाबाद - २२

४२० श्री अरविन्दकुमार दलीचन्द
१९१, न्यु क्लाथ मार्केट अहमदाबाद-२

४२१ श्री रामचन्द्र सुशीलकुमार
५७१, न्यु क्लाथ मार्केट अहमदाबाद-२२

४२२ श्री चन्दनमल मुकुनदचन्द
४६०।१, साकर बाजार अहमदाबाद-२

४२३ श्री मोहनलाल भेरुलाल कोठारी
द्वारा वीणा ट्रेडस बैंक आफ
बड़ौदा बिल्डिग साकर बाजार, अहमदाबाद

४२४ श्री पारसमल रावतमलजी
द्वारा कमलेशकुमार अशोककुमार
५, बैंक आफ बरोडा बिल्डिन्ग अहमदाबाद

४२५ श्री कल्पना टेक्सटाइल मिल्स
१६, क्लाथ कमर्शियल सेन्टर
साकर बाजार, अहमदाबाद-२

४२६ श्री दिनेशकुमार चौथमल
९५, न्यु क्लाथ मार्केट अहमदाबाद-२

४२७ श्री पी. के. टेक्सटाइल
१९३, न्यु क्लाथ मार्केट अहमदाबाद-२

४२८ श्री गणपतलाल मोहनलालजी सालेचा
बैंक आफ बरोडा विल्डिंग,
साकर बाजार, अहमदाबाद-२

क्रमशः

वार्षिक लेख-सूची

जनवरी-फरवरी—१९८० ० निवेदन ० शुभ सन्देश ० आशीर्वचन ० श्लोक ० सदस्य-नामावली ० ब्लाक-परिचय, संस्कृति की वंशी—सम्पादकीय, मानव-संस्कृति का मूलाधार- डा. राजनाथ पाण्डेय, संस्कृति, सभ्यता एवं शिष्टाचार- डा. इन्दिरा जोशी, भारतीय संस्कृति और नैतिकता—डा. मो. दि. पराड़कर, संस्कृति के सप्त सोपान—रामअवधेश त्रिपाठी, कविता—डा. अम्बाशंकर नागर, संस्कृति के प्रतीक—श्री रामेश्वर-दयाल दुबे, विश्व-संस्कृति को आयुर्वेद की देन, डा. शिवकुमार मिश्र, संस्कार और संस्कृति-श्री अगरचन्द नाहटा, जीवन की मुसकान—आनंदसिंह भंडारी, ताल और सूरज (कविता) —रामदरश मिश्र, साहित्य और संस्कृति-डा. सुरेशचन्द्र त्रिवेदी, संस्कृति का मधुवन (काव्य-नाटिका) श्री जानकीप्रसाद स्वर्णकार, संस्कृति (कविता) —श्री जगदीशचन्द्र शर्मा, हमें भारतीय संस्कृति मुबारक -म. म. अध्यापक केशवराम का. शास्त्री, भारतीय संस्कृति की प्रगति—प्रवणता—प्रा. आदित्य प्रताप सिंह, संस्कृति एक समाधान (कविता) श्री महावीर प्रसाद हलवाई, संस्कृति और व्यक्तित्व—डा. के. बी व्यास, मुक्तक (कविता) नीरज, दो कविताएँ श्री रामचेत वर्मा, भारतीय संस्कृति में ईश्वरवाद—श्री विनोद दीक्षित, गीत (कविता) श्री सत्यनारायण श्रीवास्तव 'कमतर', आधुनिक माँ (कहानी)- श्री जगदम्बाप्रसाद त्रिपाठी, संस्कृति और उद्योग-धन्धे-श्री रमाकान्त पाण्डेय, संस्कृतियों की प्रसव—पीड़ाएँ—(कविता) डा. किशोर काबरा, गाँव में (कविता)—काका बैसवारी, यदि तुम उठे नहीं (कविता) श्री विश्वप्रकाश सक्सेना, वैदिक वाङ्मय और संस्कृति—डा. अवधनारायण त्रिपाठी, संस्कृति के पुरातन तत्त्व—आचार्य श्री रघुनाथ भट्ट, आर्य संस्कृति में शिव—डा. हरीश शुक्ल, भारतीय संस्कृति एक सर्वोत्तम संस्कृति—प्रा. जगदीश शुक्ल, संस्कृति के पदचिह्न—रुद्र से रावण तक श्री श्यामसुन्दर सुल्लेरे, विदेशों में भारतीय संस्कृति—स्वामी खुशालनाथ 'धीर', नानक-वाणी (बोध वचन) रामायणकालीन समाज एवं संस्कृति डा. रूपचन्द पारीक, सादगी (संस्मरण)- श्री अनंत कृपलानी, विश्वबंधुत्व और भारत डा. कुंजबिहारी वार्ष्णेय, नौकरी (संस्मरण) पं. मदनमोहन मालवीय, संस्कृति, धर्म और विज्ञान—श्री अर्जुन सिंह शेखावत, भारतीय संस्कृति और नारी—श्री श्रीकृष्णगोपाल माथुर, परिवर्तित मूल्य और संस्कृति—डा० अरविन्द जोशी, आधुनिक युग का सांस्कृतिक नव जागरण—श्रीमती उषा नेगी, मानस—सन्देश प्रा० विष्णु ओझा, लक्ष्मी का निवास (एकांकी) डा० रामचरण महेन्द्र, हास्य-तरंग (कविता) काका हाथरसी, संस्कृति बोध—प्रा० अखिलेश शाह, शुरूआत (कविता) श्री भगवतीलाल व्यास, शिक्षा और संस्कृति—प्रा० लीलाकान्त मिश्र, भारतीय संस्कृति और रामचरित मानस—श्री नारायणदत्त शर्मा, भारतीय संस्कार—श्री श्रीकान्त कुलश्रेष्ठ कर्तव्य(कविता) श्री विप्लव चक्रवर्ती, भगवान श्रीकृष्ण की जन्मस्तुति श्री शिवरामगिरि, बालकों के संस्कार श्री सलीम शेख ।

मार्च, १९८०—कर का कौतुक सम्पादकीय, दो कविताएँ डा० प्रेमचन्द गोस्वामी, आत्मजयी की प्रतीकात्मता डा० सावित्री डागा, नया रिश्ता (कहानी) श्री अशोक 'आनन', मेरी उत्तराखण्ड यात्रा श्री भगवतस्वरूप अग्रवाल, सन्त-शिरोमणि श्री पीपा जी महाराज श्री श्यामसुन्दरलाल पोशाकवाला, आधुनिक भारतीय नारी में राजनीतिक चेतना डा० राम सिंह यादव, आर्थिक विकास में जनसंख्या का प्रभाव श्री गजेशकुमार मिश्र, हास्य टॉनिक श्री सन्तोष कुमार सुराणा, रचना-पर्व (कविता) श्री प्रकाश मनु, शाश्वत सुख (कविता) श्री सत्यपाल सिंह, अरूप के प्रति (कविता) प्रो० रामनिवास मानव, कमला या पीलिया (स्वास्थ्यपरक) वैद्य प्रेमचन्द वासोतिया, गरीबी का घाव (बालकथा) श्री अशोक श्रीश्रीमाल, नन्हे मुन्ने वीर सिपाही (कविता) श्री ओमप्रकाश बांठिया, संस्था—परिचय, शहर

का रंगरेजी व्यवसाय (उद्योग-परक), हास्य–तरंग पुस्तक परिचय ।

अप्रैल १९८०–धरती का गीत सम्पादकीय, तीन कविताएँ आचार्य सीताराम पाण्डेय, महाकवि कालिदास की कृतियों में भारतीय संस्कृति आचार्य डा० चण्डी प्रसाद शास्त्री, सुधा (कहानी) श्री राकेश सारस्वत क्या आप प्रमाण करते हैं ? डा. श्रीकृष्ण दुबे, सुखी बनने का रहस्य श्री आनन्द प्रकाश, आधुनिक भारतीय नारी श्रीं अशोक पाराशर, राजस्थान की विविध रंगशैलियाँ श्री प्रेमप्रकाश तिवारी, जय जय जय बंभोला रे (कविता) श्री काका हाथरसी, मेरे जीवन की सफलता का रहस्य (व्यक्ति-परिचय), महामूर्ख सम्मेलन (व्यंग्य-परक) डा. प्रेमचन्द्र गोस्वामी, अंगूठी (बोध–कथा) श्री राजेन्द्रप्रसाद जैन, जब बीरबल हार गया श्री पुरुषोत्तम छंगाणी, मानसिक रोग (आरोग्य परक) श्री गोस्वामीजी वृन्दावनवाले, पुस्तक–परिचय, समिति–समाचार, समयनो सदुपयोग (गुजराती) श्री सलीम शेख ।

मई, १९८०—मेघ-गीत सम्पादकीय, दो कविताएँ श्री विद्या 'रश्मि', हमारी जनसंख्या : एक समस्या सामयिक डा. प्रदीप व्यास, शौर्य (कहानी) श्री सलीम शेख, जँवाई : दसवाँ ग्रह (विचार-परक) प्रो. श्रीचन्द जैन, कहकहे (संकलित) ईश्वर भवन (संस्था-परिचय), व्यापार व्यवहार की शिक्षा शती (नीति-परक) श्री नयनचन्द बोरडिया, आदर्श नारी (नारी-परक) श्री शंभुनाथ दुबे, अन्तर्घट (कहानी) श्री राम अवतार 'अभिलाषी', लश्कर पाछो घेर (लोककथा) डा. रूपचन्द पारीक, सूरज नई रोशनी (कविता) श्री जगन्नाथ 'विश्व', बरसात में सावधानी (व्यवहार-परक) श्रीमती कुमुद सिंह, मोहन का साहस (बाल विभाग) श्री रवीन्दु सुमन, समाज का गौरव श्री अनिल गोपीशंकर (परिचय), हैण्डलूम, पावरलूम (उद्योगपरक) श्री कान्ति कुमार पोद्दार, एक वर्ष हिजड़ा वर्ष भी हो (व्यंग्यपरक) श्री पूरन सरमा, पुस्तक–परिचय समिति–समाचार ।

जून, १९८०–मूल्यवान–जीवन सम्पादकीय, दो कविताएँ (कविता) श्री राधेश्याम त्रिपाठी, भारतीय संस्कृति का सन्देश (विचार–परक) श्री महेश बी. शर्मा, धड़कन (कहानी) श्री रामवदन राय, क्या हुआ ! (कविता) श्री रामनिवास 'मानव', जन--गणना : महत्त्व और प्रक्रिया (सामयिक) श्री ईश्वरचन्द, अबला (नारी–परक) श्री राकेश सारस्वत, चितौड़ की महारानी (परिचय परक) श्री किशोरकुमार जोशी, ढोला–मारू (कथा–परक) डा. रूपचन्द पारीक, आओ धूम मचाएँ (व्यंग्य परक) श्री नन्दन चतुर्वेदी, फाउन्ड्री उद्योग (उद्योग-परक) श्री ओमप्रकाश अग्रवाल, क्या आपको खाना नहीं पचता ? (स्वास्थ्य परक), अध्यक्षीय भाषण श्री अशोककुमार डागा, उन्नीसवाँ वार्षिक विवरण श्री सम्पतराज शाह ।

जुलाई, १९८०—दूरदर्शी–बनो सम्पादकीय, नकाब (कविता) डा० भगवतशरण अग्रवाल, गुजराती कविता का आधुनिक युग (समीक्षा-परक) डा० रजनीकान्त जोशी, ममतामयी (सत्य-कथा) श्री अनिता जैन, सांस्कृतिक पुनरुत्थान के प्रणेता प्रेमचन्द (शताब्दी परक) श्री श्यामसुन्दर सुल्लेरे, अग्रवाल समाज : एक दृष्टि (परिचय-परक) श्री रामेश्वर दास गुप्त, दक्षिण भारतीय भाषाओं में अनूदित प्रेमचन्द साहित्य (शताब्दी-परक) श्री माणकचन्द नाहर, राजस्थानी साहित्य में नीति बचनावली (परिचय-परक) श्रीमती सुगनी देवी वासोतिया, दृष्टि–परिवर्तन (नारी-परक) कुमारी सुमन मित्तल, केन्द्रीय बजट (बजट-समीक्षा) श्री रामनिवास राठी, हल्दी (स्वास्थ्य-परक) श्री भानुप्रताप मिश्र, इलजाम (बाल-परक) श्री विनोद खत्री, व्यापार–व्यवहार की शिक्षा-शती (व्यवहार-परक) श्री नयनचन्द बोरडिया, सेठ श्री झाबरमलजी भोजनगरवाला (व्यक्ति-परिचय) एक समाज-सेवी, कपड़ा प्रोसेसिंग उद्योग में अहमदाबादका महत्त्वपूर्ण योगदान (उद्योग-परक) श्री अजीत मेहता ।

अगस्त, १९८० सत्यं शिवं सुन्दरम् सम्पादकीय, स्वाधीनता दिवस (कविता) श्री राजकुमार जैन, संस्कृति और जीवन (विचार-परक) प्रा० भूपतिराम साकरिया, मराठी लोकगीतों में वर्षा–वैभव (वर्णन-परक) श्रीमती मालती शर्मा, सबसे सरल और सबसे कठिन (व्यवहार–

परक) आचार्य रामचरण महेन्द्र, महिमा सात की श्री सरोज शर्मा, हमारी राष्ट्रीयता (सामयिक) श्री राकेश सारस्वत, शुक्रिया (सत्य कथा) श्री राजेन्द्र जैन, डूंगजी जवारजी (लोक कथा) डा० रूपचन्द पारीक, टैक्स्टाइल मैनचेस्ट : पाली (उद्योग-परक) श्री अर्जुन सिंह शेखावत, कहकहे (व्यंग्य-विनोद), सुख-दुःख (कविता) सुश्री सावित्री डागा, व्यापार-व्यवहार की शिक्षा-शती (व्यवहार-परक) श्री नयनचन्द बोरडिया, आँवला (स्वास्थ्य-परक) अनुभवी, क्या आप पच्चीस सौ रुपयों से अधिक का भुगतान नगद कर रहे हैं ? (कराधान-परक) श्री रमेश मोदी, महँगाई (कविता) काका बैसवारी, प्रार्थना की आवश्यकता वैरागी बाबा, समिति-समाचार ।

सितम्बर, १९८०—हम और हिन्दी.... सम्पादकीय, गुजराती कविता का आधुनिक काल (समीक्षा-परक) डा० रजनीकान्त जोशी, जय-जय हिन्दी वाणी (कविता) रामदयाल पाण्डेय, दान (कहानी) श्री राकेश सारस्वत दो कविताएँ (कविता) श्री जानकीप्रसाद स्वर्णकार, नागदा: भारतीय संस्कृति का केन्द्र (परिचय-परक) श्री विष्णु भट्ट, तालाब छलक उठा (वर्णन-परक) डा० गोवर्द्धन शर्मा, प्रयोजनमूलक हिन्दी की आवश्यकता, (हिन्दी दिन परक) श्री विनोद दीक्षित, सुनो कहानी (बाल-परक) श्री मोतीलाल सुराना, कहकहे (संकलित), अश्वत्थः सर्व वृक्षाणाम् (परिचय-परक) श्री श्यामलाल सिंहवाल, दाम्पत्य विनोद के क्षण (विविध), प्रिय पुत्र लौट आओ (कविता) श्री अरविन्द मिश्र, सदाचारी के लिए अभीष्ट (चरित्र परक) पं० राम अवतार अभिलाषी, आयकर कानून और ए० ओ०पी० (कराधान परक) श्री रमेश मोदी, दो हिन्दी प्रसंग (सामयिक) श्री रामेश्वरदयाल दुबे, प्रयाण गीत (कविता) डा० रामकुमार गुप्त, बड़ा कौन ? (बोध कथा) संकलित पक्षाघात (स्वास्थ्य-परक) वैद्य प्रेमचन्द वासोतिया, कपड़ा बाजार (व्यापार-परक) श्री रसिकलाल मोदी, समिति समाचार (संस्था परक) ।

अक्टूबर-नवम्बर—१९८० कमल और कमला सम्पादकीय, तीन कविताएं (कविता) श्री सत्यनारायण श्रीवास्तव 'कमतर', तुलसी साहित्य में बुन्देलखण्ड तथा उसकी संस्कृति (शोध-परक) श्री लक्ष्मीनारायण दुबे, परीक्षा (कहानी) श्री पुरुषोत्तम पंचोली, आप भी कुछ विशिष्ट बनिए (विचार-परक) डा० रामचरण महेन्द्र, दीपावली और गणेश-पूजा (सामयिक) श्री बालमुकुन्द, बलि का अश्व(परिचय-परक) श्री ओमप्रकाश गर्ग 'मधुप', नारी-सम्मान (नारी-परक) श्री अशोक पाराशर, मानवता के मसीहा (जयन्ती-परक) श्री राजेन्द्र प्रसाद जैन, राजस्थान का अमर गौरव (परिचय-परक) श्रीमती गीता देवी, तलाश एक अदद मकान की (व्यंग्य-परक) श्री राजेन्द्र सिंह, कहकहे, व्यवहार-संहिता श्री नयनचन्द बोरडिया, क्षण और क्षणिका (बोध--परक) श्री रामावतार अभिलाषी, बदला (बाल कहानी) श्री ओमप्रकाश सोनी, आयकर कानून और अवयस्क श्री रमेश मोदी, दो कविताएँ श्री सलीम शेख, करुण कीर्तन- (हास्य-परक) काका हाथरसी, लहसुन खाइए जवानी पाइए (स्वास्थ्य-परक) श्री प्रेमचन्द वासोतिया, परिश्रम से प्रीत (चेतन-परक) श्री कृष्ण अग्रवाल, अनुकरण (लघुकथा) श्री मुकुन्द महाजन, अनूठा रंगरेज (बोधकथा) महावीर प्रसाद हलवाई, गीत (कविता) श्री योगेन्द्र शर्मा, पुस्तक-परिचय, समिति-समाचार ।

दिसम्ब , १९८०—हम कहाँ हैं सम्पादकीय, दो कविताएँ (कविता) श्री मदनमोहन परिहार, श्री अनन्त गोपाल शेवड़े की हिन्दी साहित्य को देन (समीक्षा-परक) डा० इन्द्रपाल सिंह 'इन्द्र', मजलूम (कहानी) श्री वसन्त कुमार परिहार, पूरब का प्रतिभा पुत्र विवेकानन्द श्री बालमुकुन्द, राजस्थान की लोक-अलंकरण कला (लोक-परक) गायत्री महामन्त्र (ज्ञान-परक) श्री श्यामसुन्दरलाल पोशाकवाला, रघुनाथ लीला (शोध परक) श्री बी-मानेकचन्द नाहर, कर्म (कविता) श्री विनय पत्तन, प्रशंसा कीजिए (व्यवहार परक) श्री कुमुद सिंह, विरोधा भास (व्यंग्य लेख) श्री जमनालाल बायती, भारतीय नारी समाज (नारी परक) श्री अमरपुरी गोस्वामी, वे दिन वे लोग (संस्मरण-परक) श्री गौरी शंकर गुप्त, मोटापा (बाल कथा) श्रीरवीन्दु सुमन. गुजरात के बन्दरगाह (व्यापार परक) श्री इन्द्रवदन प्राणलाल, पुस्तक परिचय, समिति समाचार ।

हमारे पास हैं लुभावने कपड़े
आपके पास है आकर्षक व्यक्तित्व
जी हाँ, कपड़े की इतनी किस्में कि
हर व्यक्ति अपना मनपसन्द कपड़ा चुन सके,
सबके लिए–खास तौर से आपके लिए

जियाजी

टेरीन, सूटिंग–शर्टिङ्ग, काटन–शर्टिङ्ग प्रिन्ट्स

* *
* *

निर्माता :

जियाजीराव काटन मिल्स लि०

बिरलानगर, ग्वालियर (म० प्र०)

सेन्चुरी की नई देन

कोजीकॉट

कॉटन शर्टिंग

सुन्दर सुहावने चेक्स में उपलब्ध है ।

पहनने में ऊनी कपड़े-सा आनन्द मिलता है ।

निर्माता

दि सेन्चुरी स्पिनिंग एण्ड मैन्युफेक्चरिंग कंपनी लिमिटेड

'सेन्चुरी भवन', डॉ. एनीबेजण्ट रोड, वरली

बम्बई-४०००२५

मेसर्स विनोदकुमार अग्रवाल

पट्टा, लेडीज एवं जेन्ट्स कलर पोपलीन, चैक शर्टिंग, पोपलीन प्रिन्ट, पोलीस्टर प्लेन तथा प्रिंटिंग एवं पोलोनोजिक प्रिन्ट के थोक व्यापारी

33/A, मस्कती मार्केट

अहमदाबाद ३८०००२

T. No. 382310, 384735

टेलीफोन नं० 362546

श्री भगवती ट्रेडिंग कम्पनी

न्यू स्वदेशी मिल आफ अहमदाबाद

की

प्रिन्ट फेयरलेडी. तथा राजरत्न, रंगीन शाम के विक्रेता :

अन्य प्रतिष्ठान

श्री जय अम्बे ट्रेडिंग कम्पनी

श्री जगदम्बा ट्रेडिंग कम्पनी

१६८, न्यू क्लॉथ मार्केट

अहमदाबाद–२

ग्राम : परमसुखी
टेलेक्स : ०१२-५५२-गुप्ता

फोन : कार्यालय : ३८२१३८
निवास : ४४१३४८

सेलिंग एजेन्ट, केरल

दी महेन्द्र मिल्स लिमिटेड
दी भारत विजय मिल्स लिमिटेड, कलोल
दी महेश्वरी मिल्स लिमिटेड, अहमदाबाद

शुभ कामनाओं सहित

के. जी. एण्ड कम्पनी

क्लोथ मरचेन्टस तथा कमीशन एजेन्टस
एच. ए. मार्केट कपासिया बाजार,
अहमदाबाद-३८०००२,
शाखा :-
८०, नेहरूनगर, त्रिचुर-६८०००६

ग्राम : परम सुखी
फोन : २०२५८

A.M. PROCESSORS
Dream of wonder Land Comes True, when you see The Matchless Matchings in Galore Artistic Designs with Glowing proclon Screen prints
By A. M. Processors

A. M. Processors
3, Embassy Market,
Near Dinesh Hall,
Ashram Road,
Ahmedabad-380 009.
Phone : Off. 49616 Fact. 54843

ew Gujarat Cotton Mills Ltd.

AHMEDABAD-2

INSIST ON

"New Gujarat Fabrics"

For Home & Fxport

For 100 ·/. of Polyster, Printed Shirting, 80/20 Filament Shirting, Fancy wash and Wear Poplins of Latest Fashions.

egd. Office :
3 A, Brabourne
oad,
alcutta.

Mill No. 1
Naroda Road,
Ahmedabad–380002
Phone : 372266
372317
Telegram : NEW
GUJRAT

Mill No. 2
Outside Dariapur Gate
Aemedabad-380016
Phone : 383463
380389
Telex : AM 311

न्यु स्वदेशी व मंजूश्री का पैगाम

आपके नाम

न्यु स्वदेशी मिल्स व मंजूश्री मिल्स पूरे परिवार के लिए
प्रस्तुत करते हैं बेहतरीन कॉटन पोपलीन,
कोटिंग, ड्रेस मटीरीयल्स व
पोलीस्टर ब्लेन्ड में शुटिंग व शर्टिंग जिसे
पहनकर व्यक्तित्व निखर आता है

न्यु स्वदेशी

न्यु स्वदेशी मिल्स ऑफ
अहमदाबाद लि०

रजिस्टर्ड आफिस एवं मिल्स,
पो० बो० संख्या १००१४
नरोडा रोड,
अहमदाबाद-३८००२५
दूरभाष : २७२११०, ३७२०२१
टेलेक्स : २२२ नेमा इन
तार : न्यु स्वदेशी

मंजूश्री टेक्सटाइल्स,
(प्रो० धी न्यु स्वदेशी मिल्स
ऑफ अहमदाबाद लि०)
गिरधरनगर, अहमदाबाद-३८००१०
रजिस्टर्ड आफिसः नरोडा रोड,
अहमदाबाद ३८००२५
दूरभाष : ६७२७१-७२-७३
टेलेक्स : २२२ नेसा इन
तार : 'मंजूश्री'

सुधाबिन्दु

वर्ष २१ अंक १२
जनवरी-फरवरी, १९८१ (संयुक्तांक)
वार्षिक शुल्क : १५ रुपए
आजीवन ग्राहक : १५० रुपए
एक अङ्क : १-५० रुपए

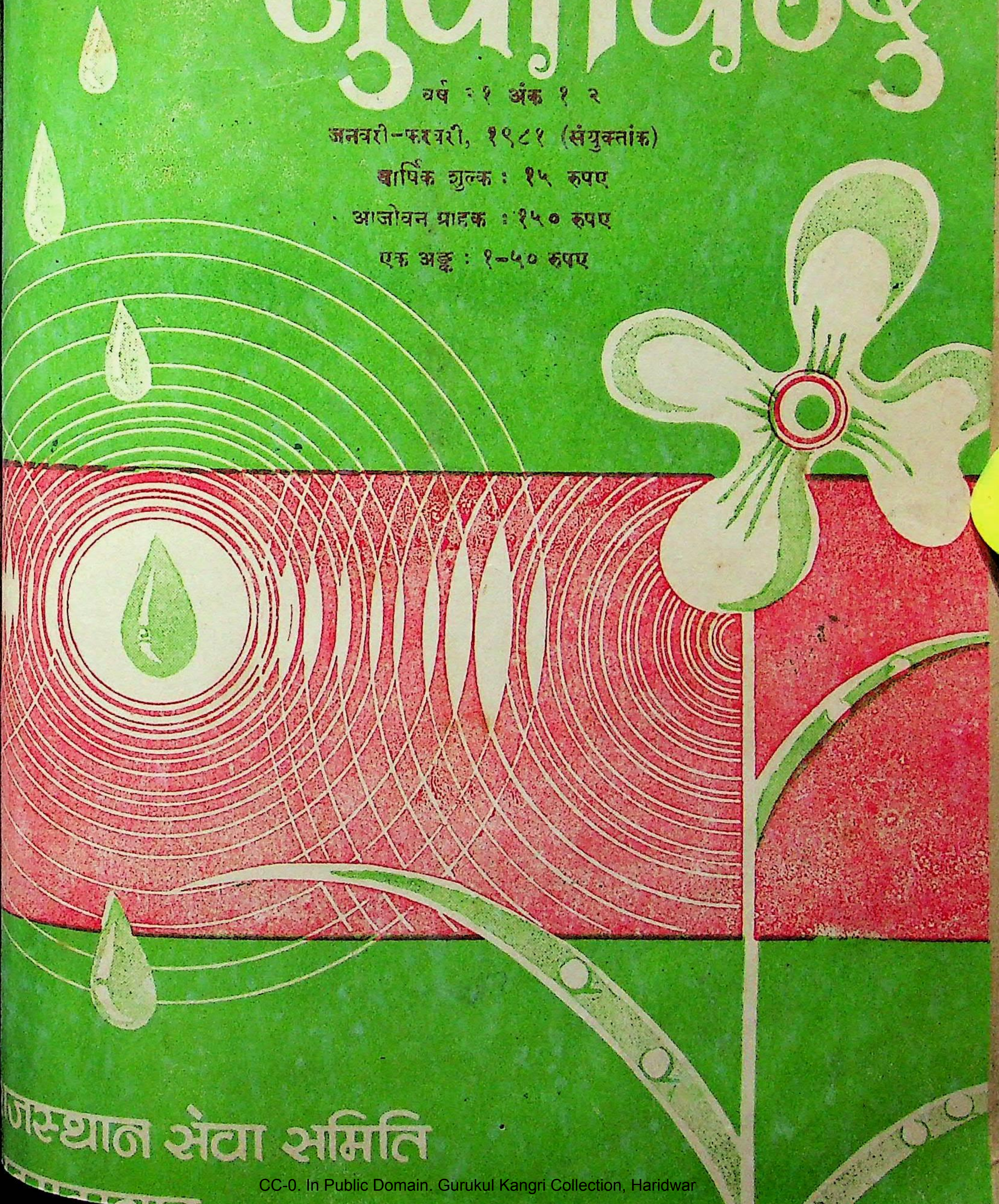

जस्थान सेवा समिति

INSIST ON

ASARWA
FABRICS

100% Polyester Prints in Eye-catching Designs
Loveable shades and
Lovely Matchings for
Fashionable Fabrics
AND
Feel the Difference, Warmth
And the Feeling of a new Life

Registerd User of Trade Mark
"EVA PRESHRUNK & SUNFULGENT"
Choose From ASARWA
Exciting Varieties of Polyester/Cotton
Blended Shirting, Suiting, Sarees.
And Dress Materials.

Asarwa Mills
(Prop Bengal Tea & Industries Ltd.)
Asarwa Road, AHMEDABAD-380 016
Regd. Office : Brabourn Road, CALCUTTA 700001
Tl Phone : 67301-2, Gram : MILL ASARWA Telex : 012476

सुधाबिन्दु

सम्पादक

डा० राजनाथ पाण्डेय
एम० ए० (संस्कृत, हिन्दी, पालि) पी-एच० डी०
व्याकरणाचार्य "लब्धस्वर्णपदक"

रामअवधेश त्रिपाठी
साहित्यरत्न

लेखकों से निवेदन

(अ) हमें कैसे लेख-कविता-कहानी आदि चाहिए:-

(१) जो मानव में जीवन के प्रति आस्था जगाकर जीवन को सुन्दरतर बनाए और जो जीवन जीने की कला सिखाए ।

(२) जो मानव-मानव में अपनत्व बढ़ाए, जो करुणा जगाए और जो परसेवा सिखाए ।

(३) जो मानव को आत्माभिमुख करके प्रकृति-परायण बनाए ।

(४) जो हमारे भारत राष्ट्र की, विशेषतः राजस्थान की गरिमा को उजागर करे ।

(५) जो हमारी विभिन्न प्रजाओं, जातियों एवं व्यवस्थाओं के उत्कृष्ट गुणों का विवेचन करे ।

(६) जो प्राचीन-अर्वाचीन ज्ञान-विज्ञान का संतुलित विवेचन करे ।

(७) जो मानव को श्रेष्ठ मानव बननेके लिए प्रेरित करे ।

(आ) रचनाएँ कागज के एक ओर लिखकर भेजें ।

° अप्रकाशित और अप्रसारित रचनाएँ ही भेजें ।

° निर्विवादास्पद विषयों पर लिखी हुई रचनाएँ ही भेजें

° रचना अस्वीकृत होने पर वापस मँगानेके लिए टिकट लगा लिफाफा भेजें ।

° तीन-चार फुलस्केप में लिखी रचनाएँ ही भेजें तो बड़ी अनुकूलता होगी ।

° अपना परिचय तथा योग्यता-विवरण भी भेजें ।

पत्राचार : रामअवधेश त्रिपाठी
२, उत्तर भारतीय कोलोनी, नागरबेल के पास
अमराईवाड़ी, अहमदाबाद-२३

संयोजक

गिरधारीलाल सराफ

एम० कॉम०, एल-एल० बी०, रा० रत्न

राजस्थान सेवा समिति, अहमदाबाद का

मासिक मुखपत्र

वर्ष : २१ जनवरी-फरवरी
अंक : १-२ १९८१

वार्षिक शुल्क : १०. रुपए

आजीवन ग्राहक : १५० रुपए

एक अंक का मूल्य : १.५० रुपए

*

'सुधाबिन्दु' में विज्ञापन की दरें निम्नांकित हैं :

स्थान	वार्षिक
कवर पृष्ठ नं.-४	३,००० रु०
,, ,, नं.-२ और ३	२,५०० रु०
रंगीन पूरा पृष्ठ	२,००० रु०
,, आधा ,,	१,००० रु०
साधारण पूरा पृष्ठ	१,५०० रु०
,, आधा ,,	७५० रु०

व्यवस्थापक 'सुधाबिन्दु'
राजस्थान सेवा समिति, शाहीबाग मार्ग अहमदाबाद-४

राजस्थान सेवा समिति, शाहीबाग मार्ग, अहमदाबाद ४ के लिए श्री दुर्गादास चारन (सचिव) ने
प्रकाशित किया एवं श्री रामानन्द प्रिंटिंग प्रेस कांकरिया रोड, अहमदाबाद २२ ने मुद्रित किया ।

अनुक्रमणिका

(गुजरात यूनिवर्सिटी द्वारा शोधपत्रिका के रूप में मान्य)
तथा
[राजस्थान सरकार के माध्यमिक, उच्चतरमाध्यमिक विद्यालयों तथा पुस्तकालयोंके लिए 'सुधाबिन्दु' मान्य है।]

जनवरी--फरवरी , १९८१

१-संयम और सुख — सम्पादकीय ५
२-दो गीत (कविता) डा० प्रकाश मनु ६
३-दयाराम सतसई में रूप-वर्णन (समीक्षा-परक) आचार्य रघुनाथ भट्ट ७
४-मिलन (कहानी) श्री सलीम शेख १०
५-माँ (विचार-परक) श्री राजेशकुमार मिश्र १३
६-प्रत्येक वस्तु का उज्ज्वल पक्ष देखिए (जीवन-परक) श्री श्रीकृष्ण अग्रवाल १६
७-भोपे : भात-भात के (लोक-परक) डा० महेन्द्र भानावत १९
८-जन-गणना एवं परिवार नियोजन (सामयिक) श्री भूरचन्द जैन २२
९-कहकहे (विनोद-परक) — २४
१०-अग्रवालों में दस्सा बीसा भेद (अध्ययन-परक) डा० स्वराज्यमणी अग्रवाल २५
११-सूक्तिसुधा — २७
१२-कलाकृतियों का विचित्र आदान-प्रदान (परिचय-परक) डा० प्रेमचन्द गोस्वामी २८
१३-नवयुवक-नवयुवतियाँ (युग-परक) श्री गोपीकिसन भारतिया २९
१४-मानवशक्ति और श्रम (जीवन-परक) श्रीमती रश्मि अग्रवाल ३१
१५-मैं अखबार क्यों खरीदता हूँ (व्यंग्य-परक) श्री राजेन्द्रसिंह सरोज ३३
१६-अनासक्ति के प्रहरी वे महाकवि (बोध-परक) श्री राजेन्द्रप्रसाद जैन ३५
१७-श्रीविजयनारायण सोमानि (व्यक्ति-परिचय) समाज प्रेमी ३६
१८-पाँच और चार एक (विज्ञान-परक) श्री मस्तराम गहलोत ३७
१९-वंध्यत्व या बांझपन (कुछ अनुभव) (स्वास्थ्य-परक) वैद्य प्रेमचन्द बासोतिया ३८
२०-हम बच्चे हिन्दुस्तान हैं (बालकाव्य) श्री गिरजाशंकर गुप्त ४०
२१-अनसूया (गुजराती लेख) श्री रोहित शाह ४१
२२-समिति समाचार ४२

---

० विशेष सूचना ०

इससे नम्रता पूर्वक सुचित किया जाता है कि 'सुधाबिन्दु' का 'उद्योग विशेषांक' अहमदाबाद नगर की अशान्त परिस्थिति एवं अन्य कारणों के उपस्थित हो जाने से आगामी मई-जून'८१ में प्रकाशित होगा। कृपया इस विवशता के लिए क्षमा करें।

'जनवरी फरवरी' तथा 'मार्च-अप्रैल ८१' में 'सुधाबिंदु' का संयुक्तांक निकालने की व्यवस्था की गई है, जो यथासमय पाठकों की सेवा में पहुँच जाएगा। कृपालु लेखकों, ग्राहकों, पाठकों और हितैषियों से प्रार्थना है कि वे इस व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए व्यर्थ के पत्र व्यवहार से बचने-बचाने की कृपा करें।

अहमदाबाद
ता० ९।२।८१

व्यवस्थापक
'सुधाबिंदु'

० पाठकों के पत्र ०

'सुधाबिन्दु' का सितम्बर का अंक देखने को मिला। वैसे तो सभी रचनाएँ सुन्दर एवं संग्रहणीय लगीं, लेकिन सम्पादकीय लेख (हम और हिन्दी) एवं कहानी (दान) इसके विशेष आकर्षण रहे। 'दान' कहानी में सारस्वत जी ने अपनी कुशल लेखनी के द्वारा जिन उच्चकोटि के विचारों का सुन्दर समन्वय किया है, वे वास्तव में शैक्षिक एवं प्रशंसनीय हैं। कहानी इस ढंग से प्रस्तुत की गई है कि आदर्श उपदेशात्मक होने से बच गया है। लेकिन इसके साथ ही कहानी में एकाध प्रिंटिंग की भूलें, (जैसे पृष्ठ १२ पर यह नहीं लिखा गया है कि ('शेष पृष्ठ २१ पर') अखरने वाली हैं।

'सुनी कहानी' (श्री सुराना) एवं 'दो हिन्दी प्रसंग' भी मनोहर एवं रुचिकर लगे

द्वारकाप्रसाद त्रिपाठी
रसूलपुरा, बड़ी बाजार, वाराणसी १

★

'सुधाबिन्दु' राजस्थान सेवा समिति द्वारा निकल रहा है। यह बड़ी खुशी की बात है कि गुजरात सरीखे गुजराती भाषी प्रांत से आप राजस्थानी समाज के लिए वह भी हिंदी में पत्र चला रहे हैं। इसके लिए आपको अनेक धन्यवाद है। आज के इस महँगाई के जमाने में पत्र निकालना और उसको चलाना बड़ा ही मुश्किल है। एक तो सामाजिक पत्र नियमित नहीं चलते हैं और आर्थिक परिस्थिति के कारण कुछ समय बाद बन्द हो जाते हैं, जिससे जनता का विश्वास नहीं रहता। अ. भा मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा भी समाज-विकास पत्र निकलता है। आपने राजस्थानी समाज के साथ साथ राजस्थानी भाषा को भी कुछ-कुछ स्थान दिया है। समाज की जागृति के लिए तथा लोक-मानस में पहुँचने के लिए साहित्य का भी महत्वपूर्ण स्थान है। आपके इस कार्य की सराहना करते हुए उपरोक्त पत्र भविष्य में उन्नति करे, ऐसी ईश्वर से प्रार्थना है। — **गोपीकिसन भारतिया**

शिन्नर, जिला-नासिक

★

दिसम्बर, १९८० की 'सुधाबिन्दु' की प्रति मिली। बहुत सुन्दर निकली है— रूप-सज्जा एवं सामग्री के दृष्टिकोण से। "हम कहाँ हैं!" आपका सम्पादकीय बड़ा ही धर्म-नीति सम्बन्धी नीर-क्षीर विवेकी है।

इसके बाद डा० 'इन्द्र' द्वारा लिखित "श्री शेवड़े की हिंदी साहित्य को देन" लेख महत्वपूर्ण है। साथ ही श्री भाई परिहार की दोनों कविताएँ सुन्दर बन पड़ी हैं। आप सभी को बधाई।

श्री पोशाकवाला द्वारा 'गायत्री-महामन्त्र' कृत अर्थभाव सटीक है। मेरे विचार से बहुत लोगों को इसका सही अर्थ अब तक मालूम नहीं था और न होगा; लेकिन इसको पढ़ने के बाद अर्थ ज्ञात हो जाएगा।

जगदीशचन्द्र 'जीत' एम० ए० ★ साहित्य अकादमी रवींद्र भवन, नई दिल्ली-१

'सुधाबिन्दु' पत्रिका बराबर वर्षों से प्राप्त हो रही है और उसकी एक-एक बिंदु से सुधारस का पान होता ही है। 'गुजरात' में ऐसी हिंदी पत्रिका की आवश्यकता थी, जिसमें उद्योग, व्यापार वैद्यक एवं सामाजिक जीवन की झाँकी और साथ ही साहित्य परक-विचार परक लेखों का सुसंपादन हो। यह पत्रिका इन सबको एक साथ बाँधे हुए है और यही इसका गौरव है। आशा है भविष्य में भी यह पत्रिका इसी तरह सम्पादित होती रहेगी —धन्यवाद।

(प्रा.) अखिलेश एम० शाह
२५, गाँधीपार्क, अहमदाबाद-१५

★

-: वैदिक भावना :-

य आध्राय चकमानाय पित्वोऽन्न-
वान्त्सन्रफितायोपजग्मुषे ।
स्थिरं मनः कृणुते सेवते पुरोतो
चित् स मर्डितारं न विन्दते ॥
—ऋग्वेद- १०।११७।२

दुर्बल और भूख से पीड़ित स्वयं द्वार पर आये ।
लिये अन्न की चाह, विकल हो संमुख कर फैलाये ॥
ऐसे याचक के प्रति भी जो हृदय कठोर बनाता ।
अन्नवान है, किन्तु नहीं देने को हाथ बढ़ाता ॥
यही नहीं तरसाकर उसको स्वयं सामने खाता ।
ऐसे महाक्रूर को सुखदाता, (विभु) न कभी मिल पाता ॥

समिति के दो प्रकाशन पुष्प

१. आधुनिक राजस्थानी साहित्य : लेखक—प्रा. **भूपतिराम साकरिया**

डेमी साइज, पक्का जिल्द, कलात्मक आवरण-पृष्ठ, सुन्दर छपाई वाली इस पुस्तक की प्रशंसा बड़े-बड़े विद्वानों ने की है । पुस्तकालयों तथा पुस्तक-प्रेमियोंके लिए विशेष उपयोगी है । मूल्य — केवल ६ रुपए

२. बातां बखत बखत की : लेखक—**श्री महावीरप्रसाद हलवाई**

डेमी साइज, पक्की जिल्द, उत्कृष्ट छपाई तथा मोहक आवरण-पृष्ठ । यह पुस्तक राजस्थानी भाषा में लिखी गई मौलिक और जीवनोपयोगी कविताओं का एक सुन्दर संग्रह है, जिसके प्रत्येक दूहे अँगूठी के नगीने हैं । मूल्य-केवल ६ रुपए

इस पुस्तक पर सम्मति देते हुए आचार्य बदरीप्रसाद साकरिया ने लिखा है, "सुन्दर और सुबोध नीति के दोहे अपने ढंग की यह एक कृति है । कवि का प्रयास वास्तव में सराहनीय है । राजस्थानी भाषा के माध्यम से कवि और कृति साहित्य-गगन में प्रकाशमान हों, ऐसी अपेक्षा-अभिलाषा है ।"

प्रातिस्थान—

राजस्थान सेवा समिति, शाहीबाग मार्ग, अहमदाबाद-४

"सुधाबिन्दु" के तथा देश-विदेश की पत्रिकाओं के विश्वस्त एजेण्ट

श्री सौरभ पुस्तक भण्डार

केलिको डोम के सामने, रिलीफ रोड, अहमदाबाद ३८०००१

सुधाबिन्दु

वर्ष : २१ जनवरी–फरवरी, १९८१ अंक : १–२

सम्पादकीय

संयम और सुख

उड़ते हुए कागजों ने अपने सिर पर सवार प्रस्तरमूर्ति से पूछा, 'देवी, आपने हमें इस प्रकार दबाकर-बाँधकर क्या पाया ? अब तक तो हम धरती की गोदी में खेलते-खेलते कहाँ से कहाँ पहुँच गए होते । क्या मेरी गति प्रगति से आपको ईर्ष्या है । यह सुनकर प्रस्तर–प्रतिमा गंभीर हो गई और उसने बड़ी नम्रता से उत्तर दिया, "भैया कागज ! मैं तुम्हारी परेशानी देखकर क्षुब्ध हो उठी, तुम्हारी अस्थिरता से चिन्तित हो गई, तुम्हारे कृश शरीर की कठोर यात्रा ने हमें द्रवित बना दिया । आगे विशाल समुद्र है और पिछले भाग में अग्नि–ज्वालाएँ स्थित हैं । उनका ध्यान कर मैं व्यथित हो गई कि तुम्हें जलने-गलने में देर न लगेगी । हवा की उँगली पर नाचते-नाचते तुम परेशान हो हो गए हो । कुछ विचार तो करो कि तुम कहाँ जा रहे हो, क्या कर रहे हो ?"

कागज शान्त था, मौन था, कुछ सोच में पड़ गया था । कदाचित् उसे अपनी उलझी हुई समस्या का हल मिल चुका था । अब वह भावी जीवन की तैयारी करने लगा था । उसने प्रस्तर-मूर्ति के चरणों में मस्तक टेक दिया, उसके मुँह के मौन आभार ने वातावरण में अजीब शान्ति भर दी ।

संयम इसी प्रकार की एक प्रस्तर–मूर्ति है, जो हमें विवेक, विनय और वैशिष्ट्य से मण्डित करता है । इससे अशान्ति, अस्थिरता और अनवधानता दूर होती है । भगवान् मनु ने कहा है, 'स्वयं कष्ट पाते हुए दूसरों को कष्ट न पहुँचाना, परद्रोह के कार्य में वृत्ति न लगाना और ऐसी अशुभ वाणी न बोलना, जिससे दूसरों को कष्ट पहुँचता है—यही संयम है ।

शारीरिक, मानसिक और आत्मिक रूप में संयम हमारे जीवनोद्यान की चहारदीवारी है । शरीर का संयम हमारे खान–पान, आहार–निद्रा, स्वास्थ्य-आरोग्य और शक्ति-स्फूर्ति का विवर्धन करता है । मानसिक संयम मन को एकाग्र, व्रतशील, विचारशील तथा व्यवहारशील बनाकर जीवन-नौका को भवसिन्धु पार करने की मति प्रदान करता है । आत्मिक संयम अशान्ति के गह्वर वन में शांति का कोकिल बनकर मधु–गुंजार करता है ! स्नेह, प्रेम, एकता बन्धुता, धैर्य, श्रद्धा और मानवता के सप्त स्वरों, संवादी तारों को झंकृत कर व्यथा से मुक्ति दिलाने वाला धन्वन्तरि यदि कोई है, तो वह आत्मसंयम है । यह लोक–परलोक को संवारता है, विवाद का अन्त करता है, जले अंगों पर बर्नोल (शीतल मरहम) का काम करता है ।

सर्वाणीन्द्रिय कर्माणि प्राण कर्माणि चापरे । आत्मसंयम योगाग्नौ जुह्वति ज्ञानदीपते–गीता ४/२७

सुख हमारी मानसिक भूमि का छायादार वृक्ष है । वह भौतिक साधनों और विनोद-प्रमोद में भले ही अपना स्मित प्रकट कर ले, किन्तु उसका सच्चा स्वरूप संयम और संयमी में ही दृष्टिगोचर होता है । संयम में विश्वास और श्रद्धा के मोती छिपे होते हैं । ये ही जीवन में सच्चे सुख की सुरसरिता प्रवाहित करते हैं । आज के व्यथित, अशांत और पीड़ित विश्व को सच्ची शांति और वास्तविक उन्नति का मर्म समझने के लिए संयम और सुख के इस रहस्य को समझना होगा ।

दो गीत

लेखक

डा० प्रकाश मनु

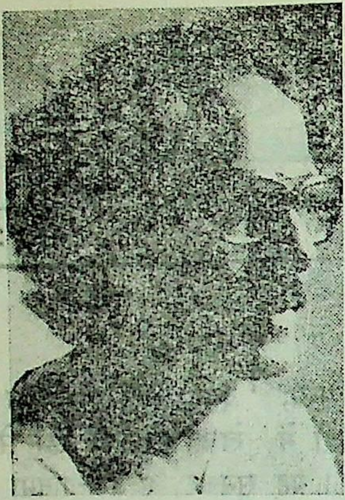

ज्योति-परस

माँ, तुम्हारे चरण से
ज्योति वह ऐसी झरी,
हो गई फिर से नई
हृदय की हर पंखुरी !

घूमती थी कल तलक
खोल तृष्णा के पलक,
टूट कर वह बह गई
प्यास रागों की हरी ।

छू लिया है आज तुमने
उठा हाथ स्नेह-सने,
यह अकिंचन बन गया
मूर्ति सोने की खरी !

सुमन विकसित हो गया
कलुष मुँह ढँक सो गया
शून्य जीवन-पंथ पर
गंध जो पावन धरी ।

गा उठा यह सरल अम्बर
लय-भरे ये नदी निर्झर,
रिक्त मन की बीन भी
आज अमृत रस-भरी

* स्वप्न-दीप

आज यदि मैं दीन इतना,
दग्ध और मलीन सपना--
मत करो उपहास मेरा !

ठोकरें नित खा रहा
वेदना मैं गा रहा,
दीन जीवन की अमा को
नियति की इस निरुपमा को-
कल छलेगा हास मेरा !

कल आँज लूँगा भोर को
रक्तिम उषा के छोर को,
आज जो भटका रहा है
विकल तन चटका रहा है-
सुख बनेगा दास मेरा !

स्याह मरु, निष्प्राण कलियाँ
चिर अभाव हैं हथकड़ियाँ,
देह जैसे काँपती छत
प्यार का पर, दूप अक्षत—
है जहाँ उल्लास मेरा !

२३०।३ निकट जिला रोजगार कार्यालय,
कुरुक्षेत्र – १३२११८ (हरियाणा)

समीक्षा-परक

दयाराम सतसई में रूप-वर्णन

आचार्य रघुनाथ भट्ट
एम० ए०

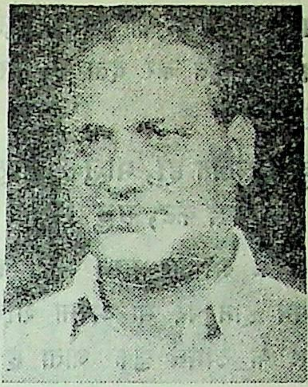

लेखक

[श्री दयारामजी गुजराती के सुप्रसिद्ध प्राचीन कवि हैं। आपने प्राचीन हिन्दी में भी रचनाएँ की हैं। आपकी हिन्दी रचनाओं पर शोध-ग्रन्थ लिखने का श्रेय डा० अम्बाशंकरजी नागर को है। उनकी 'दयाराम सतसई' के रूप-वर्णन पर लेखक ने इस लेख में प्रकाश डाला है। इसमें कल्पना और कला का सुन्दर समन्वय दृष्टव्य है।

– सम्पादक]

रूप-वर्णन, विशेषतः, भारतीय कविता का शृंगार रहा है। रीतिकालीन हिन्दी कविता का तो यह प्रमुख अंग बन गया था। शताधिक रूप-चित्रों से हिन्दी साहित्य की सभी विधाएँ अलंकृत हो गईं। मानवीय देह-सुषमा के कुशल चितेरे कवि एक-से एक बढ़कर रूप-चित्रों का सर्जन करने लगे। रूप में काम, सौन्दर्य और प्रेम का त्रिवेणी संगम होता है। इसलिए साहित्य में रूप का महत्व सनातन है।

दयाराम पुष्टिमार्गीय भक्त थे। पुष्टिमार्ग में भगवान् के रूप के प्रति आसक्ति को भी भक्ति का एक प्रकार माना गया है। दयाराम रूप की महिमा को पहचानते हैं। उसे गुण से भी बड़ा समझते हैं। गुण तो जानकार को ही घायल करता है, किन्तु रूप तो जानकार और अनजान, परिचित और अपरिचित, दोनों को चारों खाने चित्त कर देता है :—

लगत रूप बड़ गुनहु ते, कर देखत अनुमान।
करे जखमि गुनि जानि इक, रूप दुहु जांन अजांन॥

गुण को रूप का सहारा चाहिए। क्योंकि गुण में जब रूप का संयोग होता है, तब उसका आकर्षण बढ़ जाता है :—

कौन न पूजे ताकु फिरि, ब्राह्मण अरु हरिभक्त।
रूपवन्त सहु गुनि जिमी, तापें सब आसक्त॥

रूप के जादू का असर सर्वत्र दिखाई देता है। चतुर इसमें हलाक हो जाते हैं, मूढ़ घूमते-घामते रहते हैं। रूप-भूप के राज की रीति-नीति यही है :—

रूप भूप के राज में, यह महान अन्याय।
नांम न लें कों मूढ़ को, चातुर मारे जाय॥

दयाराम का रूप-वर्णन संक्षिप्त है, संयमित भी है। दयाराम ने मुँह, नेत्र, अधर का कुछ अधिक वर्णन किया है। शेष अंगों का उल्लेख मात्र है, जो उसके सौन्दर्य की एक गूढ़ झलक ही निवेदित करता है। इसलिए दयाराम का रूप-वर्णन नखशिख कोटि का न होकर केवल किन्हीं विशेष अंगों का वर्णन मात्र है।

रूप-भूप के गुप्तचर हैं नेत्र। नेत्र ही रूप का आनन्द लूटते हैं, वाणी उसे व्यक्त करने में असमर्थ है।

राज रूप-रसाल सुख, समुझत हैं मो नैंन।
पें न बैंन हें नैंन कों, नैंन नहीं हैं बेंन॥

रूप के बखान में वाणी छोटी पड़ती है, पर हृदय को जो जुबान दी गई होती, तो हृदय जरूर उसे कहे बिना नहीं रहता :—

कैसे प्यारे लगत हों, कहत न पावत पीय।
कहें दिखावत बांनि जो, दें दें होती हिय॥

ऐसे 'गूँगे केरी शर्करा' रूप की, दयाराम ने अपनी 'सतसई' में कुछ 'सद्य प्रीतिकरी' झलक दिखाने का सुन्दर प्रयास किया है।

दयाराम कहते हैं कि रूप का प्रभाव बड़ा तेज होता है । वह तो द्रष्टा की लज्जा, बुद्धि, बल और स्मृति-धृति को तिरोहित कर देता है, उसे मौन-मुग्ध बना देता है :—

ब्रिड़ सुधि बुधि लखत ही, माशुक आशुक जाय ।
अलि कठोर ज्यों बंस कट, मृदु सरोज मुरझाय ॥

—कमल के रूप पर मुग्ध भौंरा कठोर बांस को काटने में समर्थ होने पर भी अपनी शक्ति को भूलकर मुलायम कमल के सामने झुक जाता है ।

रूप के मैदान में नेत्र बड़े योद्धा हैं हथियारों से सज्ज । उनके पास सेना है, तलवार है, ढाल है । फिर भला उनके सामने टिकने की शक्ति किसमें होगी? स्वयं लाल ही जब बेहाल हैं :—

इच्छन सेल रू भौं असी, जनु गोलक गहि ढाल ।
राधे तेरे नैन नें, कीने लाल बेहाल ॥

नेत्र अद्भुत हैं । बिना हाथों लिपट जाते हैं । बिना बोले सब कुछ प्रकट कर देते हैं और बिना हथियार उठाये करारी चोट करते हैं :—

लिपटे पिय को पानि बिन, बानि बिनु कहि बात
अहो सलोने द्रग अली, करें शस्त्र बिनु घात ॥

आंखों की त्रिवेणी मुक्तिदाता है । इनके काले गोलक, सफेद अपांग और लाल डोरे विरह से तत्काल मुक्ति दिलाते हैं :—

ललना लोचन सित असित, गोलक डोरे लाल ।
तुलनाय—
रहिमन चोट सुतीर कै, चोट खाइ बचि जाइ ।
नैन-बान के चोट ते, धनवन्तरि न बचाइ ॥
यह त्रिबेनी मज्जन लही, मुक्ति विरह गोपाल ॥

रसलीन ने आँखों में, 'अमिय, हलाहल, मद' का निवास माना है । दयाराम ने आँखों में एक साथ अमृत, जहर को तो माना ही है, साथ ही साथ कहा है—नेत्र चंचल हैं, कृपालु हैं, प्रेमी हैं, बेधक हैं । वे मान से करारे हैं और लज्जा से अनवत हैं ।

अमिबिध रस रति तरलता, कृपा त्रपा रुचि मौन ।
इत्यादिक गुण सदन श्री, लोचन उपमा कौन ॥

दयाराम अधर-रस के पारखी हैं । अधर-रस के पान का प्रभाव ही अनूठा है । समीपस्थ सफेद नासा मोती भी अधरों के राग से रक्त हो जाता है फिर पान का तो कहना ही क्या ।

प्यारी तेरों अधर रस, क्यों बिसरें गोपाल ।
बेंसरे निरमल मुक्त हूँ, जिहि परसत भो लाल ॥

मुख तो चन्द्रमा है । उसकी आभा संपूर्ण उत्फुल्ल है । इसलिए दयाराम अपनी नायिका को सलाह देते हैं :—

श्यामा तू जिन जाइ सर, बिन घूँघट पट द्योस ।
परिहैं तेरों बदन लखि, भौंर कोक मुख सोस ॥

—देखिए तुलना के लिए :—

अमिय हलाहल मद भरे, स्वेत स्याम रतनार ।
जियत मरत झुकि झुकि परत, जिहि चितवत इक बार
— अंगदर्पण

—श्यामा, घूँघट डाले बिना पनघट मत जाना । अन्यथा बिचारे भ्रमर और चक्रवाक उदास हो जाएँगे । मुख को चन्द्रमा हो समझ लेंगे ।

इन अंगों के अतिरिक्त अन्य अंगों के सौन्दर्य की झलक मात्र दयाराम ने दी है । नायिका का सारा देह-सौन्दर्य एक ऐसा भू-भाग है, जिसमें नाग हैं, भ्रमर हैं, सिंह हैं और ऊँचे-ऊँचे पर्वत हैं तो अमृत तुल्य जल से भरे पूरे कूप भी हैं । यहाँ भय भी है, आनन्द भी है । नायिका के रूप-सौन्दर्य पर मुग्ध प्रेमी कहता है—तेरी नाग-वेणी और भृकुटी-भ्रमर मुझे डँसते हैं । कटि-सिंह मुझे डराता है । कुच-पर्वतों की ऊँचाई से मन उड़ने लगता है । चिबुक-कूप के पान के लिए ज्यों ही गया त्यों ही गिर पड़ा अब उभारकर अभय दान दो :—

डस्यों कस्यों हरि भ्रमित मन, हरिसु धस्यो अमिपान
फस्यों चिबुक कुप थकि प्रिया, ताहि अभय दे दान ॥

—वेणी नाग ने मुझे डँस लिया, भृकुटी-भौंरे ने कस कर पकड़ रखा, कुच-पर्वतों ने मेरा मन डुला दिया और मैं अमृत-पान के लिए ज्यों ही चला कि चिबुक-गाड़ में थककर गिर पड़ा, अब तुम्हीं उभारो ।

शरीर के नौ अंग अधिक प्रसिद्ध हैं । इन सबको दयाराम ने एक साथ लेकर संपूर्ण शरीर-सुषमा को व्यक्त करने का प्रयास किया है :—

हरि केंसो मुख नयन हरि, कच, कुच कटि कर पाय।
हरि सुबरन गति बेनि छब, राधा हरि सुखदाय ॥

मुख चन्द्रमा के समान है । आँखें मृगनेत्र जैसी है । भौंर जैसे काले बाल हैं। पर्वत-से उत्तुंग कुच, सिंह सदृशी कृश कटि, कमल जैसे कोमल हाथ-पैर, रंग सोने-सा और चोटी नागिन जैसी तथा गति (चाल) गज की-सी है । ये नौ ही शरीर-शोभा के निकष हैं। रूप में कुछ अंग तो आशिक भी हैं, और माशूक भी हैं :—

कांत कोंन तें कहूँ बिबुध, निगमागम कूँ बाँच ।
श्री राधा के रूप में, आशिक माशुक पाँच ।।

नेत्र रूपा कमल माशूक हैं और भृकुटी रूपा भ्रमर आशिक है । अधर रूपा बिम्बाफल माशूक है और नासिका रूपा शुक आशिक है । कुच रूपा पर्वत के माशूक पर कटि रूपा सिंह आशिक है । मुख रूपी चन्द्रमा के माशूक पर पेट रूपी कुमुद आशिक है । जंघा रूपा कदली पर गति रूपी हाथी आशिक है । प्रेमी प्रेमिकाओं के ये युग्म शरीर में ही विद्यमान हैं। आँखों के सौन्दर्य पर भृकुटी मुग्ध है तो अधरों की ललाई पर नाक लट्टू । कटि की कृशता को कुचों की पृथुता पर गौरव है । मुख को पेट का अभिमान है और गति जंघा पर न्योछावर है ।

दयाराम ने रूप-वर्णन में आभूषणों को महत्व नहीं दिया है । प्रेमी के नजदीक तो वे निरर्थक हैं। क्योंकि सौन्दर्य को ढाँक देते हैं । हाँ दुष्ट नजरों से सौंदर्य को बचाते हैं :—

मिलन समय मण्डन कहा, सु तन ढपें लगि साल ।
फिरि आछें वपु वरम लों, तनक दूर जब लाल ।।

रंग-विरंगी वस्त्रों से विभूषित कृष्ण की एक छबि दर्शनीय है :—

कुलहि लाल पित उपरना, मिल तनु नंदकुमार ।
प्रेमलपटि अनुराग सिर, मांनु मुरति सिंगार ।।

सच्चा बादशाह

स्वामी रामतीर्थ अमेरिका गए । अमेरिका के राष्ट्राध्यक्ष उनसे मिलने आए । आते ही उन्होंने पूछा, स्वामीजी, आप अपने को बादशाह कहते हैं यह कैसे ? आपके पास तो कुछ भी नहीं है । जो कुछ है वह थोड़ा ही है । फिर आप बादशाह कैसे हुए, यह समझ में नहीं आता ।''

रामतीर्थ ने कहा, ''मेरे पास कुछ नहीं है, इसलिए तो मैं बादशाह हूँ । जो पकड़ता है वह गरीब होता है । जो गरीब होता है वह सब चीजों को बटोरना चाहता है, इकट्ठा करना चाहता है । मैं गरीब नहीं हूँ । बादशाह हूँ । मुझे किसी की जरूरत नहीं । सारी दुनिया मेरी है । मैं क्या बटोरूँ, कहाँ से बटोरूँ और किसको बटोरूँ ? समूची दुनिया ही मेरी है । गरीब बटोरने का प्रयत्न करता है । आप सब बटोरनेवाले हैं , गरीब हैं, दरिद्र हैं । सच्चा बादशाह मैं हूँ जो कुछ भी मेरे पास नहीं है । इसलिए मैं बादशाह हूँ ।''

कृष्ण के श्यामल शरीर पर पीला उपरना और लाल कुल्ला ऐसा लगता है मानो मूर्तिमान शृंगार ने प्रेम में लिपटकर अनुराग को सिर पर धारण किया हो। श्याम, पीत और लाल रंग के सम्मिश्रण का सुन्दर चित्र इन पंक्तियों में उभरा है । ऐसा ही एक चित्र बिहारी ने भी दिया है ।

सोहत ओढ़े पीत पट, श्याम सलोने गात ।
मनौ नील मनि सैल पर, आतप परयो प्रभात ॥

निष्कर्षतः, दयाराम का रूप-वर्णन संक्षिप्त और संयमित है । रूप के प्रभाव का ही अधिकतर वर्णन हुआ है । उसमें भी आँखों का वर्णन मार्मिक और सुरुचिपूर्ण है ।

आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज,
दहेगाम, जिला–अहमदाबाद.

कहानी :

मिलन

डॉ॰ सुशीला गुप्ता

एम. ए., पी-एच. डी.

[प्रस्तुत कहानी का अनुवाद राजस्थानी भाषा से हुआ है । इसमें मिलन जैसे भावुक, सहृदय और सनिष्ठ युवक एवं निशा जैसी विवेकी, कृतज्ञ युवती के मनोहर प्रेम की सुखान्त-सुदृढ़ परिणति स्पृहणीय और पठनीय है —सम्पादक]

रात के वक्त भी निशा की आँखों में नींद नहीं थी । वह रह-रह कर बिस्तर पर करवटें बदलती रही । बेड-स्विच आनकिया और बैठ गई एक पुरानी पत्रिका खोलकर । पृष्ठ-दर-पृष्ठ उलटती रही, किन्तु पढ़ने में मन नहीं लगा ।

फिर अचानक उसे याद आया । अरे ! कल कॉलिज में मिलन का पत्र आया था । उसके पत्र का उत्तर देना है । बैठ गई टेबल के पास । फाइल में से पत्र निकाला । पत्र का मजमून था-'निशा तू अपना ट्रांसफर यहां करवा ले तो ठीक रहे । मैं ऊब गया हूँ । कितना अच्छा हो कि तू और मैं एक साथ इस जीवन-नौका को खेवें । पर करूँ क्या ? मेरी नैया-खेवैया तो मुझसे छह सौ किलोमीटर दूर बैठा है'—पत्र पढ़ते ही उसे गुदगुदी, सुरसुराहट-सी हुई । सोचा, मिलन भी कैसा पागल है । ट्रांसफर मैं किस तरह करवा सकती हूँ ? शिक्षा-विभाग के डायरेक्टर मेरे कौन-से रिश्तेदार हैं, जो मेरे कहने से जहाँ चाहूँ भेज दें ! और फिर यदि किसी तरह वे दया कर काम पार लगा भी दें तो माँ-बाबूजी और छोटी बहन का क्या होगा ? इन्हीं विचारों में डूबे हुए उसका सिर चकराने लगा ।

एक ओर तो उसे कर्तव्य की बलिवेदी पर बलिदान की पुकार थी, तो दूसरी ओर मिलन के प्रेम की कसौटी पर उसे खरा उतरना था । यह वही मिलन था, जिसने उसे कदम-कदम पर सहायता की थी । अन्यथा आज उसके जीवन की बरबादी की क्या सीमा थी । कॉलेज की फीस, किताबों की खरीद, कपड़े और ड्रेस, सब कुछ मिलन ही ने तो दिया था उसे । सबसे बढ़कर प्यार का वह सागर ही उसे दिया, जिसमें वह कई बार गोते लगा चुकी थी ।

बूढ़े मां-बाप के लिए हजारों रुपए लगाने वाला मिलन । करता भी क्यों नहीं, उसे मुझसे प्यार जो था ।

वह चाहता तो जबरदस्ती कोर्ट-मैरिज कर मुझे ले जा सकता था । लेकिन नहीं, उसने कहा-निशा ! बाबूजी हमारा गँठबंधन बंधवाएँगे तब ही 'गाजते-बाजते' दुल्हन बना कर तुझे ले जाऊँगा । पर उसे कहाँ पता है कि इस घर के लोग कितने स्वार्थी हैं । बेटा कहने मात्र से बेटा समझते थोड़े ही हैं ।

मुझे रह-रहकर बीती बातें याद आने लगीं । जब मैं और मिलन बनारस यूनिवर्सिटी में साथ-साथ पढ़ते थे । मिलन के पिताजी एक बहुत बड़े उद्योगपति थे । माँ का साया तो मिलन डेढ़ वर्ष का था तभी उठ चुका था । पिताजी ने ही उसे माँ का स्नेह दिया ।

बुरे दिन आए तो पिताजी भी मिलन को बीस वर्ष का छोड़ कर स्वर्ग सिधार गए । मिलन ने पिताजी की स्टील फैक्टरी सम्हाल ली, किन्तु एक तो जवानी, दूसरा अनुभव से रिक्त होने के कारण रोजी को घाटा होने लगा । आखिर हार कर मिलन ने नियोजन-कार्यालय में नौकरी के लिए नाम लिखवाया । कुछ दिनों बाद उसे सहायक अभियन्ता का पद मिल गया । अपने प्रेम-व्यवहार और प्रतिभा के बल पर वह सब

कर्मचारियों का विश्वासपात्र बन गया । पाँच साल में तो उसका प्रमोशन भी हो गया । वह सहायक अभियंता से अधिशाषी अभियंता हो गया ।

इस बीच मेरे बाबूजी के बायें अंग में लकवा हो गया । मिलन ने दिल लगाकर उसे ठीक करवाने की कोशिश की , पर कोई फायदा नहीं हुआ । बायां हाथ और पाँव, दोनों सुन्न पड़ गए । मां पर तो जैसे मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा हो । वह अन्यमनस्क-सी रहने लगी और कुछ दिनों में ही हाई ब्लड-प्रेशर की मरीज हो गईं ।

रह गई अकेली मैं । सुनसान में भटकती, घूमती फिरती, जिन्दा लाश ! मिलन से मेरा यह प्रस्तरसम दुःख सहा नहीं गया । उसने डायरेक्टर सिन्हा से कह-सुनकर यहीं इन्टर कालिज में सायंस की अध्यापिका नियुक्त करा दिया ।

डग-मग हुआ घर का ढांचा एक बार फिर सम्भल गया । बाबूजी मिलन को अपना बेटा मानने लगे । कहते, "बेटा मिलन ! मेरी तीन सन्तानें हैं, तू मेरा बेटा है न ?"

मिलन हमेशा यही कहता, "हाँ, बाबूजी आप मेरे धरम के पिताजी हैं ।"

क्या कुछ नहीं किया मिलन ने इस परिवार की खातिर । तन, मन, धन सब कुछ तो कुरबान किया है उसने । अब वह सिर्फ एक याचक रह गया था । जिसकी याचना सुनने की सामर्थ्य इन बूढ़ों में नहीं ।

'निशा, ओ निशा ! सुना नहीं ? आज तू अच्छी तरह से तैयार हो जाएगी । वे लोग दस बजे की गाड़ी से आ रहे हैं-मां बोली ।

निशा ने कोई जवाब नहीं दिया ।

मां निशा को जगाने हेतु उसके कमरे की ओर गई । वह कम्बल ओढ़े मेज पर झुकी हुई कुछ लिख रही थी । माँ को देख उसपर पत्रिका डाल दी ।

'अरे यह क्या लिख रही थी ?'

'मां....मां आज का लेशन तैयार कर रही थी पढ़ाना है न ! —निशा ने कहा ।

'अरे, तू भूल गई ? आज कालेज से सी० एल० ले लो । आज आगरा वाले आ रहे हैं ।' निशा के हृदय पर जैसे मन-भर का पत्थर गिर गया हो । उसने हकलाते-हकलाते कहा, "माँ...माँ, आज मुझे छुट्टी नहीं मिल सकती । हमारी मिस दूबे भी आज छुट्टी पर हैं, बायोलोजी मुझे ही पढ़ाना है और फिर बच्चों की परीक्षाएँ भी नज़दीक आ चुकी हैं ।"

मां ने बीच में कहा, "मैंने कह दिया न, आज तू कॉलेज नहीं जाएगी । थोड़ी-बहुत भी लाज-शर्म नहीं । जब देखो तब मूर्ति बनी बैठी रहेगी या कुछ लिखती रहेगी । क्या लिखती है अपने निकम्मे मिलन को ? उस सत्यनाशक ने मेरी गृहस्थी ही चौपट कर दी । कहीं भी रिश्ते की बात करें, तो वह नासपिटा दीवार बना खड़ा रहता है । न जाने इसे कैसे पता लग जाता है ।"

"तूं पत्र लिखती होगी न उसे ?"

"मां, बहुत हो चुका, अब जाने भी दो,..जब तुम्हारे भूख से बिलखते हुए परिवारके लिए पेट का गढ़ा भरने की जरूरत थी तब तो तुमने उसे बेटा कहा और आज तुम्हें रोटी के दो टुकड़े नसीब होने लगे तब वह नासपिटा, गृहस्थी चौपट करने वाला और न जाने क्या-क्या हो गया । तुम्हें यदि मुझे घर में रखना हो, तो उसके लिए एक भी अपशब्द कहने की आवश्यकता नहीं । मेरे खून की एक-एक बूँद उनके अहसानों की निशानी है । वह मेरा है और मैं उसकी ।"

इतने में ही पिताजी बरांडे में से गरजे, "अरे ! चुप रहती है या नहीं । इन सवाल-जवाबों के लिए ही तुझे पढ़ाया-लिखाया है ?"

कॉलबेल बजी । छोटी बहन रानी कमरे में आई, और बोली, 'दीदी....दीदी चुप रहो । देखो, मिलन भैया आए हैं ।' निशा तो अवाक् सी द्वार की ओर देखती ही रह गई ।

मिलन बरांडे में बैठे बाबूजी के पाँव लगा । फिर आंगन में आई मां के चरण छुए । वह जैसे ही हमेशा की तरह निशा के कमरे की ओर बढ़ने लगा

कि माँ बोली, "बेटा, निशा से फिर मिल लेना, अभी तू रानी के साथ स्टेशन चला जा । आगरा वाले निशा को देखनेके लिए आ रहे हैं । हाँ, ध्यान रखना । थोड़े रुपयों का इंतजाम भी रखना । बड़ घर के हैं न ।"

निशा सज-संवर कर, आए हुए लोगों से घिरी हुई बैठी है । तरह-तरह सवालों की उसपर बौछार हो रही है ।

आने वाली महिला बोली, "लड़की है तो अच्छी, पर है थोड़ी सीधी-सादी ! सोसायटी-मूव करने में कुछ समय लगेगा । खैर...ठीक है । धीरे-धीरे सब सीख जाएगी । हाँ देखो, रिश्ता हमें स्वीकार है । लड़की भी चला लेंगे, लेकिन टीके (तिलक) में बीस हजार देना होगा । क्यों ठीक है न ?" उसने अपने पति की ओर देखा । पति बोला, "क्यों की क्या बात है ? इतना तो सेवादास जी करेंगे ही । क्या ये लोग जानते नहीं कि इंजीनियर का टीका इससे क्या कम हो सकता है ?"

पास बैठा मिलन 'इन्जीनियर' नाम से चौंका । पूछ बैठा-"क्यों भाई, तू कौन से डिपार्टमेन्ट में है ?"

"...जी ...जी मैं वाटर वर्क्स में हूँ ।"

"-अच्छा... ...अच्छा, बहुत अच्छा आगरा कैंट में है न तेरा कार्यालय ?"

'हाँ जी' विमल ने संकोच से कहा ।

'-फिर तो बहुत अच्छी बात है । मैं उसी विभाग में हूँ ।' विमल पर अच्छी बीती । वह सिमट-सा गया । उसके माँ-बाप एक-दूसरे का मुँह ताकने लगे । विमल की गर्दन नीचे झुकी तो फिर ऊपर नहीं उठ सकी ।

मिलन ने आव देखा न ताव । झट से हीरे की अंगूठी निशा की कोमल उँगली में पहना दी । जेब में से हार निकालकर निशा को देते हुए बोला, 'ले निशा, ये हार तू मुझे पहना दे । अब तू चिंता मत कर, तेरा पति एक इंजीनियर ही चाहिए था न ?'

निशा के मां-बाप दोनों आश्चर्य से एक-दूसरे को देखते रहे ।

मिलन और निशा ने माँ-बाबूजी के पाँव छुए । दोनों के मुँह से यकायक निकल पड़ा, "जोड़ी सलामत-जोड़ी सलामत रहे ।"

आए हुए मेहमान उसी वक्त बोरिया-बिस्तर बाँध कर जानेके लिए तैयार हुए ।

अनुवादक : सलीम शेख

५६-५, सोमाजी की चाली, चमनपुरा,
अहमदाबाद-३८००१६.

दृढ़ता पूर्वक नियम निर्वाह

वह कण्ट्रोल और राशनिंग का समय था । बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन उत्तर प्रदेश विधान सभा के अध्यक्ष थे । उन दिनों की व्यवस्था के अनुसार एक बार १५ दिन का राशन एक साथ मिला करता था ।

तभी एक दिन टण्डन जी को सूचना मिली कि हवाई जहाज से बिहार से दिल्ली जाते हुए उनके चार मित्र लखनऊ रुकेंगे और दोपहर का भोजन भी उनके साथ करेंगे ? उन्होंने तुरन्त अपने नौकर को चारों व्यक्तियों के लिए भोजन की व्यवस्था करने को कहा ? तो उसने बताया कि घर में आटा-घी नहीं है, राशन अभी दो दिन बाद मिलेगा । तभी टण्डन जी बोले, "बगीचे में आलू तो होंगे न"

नौकर ने कहा-हाँ जी । सो उन्होंने कहा, "आलू उबालकर छील ले आर नमक-काली मिर्च के साथ अतिथियों को परोस दे ।"

निर्धारित समय पर अतिथि आए । टण्डन जी ने कहा, "दोस्तो, आज तो अपने घर यही भोजन है । राशनिंग का जमाना है । इसलिए व्यवस्था और कुछ नहीं हो पाई ।"

सबने निःसकोच भोजन किया । क्योंकि टण्डन जी की दृढ़ नियम-निष्ठा से वे परिचित थे ही । व्यावहारिक नियम-निर्वाह की ऐसी दृढ़ता आज भी कितनी आवश्यक है ।

श्री दुर्गाशंकर त्रिवेदी
कोटा (राज०)

माँ

श्री राजेश कुमार मिश्र

बी०ए०, एल०-एल०बी०

['माँ' बड़ा मीठा और प्यारा शब्द है। उसकी महत्ता और मधुरता को श्री मिश्रजी ने चलते-फिरते प्रमाणों तथा प्राचीन उदाहरण से परिपुष्ट करके माँ की वन्दनीयता में चमक पैदा कर दी है। पढ़िए और माँ का सम्मान करना सीखिए।
— सम्पादक]

माँ एक करुणामयी सागर है, वत्सलताकी मूर्ति है। माँ शब्द ही माता के पवित्र भाव, तरलता, ममता, श्रद्धा और करुणा का आभास दिलाता है, लेकिन ये समस्त वाक्यांश माँ के उस पवित्र क्षीरोज्ज्वल कल्पना रूपी मूर्ति को पूर्ण साकार करने में असफल रहे हैं। वस्तुतः, ये सभी वाक्यांश जो माँ को सम्बोधित कर लिखे गए हैं केवल माँ की पवित्रता, वत्सलता, करुणा, क्षमाशीलता और स्नेहिल स्निग्धता से परिपूर्ण आकार का झीना-सा आभास भर दिलाते हैं। ये माँ शब्द के कोमल और अछूते भाव की गरिमा को व्यक्त करना शब्दों के सामर्थ्य से बाहर है। अतः, हम कह सकते हैं कि इन सम्बोधनों एवं गुणों की सहायता से माँ के इस ममतालु आकार का आभास करने हेतु थोड़ी-सी सहायता भर मिल पाती है।

ममता-मूर्ति :

माँ कोई देखने की वस्तु नहीं है। उसकी ममता द्वारा हम उसे पहचानते हैं, जिस प्रकार कुछ बूँद द्वारा सागर का परिचय प्राप्त होता है। उसी प्रकार माता के कुछ अंश का अनुभव मान मातृत्व को समझना चाहिए।

माँ संसार की सबसे बड़ी चित्रकार होती है। माँ के द्वारा ही बालक के भविष्य का सही चित्र खींचा जाता है। संसार के समस्त प्राणियों के समस्त सुख माता के नवजात शिशु को प्रथम मुस्कान से प्राप्त सुखों के सामने फीके पड़ जाते हैं।

अब जरा "पद्मपुराण" में देखिए। "भगवान् राम" का गुप्तचर प्रजा का कुशल-मंगल ज्ञात करने हेतु विचरण कर रहा है। वह देखता है कि एक युवती एक भवन में बैठी अपने बच्चे को स्तनपान करा रही है। शिशु किसी कारणवश स्तन को बार-बार मुख में रख कर छोड़ दे रहा है। इसपर माँ बड़े आग्रह भरे स्वर में कहती है कि मेरा मीठा दूध पी ले मेरे बच्चे। आज तुझे छककर दूध पिलाने का मेरा इरादा है। क्योंकि तुझे नहीं मालूम कि हम रामराज्य में निवास कर रहे हैं। हमारी मुक्ति निश्चित है और अब न मुझे माँ के रूप में जन्मना है और न ही तुझे बच्चे के रूप में यह कैसा दुर्भाग्य है कि राम के राज्य में माँ का दूध दुबारा किसी को नहीं प्राप्त है। इसलिए इस माँ के दूध को तू छककर पी ले मेरे बच्चे।" यह कहते, कहते उसका कंठावरोध हो जाता है।

महिमामयी :

माँ की कोई जाति नहीं होती है। माँ माँ ही होती है चाहे वह ब्राह्मण की हो या शूद्र की, नेपाली की हो या बंगाली की, पंजाबी हो या मुस्लिम हो, चाहे मेरी माँ हो या उसकी माँ। सभी माताएँ एक हैं। माँ की विराट ममता से परिपूर्ण हृदय का आभास हमें यहाँ भी मिलता है। माँ विश्रुता का आठवाँ पुत्र नमितनेत्र विनत शीश सम्राट के सामने प्रस्तुत है। तभी माँ विश्रुता सामने आती है और अपने आठवें पुत्र के प्राणों की भीख माँगती है। इसपर सम्राट सहित सभी को आश्चर्य होता है।

क्या वे सात तुम्हारे पुत्र नहीं थे, जो अभी मारे गए हैं। तभी माता कहती है कि वह माँ की ममता का गौरव है। उन्होंने मेरा गौरव पाया है। धन्य, कृतार्थ और अनुग्रहीत हुआ मेरा पय। उन्होंने सार्थकता प्रदान की मेरे मातृत्व को। उनसे मेरी ममता अर्थवती हुई। आगे वह आशंका व्यक्त करती है कि वह अभी छोटा है और कोमल होने के कारण कहीं सत्य मार्ग से विचलित न हो जाए। माँ की इस अनन्त महिमा के सामने इस विद्रोही राजा का तमतमाया हुआ चेहरा हिम-सा शीतल, हतप्रभ और निस्तेज हो गया।

अयोध्याकाण्ड में कौशल्या और भरत के बीच वार्ता का भाव देखिए। माता कौशल्या भरत से कहती हैं।

> राम लखन सिय बनहि सिधाये,
> गयउ न संग न प्रान पठाये।
> यहु सबु भा इन्ह अखियन आगे,
> तउ न तजा तनु जीव अभागे।
> मोहि न लाज निज नेह निहारी,
> राम सरिस सुत मैं महतारी॥

राम, लक्ष्मण और सीता वन को चले गए। न तो माता कौशल्या स्वयं गई और न अपने प्राणों को ही भेजा। यह सब इन्हीं आँखों के सामने हुआ। अर्थात् यह सब देखते हुए भी पापी जीव अपने सुख की पराकाष्ठा पर नहीं पहुँच सका मुझे लज्जा तक न आई। क्योंकि मैं राम की और कोई सम्बन्धी नहीं, बल्कि माँ थी।

कष्ट-सहिष्णुता :

अब देखिए तो एक बालक का मनोभाव। एक दिन एक बालक ने अपनी माँ से कह दिया कि माँ अब मैं बड़ा हो गया हूँ और मैं तुम्हारे दूध से उऋण होना चाहता हूँ। माँ ने हँसकर कहा, "बेटा, तू मेरे पास सो, मैं तुझे उऋण होने का उपाय बताऊँगी। रात्रि के समय माँ और बेटे में कुछ इधर-उधर की बातें होने लगी। तत्पश्चात् बेटा सोने लगा। माँ ने सिरहाने रखे लोटे से पानी का एक छींटा उसके मुँह पर दिया। बेटा मुस्करा कर रह गया। फिर जैसे ही सोने को हुआ वैसे ही माँ ने फिर पानी का छींटा दिया। यही सिलसिला कई बार चला, तो बालक झुँझला गया और बोला, "माँ सोने दोगी या नहीं"। इसपर माँ बोली, "बेटा, माँ के दूध से उऋण होने का हौसला क्या पस्त हो गया, तू जाड़े की कड़कड़ाती रातों में बिस्तर खराब कर दिया करता, तो तुझे सूखे वाले भाग पर सुलाकर स्वयं गीलेवाले भाग में सोती थी। यह सिलसिला एक दिन नहीं कई वर्षों तक चला है। तू तो एक ही रात में बिगड़ गया, इसपर लड़का बहुत शर्मिंदा हुआ और बोला, 'माँ मुझे माफ कर दो, यह मेरी हिमाकत थी। माँ के दूध से उऋण होना सम्भव नहीं है।"

जरा इधर तो देखिए, माता यशोदा भगवान् कृष्ण की छोटी-मोटी शरारतों से सहज ही आनन्द लेती थीं। यह छबि भी हमारे हृदय में व्याप्त है। कृष्ण ऊपर छीके पर लटके हुए मटके में से मक्खन खाने के लिए गोपों को बैठा कर उनके ऊपर चढ़ कर मक्खन निकाल रहे हैं। मटका गिर जाता है और जब माता यशोदा कृष्ण को डाँटती हैं, तब वे कहते हैं, '**मैया मैं नहि माखन खायो। ख्याल परे ये सखा सबै मिलि मेरे मुख लपटायो**॥ कृष्ण की इस चालाकी भरे उत्तर पर माता यशोदा मुस्करा कर रह जाती हैं।

प्रारम्भ से ही माँ की भाव-भंगिमा की रूपरेखा मस्तिष्क में विद्यमान रहती हैं। माँ की सहनशीलता की तुलना नहीं की जा सकती। क्या बालक को माँ के समान कोई पाल सकता है, उससे निर्मित कष्टों को झेल सकता है, माँ के निश्छल प्रेम का प्रतिदान कर सकता है? उसी तरह माँ में समाहित गुण माँ से ही प्राप्त हो पाते हैं। उसी प्रकार माँ के द्वारा उठाए गए कष्टों का अनुसरण भी किसी के बस की बात नहीं है। माता के वात्सल्य के सर्वविजयी सर्वथा तन्मय कर देने वाले स्नेह का वर्णन नहीं किया जा सकता।

आज कोई भी वीर सिपाही अपनी कुर्बानी देश के लिए करता है, तो उसकी माँ को एक सम्मान क्यों देते हैं, पैर क्यों छूते हैं। इसलिए नहीं कि वह केवल उसकी माँ थी जो शहीद हो गया। हर माँ हर व्यक्ति की

माँ है । माँ किसी व्यक्ति-विशेष की नहीं होती । माता का हृदय विशाल होता है । उसके तो जितने भी गुण गिने जाएँ, कम ही लगेंगे । यदि किसी का लड़का कोई ऐसी हरकत करे जो वास्तव में असहनीय हो तो भी हम पाएँगे कि माता ने उसे क्षमा कर दिया है । माँ में व्याप्त उस अछूते प्रेम को स्वीकार करने से कौन इन्कार कर सकता है । संसार में ऐसे कितने ही लोग मिलेंगे जो शान्ति की खोज में संसार त्याग देते हैं । सभी माया-मोह से बिदाई ले लेते हैं, इतना सब करने के पश्चात् भी क्या उन्हें शान्ति नसीब होती है । यह कहा नहीं जा सकता है, जितनी शान्ति माँ के चरणों में है उतनी शान्ति संसार में कहीं नहीं है ।

डेनमार्क के एक साहित्यकार महिला को १९२४ में नोबल पुरस्कार मिला । उसके साक्षात्कार एवं उसके विचार जानने के उत्सुक विश्व के सभी बड़े पत्रकार पहुँचे, तब उस समय वे अपने बच्चे के साथ मग्न थीं । थोड़ी देर बाद वे बाहर आई और कहा कि इस समय मेरा बच्चा मुझे नहीं छोड़ रहा है । इस साक्षात्कार से महत्वपूर्ण है कि मैं उसकी जिद को दुलार दूँ । अत., मैं क्षमा चाहती हूँ ।

मार नहीं प्यार :

अभी कुछ वर्ष पहले की बात है कि मेरे कालेज के पास ही एक परिवार रहता था । उनका लड़का कुछ अपेक्षाकृत अधिक शरारती था । एक दिन बात ही बात में उसने अपने पड़ोसी के बच्चे को इतना पीटा कि उसका सर फट गया । हम लोग समय पर पहुँच गए और अस्पताल ले गए । शाम को जब उस मारने वाले के पिता जी ने सुना, तो अपने पुत्र को लगे मारने । यहाँ तक कि मार खाते-खाते जब वह गिर पड़ा तब चिल्लाहट सुनकर जिस लड़के को उसने मारा था उसकी माँ आई और दौड़कर लड़के के ऊपर गिर गई । हम सभी आश्चर्यचकित थे कि इन्हींके बच्चे को तो इसने अभी मारा था । तब ये इसे बचाने क्यों आई ? उसके पिता जी ने मारना बन्द कर दिया । उस माता ने उनसे कहा कि ठीक है कि इसने मेरे बच्चे को मारा, लेकिन इसका अर्थ यह तो नहीं कि आप इसे इतना मारें । क्या मारने से बच्चा ठीक हो जाएगा । मैं जैसे उसकी माँ हूँ उसी तरह इसकी भी माँ के समान हूँ । गलती की सजा मार नहीं बल्कि प्यार है ।

महत्ता :

दिनकर जी ने तो माँ की महत्ता को आयु से अपने काव्य उर्वशी में व्यक्त करवाया है-आयु अपनी तीसरी माता औशीनरी से कहता है, 'मैंने अपने जीवन में जो कुछ पाया है, वह माँ के सबल हृदय से मिली ममता ही है । एक माँ ने मुझे जन्म दिया है, तो दूसरी ने अपनी छाती से लगा कर अपनी छाती के शीतल अमृत को पिला कर बड़ा किया है और अब मैं यहाँ पर राजसिंहासन की खोज में नहीं आया तीसरी माता औशीनरी के चरणों में आया हूँ । औशीनरी यद्यपि सांसारिक बन्धनों में आयु की सौतेली माँ लगती है, लेकिन माँ, माँ ही होती है । वह कहती है, 'आ-बेटा, मेरी छाती से लग जा, मैं तुझे अपनी छाती से लगाकर अपने प्राणों को ठंडा कर लूँ, मैं तुम्हें कितने सुख और उमंग से पालती यदि तू मुझे कहीं बचपन में मिला होता ।

मातृत्व की यह सीधी-सादी लकीर रामराज्य से लेकर आयु तक ज्यों की त्यों है ।

ममता का सिन्धु अथाह है
कोई अगस्त
कोई कुम्भज
उसे सोख नहीं सकता । । रघुवंश ।

५५५/बी, ममफोर्डगंज,
इलाहाबाद-२११००९

इन्टरव्यू:

आपका परिचय ?
'आश्वस्त पीढ़ी'   उपलब्धियाँ ?
दौलत खाना ?   'हलवापुरी'
'सफलता की सीढ़ी'   भावी कार्य क्रम
गतिविधियाँ ?   'नेतागीरी'
'चमचागीरी'   –सैन्नी अशेष
रा. उ. वि., सांगला जि. किन्नौर (हि.प्र.) १९२१०६

प्रत्येक वस्तु का उज्ज्वल पक्ष देखिए

श्री श्रीकृष्ण अग्रवाल
बी० ए०

[मनुष्य-स्वभाव बड़ा विचित्र है वह दूसरों के दोष देखकर स्वयं दूषित बन जाता है। श्री अग्रवालजी ने उज्ज्वल का देखने की बात कहकर हमें प्रियतर बनाना चाहा है। पढ़िए और सोचिए कि आप कहां हैं, कहाँ जाना है ? — सम्पादक]

इस संसार की रचना दो विरोधी तत्वों के आधार पर हुई है। जड़-चेतन, सुख-दुःख, जय-पराजय, भय-अभय, जीवन-मृत्यु आदि जो द्वन्द्व हैं, वे इस प्रकृति-नटी के कार्यकलापके लिए आवश्यक और अनिवार्य हैं। प्रत्येक शिव के पीछे कोई अशिव है। दिन के बाद रात और फिर दिन, इस प्रकार यह संसार चलता रहता है। संसार का अर्थ ही है जो सम्यक् प्रकार से चलता रहे—कभी रुके नहीं। धूप और छाँह रोज के खेल हैं। हमें इन द्वन्द्वों में से एक को चुनना है और इस चुनाव में हमें पूर्ण स्वतन्त्रता है। भगवान् ने हमें विवेक देकर इस संसार में भेजा है, जिससे हम इनमें से एक को चुन सकें। हम चाहें तो शिव, चेतन, मंगल को चुन सकते हैं।

जड़ चेतन गुन दोष मय, विश्व कीन्ह करतार
संत हंस गुन गहहिं पय, परिहरि वारि-विकार ॥

ब्रह्माजी के मन में जब सृष्टि उत्पन्न करने की इच्छा हुई तब अचानक उनके मन में आया कि एक ऐसा आलोचक गढ़ना चाहिए, जो उनकी कृति की समालोचना कर सके। उन्होंने एक सम्पादक जैसा तेज आलोचक गढ़ा और उसको अधिकार दिया कि वह उनकी रचना को जाँच करे। ब्रह्माजी एक-एक चीज बनाते और आलोचक अपनी उपयोगिता सिद्ध करने के लिए उसमें कोई न कोई दोष दिखा देता। उसके सामने कोई निर्दोष वस्तु आती ही नहीं थी। हाथी ऊपर नहीं देखता, ऊँट ऊपर ही देखता है, गधे में तेजी नहीं है, बन्दर में शांति नहीं है आदि-आदि। इस आलोचक से ब्रह्माजी की बुद्धि चकरा गई। अंत में ब्रह्माजी ने मनुष्य की रचना की, पर उस आलोचक ने उसमें भी एक दोष निकाल ही दिया। इसकी छाती में एक खिड़की होनी चाहिए थी, जिससे इसके विचारों को देखा जा सकता। यह एक पुरानी कहानी है, पर बड़ी सारगर्भित है। प्रत्येक रचना के शुक्ल-कृष्ण पक्ष होते हैं, पर हमें अपने मन को इस प्रकार तैयार करना है कि हम प्रत्येक वस्तु का शुक्ल पक्ष-उज्ज्वल पक्ष ही देखें।

दोष का प्रभाव :

संस्कृत में 'विश्वगुणादर्श-चंपू' नामक एक काव्य है। वेंकटाचारी नाम के एक दाक्षिणात्य पण्डित ने लिखा है। उसका कथानक इस तरह है कि विभावसु और कृशानु नाम के दो गन्धर्व विमान में बैठकर निकलते हैं। जो कुछ वे देखते हैं, उस विषय की चर्चा करते रहते हैं। एक ही वस्तु में विभावसु सुन्दरता देखता है, पर कृशानु को उसमें दोष ही दोष दिखते हैं। हममें से बहुतों की कृशानु-जैसी ही मानसिक स्थिति होती है। पर यह एक बीमारी है, हमें इससे छुटकारा पाना है। जब हम दूसरों में केवल दोष ही दोष देखते हैं, तब हमारा जीवन दोषमय बन जाता है, हमारी गति रुद्ध हो जाती है, हमारी उन्नति के मार्ग बन्द हो जाते हैं।

दोष पराये देखकर, चलत हसंत हसंत।
अपने याद न आंवई, जिनका आदि न अंत ॥

हमारे सामने जो नाटक चल रहा है, उसे आप एक तटस्थ द्रष्टा की आँखों से देखिए । क्या नाटक हमारे मन की रचना नहीं है ? जब हमारा मन शिव-संकल्पों से युक्त होता है, तब उसकी रचना विशाल और कल्याणकारी होती है; पर हमारा अहं और अस्वस्थ मन हमें विनाश के अन्धकूप तें डाल देता है ।

सुषारथि रश्वान्निव यन्मनुष्यान् ।
नेनीयते अभीशुभीः वाजिन इव ।।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं ।
तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ।।

मंगलमयता :

सधा हुआ शिव-संकल्प युक्त मन अच्छे सारथि की तरह ले जाता है । अशिव संकल्प युक्त मन तो वह कुसारथि है, जो रथ में जुड़े अश्वों को, रथ को तथा सवार को विनाश के गहरे गर्त में गिरा देता है । हमारा यह शरीर रथ है । आत्मा रथी या सवार है । मन सारथि है । कर्मेन्द्रियाँ अश्व हैं । ज्ञानेन्द्रियाँ बाजि हैं । यह रथ जिस पथ पर चल रहा है, वह सत्य-असत्य से बना है । यदि हमारा मन सारथि है तो वह हमें सत्य, धर्म, शिव, मंगल के मार्ग ले से चलेगा, अन्यथा दूसरा मार्ग तो विनाश का है ही ।

जगत् को हम जिस रूप में देखेंगे, जगत् हमारे लिए ठीक वैसा ही बन जाएगा । प्रत्येक मानव के अन्तर में निहित शिव और सुन्दर का हमें दर्शन करने का अभ्यास करना हैं । जब तक हमारा यह दृष्टिकोण नहीं होगा हमें शिव, सौन्दर्य, प्रकाश के दर्शन नहीं होंगे । जिस क्षण से हमने यह संकल्प किया कि हम प्रत्येक वस्तु के उज्ज्वल पक्ष को देखेंगे, हमें यह अनुभूति होगी कि हमारे सारे बोझ को हमारी सारी जिम्मेवारियों को कोई एक दूसरी ही अलौकिक शक्ति वहन कर रही है ।

शुभ का सौरभ :

हमें शुभ का सौरभ प्राप्त करना है, सत्त्व का प्रकाश देखना है । वृक्ष से टूटकर एक सुन्दर पुष्प कीचड़ में पड़ने से कीचड़मय हो जाता है, पर वही पुष्प यदि भगवान् पर चढ़ा दिया जाए, तो उसकी कुछ और ही शोभा हो जाती है । जब हम अशुभ से चिपटे होते हैं, अशान्त होते हैं, उद्विग्न होते हैं, तब पहले हमें अपने आपको शुभ से जोड़ना है तभी हम सुख-शान्ति का अनुभव कर सकेंगे तथा संसार में दूसरों को यह प्रसाद दे सकेंगे ।

गेहूँ का एक दाना हम बोते हैं । वही दाना हमें अनेक गुना फल देता हैं । इसी प्रकार हमारा प्रत्येक विचार, हमारी प्रत्येक क्रिया शुभ-अशुभ के बीज तैयार करती रहती है । यदि हम अपना शुभ चाहते हैं, अपना कल्याण और मंगल चाहते हैं तो हमें अपने लिए प्रत्येक परिस्थिति में शुभ के ही बीज डालना चाहिए ।

दूसरे के व्यवहार से, उसके दृष्टिकोण से हम अक्सर उद्विग्न हो उठते हैं । हो सकता हैं, हमारा दृष्टिबिन्दु ठीक हो पर हम यह भूल जाते हैं कि प्रत्येक मानव को अपने हिसाब से सोचने-विचारने और करने का पूरा अधिकार है । वह जो कार्य कर रहा है, वह उसके जन्म-जन्मान्तरों के संस्कारों का प्रतिबिम्ब है । उसके संस्कारों को हम अपने सामर्थ्य से बदल नहीं सकते ।

प्रकृति यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति ।

गीता के इस श्लोक से एक उदात्त प्रेरणा और दृष्टिकोण प्राप्त होता है, जिससे हम अपनी उद्विग्नता को दूर कर सकते हैं, जीवन में शान्ति और सफलता प्राप्त कर सकते हैं । इस पद का सीधा-सादा अर्थ यही है कि इस ब्रह्माण्ड का प्रत्येक अणु-परमाणु, प्रत्येक चराचर जीव अपनी ही प्रकृति के अनुसार बरतता है । प्रकृति को बदलना हमारे हाथ की बात है ही नहीं, पर हम चाहते यही हैं कि हम न बदलें-हम अपने दृष्टिकोण को न बदलें पर हमारे जो सम्पर्क में आए और उसमें प्रतिकूलता प्रतीत होती हो, वह बदल जाए । यह कैसे सम्भव हो सकता है ? प्रकृति की जो नियामक सत्ता है, वह यह चाहती ही नहीं है ।

अनुभव की बात :

अपने कार्य की व्यस्तता में मैं बहुत से ऐसे व्यक्तियों के सम्पर्क में आया हूँ, जिनकी विचारधारा-कार्यशैली को मैं बिलकुल भी पसंद नहीं करता था,

पर जब मैं शान्ति और सहानुभूति से उसपर सोचता तो कई बार मुझे अपने विचारों को बदलना पड़ा है।

जो भी व्यक्ति हमारे सम्पर्क में आए, जिस किसी भी परिस्थिति या घटना का हमारे लिए निर्माण हो उसके उज्ज्वल पक्ष को देखने से हमारे जीवन में आशा और प्रसन्नता का संचार होगा, हम अपने कार्य को ज्यादा अच्छी तरह कर पाएँगे, संसार हमें फूलों से भरा लगेगा।

संसार में कौन ऐसा व्यक्ति है, जिसे कभी ठोकर न लगी हो, परिश्रम करने पर भी सफलता कोसों दूर भागती दिखाई न दी हो। जब हमें चारों ओर अंधेरा दिखाई देता है, तो हम उस नियामक सत्ता को कोसने लगते हैं। पर कौन जानता है कि इसके पीछे भी हमारे लिए किसी मंगलमय विधान की रचना हो। दो व्यक्तियों को एक साथ चोट लगती है। आशावादी व्यक्ति परमपिता को धन्यवाद देता है कि उसने छोटी-सी चोट सहन करवाकर किसी बड़े आघात से बचा लिया। निराशावादी तथा जीवन में हमेशा रोते रहनेवाला व्यक्ति अपने भाग्य को कोसता रहता है। हम भूल जाते हैं कि प्रत्येक बादल के पीछे आशा की एक चमकती रजत-रेखा होती है। सूर्यास्त तो हुआ, पर चन्द्रमा का तो उदय हो गया न?

वास्तविकता तो यह है कि प्रभु के मंगलमय विधान में कहीं भी अमंगल है ही नहीं। प्रभु के विधान से जो भी हमें मिले, उसे हम प्रसन्नता से स्वीकार करें, उसे हम अपने अनुकूल बना लें और उसीमें पूर्ण अनुकूलता का दर्शन करें।

निन्दा रूपी प्रसाद :

कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर की संत कबीर के जीवन पर एक बड़ी सुन्दर रचना है। कबीर को सिद्ध महात्मा मानकर लोगों की भीड़ एकत्र होने लगी। कोई सिद्धि दिखाने को कहता, कोई संतान की माँग करता तो कोई रोग दूर करने की प्रार्थना करता। इससे गाँव के कुछ लोगों में ईर्ष्या हुई और उन्होंने षड्यन्त्र रचा। एक कुलटा स्त्री को सिखा-पढ़ाकर तैयार किया। जब कबीर कपड़ा बेचने बाजार में आए, तब उसने उनका पल्ला पकड़ लिया और उन्हें खरी-खोटी सुनाने लगी। उसका कहना था कि मैं तुम्हारी रखेल स्त्री हूँ और तुमने मुझे छोड़ दिया है। मैं कष्ट पा रही हूँ। दुष्टों का दल पहले से तैयार था ही। सब ताली पीटने लगे। कबीर की खूब निन्दा हुई। उस स्त्री को बाद में पश्चात्ताप होता है। पर कबीर कहते हैं, "मां, तू डर मत। तू भगवान् के यहाँ से मेरे लिए निंदा रूपी प्रसाद लेकर आई है। तू मेरे प्रभु की भेजी हुई है, मेरे मालिक का दान है।" हमारे जीवन में भी मंगलमय विधान पर ऐसी ही श्रद्धा होनी चाहिए। तभी हम चक्रवात के ठीक बीच में सुख और शान्ति की नींद सो सकेंगे। बवंडर हमारा स्पर्श तक भी नहीं कर सकेगा। हमारे दोष और दुःख सदा के लिए मिट जाएँगे। हमारा यह संसार कुछ और ही हो जाएगा। आज जो हमें यह सर्वत्र पाप-ताप से भरा दीखता है, वह फिर दिव्य मधु से भरा प्रतीत होगा।

मधुव्वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः

वायु में मधु भरा है, मधुर मन्द गति से वह प्रवाहित हो रहा है। नदियाँ मधुर रस का स्राव कर रही हैं। ऐसी अनुभूति करके हम कृतार्थ हो जाएँगे।

[आकाशवाणी के सौजन्य से]

१३, कल्काण सोसायटी एलिसब्रिज, अहमदाबाद

गन्दगी कहाँ ?

एक आदमी जंगल की ओर भागा जा रहा था। रास्ते में एक व्यक्ति मिला। उसने पूछा, 'भागे क्यों जा रहे हो?' कहाँ जाना है? उसने कहा, 'जंगल में जा रहा हूँ। "क्यों?" वह बोला, 'तुम नहीं जानते, शहर में गंदगी बहुत है। जंगल में शांति है, शुद्धि है, गन्दगी नहीं है।' उस आदमी ने कहा, 'जब तक तुम नहीं जाते हो, तब तक जंगल में शांति है, शुद्धि है। तुम्हारे पहुँचते ही वहाँ भी गंदगी हो जाएगी।'

जहाँ मनुष्य पहुँचा, वहाँ गंदगी हो गई। जहाँ मनुष्य नहीं पहुँचा, वहाँ कोई गंदगी नहीं है। जहाँ मनुष्य है वहाँ समस्याएँ हैं, फिर चाहे वह मनुष्य शहर में रहे या गाँव में या जंगल में—कोई अन्तर नहीं आता।

— डी. एस.

भोपे : भांत भांत के

लेखक

–डा० महेन्द्र भानावत

लोकलहरी के प्रहरी भोपे राजस्थानी लोक-जीवन के वे रिदसिद हैं जिनके बिना लोकधर्म का कोई कर्म सिद्ध नहीं होता। राजस्थान डगै-डगै देव और पगै-पगै भोपों की एक ऐसी लीलास्थली रहा है जहाँ जन्म से लेकर मरण तक के सभी संस्कारों में लोक देवी-देवताओं की मान-मनौती की जाती है। देवी-देवताओं की इस मनौती के ये भोपे ही एक मात्र मुखिया हैं। इसलिए जब-जब भी उनकी मनौती का प्रसंग आता है, सबसे पहले इन भोपों की मनौती करनी पड़ती है। ये भोपे ही देव-देवियों के वे साक्षात् रूप होते हैं, जो अपने में उनकी छाया लाकर उनको प्रत्यक्ष करते और उनके चमत्कारी कार्य-कलापों तथा यशस्वी जीवन की आश्चर्यमय ओजपूर्ण घटनाओं को विविध पवाड़े, गीतगाथाएँ तथा भारत के रूप में गाकर उनकी कृति को अक्षुण्ण रखते हैं।

तरह-तरह के रूप :

ये देवी-देवता कई रूपों में मिलते हैं। मिट्टी, पत्थर की मूर्तियों, लकड़ी के बने तोरणों, अनगढ़ पत्थरों तथा ईटों के रूप में इनकी कलात्मक कारीगरी देखते ही बनती है। इनमें सर्वाधिक संख्या वाले देव मृण्मय मूर्तियों में मिलते है। इन मूर्तियों में पपलाज, शांडमाता, सूरमाता, कालका, धर्मराज, रामू केवल, गुनामेनू, आमज, नारसिंघी, कालाजी, गोराजी, ताखाजी, कूकड़माता, गोरज्या, चोटजोगणी आदि उल्लेखनीय हैं। उदयपुर जिले के मोलेला गांव में जहाँ ये मूर्तियाँ बनाई जाती हैं वहाँ इनके विशिष्ट पुजारी-भोपे आते हैं और गाजे-बाजे के साथ इन मूर्तियों को ले जाकर अपने-अपने देवरे में स्थापित करते हैं। राजस्थान के अतिरिक्त ये प्रतिमाएँ गुजरात-मालवा तक के देवरों में स्थापित की जाती हैं। लकड़ी के तोरण में मामादेव तथा रूपण के देवरे बड़े नामी रहे हैं। तोरण के आकार में ये देवरे पाँच-पाँच फुट तक की ऊँचाई लिये होते हैं। प्रस्तर पर की मूर्तियों में देवनारायण, तेजाजी, हड़बूजी, ताखाजी अधिक मिलते हैं। ईंट के रूप में देवनारायण कई जगह प्रतिष्ठित हैं।

चाहे देव हो अथवा देवी, इनके भोपे पुरुष हो होते हैं। लालांफूचा का भोपा कहीं-कहीं भाव के समय औरत वेश धारण करता है। ये भोपे दो प्रकार के होते हैं। एक तो वे जो प्रतिदिन अथवा प्रति सप्ताह देवी-देव की सेवा-पूजा करते हैं और सप्ताह में शुक्र, शनि अथवा रवि को उनकी चौकी लगाकर उनकी छाया को अपने में लाकर जनजीवन के दुख-दर्दों को सुनते हैं। उनके ऊपर वारी हुई मुट्ठियाँ देकर उनकी बीमारी का पता लगाते हैं और आखे, पातो, तथा वेलभभूत देकर उनके कार्य सिद्ध होने तथा दुखों से छुटकारा पाने का वचन-वरदान देकर उनके कल्याण के भागी बनते हैं। इन भोपों में मुख्य भोपा 'पाट भोपा' कहलाता है। दूसरे सभी हजूरये कहलाते हैं। देव-देवी की छाया पाट भोपे में ही रहती है, हजूरये में नहीं। ये तो केवल उनकी हाजरी बजाने तथा अन्य छोटे मोटे कामों में लीन रहते हैं।

दूसरे भोपे वे होते है जिन्हें विवाह के पहले विशिष्ट रस्म-संस्कार कर भोपा बनना पड़ता है। प्रत्येक विवाहित ग्रामीण इस प्रकार का भोपा होता है। ये भोपे 'वसीवान' कहलाते हैं। वर्ष में एक बार ये जहाँ कहीं भी होते हैं रात्रि-जागरण पर आते हैं और देव-

दर्शन कर कल्याण कामना करते हैं। वसीवान बनने वाले प्रत्येक भोपे को सवा मन आटे का चूरमा बनाकर भोपे जिमाने पड़ते हैं। मुख्य भोपों के लिए विशेष प्रकार का संग बनाया जाता है और इनके लिए पेरावणी भी ले जाई जाती है। इसके बाद ही भोपा उस ताँबे की अंगूठी को गोल के रूप में धारण करता है।

विभिन्न देवी-देवताओं के मुख्य-प्रमुख भोपे इस प्रकार हैं—

पड़ भोपे :

पड़ वाचने वाले पड़भोपे कहलाते हैं। पड़ों के रूप में ये भोपे अपने साथ लम्बी लम्बी चित्रावलियाँ रखते हैं। इन चित्रावलियों में लोकदेवों के जीवन की अलौकिक एवं चमत्कारी घटनाओं के विविध चितराम चित्रित किये होते हैं। इनमें पाबूजी, देवजी, चावण्डा, रामदेव भैंसासुर तथा रामदला नामक पड़ें प्रसिद्ध हैं। इन पड़ों के मानने वाले अपनी बोलमा पूरी होने पर इन भोपों को अपने आँगन में आमन्त्रित कर पड़ बँचवाते हैं। पड़ बँचवाने वाले अलग-अलग पड़ों के अलग-अलग भोपे होते हैं। यथा पाबूजी के नायक, देवजी के गुजर चावण्डा की बावरी, भैंसासुर के बागरी तथा रामदला के भाट। पाबूजी की पड़ रावणहत्था, चावण्डा की डमरू थाली, देवजी की जन्तर नामी वाद्य के साथ बाँची जाती है। इन पड़ों का वाचन रात-रात भर चलता रहता है। केवल रामदला की पड़ बिना किसी वाद्य के दिन को बाँची जाती है। देवजी की पड़ सबसे बड़ी होती है जो नौ-नौ रात्रि तक बाँची जाती है। पाबूजी की पड़ के साथ भोपे की पत्नी भोपिन भी होती है, जो टेक झेलने में सहायता करती है। इसके हाथ में दीवट जलता रहता है, जो पड़-चित्र को दिखाने में सहायक होता है। पाबूजी की पड़ सबसे अधिक बँचवाई जाती है। पड़ बाँचते समय भोपे दुल्हे की-सी पोशाक धारण करते हैं।

माताजी के भोपे :

कारणी तथा जीणादि माता के भोपे माताजी के नाम से जाने जाते हैं। इनके उपासक इन भोपों को अपने यहाँ आमन्त्रित कर रात्रि-जागरण करवाते हैं। आँगन अथवा बाखल में जहाँ इन्हें जागरण करना होता है, ये लोग माता जी के भजनभाव करते हैं। वहीं पाट थरपते तथा बाजोट पर लाल कपड़े में चावल, पतासे पुराकर त्रिशूल स्थापित करते हैं। तदनन्तर माताजी की आरती करते हैं। इस समय डेरू, थाली, चीमटा, खरताल आदि वाद्य बजाए जाते हैं। लगभग आधी रात को ये अपने अद्‌भुत करिश्मे प्रारम्भ करते हैं जिनमें जबड़ों से सुई निकालना, मुँह से पैसा निकालना, मिट्टी के गर्म गोलों को दाँतों से उठाना, लोहे की गरमागरम साट को तैल के हाथों से सूंतना तथा अपनी जीभ काटकर फेंक देना प्रमुख है। मैंने ऐसे भोपों से भेंट की जिन्होंने अपनी चार अंगुल जीभ काटकर फेंकदी। कहते हैं कि यह जीभ दो घण्टे बाद ठीक हो जाती है। कटी हुई जीभ के टुकड़े को ये भोपे ताबीज में पड़ाकर या तो गले में धारण करते हैं या फिर भुजा पर बाँध देते हैं। ये लोग अपने सिर पर जलती हुई सिगड़ी रखकर अंगारों पर नाचते भी हैं। अपनी पीठ पर जोर-जोर से सांकल का फटकारा मारते हैं और अपने माता की छींया चढ़ने पर ये फड़फड़ी-सी खाते हैं, किंकारी लगाते हैं, घूणी खाकर जोर-जोर से किलकारी भरते और जोर-शोर से अपने हाथ फटकारते हैं।

भेरूजी के भोपे :

भेरूजी की पुजा-अराधना करने वाले भेरूजी के भोपे कहलाते हैं। ये भगवा अथवा लाल कपड़ा धारण कर अपनी कमर में बड़े-बड़े घूघरे बाँधते हैं। इसलिए ये गुगरये भोपे भी कहलाते हैं। सुबह-शाम अपनी बगल में भेरू झोली लटकाये, हाथ में चीमटा कोड़ा ले आटा माँगने निकलते हैं। इस समय ये आगे की ओर ही चलते हैं, कभी पीछे नहीं चलते। जहाँ नन्हें खड़ा होना रहता है, वहाँ ये एक पाँव पर खड़े रहते हैं। जादू-टोने तथा झाड़े झपाटे में ये बड़े माहिर होते हैं। कुछ भोपे तैल से भरे कपड़े पहनते हैं तथा अपने मुँह पर कालिख सिन्दूर पोतते हैं। इनके एक हाथ में त्रिशूल, सांकल तथा दूसरे में मोरपांख रहता है। इनके पास मशक भी होती है,

जिसके सहारे ये भेरूजी के बड़े सुन्दर गीत गाते हैं। बकरे की खाल से मशक ये स्वयं ही बना लेते हैं। इसका वह हिस्सा नलवा कहलाता है, जिससे ये सुर निकालते हैं। हवा भरने वाला स्थान डाट कहलाता है। यह मशक तैल से तरोताजा रहती है। इसे भेरूनाथ की बेन भी कहते हैं। चैत्र शुक्ला एकादशी को रेवाड़ी के पास एड़ोद में भेरूनाथ का बड़ा भारी मेला लगता है, जिसमें भेरूजी के भोपे नानाप्रकार के चमत्कारिक नृत्य-खेल दिखाते हैं। अपने घरों में ये भेरू का थान भी रखते हैं।

हड़बूजी के भोपे :

हड़बूजी रामदेवजी की मौसी के लड़के थे। इनको मानने वाले भोपे हड़बूजी के भोपे कहलाते हैं। किसी की बारात रवाना होने पर ये लोग शुभ शकुन देते हैं और अच्छी भेंट प्राप्त करते हैं। यदि इस समय इनको भेंट-भेंटावण में किसी प्रकार की कसर रह जाती है, तो ये अपनी विचित्र हाक द्वारा सियार उपस्थित कर देते हैं। सियार हड़बूजी का वाहन है। बीकानेर की ओर इनकी अधिक बस्ती है। पहले बीकानेर-नरेश की ओर से इन भोपों को रखोना मिलता था। जब कभी किसी की शादी होती है, तब हथलेवा का नारियल तथा कांकण देवड़ा सुरक्षित रख लिया जाता है। जब कभी हड़बूजी का भोपा वहाँ पहुँचता है, उसे ये सारी चीजें मिल जाती हैं।

गोगाजी के भोपे :

गोगाजी के भोपे गोगाजी की अराधना में ढप, डेरू तथा माठ बजाकर गाते-नाचते हैं। ये लोग अपने गलों में भाँति-भाँति के साँप धारण करते हैं और उनसे नानाप्रकार के खेल कराकर अपना जीवन बसर करते हैं। गोगाजी के थान पर सर्पकटों का जहर चूसकर उसे चलता-फिरता कर देते हैं। कुछ भोपे लकड़ी तथा उंगली पर थाली को अत्यन्त तेजी के साथ घुमाकर उसे कई फीट ऊँची उड़ा देते हैं और उसी हालत में पुनः झेलकर उसी रफ्तार से घुमाने लग जाते हैं। भाद्र कृष्णा नवमी को गोगानवमी पर गोगामेड़ी में इनका मेला लगता है। हजारों की तादाद में राजस्थान तथा उसके बाहर गुजरात, मध्यप्रदेश, पंजाब, हरियाणा, बंगाल, बिहार से लोग झुण्ड के झुण्ड रूप में उमड़ पड़ते हैं। यहाँ सर्पकटों का इलाज तो होता ही है, सर्प-दंश से मुक्त होने के लिए भी कई लोग मेले में आते हैं। खेजड़ी वृक्ष में गोगाजी का निवास होने से प्रत्येक गाँव में खेजड़ी के नाचे ही इनका देवरा मिलेगा।

अन्य भोपे :

कामड़ रामदेवजी के भोपे कहलाते है। रामदेवजी के आराधक अपना काम पूरा होने पर इन्हें बुलाते हैं और रात्रि-जागरण करवाकर जमा दिलवाते हैं। कामड़ औरतें अपने शरीर पर तेरह मजीरे धारण कर तेरा-ताली का सुन्दर कठिन प्रदर्शन करतो हैं जो हर किसी को चकित किये बिना नहीं रहता। पुरुष तन्दूरे की सहायता से रामदेवजी-परक गीत गाते हैं। रामदेवरा में रामदेवजी के मेले में इन कामड़ों के सैंकड़ों परिवार जमा-प्रदर्शन कर अपना पूरा करते हैं। भारत के गाने वाले भोपे नवरात्र में रात-रात भर ऊँची टेरों में देवी-देवता की शौर्य-स्तुतियाँ गाकर उनका आह्वान करते हैं। ये स्तुतियाँ-गाथाएँ भारत नाम से प्रचलित हैं। देवी कालका, नारसिंघी, लालाफूला, रूपण अंबाव, मासामा. चावण्ड तथा देव काला, गोरा, नाथू, मामा, राडा, हडुमान के भारत अधिक गाए जाते हैं। भीलों के सुप्रसिद्ध गवरी नाच में गवरी का पाट भोपा प्रत्येक खेल में भाव लाकर माता गौरज्या की उपस्थिति की सूचना देकर गवरी खेल्यों नचैयों में ओज और उत्साह भरता है।

भोपों की यह विरासत हमारी लोकसंस्कृति की वह निष्ठा है जिसकी छत्रछाया में हमारा लोकमन अपनी आत्मा का विस्तार नापता है, अपने मन-चैतन्य को सचेतित करता हुआ एक भव के लिए नहीं अपितु भव-भव की सिद्धियाँ प्राप्त करता है।

* * *

लोक कलामंडल
उदयपुर (राज०)

सामयिक

जनगणना एवं परिवार-नियोजन

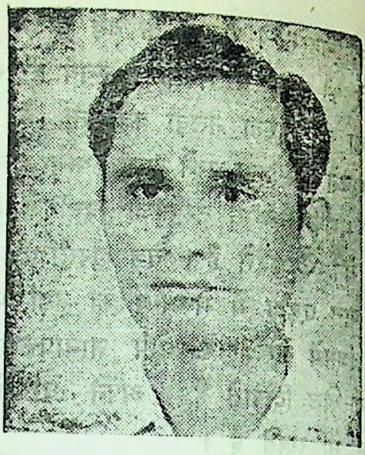

लेखक

श्री भूरचन्द जैन, पत्रकार

* * *

[समस्त भारत में ५ फरवरी से जनगणना आरंभ होगी । उसमें किस-किस प्रकार की जानकारी प्राप्त की जाएगी और उन जानकारियों की क्या उपयोगिता है, उसे इस लेख में पढ़िए और बढ़ती आबादो के संकटों से बचने-बचाने एवं सुखी बनने-बनाने का उपाय ढूंढ़ कर देश की समृद्धि में योगदान दीजिए । -सम्पादक]

भारत के आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, औद्योगिक, धार्मिक आदि अनेक क्षेत्रों में जनगणना का बड़ा महत्व है । जनगणना को उस देश की विभिन्न योजनाओं की आधारशिला कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी । देश की विभिन्न योजनाओं को प्रारम्भ करने से पूर्व उस योजना के आधारभूत पहलू के रूप में जनसंख्या का ज्ञान नितान्त आवश्यक है । उसके पश्चात् बननेवाली आयोजना के ठीक परिणाम निकल सकते हैं । भारत जैसे लोकतंत्रीय प्रणाली वाले देश के लिए तो जनगणना का बड़ा महत्व है । यहाँ होने वाली जनगणना के माध्यम से परिवार की संख्या, धर्म, जाति, भाषा, आवासीय व्यवस्था, रोजगार, साक्षरता, आयु, वैवाहिक स्थिति आदि महत्वपूर्ण आंकड़े एकत्रित किए जाते हैं । जिसको आधार मानकर विकास, रोजगार, शिक्षा आदि की समुचित व्यवस्था करने के लिए उचित कदम उठाए जा सकते हैं । इन सभी स्थितियों को ध्यान में रखते हुए इसे मानव-कल्याणकारी एवं प्रगतिशील राष्ट्रीय विकास योजना कहना ही उपयुक्त रहेगा ।

विविध प्रकार की जानकारी :

जनगणना का परिवार-नियोजनके लिए बड़ा महत्व है, जिसकी उपादेयता सम्पूर्ण विश्व मानता है । भारत में निरन्तर बढ़नेवाली जनसंख्या के कारण हमारी अनेक महत्वपूर्ण, उपयोगी एवं कल्याणकारी योजनाएँ सफल होते हुए भी असफलता का शिकार बनती जा रही हैं । देश में निरन्तर बढ़ती जनसंख्या के कारण खाद्यान्न, पेयजल सुविधाएँ, रोजगार, शिक्षा, यातायात सुविधाएँ, वस्त्रों, चिकित्सा सुविधाएँ आदि अनेक प्रकार की समस्या मुँह बाये खड़ी रहने लगी हैं। जबकि भारत के लोकतन्त्र होने के पश्चात् उक्त सुविधा साधनों का अधिकाधिक विस्तार एवं विकास किया गया है । बढ़ती जनसंख्या के कारण भारत जैसे देश ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् अनेक योजनाएँ बनाई हैं, पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से आत्मनिर्भर एवं स्वावलम्बी बनाने का प्रयास किया गया । इसमें आशातीत सफलता मिली । देश ने औद्योगिक क्षेत्र में नई क्रांति का सूत्रपात किया । अनेक औद्योगिक प्रतिष्ठानो की स्थापना कर उत्पादन-क्षेत्र में नया कीर्तिमान स्थापित किया । खेती लोक में नए आयाम खड़े किए । शिक्षा के क्षेत्र में गाँव-गाँव शालाएँ खोलो गईं । चिकित्सा एवं स्वास्थ्य-सेवाओं में तो देश ने आशातीत गौरव प्राप्त किया । पीने के पानी की सुविधा मुहैया करने में देश किसी भी सूरत में पीछे नहीं रहा । यातायात सुविधाओं तथा संचार-साधनों का निरन्तर विकास एवं विस्तार हो रहा है । आजादी के पश्चात् जनमानस को रोजगार मुहैया करने में भी देश ने किसी प्रकार की कमी नहीं आने

ो है । अनेक मानवोपयोगी कार्य करने के पश्चात् भी आज देश निरन्तर बढ़ती जनसंख्या के कारण पीड़ित है, परेशान है ।

बढ़ती जनसंख्या के कारण एक से एक बढ़ती समस्याएँ भारत के आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, औद्योगिक, व्यावसायिक, शैक्षणिक आदि क्षेत्रों में उत्पन्न होने लगी हैं । बढ़ती जनसंख्या को रोकने के लिए सरकारी एवं गैरसरकारी स्तर पर युद्ध–स्तर पर कार्य हो रहा है । जनसंख्या को रोकने के लिए परिवार नियोजन कल्याण योजना आज भी देश के विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक स्तर पर कार्यरत है । परिवार नियोजन के अन्तर्गत पुरुषों के लिए नसबंदी करवाने एवं निरोध का उपयोग करने पर बल दिया जाता है, जबकि महिलाओं के लिए नसबन्दी, दूरबीन से नसबन्दी, लूप, कारपरटी, झागदार गोलियाँ, फार्म टेबलेट जेली क्रीम आदि साधन एवं सुविधाओं का उपयोग करने पर बल दिया जाता है । परिवार-नियोजन के इन साधनों को स्वीकार करनेवाले दम्पतियों ने निश्चित रूप से अपने बढ़ते परिवार को रोका है । जिसके कारण बढ़ती जनसंख्या में कुछ मात्रा में विराम आया है । लेकिन भारत की जनता अशिक्षा, प्राचीन रूढ़ियों, कुरीतियों, अन्धविश्वासों के कारण परिवार–नियोजन की योजनाओं को स्वीकार करने में हिचकिचाहट करती है ।

विवरण–उल्लेख :

देश की जनसंख्या के बढ़ने, घटने एवं परिवार–नियोजन के लिए योग्य दम्पतियों का चयन करने के लिए जनगणना को उचित माध्यम बनाया जा सकता है । भारतीय जनगणना के दौरान प्रत्येक व्यक्ति के बारे में व्यक्तिगत विवरण जिसमें उस व्यक्ति के लिंग, आयु एवं वैवाहिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए उस व्यक्ति से सम्पर्क स्थापित कर उसे परिवार–नियोजन के लिए प्रेरित किया जा सकता है । इसी प्रकार व्यक्तिगत पर्ची के साथ कुछ क्षेत्रों में नमूने के तौर पर भी व्यक्तिगत पर्ची भरने का जनगणना के कार्य में लक्ष्य रखा गया है, जिसमें विवाहित महिलाओं के बारे में उनकी आयु बच्चों की संख्या आदि का उल्लेख किया जाएगा । ऐसी स्थिति में परिवार–नियोजन के कार्यक्रम के अन्तर्गत दो या दो से अधिक बढ़ने वाली माताओं को परिवार नियोजन स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है ।

जनगणना में परिवार-अनुसूची में परिवार का विवरण अंकित करते समय उस परिवार में सामान्यतौर पर रहने वाले दम्पतियों की संख्या भी अंकित करने की व्यवस्था है । जिसको आधार मानकर परिवार–नियोजन की उपादेयता को उन दम्पतियों को समझाने, प्रेरित करने का कार्य आसानी से हाथ में लिया जा सकता है । सम्पूर्ण देश में दम्पतियों की संख्या एवं परिवार सदस्यों की संख्या का अध्ययन कर परिवार–नियोजन के लिए नई योजना बनाने एवं उसे क्रियान्वित करने में सहयोग मिल सकता है । जनगणना में प्रत्येक मकान में रहनेवालों की संख्या एवं दम्पतियों की संख्या का लेखा-जोखा संकलित होगा । उसके आधार पर परिवार–नियोजन के लिए उन लोगों से सम्पर्क साधने में अधिक सुविधा हो सकती है ।

जनगणना के दौरान साक्षर एवं निरक्षर के साथ–साथ धर्म एवं अनुसूचित जाति एवं जनजाति की जानकारी को भी अंकित करने की व्यवस्था है । इसे भी यदि परिवार–कल्याण योजनाओं को क्रियान्वित करने वाली इकाइयों को यदि नजदीक से अध्ययन करें तो वे इसे सम्पर्क साधकर उन्हें परिवार नियोजन के साधनों एवं सुविधाओं को प्राप्त करवाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं ।

परिवार–नियोजन :

परिवार–नियोजन को लोकप्रिय एवं उपयोगी कहाँ तक बनाया जाना है । उसके लिए उस क्षेत्र की जन–संख्या, दम्पतियों की संख्या, परिवार के सदस्यों की कुल संख्या को जानना नितान्त आवश्यक होता है । ये सभी जनगणना के माध्यम से आसानी से जाने जा सकते हैं । उसके पश्चात् उन क्षेत्रों में परिवार-नियोजन केन्द्रों, उपकेन्द्रों, चलती फिरती इकाइयों आदि को कार्यरत किया जा सकता है । परिवार–नियोजन अर्थात् बढ़ते परिवार को रोकने के उपायों का अधिक

धिक प्रयोग में लाने एवं उसे अपनाने का मुख्य कार्यक्रम होता है। वहाँ इसके साथ-साथ परिवार-कल्याण कार्यक्रम के अन्तर्गत बच्चों की देखभाल, प्रारम्भिक चिकित्सा-सुविधा पौष्टिक आहार की व्यवस्था आदि बालोपयोगी योजनाओं को उस क्षेत्र में आरम्भ करने की योजनाएँ हाथ में लेने में सुविधा रहेगी।

परिवार-नियोजन चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग का अंग है। जनसंख्या को आधार मानकर ही शहरो एवं ग्रामीण क्षेत्रों में चिकित्सालय, औषधालय आदि इकाइयों को आरम्भ किया जाता है। इसके लिए वास्तविक जनसंख्या की जानकारी होना आवश्यक है और यह केवल जनगणना के माध्यम से सत्य रूप से उपलब्ध हो सकती है। जनगणना में घर-घर, परिवार-परिवार, गाँव-गाँव, टोला-टोला, नगर-नगर की आबादी का चित्र प्रस्तुत होता है। उसे आधार मानकर उन क्षेत्रों में परिवार-नियोजन की योजनाओं को क्रियान्वित करने में मदद मिल सकती है।

संक्षेप में यदि यह कह दिया जाए कि जनगणना के बिना परिवार-नियोजन योजना मरणासन्न होती है, तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं। वास्तव में जनगणना ही परिवार-नियोजन की आधारशिला है। जिसको लक्ष्य-बिन्दु बना कर हम देश में निरन्तर बढ़ती जनसंख्या को रोकनेके लिए उचित उपाय सोचने एवं क्रियान्वित करने को प्रेरित होते हैं। जनगणना से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर यदि देश के अन्दर काम करने वाली परिवार-नियोजन एवं चिकित्सा एवं स्वास्थ्य इकाइयाँ उसे अपना मार्गदर्शन मानकर कार्य करें तो निश्चित रूप से उन्हें आशातीत सफलता मिल सकती है। इन सभी परिस्थितियों का अध्ययन करने से ऐसा प्रतीत होता है कि परिवार-नियोजन योजना के लिए जनगणना इसका प्राण है। इसे आधार मानकर यदि परिवार नियोजन को देश के कोने-कोने में युद्धस्तर की तरह चलाया जाए, तो निश्चित रूप से अन्धाधुन्ध बढ़ती आबादी रुकेगी जिससे हमारा देश हर क्षेत्र में अग्रसर हो सकेगा।

◆

जूनी चौकी का वास,
बाड़मेर (राजस्थान)

० कहकहे ०

ग्राहक (दुकानदार से) 'क्यों भाई, तुम्हारे पास कुत्तों के खाने वाले बिस्कुट हैं?'

दुकानदार—'जी हाँ। बोलिए, यहाँ खाएँगे या घर ले जाएँगे।'

० ० ०

वेटर (ग्राहक से) 'पच्चीस पैसे की टिप लेना मैं अपमान समझता हूँ।

ग्राहक—'और कितना देना चाहिए?'

वेटर—'पच्चीस पैसे और।'

ग्राहक—'मैं तुम्हारा दो बार अपमान नहीं कर सकता।'

० ० ०

एक गाँव का यात्री ट्रेन में यात्रा कर रहा था। ट्रेन में काफी भीड़ थी। इसलिए उसने खाने का डब्बा ट्रेन रोकने वाली जंजीर पर लटका दिया। ट्रेन रुक गई। जब लोग उस डिब्बे में आए और ट्रेन रुकवाने का कारण पूछा, तो यात्री बड़े गर्व से बोला, 'देखा हमारे खाने के असली घी का कमाल, ट्रेन तक रुकवा दी।'

० ० ०

सामने से बस आ रही थी। एक सज्जन ने इशारा देकर बस रुकवाई। बस रुक गई। ड्राइवर ने कहा, 'साहब जल्दी चलिए। आपको कहाँ जाना है?'

आदमी, 'जाना तो कहीं नहीं है, जरा बस का हार्न बजा देना। बच्चा जिद कर रहा है।'

० ० ०

मरीज (डाक्टर से) 'डाक्टर साहब, रात को मैंने सपना देखा कि मैं सेब खा रहा हूँ।'

डाक्टर—'सेब खाना तो अच्छी बात है, इससे खून बढ़ता है और बीमारियाँ दूर होती हैं। आपको सपने से क्या नुकसान हो गया?'

मरीज—'वाह साहब, आप भी क्या बात करते हैं। सुबह जब उठकर मैंने देखा तो मेरा आधा सिरहाना गायब था।'

अग्रवालों में दस्सा-बीसा भेद : शंकाएँ एवं समाधान

श्रीमती स्वराज्यमणी अग्रवाल
एम०ए०, पी-एच०डी०, संगीत कोविद

जातियों में भेदभाव का विकास कब से प्रारम्भ हुआ यह कहना अत्यन्त कठिन है। फिर भी यह निश्चय है कि जाति-पाति का विकास दसवीं सदी से आरम्भ हुआ आर धर्म में आई कर्मकाण्ड की दुरूहता, मानवीय अज्ञानता तथा अंधविश्वासों ने इसे वृहत्तर रूप देकर समाज को, देश को, बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र को टुकड़ों-टुकड़ों में विभाजित कर दिया।

श्रम के सिद्धांत पर बनी हुई वर्णव्यवस्था, जो उस समय देश की रीढ़ थी, आज जाति-पाति के विभिन्न वर्गों में बँटकर अपना अस्तित्व ही विलीन कर चुकी है। यह महादशा अग्रवाल जाति में ही नहीं आई, प्रत्युत ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सभी में इसके जहरीले बीजों का प्रत्यारोपण किया गया, जो कालान्तर में अपने जहरीले फलों के साथ फूले और पनपे। आज देश में केवल वैश्य जाति के ही भेदोपभेदों की गिनती की जाए तो इसका कोई अन्त नहीं मिलता।

ऐतिहासिक दर्पण में :

खटौ रावासी नवलसाह चंदोरिया ने विक्रम सं० १८२५ में वर्धमान पुराण की रचना की थी। इसके सोलहवें अधिकार में उन्होंने जाति-विषयक चर्चा की है जो क्रमबद्ध तरीके से अनेक अनूठी मान्यताओं के साथ रखी गई है। कवि ने ८४ वैश्य जातियाँ गिनाई हैं, जिन्हें तीन भागों में बाँट दिया है। पहले साढ़े बारह अर्थात् तेरह जैन जातियाँ गिनाई गई है, उसके बाद ग्यारह अन्य, जो कवि के ज्ञान के अनुसार अंशतः जैन हैं या जैन धर्म से प्रभावित हैं, इसके बाद साठ वैश्य जातियाँ गिनाई गई हैं।

इन चौरासी जातियों में कवि ने गोलापूरव, हूमड़, श्रीमाल, ओसवाल, अग्रवाल, नेमा, पोखार, जातियों के नामकरण भी ग्यारहवीं सदी से शिलालेखों, अभिलेखों में पाए जाने लगे है।

श्री कैलाशचन्द जैन ने राजस्थान के प्राचीन नगर (एन्सीयेन्ट सीटीज एण्ड टाउन्स आफ राजस्थान) के पृष्ठ १८३ पर श्रीमालों का उल्लेख करते हुए बताया है कि श्रीमाली जैन संभवतः आठवीं शताब्दी में 'रत्नप्रभ सूरि' द्वारा स्थापित हुए। 'ब्राह्मणेपति मार्तण्ड' पृष्ठ ११७ के अनुसार अमरसिंह जैन ने श्रीमाली वैश्यों को जैन मत में लिया। श्रीमाली वैश्यों में दसा-बीसा भेद है। बीसा सभी श्रावक हैं, दशा श्रावक या मैश्री वैष्णव दोनों हैं।

ओसवालों की स्थापना भी 'रत्नप्रभ सूरि' द्वारा आठवीं सदी में हुई। आरंभ में इनके अठारह कुल थे। कैलाशचन्द जैन के अनुसार मुसलमानों के भय से अनेक क्षत्रिगण वैश्य होकर इनमें मिलते रहे।

अन्य जातियों के उल्लेख भी इसके बाद के ग्रन्थों में पाए जाते रहे, परंतु जातियों को पहचानने का प्रयास विशेष सफल नहीं रहा। कुछ ऐसी जातियाँ जो प्राचीन ग्रन्थों में थीं, आज उनका नाम भर शेष है। कुछ नई जातियाँ जो आज सामने हैं, उनके नामोल्लेख प्राचीन ग्रंथों में हैं ही नहीं।

वर्धमान पुराण के लेखक ने बघेलवाल, पोरवाल आदि जातियों को ओसवाल, अग्रवाल आदि के साथ क्यों नहीं रखा, यह स्पष्ट नहीं किया है। उसके गिनाए तीन वर्गों में प्रथम में उसने— (१) गोला पूरब, (२) गोलालारे, (३) गोल सिघारे, (४) परवार, (५) जैसवार, (६) हूमड़, (७) कठनेरे, (८) खण्डेलवाल, (९)

कास्ट सिस्टम आफ नार्दन इण्डिया—ई०ए०एच० ब्लन्ट, १९३१, पृष्ठ ४३-५५-२०९.

बहरिया, (१०) श्रीमाल, (११) लमेंवू (१२) ओसवाल (१३) अग्रवाल गिनाए हैं ।

१६३६ की सिंहासन बत्तीसी में भी साढ़ी गरह याने तेरह वैश्य जातियों का उल्लेख है । (ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड हरिकृष्ण शास्त्री, १९४८ ई० पृष्ठ १४३) ।

वर्धमाम पुराण में इन तेरह जातियों को पांत इक भांत करके दिखाया गया है । अन्य ग्यारह जातियाँ कवि के अनुसार अंशतः जैन हैं, वे इस प्रकार हैं–

(१) जिनचेरे, (२) बाघेलवार, (३) पद्मावति, (४) पुखारे, (५) ठस्सर, (६) गृहस्पति, (७) नेमा, (८) असेटी, (९) पल्लिवार, (१०) ठढ़तवाल, (११) माहेश्वरवार बाकी अन्य ६० जातियों का भी उल्लेख कवि ने किया है ।

इन उल्लेखों में सर्वाधिक उल्लेखपूर्ण बात दसा बीसा, पचा विभाग की है । श्री कैलाशचन्द्र जैन के अनुसार यह भेद कब बने, इसकी निश्चित जानकारी नहीं मिलती ।

यशवंत कुमार मलैया ने इसका स्पष्टीकरण देते हुए लिखा है कि किसी-किसी ब्राह्मण जाति में भी यह भेद है । कान्यकुब्ज ब्राह्मणों में विशेष सूक्ष्मता से यह विचार है । इनमें सैकड़ों वंशकर्ता पुरुषों में प्रत्येक के लिए वंश–मर्यादा सूचक अंक निश्चित है, जिसे विश्वा कहते हैं । उत्तम छह गोत्रों में यह दो से लेकर २० तक है । मध्यम दशा गोत्रों में एक से लेकर दस तक है । विश्वा की मर्यादा से विवाह संबंध करना ऐसा रिवाज रहा है । किसी–किसी के मत से यह भेद सं० १२२६ में कन्नौज नरेश जयचंद के समय में निश्चित किए गए ।

भ्रान्त धारणा :

उपर्युक्त समस्त विचारों से यह तथ्य भलीभाँति प्रतिपादित होता है कि अग्रवालों में दसा–बीसा–पचा भेद दसवीं शताब्दी के बाद से ही आए हैं न कि महाराज अग्रसेन के समय से । अतः, दसा–बीसा आदि को लेकर जो विभाजन महाराजा अग्रसेन के समय से किया जाता है वह सब भ्रांतिपूर्ण है, निराधार है ।

अग्रसेन के काल में जाति–पाति का विभाजन विवाहिक आधार पर किया ही नहीं जाता था । कालान्तर में चलकर सामाजिक दण्ड की व्यवस्था जो बनी थी वह भी उस दण्ड को पूरा करने पर समाज के समभागी बन जाते थे ।

दसा–बीसा शब्द का व्यवहार हूमड़ जाति में सर्व प्रथम गुरु–परम्परा की लघुतम–वृद्धितम इकाई के रूप में पढ़ने में आता है । वहाँ भी यह लिखा है कि यह भेद इसलिए किए गए कि विवाह के समय गोत्रोच्चार में सरलता से भिन्नता लाई जा सके ।

तीन कारण :

ऐसा लगता है कि यह बीसा, पचा भेद जैनियों के जाति–विभाजन की परम्परा से जाति में आया, जिसका आधार रक्त—शुद्धि कदापि नहीं था, वरन् गोत्रोच्चारण में भिन्नता दर्शाना अथवा गुरु–परम्परा में भेद-विभेद दर्शाना रहा । वर्धमान पुराण में ओसवालों के १४०० (कान्यकुब्ज वंशावली—नारायण प्रसाद मिश्र, १६५६ ई.) गोत्रों का नाम लिया गया है । अतः, यह स्पष्ट है कि १४०० गोत्रों में कई नाम परस्पर मिलते होंगे और उनमें भिन्न दिखाने के लिए यह भेदोपभेद जातियों में शामिल किए गए ।

दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि मुगलों के आक्रमण से जो जाति अपने स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान पर जा बसी, वहाँ के मूल निवासी उन्हें धार्मिक असहिष्णुता के कारण अपने से भिन्न समझते रहे और उन्हें हेय समझा गया ।

तीसरा कारण जो सर्वाधिक स्पष्ट समझ में आता है वह यह कि दसवीं शताब्दी से लेकर १५ वां शताब्दी तक का समय भारत में अत्यन्त उथल–पुथल का काल रहा है । अतः, समाज में ऊँच–नीच भावना का विकास धन के आधार पर बढ़ना प्रारम्भ हो गया । जो धनिक वर्ग था वह अपने को सर्वश्रेष्ठ समझकर सामान्य वर्ग से दूर रहा—रोटी-बेटी का व्यवहार, मिलना-जुलना बन्द कर दिया । सामान्य वर्ग में भी जो एक से थे, उन्होंने अपना एक गोठ अलग बना लिया और जो

अत्यन्त गरीब--वर्ग रहा वह उपेक्षित रहकर अपनी ही जाति की संकीर्णता से उपेक्षित बना ।

आज भले हो दसा--बीसा, पचा में उच्च, मध्यम उपेक्षित समान रूप से पाए जाते हैं, परन्तु एक समय यह भेद आर्थिक आधार के स्तम्भ बने इससे इनकार नहीं किया जा सकता । लक्ष्मी चञ्चल है वह किसी के पास स्थायी रूप से नहीं रहती । अतः, बीसा समझने वाले भी गरीब बने और दसा, पचा, लक्ष्मी पुत्र बने, पर जाति में जो भेद स्थापित हो चुके थे वह अशिक्षा, कुरीति, संकीर्णता, अविश्वास के कारण ज्यों के त्यों बने रहे ।

आज समाज में जब सरकार एक राष्ट्र की कल्पना कर रही है, उसमें इन भेदों--उपभेदों को रखना महज बुद्धि की संकीर्णता के सिवा कुछ नहीं । भगवान् ने सभी इन्सानों को एक बनाया । इन्सानों ने अपने को करोड़ों टुकड़ों में बाँट दिया । यदि हमें समाज को, राष्ट्र को समुन्नत करना है, तो इन सब कुंठाओं को मन से निकालकर केवल वैश्य अग्रवाल बनना है । तभी हम अपनी शक्ति एकत्रित कर राष्ट्रोत्थान में सहायक हो सकेंगे ।

जीवन कोलोनी
बलदेव बाग, जबलपुर (म.प्र)

परोपकार

भारतेन्दु हरिश्चन्द के एक मित्र की कन्या का विवाह था । वे कुछ याचना का मनोरथ लेकर आए । भारतेन्दुजी की जेब बिल्कुल खाली थी । अपना निर्वाह भी कठिन पड़ रहा था ।

फिर भी जरूरतमन्द को खाली हाथो न जाने देना हो उन्होंने उचित समझा । हीरा जड़ी अंगूठी उतार कर एक हाथ से मित्र के हाथ में रखी और लेने से इन्कार करने का अवसर आने देने से पूर्व ही उन्होंने दूसरे हाथ से मित्र का मुँह यह कहते हुए बन्द कर दिया कि बस, कुछ मत कहना । मेरे पास अब कुछ बचा नहीं है ।

—: सूक्तिसुधा :—

कोकिलानां स्वरोरूपं नारीरूपं पतिव्रतम् ।
विद्यारूपं कुरूपाणां क्षमारूपं तपस्विनाम् ॥

[कोकिला की शोभा स्वर, स्त्रियों की शोभा पतिव्रत है । पुरुषों की शोभा विद्या है, एवं तपस्वियों की शोभा क्षमा हैं ।]

अयुक्तं स्वामिनो युक्तं युक्तं नीचस्य दूषणम् ।
अमृतं राहवे मृत्युर्विषं शंकरभूषणम् ॥

[अयोग्य वस्तु भी समर्थ को योग्य हो जाती है और नीच व्यक्ति को दोषकारक हो जाती है । अमृत ने राहु के लिए मृत्यु का काम किया, और विष ने शंकर को भूषित किया ।]

प्रस्तावसदृशं वाक्यं प्रभावसदृशं प्रियम् ।
आत्मशक्तिसमं कोपं यो जानाति स पण्डितः ॥

[प्रसंग अनुरूप वाक्य, प्रभाव के अनुरूप प्रिय और अपनी शक्ति के अनुसार जो कोप करना जानता है वह बुद्धिमान है ।]

परिचय-परक :

कलाकृतियों का दिलचस्प आदान-प्रदान

डा० प्रेमचन्द्र गोस्वामी

[यह संसार भिन्न-भिन्न रुचियों और प्रकृतियों की लीला-स्थली है । इसी से संसार की शोभा है । इस लेख में कुछ चित्र-संग्रही यूरोपीय महानुभावों की दिलचस्प कहानियाँ पढ़िए और आनन्द लीजिए । —सम्पादक]

पुराने समय में जब आवागमन के साधन नहीं थे, तब लोगों को किसी छोटी जगह में रहकर ही जीवन की प्रायः सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करनो पड़ती थी । तब श्रम का मूल्य मुद्रा के रूप में प्राप्त करने के स्थान पर अन्न, वस्त्र या दैनन्दिन जीवन की अन्य आवश्यक वस्तुओं के रूप में लिया जाता था, किन्तु बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में भी कुछ चित्रकार और लेखक श्रमस्वरूप अन्न या वस्त्र स्वीकार करते रहे हैं । यह जानकारी पर्याप्त मनोरंजक हो सकती है ।

सिलाई :

लगभग पच्चीस वर्ष पूर्व इटली के वाइस नगर का माइवल संपून नामक दर्जी जिसने वहाँ के बोसी नामक चित्रकार का सूट सिला था । जब सूट के श्रम का मूल्य माँगने लगा तो बोसी ने दर्जी के समक्ष एक प्रस्ताव रखा कि वह सूट की सिलाई के बदले उसका एक चित्र ले ले । दर्जी ने उसे स्वीकार कर लिया । दर्जी के यहाँ से जब सेपून अपने घर पहुँचा उसकी पत्नी ने उसे बहुत भला-बुरा कहा । वह बोली, "आपने सिलाई के रुपयों के बदले चित्र क्यों स्वीकार किया ?" बेचारा सेपून उस समय तो अपनी पत्नी को संतुष्ट नहीं कर सका, लेकिन कुछ समय बाद ही जब एक कला-पारखी ने वह चित्र अच्छे दामों में खरीद लिया तो सेपून और उसकी पत्नी बहुत प्रसन्न हुए । यह कीमत सूट की सिलाई से कोई बीस गुना ज्यादा थी ।

इस घटना के बाद सेपून की दुकान में जो भी चित्रकार कपड़े सिलवाने आता वह उससे सिलाई के बदले चित्र देने का आग्रह करता । चित्रकार उसे सहज ही अपना कोई चित्र दे देता । धीरे-धीरे उसके पास चित्रकारों की कृतियों का अच्छा खासा संग्रह हो गया । संयोग से एक बार विश्व-प्रसिद्ध चित्रकार पिकासो ने सेपून से अपनी सिल्क की पेंट सिलाई । उसकी सिलाई स्वरूप वह पिकासो से उनका एक चित्र प्राप्त करने में सफल हो गया । पिकासो के इस चित्र का विक्रय करके सेपून की किस्मत ही बदल गई । उसने इस चित्र के बदले एक लाख छब्बीस हजार रुपयों के बराबर राशि प्राप्त की ।

उसके बाद तो सेपून इस प्रक्रिया का आदी हो गया और धीरे-धीरे उसके पास लगभग पाँच सौ चित्रों का संग्रह हो गया । उन चित्रों की कीमत सामान्यतः ४५ लाख रुपया आँकी गई थी । वह अच्छी रकम इनके माध्यम से प्राप्त करता रहा । सेपून के संग्रह में जिन विश्वप्रसिद्ध कलाकारों के चित्र रहे उनमें अतुंग, आर्य तथा नियाकामेटी की कृतियाँ भी थीं ।

चित्र—संग्रह :

चित्रों के इस दिलचस्प आदान-प्रदान का एक समानधर्मी उदाहरण इटली के वैंस नगर में मिलता है । वहाँ आज भी सुप्रसिद्ध चित्रकार मातीस, क्वगाल, ब्राक और कोकटियस आदि चित्रकारों की कलम से

(शेष पृष्ठ ३५ पर)

नवयुवक और नवयुवतियाँ

श्री गोपीकिसन भारतिया

[श्री भारतिया जी राजस्थान के निवासी हैं और वर्षों से महाराष्ट्री बन गए हैं । आपके सुपुत्र सिन्नर में कुशल जज हैं । श्री भारतोया जी अपना उत्तर जीवन लेखन और चिन्तन में गुजार रहे हैं । इस लेख में आपने समाज के नवयुवक-नवयुवतियों को कुरीतियाँ त्यागने और सादा जीवन गुजारते हुए स्वदेशी-व्रत अपना कर देश को नवीन बल देने की सलाह दी है । ह सलाह कितनी सयानी और सामयिक है ।

— सम्पादक]

किसी भी देश की समृद्धि उसका उत्थान और पतन संगठित समाज अथवा सामाजिक एकता पर निर्भर करता है । हमारे समाज में विभिन्न धर्म, संप्रदाय रीति-रिवाज और परंपराएँ प्रचलित हैं । इन भिन्नताओं और मतभेदों के होते हुए भी भिन्नता में एकता का आदर्श दृष्टिकोण सामने रखते हुए अनुभव करना है कि जिस प्रकार किसी भवन की निर्मिति उसकी नींव की ईंट पर होती है, उसी तरह समाजरूपी भवन की निर्मिति समाज के नवयुवक और नवयुवतियों के त्याग पर निर्भर है । समाज को बदलने की एकमेव दृष्टि या बागडोर उन्हीं के हाथ में है । आज यह नवशक्ति घर से समाज तक और समाज से गाँव और गाँव से लेकर देश तक परिवर्तन का माध्यम है । बिना नवयुवक और नवयुवतियों के जीवन दिशाहीन है । नवयुवक और नवयुवतियों का विशेष महत्व है । जैसे चाँद और सूरज संसार में आवश्यक ग्रह हैं, उसी तरह पृथ्वी पर नवयुवक और नवयुवती रूपी दो ग्रह हैं । जैसे सूरज के बिना प्रकृति नष्ट हो जाती है और चाँद के बिना फूलों का जीवन नष्ट हो जाता है, उसी प्रकार नवयुवक तथा नवयुवतियों के बिना समाज की व्यवस्था नष्ट हो जाएगी । समाज में दोनों का स्थान बराबर है । यह नवशक्ति समाज रूपी भवन की नींव है । नवशक्ति एक ऐसा वृक्ष है जिसमें हर तरह के फूल खिलते हैं, जो एक दूसरे से भिन्न हैं ।

आज का युग क्रान्ति तथा प्रगति का युग कहलाता है । समाज को नव विचारों के साँचे में ढालकर उसका परिवर्तन करना यह जिम्मेदारी अब अंधश्रद्धा और पुराने विचार वाले नरनारियों पर निर्भर नहीं है । अब वह समाज के युवा और युवतियों पर निर्भर है । आज हम देखते हैं कि दुनियाँ बड़ी तेजी से भाग रही है; और हम पुराने विचारों को लेकर उन्हींमें उलझ रहे हैं । उन सारे रस्मरिवाजों को त्याग कर आनेवाले कल का इन्तजार अब उनके हाथ में है जो समाज में नवशक्ति हैं यानी नवयुवक और नवयुवतियाँ । आज क्या कम मुसीबतें हमारे सामने रखी हैं । पैदा होने से लेकर शादी तक हम समाज के पुराने नियमों का उल्लंघन नहीं करते, उन सारे दकियानूसी रवैयों को तोड़कर स्वतन्त्र रूप से संचार करने वाले नवयुवक-नवयुतियाँ आगे नहीं आएँगे तो इसी तरह यह समाज चलता रहेगा । अब जमाना बदल गया है । समाज को बदल डालो, यही मन्त्र आज युवाशक्तियों से मिलता है । इसी शक्ति द्वारा समाज के बुरे विचार और पुराने रीति-रिवाज को बदलना होगा । एक दूसरे की सहायता के बिना काम असम्भव है । इसलिए समाज में नवयुवक और नवयुवतियों का संगठन होना आवश्यक है ।

घर की परिस्थिति :

आज समाज में शिक्षा को बड़ा महत्व प्राप्त हुआ है । हर माता-पिता अपने युवक और युवतियों के

लिए अच्छी से अच्छी चीजें माँगता है । शादी–ब्याह के मामले में दहेज लेना–देना यह बड़ी जटिल समस्या समाज में वायु की तरह फैल चुकी है । इन रीतिरिवाजों को तोड़कर नवयुवक और नवयुवतियाँ अपनी शिक्षा को समाज में प्रस्थापित करें, इसका कोई बुरा असर नहीं होगा । पुराने समय में नारी को घर से बाहर नहीं निकलने देते थे ; लेकिन आज यह परिस्थिति बिलकुल बदल गई है । यह क्रान्ति नवयुवक और शिक्षा–प्रणाली के कारण हुई है । नारी समान हक प्राप्त कर चुकी है ! आज की बढ़ती महँगाई में युवकों को ही जैसा चाहे वैसा काम नहीं मिलता तब अगर उसकी जीवन–संगिनी कोई डिप्लोमा या कोई काम जानती है तो घर बैठे ही अपने जीवन–साथी का सहारा बन कर घर की परिस्थिति सुधार सकती है ।

यह रहा शिक्षा–प्रणाली का उपयोग । अगर युवक और युवती को शिक्षा न मिले, तो वह आने वाली संतान की परविरिश कैसे कर सकती है । इसलिए शिक्षा–प्रणाली समाज में अच्छी स्थिति प्रस्थापित कर सकती है । बच्चों का पढ़ना–लिखना और उनका पालन–पोषण सब जिम्मेदारियाँ इन्हीं के कन्धों पर है । वे स्वयं समाज के युवा–युवतियों के लिए अपना सर्वस्व ज्ञान बाँट सकती हैं । इतना ही नहीं वह नई पीढ़ी को सुसंस्कृत बनाने में खुद सहायक हो सकती हैं । कहा गया है कि पुत्र की प्रथम गुरु माता ही होती है और समाज को दृढ़ बना सकती है । शिक्षा-प्रणाली में सुधार करके वह अपने ज्ञान द्वारा गरीब और होनहार युवक–युवतियों को आगे ला सकती है और देश को महान बनाने में समाज के इन्हीं युवा–युवतियों से हम उम्मीद रखते हैं । समाज की विधवा को विवाह से बंचित रखना तथा अन्धश्रद्धा को तोड़ना ही होगा । यह सारा कार्य आनेवाले आज तथा कल की पीढ़ियों पर है । मतलब युवा–युवती पर निर्भर है । जब-जब देश ने आगे कदम बढ़ाया, तब-तब युवा युवतियों ने अपने प्राण गँवाए । हमें उनके मार्ग पर चलना है, जो आज भी हमें याद दिलाते हैं । जैसे भगतसिंह, बाबुगेनू, लाला-लाजपतराय, मदनलाल धींग्रा, झाँसी की रानी, पद्मिनी, अहल्याबाई वगैरह का नाम लेने से हमारे समाज का उद्धार होगा, उनके आदर्श कार्यों पर नजर रखते हुए उनका अनुकरण करना चाहिए ।

समाज-सुधार :

आज समाज में चारों ओर भ्रष्टाचार और जटिल समस्याओं का भूत समाज के लोगों पर सवार है । इनको तोड़ना नवयुवती–नवयुवकों का कर्तव्य है । सर्व प्रथम स्वावलम्बी बनना चाहिए, एक दूसरे की मदद करना तथा आगे का मार्ग दिखाना यही प्रेम-भावना अगर समाज के हर युवा–युवती के मन में बस जाए, तो समाज का कल्याण होगा, हमारा देश एक शक्तिशाली देश बन सकता है, हम रामराज्य भी प्रस्थापित कर सकते हैं । लेकिन यह तब संभव होगा, जब सारे नवयुवक और नवयुवतियाँ आपस के भेदभाव भूलकर संगठन के अभाव को तोड़ें और 'हम सब एक हैं' इस विचार से आनेवाले दिनों के लिए संगठन प्रस्थापित करें तो मुसीबतों का, बुरे रीति–रिंवाजों का भ्रष्टाचार तथा विधवाओं को विडम्बना या समाज में फैले हुए बुरे रोगों का हम निर्मूलन कर सकते हैं ।

सादगी और स्वदेश-प्रेम :

आज भी हमारे समाज में अपने महापुरुषों के सिद्धांतों के आधार पर हमें उनके पथ पर चलना तथा किसी दीन–हीन–अनाथ भाई को सहारा देना अपना कर्तव्य समझकर बराबरी का स्थान प्राप्त कराना है । उनके महान विचारों और आदर्श प्रेम द्वारा हमें स्फूर्ति तथा प्रेरणा मिलती है । हमें यह निश्चय करना है कि आनेवाली कठिनाइयों का मुकाबला करते हुए हम आगे बढ़ेंगे । यही विचार आज के नवयुवक एवं नवयुवतियाँ समाज के सामने जोर–शोर से रखें कि सादी रहनी और उच्च विचारसरनी ही सबसे बड़ा विचार–धन है । उसके प्रति हमें जागरूक रहना होगा ।

* * *

द्वारा—श्री जे० जी० भारतिया
सिविल जज
मु० पो०—शिन्नर
जिला–नाशिक (महाराष्ट्र)

जीवन-परक :

मानव-सृष्टि और श्रम

श्रीमती रश्मि अग्रवाल
बी० ए०

लेखिका

[आज हम श्रम को हल्का समझते हैं और आगे बढ़ने का उपक्रम करते हैं । इस उल्टी क्रिया से क्यों और कैसे मुक्ति पाकर देश की और अपनी दशा सुधार सकते हैं, इसे आप इस लेख में पढ़िए और विश्वबन्धुत्व की भावना को सुदृढ़ बनाने के लिए श्रम को अपनाइए -सम्पादक]

सृष्टि की रचना के विषय में भूशास्त्रियों में मतभेद हो सकता है, किन्तु इस बारे में सभी एकमत हैं कि सृष्टि का वर्तमान स्वरूप निश्चित ही मानव का सम्मिलित प्रयास है ।

एक और एक जुड़कर दो होते हैं, पर जहाँ एक-एक ऊपर नीचे नहीं, साथ में होते हैं वहाँ ग्यारह होते हैं । किसी टुकड़ी का सैनिक दूसरे स्थान पर की एक पूरी टुकड़ी के साथ तैनात देखते ही सम्मिलित शक्ति का अन्दाजा आपको हो आता है ।

जाँचिए-परखिए :

मानव देहधारी सभी प्राणियों की अपनी आवश्यताओं की शक्ति हेतु श्रम करना पड़ता है, परन्तु क्या कभी यह आपने जाँचा-परखा कि आप जितनी मेहनत कर रहे हैं उससे कहीं अधिक आपकी क्षमता है और यदि है तो विचारिए कि पूरी ताकत क्यों काम नहीं आ रही है । कारणों पर ध्यान देने से आपका मार्ग प्रशस्त होगा, देश को एक नई दिशा मिलेगी । उसी तरह कहीं इसका उल्टा तो नहीं कि आप पर अत्यधिक श्रम का बोझा टूट पड़ा हो और आप अपने इर्द-गिर्द यह कहते पाए गए हों कि आठ के बदले बारह घंटा काम कर रहा हूँ और जाँच करने पर आठ घंटे काम करने वालों से भी आपका योगदान कम निकले । कहने का अभिप्राय सिर्फ इतना है कि चारों ओर से एक ही नारा 'आराम हराम है' सुनते-सुनते दिशाशून्य तो नहीं हो गए हैं ।

काम में मन नहीं लगने का एक कारण कभी-कभी आपकी रुचि के विपरीत कार्य भी हो सकता हैं, शारीरिक अक्षमता भी तथा जिन लोगों के मध्य आप कार्यरत हैं वहाँ परायापन महसूस करते हों , आपको घर-गृहस्थी के आर्थिक बोझ ने जकड़ रखा हो, ऐसी परिस्थितियों में आप कहेंगे कि मैं क्या कर सकता हूँ । अपने को निर्दोष साबित करेंगे, परन्तु क्या कभी आपने अपने अन्तर में झाँकने का प्रयास किया कि आपने किसी असहाय को ऐसी परिस्थितियों में जीनेके लिए विवश तो नहीं कर दिया ।

वे डायरी के पृष्ठ पर अंकित लाइनों को पढ़ते हैं :—

जिन्दगी नाम है रवानी का,
क्या थमेगा बहाव पानी का ।

उनकी आँखें शब्दों पर ठहर जाती हैं । सोचते हैं है कि किसी कवि की बकवास, लिखने में क्या है ? करना पड़े तो मालूम हो । और जो बार-बार पढ़ते हैं, मुड़कर देखते हैं, कहाँ से गलत पगडंडी पर आ गए, मेहनत करते हैं फिर भी आकांक्षाएँ क्यों अधूरी ? इसी उधेड़-बुन में ही उलझा हुआ धागा पा जाते हैं ।

सूझबूझ :

मान लिया कि आप शारीरिक श्रम खूब करते हैं पर मस्तिष्क का उपयोग भी साथ में करते चलिए, नित्य नवीन प्रयोग करते रहिए । श्रम और व्यय किस प्रकार कम किया जा सकता है, इसका उत्तरदायित्व आप पर

नहीं, उसके लिए अलग महकमा है। सूझबूझ और अनुभव किसी भी प्रतिष्ठान या आपके स्वयं के कारोबार में उससे अधिक महत्व रखते हैं। लकीर के फकीर मत बनिए। जो बताया है, सिर्फ वही मत करते रहिए।

देखी हवा जिधर की उधर हर कोई चला,
अपनी रविश पै चलके दिखाये तो बात है।

कभी ऐसा भी होता है कि अपनी रविश पर चलते समय बेहतरीन प्रयोग आपका होता है, बड़े दिनों की चाह आपके हाथ लगती है, आप उछलते-कूदते हैं, अखबारों की सुर्खियों में छपते हैं, पर मानवता पीढ़ियों तक आपके नाम पर थूकती रहे और आपका अनवरत श्रम ऐसा हाहाकार न मचा दे, विध्वंस की ज्वालाएँ न प्रगटा दे। पीछे मुड़कर देखते हैं तो वस्त्रहीन मानव-आहार की खोज में दिशाशून्य-सा जंगलों में हिंसक प्राणियों से बचता हुआ स्वयं भी हिंसक का प्रतिरूप-सा दौड़ता—भागता हुआ (बेघर) दिखाई पड़ता है। तत्पश्चात् धीरे-धीरे सभ्यता के विकास के साथ उसका सुघड़ रूप सामने आता है। आपका दावा है कि आपने विशालकाय मशीनों का निर्माण किया है। सर्वत्र यन्त्रीकरण हो गया है। आप सर्वत्र शीघ्रता की ओर अग्रसर हो रहे हैं, परन्तु क्या फिर भी मानवता जिस वस्तु की खोज के लिए सदियों से भटक रही थी, वह उसे मिली? नहीं, तो फिर ठहरिए, सोचिए मंजिल कहाँ चली गई, किनारा क्यों ओझल हो गया? आप जमीन पर खेती करते-करते समुद्र पर भी खेती करने लगे हैं, खाने की वस्तुओं के छिलके, डंठल, घास, पाती सभी में से खाद्य पदार्थ बनाने लगे हैं, फिर भी दीन की दुनिया में जाइए और देखिए, अनाज कहाँ गया?

औषधियों का निर्माण हुआ, मानवता आश्वस्त हुई,
पर हाय यह क्या, दवा ही दर्द हुई।

निष्ठा और धैर्य्य :

तस्करी और मिलावट के कार्य भी पर्याप्त श्रम चाहते हैं, मस्तिष्क की पूरी कसरत होती है। फिर भी आपका प्रयास मानवता पर धब्बा लगाने वाले किसी सम्मिलित श्रम में योगदान तो नहीं देता। आग ज्वालामुखी में भी होती है और दीपशिखा में भी—एक विध्वंसक, दूसरी सृजनात्मक।

धैर्य और सहनशीलता परिश्रम में उतना ही अनिवार्य है जितनी कि आपकी लगन। वर्षों की अनवरत साधना से ही इतिहास बनता है।

अर्जुन-सा निशानबाज, सिकन्दर-सा योद्धा क्या एक दिन में बना जा सकता है। आर्यभट्ट, पतंजलि, पाणिनी ने क्या वर्षों तपस्या नहीं की? कालिदास, तुलसी-जैसों की प्रशंसा करते-करते आप नहीं थकते, परन्तु उनकी निष्ठा के प्रति उनका धैर्य देखकर आपका विश्वास जरूर लड़खड़ाने लगता है। वरना आप भी वाल्मीकि और एकलव्य बन सकते हैं।

चाँदनी में नहाया हुआ ताजमहल क्यों आपको रोमांचित कर देता है? देलवाड़ा के मन्दिरों की भव्य शिल्पकलाएँ क्यों आपको स्तंभित कर देती हैं? क्यों अजन्ता-ऐलोरा की गुफाओं की चित्रकारी, मूर्तिकारी, आपकी उंगलियाँ दाँतों तक ले जाती हैं? है आपके पास इनका जवाब या फिर आप मात्र छैनी की खटखट में ही खोकर रह गए?

क्या भोर का तारा आपसे कुछ नहीं कहता, क्या चींचीं करती चिड़ियाँ डाल-डाल पर फुदकती हुई आपसे कुछ नहीं कहतीं, क्या नन्हीं-सी हस्ती चींटी आपके पैरों को नहीं गुदगुदाती, क्या मध्याह्न का तपता हुआ भास्कर अपनी प्रचंड रश्मियों से आपके भीतर नहीं झाँकता, झरझर बहते झरने, कलकल करती शैल-पुत्रियाँ, उत्ताल तरंगों से तरंगित कभी रौद्र कभी शान्त सागर आपके कर्णों में कोई तरंग नहीं पैदा करता है।

मेहनत कीजिए :

सुबह-शाम होती रहेगी। क्षणभंगुर जीवन की कलिका मुरझा न जाए उससे पहले ही सचेत हो जाइए। चाहे राग में रहिए या बिराग में, दोनों में ही श्रम-प्राप्ति की आवश्यकता है। वरना—

मौत ही इंसान की दुश्मन नहीं, जिंदगी भी जान लेकर जा सकती है। विश्वबन्धुत्व की भावना को साकार करते हुए मेहनत कीजिए, मिल-बाँटकर खाइए।

इक न इक शम्मां अंधेरे में जलाये रखिए,
जो सुबह होने को है, माहौल बनाये रखिए।

१६, साधना सोसायटी
स्टेडियम के सामने, अहमदाबाद ३८०००९

मैं अखबार क्यों खरीदता हूँ?

श्री राजेन्द्रसिंह सरोज

जी हाँ, न मैं माँग कर खाता हूँ और न माँग कर पहनता हूँ। कारण मैं माँगने के मामले में बहुत शर्मीला हूँ। इसीलिए मैं माँग कर पहनता भी नहीं। जागरूक नागरिक होने के कारण देश-विदेश की खबरें जानना अत्यन्त आवश्यक है। इसलिए अपना अखबार खरीदता हूँ। स्वयं पढ़ता हूँ। अपना ज्ञानवर्धन करने के बाद अखबार दूसरों को पढ़ने के लिए भी दे देता हूँ। अब आप कहेंगे-यह कैसा अजीब आदमी है? अखबार कोई बहुत मँहगा थोड़े ही आता है, जो नहीं खरीदा जा सके? उसे तो कोई भी खरीद सकता है। फिर यह व्यक्ति इतना रोब क्यों झाड़ रहा है।

राष्ट्रीय गुण :

आपका सोचना और कहना बिल्कुल ठीक है। लेकिन बन्धु, आप स्वयं अखबार खरीद कर नहीं, वरन पड़ोस से माँग कर पढ़ते हैं। बताइए, यह सच है, या नहीं? शर्माइए नहीं। यह सब तो चला ही करता है। आखिर पड़ोसी भी तो सुबह से शाम तक आप से कुछ न कुछ माँग कर ले जाते हैं। खैर, यह तो पड़ोसी धर्म है। यदि आप माँग कर ही पढ़ने के आदी हैं और अपनी आदत नहीं छोड़ना चाहते हैं, तो फिर मुझे आप से कुछ नहीं कहना-सुनना है। आखिर यह हम लोगों का राष्ट्रीय गुण जो ठहरा।

जो भी अखबार खरीदता है, वह किसी न किसी मतलब से ही खरीदता है। धनी व्यक्ति तो मात्र अपना रौब जमाने के लिए तीन-चार अखबार खरीदता है। इस मामले में हमारी बगल में रहने वाले इन्टर कालेज के आचार्य बहुत 'लकी' हैं। कालेज लायब्रेरी में आने वाले सब अखबार उनके घर आते हैं और उसके बाद नौकर आ कर कालेज ले जाता है। थोड़ा बहुत घर का भी काम कर जाता है। घर पर सब लोग अपनी-अपनी पढ़ाई पूरी कर लेते हैं और उसे कहते हैं-"हर्र लगे न फिटकरी, रंग भी चोखा आये"। बिना पैसे के ही समाचार जान लेते हैं। अपने पद का लाभ उठाना क्या बुरा है? कौन नहीं उठा रहा है? रिटायर हो जाने के बाद अखरेगा। तब पता पड़ेगा हाँ, तो बन्धु, मध्यम वर्ग का पाठक एक ही अखबार खरीद कर अपनी इच्छा पूरी कर लेता है और उसे यह एक अखबार खरीदने के लिए अपने घरेलू बजट में बहुत काट-छाँट करनी पड़ती है। यह मँहगा पीड़ित भुक्तभोगी गृहस्वामी ही जानता है। मैं अखबार क्यों खरीदता हूँ? इसके भी कई कारण हैं। इन कारणों से आप लोग भी परिचित हो जाइए।

समय काटना :

सबसे पहला कारण मैं अखबार इसलिए खरीदता हूँ, कि देश, प्रदेश में हो रही नवीन घटनाओं की जानकारी सुबह चाय की चुस्की के साथ प्राप्त हो जाए। रेडियो पर अपने राम को विश्वास नहीं और फिर बिजली का क्या भरोसा? इन खबरों के सहारे आफिस में समय आसानी से कट जाता है। वरना काम करे-तो कमर ही टेढ़ी हो जाएगी।

मैं अखबार इसलिए खरीदता हूँ कि मुझमें सुबह के समय लायब्रेरी तक जाने का साहस भी नहीं है। पति बन जाने के बाद घर के कई छोटे-मोटे काम गले आ पड़ते हैं। पति-वर्ग इन कामों को भली-भाँति जानता है। जो लोग पुस्तकालय में जाकर अखबार पढ़ते हैं। वे जानते हैं कि अखबारों पर पाठक ऐसे टूटते हैं, जैसे गुड़ पर मक्खियाँ। कोई भी आराम से अखबार नहीं पढ़ पाता है। जो अखबार आप अपने

कमरे में आध घन्टे में पढ़ कर, घर के कामों में पत्नी का हाथ बँटा सकते हैं, उसी अखबार का पैसा बचाने के चक्कर में लायब्रेरी में पूरा पढ़ने के लिए कम से कम एक घन्टा तक लग जाता है। और वह भी तब जब आपको पूरा अखबार किस्मत से मिल जाए। वरना अखबार के पन्ने कई आदमियों के हाथ में होते हैं। अखबार का अर्थ ही दस जगह बिखरा होता है। इसी कारण अखबार फट भी जाता है। अगर भारी-भरकम, लम्बी—चौड़ी फाइल बनी हो तो फाइल भी टूटने लगती है। फाइल का बोझ भी बहुत होता है। फिर बन्धु, जाने के लिए तैयार होना खलता है। आफिस जाने में भी देर हो सकती है।

अपने अखबार में से मैं मनचाही कटिंग कर सकता हूँ। कोई माई का लाल मुझे ऐसा करने से नहीं रोक सकता है? दूसरे के अखबार को काट कर तो देखिए वह आप को काटने पर आमादा हो जाएगा।

शौक की बात :

मैं अखबार इसलिए खरीदता हूँ, कि उसमें वैवाहिक विज्ञापनों में से किसी एक के साथ पत्र—व्यवहार करता हूँ। समय कट जाता है। और अच्छी, सुन्दर, सुशील लड़की से शादी भी करना चाहता हूँ। कई वर्षों से अपनी शादी की कोशिश कर रहा हूँ। ग्रह—नक्षत्रों के कारण अब तक अकेला ही बना हूँ। अलबत्ता मेरे प्राइवेट अलबम में लड़कियों के फोटो काफी मात्रा में एकत्र हो गए हैं। इन चित्रों को दिखा-दिखा कर अपने चित्रों को जलाता हूँ। आप तो पढ़ कर ही जल—भुन कर कबाब हो गए होंगे। अवकाश के समय इन खूबसूरत चित्रों को देख दिल बहलाने की असफल कोशिश भी करता हूँ। आप भी यह शौक अपनाकर देखिए। बस, जरा भाभी से छुपाकर रखिएगा।

मैं अखबार इसलिए भी खरीदता हूँ कि उसके रविवारीय परिशिष्ट में तरह-तरह के स्वादिष्ट व्यञ्जन बनाने की विधियाँ बताई जाती हैं। और फिर अ-पत्नी वाले मित्र के साथ बैठकर कभी टमाटर की बरफी, पकोड़ी तो कभी गाजर का मुरब्बा बनवाता हूँ। सामान उसका, अखबारी ज्ञान मेरा। इस तरह मैं मुफ्त में ही पाक-कला में निष्णात हो रहा हूँ घर में बनाने में पैसा नहीं लगेगा?

अखबार में छपे मोहक, रोचक विज्ञापन देखने में भी मुझे आनन्द आता है। मैं आपको सफेद बाल काले करने और बालों को समूल नष्ट करने का उपाय बता सकता हूँ। आप की थकावट दूर कर स्फूर्ति प्रदान करने वाला टानिक भी बता सकता हूँ। स्वादिष्ट पकवान पकाने के लिए कौन-सा घी आपको प्रयोग करना चाहिए, जिससे यार लोग अंगुलियाँ चाटते रह जाएँ? आपकी प्रेमिका को कौन सी साइकिल अच्छी लगती है, जिस पर बैठकर आपको उससे रोमांस लड़ाने जाना चाहिए। इन सबकी जानकारी अखबार खरीदने के कारण मैं आपको दे सकता हूँ। खरीदना आपका काम है?

आपसी सम्बन्ध :

मैं अपना अखबार अड़ोसी-पड़ोसी को पढ़ने के लिए देता हूँ। शाम को वापस माँगने के बहाने उनके घर चला जाता हूँ। कभी-कभी पड़ोसी अखबार लौटाने के साथ चाय भी पिला देते हैं। इस बहाने हमारे आपसी सम्बन्ध भी मधुर बने हुए हैं।

अखबार खरीदने की आदत के कारण मुझे 'डेली पैसेंजरी' में काफी आराम मिलता है। बैठने के लिए जगह मिल जाती है। कभी-कभी शिष्टाचार वश मुँह चलाने को भी कुछ मिल जाता है। अगर कुछ नहीं मिल पाता है और मुझसे बिछुड़ता है, तो वह है, मेरा अपना अखबार।

अखबार खरीदने से 'हॉकर' को कमीशन मिलता है। वरना वह भूखों मर जायें। और मैं यह सहन नहीं कर सकता हूँ कि मेरे अखबार नहीं खरीदने से एक आदमी भूखों मरे। आप भले ही उसे छोटी बात समझ कर अपने पैसे बचा लें, लेकिन मैं नहीं।

ऊपर बताए गए कारणों के अतिरिक्त अखबार अंगीठी में जलाने, बेच कर अर्थ-लाभ करने के काम तथा हिसाब करने के काम भी आता है। पहले दोनों काम आपके लिए अत्यन्त लाभदायक हैं।

कहिए न, अखबार खरीदने से ढेरों लाभ! तो फिर देर किस बात की, कर दीजिए शुरू एक अदद अखबार खरीदना।

* * *

मकान नं. १९५, तीसरा मार्ग,
राजेन्द्र नगर, लखनऊ—२२७००५

बोध-परक

अनासक्ति के प्रहरी वे महाकवि

श्री राजेन्द्रप्रसाद जन
एडवोकेट.

बूंदी (राजस्थान) के स्वनाम-धन्य, माँ सरस्वती पुत्र स्वर्गीय महाकवि सूर्यमल जी ने अतीत के उस अनजाने दिन, अनपहिचाने क्षण, शहनाइयों के साथ ही अपनी प्रेयसी का वरण कर अपना घर सजाया था–"आयुष्मान भव–जोड़ी, अमर रहे" के मधुर आशीर्वाद युगल-जोड़ी को मिले थे। समधुर दाम्पत्य जीवन चलता रहा–समय सरकता रहा कि महाकवि की जीवन सहचरी महाप्रयाण कर गई। कवि-कुटीर को विषाद ने आ घेरा, पर कवि को न हर्ष न विषाद, अनासक्ति का वह असाधारण महान आराधक, समभाव में दूर क्षितिज पर दृष्टि जमाए, चिन्तन एवं मनन के धरातल पर खड़ा आकाश में व्याप्त अज्ञात स्वर–लहरी सुनने में व्यस्त था।

शव–यात्रा की तैयारी पूर्ण हो चुकी थी, पर कवि शांत-स्थिर–मौन ... सहसा कवि-वाणी मुखरित हुई—

"शव-यात्रा ऐसे नहीं होगी। वधू
के वेश में हर्ष एवं उल्लास
मिश्रित, शहनाइयों के मधुर
स्वर–लहरी के साये में इन्होंने
इस देह में प्रवेश किया
था तो अंतिम यात्रा भी
उसी परिवेश में होगी।"

और....और...महाकवि ने वर–वेश धारण किया आगे वह, पीछे वधू के परिवेश में उनकी जीवन–सहचरी का पार्थिव शरीर और पीछे विशाल शोकाकुल जन-समुदाय।

ज्यों ही जीवन सहचरी का पार्थिव शरीर अग्नि को समर्पित करने को चिता पर रखा गया और महाकवि की "विरक्त वाणी" ने लाड़ली जी का घूंघट खोला। वे परिवेश में श्मशान भूमि पर फूट पड़ां तो इतिहास के पृष्ठ साक्षी हैं कि उस क्षण, धरा का कण–कण अश्रु–कण बन गया था, पर दुर्भाग्य उस श्मशान-धरा का जो जीवन में एक बार, एक प्रेयसी के प्रियतम के अश्रु-कण पान से वञ्चित रही थी। विश्व में धरा की यह प्रथम एवं अंतिम ऐतिहासिक पराजय थी।

विरक्ति, वेदना, अनासक्ति, निस्पृहता, समदृष्टि, समदर्शिता एवं भावुकता के मिले–जुले धरातल पर, अनासक्ति अखंड अक्षरों से अंकित, मेरे देश की पावन संस्कृति का प्रतीक, इतिहास का यह स्वर्णिम पृष्ठ तभी से मोह–जन्य आसक्त प्राणियों को मार्गदर्शन देता चला आ रहा है कि जीवन एवं मृत्यु के प्रति समदर्शी बना मानव ही समदृष्टि प्राप्त कर सकता है। ❁भवानीमण्डी

(पृष्ठ २८ का शेषांश)

निर्मित चित्र हैं, जिन्हें मुद्रा के बदले नहीं बल्कि होटल में पी गई मदिरा और भोजन के बिल के पैसे के रूप में प्राप्त किए गए थे। उक्त होटल वहाँ के कलाकारों, अभिनेताओं, अभिनेत्रियों का प्रिय होटल रहा है और आज भी है। इन चित्रों का संग्रह होटल के तत्कालीन मालिक एम० फ्रेकोइस ने किया था। रूने अपनी दुरदर्शिता के कारण कलाकारों से उनके होटल के बिलों के पेमेंट रूप में उनके चित्र लेने आरम्भ कर दिए थे। आगे चलकर जिनका मूल्य लगभग ९० लाख रुपया आंका गया। फ्रेकोइस रू के इस संग्रह से कुछ चित्र चोरी भी चले गए थे, जो बाद में मिल गए थे।

पश्चिमी कला–समीक्षक आंद्रे वदेत भी अपनी लिखी हुई पुस्तकों में अपने हस्ताक्षर करके चित्रकारों को भेंट दिया करता था। इस भेंट के बदले वह चित्रकारों से उनके चित्रों की माँग किया करता था। प्रसिद्ध चित्रकार छिगाल, ब्राक और पिकासो से भी उसने अपनी पुस्तक भेंट के बदले चित्र प्राप्त किए थे। फलस्वरूप उसके पास लाखों की राशि के चित्र इकट्ठा हो गए।

श्रम अथवा किसी अन्य वस्तु से चित्रकृतियों का यह दिलचस्प आदान—प्रदान निश्चय ही मनोरंजक रहा है और विश्व के किसी न किसी कोने में आज भी जारी है। ❁

बी—४. जनता कालोनी,
उदयपुर- ३०२००४

व्यक्ति-परिचय

श्री विजय नारायण जी सोमानी

राजस्थान के नागौर जिलान्तर्गत मौलासर गाँव में स्व० सेठ भगवानबख्श जी अपनी दयालुता और दानवीरता के कारण बहुत ही सर्वप्रिय बन गए थे। उन्होंने गाँव में अतिथिशाला, औषधालय, पुस्तकालय, वाचनालय, विद्यालय, अन्न क्षेत्र आदि खोलकर गाँव की तथा आस-पास के क्षेत्रों की बड़ी सेवा की थी, बड़ा ही प्रेम सम्पादित किया था। उनका दरवाजा दीन-दुखियों के लिए सदा खुला रहता था। प्रत्यक्ष दान की अपेक्षा गुप्तदान देने में सेठ जी को बड़ा संतोष मिलता था। और वह जानते थे कि—

तुलसी पञ्छिा के पिये, घटे न सरिता-नीर।
दान किये धन ना घटे, जो सहाय रघुवीर॥

सेठ जी का जीवन सादा और विचार ऊँचे थे। वाणी में नम्रता और व्यवहार में दक्षता थी। उनके संनिष्ठ पुत्र श्री रामदयाल जी सोमानी ने सर्वप्रथम अपना व्यापार-व्यवसाय बम्बई में आरम्भ किया। वे भी अपने पिता की ही भाँति दानी, उदार और सेवापरायण थे। ये अभी जीवित हैं। इनके कनिष्ठ पुत्र श्री विजयनारायण सोमानी हैं। आपकी माता का नाम श्रीमती विरदी देवी है।

श्री विजयनाराण जी एक नीतिमान, धर्मप्रेमी समाज-सेवी उदार और कुशल युवक हैं। उनको ये गुण परंपरा से मिले हैं। आपने बम्बई में रहकर उच्च शिक्षा प्राप्त की है। तत्पश्चात् आपने जामनगर में बांगड़-सोमानी ग्रूप द्वारा प्रस्थापित सीमेन्ट कम्पनी का कार्य-भार सन् १९५० ई० में सम्हाला। इसी कम्पनी ने सन् १९६१ ई० में अहमदाबाद में एस्बेस्टोज और सीमेन्ट के चद्दर बनाने की फैक्टरी खोली और उसका संचालन-भार आपको सौंपा गया। कम्पनी का नाम दिग्विजय सीमेन्ट फैक्ट्री रखा गया। थोड़े समय में ही इस कम्पनी ने बड़ा नाम कमाया। इस सीमेन्ट फैक्ट्री से सटे हुए दिग्विजय नगर का निर्माण करवाकर आपने उसे कर्मचारी-नगर तो बनाया ही है, वह शैक्षणिक, सामाजिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक प्रवृत्तियों का भी सुन्दर केन्द्र है। यहाँ मालिक और कर्मचारी-श्रमिक आदि का बड़ा ही स्नेह-पूर्ण सम्बन्ध है, बड़ी आत्मीयता दृष्टिगोचर होती है। आपके सत्प्रयत्न से उस गाँव में लायन्स क्लब की भी स्थापना हुई है, जो सुख्यात है।

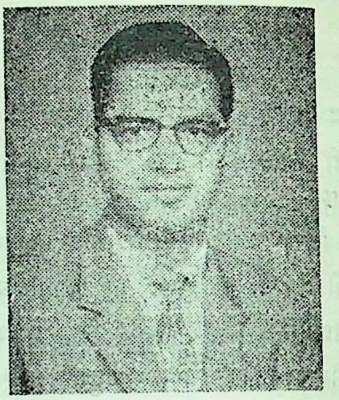

श्री सोमानी जी राजस्थान सेवा समिति, अहमदाबाद के अध्यक्ष-पद पर छः वर्षों तक बड़ी तत्परता से कार्य कर चुके हैं। कम बोलना और अधिक करना आपके स्वभाव की विशेषता है। आप बड़े मिलनसार और सहृदय हैं। आपके अध्यक्षता-काल में सेवा-समिति की ओर से मुकेश नाइट का बड़ा भव्य आयोजन हुआ था। बाढ़ से ध्वस्त कारणगढ़ के ग्राम-निर्माण कराने और बाघरोल में २५ मकान बनवाने में आपने बड़ी रुचि और तत्परता परिचय दिया।

श्री सोमानी जी की धर्मपत्नी श्रीमती गीता देवी एक आज्ञाकारिणी, विनम्र, भद्र और दक्ष महिला हैं। आपके एक पुत्र और दो पूत्रियाँ हैं। सभी में वंशगत विशेषताएँ भरी हुई हैं।

आपके ही कार्य-काल में राजस्थान सेवा समिति की ओर से विशाल लाजपतराय अस्पताल की नींव पड़ी।

मैंने एक बार श्री सोमानी जी से उनकी सफलता का रहस्य बताने को कहा, तो आपने बड़ी ही नम्रता

ने उत्तर दिया कि मैंने लोगों की ईमानदारी, कार्यशक्ति और तत्परता पर भरोसा किया है, उसे प्रोत्साहन दिया है। इसे ही हमारी सफलता का रहस्य कहा जा सकता है। ईश्वर की कृपा तो मेरी मदद में रही ही है।

आपने भारत में उद्योगों की उन्नति के बारे में अपनी राय प्रकट करते हुए कहा कि सरकार ने छोटे उद्योगों के विकास में अपनी कुशलता का परिचय नहीं दिया, यह खेद की बात है। यदि छोटे उद्योगों द्वारा बड़े उद्योगों की मदद की जाए, तो इस क्षेत्र में बड़ी उन्नति हो सकती है। आज बड़े उद्योग बिजली, बैगन हड़ताल, पूँजी और संगठन से पीड़ित हैं, तो छोटे उद्योग कच्चे माल और पूंजी की कमी के शिकार बने हैं। जिससे देश के विकास में अवरोध पैदा हो गया है।

आपने अपनी विदेश-यात्रा का अनुभव सुनाते हुए कहा कि हमारे देश के लोग जन्म से ही श्रद्धालु, ईमानदार और व्यावहारिक होते हैं। ये अपने इन्हीं गुणों के कारण अमेरिका, ब्रिटेन, अफ्रिका आदि देशों में उन्नति कर रहे हैं। फिर भी ये अपने देश में परिस्थिति और विवशता के कारण पथ भ्रष्ट हो जाते हैं।

आपने औद्योगिक विकास के बारे में अपना विचार प्रकट करते हुए कहा कि सरकार और उद्योगपति ये दोनों एक दूसरे का विश्वास नहीं करते। यदि ये दोनों मिलकर काम करने लगेंगे, तो देश की उन्नति में बड़ा बल मिलेगा।

श्री सोमानी जी एक स्वतन्त्रचेता युवक उद्योगपति हैं। अधिकतर बम्बई में रहते हैं और अपने इधर-उधर अनेक स्थानों पर फैले हुए कारोबार की कुशलता से निगरानी करते हैं। देश को उनसे बड़ी आशा है।

— एक समाज प्रेमी

रंगायन

लोकसंस्कृति तथा लोककला का हिंदी
मासिक पत्र। वार्षिक मूल्य ७ रुपये
सम्पादक : डा० महेन्द्र भानावत
लोककला मण्डल, उदयपुर

विज्ञान-परक

—पाँच और चार एक—

पर मेहरबानो कदरदानो! मुझे फिल्मी-आदमी मत समझ लीजिएगा। मैं तो मारवाड़ के एक गाँव का गैरफिल्मी आदमी हूँ और ऊपर वाला शीर्षक फिर भी हकीकतन सही है। हाँ, चौंका देने वाला अवश्य ही है कि पाँच माँ और चार बापों का बेटा एक केवल एक। यह चमत्कार रचा है पेन्सिल्वेनिया स्टेट कॉलेज के दो जीव-विज्ञानियों डॉ. राबर्ट एम पीटर्स तथा डॉ क्लेमेंट एल मार्कर्ट—(दोनों प्रोफेसर) ने। इन प्राध्यापक-द्वय ने अपने प्रयोगों को विस्तार से 'जर्नल ऑफ हेरिडिटी' के मार्च-अप्रैल, ८० के संयुक्तांक में बताया है। उन्होंने पहले चार विभिन्न चुहियों के गर्भ से भ्रूण हटाए, फिर उन्हें २४ घण्टे तक अपनी प्रयोगशाला की एक रकाबी में एक साथ रखा, जो धीरे-धीरे एकमेक होकर बड़े भ्रूण-पिण्ड में बदल गए, जिसे ब्लास्टोसिस्ट कहा गया। इस ब्लास्टोसिस्ट-भ्रूण को फिर एक धात्री चुहिया के गर्भ में स्थापित किया गया और समय आने पर एक विलक्षण मूषक महाराज अवतरित हुए—अपने शरीर पर पाँच रंगों के विशेष छींटे या धब्बे लेकर। आप कहेंगे 'यह कैसे' तो जनाब—जब यह चूहा भाई पाँच माताओं और चार पिताओं के सहयोग से इस मृत्यु लोक में पहुँचा, तो वह उन सबका-एहसान भी नहीं मानेगा क्या? इसीलिए उसने अपनी पाँचों माताओं के प्रेम-स्वरूप अपने शरीर पर काले, पीले, सफेद, भूरे और लाल छींटे धारण किए।

इस आधुनिक और अभिनव नमूने के चूहे को विघ्न-हरण, मंगल-करण तथा शंकर-सुवन भवानीनन्दन श्री १००८ श्री-श्री गजानन जी महाराज भी पसंद कर लें, तो चौंकिएगा नहीं। आखिर युग तो नवीनता का ठहरा-जिसमें हर व्यक्ति अपना मार्केट डाउन से बचाने हेतु बदल जो रहा है। फिर गणेशजी ने क्या उस सदियों पुराने, ओल्ड फैशन वाले चूहे से निभाने का ठेका ले रखा है!

(इन्डियन एक्सप्रेस में छपे एक समाचारके आधार पर)

—मस्तराम गहलोत

सहायक स्टेशनमास्टर पोस्ट व स्टेशन-देत्रोज ३८२१२०

स्वास्थ्य-परक

वंध्यत्व या बाँझपन

(कुछ अनुभव)

वैद्य प्रेमचन्द बासोतिया

डी० आई० एम० एस० (R. M. P,)

आई० एम० सी० सी० (D. T. M. S.)

लेखक

[वंध्यत्व नारी-जीवन का अभिशाप है। उसके कारणों और निवारणों पर इस लेख में जो विचार किया गया है, वह अन्धकार में प्रकाश भर देता है। लेखक ने इस विषय में स्वानुभव से जो सफलता प्राप्त की है, उससे अनेक घर बस गए हैं। इससे यदि किसी औरत ने लाभ उठाया तो उसे वरदान होगा। —सम्पादक]

बाँझपन का अर्थ है कि स्त्री द्वारा बच्चा उत्पन्न करने की असमर्थता, प्रजनन की असमर्थता-यह तो पुरुष में हो या स्त्री में, या कभी-कभी दोनों में उसे बन्ध्या या बाँझ कहते हैं।

आयुर्वेद में इसे कई नामों से पुकारते हैं (१) बाँझपन, Sterility (स्टेरीलिटी) बन्ध्या, बन्ध्यत्व आदि

आयुर्वेद में बाँझपन १२ प्रकार के होते हैं, परन्तु मुख्य तीन प्रकार हैं। (१) आदि बन्ध्या, (२) काक बन्ध्या, (३) गर्भश्राविणी

बन्ध्या रोग नारीगण का अभिशाप माना गया है। पवित्र मातृत्व से वंचित करने वाले इस रोग को हर एक महिला संहार की दृष्टि से देखती है और इस रोग से छुटकारा पाने के लिए अपने तन-मन-धन को अर्पित करती है। स्त्री को संतान न होने का प्रधान कारण पुरुष के शुक्राणुओं का नष्ट हो जाना है, लिंग की रचना की कमी जिससे पुरुष मैथुन करने के अयोग्य होता है। जैसे लिंग बहुत ही छोटा होना, विवाह के पूर्व अत्यन्त हस्तमैथुन करके अपनी सब शक्ति समाप्त कर देना, कुछ पुराने रोगों के कारण पुरुषों का मैथुन करने के अयोग्य हो जाना, लिंग के कई स्थानिक रोग जैसे कैन्सर, आतशक इत्यादि। यह रोग स्त्रियों के योनि-दोष तथा मासिक की रुकावट से भी होता है। जिन स्त्रियों के स्तन-भाग ठीक उम्र पर नहीं उठते और जिन्हें कभी मासिक धर्म नहीं होता, वहीं जन्म बन्ध्या कही जा सकती है। अन्य स्त्रियों के संतान प्राप्त हो सकती है।

आयुर्वेद में योनि-रोग बीस प्रकार के बताये गए हैं। जिस स्त्री का आर्तव मासिक धर्म नष्ट हो गया हो उसे बन्ध्या और जिसमें नित्य वेदना होती हो उसे विप्लुता कहते हैं। बन्ध्या स्त्री उसे कहते हैं जिसमें प्रजोत्पादन की असमर्थता होती है। केवल रज की प्रवृत्ति न होने से ही उसे बन्ध्या नहीं कहा जा सकता है। पुरुष और स्त्री का वह जोड़ा जो शरीर में मोटा ताजा है किसी प्रकार की कोई खराबी नहीं है किंतु संतान प्राप्त नहीं हुई। यहाँ तक कि कभी गर्भ भी नहीं रहा, तो भी खराबी समझना चाहिए।

रोगी की मानसिक-शारीरिक तथा आर्थिक स्थिति, रहने की स्थिति, पारिवारिक स्थिति पर विचार करना आवश्यक है। ये सब विचारणीय विषय हैं। जब आप उक्त विषय में अपनी पूरी जानकारी प्राप्त कर लें तब कोई कारण नहीं कि आप यह न जान जाएँ कि रोग को किस विधि से नष्ट किया जा सकता है। यदि नष्ट नहीं किया जा सकता तो इसमें कौन-सी बाधा

होती है यह भी जानकारी करनी चाहिए।

मेरे अनुभव में आए रोगियों की चिकित्सा :

एक औरत जो उदयपुर में रहती थी, उसे दस वर्ष से गर्भाधान नहीं हुआ था। वह मेरे दवाखाने पर आई। उसकी चिकित्सा चालू कर, पहले मासिक चालू करने की दवाई दी तथा साथ में पतिदेव का भी लहसुन कायाकल्प किया। फिर क्या था उसको नवम्बर ७९ में पुत्र-रत्न पैदा हो गया तथा खेती हरी हो गई। उसका फोटो और इनाम भी आया। एक रतलाम से औरत आई, उसको भी १६ वर्ष से कोई भी सन्तान नहीं थी। दोनों पति-पत्नी का निदान करके आयुर्वेदिक नुस्खा दिया गया था।

सन्तान प्राप्ति योग :

शिवलिंगी के बीज २० तो०, कमलगट्टा २० तो०, नागकेशर ५ तो०, कीकर की दाल १० तो०, पीपल की जटा १० तो०, मोचरस १० तो० सबको लेकर कपड़छान चूर्ण करके रख लेना चाहिए। मासिक धर्म के चार दिन बाद में २॥ तोले की मात्रा में सुबह-शाम ठण्डे पानी के साथ ४-६-८-१०-१६वीं रात्रियों में ले कर स्त्री और पुरुष संभोग करें। निश्चय ही स्त्री गर्भ धारण कर सकती है। गर्भ रहने पर नौ महीने तक स्त्री को फल-घृत का सेवन करना चाहिए। सुपारी पाक स्त्री-पुरुष दोनों के लिए हितकर है। मकरध्वज, च्यवनप्राश अवलेह और स्वर्ण बसन्त मालती स्त्री-पुरुष दोनों ही उपयोग में ले सकते हैं।

सन्तान-सिद्ध गुटिका :

पारस पीपल के फूल, नागकेसर, असगन्ध, मुलेठी, आमला, देवदार, कमल के फूल, वंशलोचन, चन्दन, दारू हल्दी, हरड की छाल, बहेड़ा, शिवलिंगी के बीज, बंगभस्म, देवदार, रक्त चन्दन, लौह भस्म इनको समभाग लेकर कूट कर कपड़-छान चूर्ण बना लें। फिर उसको २ तो० दवाई लेकर गाय का दूध एक पाव या गाय के घी में हलवा बनाकर खाने से ईश्वर की कृपा से बीस वर्षीय बन्ध्या स्त्री भी गर्भवती हो जाती है। फल-घृत, कल्याण घृत, सोम घृत, कुमार घृत भी बहुत फायदा करता है। यह जरूर पुत्र फल दाता योग है ऐसा मेरा अनुभव है।

बन्ध्यत्व दोष परीक्षा :

रज एवं वीर्य के शुद्ध होने पर ही गर्भ धारण हो पाता है। सर्वप्रथम पुरुष-वीर्य की तथा स्त्री रज की परीक्षा किसी निष्णात से करवानी चाहिए।

तीन तरह की बन्ध्याएँ :

जन्म बन्ध्या—जीवन भर सन्तान का न होना।

मृत बन्ध्या—सन्तान का होकर मर जाना।

काक बन्ध्या—जीवन भर में केवल एक ही सन्तान का होना।

गर्भ-धारण की औषधियाँ :

पीपल, सोंठ, काली मिर्च और केशर इनके चूर्ण को घी के साथ सेवन करना चाहिए। इसके सेवन से बन्ध्या स्त्री को भी पुत्र लाभ होता है।

काकोली, क्षीर काकोली, लक्ष्मण मूल, साठी को कूटकर चूर्ण को गो-दुग्ध के साथ दस दिन सेवन करने से स्त्री जरूर गर्भवती होगी। गोखरू के बीज निर्गुण्डी के रस के साथ सेवन करना, अपामार्ग मूल पुष्य नक्षत्र और रविवार के दिन लाकर सेवन करना जरूर फायदा कारक होता है। मैंने कई स्त्रियों के मासिक धर्म के बाद पीपल जटा का चूर्ण गौ के दूध के साथ १५ दिन सेवन कराया। साथ में भगवान् श्री सूर्यनारायण से प्रार्थना करने को कहा। एक १६ वर्ष की रोती हुई पतिव्रता स्त्री रामदुलारी (आयु ४० वर्ष) को भगवान् की दया से पुत्र-रत्न प्राप्त हो गया है। उसकी सूखी खेती हरी-भरी हो गई है। इस पीपल जटा का प्रयोग कोई भी स्त्री कर सकती है। परन्तु उसके पति देव के वीर्य की जाँच जरूर करवानी चाहिए। फिर सोना और सुगन्ध वाली कहावत चरितार्थ होगी।

पथ्यापथ्य :

स्त्री को गर्म वस्तुओं का सेवन नहीं करना चाहिए। तेल, खटाई, मिर्च, गुड़ आदि वस्तुओं का सेवन नहीं करना चाहिए। हल्का भोजन, दूध, दलिया, परवल, लौकी आदि ठण्डी वस्तुओं का सेवन हितकर होता है। घूमना फिरना और आराम करना जरूरी है। किसी बात की चिंता नहीं करनी चाहिए, तथा घर में पति, बड़े-बूढ़ों आदि की सेवा करना भी जरूरी है। ❀

जनता आयुर्वेदिक औषधालय
चमनपुरा चार रास्ता अक्षारवा, अहमदाबाद १६

हम बच्चे हिन्दुस्तान हैं !

श्री गिरजा शंकर गुप्त

हम बच्चे हिन्दुस्तान हैं
इस धरती की शान हैं,
देश हमारा उन्नति पर हो
यही एक अरमान है ।

हम हैं हिंदू, हम हैं मुस्लिम
हम हैं सिक्ख – ईसाई,
जाति–पाति का भेद नहीं है
हम हैं भाई – भाई ।

मजहब सबको यही सिखाता
जन्मभूमि ही मान है,
देश के खातिर मर मिट जाएँ
सबका यही ईमान है।

दुश्मन से हम नहीं डरेंगे
आगे–आगे सदा बढ़ेंगे,
जब–जब धरती प्यासी होगी
अपना रक्त बहा देंगे।

अन्न उगाते, मेहनत करते
वर्षा और धूप में तपते,
ये किसान और ये जवान ही
इस युग के भगवान् हैं ।

आज प्रतिज्ञा हम करते हैं
अब होगा बुलन्द यह नारा,
बापू के सपनों जैसा ही
होगा शुभ आदर्श हमारा ।

भारत के कण–कण में
यह होगा अभिमान,
हम बच्चे हिन्दुस्तान हैं
हम इस धरती की शान हैं ।

गुड़ मार्केट, गोला बाजार पो०–गोरखपुर (उ. प्र.)

गुजराती लेख

અનસૂયા

શ્રી રોહિત શાહ

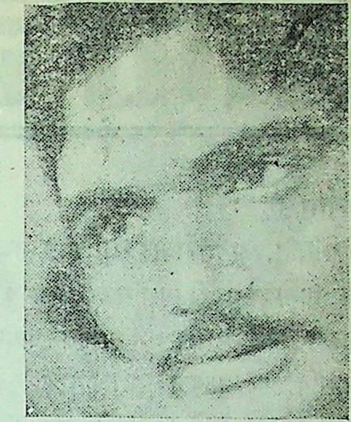
लेखक

[अंसूया या घृणा मानव-प्रकृति का एक महान रोग है । उसे अपने मन से हटाकर आप वैर-द्वेष आदि से बच सकते हैं, यह बात इस गुजराती लेख में पढ़िए । — सम्पादक]

પ્રાતઃકાલનો આછેરો ઉજાસ અવનિ પર પથરાઈ રહ્યો છે. નિરભ્ર આકાશની અટારીએ સૂરજ થોડો થોડો ડોકાવા લાગ્યો છે. સરિતાને તીરે આવેલા એ નાનકડા આશ્રમમાં ધર્માભ્યાસ કરતા શિષ્યો નિત્યકર્મ અનુસાર વિશાળ યોગાસનમાં એક વૃક્ષ તળે પ્રાર્થના કરવા એકત્ર થયા છે. ગુરુજી પણ સામે આવીને ઊભા છે. પ્રાર્થના એ આશ્રમનો નિયમ છે. એટલે પ્રત્યેક શિષ્ય માટે એ ફરજિયાત છે.

ગુરુજીની આજ્ઞા થાય છે. એક શિષ્ય સૌ પ્રથમ સંસ્કૃત શ્લોક દ્વારા સ્તુતિ કરે છે. પછી સઘળા શિષ્યો સાથે મળીને પ્રાર્થના કરે છે. પ્રાર્થના પૂરી થતાં જ એક શિષ્ય ગુરુજી સમક્ષ ફરિયાદ કરે છે–

"ગુરુજી ! આજની પ્રાર્થનામાં પ્રભાકર હાજર નથી. એ હજુ આશ્રમમાં ઊંઘી ગયેલો છે."

પ્રાર્થના એ એક નિયમ હતો અને એક શિષ્ય દ્વારા એ નિયમ પળાયો નહોતો એટલે બીજા શિષ્યે ગુરુ સમક્ષ એ ફરિયાદ નોંધાવી હતી.

ગુરુજી બોલ્યા, "વત્સ! આજે તેં કરેલી પ્રાર્થના એળે ગઈ. પ્રભુસ્મરણ વેળાએ પણ તારું ચિત્ત એમાં તલ્લીન નહોતું, પ્રભાકર ઊંઘી ગયો એટલે એ પ્રાર્થના ન કરી શક્યો એટલે એને એટલું જ નુકસાન થયું. જ્યારે તું પહેલો જાગીને પ્રાર્થનામાં આવ્યો ખરો, પણ મન ક્યાંક બીજે મૂક્યું હતું, પારકાના દોષ શોધવામાં તેં તારી પ્રાર્થનાની માત્ર ઉપેક્ષા જ નહીં, અપમાન પણ કર્યું છે. તને પ્રભાકર કરતાં વિશેષ નુકસાન થયું છે."

દોષ જોવાની ટેવ, એ સૌથી મોટો દોષ છે. બીજાના દોષ જોનાર પોતાના દોષોથી અવાકેફ થતો રહે છે. અન્ય પ્રત્યે ઈર્ષ્યા કરનાર સ્વહિતને જોખમમાં મૂકે છે. કારણ કે એની સમગ્ર ચેતના એ 'અન્ય' પ્રતિ રોકાયેલી છે. પોતાને ભૂલાઈ જવયું છે.

અનસૂયા વ્રત આત્મખોજનું વ્રત છે. એ આત્માની પ્રાર્થના છે. એ નિયમ નથી, સત્ય છે. એ બંધન નથી, મુક્તિ છે. અને આ વ્રત જરાય કપરું નથી, પોતાના દોષ દેખાય, તો અન્યના ગુણ સમજાય, અને અન્યના ગુણ જો સમજાય તો આપણા દોષ આપણાથી છૂપા રહી શકે નહિ. બસ એ જ ક્ષણે ઈર્ષ્યા અને વેર અને સ્વાર્થ ઈત્યાદિથી આપણે અલગ થઈ જઈશું.

ચાલો, આત્માને પૂછીએ કે, તે અનસૂયા વ્રતને આદરવા અને આચરવા કટિબદ્ધ થયો છે કે નહિ ? ◆ ૧૧૦૭, ઉપાશ્રયનો ખાંચો,
કીકા ભટની પોલ, દરિયાપુર, અમદાવાદ–૧

समिति समाचार

प्रजातन्त्र दिन समारोह :

राजस्थान सेवा समिति, अहमदाबाद संचालित राजस्थान हिंदी हाईस्कूल एवं ज्ञानोदय हिंदी प्राथमिक शाला की ओर से बत्तीसवाँ जनतन्त्र दिन समारोह समिति-प्रांगण में मनाया गया। समिति के अध्यक्ष श्री अशोक कुमारजी डागा के शुभ हाथों से ध्वजोत्तोलन किया गया। वन्देमातरम् गीत गाया गया। छात्रों ने कौमी नारा एवं भारतमाता की जय के नारे लगाए। ध्वजवन्दन किया गया एवं ध्वजगीत गाया गया। समिति के अध्यक्ष जी ने इस पर्व पर छात्रों को सम्बोधित करते हुए कहा कि भारत के संविधान की नजर आप पर है एवं आप इसकी आशा है। देश को आज टैगोर एवं गाँधी की जरूरत है। प्रकृति से संपन्न इस देश का लाभ सब नहीं ले सके हैं। देश को आज विद्वानों, वैज्ञानिकों, टेक्नोशियनों और उद्योगों की आवश्यकता है। तिलक, गाँधी एवं लालबहादुर शास्त्री जैसे नेताओं की भी आवश्यकता है। आगे उन्होंने छात्रों से कहा कि आप लोग अनुशासन में रहकर ध्यान को एकाग्र कर विद्याध्ययन कीजिए। अंत में राष्ट्रीय गीत गाया गया। छात्रों ने देशभक्ति के कई गीत गाए। इस पर्व पर श्री ओंकार टैक्सटाइल्स, अहमदाबाद की ओर से सभी उपस्थित जनों और बालकों को लड्डू बाँटे गए।

समिति के सदस्य :

४३६ श्री गोविंद मेटल स्टोर्स
दरियापुर, लुणसावाड, अहमदाबाद - १

४३७ श्री एम. एच. शाह एण्ड कम्पनी
१७८८।१ भगवती पोल के नाके पर
दरियापुर, लुणसावाड, अहमदाबाद- १

४३८ श्री मनीष फेवरीकल प्रा. लि.
बैंक आफ बरोडा बिल्डिंग,
साकर बाजार, अहमदाबाद - २

४३९ श्री श्याम तिलकचन्द केजड़ीवाल
सी/३, रैनबो फ्लेट, केतार पेट्रोल पम्प के सामने, ओल्ड सचिवालय, अहमदाबाद-१५

४४० श्री पारसमल प्रेमचन्द संखलेचा
द्वारा सुभाष टेक्सटाईल्स
साकर बाजार, अहमदाबाद - २

४४१ श्री हरमानदास ट्रेडिंग कम्पनी
२४९, दूसरा माला,
वैष्णवाचार्य निवास, कालूपुर अहमदाबाद-२

४४२ श्री रामकुमार लासुराम अग्रवाल
१३, संजय सोसायटी,
शाहीबाग, अहमदाबाद - ४

४४३ श्री चन्दनमल दौलतराज एन्ड कं.
सुगरवाला मार्केट, साकरबाजार,
अहमदाबाद-२

४४४ मे. सागरमल नेवटिया एन्ड सन्स
२२८१, रायपुर दरवाजा के पास
अहमदाबाद--१

४४५ श्री शिवबक्सराय, सीताराम
कृष्णा मेंशन, घी बाजार,
कालुपुर अहमदाबाद-२

४४६ श्री श्रवण टेक्सटाइल्स
२०८, श्री महावीर मार्केट
अहमदाबाद २२

४४७ श्री श्रवणकुमार, सुरेशकुमार
२०७, श्री महावीर मार्केट
अहमदाबाद-२२

४४८ श्री गुजरात ट्रेडिंग कम्पनी
मन्दिर की खिड़की,
कड़ियाँ कुई, अहमदाबाद -

Piramal Mills

Piramal Fabrics

Maheshwari Mills

Piramal Fabrics

Manufacturers of Cotton & Polyester Suitings, Shirtings & Dress Materials.

યુવાશક્તિના વિકાસ માટે રમત ગમત પ્રવૃત્તિને પ્રોત્સાહન

- યુવાન પેઢીમાં રહેલાં શક્તિ અને કૌશલ્યને યોગ્ય અભિગમ આપવા ગુજરાતમાં રમતગમત તેમજ યુવાકલ્યાણના વિવિધ કાર્યક્રમો પરંપરાગત શિક્ષણ ઉપરાંત અમલમાં છે.

- ગ્રામ તથા રાજ્ય કક્ષાના વિવિધ રમતગમત મંડળોની પ્રવૃત્તિને વેગ આપવા આર્થિક સહાય આપવામાં આવે છે. નગર તથા શહેરોમાં મેદાનો તૈયાર કરવાની યોજના અમલમાં છે. રાષ્ટ્ર અને રાજ્યકક્ષાની સ્પર્ધાઓમાં મહત્વનાં સ્થાન પ્રાપ્ત કરતાં ખેલાડીઓનો શિષ્યવૃત્તિઓ આપવા ઉપરાંત શ્રેષ્ઠ ખેલાડીઓને ‘સરદાર પટેલ એવોર્ડ’ આપવામાં આવે છે.

- શરદ રમતોત્સવ અને શિયાળુ રમતોત્સવમાં ભાગ લઈ રાજ્ય કક્ષાએ આવેલા આશાસ્પદ ખેલાડીઓને પ્રશિક્ષણ શિબિરો યોજી નિષ્ણાતો દ્વારા તાલીમ આપવામાં આવે છે. તે માટે અમદાવાદ અને ગાંધીનગરમાં પ્રાદેશિક અને દેવગઢબારિયા, સુરત, વડોદરા, પાટણ, રાજકોટ અને ભાવનગર ખાતે પેટા પ્રશિક્ષણ કેન્દ્ર શરૂ કરાયાં છે. દુલીપ ક્રિકેટ સ્કૂલ, પોરબંદરમાં ક્રિકેટ અંગેનું શિક્ષણ અપાય છે,

- પર્વતારોહણ ક્ષેત્રે ગુજરાતની વિશિષ્ટ સિદ્ધિઓની આંતરરાષ્ટ્રીય ખ્યાતિ છે. માઉન્ટ આબુ તેમજ ગીરનાર-જૂનાગઢ ખાતેની રાજ્ય પર્વતારોહણ સંસ્થા દ્વારા ગુજરાતનાં યુવક-યુવતીઓને તાલીમ આપવામાં આવે છે.

- સમુદ્રના કાંઠાના તેમજ ઊંડાણના વિસ્તારોમાં રાષ્ટ્ર તેમજ રાજ્ય કક્ષાની તરણ અને હોડી સ્પર્ધા યોજવામાં આવે છે. ઊંડા દરિયામાં તરવા માટેની શિબિર પણ યોજાય છે. ગુજરાતમાંથી સાહસિક પ્રવાસ ખેડતી ટૂકડીઓને અનુદાન અપાય છે.

● માહિતી નિયામક, ગુજરાત સરકાર દ્વારા પ્રકાશિત ●

New Gujarat Cotton Mills Ltd.

Ahmedabad-2

INSIST ON

"New Gujarat Fabrics"

For Home & Export

For 100% of Polyster, Printed Shirting
80/20 Filament Shirting. Fancy wash
and Wear Poplins of Latest Fashions.

Regd. Office :
18 A, Brabourne
Road,
Calcutta

Mill No. 1
Naroda Road,
Ahmedabad-380002
Phone : 372266
372317

Mill No. 2
Outside Dariapur Gate
Ahmedabad-380016
Phone : 383-63
380389

Telegram : NEW
GUJRAT

न्यु स्वदेशी व मंजूश्री का पैगाम

आपके नाम

न्यु स्वदेशी मिल्स व मंजूश्री मिल्स पूरे परिवार के लिए
प्रस्तुत करते हैं बेहतरीन कॉटन पोपलीन,
कोटिंग, ड्रेस मटीरीयल्स व
पोलीस्टर ब्लेन्ड में शुटिंग व शर्टिंग जिसे
पहनकर व्यक्तित्व निखर आता है

न्यु स्वदेशी

न्यु स्वदेशी मिल्स ऑफ
अहमदाबाद लि०

रजिस्टर्ड आफिस एवं मिल्स,
पो० बो० संख्या १००१४
नरोडा रोड,
अहमदाबाद-३८००२५
दूरभाष : ३७२१२१, ३७२०२१
टेलेक्स : २२२ नेसा इन
तार : न्यु स्वदेशी

मंजूश्री टेक्स्टाइल्स,
(प्रो० धी न्यु स्वदेशी मिल्स
ऑफ अहमदाबाद लि०)
गिरधरनगर, अहमदावाद-३८०००१०
रजिस्टर्ड आफिसः नरोडा रोड,
अहमदाबाद ३८००२५
दूरभाष : ६७२७१-७२-७३
टेलेक्स : २२२ नेसा इन
तार : 'मंजूश्री'

सुधाबिन्दु

वर्ष : २१ अंक : ३-४
मार्च-अप्रैल, १९८१ (संयुक्तांक)
वार्षिक शुल्क : १५ रुपए
आजीवन ग्राहक : १५० रुपए
एक अंक : १-५० रुपए

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगडी

राजस्थान सेवा समिति · अहमदाबाद

INSIST ON

ASARWA FABRICS

100% Polyester Prints in Eye-catching Designs
Loveable shades and
Lovely Matchings for
Fashionable Fabrics
AND
Feel the Difference, Warmth
And the Feeling of a new Life

Registerd User of Trade Mark
"EVA PRESHRUNK & SUNFULGENT"
Choose From ASARWA
Exciting Varieties of Polyester/Cotton
Blended Shirting, Suiting, Sarees.
And Dress Materials.

Asarwa Mills

(Prop Bengal Tea & Industries Ltd.)
Asarwa Road, AHMEDABAD-380 016
Regd. Office : Brabourn Road, CALCUTTA 700001
Tl Phone : 67301-2, Gram : MILL ASARWA Telex : 012476

सुधाबिन्दु

सम्पादक

ा० राजनाथ पाण्डेय
एम० ए० (संस्कृत, हिन्दी, पालि) पी-एच० डी०
व्याकरणाचार्य "लब्धस्वर्णपदक"

ामअवधेश त्रिपाठी
साहित्यरत्न

संयोजक

गिरधारीलाल सराफ
एम० कॉम०, एल-एल० बी०, रा० रत्न

लेखकों से निवेदन

(अ) हमें कैसे लेख-कविता-कहानी आदि चाहिए:-

(१) जो मानव में जीवन के प्रति आस्था जगाकर जीवन को सुन्दरतर बनाए और जो जीवन जीने की कला सिखाए।

(२) जो मानव-मानव में अपनत्व बढ़ाए, जो करुणा जगाए और जो परसेवा सिखाए।

(३) जो मानव को आत्माभिमुख करके प्रकृति-परायण बनाए।

(४) जो हमारे भारत राष्ट्र की, विशेषतः राजस्थान की गरिमा को उजागर करे।

(५) जो हमारी विभिन्न प्रजाओं, जातियों एवं व्यवस्थाओं के उत्कृष्ट गुणों का विवेचन करे।

(६) जो प्राचीन-अर्वाचीन ज्ञान-विज्ञान का संतुलित विवेचन करे।

(७) जो मानव को श्रेष्ठ मानव बननेके लिए प्रेरित करे।

(आ) रचनाएँ कागज के एक ओर लिखकर भेजें।

- अप्रकाशित और अप्रसारित रचनाएँ ही भेजें।
- निर्विवादास्पद विषयों पर लिखी हुई रचनाएँ ही भेजें
- रचना अस्वीकृत होने पर वापस मँगानेके लिए टिकट लगा लिफाफा भेजें।
- तीन-चार फुलस्केप में लिखी रचनाएँ ही भेजें तो बड़ी अनुकूलता होगी।
- अपना परिचय तथा योग्यता-विवरण भी भेजें।

पत्राचार : रामअवधेश त्रिपाठी
२, उत्तर भारतीय कोलोनी, नागरबेल के पास
असराईवाड़ी, अहमदाबाद-२३

राजस्थान सेवा समिति, अहमदाबाद का

मासिक मुखपत्र

वर्ष : २१ मार्च-अप्रैल
अंक : ३-४ १९८१

वार्षिक शुल्क : १५ रुपए

आजीवन ग्राहक : १५० रुपए

एक अंक का मूल्य : १.५० रुपए

*

'सुधाबिन्दु' में विज्ञापन की दरें निम्नांकित हैं :

स्थान	विशेषांक	वार्षिक
कवर पृष्ठ नं.-४	००	४,००० रु०
,, ,, नं.-२ और ३	००	३,००० रु०
आर्ट पूरा पृष्ठ	२०००-००	
रंगीन पूरा पृष्ठ	१५००-००	
,, आधा ,,	१,०००-००	
साधारण पूरा पृष्ठ	१,०००-००	२,००० रु०
,, आधा ;;	५००-००	१५०० रु०

व्यवस्थापक 'सुधाबिन्दु'
राजस्थान सेवा समिति, शाहीबाग मार्ग अहमदाबाद-४

राजस्थान सेवा समिति, शाहीबाग मार्ग, अहमदाबाद ४ के लिए श्री दुर्गादान चारन (सचिव) ने प्रकाशित किया एवं श्री रामानन्द प्रिंटिंग प्रेस कांकरिया रोड, अहमदाबाद २२ ने मुद्रित किया।

अनुक्रमणिका

(गुजरात यूनिवर्सिटी द्वारा शोधपत्रिका के रूप में मान्य)

तथा

[राजस्थान सरकार के माध्यमिक, उच्चतरमाध्यमिक विद्यालयों तथा पुस्तकालयोंके लिए 'सुधाबिन्दु' मान्य है।]

मार्च-अप्रैल , १९८१

१-मन से मन को तौलिए		सम्पादकीय	५
२-तीन कविताएँ-	(कविता)	श्री बाबूलाल संखलेचा 'रवि'	६
३-हिन्दी-काव्य पर गाँधीवाद का प्रभाव	(समीक्षा-परक)	डा० सावित्री डागा	७
४-अप्रत्याशित	(कहानी)	श्री पुरुषोत्तम पंचोली	१०
५-मानव शत्रु : अहंकार	(विचार-परक)	श्री राजराजेश्वर प्रकाश सक्सेना	१३
६-कहकहे	(संकलित)		१६
७-देश-हित की दीवानी ये देवियाँ	(नारी-परक)	श्री श्रीकृष्णगोपाल माथुर	१६
८-हिन्दी के स्वेट मार्डेन : डा० महेन्द्र	(परिचय-परक)	डा० मनीष मिस्त्री	२०
९-गाँव	(कविता)	श्री सुरेश सिंह	२३
१०-काम में लगिए :	(व्यवहार-परक)	श्री बाबूलाल 'श्रीमयंक'	२४
११-अभिनन्दन लक्ष्मीवाहन का	(व्यंग्यकाव्य)	श्री काका हाथरसी	२७
१२-मुद्रास्फीति, उद्योग और अर्थतंत्र	(अर्थ-परक)	श्री ओमप्रकाश आर्य	२८
१३-श्रीकृष्ण अग्रवाल	(व्यक्ति-परिचय)	समाज प्रेमी	३१
१४-सफलता की कुंजी	(बाल-परक)	श्री धनराज पँवार	३३
१५-धरती के पूत	(कविता)	श्री अशोक एम०ए०	३३
१६-मरुभूमि का गौरव	(कविता)	श्रीमती गीता देवी शर्मा	३४
१७-नारी की ऋतुकाल चर्या	(स्वास्थ्य-परक)	वैद्य नारायणदत्त शर्मा	३८
१८-वस्त्र उद्योग का विहंगावलोकन	(उद्योग-परक)	श्री इन्द्रवदन प्राणलाल	३५
१९-पुस्तक-परिचय			
२०-समिति-समाचार			
२१-विज्ञापन			

० विशेष सूचना ०

इससे नम्रता पूर्वक सूचित किया जाता है कि 'सुधाबिन्दु' का 'उद्योग विशेषांक' अहमदाबाद नगर की अशान्त परिस्थिति एवं अन्य कारणों के उपस्थित हो जाने से आगामी मई-जून'८१ में प्रकाशित होगा। कृपया इस विवशता के लिए क्षमा करें।

'जनवरी फरवरी' तथा 'मार्च-अप्रैल ८१' में 'सुधाबिंदु' का संयुक्तांक निकालने की व्यवस्था की गई है, जो यथासमय पाठकों की सेवा में पहुँच जाएगा। कृपालु लेखकों, ग्राहकों, पाठकों और हितैषियों से प्रार्थना है कि वे इस व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए व्यर्थ के पत्र व्यवहार से बचने-बचाने की कृपा करें।

अहमदाबाद
ता० ९।३।८१

व्यवस्थापक
'सुधाबिंदु'

० पाठकों के पत्र ०

......एक बात मुझे 'सुधाबिन्दु' के विषय में कहनी है कि आप 'सुधाबिन्दु' को लोक जीवन में उतार रहे हैं । इसका स्तर ऐसा बना है कि इससे समाज के सभी वर्ग लाभान्वित हो रहे हैं । लोक-जीवन के वृक्ष को आप जो मौसम दे रहे हैं, उससे उसमें नवीन सदाबहारी पुष्प खिलने की आशा है । मेरा मन न जाने क्यों आपके श्रम-कदम को नमन करने लिए झुकने लगता है ।

रवीन्दु सुमन
नबी मस्टर का डेला, नागोरी बाड़, शाहपुर, अहमदाबाद

★

मैं आपकी 'सुधाबिन्दु' बहुत ही प्रेम से पढ़ता हूँ । मैं आपके इस मासिक पत्र से इतना प्रभावित हुआ हूँ कि इससे सदैव सम्पर्क बनाए रखने की इच्छा बनी रहती है ।

अनिल कुमार त्रिपाठी
गाँव-कोल्हुआ, पो०-टाड़ा, जिला गोरखपुर

★

मैंने जनता आयुर्वेदिक औषधालय (अहमदाबाद) में 'अक्टूबर-नवम्बर' का 'सुधाबिन्दु' पाया । उसमें वैद्य श्री प्रेमचन्द बासातिया का लेख "लहसुन खाइए, जवानी पाइए" पढ़ा । यह लेख बहुत उपयोगी और लाभप्रद है । यह गरीबी नुसखा कम खर्च में अधिक लाभ पहुँचाने वाला है । मेरी माता जी को आमवात हो गया था । मैंने लहसुन का प्रयोग किया । उससे मेरी माताजी चन्द दिनों में ही ठीक हो गईं । अंक और लेख उपयोगी है ।

एच० बी० शेख
१०६ जहाँगीर मिल की चाल, देवजीपुरा, अहमदाबाद-४

★

मुझे आपकी पत्रिका देखने का सुअवसर मिला । पत्रिका रुचिकर प्रतीत हुई । कृपया. एक प्रति मुझे भी भेजने की कृपा करेंगे ।

गिरजाशंकर मोदी
मु० पो०-कटोरिया, जिला भागलपुर (बिहार)

★

० कामना ०

सं मा सिञ्चन्तु कृषयः सं मा सिञ्चन्त्वोषधीः ।
सोमः समस्मान् सिञ्चतु प्रजया च धनेन च ॥

– अथर्ववेद पैपलादशाखा–६।१८।७

[कृषि से उत्पन्न धान्य, ओषधियाँ, सोम हमें प्रजा और धन से सम्पन्न करें ।]

समिति के दो प्रकाशन–पुष्प

१. आधुनिक राजस्थानी साहित्य : लेखक—प्रा. भूपतिराम साकरिया

डेमी साइज, पक्का जिल्द, कलात्मक आवरण–पृष्ठ, सुन्दर छपाई वाली इस पुस्तक की प्रशंसा बड़े–बड़े विद्वानों ने की है । पुस्तकालयों तथा पुस्तक–प्रेमियोंके लिए विशेष उपयोगी है । मूल्य—केवल ६ रुपए

२. बातां बखत बखत की : लेखक—श्री महावीरप्रसाद हलवाई

डेमी साइज, पक्की जिल्द, उत्कृष्ट छपाई तथा मोहक आवरण–पृष्ठ । यह पुस्तक राजस्थानी भाषा में लिखी गई मौलिक और जीवनोपयोगी कविताओं का एक सुन्दर संग्रह है, जिसके प्रत्येक दूहे अँगूठी के नगीने हैं । मूल्य–केवल ६ रुपए

इस पुस्तक पर सम्मति देते हुए आचार्य बदरीप्रसाद साकरिया ने लिखा है, "सुन्दर और सुबोध नीति के दोहे अपने ढंग की यह एक कृति है । कवि का प्रयास वास्तव में सराहनीय है । राजस्थानी भाषा के माध्यम से कवि और कृति साहित्य–गगन में प्रकाशमान हों, ऐसी अपेक्षा–अभिलाषा है ।"

प्राप्तिस्थान—

राजस्थान सेवा समिति, शाहीबाग मार्ग, अहमदाबाद–४

"सुधाबिन्दु" के तथा देश–विदेश की पत्रिकाओं के विश्वस्त एजेण्ट

श्री सौरभ पुस्तक भण्डार

केलिको डोम के सामने, रिलीफ रोड, अहमदाबाद ३८०००१

आत्म–विश्लेषण

(श्रेष्ठ चिन्तन का संकलक पाक्षिक)

संपादक : अशोक कुमार,

सह सम्पादक : राजेन्द्र मानव

वार्षिक शुल्क १२ रु., : १ प्रति ६७ पैसे

३०९/७ चौधरियान स्ट्रीट, जींद १२६१०२

विवेक–विकास

(साहित्य–संस्कृति–कला का स्तरीय मासिक)

सम्पादक : रामनिवास स्वामी

वार्षिक शुल्क १२ रुपये

आजीवन सदस्य शुल्क : २२१ रुपये

सम्पर्क : केसरगढ़ जवाहरलाल मार्ग जयपुर–४

सुधाबिन्दु

वर्ष : २१ मार्च-अप्रैल, १९८१ अंक : ३-४

सम्पादकीय

मन से मन को तौलिए

'मन' शब्द का अर्थ मनन करने का केन्द्र है। अथवा इसे मनन-पादप का मूल भी कह सकते हैं। इसका दूसरा अर्थ है मन (परिमाण) जिसमें चालीस सेर हुआ करते थे। वह गम्भीरता, गुरुता और स्थिरता का द्योतक है। यह सभी प्राणियों में पाया जाता है; किन्तु मननशीलता, विचारशीलता एवं गुरुत्व के आधिक्य के कारण इसका स्थान मानव में अथवा मानव-जीवन में अधिक है। इसीलिए उसे मनुष्य कहा जाता है और कहा भी गया है—"मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः"

मनोवैज्ञानिकों ने मन के दो स्तर बताए हैं-१. अन्तर्मन, २. बाह्य मन। अन्तर्मन समुद्र का गहन जल है, जिसकी थाह पाना यदि असंभव नहीं तो कठिन जरूर है। यह अन्तर्मन मदारी की तरह मानव-कपि को मनमाना नृत्य कराता है, भोगी और योगी बनाता है। संसार के उच्चाति-उच्च शिखर पर चढ़ाना अथवा रौरव नरक की सामग्री जुटाना अन्तर्मन की उच्च-निम्न गति पर निर्भर है, दक्षिण-वाम पन्थ का सूचक है।

बाह्य मन सागरतल की एक छोटी-सी लहर है; जो आँखों से दिखाई देती है। जिसकी ध्वनि कान सुनते हैं, जिसका स्पर्श किया जा सकता है; जिसपर जलयान चलते हैं, जो गतिशील और अस्थिर है। यह व्यवहार-जगत् का मूलाधार है। जब यह मन व्यवहार-जगत् में उत्पाती, स्वार्थी और एकोन्मुखी बन जाता है, तब बड़े-बड़े अनर्थ खड़ा कर देता है, ईर्ष्या-द्वेष की अग्नि प्रज्वलित कर देता है, नरक की सीढ़ी से पाताल में उतार देता है, हिंसा-अनाचार-भ्रष्टाचार के काँटे बिखेर कर पुष्प-वन को कण्टक-वन बना देता है।

मनुष्य-जीवन में मन को शक्ति अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अपने मन को जीतकर अथवा ऊर्ध्वमुखी बनाकर मनुष्य भोगी से योगी बन सकता है, महान् बन जाता है। जब मनुष्य अन्य किसी का मन अपने गुणों, सुकृत्यों और व्यवहारों से जीत लेता है, तब वह स्वयं को धन्य बनाते हुए समस्त मानव-जाति का प्रशंसा-पात्र बन जाता है, वरेण्य और वन्दनीय बन जाता है। यही मनुष्य-जीवन का सार है। राम-कृष्ण से लेकर मुहम्मद और ईसामसीह तक अथवा सुकरात-बुद्ध और टालस्टाय-गाँधी, लिंकन आदि महापुरुषों ने अपने मन को संयमित बनाकर और दूसरों का मन जीत कर मानवता के उद्यान को पुष्पित-सुगन्धित बना दिया है।

आज विकल विश्व, आहत राष्ट्र, घातक समाज और विघातक विचारों को नया बल-संबल देने के लिए हम मन की अपरिमेय शक्ति पहचानें और दूसरों को पहचानने के लिए प्रेरित करें, यह अत्यन्त आवश्यक है। मन का जीतना ही बिश्व-विजय प्राप्त करना है, मानवता को धन्य बनाना है। आइए, इस महानुष्ठान में लग जाइए और पुण्यभागी बनिए—

तुलसी यह तन खेत है, मनसा भयो किसान। पाप-पुण्य दोउ बीज हैं, बुवै सो लुनै निदान॥

तीन कविताएँ

श्री बाबूलाल संखलेचा 'रवि'

(१) वक्त का तकाजा

वक़्त जब तुम्हारा था
तुम आदमी थे काम के,
लेकिन महत्ता वक़्त की
तुमने न पहचानी,
करना था जो तुमको
छोड़ किया वो ही जो ठानी।

तुम्हारी वही 'निष्ठुरता'
वही पुराना 'हठ'
अब राह में तुम्हारी
अड़ंगे डाल रहा है;
तुम्हारी सारी कुलाँचें
व्यर्थ जा रही हैं !!
क्योंकि आज वक्त
तुम्हारा नहीं, मेरा है
और मैं तुम्हें तुम्हारी
'गलतियाँ' दिखलाऊँगा,
और जरूरत पड़ी, तो
चाँटा भी लगवाऊँगा,
विरोध तुम न कर पाओगे
क्योंकि तुम भी जानते हो
कि आज वक्त मेरा है
तुम आदमी हो नाम के,
मैं आदमी हूँ काम का.

(२) एक 'टके' का आदमी

कल
तुम्हारे पास सब कुछ था
धन, वैभव, प्रतिष्ठा
मान-सम्मान, इज्जत-आबरू
मगर तुमने जीने का
ढंग नहीं बदला
धन का उपभोग नहीं किया
वैभव को नहीं सराहा,
प्रतिष्ठा को ताक पर रखकर
तुम भी अन्य साधारण
व्यक्तियों-से जिये
जो निरा 'रोटी' के लिए जीते हैं.
धन को अपना यह दुरुपयोग
बरदाश्त नहीं हो सका,
उसने 'ठान' ली
और 'पर' लगाकर, जैसे
(पार) लौकिक हो गया,
उसके जाते ही तुम्हारी
प्रतिष्ठा इज्जत-आबरू
मान-सम्मान सब खो गया.
हालांकि तुम वही हो जो कल थे
मगर आज तुम्हारा मूल्य
'एक टके स' ज्यादा नहीं !

(३) फूल-सा खिलना होगा

मंजिल की गर लालसा तूने की है,
जूझते रस्तों पर तुझे चलना होगा !
जीवन को हर वेदना सहनी होगी,
फूल-सा कांटों में भी खिलना होगा ।
सींचनी होगी पसीने से क्यारी,
धूल में मटमैला भी होना होगा ।
करते हुए आँधियों का सामना,
धूप में दिन-रात झुलसना होगा ।
रखने होंगे दृढ़ इरादे तुझको,
हाथ का रेखाओं को छलना होगा ।
ज्योति आत्मविश्वास की जलानी होगी,
दीप सा खुद तुझे जलना होगा ।

जैनढांणी मन्दिरके पीछे लक्ष्मीबाजार बाड़मेर(राज.)

समीक्षा-परक

हिन्दी काव्य पर गाँधीवाद का प्रभाव

डा० सवित्री डागा

एम०ए०, पी-एच० डी०

लेखिका

[गाँधीवाद एक व्यक्तिवादी विचारधारा है, जिसने किसी समय व्यक्ति, समाज राष्ट्र और विश्व को झकझोर दिया था। उसका यह मोहक प्रभाव साहित्य पर पड़ा था। आज भी उसका स्वर वायुमण्डल में गुंजित हो रहा है। उस व्यापक प्रभाव को स्थायी बनानेके लिए हमें कोई योजना बनानी चाहिए। लेखिका ने इस ओर पाठकों का ध्यान खींचा है, जो विचारणीय है।

नवजीवन प्रेस, अहमदाबाद में भारत सरकार द्वारा 'गाँधी वाङ्मय' के तीन सीरीज हिन्दी गुजराती और अंग्रेजी में प्रकाशित हो रहे हैं। प्रत्येक सीरीज में लगभग बारह-तेरह दर्जन ग्रन्थ हैं। उनमें गाँधी जी के भाषण, पत्र, सम्पादकीय विचार, लेख, मिलन-मुलाकात, जीवन-व्यवहार, आदर्श, व्यंग्य-विनोद आदि को उनके ही शब्दों में स्थान दिया गया हैं। प्रत्येक में चार सौ पृष्ठ हैं इसके अंग्रेजी सस्करण धड़ाधड़ विदेशों में बिकते चले जा रहे हैं; किन्तु हिन्दी गुजराती संस्करण की बिक्रय-दशा अच्छी नहीं है। यह है गाँधीवाद का भारतीय समान जो हृदय-मनको न छू सका।सम्पादक]

साहित्य को किसी वाद-विशेष में बाँधा नहीं जा सकता, फिर भी यदि हम सच्चे गाँधीवादी लेखकों की सूची तैयार करने का प्रयास करें, तो हमें निराशा ही होगी। जैसा कि कहा गया है, "कई लेखक तो ऐसे मिलेंगे जिन्होंने प्रारंभ में तो गाँधीवाद के व्यवहार-पक्ष से प्रभावित होकर साहित्य-सृजन किया, किन्तु अपने परवर्ती साहित्य में गाँधीवाद को अपूर्ण एवं अवैज्ञानिक कहकर ठुकरा दिया। गाँधीजी के मत में बाह्य की कीमत तब तक कुछ नहीं है, जब तक अन्तर का विकास न हो।"

हमारे साहित्य में गाँधीजी का प्रभाव काव्य से अधिक गद्य पर पड़ा परिलक्षित होता है। प्रेमचन्द के अनेक उपन्यासों और कहानियों में सत्याग्रह हृदय-परिवर्तन, आश्रम-स्थापना, समाज-सुधार, सत्य, अहिंसा आदि का प्रबल समर्थन किया गया है। फिर भी प्रेमचन्द को गाँधीवादी लेखक कहने वालों को यह भी नहीं भूलना चाहिए कि १९३६ में प्रेमचन्द की ही अध्यक्षता में प्रगतिशील लेखक-संघ की स्थापना हुई थी और उन्हीं के संपादकत्व में प्रगतिशील पत्र 'हंस' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ था। कहने की आवश्यकता नहीं कि प्रगतिवादी आंदोलन की मूल प्रेरणा—मार्क्सका द्वन्दात्मक भौतिक विकासवाद और रूसी क्रान्ति रही, गाँधी का आदर्शवाद या रामराज्य की कल्पना नहीं। डा० मदन डागा का यह कथन सही है कि गाँधी के प्रभाव से बहुत-सा काव्य गाँधीवादी चिन्तन के अनुकूल रचा गया है। यद्यपि इस काल के अधिकांश कवियों ने गाँधी की विचारधारा से नहीं, अपितु उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर ही गाँधीजी की जीवन-दृष्टि को वाणी दी है। इतना सब होते हुए भी गाँधीवाद समकालीन कवियों की आत्मा में रम नहीं पाया है।

समस्त कवियों पर विचार करना तो यहाँ सम्भव नहीं है। अतः उनमें से प्रतिनिधि कवियों का उल्लेख करना

ही उपयुक्त रहेगा । गाँधीजी के कर्मपक्ष की सधी हुई अभिव्यक्ति की दृष्टि से रामनरेश त्रिपाठी कृत खण्ड-काव्य 'पथिक' (सन् १९२०) विशेष महत्व रखता है। इस खण्ड-काव्य का नायक त्रिपाठी जी के हृदय में बैठा गाँधी ही है, जो स्वराज्य एवं स्वदेशी का संदेश देते हुए पराधीनता से मुक्ति पानेके लिए जन-जन को बलिदान का पाठ पढ़ाता है—

अपना शासन कर, यही शांति है, सुख है,
पराधीनता से बढ़कर जग में न दूसरा दुःख है।१

गाँधीवाद के आत्मसात कर या गाँधी-चिन्तन को अपने मूल रूप में स्वीकार कर काव्य-रचना करने वालों में मैथिलीशरण गुप्त का नाम भी लिया जाता है। मैथिलीशरण गुप्त कृत 'यशोधरा' एवं 'साकेत' में गाँधीवादी आदर्शों की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है। गाँधी-चिन्तन का भावात्मक प्रतिनिधित्व तथा गाँधी व्यवहार-प्रक्रिया के अनेक रूप खण्डशः गुप्त जी के पात्रों के व्यवहार में देखे जा सकते हैं। अछूतोद्धार, लोकोद्धार आदि में भी गाँधीवादी विचार-सरणि के अंश विद्यमान हैं। गाँधी के आदर्शों के अनुरूप ही सीता भोली कोल-किरात बालाओं का स्वागत करती है। 'साकेत' में सीता के सूत कातने और वस्त्र बुनने में बापू के चरखे का स्वर स्पष्ट सुना जा सकता है—

ओ भोली कोल किरात भील-बालाओ,
मैं आप तुम्हारे यहाँ आ गई आओ।
तुम अर्द्ध-नग्न क्यों रहो अशेष समय में,
आओ हम कातें बुनें गान की लय में।२

राम के वन-गमन के समय रथ के आगे लेट जाने वाली प्रजा को देखकर अनायास ही सत्याग्रह आन्दोलन की स्मृति ताजी हो जाती है। यथा—

जाओ यदि जा सको रौंद हमको यहाँ,
यों कह पथ में लेट गए बहुजन वहाँ।३

गाँधी जी का कृषक-प्रेम निम्न पंक्तियों में द्रष्टव्य है।

सच्चा राज्य परन्तु हमारे
कर्षक ही करते हैं ... ...
जिनके खेतों में है अन्न
कौन अधिक उनसे सम्पन्न।४

यद्यपि जयशंकर प्रसाद के हृदय और बुद्धि का गाँधीवाद के साथ समञ्जस्य न होने से उन्होंने गाँधीजी पर कविताएँ नहीं लिखीं, किन्तु आलोचकों को उनकी 'कामायनी' की नायिका श्रद्धा के चरित्र में गाँधी द्वारा प्रतिपादित अहिंसा, क्षमा, शांति की छाप तथा श्रद्धा द्वारा किये गए निरीह पशु-बलि के विरोध में समकालीन गाँधि-उपदेश का प्रभाव दिखाई देता है। गाँधी ने घरेलू उद्योग-धन्धों की उपादेयता प्रतिपादित की और जनता का ध्यान आकर्षित कर विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के साथ-साथ स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने पर बल दिया था। ऊनी वस्त्र बुनने एवं तकली कातने में निरत श्रद्धा के गीतों में गाँधीवादी तकली की स्वरलहरी सुनी जा सकती है—

मैं बैठी गाती हूँ तकली के,
प्रतिवर्त्तन में स्वर-विभो।
चल री तकली धीरे-धीरे,
प्रिय गए खेलने को अहेर।५

यह ठीक ही कहा गया है कि हिन्दी साहित्य में यदि किसी को सर्वाधिक गाँधीवादी लेखक माना जा सकता है, तो श्री सियारामशरण गुप्त को। क्योंकि गाँधीवाद उनकी बुद्धि एवं हृदय में रम गया था। उनकी सुप्रसिद्ध कृति 'बापू' की अनुभूति-प्रवण श्रद्धांजलियाँ द्रष्टव्य हैं। उनके गीति नाट्य 'उन्मुक्त' में भी गाँधीवादी आदर्शों के आधार पर नव समाज निर्माण का स्वप्न संजोया गया है और गाँधी-चिन्तन को घटना-चक्र के द्वारा विकसित किया गया है। उनके द्वारा चित्रित पात्र 'गुणधर' सात्विकता, अहिंसा आदि की दृष्टि से गाँधीजी का प्रतिरूप परिलक्षित होता है और उनके शब्दों में गाँधीजी स्वयं उपदेश देते जान पड़ते हैं—

हिंसा से शान्त नहीं होता हिंसानल
हिंसा का है अहिंसा ही प्रत्युत्तर।६

सियारामशरण के खण्ड काव्य 'नकुल' एवं 'नोआखाली' में भी प्रत्यक्ष रूप से गाँधीवादी सिद्धांतों की अभिव्यक्ति की गई है।

इनके अतिरिक्त छायावादोत्तर कवियों में यदि किसी कवि को गाँधीवादी कवि कहा जा सकता है, तो वह है 'भवानी प्रसाद मिश्र'। भवानी प्रसाद मिश्र न केवल विचार से गाँधीवादी हैं; अपितु उनका सारा जीवन गाँधी विचार मय-सा हो गया है। गाँधीवादी विचारों को आत्मसात करके जितनी कविताएँ भवानी बाबू ने लिखी हैं, उतनी बाद के अनेक कवियों द्वारा भी नहीं लिखी गई हैं।

भवानी प्रसाद मिश्र द्वारा लिखित काव्य-संग्रह 'गाँधी पंचशती' में जो कविताएँ लिपिबद्ध हैं वे गाँधी के जीवन, उनके विचारों और गाँधी की मृत्यु के बाद भी अनेक सन्दर्भ लिये हुए हैं। गाँधी के विचारों को भवानी बाबू ने बहुत गहराई से समझाते हुए उनकी मृत्यु के पश्चात् उनकी अनुपस्थिति में निर्मित खोखलेपन को चित्रित किया है।

आजादी के संघर्ष के दौरान गाँधीजी ने कर्म को जिस प्रकार महत्वपूर्ण माना था उसके सम्बन्ध में कवि की निम्न पँक्तियाँ द्रष्टव्य हैं—

खून को रगों में काम बनकर
दौड़ता रास आ जाए।
तो बेशक बंजर हर इंच धरती पर,
चट्टान पर परती पर मधुमास आ जाए। ६

भवानी बाबू ने इस बात को बहुत गहराई से समझा है कि आजादी के बाद जो निर्भयता हमारे मन में विकसित हुई, वह गाँधीवादी निर्भीकता न होकर स्वार्थपूर्ण निर्भीकता हैं। ऐसी निर्भीकता पर चोट करते हुए कहते हैं।

किसी से मत डरो का मतलब,
बेधड़क चोरी करो नहीं है।
करो या मरो का मतलब,
मारो या मरो नहीं है। ७

गाँधी के आदर्शों, उनके व्यक्तित्व और विचारों के सम्बन्ध में आजादी के पहले और आजादी के बाद बहुत कुछ लिखा गया; लेकिन आजादी के बाद गाँधीवाद से प्रभावित होकर लिखने वालों की संख्या नगण्य-सी है। सिर्फ गाँधी का नाम आ जाने से ही उसे गाँधीवादी काव्य का प्रमाण नहीं माना जा सकता।

गाँधीवाद का व्यवस्थित शास्त्रीय अध्ययन न होने के कारण गाँधी का प्रभाव बहुत कम कवियों पर पड़ सका, इस सम्बन्ध में यह कथन द्रष्टव्य है, "और तो और गाँधी के नाम से अभिहित युग के हिन्दी कवियों की बृहत्त्रयी-प्रसाद, निराला, महादेवी ने भी कवि को काव्यांजलि अर्पित नहीं की।"

यह बात सही है कि गाँधी की अहिंसा, सहअस्तित्व, प्रेमभाव, दया, सहनशीलता, निर्भीकता, सच्चरित्रता आदि को लेकर अनेक कविताएँ लिखी गईं, किन्तु उनमें काव्यत्व की कमी खटकती रहती है। आजादी के बाद तो अनेक कविताएँ महज इसलिए गाँधीवादी प्रभाव लिये कही जा सकती हैं। क्योंकि उनमें गाँधी की मृत्यु के बाद हमारे देश में बढ़ती गई आपाधापी का चित्रण है या फिर वे घृणा, द्वेष, कटुता, ईर्ष्या और हिंसा, अनाचार आदि के खिलाफ लिखी गई हैं।

इस प्रकार गाँधीजी के विचार और व्यवहार पक्ष को लेकर आजादी से पहले और आजादी के बाद काफी कुछ लिखा गया; लेकिन उसमें से ऐसा अंश बहुत कम मात्रा में है जो काव्य की दृष्टि से भी कसौटी पर उच्च स्तरीय ठहर सकता हो। फिर भी हमारे देश के जितने कवियों को इस शती के किसी भी व्यक्ति ने प्रभावित किया है, वह गाँधी ही है। यह बात अलग है कि उसे हमारे लेखक-वर्ग ने जितना समझा ऊपरी-ऊपरी तौर पर समझा और यह गाँधीवाद की भी कमजोरी रही कि वह इस शताब्दी की हमारी मन की स्थिति का ठीक विश्लेषण नहीं कर सका।

११८, नेहरू पार्क
जोधपुर (राज०)

संदर्भ संकेत :

१. पथिक पृ० २०, २. कामायनी पृ० २०, ३. कामायनी पृ० १७७, ४. कामायनी पृ० १६८, ५. उन्मुक्त पृ० १५०, ६. गाँधी पंचशती पृ० ३५८, ७. गाँधी पंचशती २९९, ८. गाँधी पंचशती ३२०,

कहानी

अप्रत्याशित

श्री पुरुषोत्तम पंचोली

पत्रकार

[श्री रंजन शर्मा धुन के पक्के और लगन के सच्चे प्रेस रिपोर्टर थे। उनकी इस धुन ने मकान-मालकिन का सोना हराम कर दिया और उन्हें मकान खाली करने के लिए विवश कर दिया था। वे जहाँ कहीं मकान भाड़े पर लेने जाते, वहाँ यही पूछा जाता कि क्या आप शादीशुदा हैं? श्री शर्मा जी ने शादी नहीं की थी, इस प्रश्न को अहमियत नहीं दिया था, पर मकान की समस्या हल करने के लिए उन्होंने शादी के लिए आगे कदम बढ़ाया।

सम्पादक की सुपुत्री कुमारी आभा जो टेलीप्रिंटर पर काम करती थी, उसने एक दिन अपने पास में खड़े श्री शर्मा जी से पूछ दिया, "क्या आपकी शादी हो गई?" इस वाक्य के आधार पर श्री शर्मा जी ने शादीशुदा होने के लिए किसी कागज़ पर कुछ लिखकर कुमारी आभा के पास पड़े टेलीप्रिंटर के कागज़ में मौका देखकर चुपके से छिपा दिया। उसका परिणाम जानने के लिए कहानी पढ़िए और कुछ विचारिए —सम्पादक]

रंजन शर्मा एम०ए०. यानी 'दिक्‌दर्शक' दैनिक पत्र के कोटा के सिटी-रिपोर्टर यानी कि आठ बजे उठना, चाय पीना, नहा-धोकर निबटना और पेन, डायरी, हैण्ड बेग जिसमें कुछ भरे कुछ खाली कागज, कुछ परिचय-पत्र और इसी किस्म की एक-आध चीज और होती, लेकर बाहर निकल जाना।

बारह-एक बजे तक किसी ढाबे में खाना खाना, फिर गलियों-चौराहों और दफ्तरों की खाक छानना। शाम को सात बजे 'दिक्‌दर्शक' के कार्यालय में जाकर दिन भर की सारी खबरों को व्यवस्थित रूप से टाइप करना।

घर स्वयं का तो है नहीं, किराये के घरमें रहते हैं! बारह-एक बजे रात को रोज मकान की कुण्डी खड़खड़ाते हैं रोज मकान मालकिन 'रामप्यारी' अपनी आदत के अनुसार बड़बड़ाती हुई दरवाजा खोलती है और रंजन शर्मा अंदर कमरे में पहुँच, कपड़े निकालते हैं, तौलिया लपेट बाहर दंतमंजन करते हैं, पानी पीकर सो जाते हैं।

आज वे मकान मालकिन से कतई नहीं लड़ते, किन्तु 'रामप्यारी' ने आज कुछ ज्यादा ही चें-चें की थी। वे जानते हैं कि रामप्यारी आदतन कुछ बड़बड़ाती है पर आखिर रोज-रोज की इस थुक्का-फजीहत से वे ऊब ही गए थे। उन्होंने भी 'वो' सुनाई कि सारा मुहल्ला जाग उठा, बड़ी देर के बाद मकान-मालकिन का बड़ा लड़का अपनी गुस्सेवर माँ की बाँहटी पकड़ कर अन्दर ले गया और कमरे के किवाड़ लगा दिए।

टेलीप्रिंटर पर तोते की चोंच की तरह आभा श्रीवास्तव की उँगलियाँ टिक-टिक करती तेजी से चलती हैं।

आभा श्रीवास्तव अर्थात् 'दिकूदर्शक' के प्रधान सम्पादक की इकलौती बेटी यानी सुन्दरता और चंचलता की पर्याय।

रंजन चाहता था कि 'सिटीरिपोर्टर' का काम छोड़ वह भी कार्यालय में ही काम करे, किन्तु कई बार कहने के बावजूद भी प्रधान सम्पादक पी० आर० श्रीवास्तव ने उसकी बात नहीं मानी थी। बल्कि यदा-

कदा जब वह शाम को अपनी खबरें आभा के पास वाले टाइपराइटर पर टाइप करता तो उसे उठाकर अपने पास वाले टाइपराइटर पर बिठा देता था ।

आज मकान मालकिन ने स्पष्ट कह दिया था, "तीन दिन में मकान खाली कर देना । यह कोई धर्मशाला नहीं कि कभी भी आए, कभी भी चले गए, रात के बारह–बारह, एक–एक बजे आना, आठ–आठ बजे उठना । कहीं और देखो मकान, मेरा मकान तो सोमवार तक खाली हो जाना चाहिए ।"

उन्होंने आज दूसरा कमरा बदलने का निश्चय कर ही लिया था । दो–चार जगह बात भी की, किन्तु प्रत्येक मकान मालिक उनकी योग्यता और रोजगार की बात न करके पूछता यह कि 'जनाब, अकेले हो या शादीशुदा' वे मन ही मन खिन्न हो जाते । क्या शादी नहीं करना भी एक गुनाह है और फिर कमरे से शादी का क्या सम्बन्ध । वे लाख समझाते आप शादीशुदा–शादीशुदा की क्या रट लगाते हैं ? मैं तो इतना जानता हूँ कि आपको किराया ठीक समय पर चुका दूँगा, चाहो तो एडवांस ले लो ।

किन्तु कोटा के मकान मालिक हैं कि समझते ही नहीं । दो दिन की दौड़–धूप करने के बाद उन्होंने हार मान ली । सोचा या तो शादी कर लो या पुरानी मकान मालकिन से ही माफी माँग लो । जैसे–तैसे यह महीना तो टले ।

बाहर पानी की झड़ी लगी हुई थी । रंजन शर्मा चाय पीकर कमरे से बाहर निकलने को तैयार खड़े थे; किन्तु जाएँ कैसे ? सोचा बरसात थम जाने पर ही जाएँगे–अन्दर कमरे में ही बैठ गए–वहुत दिनों के बाद फुरसत में बैठे थे ।

आज उनके मस्तिष्क पर रह–रह कर आभा का चित्र बनता–बिगड़ता था । उन्हें याद आया–एक बार जब वे यह काम करने लगे ही थे आभा ने भी उनसे पूछा था, शादी हो गई ?

उन्होंने हँसकर कहा, "अ–हा शादी ? शादी अभी तक नहीं हुई ।"

इस उत्तर को सुनकर आभा मुस्कराती हुई बाहर चली गई थी । बहुत देर बाद मकान मालकिन का लड़का बाहर निकला तो रंजन शर्मा का स्वप्न टूटा । उन्होंने देखा बाहर पानी थम गया है और वे बेग लेकर बाहर निकल पड़े ।

'दिक्दर्शक' के कार्यालय पर पहुँचकर उन्होंने देखा, 'आभा' की उँगलियाँ टेलीप्रिंटर पर गतिमान हो रही हैं । वे कुछ देर आभा के पास ही खड़े हो गए ।

कोटा २५ जुलाई ७७...आज यहाँ जिलाधीश श्री....ने बताया कि...।

...कोटा २५ जुलाई ७७ विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि...। कोटा २५ जुलाई...७७ ।

रंजन शर्मा अपलक, भाव–विभोर होकर आभा की उँगलियों को और आभा के मुख–मण्डल की आभा को देखते रहे ।

कुछ देर बाद जब आभा ने रंजन को पास खड़े देखा, तो पूछा, "आप ! कब से खड़े हैं ?"

"मैं ! मैं–मैं अभी आया ही था ।" रंजन शर्मा ने सकपकाते हुए उत्तर दिया । मानो उन्हें इस प्रश्न की आशा नहीं थी ।

वह फिर बोला– "आप बड़ी तेज काम करती हैं ।"

'क्या ?' आभा ने किञ्चित उग्र स्वर में पूछा ।

"हाँ...हाँ...तेज यानी कि स्पीडली"

"अच्छा...अच्छा" आभा ने मुस्कराते हुए कहा और उठकर प्रधान सम्पादक के कमरे में चली गई ।

आज रात भर रंजन शर्मा सो न सके । उन्हें मकान–मालिक के शब्द बार–बार याद आ रहे थे– 'शादीशुदा हो ?' और कभी–कभी आभा का मुस्कराता हुआ चेहरा उनकी आँखों पर तैरता रहा ।

उन्होंने जबरदस्ती सोने का प्रयास किया, लेकिन सब व्यर्थ रहा । अन्ततोगत्वा उन्होंने पेन उठाया और कागज पर कुछ लिखा । अगले दिन रंजन शर्मा दिन भर की रिपोर्टिंग के बाद शाम को 'दिक्दर्शक' के

कार्यालय में पहुँचे । हमेशा की तरह आभा की उँगलियाँ गतिमान थीं ।

उन्होंने बेग से चिट निकाला और तरकीब से टेलीप्रिन्टर के पास रखे कागजों में छिपा दिया । वे अपने टाइपराइटर पर खबरें करने में व्यस्त थे । 'नमस्ते' उन्हें सुनाई दिया ।

उन्होंने देखा, बाहर खड़ी आभा अपना हाथ हिला रही है । उन्होंने मुस्कराते हुए नमस्ते किया । आज जल्दी ही काम खत्म कर वे घर आ गए । एक अजीब खुशी उनके हृदय पर तरंगित हो रही थी ।

अगले दिन रिपोर्टिंग के बाद शाम को कार्यालय पहुँचे, तो कार्यालय के कर्मचारी ने उन्हें एक चिट देते हुए कहा, "प्रधान सम्पादक जी ने आपको यह देने के लिए कहा था—वे आज दिल्ली गए हैं।" रंजन शर्मा ने चिट पढ़ा तो पैरों तले की जमीन खिसक गई। चिट वही था, जो उन्होंने आभा को कल दिया था। उसी के पीछे लिखा था।

"इस मास का वेतन ३० तारीख को ले जाना, आज से ही हमें आपकी सेवाओं की आवश्यकता नहीं है। कल से काम पर न आएँगे।"

(हस्ताक्षर) पी० आर० श्रीवास्तव

रंजन शर्मा के हाथ से चिट छूट पड़ा। यह सब क्या था। उन्हें समझ में नहीं आ रहा था। स्वप्नों की भ्रूणहत्या का अर्थ शायद वे आज पूरी तरह समझे थे। सब कुछ अनचाहा–अप्रत्याशित।

१७।२६७ बृजराजपुरा
कोटा (राजस्थान)

रंगायन

लोकसंस्कृति तथा लोककला का हिंदी मासिक पत्र । वार्षिक मूल्य ७ रुपये
सम्पादक : डा० महेन्द्र भानावत
लोककला मण्डल, उदयपुर

—: सूक्ति सुधा :—

तृणं ब्रह्मविदः स्वर्गस्तृणं शूरस्य जीवितम् ।
जिताक्षस्य तृणं नारी निस्पृहस्य तृणं जगत् ॥

[ब्रह्मज्ञानी के लिए स्वर्ग तृण के समान है, शूरवीर के लिए जीवन तृण के समान है, इन्द्रिय संयमी के लिए स्त्री तृण के समान है एवं निस्पृह व्यक्ति के लिए जगत् तृणतुल्य है ।]

पुष्पे गन्धं तिले तैलं काष्ठे वह्निः पयसि घृतम् ।
इक्षौ गुडं तथा देहे पश्यात्मानं विवेकतः ॥

[जिस प्रकार पुष्प में गन्ध, तिल में तैल, काष्ठ से अग्नि, दूध में घी एवं ईख में गुड़ व्याप्त है, उसी प्रकार शरीर में व्याप्त आत्मा को देखो ।]

युगान्ते प्रचलेन्मेरुः कल्पान्ते सप्तसागराः ।
साधवः प्रतिपन्नार्थान्न चलन्ति कदाचन ॥

[युग के अन्त में सुमेरु चलित हो जाय और कल्प के अन्त में सातों महासागर विचलित हो जाएँ, परन्तु सज्जन व्यक्ति अपने स्वीकृत अर्थ (कार्य प्रयोजन) से कभी विचलित नहीं होते ।]

मानव-शत्रु : अहंकार

श्री राजराजेश्वर प्रकाश सक्सेना

[प्रस्तुत लेख में अहंकार की उत्पत्ति और समाप्ति पर विचार करके अनेक तर्कों-प्रमाणों द्वारा उसे मानव का महान् शत्रु और विघातक बताया गया है। अहंकार से मनुष्य का पतन होता है, वह विकार-ग्रस्त और दुर्गुणी बन जाता है। इसलिए आज कल के जीवन में व्याप्त इस रोग से बचना चाहिए। यही भाव श्री सक्सेना जी ने इस चिन्तन-प्रधान निबन्ध में कुशलता से व्यक्त किया है। —स०]

अपनो बुद्धि, ज्ञान, कला-कौशल, रंग-रूप, सामर्थ्य शक्ति तथा किन्हीं विशेषताओं का अहंकार, मनुष्य के पतन का कारण बन जाता है। जहाँ मनुष्य के जीवन में अहंकार का संचार हुआ, उसकी क्रियाएँ एवं चेष्टाएँ संभावित रूप से बदल जाती हैं। वह नशेबाज व्यक्ति की तरह असंतुलित एवं अव्यवस्थित कार्य अपनाने लग जाता है। उसमें विवेकशीलता और दूरदर्शिता का ह्रास होता जाता है। किसी ने ठीक ही कहा है, "अभिमान वह विष-वेलि है, जो जीवन की हरियाली, सौन्दर्य, बुद्धि-विस्तार को रोक उसे शुष्क कर देती है।" "अहंकार एक ऐसी विष-बुझी तलवार है, जो अपने तथा दूसरों के लिए घातक सिद्ध होती है।" "अहंकार व्यक्ति को क्रूरता, शोषण, अनाचार की ओर प्रवृत्त करता है। फलतः, व्यक्ति और समाज का अनिष्ट होता है।"

अभिमान-वृद्धि के साथ, पतन का श्रीगणेश हो जाता है। अभिमान की पराकाष्ठा व्यक्ति को जड़-मूल से नष्ट कर देती है, इतिहास इस बात का साक्षी है। रावण ने अभिमान के वशीभूत होकर, मानवता की मर्यादा लाँघकर हीन कृत्य करने प्रारम्भ कर दिए! परिणामस्वरूप वह परिवार-सहित नष्ट हो गया।

गणित तथा विज्ञान के प्रकांड विद्वान् 'न्यूटन' की गणित सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण खोज जब एक पत्र में प्रकाशित हुई तब अनेक व्यक्तियों के प्रशस्ति-पत्र, धन्यवाद ज्ञापन, अभिनन्दन-पत्र आदि-आदि उनके पास आना प्रारम्भ हो गया। आज के युग में यदि किसी व्यक्ति के पास इतने प्रशस्ति-पत्र आएँ, तो निःसंदेह वह अहंकार-वश फट फड़ेगा, परन्तु न्यूटन ने कहा था, "अब मेरी प्रसिद्धि तो खूब बढेगी, किन्तु विद्या, जिसके लिए मैंने जीवन लगा दिया, उसका विकास रुक जाएगा।" इस कथन से स्पष्ट हो जाता है कि प्रशंसा और प्रसिद्धि अभिमान के पोषक तत्त्व हैं। जिस व्यक्ति को स्वयं की बड़ाई तथा ख्याति की ही बात सूझे, वह भला प्रगति की दिशा में किस प्रकार अपना पग आगे बढ़ा सकेगा? श्रम एवं साधना की महत्ता को वह विस्मृत कर देता है।। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर सफल लेखक, कवि, वैज्ञानिक, कलाकार, दार्शनिक एवं महापुरुषों ने अपनी साधना की पूर्णता के पूर्व अपने क्रिया-कलापों को गुप्त रखा, प्रशंसा और प्रसिद्धि से अपने को अछूता रखा तथा अहंकार के शिकंजे से दूर रहे।

अहंकार का पतन :

वास्तव में अहंकार पर आधारित जो विश्वास है, वह पतन का द्वार खोलता है! भौतिकता से अभिभूत लोग संकीर्णता, स्वार्थपरता एवं अनुदारता के दलदल में फँस जाते हैं। अहंकार के आधार ही मनोविकार एवं भौतिक पदार्थ हैं। भोग-विलास के सिवाय उसे कुछ दिखाई नहीं पड़ता। इसके अभिशाप से व्यक्ति दीन-दुःखी, असहाय तथा निष्प्राण होकर धरती पर भार-स्वरूप बना रहता है। सभी अनर्थों

की जड़ अहंकार-जनित विश्वास है। अशांति, युद्ध, कलह तथा राग-द्वेष यहीं से उत्पन्न होते हैं। नेपोलियन, मुसोलिनी एवं सिकन्दर के अहंकार-युक्त विश्वास ने विश्व को नष्ट कर डाला।

आत्म-विश्वास एक शक्ति :

विश्वास स्वयं में एक शक्ति है। शक्ति रूपी आत्म-विश्वास की जानकारी कर उसके सदुपयोग करने की कला की परख होनी चाहिए। अंतःकरण की सुषुप्त शक्तियों के जग पड़ने का नाम ही आत्म-विश्वास है। विश्वास की ज्योति जलाकर ही अंधकार को नष्ट किया जा सकता है। आत्म-विश्वास आंतरिक शक्तियों को केन्द्रित एवं नियन्त्रित करता है। जब केन्द्रित एवं संगठित शक्तियाँ एक दिशा की ओर चल पड़ती हैं, तब सफलता चरण चूमने लग जाती है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विश्वास की आवश्यकता है। विश्वास हमारा मार्गदर्शन करता है तथा सत्पथ पर अग्रसर होने में प्रेरणादायक है। जीवन-रहस्य को समझने हेतु आत्म विश्वास का अश्रय लेना ही पड़ेगा। जीवन-निर्माण में आत्म-विश्वास का प्रधान हाथ रहता है। जो व्यक्ति अपनी इस शक्ति का विकास नहीं कर पाए, उन्हें अभाव और दरिद्रता में पलते हुए जीवन को समाप्त करना पड़ा। अविश्वासी व्यक्ति न तो किसी का सहायक हो पाते है और न दूसरों को आत्मीयतपूर्ण सहानुभूति ही प्राप्त कर पाते हैं। अहंकार और आत्म-विश्वास का बाह्य कलेवर देखने में एक समान दिखाई पड़ता है, लेकिन दोनों की आत्मा भिन्न है।

महर्षि वशिष्ठ ने विश्वास को कुल की 'नारी' और अहंकार को 'वेश्या' की संज्ञा दी है। स्वामी रामतीर्थ ने विश्वास को 'राम' और अहंकार को 'रावण' कहा है। आत्मनिष्ठा पर केन्द्रित विश्वास 'राम' है। अहंकार पर आधारित विश्वास 'रावण'। आत्म-निष्ठ विश्वास मानव को प्रगति की ओर ले जाता है। लोक-मङ्गल के लिए सर्वस्व त्याग देने की प्रबल प्रेरणा यहीं से मिलती है। सुकरात को विष का प्याला पी जाने का साहस आत्म-बल के द्वारा ही प्राप्त हुआ। ईसा को शूली पर चढ़ने तथा सरदार भगतसिंह को हँसते-हँसते फाँसी पर चढ़ने की शक्ति आत्म-बल ने ही प्रदान की। आत्मनिष्ठ विश्वासी राम तथा दधीचि को त्यागमय जीवन-यापन की शक्ति वहीं से प्राप्त हुई।

जीवन-निर्माणके लिए आत्म-निष्ठा पर आधारित आत्म-विश्वास की अभिवृद्धि आवश्यक है। इसका सहज मार्ग अपने कर्तव्य एवं उत्तरदायित्वों को ईमानदारी के साथ पूर्ण करते रहने में है। कार्य चाहे छोटे और बड़े हों, इसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिए। छोटे-छोटे कार्यों के संपादन करते चलने में मनोबल बढ़ता है तथा आगे का मार्ग प्रशस्त होता है। बड़े लोगों ने अपने जीवन-काल के प्रारंभ में छोटे काम ही हाथ में लिये थे। कोई भी कार्य छोटा या बड़ा नहीं होता, यह तो कार्य-संपादन करने वालों की मनोभूमि पर आधारित होता है। जीवन का आधार आत्म-विश्वास ही है, जिसने स्वयं को पहचाना और अपनी शक्तियों का विकास किया, वह अवश्य ही अपने जीवन-संग्राम में सफल होगा। मानसिक दुर्बलता को दूर करना ही श्रेयस्कर है। हमें अपने चिन्तन में परिवर्तन लाना होगा। कबीर ने दृष्टि पसारकर देखा, तो सर्वत्र दुःखियों की भीड़ देखी। इसका कारण ढूँढ़ने पर उनमें मानसिक दुर्बलता ही निमित्त पाई। सुखियों में जिनकी गणना की जा सकती है, वे उतने ही हैं, जितनों ने अपने चिन्तन की शैली बदल ली–

"धूत दुःखी, अवधूत दुःखी है,
रंक दुःखी धन रीता रे।
कहें कबीर, वही नर सुखिया,
जिनने मन को जीता रे॥

अहंकारी ललक :

अहंकारी में व्यक्तिगत सुविधा और साधनों का असीम अभिवर्द्धन करने की तीव्र ललक रहती है तथा वह दूसरों पर अपने वर्चस्व की छाप छोड़ने की अहम्मन्यता। बड़प्पन की आकांक्षा बुरी नहीं होती; परन्तु जब वह संकीर्ण स्वार्थ-परता की परिधि में घिरी रहती है, तब उसकी तृप्ति वैभव और विलास के अधिकाधिक साधन संचय करने में ही दृष्टिगोचर होती है। उसे अधिक

सम्पत्तिवान बनने की इच्छा होती है। इससे लाभ तो अवश्य प्राप्त है, वह अपनी स्वयं की सफलताओं से दूसरे को चमत्कृत करके उनपर प्रतिभावान एवं भाग्यवान होने की छाप भी छोड़ सकता है। इससे अपनी अहम्मन्यता की एक सीमा की पूर्ति होती है।

जिस प्रकार ईंधन प्राप्त होते रहने पर फैलने वाली आग की लपटें फैलतीं और ऊँची उठती हैं, उसी प्रकार महत्त्वाकांक्षाएँ भी संमित नहीं हैं। महत्त्वाकांक्षाएँ अधिक साधन माँगती हैं और अधिक शीघ्रताएँ चाहती हैं। यह असंतोष क्रमशः प्रचण्ड होता जाता है तथा स्थिति अधीरता एवं आतुरता के समकक्ष बनती जाती है। जितनी जल्दी, जितनी सम्पन्नता मिल सकती है, उसके लिए मनःक्षेत्र में समुद्र-मन्थन जैसा खड़ा हो जाता है। यह ललक आँधी-तूफान का रूप धारण कर लेती है। फलतः, मर्यादाओं के और औचित्य के सारे बाँध टूट जाते हैं तथा यह नीति अपनानी पड़ती है कि जैसे बने वैसे अपने वैभव एवं वर्चस्व में समस्त शक्ति झोंक दी जाए।

विकारों पर विजय कैसे ?

मानव-प्रकृति ऐसी है कि वह स्वयं के समस्त विकारों पर विजय प्राप्त कर सकने में सक्षम है, किन्तु अहंकार का जो विकार हमारे अंतस्तल में प्रविष्ट है, उसपर विजय प्राप्त करना एक कठिन समस्या है! 'अहं-भाव' का नाश तो स्वयं ईश्वर ही कर सकता है! जो पुरुष चरित्रवान हैं, 'काम-वासना' को अपना सबसे बड़ा शत्रु मानकर उसके दमन का प्रयत्न करते हैं, लेकिन भक्ति-सिद्धांत की मान्यता यह है कि जीव का सबसे बड़ा शत्रु स्वयं का 'अहं-भाव' है। इस अहंकार के रहते भी अहं-भाव के उत्पन्न होते ही अन्य समस्त विकार जीव के मन को घेर लेते हैं तथा उसकी समस्त साधना निष्फल हो जाती है।

उदाहरण स्वरूप नारद मुनि को लीजिए! उन्होंने काम, क्रोध और मोह पर विजय प्राप्त की, लेकिन इसी विजय के दम्भ में उनमें 'अहं' की जो भावना जाग्रत हुई, उससे उनकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई तथा मोहिनी से विवाह की लालसा में उनका जो पतन हुआ, वह सर्वविदित है। नारदजी के मन में यह भावना जाग्रत हुई कि शंकर ने तो केवल काम-भावना पर विजय प्राप्त की थी, मैंने तो काम के साथ क्रोध तथा मोह-लोभ को भी जीत लिया है। स्वयं के इस मूल्यांकन से उनमें अहंकार जागा। अपने दान की महिमा को बनाए रखने के दर्प में कर्ण ने अपने कुण्डल और कवच ब्राह्मण रूपी इन्द्र को दे दिए और अत्यन्त शूरवीर होते हुए भी मारा गया। रामायण में मेघनाद 'काम' और कुंभकरण 'अहंकार' के प्रतीक हैं। ब्रह्मचारी हनुमान के बारम्बार ललकारने पर भी मेघनाद उनसे युद्ध करने नहीं आया, पर वैरागी लक्ष्मण को मूर्छित कर दिया। लक्ष्मण जी ने भी अंत में उसपर विजय प्राप्त कर ली, परन्तु अहंकार के प्रतीक कुंभकरण का सामना करने का साहस उन्होंने भी नहीं किया।

अहंकार पर किसी सद्गुण का प्रभाव नहीं होता। अहंकार की समाप्ति के लिए स्वयं भगवान् की शक्ति ही चाहिए। प्रतीक रूप में अहंकार रूपी कुंभकरण के नाश में जब सभी वानर और ज्ञान रूपी सुग्रीव-अंगद आदि भी परास्त हो गए, तो उन्होंने भगवान् 'राम' की शरण ली तथा उनको आगे करके ही कुम्भकरण का वध किया। नारद जी के अहंकार को दूर करने हेतु स्वयं भगवान् को माया की रचना करनी पड़ी। कर्ण के 'अहं' को नष्ट करने हेतु भगवान् कृष्ण को अर्जुन का सारथी बनना पड़ा। अहंकारी भी सबका सामना कर सकता है, पर स्वयं भगवान् का नहीं। कर्ण के बार-बार अर्जुन के सामने जाने को कहने पर भी अहंकारी शल्य श्रीकृष्ण के सामने जाने से कतराता रहा। अन्य दुर्गुण तो थोड़े समय के लिए घेरा डालते हैं और एक समय दो दुर्गुण ही ज्यादा प्रबल होते हैं, परन्तु अहंकार एक ऐसी चीज है जो एक बार मन में आ जाए, तो हटती नहीं तथा स्थायी रूप से बस जाती है।

स्वाभिमानी कैसे बनें ?

किसी व्यक्ति ने सर आइज़क न्यूटन से कहा, "ऐसा लगता है कि आपने तो पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया है।" विज्ञान-जगत् के गण-मान्य मनीषी ने उत्तर

दिया, "मेरे सामने ज्ञान का अथाह समुद्र फैला पड़ा है, जिसके किनारे बैठकर कुछ ही घोंघे तथा सीपियाँ उठा पाया हूँ ।" उनकी निरभिमानता का कैसा सुन्दर उदाहरण है । समीपवर्ती अन्य व्यक्तियों से अपने आपको असाधारण, विशिष्ट उच्च स्तर का मान लेने की मान्यता अहंकार है ।

विश्वविख्यात दार्शनिक काण्ट महोदय ने ४०–४२ वर्ष अपने सिद्धांतों का गम्भीर चिन्तन–मनन किया । इस विचार–मन्थन के परिणाम–स्वरूप जो निष्कर्ष निकले, उन्हें ही लोगों के समक्ष अपनी दार्शनिक मान्यता के रूप में प्रस्तुत किया । इसीसे वे अभिमान–रहित होकर अपने सिद्धांतों का सही प्रतिपादन कर सकने में समर्थ हो सके । कविवर रवीन्द्रनाथ टैगोर ने प्रशंसा–प्रसिद्धि और अभिमान के लिए "गीतांजलि" की रचना नहीं की, वरन् विश्वात्मा–परमात्मा के प्रति उन्होंने भाव–सुमन अर्पित किए । इसी प्रकार गौतम बुद्ध, रामकृष्ण परमहंस, महर्षि रमण, महात्मा गाँधी आदि युग–पुरुषों ने प्रशंसा, प्रसिद्धि की सदा उपेक्षा की और अभिमान के विष से अपने को सदा मुक्त रखा । तभी जनता–जनार्दन के सही मार्ग–दर्शन में समर्थ सिद्ध हो सके ।

अहंकार बनाम स्वाभिमान :

अभिमान एवं स्वाभिमान में आकाश–पाताल का अन्तर है । अभिमान का जन्म अपने संकीर्ण दृष्टिकोण के फल–स्वरूप होता है, जबकि स्वाभिमान का उदय व्यक्ति के उदात्त एवं विशाल आत्मीयता पूर्ण दृष्टिकोण के कारण होता है । अभिमान व्यक्ति के ओछेपन की निशानी है । स्वाभिमान, उसकी उच्चता और महानता को ! अपने देश, जाति, धर्म, आदर्श, मानवता की आन–बान और शान की रक्षा हेतु प्राणों की बाजी लगा देना, स्वाभिमान का परिचायक है । अभिमान भौतिक पदार्थों का होता है । धन, शिक्षा, रूप, बल, पद आदि नश्वर सम्पदाओं एवं विशेषताओं से इतराने वाले व्यक्ति अहंकारी कहे जाएँगे ।

मकान नं. ४४७, गायत्री भवन,
शास्त्री नगर, (दादाबाड़ी), पो० आ० कोटा-९ (राज०)

० कहकहे ०

एक प्रौढ़ अविवाहित व्यक्ति ने अपने मित्र को झींकते हुए बताया कि जिस किसी भी लड़की से शादी करना चाहता हूँ, उसे मेरी माँ नापसन्द कर देती है ।

मित्र ने सलाह दी, तब ऐसा करो, "ऐसी लड़की ढूंढ़ो जो हूबहू तुम्हारी माँ–जैसी हो ।"

छः महीने बाद उस व्यक्ति ने अपने मित्र को बताया, "मैंने तुम्हारी सलाह के मुताबिक ही किया । ऐसी खोज निकाली जो ठीक मेरी माँ–जैसी थी । देखने–सुनने में, बातचीत में, खाना बनाने में और मेरी माँ को वह पसन्द भी आ गई ।"

"फिर भी तुमने शादी नहीं की ?" मित्र ने पूछा ।

"पर मेरे पिता ने ऐसी लड़की नापसन्द कर दी ।" अविवाहित ने उदास मुँह उत्तर दिया ।

× × ×

हिन्दी साहित्य की कक्षा में अनिल ठीक चल रहा था, परंतु उसमें एक आदत बड़ी बुरी थी । वह बोलता बहुत था । उसकी अध्यापिका ने सोचा कि इस बात का पता उसके माता–पिता को पता लग जाना चाहिए । इसलिए उसने अनिल के रिपोर्ट–कार्ड में लिखा, "होशियार है, किन्तु उसके जैसा बोलनेवाला मैंने आज तक नहीं देखा ।"

कुछ दिनों बाद वह कार्ड लौटकर आया तो, उसमें अनिल के पिता ने पेन्सिल से नोट कर रखा था, "आप अभी तक उसकी माँ से नहीं मिली हैं ।"

× × ×

पुस्तक विक्रेता, "श्रीमानजी, नई पुस्तक को अवश्य खरीदिए । यह इतनी रोचक है कि आपकी रात की नींद काफूर हो जाएगी ।"

खरीददार,—"क्षमा कीजिएगा, जब तक मेरी श्रीमती जी मौजूद हैं, मुझे इस प्रकार के साहित्य की जरूरत नहीं है ।"

नारी-परक

देश-हित की दीवानी ये देवियाँ

श्री श्रीकृष्णगोपाल माथुर

पत्रकार

लेखक

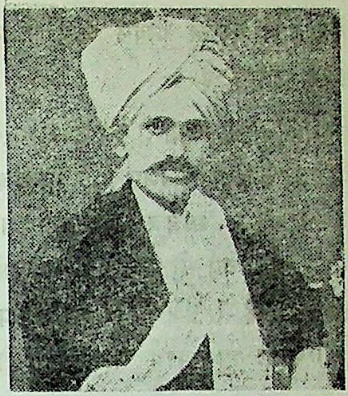

[भारत का नारी समाज प्राचीन काल से आज तक किस प्रकार देश-हित में प्रवृत्त रहा है, और उसने किस प्रकार समाज को देश-सेवा का पाठ पढ़ाया है, इसकी सुन्दर झाँकी इस लेख में सादाहरण दी गई है। आज भी नारी-समाज से बड़ी आशा है कि समस्या-ग्रस्त इस देश की नौका को खेकर पार लगाए। —सम्पादक]

हमारी भारतभूमि वीरभोग्या वसुन्धरा है। इसने देश की रक्षा के लिए प्यारे प्राणों को हथेली पर रखकर जहाँ वीर नरपुंगवों को जन्म दिया है, वहीं देशरक्षा, शील और स्वधर्म को बचाने के हेतु धधकती चिता में सहर्ष कूद पड़ने वाली आदर्श महिलाओं को भी पैदा किया है। एक नहीं अनेक नारियों ने अपने पुत्र, कलत्र, पति, पिता के ललाट पर कुमकुम-चावल लगाकर, श्रीफल देकर देश के रक्षार्थ रण में भेजा है। वेदों के काल से लगाकर आज तक हम भारतीय नारी को पतिव्रत धर्म का पालन करते हुए धर्म, देश और कुल-मर्यादा की रक्षाके लिए उत्सर्ग होते देखते हैं। इसीसे हम कह सकते हैं कि भारतीय नारियों को जो गौरव प्राप्त है, वह अन्यत्र नहीं देखा जाता।

प्राचीन काल :

प्राचीन युग की पराक्रमशीला सती देवियाँ गार्गी, लीलावती, अनसुया, अरुधन्ती, मैत्रेयी इत्यादि के नाम आज भी स्मरणीय हैं। श्रीराम-प्रिया सीता ने महाबली रावण को डांट बताई थी जिसको सुनकर रावण थरथर काँपने लगा था। सती शांडिली ने पति-सेवा के तेज से सूर्योदय होना रोककर पति के प्राण बचाए थे। यह तो प्रसिद्ध है कि अकाट्य युक्तियों से पराजित करके सावित्री ने पति सत्यवान को यमराज से छुड़ा लिया था। ये कथाएँ महाभारत के अनुशासनपर्व के १२३वें अध्याय में आती हैं। नारी में ये ही वे गुण हैं, जिनसे पुरुष ने भी उसे पाने की इच्छा प्रकट की है। अथर्ववेद की १४।१।५० सूक्ति में आयो है—पति कहता है, "मैं अपने सौभाग्य के लिए तेरा पाणि ग्रहण-करता हूँ।"

उस समय बड़े-बड़े राजा-महराजाओं के अन्तःपुर की रानियों का एक संघटन भी था। इसी सिलसिले में राजपूत रमणियों का त्याग और आत्म-विसर्जन हम नहीं भूल सकते। चित्तौड़ के एक सैनिक की पुत्री विद्युल्लता ने अपने भावी पति समर सिंह से क्रोधित होकर कह दिया था, "मातृभूमि विधर्मी के हाथ में जा रही हो तब भी तुम कायरता दिखाकर रण-क्षेत्र से लौट आए हो, खबरदार ऐसे कायर पुरुषों से प्रेम-विवाह करना राजपूत कन्याएँ घोर पाप समझती हैं-दूर रहो।" ये ऐसे उदाहरण हैं, जिनसे त्याग-तपस्या, वीरता, निष्ठा-पूर्वक देशसेवा, पतिव्रत और निःस्वार्थता इतिहास में सदा चमकते रहेंगे।

इसके अतिरिक्त और भी वीराङ्गनाओं के नाम हैं। जैसे पद्मिनी, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, रानी दुर्गावती प्रभृति रणबांकुरी रमणियों और इनकी वीर नारी-सेना का वृत्तान्त पढ़कर हमारा मस्तक गर्व के साथ ऊँचा हो जाता है।

बंगाल के सुप्रसिद्ध "मंगल काव्य" में वर्णित लेखा कालिंगा, उनकी वीरव्रती सखियों और अनेक दृढ़संकल्प-धारी महिलाओं की अद्भुत शक्ति सामर्थ्य तथा पूर्ण

संगठन का हाल पढ़कर निर्बल जनों के मुर्दादिलों में भी जोश उमड़ उठता है ।

यही नहीं, रानी भवानी, रानी रासमणी, स्वर्णमयी, शरत्कुमारी, जाह्नवी दिनमणि, विन्दुवासिनी आदि सम्भ्रान्त नारियों ने समाज-सेवा, स्वदेश-सेवा, दीन-सेवा, पति-सेवा, धर्म-सेवा आदि सद्गुणों में प्रशंसनीय कृतित्व दिखाया है । बहिनों में शिक्षा-प्रचार करने के लिए ये एकजुट हो कार्य में प्रवृत्त हो गई थीं । इनका साहस बढ़ाने के हेतु वेथून साहब अंग्रेज के साथ महा समाज-सुधारक विद्यासागर और अनेक मनीषियों ने बहुत चेष्टाएँ की थीं । विदेशी महिला सिस्टर निवेदिता का नाम इस काम में प्रथम लिया जाएगा । इस महिला ने अनेक कष्ट उठाकर एनीबेसेंट के साथ घर-घर जाकर ऐसे प्रयत्न किए, जिससे कन्याएँ स्कूल में जाने लगीं और शिक्षा के महत्व को समझा जाने लगा ।

जागरण काल :

इसके बाद जब देश को पराधीनता के विरुद्ध राजनीतिक चेतना जागी, तब विप्लवी पुरुषों के साथ शिक्षित-अशिक्षित बहनों ने भी साथ दिया । सर्वप्रथम नारी-जागरण का सूत्रपात बंगाल में हुआ । वहाँ विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का जोर इतना बढ़ा कि उसकी लहर सारे भारत में फैल गई । नारियाँ चरखा चलाकर प्रतिदिन सूत कातती थीं । एक मिट्टी के या धातु के पात्र में देशहित के लिए प्रतिदिन एक मुट्ठी चावल डालती थीं, यह दान रूप में होता था । बालक-बालिकाओं को स्वदेश-भाषा की सीख दी जाती थी ।

मुगल सम्राटों के अत्याचारों के कारण नारी-समाज में पर्दाप्रथा, सतीदाह, बालविवाह आदि कुरीतियाँ घुन की तरह लग गई थीं । यह राजा राममोहनराय से नहीं देखा गया । उन्होंने कुछ मनीषियों के साथ नारी-प्रगति का व्यापक आन्दोलन शुरू किया । महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर, केशवदेव सेन, द्वारकानाथ गंगोपाध्याय, शिवनाथ शास्त्री, अंगरेज महिला मेरी-कारपेन्टर आदि प्रमुख व्यक्तियों की सहायता से नारियाँ राष्ट्रीय जीवन के सभी क्षेत्रों में भाग लेने लगीं । “बंग महिला समाज”, “आर्य महिला समिति” “नेशनल इन्डियन एसोसियेशन” इत्यादि प्रतिष्ठानों ने बहुत काम किया । इसके सिवाय, “बालाबोधिनी” “अबला-बान्धव” प्रभृति पत्रिकाओं ने, ब्रह्मसमाज के आन्दोलन ने, नारी-जागरण के प्रति आशातीत कर्त्तव्य निभाया ।

सन १८८९ ई० में बम्बई के राष्ट्रीय कांग्रेस अधिवेशन में छः महिलाओं ने प्रतिनिधि रूप से योग दिया । इनमें प्रसिद्ध लेखिका स्वर्णकुमारी देवी और प्रथम महिला चिकित्सक कादंबिनी भी थीं । इसी देवी ने सन् १८९० ई० में कलकत्ता के कांग्रेस-अधिवेशन में जो भाषण दिया, वह महिला का प्रथम भाषण था ।

श्रीमती स्वर्णकुमारी ने अपनी “भारती” पत्रिका के द्वारा स्वदेशी का मन्त्र फूँका । अपनी दोनों कन्याओं हिरण्मयी और सरला के द्वारा शिल्पनिकेतन, व्यायाम समितियाँ, “वीराष्टमी व्रत” का प्रवर्तन कायम कराके बंगाल की युवक-शक्ति को जगाया । महाराष्ट्र के शिवाजी उत्सव की भाँति प्रतापादित्य उत्सव मनाना स्थापित किया । स्वदेशी वस्तुओं का “लक्ष्मी भंडार’ खोला । सन् १९८० को बम्बई कांग्रेस प्रदर्शिनी में यहीं से नमूने भेजे गए थे, जिनकी उत्कृष्टता पर स्वर्णपदक मिला था । सन् १९१० में प्रयाग कांग्रेस अधिवेशन में “भारत स्त्री महामण्डल” की स्थापना करके नारियों को देशोन्नति के विविध कार्यों में लगाने का आयोजन किया गया था ।

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर को स्वादेशिक साहित्य की रचना करने के हेतु सत्येन्द्रनाथ ठाकुर की धर्मपत्नी ज्ञानदानन्दिनी देवी ने उत्साहित किया था ।

शासन-क्षेत्र :

शासन-व्यवस्था में भी नारी ने स्थान ले लिया था । श्री हेमलता बंगाल में सर्वप्रथम म्युनिसिपल कमिश्नर बनीं । कुमुदिनी बसु और ज्योतिर्मयी देवी कलकत्ता कारपोरेशन की प्रथम निर्वाचित महिला कौन्सिलर बनीं । बम्बई प्रदेश में पण्डित रमाबाई ने नारी-कल्याण-कार्य में योग दिया । पूना में कुछ नारियों ने मिलकर “आर्य महिला समिति” के द्वारा स्त्रियों की उन्नति के कार्यों में विशेष सहायता पहुँचाई । नेशनल

गुप्ता ने दान दिया । जगत् प्रसिद्ध विज्ञानाचार्य सर जगदीशचन्द्र बसु की पत्नी अचला बसु ने पति के नूतन आविष्कारों में तीस वर्ष तक लगातार योग तो दिया ही पर देश के शिशु या नारी-कल्याण में अपने को उत्सर्ग कर दिया था ।

भारत के मुक्ति-संग्राम में महात्मा गाँधी ने जितने सत्याग्रह आन्दोलन चलाए, उन सब में पुरुषों के साथ नारियों ने समान भाग लिया था । उनमें माता कस्तूरबा, सरोजनी नायडू, कमलादेवी चट्टोपाध्याय, अरुणा-आसफअली, सुचेता कृपलानी, विजय लक्ष्मी पण्डित, वासन्ती, कमला नेहरू, इन्दुमती गोयनका, निर्झरनी सरकार और सरलाबाला आदि महिलाओं के नाम प्रमुख हैं । अगस्त १९४२ के विप्लव में मातंगिनी हाजरा, बीणादास, शांतिदास, कल्पनादत्त, प्रीति ओदेदार आदि नारियों की कथा कभी भुलाई नहीं जाएगी । सन् १९०५ में बंग-भंग के कारण सारा देश कुपित सिंह की भाँति जाग उठा था । उस समय पुरुषों में जिस प्रकार बालमुकुन्द गुप्त ने ''चौबे का चिट्ठा'' लेखमाला के नाम से लार्ड कर्जन को धिक्कारा, उसी प्रकार 'बंग-लक्ष्मी' में सरोजिनी बसु, बसंतबाला होम, गिरीन्द्रमोहिनी-दासी और हेमांगिनी दास, कामिनी राय, मानकुमारी बसु, हिरण्यमयी और कुमुदिनी मिश्र आदि प्रमुख लेखिकाओं ने अपनी जोशीली रचनाओं से स्वदेश-प्रेम का प्रचार किया था ।

आन्दोलन-क्षेत्र :

सन् १९३५ से ३९ तक जब हैदराबाद, काश्मीर, मैसूर, उड़ीसा राज्यों की प्रजा ने स्वेच्छाचारी शासन के विरुद्ध गणतन्त्र-संग्राम छेड़ा, तब भी नारियों ने योग देकर अमानुषिक यातनाएँ सहीं—बहुतों ने तो प्राण खो दिए । अशिक्षित नारियाँ भी जाग उठीं । हमारे यहाँ पहले नारियों को मत देने का अधिकार नहीं था । सरोजिनी नायडू की प्राणपण चेष्टा से यह अधिकार ''मांटेगू चेम्सफोर्ड रिफार्म बिल'' में सर्वप्रथम मिला । इसीसे सन् १९२३ में मणिलाल लीलाधर काश ने मिल में काम करनेवाली स्त्रियों और बालकों की सेवा-प्रणाली सीखने को विलायत जाकर और फिर यहाँ आकर ताड़देव बम्बई में 'सेवा मन्दिर' स्थापित किया था ।

दया का सूखता सोता :

विश्व छात्र-संघ का अधिवेशन १९२७ में मैसूर में हुआ था । अमरीकी समाज-सेवी नेता रेवरेण्ड माँट उसकी अध्यक्षता कर रहे थे ।

उन्होंने महात्मा गाँधी से मिलने का समय चाहा-बापूकी दिनचर्या पूर्व निर्धारित कार्यक्रमों के कारण बड़ी व्यस्त थी । अतः, उन्होंने सोने से पहले सिर्फ दस मिनट का समय उन्हें दिया ।

अभिवादन के उपरान्त रेवरेण्ड माँट ने पूछा, ''कौन सी ऐसी चीज है जो कि आपको आज भी सर्वाधिक आशावान बनाती है बापू जी ?''

बापू मुस्कराए और बोले, ''कितनी ही छेड़-छाड़ होने पर भी वहाँ के लोगों के मन से अहिंसा की वृत्ति नहीं जाती है । यह सब देखकर मुझे बहुत आशा होती है ।''

''कौन-सी ऐसी चीज है जिससे कि आप दिन-रात चिन्तित रहते हैं ?'' अगले पल ही माँट पूछ बैठे ।

''शिक्षित लोगों में दया-भाव तेजी से सूखता जा रहा है । इसीसे मैं सदा चिन्तित रहता हूँ ।'' बापू व्यथापूर्वक बोले ।

उनकी यह व्यथा आज गहराती जा रही है । क्या हम प्रयत्न नहीं कर सकते हैं कि इस दया भाव के सूखते सोतों को रोकें । पहल तो कर ही सकते हैं । सूखने से रोकने की ।

सन् १९३० में चन्द्रनगर की एक सभा में कामिनी राय ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा था कि मूर्ख नारी और मूर्ख पतियों का अपनी संतान पर जो बुरा असर पड़ता है, वह देशके लिए घातक है ।

मद्रास की विधान परिषद में डॉ० मुथलक्ष्मी रेड्डी सर्व प्रथम डिप्टीस्पीकर हुईं । इनके जीवन का सबसे बड़ा काम मद्रास की देवदासी प्रथा दूर करना रहा । शारीरिक शक्ति के प्रयोग में हम नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की आजाद हिन्द फौज में कैप्टन लक्ष्मी स्वामी को देखते हैं । मद्रास ही में ''अशोक बिहार'' की संचालिका एम० जयालक्ष्मी ने लीलावती मुन्शी की अध्यक्षता में ''अन्नपूर्णा भोजनालय'' खोला था ।

इस प्रकार देश-हित में हमारे देश की नारियों ने जो प्रशंसनीय कार्य किया वह सर्वथा स्तुत्य है ।

१३७, दशहरा मैदान उज्जैन (म.प्र.)

परिचय-परक

हिन्दी के स्वेट मार्डन : डा० रामचरण महेन्द्र

लेखक

डा० माँगीलाल मिस्त्री मनीष
एम०ए०, पी-एच०डी०

[गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित 'कल्याण' के गत चालीस–पैंतालीस वर्षों के अंक देख जाइए, तो महेन्द्र जी के सर्जनात्मक लेख मोती की तरह चमकते दृष्टिगोचर होंगे। ये पुस्तकाकार होकर अनेक विपथगामियों को सुपथ पर लाने में समर्थ हो चुके हैं और भविष्य की मूल्यवान निधि हैं। महेन्द्र जी उत्तम लेखक होने के साथ ही साथ उत्तम समालोचक, उत्तम विचारक, उत्तम अध्यापक, उत्तम संचालक भी हैं। आपके विचार सभी श्रेणियों और सभी आयुधारियों के लिए चैतन्य–चूर्ण हैं। आज भी आपके द्वारा यह विचारामृत सतत प्रवाहित हो रहा है और आप समाज-सेवा तथा मानव–सेवा में निरत हैं।

श्री महेन्द्र जी की महती साहित्य–सेवा से प्रभावित होकर राजस्थान सरकार तथा उत्तर प्रदेश सरकार ने आपको पुरस्कृत–सम्मानित किया है। आप राजस्थान में हैं, किन्तु सारे भारत के हैं और समस्त हिन्दी–समाज के मुकुटमणि बन गए हैं। हम आपका जीवन–परिचय आपके महाविद्यालय के एक सुबुद्ध प्राध्यापक श्री मिस्त्री जी के द्वारा तैयार कराकर पाठकों के लाभार्थ दे रहे हैं, जिन्होंने इस महान् लेखक को नजदीक से देखा–समझा है।

'सुधाबिन्दु' के पाठक डा० महेन्द्र जी के लेखों का आस्वाद समय–समय पर लेते रहे हैं और परितुष्ट होते रहे हैं। अतः, 'सुधाबिन्दु'–परिवार यह लेख प्रकाशित करके अपने विज्ञ लेखक के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता है, अभिनन्दन देता है और शतंजीवी बनने की शुभकामना करता है। सम्पादक]

विश्व–साहित्य के मानवोत्थान में सहायक साहित्य-सर्जक स्वेट मार्डन तथा श्री डेल कारनेगी के साथ भारत में डा० रामचरण महेन्द्र का भी नाम लेना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। 'साहित्य' का लक्ष्य मानव–कल्याण की सर्वोच्च साधना है, जो तृप्ति और पावनता दोनों से मानव–कल्याण का महासाधक है। साहित्य से मानव–कल्याण की भावना को लेकर हमारे मनस्वी साहित्यकार कबीर, तुलसी, मीरा आदि भारत के अनेकानेक सन्त कवि, प्रेमचन्द आदि लेखक–गण प्रयासरत रहे हैं। एक कवि या लेखक प्रकारान्तर से काव्य के नवरसमय माधुर्य में समाज, देश और मानव-मात्र को ओतप्रोत कर देता है।

चलता-फिरता औषधालय :

औद्योगिक क्रांति तथा विज्ञान के बढ़ते चरण ने अत्याधुनिक युग की विकलता और व्यवस्थामय जीवन के सभी मूल्यों को झकझोर दिया है। युग–समस्याओं से ऊबकर जहाँ छायावादी सपने सजा चाँद–तारों पर जा बैठा है, प्रकृतिवादी राजनैतिक झंझावत में डोलने लगा है, प्रयोगवादी और आधुनिक युग का कवि तथा साहित्यकार अपने जटिल और नितान्त वैयक्तिक साहित्य की गोष्ठियों और पत्रपत्रिकाओं में उड़ने लगा है, कवि सम्मेलन का कवि–वर्ग अर्थभोगी आनन्दवादी, मसखरा मात्र बन गया है। इन सबके बीच आवश्यकता थी ऐसे पावन साहित्य की जो रोग–ग्रस्त मानवता का कल्याण और संस्कार करे। ऐसे साहित्यकारों में हमें डा०

रामचरण महेन्द्र का नाम हिन्दी के स्वेट मार्डन के रूप में याद आता है। मानव-प्रेरक साहित्य का आपने जिस उच्चता और गुणवत्ता से सृजन किया है, वह आपको एक महान् साहित्यिक चिकित्सक और मानवता-सेवी साहित्यकार के रूप में चित्रित और प्रतिष्ठित करता है।

श्री रामचरण महेन्द्र

डा० महेन्द्र का संपूर्ण साहित्य वर्तमान यथार्थ जीवन की अनेकानेक समस्याओं से ग्रस्त मानव-समाज का "चलता फिरता क्लीनिक" या "मानव कल्याण औषधालय" कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं है। आश्चर्यजनक सत्य यह है कि उनका हर लेख मानव-समाज की विविध जटिल समस्याओं की अचूक दवा है। उनके प्रेरणा-वर्धक स्वस्थ साहित्य की प्रत्येक पुस्तक आज की हाहाकार करती मानव-समस्याओं के लिए "मेडिकल स्टोर" या औषध-भण्डार की तरह है। विश्व साहित्य में इस प्रकार के जादुई साहित्यकार डेल कारनेगी और दूसरे स्वेट मार्डन हुए हैं जिनका साहित्य मानवीय समस्याओं का निदान है। भारत में इन दोनों के साहित्य को बेहद लोकप्रियता मिली है, लेकिन सम्पूर्ण भारत में भारतीय जीवन, संस्कृति धर्म, समाज, भारतीय वर्तमान समस्याओं का भारतीय दृष्टिकोण से मानव-प्रेरक साहित्य के माध्यम से हल करने में जितनी प्रतिष्ठा तथा लोकप्रियता डा० महेन्द्र को मिली है, वह उल्लेख्य हैं। डा० महेन्द्र की रचनाओं के पाठक उन्हें डेल कारनेगी और स्वेट मार्डन से ज्यादा पसन्द करते हैं।

पाठकों की कलम से :

श्री महेन्द्रजी के साहित्य के पाठक लाखों की संख्या में हर वर्ग के हैं। वे आधुनिक साहित्यिक चिकित्सक हैं। इस प्रकार के कई पत्र आपके पास आते हैं। देखिए :-

मिरजापुर (उत्तर प्रदेश) से एक महिला लिखती हैं, "आपके जीवनोपयोगी लेख पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, धन्यवाद। विशेष रूप से आपके लेख "वे गिरे, गिरकर उठे, उठकर चले", ने मुझे बहुत प्रभावित किया है और निश्चय ही मुझे गिरने से बचा लिया है। संकट के दिनों में मैंने एकांत में बैठकर आपके साहित्य का अध्ययन किया और हर बार एक आलौकिक शक्ति को अपने मन में जाग्रत पाया है। मैं आपकी प्रशंसा-हेतु जान-बूझकर ये शब्द-प्रयोग नहीं कर रही हूँ, अपितु आपके हृदय में छिपी हुई असीम श्रद्धा भाव को शब्दों में उड़ेलने का प्रयत्न कर रही हूँ।"

दरभंगा से श्री श्रीनिवास जी लिखते हैं, "आपकी लिखित गीता प्रेस की पुस्तकें हमारे पास हैं। आपके मनोवैज्ञानिक लेखों से मुझे प्रेरणा मिलती है। इनसे मन में शक्ति, साहस और शांति मिलती है। आपके लेख प्रेरणाप्रद और साथ ही रुचिकर भी होते हैं, जिन्हें प्रेरणा के लिए नित्य ही पढ़ता हूँ। आपका लेख 'नए सिरे से मूल्य निर्धारण करें" पढ़कर बड़ा मनोबल मिला है। वास्तव में यह बड़ा स्फूर्तिदायक है। आप अपना "बजरंगबाण" लेख पुस्तक रूप में छापने की कृपा करें।"

अहमदाबाद से चुन्नीभाई पुरुषोत्तम दास पटेल लिखते हैं, "मैंने आपका "वास्तविक मूल्यों को पहचानिए" लेख 'विश्व ज्योति' सितम्बर, १९८० के अंक में पढ़ा है। इसके अतिरिक्त मैंने आपकी 'उभरती किरणें', 'स्वर्णपथ' 'जीवनफूल', 'अमृत के घूँट', 'जीवन में प्रकाश' रचनाएँ भी पढ़ी हैं। वास्तव में ये मुर्दादिलों में नया उत्साह और प्रेरणा भरनेवाली हैं। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि आपको दीर्घ जीवन प्राप्त हो और आप मानव-मात्र की सेवा करते रहें।"

साधना और सृजन :

इस मानवता के जादुई चिकित्सक साहित्यकार का जन्म १९१९ में नजीबाबाद (उ०प्र०) में हुआ था

और संपूर्ण शिक्षण सेन्टजोन्स कालेज, आगरा में हुआ। अंग्रेजी में एम० ए० करने के साथ आपने हिन्दी में भी 'हिन्दी एकांकी उद्भव और विकास' विषय पर पी–एच० डी० डिग्री प्राप्त की है। ईसाइयों को अपने धर्म-प्रचार में तल्लीन देख आपके हृदय में हिन्दू धर्म की लगन से सेवा करने की उदात्त भावना उदित हुई थी। सन्–१९४० से ही आपने हिन्दू धर्म, संस्कृति, मनोविज्ञान, आत्म–सुधार, साहित्य, स्वास्थ्य आदि समाजके लिए उपयोगी नाना विषयों पर लेख लिखना आरम्भ किया। आप मथुरा से प्रकाशित 'अखण्ड ज्योति' मासिक के सम्पादक भी रहे। आपने "कल्पवृक्ष" (उज्जैन), 'कल्याण' (गीताप्रेस गोरखपुर) आदि अनेक धार्मिक मासिक पत्रों में सैकड़ों लेख गत चालीस वर्षों में लिखे हैं। आपका शोध–ग्रन्थ 'हिन्दी एकांकी : उद्भव और विकास' है। वह अपनी श्रेष्ठता के लिए राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर और हिन्दी समिति, लखनऊ द्वारा पुरस्कृत हुआ है। कोटा, बून्दी, झालावड़ (हाड़ौती प्रदेश) के श्रेष्ठतम साहित्यकार के रूप में राजस्थान सरकार द्वारा कोटा में आपको विशेष सम्मानित एवं पुरस्कृत किया गया है। आप गत चालीस वर्षों से अंग्रेजी साहित्य के अध्यापक और प्रिंसपल रहे हैं। आजकल बिड़ला कालेज, भवानीमण्डी (राज.) में प्राचार्य के पद पर कर्मठता पूर्वक कार्यरत रहते हुए आयु का इकसठवाँ वर्ष पूरा कर रहे हैं।

यहाँ यह स्मरणीय है कि डा० महेन्द्र साहित्यकार होने के साथ–साथ राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन तथा कथा–सम्राट् प्रेमचन्द की परम्परा के एक बेहद लोकप्रिय और सच्चे साधक शिक्षक हैं। हाड़ौती अंचल में ही नहीं, अपितु समस्त राजस्थान में उच्च से उच्च पद पर कार्यरत आपके महानतम शिष्यों की संख्या काफी अधिक है, जो अकस्मात मिलने पर आपका चरण–स्पर्श कर भारतीय गुरु–गरिमा को आज भी साकार करते हैं। आश्चर्य की बात तो यह है कि आज भी उनके शिष्य तीन पीढ़ियों तक (पिता, पुत्र और पुत्र का पुत्र) देखे गए हैं। विद्यार्थियों के प्रति आपका व्यवहार सदैव गुरु और आदर्श चिकित्सक की तरह है। उच्च पद पर आसीन होते हुए भी आपमें जैसी सेवा–भावना और लगन है, वह वर्तमान युग में शायद ही कहीं दिखाई देगी।

लक्ष्यपूर्ण जीवन :

आपके जीवनादर्शों की ऊर्जस्वित आभा आपके साहित्य में यत्र–तत्र–सर्वत्र मुखरित हुई है।

आप यह मानते हैं कि मानव–जीवन किसी विशेष उच्च और पवित्र लक्ष्यके लिए है। निरुद्देश्य जीवन व्यर्थ है। नयी पीढ़ी का नैतिक उत्थान, हिन्दू धर्म की तर्कसम्मत विवेक पूर्ण वैज्ञानिक भूमि पर विवेचन, उज्ज्वल पक्ष का प्रस्तुतीकरण, लेखनी द्वारा समाज–सुधार के प्रयत्न, यह आपके लेखन का उदात्त पक्ष रहा है। विश्वेश्वरानन्द वैदिक संस्थान होशियारपुर से प्रकाशित 'दुनिया तुम्हारी है', 'संसार को चुनौती', 'वीर आत्माएँ' आदि पुस्तकों में यह उद्देश्य देखा जा सकता है। गीताप्रेस गोरखपुर से तो आपका अभिन्न सम्बन्ध रहा है। वर्षों तक विश्व के लोकप्रिय आध्यात्मिक पत्र 'कल्याण' और आप तो जैसे एक दूसरे के प्रतिरूप रहे हैं। क्योंकि आज भी 'कल्याण' आपके लेख के बिना सूना-सा लगता है। गीता प्रेस गोरखपुर से आपकी १. स्वर्ण पथ २. आनन्दय जीवन ३. अमृत के घूँट ४. आशा की नई किरणें ५. जीवन में नया प्रकांश ६. महकते जीवन–फूल पुस्तकें तो लाखों की संख्या में छपी हैं और उनके संस्करण हाथोंहाथ बिक चुके हैं। आज भी इनकी माँग बनी है।

इसी प्रकार 'अखण्ड ज्योति कार्यालय' मयुरा से 'भारतीय संस्कृति की रूप रेखा', 'सीमित परिवार', 'संकल्प के चमत्कार', 'मनोविकारों से छुटकारा' आदि लगभग तीस लघु पुस्तिकाएँ प्रकाशित हुई हैं। संस्कृति संस्थान बरेली से 'देवता कैसे बनें ?' 'चिन्ताओं से दूर रहें !' 'सुन्दर कैसे बनें' ? 'धनवान कैसे बनें !' 'एलोपैथी और स्वास्थ्य', 'मालिश और स्वाथ्य', 'अवकाश और स्वास्थ्य', 'फलों के रस', 'पेट के रोगों की चिकित्सा' आदि सौ से भी अधिक ज्ञानवर्धक, सुरुचिपूर्ण, लोकप्रिय, उपयोगी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं और उसकी माँग हमेशा बनती रहती है। इन कृतियों का प्रत्येक शब्द

उपयोगी, नई जानकारी से युक्त, प्रेरक, आत्मसुधारक के रूप में दवाइयों की तरह उपयोगी रहा है।

पाठकों का भाव :

आपका साहित्य आधुनिक परिवेश में नई पीढ़ी को नैतिक मार्गदर्शन करनेवाला है। किसी भी लेखक की पुस्तक छप जाना उसके साहित्यकार होने का प्रमाण नहीं है। क्योंकि आज भी लाखों की संख्या में भारी-भरकम साहित्य की पुस्तकें मात्र काँच की आलमारियों में पुस्तकालय की सुशोभा मात्र बनकर पड़ी रहती हैं। यदि साहित्य की पुस्तकों की कसौटी जनता का हृदय और उनका उपयोग पक्ष है, तो आपके प्रबुद्ध गम्भीर पाठकों की संख्या हजारों में है, इनमें अल्प शिक्षित से लेकर उच्च शिक्षित और दायित्व पूर्ण कार्यों में रत उच्च पदाधिकारी तक आ जाते हैं। अनेक संस्करण छप जाने पर भी आपकी पुस्तकों की माँग बराबर बनी रहती है। यहाँ तक देखा गया है कि कई पाठक आपकी पुस्तकें न मिलने पर बार-बार लिखते हैं और उनका पता पूछते-पूछते प्रतिष्ठित नागरिक उनके दर्शन करने के लिए एक संत, दार्शनिक और चिंतनकार के नाते आते हैं, लेकिन उनके पाठक उन्हें आज भी आयु के इकसठवें वर्ष में कर्मठ प्राध्यापक और प्राचार्य के रूप में पाकर आश्चर्य करते हैं। उपासना, आदर्श, धर्म और आस्था का सम्बन्ध संन्यास से नहीं कर्म से है। कर्म सृष्टि का गतिमान शाश्वत सूर्य है। यही धर्म की प्रकाशमान ऊर्जा और आलोक है। इसका प्रमाण डा० महेन्द्र का साहित्य है। आपकी कोई रचना-पंक्ति पढ़ी जाए तो उससे यही आलोक जीवन को दीपावली का-सा प्रकाश देगा। स्तरीय, सुरुचिपूर्ण, लोकोपयोगी, नैतिक और धार्मिक साहित्य लिखने में जितनी लोकप्रियता आपको मिली है, वह आज तक किसी भी भारतीय लेखक को नहीं मिली है।

वे निश्चय ही डेल कारनेगी व स्वेट मार्डन के भारतीय परिधान में कबीर का शरीर और तुलसी की आत्मा में कर्मठ कर्मरत साहित्य-प्रणेता हैं। ❀

हिन्दी विभाग, (गुरुकुल विद्यापीठ) बिरला कालेज
भवानीमण्डी, जि० झालावाड (राज०)

गाँव

झुलसती जिंदगी
धुंआता-मन
जलते-यहाँ
उपलों से तन।
बस्ती, गली, कूचे
कहते काँटों की कथा
फूलों के चेहरे पर
सिसकन-सी व्यथा।
बाँस के पोर-पोर
आश्वन के शोर
पाँव में धँसे हुए
शीशे के कोर।
सिहरती हवा
भीगे हुए तन
अभावों में जीते हुए
चिथड़ों में सीते हुए मन

झुलसती जिन्दगी
धुंआता मन
भूखे ही सोते हुए लोग
झोंपड़ों की बुझी आग
कीचों में सने हुए
जैसे खेले हों फाग।
फोड़ों से पके हुए
रेत में धँसे हुए गाँव
सहमी-सहमी धूप में
सूरज के थके हुए पाँव।
आँधियों के शोर और
काँटों के वन
साँपों के जीवन
केचुल जैसे तन

झुलसती जिन्दगी
धुंआता मन।

श्री सुरेश सिंह
द्वारा प्रो०ए०पी० सिंह, चिरहुला-रीवा (म.प्र.)

व्यवहार-परक

काम में लगिए

लेखक

श्री बाबूलाल 'श्रीमयंक'

[आज-कल दुर्व्यसन और दुर्विचार मानव-मन का नाग-कुण्डली बन कर घेरे हुए है। इनसे व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और विश्व का बड़ा अकल्याण हो रहा है। इनसे बचने के उत्तमोत्तम उपायों में कार्य-संलग्नता का विशेष महत्त्व है। उस महत्त्व को तर्क-प्रमाणों द्वारा इस लेख में अच्छी तरह समझाया गया है, जो पठनीय और आचरणीय है।—सम्पादक]

कहते हैं-एडीसन एक बार अपनी प्रयोगशाला में एक प्रयोग में इतने डूब गए कि उनकी पत्नी उनके लिए चाय रख गई, जिसे कुछ देर बाद उनका मित्र आया, वह भी उनको काम में लगा देखकर-रखी चाय पीकर चलता बना। प्रयोग से निवृत्त होने के बाद एडीसन का ध्यान चाय की तरफ गया। कप खाली देखकर उन्होंने स्वयं अपने से कहा, "मैं भी कैसा मूर्ख हूँ, चाय तो अभी पी है।"

एक जानी-पहचानी दूसरी घटना पर गौर कीजिए। एक आदमी ने भूत की साधना करके उसको प्रसन्न कर लिया। भूत ने कहा, "मैं तुम्हारे नियन्त्रण में तभी तक रहूँगा, जब तक तुम मुझे काम बताते रहोगे। मैं जरा भी फुर्सत में हुआ कि तुम्हारा जान ले लूँगा।"

आदमी ने सोचा कि दुनिया में काम की क्या कमी है ! एक ढूंढ़ो, हजार मिलते हैं। उसने हाँ भर ली।

अब वह आदमी जो भी काम कठिन से कठिन बताए, उसको वह भूत तुरंत कर डालता। उसके लिए कोई काम कठिन नहीं था। जब काम की संख्या अधिकतर घटने लगी, तो उसे चिन्ता सताने लगी। क्योंकि काम का अन्त यानी जीवन का अन्त निकट है।

वह दौड़ा-दौड़ा एक साधु के पास गया और सारी कहानी बताकर बोला, "महाराज, मुसीबत में फँस गया हूँ। इस भूत से बचने का उपाय आप जैसे तत्त्वज्ञानी ही बता सकते हैं।"

साधु कुछ सोचकर फिर मुस्कराते हुए बोले, "ऐसी क्या मुसीबत है ! यदि मनुष्य थोड़ी-सी अक्ल से काम ले, तो इससे भी बड़ी मुसीबत से छुटकारा पा सकता है।"

वह आदमी झुंझलाकर बोला, "उपाय बताइए महाराज, मौत सिर पर है। बस, अब मरा-तब मरा महाराज !"

साधु बोले, "थोड़ा धीरज रखो और अक्ल से काम लो। तुम एक चिकनी बल्ली गाड़कर, उससे कहो कि जब तक मैं दूसरा काम न बताऊँ, तब तक ऊपर-नीचे चढ़ते-उतरते रहो।"

यह सुनकर आदमी ने राहत की साँस ली।

इन घटनाओं में छिपे तथ्यों के विपरीत मानव की स्थिति होती जा रही है। जबतक एडीसन काम में डूबा था-तबतक उसे न चाय की, न खाने की, न मित्र और पत्नी की सुध थी। जैसे ही मन रूपी भूत फुर्सत में हुआ कि वह मनुष्य को मौत रूपी नैतिक पतन की राह पर धकेलने को तत्पर हो गया। ठीक, आज का मनुष्य भी काम के अभाव में कई दुर्व्यसनों, कुसंस्कारों का शिकार हो गया है और अपनी सृजनात्मक प्रतिभा से निस्तेज हो गया है।

इस बात को और स्पष्ट रूप से समझनेके लिए मन को समझना आवश्यक है । प्रकृति ने मनुष्य के अन्दर 'मन' एक ऐसे तत्त्व का समावेश किया है, जो जीवन को अच्छाइयों के उच्चतम शैल-शिखरों पर पहुँचा सकता है तो बुराइयो के रसातल में भी पहुँचा सकता है । जीवन के संचालन का केन्द्रबिन्दु मन है । मन ही मनुष्य का शत्रु-मित्र है । गीताकार का स्पष्ट मत है ।

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् ।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ।।
अ०६श्लो०५

मनुष्य में मन है-इसलिए वह मनुष्य कहलाता है । अच्छे-बुरे कामों पर जूझना भी मन पर ही निर्भर करता है और इस विश्व-समाज को अच्छा-बुरा बनाता है ।

मन एक पानी के प्रवाह की तरह है-जिसका बहाव सदैव ढलान (कुव्यसन) की तरफ ही होता है । यह बहाव अनेक शाखा-प्रशाखाओं में विभक्त होकर मनुष्य को कमजोर, आत्मबल से हीन और नैतिक पतन की ओर ले जाता है । इसीलिए हमारे आर्ष पुरुषों ने संयम पर जोर दिया है ।

अगर मन को अच्छे कामों में संयम के द्वारा नियोजित कर दिया जाए, तो उससे आशातीत परिणाम मिल सकते हैं , मनुष्य प्रगति-सफलता के मार्ग पर द्रुतगति से बढ़ सकता है ।

मन का दूसरा स्वभाव है---चंचलता । वह एक क्षण भी चुप-चाप नहीं बैठता है । खालीपन उसकी शैतानी प्रकृति का सूचक है । वह आलतू-फालतू बातें सोचता है और कभी-कभी शरीर को बलात् उन कामों में नियोजित करता है। इसीलिए कहावत बनी कि खाली मन शैतान का दास । जब मनुष्य पर यह शैतान सवार होता है, तब वह उसको समाप्त करके ही विदा होता है । यह भूत की तरह पीछे पड़ता है । इसे काम मिलता है तो ठीक अन्यथा दुर्गुणों की ओर आकर्षित करके मृत्यु की राह दिखाएगा । ऐसे समय में साधु जैसे तत्त्वज्ञानियों ने ईश्वर रूपी डण्डे पर बार-बार चढ़ने (नामस्मरण)-उतरने का आदेश दिया है । जैसे ही हमारी दृष्टि अच्छे काम पर पड़े, उसमें लगा दें और पूरा होते ही उसे डण्डे पर चढ़ने-उतरने का काम सौंप दें । ऐसी स्थिति में मनुष्य को गलत मार्ग पर भटकने का अवसर ही नहीं मिलेगा ।

इसी सन्दर्भ में वर्तमान मनुष्य के कामों का जायजा लें, तो पता चलेगा, कि उसके अधिकांश काम ऐसे हैं जो उसको निरंतर नैतिक पतन की ओर ले जा रहे हैं । शराब, जुआ, सट्टा, झूठ-फरेब, बलात्कार और चोरी, ठगी, डकैती, अपहरण तथा अलगाव आदि ऐसे काम हैं, जो मनुष्यता की कोटि में कदापि नहीं आ सकते हैं । यदि इसी बात को एक शब्द में कहें, तो वर्तमान हालतों को देखते हुए, 'मनुष्य' में मनुष्यता का अभाव पूर्ण निःशेष हो गया है । उसे इसीमें आनन्द, सुख और जीवन का सार दिखाई दे रहा है । समाचारपत्रों से इन बातों पर प्रकाश पड़ता है ।

ये सब मनुष्य के कुव्यसनों में शुमार होते हैं । कुव्यसन चाहे कैसा भी हो वह मनुष्य का शारीरिक, मानसिक एवं नैतिक पतन तो करता ही है—साथ ही समाज को भी गलत दिशा प्रदान करता है । समाज की नई पौध में यह अनुकरणात्मक जहर दिया जा रहा है, जिसके कारण वह आत्मा और मन से मरा हुआ लगता है । समाज पर गलत प्रभाव पड़ रहा है ।

अच्छे काम के अभाव की शिकायत और मानसिक तनाव से मुक्ति पाने के लिए आज का मनुष्य नशे में बुरी तरह जकड़ गया है , दिन-रात उसमें डूबा रहता है । भाँग, गाँजा, अफीम, चरस, शराब और नशीली औषधियों का सेवन-प्रचलन इस कदर बढ़ गया है कि जितना भूतकाल में भी नहीं था। इसका सेवन भी समय-समय पर विशेष जातियाँ ही करती थीं--बाकी की सामाजिक मर्यादाएँ ही ऐसी थीं कि वे चाहकर भी इसका सेवन नहीं कर सकते थे....किन्तु आज मर्यादा और संयम के बाँध टूटकर इस मन का पानी दिशाहीन होकर बह रहा है—जिसमें सारी मानवता डूबकर सिर्फ शैतान का खोल नजर आ रहा

है। इसके सम्बन्ध में एक विद्वान् का मत है, "यदि वर्तमान पीढ़ी इसी तरह नशा करती रही, तो उसमें होनेवाली संतान उसके (नशे) बिना एक क्षण भी जीवित नहीं रहेगी ।" उस वक्त का मोटा अन्दाज लगाइए कि हमारा कितना पतन हो चुका होगा ।

इन सारी बातों के पीछे मूल और मोटा कारण है –हमारी इस वर्तमान की पीढ़ी में काम के प्रति निष्ठा का अभाव और मानसिक तनावग्रस्तता । स्कूल-कॉलेजों से इन दुर्व्यसनों के शिकार हजारों छात्र प्रतिवर्ष पढ़ाई करके निकलते हैं । एक तो दूषित शिक्षा-प्रणाली और दूसरा काम में निष्ठा का अभाव–ये दोनों चीजें मिलकर बेकारी उत्पन्न करती हैं । बेकारी तनाव उत्पन्न करती है । इससे छुटकारा पाने का उपाय यह नशा है । यह बेकार युवक शासन से सीधी नौकरी माँगता है और शासन की मजबूरी है कि उसके पास नौकरियों का सीमित कोटा है । तब यह युवक तोड़फोड़, आन्दोलन करता है या हिप्पीवाद जैसे सम्प्रदाय बना लेता है । इस मन को रमाने का कुछ तो साधन चाहिए ही ?

वैसे देखा जाए तो खेत, कल-कारखानों में अथवा अपनी समझ से काम ही काम पड़ा है-जिससे उत्पादन में वृद्धि करके समाज, राष्ट्र, और खुद को सुखी किया जा सकता है । इसके बारे में तुलसी ने ठीक ही कहा है—

सकल पदारथ है जग माहीं ।
कर्महीन नर पावत नाहीं ॥

और इसी बात को मैथिलीशरण गुप्त ने इस प्रकार कहा है—

प्रभु ने तुमको कर दान दिये ।
सब वांछित वस्तु विधान किये ॥
उसको न प्राप्त कर सको-अहो !
फिर है यह किसका दोष कहो ॥

जो व्यक्ति अपनेको जितना अधिक काम में नियोजित कर सकेगा, वह उतना ही दूषित विचारों से बचेगा। क्योंकि विचार से आचार बनता है और आचार ही कर्म से फलित होता है । विचार है—वहाँ तक तो ठीक है-लेकिन वह गलत काम में प्रकट हो गया, तो निश्चित पतन की राह समाप्त हो जाती है । इसलिए विचार को उठने न देना ही काम में लगे रहना है । जब मनुष्य काम से फुर्सत पाता है, तब मन में विचार आ सकते हैं । इसलिए मनुष्य को इन सबसे बचे रहने के लिए जीवन की दिनचर्या नियमित करनी पड़ेगी । गाँधी जी अपने प्रत्येक क्षण में कितने नियमित रहते थे कि घड़ी भूल कर जाए लेकिन वे नहीं।

आज हमारे पास काम के अभाव में समय ही समय है । छुट्टी के दिन हम ताश, शतरंज या जुआ, सट्टा या गप्पें हाँकने में अथवा नशेबाज नशा करने में बरबाद करते हैं । मनोरंजन जीवन के लिए आवश्यक है, पर हम उनको भी स्वल्प तरीके से कहाँ इस्तेमाल करते हैं । पिकनिक, पार्टियों या अन्य उत्सव-समारोह पर भी हम आलोचना, अनर्गल बातें, भद्दे मजाक में समय खोते हैं । जबकि ऐसे अवसरों पर स्वस्थ गोष्ठियाँ, परिचर्चा, किसी भी समस्या पर चर्चा द्वारा निदान या प्रकृति के आनन्द द्वारा मन को स्वस्थ-पुष्ट किया जा सकता है । इस दिन बाकी बचे कामों को निपटाया जा सकता है । परिवार में बच्चों के साथ बैठकर मनोरंजन किया जा सकता है । लेखन, पाठन या घर की व्यवस्था में इस दिन का उपयोग किया जा सकता है ।

यह तो जानी हुई बात है कि काम की दो श्रेणियाँ होती है—एक अच्छी, दूसरी बुरी । इसलिए व्यसन भी एक तरह से काम में शुमार किए जा सकते हैं—पर वे हमारे शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक एवं नैतिक पतन के कारण इनसे बचने का निर्देश बार-बार हमारे विद्वज्जन देते आए हैं । ये सारी बातें मन पर निर्भर करती हैं । इसलिए मन को अच्छे काम में लगाना चाहिए ।

अगर मनुष्य थोड़ा-सा भी प्रयत्न करे, तो यह कोई कठिन बात न होगी। वह गलत मार्ग से हटकर अच्छे मार्ग पर चल सके । क्योंकि मन के हारे हार-मन के जीते जीत-की कहावत का सत्यार्थ जानकर-अच्छे काम में अपने को लगा दे, तो हमारे दुर्व्यसन छूट सकते हैं इनका ख्याल ही नहीं रहे ।

श्री मयंक साहित्य सदन, जीरन जिला-मंदसौर (म.प्र.)

व्यंग्य-काव्य

अभिनन्दन लक्ष्मीवाहन का

(इस बार दीपावली पर उल्लू जी को काका जी ने फटकार लगाई, किन्तु मुँह की खाई)

बहुत कर चुके वन्दन-आरति लक्ष्मीवाहन की,
किंतु भावना बदल गई अब 'काका' के मन की ।

बूढे हो गए करते-करते लक्ष्मी की सेवा,
शोषण होय तुम्हारा, खाएँ लक्ष्मीपति मेवा ।

जिए जिंदगी वाहन बनकर, शर्म नहीं आई,
हुए हजारों वर्ष बताओ क्या इज्जत पाई ।

छः अंगुल की पीठ, चार अंगुलवाली दुम पर,
दो क्विंटल की लक्ष्मी रानी लदी रहें तुमपर ।

कोई कुत्ता-बिल्ली पाले या मैना-तोता,
किसी जगह पर उल्लू का सम्मान नहीं होता ।

नाम तुम्हारा गाली के माध्यम से ही लेता,
एक-दूसरे को उल्लू कहते देखे नेता ।

निंदा करें सभी पक्षी-प्रतिपक्षी दलवाले,
भरे होय बहुगुण, पर कोई घास नहीं डाले ।

लखपति बना दिए लक्ष्मी ने भौंदू-भिखमंगे,
कच्छा तक नहीं मिला, रहे तुम नंगे-के-नंगे ।

सच्चे सेवक का कलियुग में यही हाल होता,
बेईमान जी मजे करें, ईमानदार रोता ।

नहीं प्रभावित होता कोई रोने-धोने पर,
अनशन कर जम जाउ क्षीर-सागर के कोने पर ।

विष्णुलोक में होय क्रांति, लक्ष्मी भागी आएँ,
अखबारों के प्रथम पृष्ठ पर फोटो छप जाएँ ।

अनशन तुड़वाने को लाएँ अमृत का चुल्लू,
यदि उसको पी गए रहोगे उल्लू-के-उल्लू ।

छोड़ो काया-मोह रहो, मत लक्ष्मी के मद में,
पुनर्जन्म में मन्त्री बनकर बैठो संसद् में ।

(रचना लिखते-लिखते यकायक आकाशवाणी हुई)

क्या बकते हो काका, मुझपर लगा रहे बट्टे,
सत्ता का सुख भोग रहे हैं मेरे ही पट्ठे ।

काका हाथरसी

मुद्रा स्फीति उद्योग और अर्थतन्त्र

श्री ओमप्रकाश आर्य

आज देश के अन्दर भयानक आर्थिक संकट है, जिसके तीन आयाम-अत्यधिक मुद्रास्फीति, औद्योगिक उत्पादन में गतिरोध और बढ़ती हुई बेकारी दीखते हैं। १९७९-८० में कीमतें २३.५ प्रतिशत बढ़ी हैं। कुल मिलाकर औद्योगिक उत्पादन का सूचकांक इस साल के पहले नौ महीनों में कुल १४६.८ तक पहुँचा है, जो कि १९७८-७९ से कुछ नीचे ही है। राष्ट्रीय श्रमिक समूह के २१ करोड़ ७० लाख व्यक्तियों में से लगभग २ करोड़ ६० लाख पूरी तरह से बेकार हैं। स्पष्ट है कि यह प्रगति की स्थिति नहीं, भारतीय अर्थतन्त्र का भयावह संकट है, बहुत गम्भीर है, दूर-तक असर करने वाला है।

ऐसा क्यों हुआ है ? क्या यह स्थिति ऐसी ही बनी रहेगी और संकट गहरा हो जाएगा ? नई सरकार ने जो कदम उठाए हैं, या जो नया बजट पेश किया है, क्या उनसे कुछ राहत की आशा की जा सकती है ? ये सवाल स्वाभाविक हैं। क्योंकि ये तीनों बातें सामान्य, निम्नवित्त और मध्यवित्त परिवारों पर गहरा असर डालती हैं और आगे आने वाले दिनों में भी यही होगा।

मुद्रास्फीति :

ऐसा क्यों हुआ ? इसलिए कि धन की पूर्ति वास्तविक उत्पादन से बहुत आगे बढ़ती गई है। १९७६-७७ के अन्त में देश के अन्दर धन की कुल पूर्ति १५,६०९ करोड़ रु. थी, जो कि १९७९-८० के अन्त तक लगभग २३,६९२ करोड़ रु. हो जाएगी। इसका अर्थ है कि पिछले तीन सालों में धन की पूर्ति लगभग ८,००० करोड़ रु. बढ़ी है, यानी ५१ प्रतिशत। जब कि देश के उत्पादन में कुल ८.३ प्रतिशत की वृद्धि हुई है। अर्थात्, उत्पादन के मुकाबले में धन की पूर्ति लगभग ४३ प्रतिशत अधिक बढ़ी है।

१९७६-७७ के अन्त में थोक मूल्यों का सूचकांक १७२ था, जो कि १९७९-८० के अन्त तक २३० हो जाने की आशंका है। यह वृद्धि लगभग ३३ प्रतिशत है, जबकि धन की स्फीति ४३ प्रतिशत तक हो चुकी है और नई सरकार ने कोई कदम ऐसा नहीं उठाया है कि यह स्फीति कम हो। इसलिए आर्थिक सूचकांकों के आधार पर यह स्पष्ट शंका है कि १९८०-८१ में महँगाई और बढ़ती रहेगी, खासकर आगामी जुलाई मास तक। उसके बाद इसपर निर्भर करेगा कि अगली बरसात और अगली खरीफ कैसी होती है।

बुनियादी बात यह है कि वास्तविक उत्पादन के अनुपात से अगर धन की पूर्ति और मुद्रा की स्फीति बढ़ेगी तो मूल्य बढ़ने से जनता की महँगाई भी बढेगी। जो नया छोटा बजट पेश किया गया है और जो कि एक दिन में ही पारित भी हो गया था, उसने न तो मुद्रास्फीति में कमी का कोई यत्न किया है और न ही कोई ऐसा संकेत दिया है कि जब बड़ा बजट पेश होगा, तब जनता को दामों के सिलसिले में कोई राहत मिल सकेगी। राहत तो उतनी दूर तक ही मिल सकती है, जितनी दूर तक असामाजिक रूप से संचित जिन्स बाजार के अन्दर फिर से ला दी जाए। वस्तुओं की कमी उत्पादन की कमी के कारण है। इसलिए जब तक उत्पादन न बढ़े या आयात न बढे, तब तक जो अतिरिक्त मुद्रा पूर्ति हो चुकी है, वह अपना असर महँगाई बढ़ाने में अवश्य दिखाएगी।

उत्पादन का गतिरोध :

१९७९–८० में खेतीमूलक उत्पादन १९७८–७९ के मुकाबिले में लगभग ९ प्रतिशत कम हुआ है और औद्योगिक उत्पादन लगभग ३ प्रतिशत गिरा है। कुल मिलाकर राष्ट्रीय उत्पादन (ग्राश नेशनल प्रोडक्ट) ५ प्रतिशत कम हुआ है, जबकि मुद्रा–प्रसार एक साल के अन्दर १४ प्रतिशत बढ़ा है। इस प्रकार मूल्यों पर विस्तारवाद १९ प्रतिशत होना चाहिए, जबकि पिछले साल के अन्दर हुई मुद्रा–स्फीति का असर भी इस साल देखने को मिल ही रहा है। असली महँगाई २३.५ प्रतिशत बढ़ी है। कीमतें इसीसे आसमान छूती लगती हैं।

खेती का उत्पादन तो भीषण सूखे के कारण कम हुआ। क्योंकि खरीफ और रबी दोनों फसलें प्रभावित हुई थीं। अगर समय पर कृषि-भवन ने ध्यान दिया होता तो शायद उत्पादन का ह्रास ९ प्रतिशत न होकर ६ या ७ प्रतिशत होता। उस मिकदार में उपभोग्य पदार्थों के दाम कम बढ़ते। पर कृषि–भवन सूखे के पूरे समय निष्क्रिय रहा। इसलिए उत्पादन की कमी अधिक हुई। औद्योगिक उत्पादन में कमी माँग की कमी के कारण न होकर कोयले, बिजली और रेलगाड़ी के भारवाही डिब्बों की कमी के कारण हुई। चूँकि ये कमियाँ आज भी कारगर हैं, इसलिए अन्देशा इस साल भी औद्योगिक गतिरोध का ही है। यों अगर बिजली और कोयले का उत्पादन बढ़ा और रेलगाड़ी के डिब्बों की पूर्ति बढ़ी तो औद्योगिक उत्पादन ११८०–८१ में ५ प्रतिशत बढ़ सकता है।

पर इसकी भी सीमा है। वास्तव में औद्योगिक उत्पादन बढ़ानेके लिए अनेक उद्योगों में–जैसे, इस्पात, एल्यूमिनियम, कागज आदि–क्षमता बढ़ाना आवश्यक है। इसके लिए सरकार को नये लाइसेंस देने होंगे। पूँजी की व्यवस्था करनी होगी। विदेशों से पूँजी के आयात के साधन जुटाने होंगे। श्रीमती गाँधी की नई सरकार ने अभी तक कोई ऐसे कदम नहीं उठाए हैं, जिनसे नये उद्योगों में पूँजी लगाना सुलभ हो सके, नई क्षमता उभरकर आ सके और माँगों की नयी मिकदार की पूर्ति कर सके।

निर्यात–वृद्धि का लक्ष्य :

हमें औद्योगिक उत्पादन की वृद्धि न केवल देश की माँगों की पूर्ति हेतु करनी है, वरन् निर्यात की वृद्धि के लिए भी। १९८०–८१ में आयात का परिमाण लगभग ९,००० करोड़ रुपए का होगा, जिसमें ५,००० करोड़ रुपए तो केवल पैट्रोलियम पदार्थों की माँग की पूर्ति के लिए होगा और बाकी ४,००० करोड़ रुपयों में खाद्यान्न, खाद्य तेल, उर्वरक, लोहा और इस्पात, अल्यूमिनियम रासायनिक पदार्थ और औषधियाँ होंगी। अभी तक जो कुछ दिखाई पड़ रहा है, वह हमें ६,००० करोड़ से अधिक का निर्यात नहीं करने देगा। हाँ, अगर औद्योगिक उत्पादन बढ़ जाए तो यह निर्यात ७,५०० करोड़ तक भी जा सकता है। इसलिए हमारे अर्थतन्त्र के विकासके लिए, निर्यात और औद्योगिक उत्पादन अनिवार्य हो गए हैं। पर अगर कोयले, बिजली और रेल के भारवाही डिब्बों का संकट बना रहा, तो १९८०–८१ के उत्तरार्ध में घोर संकट उभर सकता है। इसीलिए हमें हर तरह से औद्योगिक उत्पादन का गतिरोध समाप्त करना ही होगा।

औद्योगिक उत्पादन की कमी में तालाबन्दी की, हड़तालों की और और औद्योगिक सम्बन्धों में तनावों की भी भूमिका रही है। पर पिछले साल इनके द्वारा औद्योगिक उत्पादन का ह्रास ४,००० करोड़ रुपयों से भी अधिक का हुआ था। हम यह नहीं कह रहे हैं कि औद्योगिक संबन्धों के तनाव और दुराव वांछनीय हैं। उन्हें कम किये जाना चाहिए। पर हम यह कह रहे हैं कि तालाबन्दी और हड़तालें ही हमारे औद्योगिक तन्त्र के ह्रास के मुख्य कारण नहीं हैं।

बेकारी : सुरसा का मुँह :

इस समय अपने देश में दो करोड़ साठ लाख व्यक्ति बेकार हैं, जबकि कार्यसक्षम व्यक्तियों की संख्या इक्कीस करोड़ सत्तर लाख है। अर्थात् लगभग १२ प्रतिशत कार्यसक्षम व्यक्तियों के पास कोई काम नहीं है। विकसित देशों में जहाँ बेकारों की संख्या कार्यसक्षम व्यक्तियों की संख्या के अनुपात में ५ प्रतिशत भी हो जाती है तो सारे देश में हायतोबा मच जाती

है, पर अपने देश में १२ प्रतिशत बेकारी पहुँचने पर भी किसी के सिर में जूं तक नहीं रेंगती है। सरकार को बढ़ती हुई बेकारी से परेशानी हो या न हो, इसके सामाजिक और आर्थिक परिणाम देखने को हमें मिल ही रहे हैं। और एक दिन जब ये बेकार सर्वहारा वर्ग में बदल जाएँगे –राजनीतिक चेतना प्राप्त करके एक साथ मार्च शुरू कर देंगे–तब इनके राजनैतिक अर्थ भी समझ में आ जाएँगे। आखिरकार पूरा नक्सलपंथी-आंदोलन बढ़ती हुई बेकारी के कारण ही तो पनप पाया था। वे लोग यह अक्सर भूल जाते हैं।

पर अब की बार जब बेकार हिंसा पर उतर आएगा और सर्वहारा बनकर उतर आएगा–तब हमारे वर्तमान संसदवादी–उदारवादी राजनैतिक ढाँचे को भी तोड़ देगा। नगरों में बढ़ती हुई चोरियाँ, डाके, शीलहरण की घटनाएँ, बढ़ती हुई सामाजिक अव्यवस्था आदि आनेवाली सामाजिक उथल–पुथल की पूर्व सूचना दे रहे हैं।

आज बेकार कौन है? नगरों में अधिकतर पढ़े–लिखे नवजवान और गाँवों में खेतीहीन किसान -मजदूर। अधिकतम खेतीहीन खेतिहर मजदूर हरिजन और निम्न जातियों के हैं, जो कि अबतक लगभग दासों की तरह रह रहे थे। जहाँ पर वे बन्धुआ–दास नहीं भी थे, वहाँ वे स्थानीय बनिये के पुश्त–दर–पुश्त कर्जदार थे। अब जबकि बेकारी की करारी मार के कारण उन्होंने संघटित होना प्रारंभ कर दिया है, अपने ऊपर होने वाले जुल्मों के खिलाफ विरोध प्रारंभ किया है, तो बेलछर, नारायणपुर, पिपरा, पारसबीघा, मुरादाबाद प्रभृति कांड देखने को मिल रहे हैं, जिसके अन्तर्गत हरिजनों की झोपड़ियाँ, जानवर और फटे–कपड़े तक जलाये गए हैं। उनकी महिलाओं के व्यापक शील–हरण हुए हैं। उन्हें वेघरबार करके उनपर आतंक जमाने के यत्न किये गए हैं। यह आतंक की प्रक्रिया ही उन्हें सर्वहारा-राजनीतिक रूप से चेतन व्यक्ति, जिसकी संपत्ति लुट चुकी है, समाप्त हो चुकी-बनने पर आमादा कर रही है। आज के राजनीतिज्ञों को सर्वहाराकरण की प्रक्रिया समझनी होगी। उससे सबक लेने होंगे।

दो करोड़ साठ लाख बेकारों में एक करोड़ अस्सी लाख बेकार गाँवो में हैं और ग्रामीण बेकारों में से एक करोड़ बीस लाख हरिजन हैं। १९८०–८१ में कार्यसक्षम पचास लाख व्यक्ति राष्ट्रीय श्रमिक समूह में आएँगे और शायद नई वृत्तियों की संख्या तीस लाख से अधिक नहीं होगी। इस प्रकार अगले वित्तीय वर्ष के अन्त में दो करोड़ अस्सी लाख व्यक्ति बेकार रहेंगे। जैसे–जैसे बेकारों की संख्या बढेगी, वैसे–वैसे कानून और व्यवस्था की समस्या भी बढेगी। अगर पुलिस दुगुनी, तीनगुनी या चारगुनी भी कर दी जाए, तो भी बढ़ती बेकारी के सामने वह व्यवस्था की समस्या हल नहीं कर पाएगी, क्योंकि व्यवस्था को भंग करने वालों की समस्याएँ और संख्याएँ निरन्तर बढ़ती जा रही हैं।

सरकार जब तक व्यापक बेकारी की समस्या का हल नहीं कर लेगी, तब तक यह समस्या भीषण से भीषणतर ही होती जाएगी, सुधरेगी नहीं और न ही इसके व्यापक दुष्परिणाम कम होंगे। जनता सरकार ने बेकारी दूर करने का वचन दिया था, पर जनता–लोक दल के तीन साल के प्रशासन में बेकारी बढ़ने की दर गिरी नहीं, न ही कुल बेकारों की संख्या में कमी आई। अब यह देखना बाकी है कि वर्तमान सरकार के राजस्व में क्या हाल होता है। उनके प्रशासन के पहले ग्यारह सालों में तो बेकारी कम नहीं हो पाई थी।

नये रास्तों की खोज : कुछ सवाल :

अर्थतन्त्र में कुछ भी अवश्यंभावी नहीं होता है। प्रयत्न से सब कुछ बदला जा सकता है। अगर केन्द्रीय सरकार मुद्रा–प्रसार रोक दे और उतनी सारी मुद्रा देश के अन्दर विस्तारित करे जितनी वास्तविक उत्पादन के अनुरूप हो तो महँगाई का बढ़ना काफी रोका जा सकता है। साथ ही खेतीमूलक उत्पादन और औद्योगिक उत्पादन के द्वारा भी महँगाई पर अंकुश लगाया जा सकता है। असामाजिक तत्त्वों द्वारा संचित जिंसों को बाजार में लाना सही है, पर प्रयत्न यह होना चाहिए कि जनता के अंदर संचय की प्रवृत्ति ही न

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

व्यक्ति-परिचय

श्री श्रीकृष्ण अग्रवाल

श्री अग्रवाल जी का जन्म ता० २०।८।२१ को हरियाणा प्रान्तान्तर्गत भिवानी नगर में हुआ । आपके पिता श्री राम जी अग्रवाल हैं और माता जी का नाम (स्व०) श्रीमती सीता देवी अग्रवाल है । माता-पिता दोनों का स्वभाव सरल, धार्मिक और ममत्वपूर्ण था । आपके पिता जी आर्यसमाजी विचारों के थे और कांग्रेस का काम भी खूब करते थे । वे कई बार जेल-यात्रा भी कर चुके हैं । उनकी माता जी भी महात्मा गाँधी जी के व्यक्तिगत सत्याग्रह के आह्वान पर अपने पति के साथ लाहौर जेल में गई थीं । दोनों की सात्विकता और देश-प्रेम का प्रभाव बालक श्रीकृष्ण पर पड़ा, जो उन्हें जीवन भर पथ-प्रदर्शक बना रहा ।

श्री अग्रवाल जी

उठते चरण :

श्री अग्रवाल जी की प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल कांगड़ी के तेजस्वी और सुगन्धित वातावरण में हुई । माध्यमिक शिक्षा पिलानी (राज०) और आठ-दस महीने कलकत्ता रहकर पूरी की । विद्यार्थी अवस्था में आप बड़े शान्त, गम्भीर और अध्ययनशील थे । कालेज की पढ़ाई पूर्ण करके आपने बिरला संस्थान-जियाजीराव काटन मिल, ग्वालियर में सन् १९४२ में कार्यारम्भ किया । तीन वर्ष वहाँ रहकर आपने अपनी कार्यक्षमता और विवेकशीलता का सुन्दर परिचय दिया था । श्री बिरला जी ने अहमदाबाद में न्यू स्वदेशी मिल खरीद ली थी । ग्वालियर से बदल कर सन् १९४६ में आप अहमदाबाद में न्यू स्वदेशी मिल में एकाउन्टेट बन कर आए । उस समय न्यू स्वदेशी मिल का काम श्री पन्नालाल जी कौशिक और श्री दुर्गाप्रसाद जी बिरला सम्हालते थे । कुछ समय में ही आपने अपनी कार्यपटुता से इन दोनों महानुभावों को प्रभावित कर लिया । फलतः, आपको इसी मिल में क्रमशः सेक्रेटरी, प्रेसीडेण्ट और मैनेजिंग डाइरेक्टर का प्रतिष्ठित पद ससम्मान दिया गया । आपने इन पदों को बड़ी तत्परता और कुशलता से सम्हालते हुए न्यू स्वदेशी मिल को प्रथम कोटि प्राप्त करने-कराने में तन-मन से बड़ी तत्परता दिखाई ।

आपके कायकाल में ही बिरला-संस्थान ने न्यू स्वदेशी मिल की निगरानी में ही अहमदाबाद में मंजुश्री टैक्सटाइल खरीद ली और दोनों मिलों की व्यवस्था श्री अग्रवाल जी को सौंप दी । दोनों मिलों का यथोचित विकास करने में आपने जिस तत्परता से काम लिया वह सराहनीय है ।

सन् १९७७ तक आपने दोनों मिलों का उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य-भार सम्हालकर मुक्ति ली ।

विविध क्षेत्र :

श्री अग्रवाल जी ने समाज-सेवा और शैक्षणिक क्षेत्र में भी काफी काम किया है । राजस्थान सेवा-समिति, अहमदाबाद के अध्यक्षपद पर सन् १९६३ से १९६९ तक निरन्तर छः वर्षों तक रहकर समिति के बहुन्मुखी विकास में आपने उल्लेखनीय सहयोग दिया है । आपके समय में और आपकी प्रेरणा से बिरला परिवार ने चितौड़गढ़ और डाकोर में धर्मशालाएँ बनवाने का कार्य सम्पन्न किया । पहले हिम्मतनगर से उदयपुर तक रेलवे लाइन नहीं थी । श्री अग्रवाल जी ने राजस्थान के श्री माणिक्यलाल जी वर्मा से सम्पर्क स्थापित करके इन दोनों स्थानों को जोड़ने के लिए रेलवे लाइन की व्यवस्था करने का यत्न किया । इससे अब गुजरात और राजस्थान के सांस्कृतिक सम्बन्ध की वृद्धि में बड़ी सहायता मिली है ।

श्रीअग्रवालजी गत २५ वर्षों से हिन्दी शिक्षण समिति अहमदाबाद के अध्यक्ष हैं, जिसके तत्वावधान्न में हिन्दी माध्यम द्वारा शिशु कक्षा से हायर सेकेण्डरी तक की पढ़ाई सुचारु रूप से हो रही है। अहमदाबाद में सर्वप्रथम इसी संस्था द्वारा हिन्दी माध्यम का हाईस्कूल खोला गया था। इस समय दस-बारह ऐसे स्कूल भिन्न-भिन्न संस्थाओं द्वारा चल रहे हैं।

आपने गुजराती-हिन्दी के पारस्परिक सहयोग को सुदृढ़ बनाने के लिए गुर्जर भारती नाम की एक साहित्यिक संस्था स्थापित की। इस संस्था के द्वारा अब तक नीचे लिखे दो ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं।

१. गुजरात के सन्तों की हिन्दी वाणी
सम्पादक-डा० अंबाशंकर नागर तथा
डा० रमणलाल पाठक
२. सूरदास और नरसी मेहता का तुलनात्मक
अध्ययन-डा० भ्रमरलाल जोशी

श्री अग्रवाल जी अहमदाबाद मिल आॅनर्स एसोसिएशन की मैनेजिंग कमेटी में भी वर्षों तक सदस्य रहे। आपने एक बार अफ्रीका और यूरोप की यात्रा की है। दूसरी बार जापान और सुदूर पूर्व के देशों की यात्रा की। इन देशों से आपने बहुत कुछ सीखा और उसका लाभ अपने कार्यकाल में किया। देश के भिन्न-भिन्न स्थानों, तीर्थों आदि की यात्रा करते हुए आपने नेपाल की भी यात्रा की है।

आपने अपने जीवन की सफलता का रहस्य बताते हुए कहा कि जीवन में नैरन्तर्य का होना आवश्यक है। श्रद्धा जीवन की उन्नति का मूलमन्त्र है, मूलधन है और प्रमाद सबसे बड़ा शत्रु है। इनका ध्यान रखकर कदम आगे बढ़ाना चाहिए।

उत्तर काल :

श्री अग्रवाल जी अपनी उम्र के साठ वर्ष पार कर चुके हैं। आपमें अब भी कार्यतत्परता और कार्यकुशलता पूर्ववत् बनी हुई है। आपने तीन वर्ष पूर्व सिद्धार्थ एण्ड कम्पनी खोली है और उसके विकास में संलग्न हो गए हैं। हम आपके स्वास्थ्यपूर्ण दीर्घायु की कामना करते हैं।

एक समाजप्रेमी

(पृष्ठ ३० का शेषांश)

पनपे। इसके लिए माँग और पूर्ति का संतुलन आवश्यक है।

क्या वर्तमान सरकार इस संतुलन को लाने का कोई कदम उठा रही है? जहाँ तक नये बजट का सम्बन्ध है, उसमें कोई ऐसा इंगित नहीं है। आर्थिक क्षेत्र में यथास्थिति संकटों की वृद्धि ही करती है ऐसा हमारा पक्का विश्वास है। आज लोकसभा में दो-तिहाई स्थान पाने के बाद और कई महीनों तक सरकार चलाने के बाद भी महँगाई नहीं थामी जा सकी है। यह आर्थिक यथास्थिति कायम रखने का ही भयंकर परिणाम है।

वैसे भी कोयले और बिजली का उत्पादन नहीं बढ़ रहा है, रेल के भारवाही डिब्बों की पूर्ति नहीं बढ़ी है। ऐसी स्थिति में औद्योगिक उत्पादन कैसे बढ़ सकता है? अभी तक जन-क्षेत्र के औद्योगिक प्रतिष्ठानों के ऊपर ऐसे व्यवस्थापक छाये हुए हैं, जो कि नाकाम साबित हो चुके हैं। पर उन्हें हटाकर नये मैनेजर बहाल नहीं किये गये हैं।

उसी प्रकार पिछले कई महीनों में नए उद्योगों के बारे में कोई निर्णय नहीं हुए हैं, पूँजी के आयात के यत्न नहीं किये गए हैं। इस समय विकसित देशों में मन्दी है। इसलिए पूँजी अधिक आसानी के साथ आयात की जा सकती है, बशर्ते कि हम वैसा यत्न करें। बिना पूँजी आयात के नयी औद्योगिक उत्पादन-क्षमता कैसे उभरेगी?....

बेकारी दूर करने के बारे में तो अभी कोई बात ही नहीं चल रही है। योजना बनाना ता दूर रहा, अगर आज पाँच हजार करोड़ रुपए ग्रामीण क्षेत्रों में दुग्ध-विकास, मछली-पालन और जंगल-विकास पर खर्च किएँ जाएँ तो एक करोड़ नई वृत्तियाँ विकसित की जा सकती हैं। पर ऐसी कोई योजना सरकार के पास नहीं है।

अन्त में यह स्पष्ट है कि बढ़ती महँगाई, उपभोग्य वस्तुओं की बढ़ती हुई कमियाँ और बढ़ती हुई बेकारी हमारे समस्त अर्थतन्त्र के संकट को प्रतिदिन अधिकाधिक भीषण बनाती जा रही हैं। ऐसा लगता है कि हम समुद्र में तैरती एक नाव में बैठे हैं, जिसकी पतवार खो गई है और जिसके पाल ढीले पड़ गए हैं और हवाओं के तीव्र झोंके उसे झकझोर रहे हैं। — नवनीत से साभार

बाल-परक

सफलता की कुंजी

श्री धनराज पँवार

संजय कक्षा पाँच में पढ़ता था, लेकिन वह बहुत आलसी लड़का था। पाठशाला में वह मन लगाकर नहीं पढ़ता और घर आने के बाद शाला का गृह—कार्य करना या पढ़ना कभी जानता भी नहीं था। गृह-कार्य नहीं करने से अध्यापक उसे डाँटते रहते थे, किन्तु संजय उसकी परवाह नहीं करता।

एक दिन उसकी माँ ने उसे खेत में खाना पहुँचाने भेजा। वह रास्ते में अन्य लड़कों के साथ खेलने लग गया। जब सभी लड़के खेल समाप्त करके चले गए, तब संजय वहीं पेड़ के नीचे सो गया।

थोड़े समय पश्चात् पास ही रेल की पटरी से रेलगाड़ी गुजर गई, जो तेज़ रफ्तार से दौड़ रही थी। वह हड़बड़ाकर बैठ गया और खेत की ओर जाने लगा। कुछ दूर आगे जाने पर बीच में नदी आ गई, जो निरन्तर एक ही गति से बह रही थी।

नदी पार कर जब वह दूसरे किनारे की ओर गया, तब उसे पक्षियों का झुण्ड दिखाई दिया। पक्षी भोजन की खोज में अपने लक्ष्य की ओर उड़ रहे थे।

यह देख संजय को अनुभव हुआ कि सभी अपने उद्देश्य की ओर बढ़ रहे हैं। उसने सोचा रेलगाड़ी अपने लक्ष्य की ओर चली गई। नदी का पानी भी बेरोक-टोक एक ही गति से निरन्तर बह रहा है और पक्षी अपने भोजन की तलाश में उड़ रहे हैं। सभी अपने गन्तव्य की ओर जा रहे हैं, फिर मैं ही हाथ पर हाथ धरे क्यों बैठा रहूँ। मुझे भी इस दुनिया में बहुत से काम करने हैं।

अतः, उस दिन के बाद संजय ने घर जाकर पढ़ाई करना शुरू किया। कक्षा का गृह-कार्य समय पर पूरा करता और मन लगाकर पढ़ता। इस प्रकार वह शाला में हमेशा प्रथम श्रेणी से ही उत्तीर्ण होता।

स्पष्ट है मेहनत करने वालों को सफलता अवश्य मिलती है।

महादेवजी के मन्दिर के पास
पो० समदड़ी R S. जि० बाड़मेर (राज०)

धरती के पूत !

'अशोक' एम०ए०

हे धरती के पूत, न पग तू पोछे कभी हटाना।
एक बार जो चरण बढ़े तो आगे उन्हें बढ़ाना॥

तू आगे चरण बढ़ायेगा, नीला गगन झुकेगा।
तू आगे कदम बढ़ायेगा, बहता पवन रुकेगा॥
विपदा की आँधी देख राह में तनिक न घबराना।
हे धरती के पूत, न पग तू पीछे कभी हटाना॥
एक बार जो चरण बढ़े तो आगे उन्हे बढ़ाना॥

मैं कैसे मानूं कि अकेला है, साथ नहीं कोई!
मैं कैसे मानूं कि तकदीर तेरी है सोई?
'साहस, संयम है साथ तेरे फिर कैसे डर जाना?
हे धरती के पूत न पग तू पीछे कभी हटाना॥
एक बार जो चरण बढ़े तो आगे उन्हें बढ़ाना।

तू न भूल कर्तव्य कभी निज, तू ऐसा साहस भर।
खे सके सफलता की नैया, विपदा की लहरों पर॥
तू सारे संकट झेल सके, तन को वज्र बनाना।
हे धरती के पूत, न पग तू पीछे कभी हटाना।
एक बार जो चरण बढ़े तो आगे उन्हें बढ़ाना॥

तेरे पद-चिह्नों पर आएँ, लाखों ही दीवाने।
तेरे बल पर लड़े हजारों, धुनवाले मस्ताने॥
तू सिखा जगत् को बुझते जीवन की ज्योति जलाना।
हे धरती के पूत, न पग तू पोछे कभी हटाना॥
एक बार जो चरण बढ़ तो आगे उन्हें बढ़ाना।

तू पैरों से ठुकरा दे, दुनिया का बड़ा प्रलोभन॥
तू अपनो धुन का पक्का है, फिर कैसी यह उलझन।
तेरी मंजिल दूर नहीं है, तू चलते ही जाना॥
हे धरती के पूत, न पग तू पीछे कभी हटाना।
एक बार जो चरण बढ़े तो, आगे उन्हें बढ़ाना॥

अंजनी
मेडिकल कालेज के पास नागपुर (म०प्र०)

मरुस्थल भूमि

श्रीमती गीतादेवी शर्मा
विद्याविनोदिनी

लेखिका

सारा देसाँ रो सिरमोर,
मरूधर प्यारो लागै जी ।
म्हारा कालजड़ा री कोर,
म्हानै बालो लागै जी ।
मोठ, बाजरो, खाणो म्हारो,
छाछ-राबड़ी साथ
देवता रा भी मन ललचावें,
मिनखाँ री के बात
मोटो धोती ऊपर कमरो,
सिर पर साफो राख ।
एक खेसलो कांधे ऊपर,
या म्हारी पोशाक ।
कानाँ मे मुरक्याँ री जोड़,
म्हारै चोखी लागै जी
सारा देसाँ रो सिरमोर,
मरूधर प्यारो लागै जी ।
फोग सागरी कैर करेला,
खीपोली हो ढेर ।
सिट्टा, फली, मतीरा, काचर,
मीठा-मीठा बेर ।
गिणावाँ-कितनी चीजाँ और,
म्हारी धरती में निपजै जी ।
सारा देसाँ रो सिरमोर,
मरूधर प्यारो लागै जी ।
भूरा-भूरा टीबड़ा जी,
है हीरा री खान ।
वीर, सूरमाँ त्यागी, दानो,
प्रगट्या रतन महान,
ज्याँ रो अस छायो और,
सुण कर मन हरखावै जी ।
सारा देसाँ रो सिरमोर,
मरूधर प्यारो लागै जी ।
पीथल, सांगा और प्रतापी सी,
हठीलो हम्मीर,
गोरा-बादल, जयमल, फत्ता,
चूड़ावत—रणधीर ।
ज्याँ री कूण करैला होड़,
जग में जोड न दीखै जी ।
सारा देसाँ रो सिरमोर,
मरूधर प्यारो लागै जी ।
हाड़ी राणी हरखी-हरखी,
दियो सीस सैनाणी ।
कूद पड़ी जौहर ज्वाला में,
कितनी ही क्षत्राणी ।
मन में कर मरणै री कोड,
तन पावक नैं अरप्यो जी ।
सारा देसाँ री सिरमोर,
मरूधर प्यारो लागै जी ।
मीराँ-सी हरि प्रेम दिवानी,
कलयुग में नहीं आन ।
पन्ना अमर हुई जगती में,
करयो पुत्र बलिदान ।
मोह-ममता सै मुखड़ो-मोड़,
सेवक-धर्म निभायो जी ।
सारा देसाँ रो सिरमोर,
मरूधर प्यारो लागै जी ।

(शेष पृष्ठ ४१ पर)

वस्त्र उद्योग का विहंगावलोकन

श्री इन्द्रवदन प्राणलाल
अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निर्देशक,
तरुण कॉमर्शियल मिल्स

सूती वस्त्र उद्योग एक प्राचीनतम किन्तु सुसंगठित उद्योग होते हुए भी राष्ट्र के वर्तमान आर्थिक पुनर्जीवन के ढाँचे में उपेक्षित जीवन बिता रहा है, इसका कारण उसकी सरकार या जनसमुदायों की अपेक्षाओं को साक्षात् करने की असमर्थता नहीं, किन्तु उसपर लदे हुए अनेक अवरोध हैं जिनसे अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए उसे लगातार संघर्ष करना पड़ता है। वास्तव में वस्त्र उद्योग, कच्चे माल एवं उत्पादन के विविध साधनों की दुर्लभता एवं उसपर लदी हुई अनेक सामाजिक जिम्मेदारियों को निभाने के कारण उत्पादन–लागत में हुई बहुमुखी वृद्धि को सहन करते हुए, एक अत्यन्त कठिन समय से गुजर रहा है। कोयला, ईंधन, खनिज तेल, रसायन और विद्युत–दरों में हुए निरन्तर वृद्धि ने कपास की ७६ लाख गाँठों के उत्पादन–कीर्तिमान द्वारा फलित सरल पूर्ति की परिस्थिति द्वारा प्राप्त होने वाले लाभ को नगण्य बना दिया है। तदुपरांत, इस उद्योग को वेतन–वृद्धि का अत्यन्त भारी बोझ सहना पड़ा। इस दुस्सह्य परिस्थिति पर कटाक्ष के रूप में-- जब मिल कम्पनियाँ आधुनिकीकरण की दिशा में कदम बढ़ा रही थीं और उत्साहपूर्वक भारतीय औद्योगिक विकास बैंक IDBI जैसी संस्थाओं से सरल वित्तीय सहायता की आकांक्षा रखती थीं उसी समय उद्योग पर उत्पादन–लागत में हुई सर्वांगीण वृद्धि के फलस्वरूप अतिरिक्त खर्च को जिम्मेदारी आ पड़ी।

उद्योग जब वस्त्र और सूत की कीमतें नीचे लाने की दिशा में प्रयत्नशील था, उसी समय मिलों को पहले कोयला और उसके बाद बिजली की निरन्तर कटौती का सामना करना पड़ा।

कताई के यन्त्र इस शर्त के साथ मिलों में लगाने की अनुमति दी जाती है कि उनके द्वारा निर्मित सूत का अमुक हिस्सा हथकरघों को दिया जाना चाहिए। हथकरघा उद्योग इस बल के द्वारा अतिरिक्त रोजगारी तो उत्पन्न करता है, किन्तु इस क्षेत्र के भूतपूर्व निष्पादन को देखते हुए यह पूर्णतः शंकास्पद है कि वह अपने कर्तव्य का पूर्णरूपेण पालन कर सकेगा यह मान बैठना असामयिक होगा कि यह क्षेत्र राष्ट्र की बढ़ती हुई आबादी की माँग को सन्तुष्ट कर सकेगा। इसके अलावा अधिक लागत और कम उत्पादन के कारण सरकार को लगातार हथकरघा उद्योग की सहायता भी करनी पड़ती है, जिससे कि यह मिल के वस्त्रों की तुलना कर पाने में सक्षम हो सके।

इस उद्योग को विद्युत-शक्ति की घटती–बढ़ती कटौती का सामना करना पड़ा। वस्त्र एक सम्वेदनशील वस्तु है और इस सामुदायिक उपभोग की सम्वेदनशील वस्तु के उत्पादन के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि कपड़े की मिलों को जहाँ विद्युत–शक्ति की कटौती आवश्यक हो ऐसे क्षेत्रों में भी पूरी क्षमता के साथ कार्य करने दिया जाए। मिल उद्योग के लिए आवश्यक विद्युत–शक्ति की मात्रा की मुक्ति हेतु विशेष रियायत दी जानी चाहिए। मिलों को डीजल से चलने वाले विद्युत जनरेटिंग सेट निःशुल्क आयात करने की सुविधा प्रदान की जानो चाहिए। इसके अतिरिक्त यह भी आवश्यक है कि जो उद्योग ऐसे जनरेटिंग सेट अपने उपभोग की विद्युत–शक्ति के उत्पादन के लिए लगाते हैं उनके लिए डीजल की उचित मात्रा भी सुनिश्चित की जाए।

विद्युत-शक्ति और ईंधन के अवरोध :

कोयला तथा अन्य चीजों की दरों में वृद्धि और उत्पादन-शुल्क के भार के कारण विद्युत-शक्ति की कीमतों में वृद्धि हुई है। सामान्यतः यह वृद्धि १० प्रतिशत है, किन्तु उदाहरण के लिए अहमदाबाद में यह ३० प्रतिशत के लगभग है। अपर्याप्त रेल-व्यवहार और कम उत्पादन के कारण खुले बाजार में कोयले की कीमतें भी काफी बढ़ी हैं। इसके अलावा खनिज तेल की कीमतों में भी वृद्धि हुई है।

तापचालित विद्युत उत्पादक स्टेशनों द्वारा उपयोग किए जानेवाले "आर एफ ओ" की कीमतें भी बढ़ीं। उत्पादन की विविध वस्तुओं की कीमतों में हुई वृद्धि असाधारण है। उत्पादन की अन्य मूलभूत वस्तुओं की कीमतों में हुई वृद्धि ने कपास एवं सूत की कम कीमतों द्वारा होने वाले लाभ को भी नगण्य बना दिया है। वस्त्रों की कीमतें इतनी ज्यादा असमान थीं कि वे उत्पादन-लागत से भी कम थीं। आज भी औसत मिलें अपनी कुल बिक्री का ६ से ८ प्रतिशत ही मुनाफा प्राप्त करती हैं, जबकि यह मुनाफा अन्य उद्योगों के मुनाफे की तुलना में अत्यल्प है।

आधुनिकीकरण की दिशा में प्रगति :

भारतीय औद्योगिक विकास बैंक की सरल वित्तीय सहायता योजना द्वारा यन्त्रों के आधुनिकीकरण की प्रगति को प्रवेग मिला है तथा अन्य कई नई कताई मिलों की स्थापना हुई है और प्रोसेसिंग की क्षमता में भी वृद्धि हो रही है। वस्त्र उद्योग की सर्वेक्षण संस्था ने अनुमान लगाया है कि छठी पंचवर्षीय योजना के पहले १९ लाख तकुओं की अतिरिक्त आवश्यकता को पूरी करना होगा।

इसके परोक्ष प्रभाव से देश में निर्मित वस्त्र-उत्पादक यन्त्रों की माँग बढ़ी है, जिसके परिणामस्वरूप ऐसे यन्त्र निर्माता उद्योगपति इन यंत्रों को फिलहाल दे पाने की स्थिति में असमर्थ हैं।

यहाँ यह बताना उचित है कि भारतीय औद्योगिक विकास बैंक ने प्रारम्भ में जो विविध अटपटे अवरोधमय नियम बनाए थे, उनके कारण उसकी सरल वित्तीय सहायता योजना का लाभ वस्त्र-उद्योग न ले सकता था। यद्यपि इन अवरोधक नियमों में काफी हद तक सुधार कर दिए गए हैं, फिर भी वित्तीय सहायता के आवेदनपत्र का मूल्यांकन करने में काफी समय व्यतीत होता है। इसके अलावा भारतीय सूती मिल संघ का भी इस ओर ध्यानाकर्षण किया गया है कि भारतीय औद्योगिक विकास बैंक की सरल वित्तीय सहायता निकट भविष्य में बन्द की जा रही है। यदि ऐसा होगा, तो यह एक दुर्भाग्यपूर्ण कदम होगा जो उद्योग में यन्त्रों के आधुनिकीकरण के वेग को पंगु बनाने के साथ-साथ अनेक मिलों की क्षमता और व्यवहार्यता को भी सन्देहास्पद बनाएगा।

बहुतन्तु नीति : (Multi-Fibre Policy)

कपास की तीव्र कमी के समय सरकार ने जो बहुतन्तु नीति अपनाई थी, उसे जारी रखना चाहिए और "विस्कोस" तथा "पोलिओसोनिक स्टेपल" तन्तु का निःशुल्क आयात जारी रखना चाहिए। अभी रासायनिक तन्तु और कपास का निश्चित प्रमाण में मिश्रण करके तैयार किए गए वस्त्रों के दाम बहुत ज्यादा है, जिसके कारण जनसाधारण इसे खरीद पाने में असमर्थ है। यदि उसपर लदा हुआ भारी उत्पादन शुल्क हटा दिया जाए तो उसके दाम काफी कम हो जाएँगे, जिससे जनता जनार्दन उसे खरीद सकेगी, क्योंकि वह टिकाऊपन के कारण उन्हें सस्ता भी पड़ेगा। इसके अलावा ऐसे वस्त्रों की माँग विदेशी बाजार में भी ज्यादा है. उत्पादन-शुल्क सरलतापूर्वक और तुरन्त वापस लिया जा सके ऐसे कानून और नियम भी बनाना आवश्यक है, जिससे भारतीय व्यापारी आन्तर्राष्ट्रीय बाजार की प्रतिस्पर्धा में टिक सके।

सूती वस्त्रों का निर्यात :

सूती वस्त्रों के निर्यात में बहुमुखी वृद्धि हुई है। डॉलर और भारतीय रुपए के मध्य विकट और गैर-लाभदायी समानता, मालवहन-शुल्क में हमारे प्रतिद्वन्द्वी ताइवान और हॉंगकॉंग जैसे देशों की तरह हमारे देश द्वारा अनुभूत गैरलाभ, उत्पादन-लागत में हुई बहुमुखी-वृद्धि तथा आन्तरिक और बाह्य स्तर पर

माँग और आपूर्ति में तालमेल बनाए रखने के लिए भारतीय उद्योग की निरन्तर व्यस्तता, आदि इस उद्योग के बाधक अवरोध हैं । इसके अलावा पूर्वी यूरोपीय देश [EEC] तथा संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के मध्य हुए वस्त्र समझौते के अनुसार चीन अब अपना अतिरिक्त कपड़ा इन देशों को निर्यात करता है, इसका प्रतिकूल प्रभाव हमारे इन क्षेत्रों को होनेवाले निर्यात पर पड़ा है । उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखते हुए यह आवश्यक है कि वस्त्र निर्यात एवं निर्यातकर्ताओं के हितों को प्राथमिकता दी जाए और उन्हें प्रोत्साहित किया जाए तथा उत्पादन-शुल्क की पुनःप्राप्ति के लिए सरल नियम बनाए जाएँ एवं दीर्घकालीन प्रोत्साहन योजनाएँ तैयार करके उनका अमलीकरण किया जाए । इसके अलावा अधिक चौड़ाई वाले वस्त्रों की विदेशों में अधिक माँग है, जिसे पूरी करने के लिए ऐसे वस्त्र-निर्माण के लिए चौड़े यन्त्रों का निःशुल्क आयात करने दिया जाए ।

सिले हुए वस्त्र के निर्यात के क्षेत्र में भी अच्छी-खासी वृद्धि हुई है । पूर्वी यूरोपीय देश, इंग्लैण्ड, फ्रांस, इटली, डेन्मार्क वगैरह देशों में भारत सिले हुए वस्त्रों का निर्यात कर सकता है, किन्तु वहाँ विभिन्न स्तर पर "कोटा पद्धति" होने के कारण भारतीय निर्यातकर्ताओं पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है । इस सम्बन्ध में ज्यादा बिक्री करके अधिक लाभ कमाने की दिशा में विभिन्न प्रकार के "क्वोटा" के मध्य मुक्त रूप से रूपान्तरण की मान्यता मिलनी चाहिए ।

कपास का विकास एवं अनुसन्धान :

गुण और उत्पादन की दृष्टि से अधिक लाभदायी कपास के मान्य और प्रमाणित बीजों की आपूर्ति के लिए भारतीय कपास उत्पादक महासंघ की मूलभूत इकाई 'कपास विकास और अनुसन्धान संघ' ने एक नई योजना प्रारम्भ की है । इस योजना द्वारा अच्छी फसल प्राप्त करने की दिशा में अच्छी-खासी मदद मिलती है । उपर्युक्त संघ अच्छी किस्म के कपास के विकास-कार्य के लिए वार्षिक १५ लाख रुपए खर्च करता है, जिसके अच्छे परिणाम प्राप्त हुए हैं ।

उपसंहार :

वास्तव में जनसमुदाय की उपभोग की अन्य वस्तुओं की कीमतों में हुई अभूतपूर्व वृद्धि की तुलना में वस्त्रों की कीमतों में जो वृद्धि हुई है वह नगण्य है । अपने भव्य भूतकाल को दृष्टिगत रखते हुए वस्त्र उद्योग उपभोक्ताओं को विश्वस्त कर सकता है कि यह उद्योग भारतीय अर्थ-व्यवस्था के किसी भी क्षेत्र में-चाहे वह उत्पादन-वृद्धि हो या कपास का उच्चतम उपयोग, या अनेक प्रशिक्षित, अर्द्ध प्रशिक्षित मजदूरों को रोजगार देने का प्रश्न हो अथवा कारीगरों के लिए न्यायपूर्ण रोजगार का प्रश्न हो या फिर आधुनिकीकरण द्वारा अपनी क्षमता का श्रेष्ठतम उपयोग करने का प्रश्न हो या उत्पादित वस्तुओं को उचित दामों पर बेचने का प्रश्न हो—इन सभी क्षेत्रों में अपना सक्रिय रचनात्मक सहयोग देगा ।

यह तो सर्वविदित है कि यन्त्रों का पर्याप्त मात्रा में आयात करने के बाद भारतीय वस्त्र उद्योग ने केन्द्र एवं राज्य सरकार के कोष में ७६० करोड़ रुपयों की वृद्धि की है । इसमें से ५५ करोड़ रुपए उत्पादन-शुल्क के रूप में—जिसमें २५६ करोड़ सूती तन्तु और ४० करोड़ विस्कोस और "विस्कोस ब्लेन्डेड" तन्तु तथा ९५ करोड़ "पोलियेस्टर" तन्तुओं के उत्पादन-शुल्क का समावेश होता है ।

अन्त में वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों में गाँवों को अपना कर, उन्हें सहायता देकर पुनःस्थापित करने के ग्राम्य-विकास के भगीरथ-कार्य में वस्त्र उद्योग अपना सहयोग दे रहा है । इस उद्योग पर यदि अतिरिक्त कर-बोझ न लादा गया तो इसका भविष्य उज्ज्वल है । यदि निरर्थक अवरोध दूर कर दिए जाएँ, सरल और पर्याप्त मात्रा में वित्तीय सहायता दी जाए और उद्योग पर निरर्थक सामाजिक जिम्मेदारियाँ न लादी जाएँ तो वस्त्र-उद्योग के लिए ग्राहकों की माँग को सन्तुष्ट करने का स्वर्णिम अवसर है ।

(अंग्रेजी से अनूदित)

तरुण कमर्सियल मिल
अहमदाबाद

स्वास्थ्य-परक

नारी की ऋतुकाल चर्या

लेखक

वैद्य नारायणदत्त शर्मा

आयुर्वेदाचार्य

[श्री शर्मा जी वैद्यक शास्त्र के अनुभवी और वयोवृद्ध ख्यातनाम ज्ञाता हैं । आपकी चिकित्सा अनेक निराश व्यक्तियों में आशा का संचार कर देती है ।

नारी का ऋतुधर्म कितना महत्वपूर्ण होता है और उसमें क्या-क्या सावधनियाँ रखनी चाहिए इसपर प्रस्तुत लेख में बड़ी सूक्ष्मता से विचार किया गया है । तत्सम्बन्धी रोगों, निदानों और अन्य बातों पर भिन्न-भिन्न कोणो से विचार किया गया है, जो आज-कल के निरंकुश नर-नारियों को स्वलाभार्थं समान रूप से उपयोगी और आचरणीय है । - सम्पादक]

महिलाओं को सर्व प्रथम होनेवाला आर्तव का स्राव आर्तव दर्शन या रजो दर्शन या ऋतु काल कहा गया है । साधारण बोलचाल की भाषा में इसे रजस्वला या मासिक धर्म ऐसा भी कहते हैं और पाश्चात्य चिकित्सक इसे मन्थलीकोर्स तथा मेन्स्यूरेशन भी कहते हैं ।

यह प्रायः बारहवें वर्ष से प्रारम्भ होकर ५० वर्ष तक होता है । देश, प्रकृति, भोजन, काल प्रभृति के भेद से यह समय कम या अधिक होता है-यथा यूरोप के शीत प्रधान देशों में १८ वर्ष की अवस्था में आर्तव-दर्शन होना पाया जाता है ।

यह आर्तव दर्शन कौमारावस्था की समाप्ति और युवावस्था के आरम्भ के आगमन का सूचक हैं । इसके साथ कुचवृद्धि प्रभृति युवावस्था के आगमन सूचक अन्य चिह्न भी स्त्री में दिखाई देते हैं, जिससे ज्ञात होता है कि यह स्त्री अब गर्भ-धारण के योग्य हो रही है । उसके गर्भाशय में परिवर्तन होना प्रारम्भ हो जाता है ।

आर्तव स्त्री के शरीर में एक उपधातु है, जो प्रायः १२ वर्ष की अवस्था से ५० वर्ष की अवस्था तक आहार, रस, धातु से उत्पन्न होकर प्रतिमास में अपान वायु द्वारा गर्भाशय में योनि-पथ से होता हुआ बाहर निकला करता है ।

आर्तव को पुष्प, रज, ऋतु, शोणित भी कहते हैं । अधिकांश महिलाओं को २७वें दिन आर्तव प्रतिमास दिखाई पड़ता है ।

आर्तव का वर्ण साधारणतया कुछ काला होता है। जब आर्तव स्वाभाविक से अधिक निकलता है तब वह खरगोश के रक्त या लाख या गुंजा के रंग के समान शुद्ध लाल होता है ।

खरगोश के रक्त के सदृश्य या लाख या गुंजा या बीरबहूटी के रंग का आर्तव शुद्ध बताया है ।

ऋतुकाल का रक्त अशुद्ध होता है, मैला और दूषित हाता है ।

इसका पड़ा हुआ दाग वस्त्र पर जल से धोने से स्वच्छ हो जाता है । 'यद्वासो न विरंजयेत्' जिससे वस्त्र रंगता नहीं, वह आर्तव शुद्ध है । केवल रक्त या लाल रंग देखने से इसे रक्त कहते हैं । इसमें रक्त का कुछ अंश श्लैष्मिक झिल्लियाँ और कुछ क्षार होते हैं । यह रक्त स्वयं ही तीन-चार दिन के बाद रुक जाता है । इस रक्त से स्त्री में कृशता आने के अतिरिक्त और कोई हानि नहीं होती । इस कृशता से भी उसमें

प्रसन्नता रहती है । साधारण रक्त की अपेक्षा आर्तव के रक्त में खटिक चूना (Calcium) विशेष होता है ।

आर्तव प्रायः चार-पाँच दिनों तक निकलता रहता है । दो दिन से कम और आठ दिन से अधिक समय तक यदि निकलता रहे, तो किसी रोग की उपस्थिति समझनी चाहिए ।

स्त्रियों के स्वास्थ्य, भोजन, प्रकृति आदि के प्रभाव से आर्तव की अवधि में अन्तर पाया जाता है ।

सामान्यतः तीन दिन से लेकर सात दिन तक आर्तवस्राव होता है । इससे प्राचीन एवं अर्वाचीन सब विद्वान् सहमत हैं ।

आर्तव की मात्रा सामान्यतः दो से चार-पाँच छटाँक तक होती है, यानी १५० ग्राम तक होती है ।

ऋतुकाल एवं ऋतुमती-रुधिर निकलने के दिन से १६ रात्रि तक ऋतुकाल कहते हैं और उस स्त्री को ऋतुमती कहते हैं । यथा-षोडस दिवसा ऋतुकालः (हारित) ऋतुकालंतु षोडश रात्रं यावत् (चक्रपणिदत्त)

जैसे अन्न ऋतुकाल में ही बोने से उत्पन्न होता है उसी प्रकार गर्भ की स्थिति भी इसी काल में होती है ।

गर्भ धारण योग्य ऋतुकाल-ऋतुकाल के सोलह दिन पूर्व तीन दिन और अन्तिम सोलह दिन छोड़कर शेष बारह रात्रियाँ ही गर्भ-धारण के योग्य होती हैं । इसमें सम और विषम रात्रियाँ भी महर्षियों ने बताई हैं ।

ऋतुकाल से चतुर्थ दिन ४-६-८-१०-१२ रात्रियाँ सम हैं और ५-७-९-११ विषम रात्रियाँ हैं ।

सम रात्रियों में गर्भाधान पुत्र का देने वाला और विषम रात्रियों में कन्या उत्पन्न होती हैं, ऐसा शास्त्रकारों की मान्यता है ।

महर्षि चर्काचार्य ने अपने ग्रन्थ चरक में लिखा है कि गर्भ-स्थापन के लिए गर्भवती स्त्री इन्द्रायण, ब्राह्मी, सफेद दूर्वा, नीली दूर्वा, पाटला, गिलोय, हरड़, नीम, खरैंटी शतमूली इन सब औषधियों के साथ सिद्ध किए दुग्ध और घृत का पान करे तथा इन औषधियों के साथ सिद्ध किए जल से स्नान करे ।

स्नान करने के पश्चात् बधू पति के तेज को अपने गर्भाशय में धारण करे । इस समय पति को अर्यमा का रूप धारण करना चाहिए । अर्यमा का अर्थ है श्रेष्ठ मन वाला । यह इसलिए कि गर्भाधान के समय के विचारों का प्रभाव बच्चे पर अत्यधिक पड़ता है । उस समय पति को अपने विचार अवश्य श्रेष्ठ बनाने चाहिए अपने को श्रेष्ठ मन वाला बनना चाहिए । जिस स्त्रीका मुख पुष्ट और प्रसन्न हो तथा सारे शरीर और चन्द्रबदन पर पसीना आ रहा हो, जिसे नर की कामना हो, जो मीठी-प्यारी बातें करे, जिसकी कुक्षि, नेत्र और बाल ढीले से हो जाएँ तथा भुजाएँ, कुच, कटि, नाभि, जानु, जंघा और नितम्ब फरकने लग जाएँ एवं जो हर्ष और आनन्द में तत्पर हो, ऐसी स्त्री को गर्भ-धारण योग्य जानना चाहिए । जैसे दिन व्यतीत होने पर कमल संकुचित हो जाता है, उसी तरह ऋतुकाल व्यतीत हो जाने पर स्त्री-योनि (गर्भाशय मुख) बन्द हो जाती है । प्रतिमास आर्तव का स्राव ठीक-ठीक न होने से स्त्री के शरीर के दोष बढ़ जाते हैं, स्त्री का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है ।

आर्तव-स्राव के कम होने या न होने से उस स्त्री के रुग्ण होने का पता चल जाता है ।

आर्तव-स्राव के बन्द हो जाने पर कुछ ही समय के बाद गर्भाधान होने का ज्ञान हो जाता है और उससे प्रसव होने के समय का अनुमान करने में सहायता मिलती है ।

रजस्वला स्त्री के कर्तव्य :

रजोधर्म के दिनों में सहवास सर्वथा ही निषिद्ध माना गया है । रजोधर्म के अंतिम दिनों में प्रायः स्त्रियों को सहवास की तीव्र लालसा होती है ।

मासिक धर्म से शुद्ध होकर स्नान करने पर स्त्री के पास पुरुष को न जाने से पाप लगता है ऐसा अपने आचार्यों का मत है । ऋतुमती स्त्री यदि परवल के साग के खेत में चली जाए तो बेलों के सब पत्ते जल जाते हैं । यदि किसी फल की बेल से छू जाए तो फल गल जाता है, दर्पण में मुँह देखे तो शीशा धुंधला पड़ जाता है । यदि आर्तव को कुत्ता

चाट ले, तो पागल हो जाता है । ऋतुमती के साथ भोग करने से कुष्ठ रोग हो जाता है । पूयमेह, आतशक, गर्मी इत्यादि रोग हो जाते हैं ।

पुरुष के लिए रजस्वला स्त्री सर्वथा त्याज्य है । स्त्री को चाहिए कि रजस्वला होने के प्रथम दिवस से रजस्वला की अवधि तक ब्रह्मचारिणी रहे । दिन में सोना, अञ्जन लगाना, अश्रुपात करना, स्नान करना, उबटन लगाना, तैलाभ्यंग करना, नाखून काटना, दौड़कर चलना, हँसना, बहुत बोलना, तीक्ष्ण शब्द श्रवण करना, अवलेखन, कंघी से बाल-पट्टी बनाना, तीव्र हवा का सेवन, परिश्रम करना—इन सब का परित्याग कर दे ।

सुश्रुताचार्य का मत है कि उपर्युक्त पथ्याचरण का कारण है कि यदि रजस्वला अवस्था के तीन दिनों में दिन में सोए और जो कहीं उसी ऋतु में गर्भ रहे, तो बालक बहुत सोनेवाला उत्पन्न हो, अञ्जन लगाने से अन्धा, रोने से विकृत—दृष्टिवाला, स्नान तथा अनुलेपन करने से दुःखशील, तैलाभ्यंग करने से कुष्ठी, नाखून कतरने से खराब नाखून वाला, दौड़कर चलने से चंचल, हँसने से काले दाँत वाला, काले होठ और काले तालु तथा जीभ वाला होता है । बहुत बोलने से प्रलापी, अति शब्द सुनने से बहरा और अवलेखन—शिर के बालों में कंघी करने से गंजा तथा हवा अधिक खाने और कष्ट करने से उन्मत्त बालक पैदा होता है । इससे इन कामों को त्याग दे ।

रजस्वला स्त्री को तीन दिन कुशा (डाभ) की शय्या पर सोना और पत्तल या केले के पत्ते पर रखकर जौ चावल आदि हविष्यान्न खाना चाहिए और भर्ता से बहुत ही बची रहनी चाहिए । फिर चौथे दिन स्नान करके हितकर वस्त्र और आभूषण धारण करके मंगल स्वस्तिवाचन करने के बाद स्त्री को भर्ता का दर्शन कराए । इसका कारण है—

पूर्वं पश्येश्येदृतुस्नाता यादृशंनरसंगना ।
तादृशं जनयेत्पुत्रं भर्त्तारं दर्शये दृत्तः ॥

(सुश्रुत शा.अ.२)

[ऋतु-स्नान करते ही पुरुष-दर्शन करने का कारण यह है कि ऋतु से शुद्ध स्नान करके स्त्री जैसे पुरुष का पहिले दर्शन करे, उसको यदि उस ऋतु में गर्भ रहे तो वैसा पुत्र उत्पन्न होगा ।]

जिस दिन स्त्री रजस्वला हो, उसी प्रथम दिन उससे मैथुन करने से पुरुषों की आयु का नाश होता है । यदि उस दिन गर्भ रह जाए तो जन्मते ही शिशु प्राण छोड़ देता है । दूसरे दिन भी रजस्वला के साथ प्रसंग करने से या तो पूर्वोक्त हानि होती है अथवा सूतिका घर में शिशु मर जाता है ।

तीसरे दिन रजस्वला-गमन से या तो उपर्युक्त हानि होती है या अधूरे अङ्ग का और अल्प आयुवाला शिशु उत्पन्न होता है और जीवन-पर्यन्त रोगी रहता है ।

रजस्वला-समय में रक्त का प्रवाह होता है और रक्त के प्रवृत्त होने में प्रविष्ट हुआ बीज गुणकारक नहीं होता । जैसे नदी के बहते हुए जल में पड़ा हुआ द्रव्य बह जाता है, ऊपर को नहीं आता, उसी तरह रजस्वला में भी जानना चाहिए । इसलिए नियमित तीन रात्रि तक रजस्वला को परित्याग कर दे । इससे पीछे एक मास तक यथोचित रात्रियों में गमन करे ।

इन उपर्युक्त प्रमाणों से स्पष्ट प्रकट होता है कि रजस्वला से कदापि संभोग नहीं करना चाहिए । ऐसी परिस्थिति में संभोग करने से पूयमेह (सुजाक), आतशक (सीफीलिस) जैसे भयंकर रोगों से सामना करना पड़ता है ।

रजोधर्म के समय शीतल जल से बचना चाहिए । इसीलिए इस काल में स्त्री का स्नान करना नितान्त बर्जित है । आर्तव के समय शरीर तथा जननेन्द्रियों को स्वच्छ रखना चाहिए ।

आर्तव-सम्बन्धी व्याधियाँ :

आर्तव के सम्बन्ध में निम्न रोग पाए जाते हैं:— नवष्टार्तव, कष्टार्तक अल्पस्राव, अनुकल्प रज इत्यादि ।

कष्टार्तव (आर्तव का सर्वथा बन्द हो जाना)

इसे आर्तव दर्शन-मासिक स्राव का रुकना कहते हैं । अति मैथुन, मासिक धर्म के समय ठण्डी चीजों का सेवन, मासिक के समय शीतल जल से स्नान करना एकाएक शोक आ पड़ना, अनेमिया (रक्त-अल्पता) रोग का होना इत्यादि ही इसके कारण हैं ।

गर्भ-संचार के समय तथा जब शिशु दुग्धपान करता है तब भी रजोरोध पर औषधि नहीं देनी चाहिए ऐसा होना नैसर्गिक है ।

मासिक स्राव के रुक जाने पर चालू करने के लिए आयुर्वेदिक उपचार :

मूली बीज २॥ तोला, गाजर बीज २॥ तोला, मेथी बीज १॥ तोला इनका चूर्ण कपड़ छान करे मात्रा ३ मासा प्रातः सायं गरम जल से ५ दिनों तक लेने से मासिक रक्त श्राव अच्छी तरह से खुल कर आने लगता है ।

दूसरा प्रयोग :

राई १तोला
मालकागनी१तोला
दूधियाबच१तोला
बिजयसार लकड़ी१तोला

कपड़छान चूर्ण करके तीन मासा शीतल जल से अथवा कच्चे दूध से प्रातः-सायं एक सप्ताह प्रयोग करें ।

कष्टार्तव में आर्तव काल में पेडू, कमर, जांघ प्रभृति में अत्यन्त दर्द होता है । अति मैथुन, उत्तेजना, जरायु की स्थान-च्युति, कोष्ठबद्धता इस रोग के प्रमुख कारण हैं।

आयुर्वेदिक प्रयोग ;—

पुष्पानुग चूर्ण (शा०सं०)

चूर्ण मात्रा तीन मासा, मधु छः मासा, चावल के धोवन के साथ प्रातः-सायं दो बार लेना चाहिए ।

योगराज गुगुल-१-१गोली भोजनोपरान्त लेनी चाहिए।

रजः प्रवर्तिनीवटी (भैं० र०) की गर्म जल से प्रदरारि लौह ५रत्ती जल में कुसमूल पीसकर उसके साथ प्रातः-सायं लेना चाहिए ।

अपामार्ग (ओंगा) की जड़ ५मासा पानी में पीस कर बत्ती बनाकर योनि में रखे, तो रज आना प्रारम्भ हो जाता है ।

रजोस्राव को नियमित रखने के लिए:—

प्रातः-सायं चन्द्रप्रभा वटी गर्म दूध और भोजन के बाद अशोकारिष्ट दो-दो तोला ठण्डा जल मिलाकर सेवन करने पर स्त्री का स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहता है । यह ऋतु सम्बन्धी सभी व्याधियों में लाभदायक है ।

श्री जनता आयुर्वेद औषधालय
चमनपुरा चकला, अहमदाबाद-१६

(पृष्ठ ३४ का शेषांश)

भामाशा कलि-कर्ण कहायो,
करकै सरबस दान ।
दुर्गादास, दास हो साँचो
राजपूत रो अभिमान ।
उजलो कर दियो कुल राठौड़,
सारो जग गुण गाथा गावै जी ।
सारा देसाँ रो सिरमोर,
मरूधर प्यारो लागै जी ।
चमक्यो सूर जड़ो सो जग में,
बिड़लाजी और जमनालालजी बजाज ।
प्यारो पूत बण्यो "बापू" रो
कर सेवा शुभ काज ।
निपज्या रतन घणां बेजोड़,
गिणता पार न पावां जी ।
सारा देसाँ रो सिरमोर,
मरूधर प्यारो लागै जी ।
गर्मीया में लू चालै घणे री;
पण ठण्डी होय रात ।
सावण में रिमझिम मेहो बरसै,
काश्मीर भी मात ।
बोलै घणाँ सुरंगा मोर,
गीता ने प्यारो लागै जी ।
सारा देसाँ रो सिरमोर,
मरूधर प्यारो लागै जी ।
बड़े पुराना गढ़ किलो में,
राजपूती तस्वीरां लागै जो ।
बहुत पुराने मन्दिर अभी भी,
चित्रकारी बतलावै जी ।
झून्झून्नूं में राणीसती माँ को अभी
भी मेलो लागै जी ।
क्या मैं गुण गाथा गाऊं उसकी
मरूधर प्यारो लागै जी ।

ब्लाक नं. २०ए।२३६ कृष्णनगर कोलोनी
सैजपुर बोधा (अहमदाबाद)

पुस्तक परिचय

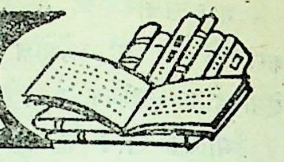

जब मेरा हंस रो उठा (भाषण-संग्रह)

लेखक- प्रो० पुरुषोत्तम गणेश मावलंकर,

प्रकाशक-संनिष्ठ प्रकाशन, गोपिका महाराष्ट्र सोसायटी अहमदाबाद-६ पृष्ठ संख्या–४०२ साइज डेमी, मूल्य ३३ रुपए (प्रथम संस्करण)

श्री मावलंकर जी हेरल्ड लास्की इन्स्टीट्यूट अहमदाबाद के संस्थापक-संचालक–अध्यक्ष हैं। आप मराठी, अंग्रेजी, गुजराती, हिन्दी और संस्कृत भाषा के अच्छे ज्ञाता हैं। प्रोफेसर और प्राचार्य पद पर प्रतिष्ठित रह चुके हैं। आपके पूज्य पिता जी माननीय श्री गणेश वा. मावलंकर एक महान् देश सेवक थे, गाँधीवादी विचारधारा के उपासक और आचरणकर्ता थे और भारत की प्रथम लोकसभा के अध्यक्ष थे। उनके साथ उनके सुपुत्र (इस पुस्तक के लेखक) श्री पुरुषोत्तमजी देश-विदेश की अनेक छोटी–बड़ी यात्राएँ की थीं और उन्हें अपने जीवन में उतारने का स्वप्न देखा था। पिता की देश सेवा, लोकसेवा, वाग्मिता, साहित्य–सेवा, समाज–सेवा और मानव–सेवा के उत्तम गुण परम्परा से उतर कर इस पुस्तक के लेखक में आए। हम इस पुस्तक का हृदय से स्वागत करते हैं।

श्री पुरुषोत्तम जी का मुख्य विषय राजनीति है। फिर भी वे सन् १९७४ तक राजनीतिक क्षेत्र से प्रायः अलिप्त रहे; किन्तु पैतृक परम्परा ने उन्हें अपनी ओर आकर्षित कर ही लिया और वे सन् १९७१ में अपक्ष रूप से लोकसभा के सदस्य निर्वाचित हो गए। जनता ने उनकी प्रतिभा, उनकी वाणी और विचारधारा का सादर स्वागत किया। वे लोकसभा के दो चुनावों में सफल बने। प्रथम लोकसभा के समय देश पर इमर्जेंसी शासन चल रहा था। उनके अनेक कड़वे–मीठे अनुभवों को लोक–समुदाय तक पहुँचाने के लिए आपने अंग्रेजी में 'NO SIR". पुस्तक लिखी। उसी का हिन्दी अनुवाद है यह पुस्तक...

इस पुस्तक में लेखक के विचार, तर्क–प्रमाण युक्त तथ्य और प्रभावशाली शैली पाठक के मन और विचार को प्रभावित कर लेते हैं। प्रत्येक विचार और अभिव्यक्ति में लेखक की अध्ययनशीलता और विवेचनशीलता का सुन्दर दर्शन होता है। लेखक ने सरल, सुस्पष्ट और आदर्श विचारधारा द्वारा पाठकों को तथ्य–कथ्य का जो परिचय इस पुस्तक में दिया है, वह स्पृहणीय, पठनीय है और संग्रहणीय भी है।

पुस्तक के कुछ शीर्षक हैं —

भारत का पहला गणराज्य मर चुका है, यह निर्भय भयानक और गन्दा कानून, मक्कारी से भी काम लिया है, कम से कम ईश्वर से डरा करो, मैं इस प्रकार से सेवा–निवृत्ति–नहीं लूँगा। —राम

तदुपरांत पुस्तक के कुछ मार्मिक और स्पष्ट कथन भी पढ़िए।

(१) किसी भी देश का संविधान एक जड़ दस्तावेज नहीं हो सकता, विशेष रूप से जब वह देश प्रगतिशील हो....।

(२)... सदस्य को तभी यह वेतन आदि दिया जाना चाहिए जब वह सदन में आकर शपथ ले।

(३).... इस प्रकार की हरकतों से हमारे देश की जनता का प्रजातन्त्र पर से धीरे-धीरे विश्वास उठता जाएगा पुस्तक की छपाई, सफाई कागज और आवरण पृष्ठ बड़े सुन्दर बन पड़े हैं। राजनीति के पाठक यह पुस्तक पढ़कर संतोष प्राप्त करेंगे।

जिंक वाणी : त्रय मासिक पत्र

प्रधान सम्पादक-पुरुषोत्तम छंगाणी प्रकाशक हिन्दुस्तान जिंक लि., उदयपुर पृष्ठ ४८ मूल्य ०

वर्ष : २ अंक ८–९

इस अंक में ६ लेख और कुछ गीत–कविताएँ हैं। कथा-व्यंग्य और अन्य आकर्षणों से भी ओतप्रोत है। अनेक प्रासंगिक, सामयिक और परिचायक चित्रों से अलंकृत सुन्दर, सहृद और राष्ट्रभाषा विषयक विचारों से मण्डित संग्रहणीय विचार हैं। स्वागत है। —राम

(शेष पृ. ४३ कालम २)

समिति-समाचार

समिति के सदस्य :

[राजस्थान सेवा समिति के नए सदस्यों की नामावली सधन्यवाद दी जा रही है । -सम्पादक]

४४९ श्री हीरालाल सेठिया
द्वारा-न्यु गुजरात काटँन मिल्स नं. २
दरियापुर दरवाजा बाहर,
अहमदाबाद-३८००१६

४५० श्रीशर्मा एन्ड कम्पनी
द्वारा-मनुभाई मणीलाल शाह
रायपुर आकासेठ कुआ की पोल,
मकान नं.-१०५४ पहला खाँचा,
रायपुर, अहमबाद १

४५१ श्रीकांतिराज धनराज
साकर बाजार, पारेख मार्केट,
अहमदाबाद

४५२ श्रीएस. के. कारपोरेशन
११०, वी स्पेक्दम हाउस नं.-१
सलापस रोड, अहमदाबाद-१

४५३ श्री मोतीलाछ लालचन्द
एल. के. ट्रस्ट बिल्डिंग,
रेवड़ी बाजार, अहमदाबाद

४५४ श्रीके. के. एन्टरप्राइस
१००, बी. स्पेक्ट्रम कमर्सियल सेन्टर,
अहमदाबाद १

४५५ श्रीपारसमल प्रभुलाल बागरेचा
१८१।१ रोडानीका दाकडा
घासीराम की पोल, अहमदाबाद

४५६ श्रीपारसमल गिरधारीलाल
३६ जेकोरषाई चेम्बर,
माधोवाग के सामने, अहमदाबाद

४५७ मे० कांतिलाल मनोजकुमार
७९, एच. एच. ट्रस्ट बिल्डिंग,
उपलोर, रेवड़ी बाजार, अहमदाबाद

४५८ श्रीकृष्णकुमार एन्ड कम्पनी
हॉस्पिटल रोड, ध्रांगध्रा

(पृ. ४२ का शेष)

बाल संगीत विशेषांक :

प्रधान सम्पादक-लक्ष्मी नारायण गर्ग, सम्पादक-बालकृष्ण गर्ग व मूकेश गर्ग प्रकाशक-संगीत कार्यालय हाथरस पृष्ठ संख्या-२०० मूल्य २० रु०

'संगीत' मासिक पत्र निकालकर तथा संगीत सम्बन्धी अन्य कई उपयोगी पुस्तकों का प्रकाशन करके संगीत कार्यालय, हाथरस ने संगीतकला और संगीत-प्रेमियों का जो भारतव्यापी सेवा की है वह अद्वितीय और प्रशंसनीय है । उसी सेवा का एक भाग स्वरूप है, 'संगीत' का प्रति वर्ष एक वार्षिक विशेषांक निकालना । ये विशेषांक बड़े ही उपयोगी अध्ययनीय और संग्रहणीय होते हैं । उसी परम्परा में इस वर्ष यह विशेषांक प्रकाशित हुआ है ।

आज-कल संगीत को एक विषय के रूप में पाठशालाओं, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों आदि शैक्षणिक संस्थाओं में स्थान दिया गया है । बालकों के कोमल भावों और सरल स्वभावों पर सिनेमा के सरल-तरल-गरल गीत अपना कुप्रभाव न दिखा सकें और निम्नगामी विचार का परिष्कार हो, इस दृष्टिकोण से प्रकाशित किया गया यह विशेषांक सर्वथा अभिनन्दनीय है ।

इस विशेषांक में ३० लेख हैं, ५० बाल संगीत स्वरलिपि मुक्तक हैं, तीस बालगीत स्वरलिपि रहित हैं । कुछ शीर्षक इस प्रकार हैं—

स्कूलों में बाल संगीत, बालक का सांगीतिक परिवेश, आवाज की दुनिया में बच्चों को रमाइए, बच्चों को कैसे गीत सिखाएँ, बचपन, संगीत और हम ।
कुछ आकर्षक गीतों के टेक इस प्रकार हैं—

वीर सिपाही हम-हम-हम, हँसते-हँसते नन्हें गीत सारा जग उसके गुण गाता, भारत की बगिया के फूल, हमने डरना कभी न जाना, जंगल में दंगल

इस विशेषांक ने एक आवश्यक अभाव की पूर्ति की है । इस विशेषांक की एक प्रति पुस्तकालयों, वाचनालयों, विद्यालयों और संगीत प्रेमियों के लिए सर्वथा संग्रहणीय है । हम अपने सहयोगी के इस सत्प्रयास की शत-शत सराहना करते हैं और अभिनन्दन देते हैं । -राम

Piramal Fabrics
Piramal Mills
Piramal Fabrics
Maheshwari Mills
Manufacturers of Cotton & Polyester Suitings, Shirtings & Dress Materials

पुस्तकालय
112587

New Gujarat Cotton Mills Ltd.

Ahmedabad-2

INSIST ON

"New Gujarat Fabrics"

For Home & Fxport

For 100% of Polyster, Printed Shirting 80/20 Filament Shirting, Fancy wash and Wear Poplins of Latest Fashions.

Regd. Office :
18 A, Brabourne
Road,
Calcutta.

Mill No. 1
Naroda Road,
Ahmedabad-380002
Phone : 372266
372317

Mill No. 2
Outside Dariapur Gate
Ahmedabad-380016
Phone : 383463
380389

Telegram : NEW
GUJRAT

112587

पंजीयन संख्या-जी-एएमसी-१९४ मार्च-अप्रैल, १९८१

न्यु स्वदेशी व मंजूश्री का पैगाम

आपके नाम

न्यु स्वदेशी मिल्स व मंजूश्री मिल्स पूरे परिवार के लिए
प्रस्तुत करते हैं बेहतरीन कॉटन पोपलीन,
कोटिंग, ड्रेस मटीरीयल्स व
पोलीस्टर ब्लेन्ड में शुटिंग व शर्टिंग जिसे
पहनकर व्यक्तित्व निखर आता है

न्यु स्वदेशी

[illegible] स्वदेशी मिल्स ऑफ
[illegible] लि०

[illegible] आफिस एवं मिल्स,
[illegible] संख्या १००१४
[illegible]ड,
[illegible]दाबाद-३८००२५
दूरभाष : ३७२१२१, ३७२०२१
टेलेक्स : २२२ नेसा इन
तार : न्यु स्वदेशी

मंजूश्री टेक्सटाइल्स,
(प्रो० धी न्यु स्वदेशी मिल्स
ऑफ अहमदाबाद लि०)
गिरधरनगर, अहमदाबाद-३८००१०
रजिस्टर्ड आफिसः नरोडा रोड,
अहमदाबाद ३८००२५

दूरभाष : ६७२७१-७२-७३
टेलेक्स : २२२ नेसा इन
तार : 'मंजूश्री'

Compiled
1999 2000